DESHDOOT

1950 G.K.U

देशदूत

[वर्ष १२, संख्या १८]   रविवार, ८ जनवरी, १९५०

[illegible] की मान्यता

चीन की नई सरकार को मान्यता

...होगा, किन्तु वह सफलता कब प्राप्त करेगी, इसके सम्बन्ध में कुछ कहा नहीं जा सकता। देश को स्वतन्त्रता प्राप्त हुए वर्ष पर वर्ष बीतते जा रहे है लेकिन अभी तक ऊँट कि करवट बैठेगा, समझ में नहीं आ रहा हैं। क्या कोई ज्योतिषी इस ओर ध्यान देगा ?

❀ ❀ ❀

सरदार वल्लभभाई पटेल कहते हैं कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के गठ-बन्धन की बातें करना बेवकूफी है।

राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से बच्चों का स्वस्थ होना आवश्यक है। भारत तथा प्रांतीय सरका[illegible] की सुरक्षा के लिये कई योजनायें कार्यान्वित कर रही हैं। यह चित्र भी स्वस्थ ब[illegible] का है।

हमारे जानवर

लेखक—कुँवर सुरेशसिंह

यह हिन्दी में अपने विषय की पहली पुस्तक है। हम अपने पास-पड़ोस के पालतू जानवरों को जरूर पहचानते हैं। उनकी आदतें और स्वभाव के बारे में भी थोड़ा बहुत जानते हैं, लेकिन इतने ही से क्या हम कह सकते हैं कि हमें सारे पशु-जगत् की जानकारी हो गई है?

इतना ही क्यों, हमें चिड़ियाखाना देखने का भी मौका मिला होगा। लेकिन वहाँ जिस सरसरी निगाह से हमने जानवरों को देखा होगा उनसे भी हम किसी पर विश्वास नहीं दिला सकते कि हमें पशुसमाज का काफी ज्ञान है।

ऐसी दशा में अपने देश के जंगल, पहाड़, वस्तियाँ और मैदानों में फैले हुए सैकड़ों पशुओं के बारे में तरह तरह की मनोरंजक बातें जानने के लिए एक ही उपाय है कि आप "हमारे जानवर" की एक प्रति आज ही मँगावें। आपको प्रायः सभी जानवरों का सचित्र वर्णन इस पुस्तक में मिलेगा। मूल्य ४)

तुलनात्मक भाषाशास्त्र

(भाषा-विज्ञान)

लेखक, डा० मंगलदेव शास्त्री एम० ए०, डी० फिल०

इसमें तुलनात्मक भाषाशास्त्र के सिद्धांतों का प्रतिपादन तथा संसार की भिन्न-भिन्न भाषाओं के परस्पर सम्बन्ध की सरल और सुबोध व्याख्या है। प्रोफेसर ए० सी० वुलनर, डा० भगवानदास, म० म० गंगानाथ झा और श्री गोपीनाथ कविराज, डा० लक्ष्मणस्वरूप और धीरेन्द्र वर्मा आदि मनीषियों ने और अन्य नामी साहित्यिकों तथा पत्रों ने इसकी प्रशंसा की है। पृष्ठ-संख्या पौने तीन सौ से ऊपर; अच्छा कागज, बढ़िया जिल्द, मूल्य केवल ५)।

लगे रहते थे। उनका मित्र प्रणयलाल जोहरी कई वर्ष विलायत में रहकर लौटा तो उनसे मिलने आया। उन्होंने हेमप्रभा से उसका परिचय करा दिया। परिचय इतना घनिष्ठ हो गया कि उससे बचने को डा० मेहता आँखों का इलाज कराने के बहाने दूसरे प्रान्त में चले गये। इधर प्रणयलाल का रंग गहरा होता गया। कई महीने बाद डा० मेहता नकली अन्धे बनकर लौटे और इसी रूप में उन्होंने हेमप्रभा के खोये हुए प्रेम पर अधिकार किया। पुस्तक को हाथ में लेकर समाप्त किए बिना पाठक छोड़ना नहीं चाहते। लेखक के विलक्षण कथानक की सृष्टि करके गिरते हुए चरित्र को समुन्नत बनाया है। मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

यात्री

श्रीयुत पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी बी० ए० ने इस पुस्तक में लिखा है कि हम सभी अनन्त पथ के यात्री हैं। यह जीवन-यात्रा कब आरम्भ हुई और कहाँ इसकी समाप्ति होगी। लेखक ने क्यों लिखूं, जीवन-पथ पर, स्मृति और शिक्षक-जीवन आदि २० शीर्षकों में विभिन्न विषयों पर परिमार्जित भाषा में उच्च विचार प्रगट किये हैं। यात्री अपने ढंग की पुस्तक है। सचित्र आवरण की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २) दो रुपया।

अनातोले फ्रांसकी चुनी हुई कहानियाँ

फ्रांस के इस नामी लेखक की प्रतिभा का अनुमान पाठकों को छाया-सुन्दरी उसका पति, रूप की परी, सदारी, पेरिस की सुन्दरी और माल आदि कहानियों से लगेगा। प्रत्येक कहानी बेजोड़ है। सामाजिक चित्रण सजीव है। ये कहानियाँ पाठकों का मनोरंजन करने के साथ ही उपकार भी करेंगी। मूल्य १) एक रुपया।

अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशन

वनवास

(खण्ड-काव्य)

कवि राजाराम श्रीवास्तव बी० एस०-सी०, वकील ने इस काव्य में मर्यादापुरुषोत्तम रामचन्द्र जी के वनवास का वर्णन बड़ी सुन्दर कविता में किया है। पुस्तक कविताप्रेमियों को मुग्ध कर लेती है। मूल्य ।॥=) चौदह आने।

अद्भुत कथा

इस पुस्तक में ऐसी विचित्र हृदयाकर्षक ११ कहानियाँ हैं जिनको लड़के बड़े चाव से पढ़ेंगे और सुनेंगे। कहानियों से शिक्षा भी मिलेगी। पुस्तक सभी के काम की है। मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

अनाथ हुई और नगेन्द्र बाबू के आश्रय पाकर उसके रिश्तेदार से ब्याही गई। फिर सत्रह साल की उम्र में विधवा हो गई। इसके रूप पर नगेन्द्र बाबू ऐसे रीझे कि उसके साथ विधवा-विवाह कर लिया। उपन्यास में वर्णित उलझनों में पड़कर पाठक चकरा जाते हैं। भाषा और कथानक सभी विचित्र हैं। मूल्य २) दो रुपये।

नवदुर्गा

नवदुर्गा बंगाली पंडित की बेटी थी। उसका विवाह करने की चिन्ता में मां-बाप और बेटी तीनों घर से कलकत्ते के लिए चले। रास्ते में केदारेश्वर तीर्थ में दर्शन करने के लिए ठहर गये। वहाँ के महन्त अम्बिका चरण पुरी ने नवदुर्गा को प्राप्त करने के लिए जो जाल रचा उसका वर्णन पढ़कर पाठकों को दंग हो जाना पड़ता है। अन्त में महन्त का चर चाकर अधरचन्द्र मुखोपाध्याय 'मियाँ की जूती और मियाँ का सिर' की कहावत के अनुसार महन्त जी से खासी रकम ऐंठकर और नवदुर्गा को विधि से पत्नी बनाकर चलता हुआ। लेखक ने महन्त जी की जो दुर्गति काशी में लाकर कराई है उससे पाठक विस्मित और खिन्न हुए बिना न रहेंगे। मूल्य १।) एक रुपया चार आने।

हार या जीत

इस उपन्यास में लेखक डा० ब्रजेश्वर वर्मा एम० ए०, डी० फिल० ने एक देहाती लुहार की अल्पवयस्क बेटी को घटनाक्रम से, अनाथ दशा में, देहात से महराजगंज की रानी पृथाकुंवरि के आश्रय में पहुँचा दिया है। वहाँ रानी की कृपा से इस लड़की ने विद्या पढ़ी। फिर इसमें उन गुणों का विकास हुआ जिससे मनुष्य सभ्य होकर सम्मान पाता है। इसने असहयोग आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया और अन्त में कलकत्ता जाकर नौकरी कर ली। कई पुस्तकें लिखीं। विदेश-यात्रा के बाद रानी के कुँअर की प्रार्थना पर उससे विवाह किया। उपन्यास की घटनावली, विचारों का संघर्ष और चन्दा की नम्रतापूर्ण दृढ़ता सराहने योग्य है। मूल्य २) दो रुपये।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

देशदूत

वर्ष १२, संख्या १८] रविवार, ८ जनवरी, १९५०

लाल-चीन की मान्यता

चीन की कम्युनिस्ट-सरकार को कूटनीतिक मान्यता प्रदान करके भारत-सरकार ने काफ़ी बुद्धिमत्ता दिखलाई है। तीन माह बीत गये जब श्री माओ-ते तुंग ने घोषित किया कि उन्हीं की सरकार चीन की पूर्ण प्रतिनिधि सरकार है और वह अन्य राष्ट्रों से कूटनीतिक-सम्बन्ध स्थापित करने की इच्छुक है। ब्रिटेन तथा अन्य राष्ट्रों के लिये भी भारत का अनुसरण करने से अधिक श्रेयस्कर दूसरी बात न होगी। चीन की कम्युनिष्ट सरकार को मान्यता प्रदान करने में इन राष्ट्रों की अनिच्छा से केवल यही बात प्रकट होती है कि वे चीन के गृह-युद्ध को चालू रखना चाहते हैं। इस प्रकार का दृष्टिकोण न तो नैतिक दृष्टि से मान्य है और न तो राजनीतिक दृष्टि से। १९११ ई० से अब तक चीन ने शान्ति का मुँह नहीं देखा। बहुत विलम्ब हुआ अब विनाश तथा मृत्यु का यह प्रदर्शन समाप्त होना चाहिये। चीन में शान्ति की स्थापना केवल चीन के हित की दृष्टि से ही नहीं, अपितु सारे संसार के हित के लिये आवश्यक है। चीन का गृह-युद्ध विश्व-युद्ध का सूत्रपात कर सकता है। हो सकता है कि कम्युनिष्ट-सिद्धान्त ब्रिटेन तथा संयुक्तराष्ट्र-अमेरिका को मान्य न हों। भारत भी इन सिद्धान्तों को नहीं स्वीकार करता इस प्रश्न से, कि चीन में कैसी सरकार होनी चाहिये, केवल चीन का सम्बन्ध है। ब्रिटेन और अमेरिका जब रूस की साम्यवादी सरकार को मान्यता दे चुके हैं तब वे चीन की साम्यवादी सरकार को मान्यता न देकर अविवेक ही दिखला रहे हैं। इसके अतिरिक्त ब्रिटेन, अमेरिका तथा अन्य देशों के, जो कम्युनिज्म में विश्वास नहीं रखते, चीन की नई सरकार को मान्यता न देने से वहाँ की स्थिति में अब कोई परिवर्तन भी नहीं हो सकता। च्यांग-काई-शेंक की पुनः स्थापना अब उनकी शक्ति के बाहर की चीज है।

❁ ❁

राष्ट्रीय प्रगति आज कल कैसी है, इसे सभी जानते है। लोगों की परेशानियां बढ़ रही हैं, अन्न और दैनिक जीवन की वस्तुओं के लिये लोग परेशान हैं किंतु इसका उपचार क्या है?

* * *

राष्ट्रीय सरकार योजनायें तो बड़ी दृढ़ और लम्बी उड़ानवाली बना रही है, यदि वह कार्यरूप में परिणित हो जाती तो आज जनता का भला अवश्य करेगी, इसके सम्बन्ध में कुछ कहा नहीं जा सकता। देश को स्वतन्त्रता प्राप्त हुए वर्ष पर वर्ष बीतते जा रहे है लेकिन अभी तक ऊँट किस करवट बैठेगा, समझ में नहीं आ रहा है। क्या कोई ज्योतिषी इस ओर ध्यान देगा?

❁ ❁ ❁

सरदार वल्लभभाई पटेल कहते हैं कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के गठबन्धन की बातें करना बेवकूफी है। है बात सही, यदि गठबन्धन ही होना होता तो कांग्रेस स्वयं दो राष्ट्रों का अस्तित्व स्वीकार न करती। अब जब कि मतभेद की खाई इतनी चौड़ी हो गई है तो, वह पटेगी कैसे, यही तो प्रश्न सब से टेढ़ा है?

❁ ❁ ❁ ❁

सरदार वल्लभभाई पटेल का यह भी कहना है कि सैनिक शक्ति अपनी खूब मजबूत करनी चाहिए यह भी बात माकूल ही है। अगर सैनिक शक्ति मजबूत न हुई तो काश्मीर भी हाथ से गया ही समझिये। क्योंकि सुरक्षा परिषद् पाकिस्तान का पक्ष कर रही है और अंग्रेज टोरी भी पाकिस्तान की हाँ में हाँ मिला रहे हैं। यदि राष्ट्र के नेता नोन-तेल-लकड़ी में ही लगे रहे तो मालिक ईश्वर ही है।

❁ ❁

भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की सुपुत्री श्रीमती इंदिरा गांधी शीघ्र ही अमरीका जाने वाली हैं।

लाल चीन के कम्यूनिस्ट सर्वाधिकारी माओ-ते-तुंग।

ग्राहकों, एजेंटों और विज्ञापनदाताओं को समस्त पत्र व्यवहार मैनेजर, 'देशदूत' इलाहाबाद के नाम पर ही करना चाहिए।

सम्पादक का पृष्ठ

ब्रिटिश टोरी और पाकिस्तान

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में गुप्त गाँठ-गाँठ साँठ-गाँठ या कपट-पूर्ण कार्य सर्व विदित है। जब श्री मि० चेम्बरलेन ने जेकोस्लोवेकिया को धोखा देना चाहा तो उनके 'एजेंटों' ने जर्मन प्रेस को मि० चेम्बर लेन पर जेकोस्लोवेकिया के प्रति पक्षपाती होने का आरोप लगाने के लिये उत्साहित किया। पाकिस्तान और उसके ब्रिटिश अनुदार सहयोगी काश्मीर को लेकर भारत-पाकिस्तानी झगड़े तथा अन्य मतभेदों के भी विषय में कुछ इसी प्रकार का नाटक रचने जा रहे हैं। इस गठबन्धन का सब से उदाहरण है 'डान' के सम्पादक श्री अल्ताफ हुसेन का ईस्ट-इण्डिया-असोसियेशन-लन्दन के समक्ष दिया गया भाषण। इन्होंने कहा कि ब्रिटेन पाकिस्तान के विरुद्ध भारत के प्रति घोर पक्षपात कर रहा है। उनके आरोप से अनुदार दलीय नेता श्री आर० ए० बटलर को जो सम्भवतः श्री चर्चिल के राजनीतिक उत्तराधिकारी भी हैं, ब्रिटिश-विदेशी नीति के विरुद्ध इस दोषारोपण का खण्डन करने का अवसर मिला। उन्होंने पाकिस्तान को विश्वास दिलाया कि ब्रिटेन भारत का पक्षपाती नहीं है। इसके विपरीत ब्रिटेन भारत तथा पाकिस्तान दोनों के प्रति समान मित्र-भाव रखता है। इस प्रकार की कपट-पूर्ण बातों से भारतीय-जनमत को बहलाने का प्रयत्न किया जाता है। साधारण से साधारण बुद्धि रखने वाला व्यक्ति भी भारत के विरुद्ध पाकिस्तान के पक्ष में ब्रिटिश अनुदार-दल की नीति को समझ सकता है। भारत और पाकिस्तान के बीच प्रत्येक छोटे-मोटे झगड़े में अनुदार दल ने फूट पैदा करने की सीमा तक भारत का विरोध किया है। उदाहरण के लिये हैदराबाद के ही प्रसंग को लीजिये। श्री चर्चिल ने भारत के कार्य की तुलना हिटलर के सब से अधिक अनैतिक कार्यों से की थी।

'स्पेक्टर' नामक इंगलिश पत्र का बड़े दिन का विशेषांक हमारे पास है जिसके एक सम्पादकीय अग्र लेख में पं० नेहरू तथा उनकी काश्मीरी नीति की कटु-निन्दा की गई है। यह दिखलाने के लिये कि ब्रिटेन किस प्रकार से पाकिस्तान के विरुद्ध भारत का पक्षपात करता है। 'स्पेक्टेटर' लिखता है :—बड़े खेद की बात है कि भारत के प्रधान-मंत्री पाकिस्तान के विरुद्ध अपने अनैतिक एवं अनुचित दृष्टिकोण के द्वारा ब्रिटेन के प्रभाव कम करते जा रहे हैं। भारत ब्रिटेन की सहानुभूति प्राप्त करने में यह बात सब से अधिक बाधक है। सिद्धान्त-रूप में दोनों दलों ने आम चुनाव को स्वीकार कर लिया है। साथ ही चुनाव के प्रधान की हैसियत से अमेरिकन ऐडमिरल निमिज की नियुक्ति भी दोनों को मान्य है। किन्तु अब भी भारत पाकिस्तान से कहीं अधिक आपत्तियाँ प्रस्तुत कर के विलम्ब का कारण बन रहा है। यह तो स्पष्ट है कि आम-मत-गणना के पहले बाहरी सैनाओं का रियासत से हटना जरूरी है। हमारा अभिप्राय भारतीय सेनाओं से है किन्तु भारत मुस्लिम आजाद फौजों का बहाना करता है जो कि रियासत के निवासी हैं और इसी लिये उनकी स्थिति भारतीय फौजों से बिल्कुल भिन्न है। इससे अत्यन्त खेद पूर्ण स्थिति पैदा हो गई है। काश्मीर का झगड़ा अनिश्चित समय तक यों ही नहीं चल सकता। इस समय विलम्ब के लिये भारत पाकिस्तान से कहीं अधिक जिम्मेदार है। हम आशा करते हैं कि पं० नेहरू इस समस्या के कारण उत्पन्न होते हुए बुरे प्रभावों का अनुभव करेंगे।

इस प्रत्यक्षी करण के बाद भी भले ही श्री अल्ताफ हुसेन की कूटनीतिक भाषण उनके ब्रिटिश अनुदार दलीय मित्रों के हर्ष का कारण बने किन्तु इससे किसी भी सत्य निष्ठा व्यक्ति को धोखा नहीं दिया जा सकता।

सुरक्षा-कौंसिल की दोरंग चाल

बड़े उपयुक्त समय पर शेख अब्दुल्ला सुरक्षा-कौंसिल में सम्मिलित हुये हैं। पाकिस्तानी प्रचारकों ने काश्मीर के मामले में भारतीय नीति को विदेशों में बिल्कुल गलत ढङ्ग से प्रचारित किया है। इस कुप्रचार का सारांश यह है कि काश्मीर भारत के अत्याचार से आहें भर रहा है। काश्मीर के प्रश्न पर कोई भी व्यक्ति शेख अब्दुल्ला से बढ़कर अधिकार के साथ नहीं बोल सकता। वे ही काश्मीर के जन आन्दोलन के संस्थापक तथा नेता भी हैं। यह जरा दिलचस्प बात है कि जब शेख अब्दुला और उनके अनुयायी जनतन्त्र के लिये युद्ध कर रहे थे, तब पाकिस्तान के शासक जो आज स्वेच्छारी आजाद काश्मीर सरकार का समर्थन कर रहे हैं, न केवल उस जन अन्दोलन से तटस्थ ही रहे बल्कि उसकी निन्दा भी करते रहे। शेख अब्दुल्ला को तीन साल के लिये जेल होने पर श्री जिन्ना ने काश्मीरी नेता को खुले शब्दों में राजद्रोही कहा था इन बातों से यह प्रकट हो जाता है कि क्यों काश्मीर के सभी वर्ग के लोग शेख अब्दुल्ला को चाहते हैं और क्यों उनके विरोधियों से घृणा करते हैं। पाकिस्तान का यह प्रचार कि काश्मीर की वर्तमान सरकार अत्याचारी है सर्वथा असत्य है।

न्यू यार्क में अमेरिकन-भारतीय-की अध्यक्षता में दिये गये शेख साहब का भाषण वास्तविकता से पूर्ण है। इस भाषण का महत्व उनकी स्पष्ट वादिता है। उन्होंने सुरक्षा-कौंसिल की खरी सालोचना की। उन्होंने कहा कि सुरक्षा-कौंसिल काश्मीर के प्रश्न को हल न कर सकी क्योंकि उसने दोनों पक्षों को सन्तुष्ट रखना चाहा। इस पर तो दो मत हो ही नहीं सकता कि सुरक्षा-कौंसिल ने पक्षपात हीन होकर कार्य नहीं किया। अगर यह पक्षपात हीन होती तो काश्मीर की ससस्या कब की हल हो गई होती। प्रमुख प्रश्न तो यही था कि पाकिस्तान काश्मीर पर आक्रमण करने का दोषी है अथवा नहीं? पाकिस्तान सरकार ने इस बस से इनकार किया था कि उसने आक्रमणकारियों को कोई सहायता दी है या उभाड़ा है। किन्तु बाद में उसने अपने दोष को स्वीकार किया। संयुक्त-राष्ट्र-काश्मीर-कमीशन ने अपनी रिपोट में लिखा कि इस उप-महाद्वीप में पहुँचने पर कमीशन का पता चला कि उसके समक्ष एक ऐसी समस्या उपस्थित हो गई है जिस पर सुरक्षा-कौंशिल ने वादा-विवाद के सिलसिले में कोई विचार नहीं किया था। जम्मू और काश्मीर के युद्ध में पाकिस्तान की नियमित फौजें भाग ले रही थीं। राष्ट्र-संघ के चार्टर में अनुशासन-सम्बन्धी-कार्यवाही का विधान किसी भी राष्ट्र के विरुद्ध है जो इसके सिद्धान्तों के विरुद्ध आचरण करे। किन्तु यह जानते हुये भी कि पाकिस्तान आक्रमण करने का दोषी है सुरक्षा-कौंसिल ने कोई अनुशासन-कार्यवाही नहीं की। इसलिये हम परिणामतः इसी निश्चय पर पहुँचते हैं कि सुरक्षा-कौंसिल के सदस्य पक्षपात-हीन नहीं हैं।

किन्तु यदि दिन भर का भूला शाम को सही-सलामत लौट आये तो कोई विशेष हानि नहीं। शेख अब्दुल्ला ने बताया कि पाकिस्तान काश्मीर के चौथाई भाग पर अधिकार जमाये हुए है और शेष को भी निगलने का प्रयत्न कर रहा है। राष्ट्र-सघ पाकिस्तान को इस विवेक-शून्य कार्य से विरत कर सकता है यदि वह काश्मीर से पाकिस्तानी फौजों के, चाहे वे नियमित हों चाहे अनियमित, हटने के लिये बार-बार दबाव डाले जिससे एक पक्षपात-हीन आम मतगणना हो सके। हम श्री मैकनाटन की योजना को पूर्ण रूप से अस्वीकार करते हैं जो पाकिस्तान तथा भारत दोनों को समान धरातल पर लाकर खड़ा करती है और काश्मीर रियासत की फौजों के विघटन तथा निशस्त्रीकरण पर भी जोर देती है। हमें विश्वास है कि शेख अब्दुल्ला इस योजना को स्वीकार नहीं करेंगे। वह जानते हैं कि पाकिस्तान के लिये आम चुनाव केवल टट्टी की ओट मात्र है। ज्योंही भारतीय फौजें रियासत से बाहर चली आती हैं और रियासत की फौजें निरस्त्र कर दी जाती हैं त्योंही पाकिस्तानी फौजें रियासत में घुस पड़ेंगी। इतना होते हुए भी यदि सुरक्षा-कौंसिल मैकनाटन-योजना को स्वीकार करती है तो वह अवश्य में भारत तथा अन्य देशों का विश्वास खो देगी जो आत्मनिर्णय के सिद्धान्त में विश्वास करते हैं और आक्रमणकारी-नीति से घृणा करते हैं। भारत उत्सुकता के साथ शेख अब्दुल्ला के इस प्रयत्न के परिणाम की प्रतीक्षा कर रहा है।

सचित्र साप्ताहिक 'देशदूत'

संवाददाताओं से निवेदन

संयुक्तप्रांत, मध्यप्रांत, मध्य भारत तथा राजपूताने के संवाद भेजनेवालों से निवेदन है कि वे अपने संवाद संक्षितरूप में भेजने का कष्ट करें।

संपादक 'देशदूत'

भारतीय स्वाधीनता का युद्ध

प्रवासी भारतीयों ने इसमें क्या भाग लिया ?

लेखक, श्री भवानीदयाल सन्यासी

स्वाधीन भारत के युद्ध में जहाँ भारतीयों ने अपने त्याग और बलिदान का परिचय दिया वहाँ प्रवासी भारतीयों का स्थान भी विशेष महत्वपूर्ण है। प्रवासी भारतीयों के नेता श्री भवानीदयाल सन्यासी ने इस लेख में इसी सम्बन्ध में सुन्दर और विस्तृत प्रकाश डाला है जो पठनीय है।

इस लेख के लेखक, स्वामी भवानीदयाल सन्यासी।

१५ अगस्त १९४७ को भारत सदियों की गुलामी से आजाद हो गया। प्रवासी श्वेतांगो के अत्याचार की भट्टी में जलते हुए भी इसी दिन की प्रतीक्षा में जी रहे थे। हमारे देशवासियों को गुलामी जितनी अखरती थी मैं दावे के साथ कहता हूँ कि प्रवासियों को उससे कहीं अधिक अखर रही थीं। यहाँ की अपढ़ जनता सदियों से गुलामी के नरक में गरक रहने के कारण अपनी वर्तमान स्थित पर सन्तोष किये बैठी थी, पर विदेशों के वातावरण में प्रवासियों का दृष्टिकोण बदल चुका है, इसलिये वे अपनी मातृ भूमि की पराधीनता पर दिन रात सन्ताप की आग में जला करते थे। वे अन्य राष्ट्रों की स्वाधीनता, स्वदेशानुराग और स्वाभिमान का दृश्य अपनी अपनी आँखों देखा करते तो अपनी देश की दासता पर आह भर कर और हृदय मसोस कर रह जाते थे।

वास्तव में भारत का उन उपनिवेशों से जहाँ हिन्दुस्तानी जा बसे हैं और जिसे हम बृहत्तर भारत के नाम से पुकारते हैं, वही सम्बन्ध है जो इंग्लैण्ड का आस्ट्रेलिया, कानाडा, न्यूजिलैण्ड, दक्षिण अफ्रिका, ब्रिटिश गायना, ब्रिटिश वेस्ट इण्डिज आदि अपने अंगभूत देशों के साथ। अंतर था तो यही कि इंग्लैंड के पास एक ऐसा झण्डा है जिस पर स्वाधीनता की मुहर लगी हुई है। उस स्वतंत्र पताका के प्रताप से अंगरेज संसार में जहाँ कहीं भी जाते हैं उनकी प्रतिष्ठा होती है, पर भारत के पास अब तक वैसा कोई झण्डा न था, उसके मुँह पर तो दासता और परवशता की कालिख लगी हुई थी इसलिये इसमें विस्मय की बात ही क्या है कि पराधीन भारत के बच्चे विदेशों में अपमान की ठोकरें खाते फिरते हों, दासता के दाग के कारण दूसरों की दृष्टि में नीच और पतित समझे जाते हों और स्वाधीनता राष्ट्रों के सामने उनको स्वयं अपना मुँह दिखाने में शर्म आती हो। जब कभी प्रवासी भारतीयों का प्रश्न देश के सामने आता था तो हमारे उच्च कोटि के नेता अक्सर कह दिया करते थे कि जब तक हम अपने देश में ही गुलाम हैं तब तक विदेशों में बसे हुये अपने भाइयों की क्या सहायता कर सकते हैं ? यह बात है तो अंकगणित की भाँति सत्य और इस सत्य को प्रवासी भाई अच्छी तरह अनुभव करते थे। उनका यह विश्वास अधिकाधिक दृढ़ होता गया कि जब तक उनकी मातृ भूमि अंगरेज़ों की चेरी बनी रहेगी तब तक उनके उद्धार की कोई आशा नहीं है। जिस दिन भारत स्वतंत्र होगा उसी दिन उनके जीवन में अंधेरी रात के बाद मंगल प्रभात होगा। जब कि स्वतंत्र भारत के जंगी जहाज महासागर की छाती पर अठिलाते हुए फिरेंगे और आवश्यकता पड़ने पर अपने गोलों के गर्जन से किसी भी देश की धरती और आकाश को कँपा सकेंगे तभी प्रवासी श्वेतांगों की आँखें खुलेंगी और वे भारत के सन्तान का अपमान करना खतरे का काम समझेंगे। प्रवासी भाई इसी दिन का इन्तजार कर रहे थे।

यदि हम यह कहे कि प्रवासी ही भारतीय स्वाधीनता के संग्राम में अग्रदूत रहे हैं तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। प्रवासियों ने ही भारतीय राष्ट्र के पिता और स्वाधीनता के सूत्रधार महात्मा गांधी को मातृभूमि को अर्पण किया है। बापू २१ वर्ष दक्षिण अफ्रिका में प्रवास कर छुके हैं, उसी देश ने उनके सत्याग्रह के लिये प्रयोग शाला का काम दिया था और वहीं के अनुभवों ने बापू को भारतीय स्वाधीनता के लिए प्रेरित किया था। जो लोग भारतीय जाग्रण के इतिहास से परिचित हैं, उनको यह बतलाने की जरूरत नहीं कि प्रवासियों ने अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए भारी से भारी बलिदान किया है। विदेशों वातावरण में उनको अपनी अधम स्थिति पर बड़ा ही अनुपात हुआ और वे अपने प्राणों को हथेली पर लेकर क्रान्ति के अग्रदूत बन गये। पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा, श्रीमती कामा, सूफी अम्बा प्रसाद, लाल हरदयाल, श्री राम बिहारी बोस, श्री मदन लाल धिंगरा, श्री उद्यमसिंह प्रभृति प्रवासी वीर भारत भारत की बेड़िया काटने के प्रयत्न में बलि चढ़ गये, उनको फिर अपनी जन्म भूमि के दर्शन का अवसर न मिला। सरदार अजीत सिंह जीर्णशीर्ण और और रुग्ण शरीर लेकर हल ही में राष्ट्रीय सरकार के अनुग्रह से देश लौटे तो सही, पर वे भी आजादी का आनन्द भोग न सके-उस दिन हृदय की गति गति रुक जाने से स्वर्गधाम सिधार गये। राजा महेन्द्र प्रताप देशहित के लिये वर्षों विदेशों की खाक छानने के बाद अब अवश्य स्वतंत्र भारत में विचरने का अधिकारी हो पाये हैं।

प्रवासियों ने अपने देश वासियों को मोहनिद्रा से जगाने और आगे बढ़ाने के लिए लगातार प्रयत्न किया है। जब कनाडा की सरकार ने यह कानूनी बहाना बनाया कि चूँकि भारतीय अपने देश से सीधे नहीं, अनेक बन्दरगाहों का चक्कर काटते हुए आते हैं, इसलिए इमिग्रेशन कानून के अनुसार कनाडा में प्रवेश का अधिकार खो बैठते है तो बाबा गुरुदत्त सिंह ने "कोमागाटामारू" नमक जापानी जहाज को भाड़े पर लेकर उस पर पंजाबी वीरों के बैठाया और भारत से सीधे कनाडा के बन्दरगाह पर जा लगाया। पर कनाडा की सरकार अपने वचन से मुकर गई, कानून का खून कर डाला गया और भारतीयों को उस भूमि पर पैर रखना भी दुर्गभ हो गया। वहाँ से अपमान की ठोकरें खा कर स्वदेश लौटने पर कलकत्ते के निकट "बजबज" में यहां की विदेशी सरकार ने उनको इस गुस्ताखी का मजा चखाया और गोलियां चला कर उनके लहू से अपनी अपनी प्यास बुझाई। उस समय देश को अपनी गुलामी पर गहरा दुःख हुआ था, वह इस चोट से तिलमिला उठा था, पर हाथ-पैर बँधे होने के कारण कुछ न कर सका हृदय थाम कर रह गया। पर क्रान्ति के यज्ञ में प्रवासियों की ओर से वह आहुति व्यर्थ नहीं गई। उस घटना से भारतीयों को यह पता लग गया कि ब्रिटिश साम्राज्य में उनका वही दर्जा है जो भारत में अछूतों का।

भारतीयों में आजादी की भावना जगाने और अपने स्वरूप का ज्ञान कराने में दक्षिण अफ्रिका का सत्याग्रह अमोघ अस्त्र सिद्ध हुआ। महात्मा गांधी के नेतृत्व में प्रवासियों ने ही पहले पहल सत्याग्रह का प्रयोग किया, इस अद्वितीय सिद्धान्त को कार्यन्वित कर दिखाया और वर्षों सत्याग्रह को सफलता पूर्वक चलया भी जो आगे चल कर भारत की आजादी की लड़ाई में सर्वोपरि हथियार बना। भारत की प्रतिष्ठा को अक्षत बनाये रखने के लिये ही प्रवासियों ने सत्याग्रह का सूत्रपात किया था। मित्रवर श्री हेनरी पोलक ने प्रवासियों की मनोवृत्ति का परिचय देते हुए कहा था कि "वे सब कुछ सह सकते है, पर अपनी मातृभूमि का अपमान नहीं सह सकते।" वे मर मिटेंगे, पर भारत की आबरू पर आंच न आने देंगे।" वास्तव में प्रवासियों ने इसी भावना से पेरित हो कर सत्याग्रह का युद्ध ठाना था कि दक्षिण अफ्रिका में भारत की प्रतिष्ठा नष्ट न होने पावे, मातृभूमि अपने प्रवासी पुत्र-पुत्रियों को यह कह कर धिक्कारने न पाये कि उन्होंने सुदूर देश में उसकी पत खो दी, उसके दूध को लजा दिया। प्रवासी गांधी ने ही भारत लौट कर क्रान्ति की वह आग लगाई जिसमें अंग्रेजी राज्य जलकर भस्म हो गया।

प्रथम विश्व युद्ध के जमाने में अमेरिका में गदर पार्टी कायम हुई, जिसका उद्देश्य था भारत को विदेशी सत्ता से मुक्त करना। इस पार्टी की तरफ से 'गदर' नामक एक अखबार भी निकलता था, जो दक्षिण अफ्रिका में मेरे पास बराबर आता था। इस पार्टी की तरफ से सरदार कर्तारसिंह की सरदारी में प्रवासियों का एक जत्था अमेरिका से भारत आया। इस दल के लोग पंजाब भर में फैल गये। यह योजना बनाई गई कि सन् १९१५ की २१ वीं फरवरी को सारे देश में क्रान्ति की आग धधक उठे, भारतीय सिपाही गोरे अफसरों और सैनिकों को मार गिरावें, छावनियों पर दखल जमा लिया जाय। और साथ ही शासन का सूत्र भी संभाल लिया जाय। रेल की पटरिया उखाड़ने और तार काटने का इन्तजाम भी हो चुका था और राष्ट्रीय झण्डा के साथ ही साथ घोषणा पत्र भी तैयार कर लिया गया था। सन् १८५७ के बाद क्रान्ति की ऐसी योजना कभी नहीं बनी थी। पर प्रवासियों के सारे प्रयत्न व्यर्थ गये कृपाल सिंह आदि कुछ देश द्रोहियों ने चांदी के चांद टुकड़ों के लालच से अपनी मातृभूमि के साथ विश्वासघात कर डाला अंग्रेजों को सारे भेद बता दिये। फलतः देश भर में गिरफ्तारियां शुरू हो गईं सैकड़ों प्रवासी जेल में ठेल दिये गये। वीर कर्तार सिंह श्री विष्णु गणेश पिंगले, सोहन सिंह आदि हँसते हँसते फांसी की डोर में झूल पड़े और भाई परमानन्द जी प्रभृति काले पानी में घुल घुल कर मरने के लिये भेज दिये गये। श्री रास बिहारी बोस अंगरेजों को चकमा देकर जापान चले गये। यद्यपि उनकी क्रान्ति सफल न हुई पर उनके बलिदानो से भारतीयों के हृदय में क्रान्ति की भावना और भी दृढ़ हो गई।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

आज का स्वतंत्र हिन्दोशिया के प्रजातंत्र के प्रेसिडेंट डाक्टर सुकर्ण कौन हैं ?

लेखक, श्री जीवन

इंडोनेशिया स्वतंत्र हो गया। स्वतंत्र इंडोनेशिया के प्रेसिडेंट डाक्टर सुकर्ण बनाये गये हैं। डाक्टर सुकर्ण कौन हैं ? राष्ट्र के प्रति उनकी क्या सेवा है, इस लेख में इसी संबन्ध में प्रकाश डाला गया है। लेख सामयिक और सुन्दर है।

सन् १९१८ की घटना है। हिन्देशियाई राष्ट्रीय सभा की पहली बैठक हो रही है। एक-से-एक प्रभावशाली वक्ता और राजनीति के दिग्गज विद्वान मंच पर विराजमान हैं। पराधीन हिन्देशिया की जनता हजारों-हजार की संख्या में जुटी हुई है। साथ ही, दूसरी ओर पुलिस कमिश्नर पुलिस सिपाहियों के साथ, स्वतंत्रता का संदेश दलित-पीड़ित जनता को नहीं सुनने देने के लिए, आ डटा है। एकाएक एक तरुण—हाँ, महज १७ वर्ष का तरुण मंच पर आकर खड़ा हो जाता है और अपने प्रभावशाली भाषण से जनता को उभाड़ देता है। मृत प्राय जनता में नवजीवन का संचार हो जाता है। लगता है, विद्रोह अब हुआ, तब हुआ चाहता है। पुलिस कमिश्नर भय वश उस तरुण को जबरन बैठा देता है। उस तरुण के प्रोफेसर अपने पास बुलाकर उसे उपदेश देते हैं—'राजनीति में छात्र-जीवन में भाग लेना बुरा है।' तरुण का उत्तर होता है—'मैं अपना पाठ निरन्तर याद करता रहूँगा। पाठ्य-पुस्तकों के साथ ही अन्य पुस्तकों का अध्ययन और राजनीति में भाग लेना कोई बुरा नहीं।' प्रोफेसर साहब उस तरुण छात्र के भाव को नहीं समझ कर फिर कहते हैं—'मैंने कुछ और भी कहा है।' इस पर तरुण कुछ कुँझला पड़ता है—'मुझे कुछ और कहना नहीं है।' और वह चलता बनता है।

अध्ययन करते हुए छात्र-जीवन से ही राजनीति में सक्रिय भाग लेने वाला और अपने प्रभावशाली भाषण से जनता को उभाड़ने वाला वही तरुण आज जावा के स्वातंत्र्य-संग्राम का अग्रगण्य नेता और नवीन संयुक्त हिन्देशियाई प्रजातंत्र का अध्यक्ष हुआ है, जिसका पूरा नाम है—डा० अब्दुर्रहमान सुकर्ण।

'सोने का चम्मच मुँह में लेकर' पैदा होने वाला और उस स्कूल में शिक्षा पाने वाला, जिसमें सिर्फ धनवानों के सपूत ही शिक्षा पा सकते हैं, बालक सुकर्ण लापता है। परिवार के सभी हैरान हैं, परीशान हैं। चारों ओर खोज जारी है। प्रत्येक सम्पत्तिशाली के दरबार में उसे ढूँढ़ा जाता है। पर यह क्या ? उसका कहीं पता नहीं। बहुत देर के बाद मालूम होता है, बालक सुकर्ण एक टूटी-फूटी झोपड़ी की ओर गया है, जिसका छप्पर भी टूटा हुआ है। और वहाँ पहुँच कर खोजने वाले देखते हैं—एक दीन-दरिद्र के विवस्त्र बच्चे के साथ बालक सुकर्ण एक ही तकिया पर सिर रख कर सोया पड़ा है। सुकर्ण अपने इस साथी को बेहद चाहता है। इस साथी ने ही उसे डा० सुकर्ण बना दिया। और, जब वह साथी संसार से कूच कर गया, तो उसकी पुण्य स्मृति में डा० सुकर्ण ने जी० ऐन० आई० अर्थात् दीन-पीड़ित-संघ की स्थापना की।

डा० सुकर्ण की माता बाली द्वीप की रहने वाली थीं और पिता जावा के रोडेन परिवार के थे। 'आटेशन हिंदिया' पत्र में 'विना' नाम से आप तभी से प्रभावशाली लेख लिखने लगे थे, जब आप सुराबाया के एच० बी० एस० स्कूल में ही माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। आगे चल कर उक्त पत्र के सम्पादक तथा सुप्रसिद्ध धार्मिक नेता हाजी ओमर सईद तजोकरो आमिंतो की सुपुत्री से आपकी शादी हुई। आपको चित्रकला से भी प्रेम था। बेडांग के टेक्निकल स्कूल में पढ़ते समय, आपने वहाँ की मस्जिद की इमारत का नक्शा बनाया था।

प्रथम यूरोपीय महायुद्ध के पश्चात् आप इंजीनियरिंग पढ़ने हालैंड गए। हालैंड में हिन्देशियाई छात्रों की जो 'इडीशी विरंग इंग' नामक संस्था थी, वह सन् १९२४ में जावा की पूर्ण स्वाधीनता के लिए 'परहिम पोइनान इंडोनेशिया' नामक दल बन गई, जिसमें क्रांतिकारियों की भरमार थी। डा० सुकर्ण ने इस संस्था को सुसंगठित तथा सुदृढ़ बनाया। महात्मा गांधी ने जिस प्रकार ब्रिटिश सरकार की सहायता पिछले महायुद्ध में औपनिवेशिक स्वराज्य मिलने की आशा से की थी; पर भारत को रौलेट ऐक्ट और पंजाब हत्याकांड आदि का नृशंसतापूर्ण पुरस्कार प्राप्त हुआ, ठीक उसी तरह डा० सुकर्ण ने उसी महासमर में हालैंड की मदद के लिए जावा-निवासियों को प्रोत्साहित किया था, जिसके लिए हालैंड की रानी विल्हेमिना ने १९१८ में ही जावा को स्वाधिकार देने का आश्वासन दिया। परन्तु महासमर के पश्चात् अपने वचन की पूर्ति की बात तो दूर रहे, जावा के राजनीतिज्ञों को कैद कर डाला गया और उन्हें डच न्यूगिनी में नजरबन्द कर भेज दिया गया। वहाँ इससे राजनीतिक आंदोलन हुआ; मगर वह दबा दिया गया। बाद में एक कम्युनिस्ट क्रांति चली, जिससे डचों ने १९२७ में दबा दिया। डा० सुकर्ण ने आगे बढ़ कर अपने देश की स्वाधीनता-प्राप्ति के लिए एक राष्ट्रीय आंदोलन की लहर चलादी, जिसका नाम पारटाईनेशनल इंडोनेशिया (पी०एन०आई०) रखा इस आंदोलन ने वहाँ केराजनीतिक दलों में एकता स्थापित करनेकी चेष्टा की और बहुत-से दल डा० सुकर्ण के इस दल में आ मिले। आपने लाल सफेद रंग के झंडे को ही राष्ट्रीय झंडा बनाया और वहाँ का राष्ट्रगीत 'इंडोनेशिया बना' आज भी जावा का वही झन्डा और वही राष्ट्र गीत है। आपकी वाणी में ओज और उत्तेजना तो थी ही, अपने प्रभावोत्पादक व्यक्ति और दलित-पीड़ित शोषित जनता की अभूत पूर्व सेवा से आप वहाँ के जन गण-मन-अधिनायक बन गए और इस प्रकार वहाँ के इतिहास के सर्वश्रेष्ठ लोकप्रिय नेता हुए। वहाँ वाले आपको 'बूंग कारजो' (अतिसम्मानित) नाम पुकारते हैं।

पी० एन० आई० के सभापति होने के कारण डच सरकार ने आपको अन्य तीन साथियों के साथ सन्, १९२९ में कैद कर लिया बाद में आप को ४ वर्षों तक सोइकामिसकिंग के कारागृह में रहने का दन्ड दिया गया किन्तु दो ही वर्षों के बाद डच सरकार द्वारा रिहा कर देने पर आप पुनः जोर-शोर से राजनीति में भाग लेने लगे। फ़िर डच सरकार ने सन् १९३३ में आप को फ्लोरिस टापू में निर्वासित कर दिया। इस टापू में आप धर्म एवं राजनीति के अध्ययन म व्यस्त रहे। जब १९३८ की ३० वीं० अप्रैल को बैंग कोलन जेल में आपकी बदली हो गई, तो वहाँ खुले तौर पर राजनीतिक काम करने में बाधा देख आप मुहम्मदिया नामक धार्मिक संस्था में प्रविष्ट हो गए। डच सरकार से जापान की बढ़ती हुई साम्राज्य-लिप्सा को देख कर आपने १९३५ में ही ज़ावा वासियों को सैनिक शिक्षा देने का अनुरोध दिया था।

जब सन् १९४० में हिटलर ने हालैंड पर चढ़ाई कर दी, तो आपने जावा-वसियो से हालैंड में की सहायता करने तथा जापानियों से बचे रहने की अपील की। इसके बाद जापानियों के जावा पर आक्रमण करने पर आपने डच सरकार से अनुरोध किया कि वह आपको जावा जाने की अनुमति दे, जिससे जावा वासी जापान के विरुद्ध युद्ध में सफल हो सकें। परन्तु डच सरकार आपको जेल में ही छोड़ चलती बनी, जिससे आप जापानियों के कैदी बन गये। जापानियों ने जावा के कोईदो सौ बड़े-बड़े नेताओंको मौत के घाट उतार डाला और आपको तथा अमीर सजार फोइद्दीन को भी मृत्यु-दन्ड की सजा दी परन्तु आप दोनों ने चतुराई और धैर्य से काम लिया। आप जापान द्वारा स्थापित सरकार के अध्यक्ष बन गए। लेकिन चुपके-चुपके क्रांतिकारियों को जापान के विरुद्ध उसकाते रहे। क्योंकि किसी भी देश का अधिपत्य आप आपनी मातृ भूमि पर फूटी आँखों भी देखना नहीं चाहते थे। अतएव सन् १९४३ में जापानियों की आँख में धूल झोंक कर यह कह कर कि हम मित्र राष्ट्रों के आक्रमण के विरुद्ध लड़ना चाहते हैं, आपने गुरिल्ला सैनिकों का संगठन किया। जापान के खिलाफ आप विद्रोह का झन्डा उठाने वाले ही थे कि उसका बम बोल गया और उसने द्वितीय विश्व महा युद्ध में आत्म समर्पण कर दिया।

इंडोनेशिया के प्रेसीडेंड डाक्टर सुकर्ण।

तब आपने १७ अगस्त, ४५ को अर्थात् जापान के आत्मसमर्पण के दोही दिन बाद स्वतंत्र हिंदेशियाई प्रजा तंत्र की घोषणा कर दी। सोशलजिमो क्रेट और जनता के विश्वास भाजन होने के नाते आप ही इस स्वतंत्र प्रजातंत्र के अध्यक्ष चुने गए। १७ व्यक्तियों का एक मंत्रिमंडल बनाया गया। श्री सुल्तान शहरीर जिसके प्रधान मंत्री हुए। परन्तु इस सरकार को जापानियों ने नहीं माना और आपको तथा डा० मुहम्मद हाटा को जो इस सरकार के उपाध्यय थे, कैद कर लेना चाहा। बस क्या था, आपने जापानी अफसरों को यमालय की हवा खिला दी, जापानी सरकार का अंत कर उसके सैनिकों को कैद कर लिया और शस्त्रास्त्रों पर अधिकार कर लिया।

बाद में आपने हिंदेशिया के विभिन्न भागों को संगठित किया और अपने स्वतंत्र प्रजातंत्र की रक्षा के लिए उन्हें तैयार किया। फिर इसके बाद जब डच सरकार पुनः प्रभुत्व जमाने को आई और उसकी मदद अँगरेजों और अमेरिका से आपके नेतृत्व में हिंदेशियाई प्रजातंत्र ने उनका सफल सामना किया, वह प्रायः सभी जानते हैं। अततोगत्वा डच सर-

(शेष पृष्ठ १६ पर)

सोवियट रूस की महाक्रांति

क्या वहाँ किसान-मजदूर का वास्तविक राज्य है ?

लेखिका, कुमारी लाज वरमानी एम० ए०

सोवियट रूस की महाक्रांति हुई और कहा जाता है कि वहां किसानों और मजदूरों का राज्य स्थापित हो गया है, किंतु क्या वास्तव में आज का रूस किसानों और मजदूरों का जनतंत्र है ? लेखिका इस लेख में इसी संबन्ध में प्रकाश डाला है जो आधुनिक रूस की जानकारी से पूर्ण है। लेख पठनीय तथा ज्ञातव्य है।

रूस की क्रांति में और फ्रांस की क्रांति में बहुत समानता है किन्तु फ्रांस की क्रान्ति सफल होने पर भी स्वतंत्रता समानता, और भ्रातृत्व वास्तविक रूप से स्थापित नहीं कर सकी थी जब कि रूसी क्रांति ने न केवल रूस में स्वतंत्रता, समानता, भ्रातृत्व ला दिया है बल्कि संसार के सभी देशों में शोषित वर्ग को अधिकार दिला दिए हैं

यों तो सोलवीं शताब्दी से ही रूसी किसानों पर बहुत अनाचार हो रहे थे। किन्तु नाई कोलस द्वितीय (१९८४ के १९१७) के राज्य में उनका बहुत बुरा हाल हुआ '। महत्त्वाकांक्षी जार अपने सामराज्य को बढ़ाना चाहते थे और इसके लिए युद्ध करते थे और इन युद्धों का भार गरीब किसानों पर पड़ता थ। १९०५ में जापान में रूस को शिकस्त दी जिसके कारण जार की इज्जत खाक में मिल गई। १९०० के आर्थिक संकट ने किसानों में और मजदूरों में बेचैनी पै.ा कर दी। इसलिए जगह जगह हड़ताले शुरू हुईं। इसका परिणाम १९०५ की क्रान्ति थी। मजदूर जार के पास गये कि वह उनकी कठिनाइयां दूर करे। किन्तु उन पर गोली चलायी गयीं जिससे एक हजार आदमी मारे गए और बहुत से जख्मी हुए। अब जनता ने जार कत विरोध किया। जार ने विवश होकर डूमा (Duma) अर्थात् लोक सभा बनाने की घोषणा की, किन्तु यह उसकी चतुराई थी। वास्तव में वह जनता को कोई अधिकार नहीं देना चाहता था।

१९०५ में (Tanis) लेनिन रूस आ गया और उसने स्टेलिन के साथ मिलकर एक पार्टी बनाई कुछ कारणों से उन्हें अधिक सफलता न हुई और लेनिन को रूस छोड़ना पड़ा। इस काल में महासमर आरम्भ हो गया। अप्रेल १९१७ में लेनिन फिर रूस लौटा और उसने अपनी मांगे जार के सामने रक्खी जिसमें मुख्य यें थीं।

(१) युद्ध समाप्त किया जाए

(२) राज्य शक्ति सेवियट पंचायत को दे दी जाय,

(३) भूमि का राष्ट्रीय करण किया जाए। लेनिन ने देखा कि जनता शास्त्रिक आन्दोंलन के लिए तैयार है। इसलिए उसने २४ अक्टूबर १९१७ को शहर पर कब्जा कर लिया, और जार के महल पर आक्रमण किया २६ अक्टूबर को रूस में प्रजा का राज्य स्थापित हो गया।

५ प्रजा का राज्य स्थापित होते ही लेनिन ने निम्नलिखित सुधार किए।

पुलीस का स्थान मलिश्या ने ले लिया।

(२) जनता के न्यायालय बनाये गए।

(३) सब को एक समान नागरिक अधिकार मिल गए।

(४) राज्य को धर्म विहीन कर दिया।

(५) रूसी भाषा को सरल बना दिया।

(६) सब जातियों को एक समान अधिकार मिल गए।

शोशलिस्ट राज्य स्थापित होते ही सरकार को वास्तविक कठिनाइयों ने आ घेरा और उन्हें बहुत सख्त कदम उठाने पड़े।

८ जुलाई १९१८ को निकलस द्वितीय और उसके कुटम्ब को मौत के घाट उतारना पड़ा। अंग्रेजों, जर्मनो तुर्कों और जपानियों ने रूस के बहुत से हिस्सों पर कब्जा कर लिया था। उन्होंने सोवियत राज्य को समाप्त करने कीहर एक प्रकार चेष्टा की थी, किन्तु धीरे धीरे रुसियों ने इन सब शक्तियों को रूस से बाहर निकाल दिया।

इसके अतिरिक्त उन लोगों ने जिन्हें जार के जमाने में अधिकार प्राप्त थे सेवियट राज्य के विरुद्ध सिर उठाया और रूस में गृह युद्ध आरम्भ हो गया किन्तु इसमें भी सोशलिस्ट सफल रहे और मध्य एशिया और दूर पूर्व तक सोवियत राज्य स्थापित हो गया। लेनिन अपनी पार्टी में भी बहुत विरोध का सामना करना पड़ा। मार्च १९२१ तक लेनिन का प्रोग्राम स्वीकार न किया गया था। दिसम्बर १९२२ में यूनियन आफ सोवियेट सोशलिस्ट रिपब्लिक बनाई गई जिसमें उस समय एशियन ट्रान्स कोकेशियन, वैलोरशियन और यूक्रेनियन, रिपब्लिक सम्मिलत हुए। २१ जनवरी १९२४ को लेनिन की मृत्यु हो गई किन्तु रूस ने इसकी नीति पर डटे रहने का निश्चय किया।

१९२२ में रूस की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति सम्भल गई और इसे जनेवा के कान्फरेन्स में सम्मिलित होने के लिए निमंत्रण दिया ! गया इसके पश्चात दूसरे देशों में कम्युनिस्ट परोगैण्डा आरम्भ हुआ और इंगलैन्ड, जर्मनी चीन पोलैण्ड और दूसरे कई देशों ने रूस से राजनैतिक सम्बन्ध तोड़ दिए। रूस की घरेलू स्थिति भी बिगड़ने लगी और ट्रोस्की ने स्टेलिन का विरोध करना शुरू किया। १९२७ में ट्रोटस्की को पार्टी से निकाल दिया किन्तु १९३० तक रूस में पूरी शान्ति स्थापित न हो सकी १९३७ में फिर उपद्रव खड़ा हुआ किन्तु विरोधियों पर मुक दमें जलाऐ गए। और उन्हें समाप्त कर दिया गया।

रूस पूरी तरह संम्भल न पाया था कि दूसरा महासमर आरम्भ हो गया।

रूस में अभी तक परिस्थितियों ने स्थायी रूप धारण न ीं किया अभी तक भी वहाँ साम्यवाद का सिद्धान्त हर एक व्यक्ति को उससे आवश्यकता के अनुसार मिले स्थापित नहीं हो पाया। समाजवाद की ओर रूस ने उन्नति बहुत की है किन्तु अभो बहुत कुछ करना बाकी है। रुस विश्व शान्ति चाहता है कि उसे अपनी स्थिति संभालने का अवसर मिले।

सोवियट रूस के रहस्यपूर्ण डिक्टेटर मार्शल स्टालिन।

गीत

लेखक, श्री धर्मवीर भारती एम० ए०

तुम कितनी सुन्दर लगती हो,
जब तुम हो जाती हो उदास !
ज्यों किसी गुलाबी दुनिया में सूने खंडहर के आस पास,
मदभरी चांदनी लगती हो !
तुम कितनी सुन्दर लगती हो !

मुंह पर ढंक लेती हो आंचल,
ज्यों डूब रहे रवि पर बादल;
या दिन भर उड़कर थकी किरन
सो जाती है पाँखें समेट आंचल में अलस उदासी बन;
दो भूले भटके सांध्य विहग पुतली में कर लेते निवास !
तुम कितनी सुन्दर लगती हो जब तुम हो जाती हो उदास !

खारे आंसू से धुले गाल,
रूखे हल्के अधखुले बाल,
बालों में अजब सुनहला पन,
झरतीं ज्यों रेशम की किरनें संझा की बदली से छन छन !
मिसरी के होटों पर सूखी किन अरमानों की विकल प्यास !!

भंवरों की पांतें उतर उतर
कानों में झुक कर गुन गुन कर,
हैं पूछ रहीं क्या बात सखी ?
उन्मन पलकों की कोरों में क्यों दबी ढंकी बरसात सखी !
चम्पई वक्ष को छूकर क्यों उड़ जाती केसर की उसांस ?''
तुम कितनी सुन्दर लगती हो जब तुम हो जाती हो उदास !
ज्यों किसी गुलाबी दुनिया में, सूने खंडहर के आसपास,
मदभरी चांदनी जगती हो !

श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

आज के जीवन पर कुछ मनोरंजक संस्मरण

लेखक, शिवचन्द्र नागर एम० ए०

आधुनिक हिन्दी युगप्रवर्तक कवि पंडित सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जीवन उलझन से पूर्ण है। वह हिन्दी के तपे हुए साहित्यकार हैं, किन्तु उनकी परिस्थितियाँ वास्तव में दुख:जनक तथा चिन्तनीय हैं। इस सुन्दर लेख में लेखक ने निराला जी के आज के जीवन पर अपने अनुभव से कुछ संस्मरण लिखा है, जो पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

आज लगभग आठ वर्ष हो गये जब मैं ने एक सभामंच पर कवियों के बीच विराजमान एक कवि को देखा था—बड़ी ही कौतूहल पूर्ण दृष्टि से। बात यह थी कि सब से निराला था वह मुख और सबसे निराली थी उस मुख पर अंकित रेखायें। उन रेखाओं के भीतर क्या था इसे उस समय न तो मैं पढ़ ही सकता था और न मेरा प्रयत्न ही रहा पर वे खायें इतनी स्पष्ट और आकर्षक थीं कि मेरे अन्तर-पट पर आज भी उस दिन की तरह ही अंकित हैं—काले, घने, लंबे और बिखरे हुए बालों के बीच से हलकी अरुणिक छाया से मिश्रित गेहुँए रङ्ग का ओजस्वी पर फिर भी सुकुमार चेहरा चारों ओर कला और पौरुष की मुखर किरणें बखेर रहा था। उनकी घनी काली भँवों के नीचे दो विशाल आभामय नेत्र मुझे आज भी याद है, ऐसे लगते थे कि जैसे इन्होंने अपने में विश्व भर की कला, रस, मद और प्रतिभा समाहित कर रक्खी हो, और इनका उभरा हुआ विशाल भाल था उनके बुद्धि वैभव और मन की समृद्धि का परिचायक।

कभी कभी किसी अन्य कवि की पंक्ति पर इस कवि की सौम्य छाया वाली आकृति हलकी सी स्मृति में डूब जाती थी और कभी उस आकृति की उग्र रेखायें उभर कर भृकुटियाँ वक्र हो जाती थी। पर उसके प्रत्येक अंग संचालन में एक कलात्मकता थी और थी एक अद्भुत मौलिकता, कोई सामान्य द्रष्टा भी उन्हें एक ही दृष्टि में देख कर कह सकता था कि यह कोई कलाकार है।' ऐसी रेखाओं से निर्मित व्यक्तित्व वाले, ये ही थे महाकवि निराला जी।

फिर उन्होंने अपनी एक कविता पढ़ी—"जागो फिर एक बार।" उनकी स्पष्ट ओजपूर्ण सरस और गंभीर वाणी उच्च स्वरों में फूट पड़ी—जैसे किसी कंदरा के भीतर से प्रखर धारा वाला निर्झर फूट पड़ा हो, धीरे-धीरे थोड़े से ही पलों के उपरांत ऐसा लगने लगा कि जैसे उनके रोम-रोम से कविता प्रतिध्वनित हो रही हो और या यों कहूं कि जैसे वे स्वयं मानव-शरीर में लिखी हुई वह सुन्दर कविता हों। तदुपरांत उन्होंने और भी कई कविता सुनायीं। इसके उपरांत मेरे मन में कई प्रश्न उठे—यह इतना हृष्ट-पुष्ट बलिष्ठ और विशालकाय पुरुष है पर फिर भी कवि है? इसके वाणी और मुख इतने ओज और पौरुष से परिपूर्ण है पर फ़िर भी सुकुमार भावों को वहन करते हैं? कभी यह मुख गुलाब की फूल की तरह खिल उठता है और कभी वज्र की भांति कठोर हो जाता है? कैसा है यह अद्भुत रहस्यमय व्यक्तित्त्व बज्रादीप कठोराणि रदूनि कुसुमादपि इव?

क-मुदसी कलाकार की भव्य और आकर्षक मूर्ति को केवल एक तहमद बाँध कर दारागञ्ज प्रयाग की सड़कों पर फिरते हुए देखा और उसी वेश भूषा में इक्के में बैठकर कहीं जाते हुए पर वहां भी यह शरीर उतना ही आकर्षक लग रहा था जितना कि उस दिन उस कवि सम्मेलन के सभामंच पर स्वच्छ धोती और कुर्ते में, उनकी मुख मुद्रा पर वही चिन्ह अंकित थे—कलात्मकता के, गंभीरता के स्वतंत्रता के मस्ती के।

इन्हीं के दर्शन फिर मैंने बनारस में इनकी स्वर्ण जयंती के अवसर पर किये, उस समय इन्होंने दन्डी स्वामियों की तरह सिर के बाल मुँड़ा लिये थे और तब ये संध्याभा के से पीतांबरी रेशमी वस्त्रों में बिल्कुल ऐसे लग रहे थे कि जैसे स्वामी विवेकानंद फिर इस पृथ्वी पर अवतरित हो गये हो। इनकी वह भव्य मूर्ति भी भुलाई नहीं जा सकती।

इनकी एक मूर्ति और मेरे मन पटल पर अंकित है जो मुझे उपयुक्त सभी मूर्तियों से अधिक आकर्षक लगती है, अभी कुछ दिन पहले मैंने इन्हें देखा तो इन्होंने सिर के केश दाढ़ी और मूँछ सभी बढ़ा रक्खी थीं, उस समय निराला जी को देख कर मेरा तो उन्हें महर्षि निराला कहने का मन हुआ। यह बात सत्य थी कि विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर की भाँति इनके बढ़े हुए केश न तो सुलझे हुये ही थे और न सँभले हुए ही; न तो इनके शरीर पर एक सुन्दर रेशमी चोगा हो या और न पैरों में हलकी सी कामदार जूतियाँ पर फिर भी अपने सादे खादी की धोती तथा उपरणों में—

दिब्यामा से दीप्त हो रहा
श्मश्रुयुक्त मुख उनका।

एक दिन मेघमयी सतरंगी संध्या की छाया में इस कला-सम्राट को बड़ी ही गंभीर मुद्रा में केवल एक मोटी खादी की धोती पहने हुए, 'साहित्यकार संसद' में प्लावनमयी गङ्गा के तट पर बैठे हुए देखा घोर एकान्त में जिसमें कूल हीन प्रवाहिनी गङ्गा का धू-धू स्वर वातावरण की गंभीरता को और भी भयावह बनाये दे रहा था—यह मूर्ति बैठी हुई थी निश्चल और निश्चेष्ट जैसे प्रलय के उपरांत महर्षि मनु अब सृष्टि के आरम्भ और विकास की महान् तथा गंभीर समस्या पर सोच रहे हों।

इनके वाह्य व्यक्तित्व को लेकर मेरी स्मृति के रेखाओं इस कलाकार के और भी अनेक चित्र अंकित हैं और समय की छाया में वे धुँधले भी नहीं हो पायेंगे क्योंकि इनके व्यक्तित्व की यह एक प्रमुख विशेषता है कि यह व्यक्ति किसी भी वेश में कहीं से निकल जाये, बच्चे-बूढ़े, नवयुवक शिक्षित और अशिक्षित सभी के मन और दृष्टियों को आकर्षित कर लेगा, यह बात दूसरी है कि उनमें से कुछ इन्हें कौतूहल से देखेंगे, कुछ जिज्ञासा से और कुछ प्रशंसा मुग्ध दृष्टि से, पर यह कोई असाधारण यथा सब से निराला व्यक्तित्व है, द्रष्टा के में यह धारणा तो उसकी पहली ही दृष्टि भर देती है।

स्वस्थ और सुन्दर शरीर के लिये वेश-भूषा गौण होती है और यह व्यक्ति तो सदैव उस ओर से उदासीन भी रहा है, पर इनमें कुछ शारीरिक सौंदर्य ही उस फूल के सौंदर्य की भाँति है कि जो नीलम के रङ्ग के रजत अथवा स्वर्णिम फूल दान में तो सुन्दर लगता ही है पर मिट्टी में या काँटों में पड़ा हुआ भी काम सुन्दर नहीं लगता।

एक बार एक यूगोस्लाव महिला मिस पी० एम० कैम्प, इनसे मिलने के लिये मेरे साथ गईं, मुझे इन दोनों के बीच दुभाषिये का काम करना पड़ा क्योंकि मिस कैंप हिन्दी नहीं समझ पाती थीं। इन्होंने निराला जी से मिलने पर कहा, "आप से मिल कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई" तो ये बोले मैं जंगली आदमी bare headəd bare fooyed and bare bodied मुझसे मिल कर किसी को क्या प्रसन्नता होगी।

"But you still look beautiful" मिसकैंप ने कहा इस पर भारत वर्ष की दीनता की ओर संकेत करते हुए निराला जी बोले :—

"What is beautiful in India is the nakedness"

उस दिन निराला जी से कई घंटे तक बात चीत हुई, अन्त में लौटते हुए रास्ते मे मैंने मिस कैंप से पूछा, "What is your impression about Nirala ji ?-'

और उन्होंने तुरन्त उत्तर दिया—

"He is quite a handsome attractive and interesting personality."

निराला जी का व्यक्तित्व विषमताओं के कोटों के बीच खिला हुआ फूल है,

(शेष पृष्ठ १४ पर)

हिन्दी के युगप्रवर्तक कवि पंडित सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

स्वास्थ्य और व्यायाम

प्रमेह रोग

इसका उपयोगी उपचार क्या है?

लेखक, वैद्य सभाकान्त झा, शास्त्री

आजकल देश में इस रोग का प्रचार कितना बढ़ा हुआ है यह मैं अपनी डाक में मरीजों के पत्रों से जाना हूँ। जितने पत्र इस मर्ज़ के मरीजों के रहते हैं, उनसे चौथाई पत्र अन्य मर्जों के रोगियों से आते है। यद्यपि मैं अपने को प्रमेह रोग का विशेषज्ञ नहीं मानता, फिर भी यथा-पति जिसे जैसी व्यवस्था देते हैं, उससे लाभ अवश्य होता है। सम्भव है, लोग इसीसे मुझे प्रमेह रोग का विशेषज्ञ समझते हों। अस्तु!

वास्तव में कभी कभी मरीजों के पत्र पढ़कर आँखों में आँसू भर आते हैं। बहुत लोग अपनी गरीबी के कारण अपनी चिकित्सा नहीं करा पाते। उनके पास इतने ज्यादह पैसे नहीं कि वे वैद्य या डाक्टर को देकर अपने रोग से छुटकारा पावें। खास कर डाक्टरों का तो स्वभाव होता है, कि वे ज्यादह पैसेवालों के तरफ ध्यान देंगे।

दूसरी बात यह है कि हमारे अधिकांश भारतीय वैद्यों को ज्वर, खाँसी; अतिसार आदि बिमारियों का अधिक अनुभव रहता है, क्योंकि ऐसी ही रोगी उन्हें ज्यादह मिलते हैं। अतः प्रमेह रोगी का इलाज सफलता पूर्वक कम कर सकते हैं।

प्रमेह रोग पहचानना बड़ा कठिन है। क्योंकि इसके सब उपद्रव-लक्षण एक साथ उत्पन्न न होकर क्रमशः और अधिक दिन में उत्पन्न होते हैं और यही कारण है कि इस रोग से जल्दी लोग मरते नहीं तथा यह रोग पुराना होने पर ही असाध्यावस्था में आता है। ऐसे कितने प्रमेह रोगी देखे गये हैं जिनको प्रमेह रोग होते हुए भी सन्तानें भी हैं, वे अपना काम धन्धा भी मजे में करते जाते हैं। जब यह रोग पुराना होता है, तब कहीं रोगी का ध्यान इधर आता है। अतः प्रमेह के थोड़े भी लक्षण प्रकट होते ही रोगी को सावधान हो जाना चाहिये।

इसकी परीक्षा के लिए विशेष सावधानी की जरूरत है, क्योंकि कुछ लक्षण ऐसे सूक्ष्म हैं कि जल्दी समझ में आते ही नहीं है। जब आदमी अच्छे से अच्छा खाना खाने पर भी कमजोर होता है, शरीर में ताकत नहीं मालूम होती, तब ना समझी के कारण लोग दूध, घी, मलाई, रबड़ी आदि पौष्टिकपदार्थ ताकत बढ़ाने के लिये खाने लगते हैं। परन्तु इसका फल उल्टा ही होता है। जब उक्त पौष्टिक पदार्थ खाने पर भी कमजोर होते जाते हैं, स्त्री-प्रसंग की इच्छा नहीं होती, तब उनका होश ठिकाने आता है और वे सीधे वैद्य या डाक्टर के पास पहुँचते हैं। फिर यदि अनुभवी चिकित्सक हुए, तो मूत्रादि परीक्षा कर बता दिया, कि तुम्हें 'प्रमेह' हो गया है। तुम दूध, घी, मक्खन आदि स्निग्ध पदार्थ मत खाओ, क्योंकि इससे कफ की वृद्धि होती है और कफ बढ़ाने वाले जितने पदार्थ हैं, वे सब प्रमेह रोग के कारण हैं। यथा—

"प्रमेह हेतुः कफकृच सर्वम्"

अर्थात् समस्त कफ कारी पदार्थ प्रमेह उत्पन्न करने वाले हैं। कभी कभी अनुभवी वैद्य भी धोखा खा जाते हैं और कह देते हैं कि 'कुछ नहीं साधारण कमजोरी है। आप दूध-घी का सेवन करें और ताकत बढ़ाने वाली हम दवा (मोदक) देते हैं, इसे दूध के साथ लें। शीघ्र ही शरीर में ताकत आ जावेगी।' इत्यादि। परन्तु इस नासमझी का फल क्या होता है? प्रति वर्ष सैकड़ों प्रमेह रोगी अकाल ही मृत्यु मुख में चले जाते हैं। अतः यह खूब ध्यान रखना चाहिये कि प्रमेह रोगी को धातुवर्द्धक और वाजीकरण औषधियां कभी नहीं देनी चाहिए।

प्रमेह रोगी को यदि धातुवर्द्धक औषधियां सेवन करायी जाती हैं, तो उनसे नवीन धातु तो पैदा होती है, परन्तु वह भी पूर्व-दूषित वीर्य्य में मिलकर दूषित हो जाता है। इस तरह प्रमेह और भी बढ़ जाता है। वीर्य्य दूषित होने से वीर्य्य शक्ति स्वयं नष्ट हो जाती है। जब प्रमेह भयंकर रूप धारण कर लेता है तब दारुण पीडिकायें पैदा हो जाती हैं। उनका विकार इन्द्रियों में पहुँच कर ध्वज भंग—नपुंसकता को जन्म देता है। इस तरह पुरुष का जन्म निरर्थक हो जाता है।

बहुत मरीज लिखा करते हैं, कि हमने अनेक तरह की दवाएँ सेवन की, परन्तु प्रमेह रोग नहीं गया।' वास्तव में यह रोग ही भयंकर होता है यदि प्रारम्भ में ही इसका इलाज नहीं हुआ, तो विधाता भी इसे भगाने में असमर्थ हो जाते हैं।

कफज प्रमेह सुख साध्य होता है, पित्तज प्रमेह कष्ट साध्य, तथा वातज प्रमेह तो असाध्य ही होता है। इसीतरह मधुमेह, वंशानुगत प्रमेह भी असाध्य होते हैं।

प्रमेह पुराना होने पर 'मधुमेह' हो जाता है। मधुमेह के साधारण लक्षण ये हैं, कि पेशाब में चीटियां लगने लगती हैं। अतः प्रमेह की प्रारम्भिक अवस्था में ही चिकित्सा कर इससे छुटकारा पा लेना चाहिये।

अगर प्रमेह के सम्पूर्ण लक्षण न मिलें, कुछ ही दिख पड़ें, बस, समझ लीजिये की प्रमेह है। यदि प्रमेह नया हो, तो नीचे लिखे प्रयोगों में से कोई भी प्रयोग लाभान्वित हो सकते हैं।

अभ्रक भस्म शतपुटी दो रत्ती त्रिफला चूर्ण दो माशे एक तोला शहद के साथ प्रातः सायम् दें; अथवा नाग (शीशा) भस्म तीन रत्ती, ताजे आंवले का स्वरस (अभाव में सूखे आँवले का महीन चूर्ण) दो माशे, हल्दी चूर्ण एक माशा मिला शहद के साथ दें;

अथवा

शुद्ध शीलाजीत, वंगभस्म छोटी इलायची का चूर्ण और वंशलोचन प्रत्येक दो-दो रत्ती लेकर शहद के साथ (या गोलियाँ बनाकर) सबेरे-शाम दें। एक माशा शुद्ध गन्धक में एक माशा मिश्री मिलाकर शहद के साथ लेने से भी प्रमेह दूर हो जाता है।

त्रिफले का चूर्ण दो माशे और शुद्ध शिलाजीत दो रत्ती दोनों एकत्र कर शहद के साथ लेने से भी प्रमेह दूर हो जाता है।

ताजे आँवले के दो तोला स्वरस में हल्दी का चूर्ण एक माशा तथा शहद एक तोला मिलाकर लेने से भी लाभ होता है।

आँवले का स्वरस, गिलोय का रस, सेमल की मूसली, शिलाजीत, त्रिफला वंगभस्म आदि नये प्रमेह की अमोघ औषधि है।

अगर प्रमेह पुराना हो, तो वसन्तकुसुमाकर प्रमेह मिहिर तेल सेवन करायें। अथवा प्रातः चन्द्रप्रभावटी और शाम को बसन्त कुसुमाकर तथा प्रमेह तेल की मालिश करावें। अवश्य लाभ होगा। इस प्रयोग से हमने अनेक प्रमेह रोगी अच्छे किये हैं।

इसमें इतना ध्यान रखना चाहिए कि रोगी गरम मिजाज का तो नहीं है, तथा बलाबल ठीक है, कि नहीं इत्यादि क्योंकि इसमें बसन्तकुसुमाकर रस है। यदि सर्द मिजाज वाला रोगी हो, तो बसन्तकुसुमाकर दो रत्ती की मात्रा में दें और गर्म मिजाजवाला हो, तो आधी रत्ती से एक रत्ती तक देना ठीक होगा। ज्यादह मात्रा में देने से दवा फायदा नहीं करती। बल्कि रोग और रोगी का बलाबल देखकर उचित मात्रा में दवा देने से लाभ होता है।

इसी तरह अनुपात के लिये भी समझें। अगर कफ और वातज प्रमेह हो, तो शहद में दें; पित्तज प्रमेह हो, तो शर्बत चन्दन में या गिलोय के रस में

(शेष पृष्ठ १६ पर)

(शेष पृष्ठ ८ का)

इस फूल ने अपने कलेजे के रक्त से विश्व के रंग भरा सौन्दर्य तथा विश्व से मिली हुई वेदना की झंझा के झोकों को अपने प्राणों में समाहित कर विश्व को अक्षय सुरभि ही प्रदान की है पर न तो इसने काँटों के आगे सिर ही झुकाया और न उस कटीले वृंत से अपना दामन छुड़ा कर अपने को धूल में ही आत्म सात कर दिया।

इन्होंने जैसे कोई महान दार्शनिक आत्मा में परमात्मा अथवा विन्दु में सिंधु के दर्शन को यस प्रकार अपने व्यक्तित्व सुख-दुख में विश्व के सुख दुख के दर्शन किये हैं। जन साधारण की आवश्यकता के पीछे ये अपनी आवश्यकता भूल ही नहीं जाते बल्कि अपने को अभाव में रखकर दूसरे के अभाव की मूर्ति के लिये आकुल रहते हैं। दृष्टिकोण .ी यह व्यापकता और उदारता सदा से इनके काव्यऔर जीवन का प्राण रही है। अपने आंसू पी जाने के लिये इनका मन बहुत बड़ा है, पर दूसरों के आँसू देखकर उपजी हुई व्यथा को पी जाने के लिये बहुत छोटा। कितनी बार इन्होंने अपने वस्त्र और अपने सामने रक्खा हुआ भोजन नंगों और भूखों को देकर अपने खुले हुए शरीर से शीत, वर्षा औरआतप का स्वागत किया होगा तथा अपनी आत्म तृप्ति में अपनी क्षुधा को डुबोया होगा और कितनी बार इन्होंने अपने नये जूते चप्पल यों ही चलते फिरते नंगे पैरों वाले दीन यात्रियों को देकर पथ के कंकड़ और काँटों का अपने रक्त से अभिषेक किया होगा।

एक बार मेरे एक मित्र इनसे मिलने गये। उस दिन वर्षा हुई थी और हो भी रही थी हलकी हलकी सर्दी भी थी और उन महोदय ने केवल एक पतली सी कमीज पहन रक्खी थी और साथ ही उस कमीज में भी गले के बटन नहीं थे। निराला जी उन्हें देखते ही उग्र स्वर में क्रुद्ध होकर बोले "मैं तुमसे बात नहीं करूंगा। तुम तुरन्त जाओ और पहले घर से कपड़े पहन कर आओ।" वह तो सौभाग्य से या दुर्भाग्य से निरालाजी के शरीर पर उस समय एक लुंगी के के अतिरिक्त कुछ नहीं था नहीं तो निस्संदेह वे उसे उठाकर उन्हें दे देते और यदि वे महाशय न लेते तो उन्हें निराला जी की डांट भी खानी पड़ती जो व्यक्ति स्वयं जिस विषमता में रहने का अभ्यस्त हो गया है वह दूसरे व्यक्तियों को उसी विषमता से होने वाली पीड़ा के लिये आज भी इतना ही सजग हैं कि उनकी हलकी सी व्यथा के लिये उसके प्राण आकुल हो उठते हैं उस व्यक्ति के लिये 'महान्' शब्द भी बहुत छोटा लगता है। अपना सभी कुछ देने के उपरांत यदि किसी को अपने कल्याण के लिये निराला के निरीह प्राणों की आवश्यकता हो तो निस्संदेह वे हँसते-हँसते दे देंगे। इस दानशीलता और आत्मत्याग के लिये मैं उन्हें इस युग के कर्ण तो नहीं कह सकता क्योंकि वह राजा था, पर हां इसमें कोई संशय नहीं कि निराला इस रूप में महर्षि दधीचि की भाँति ही महान् है।

यह बात सत्य है कि निराला जी ने कुछ व्यक्तियों से कभी कुछ रुपया माँग लिया होगा और कुछ व्यक्तियों ने इन्हें कुछ पया दे भी दिया होगा, पर इस विनमय में याचना के भावों या दीनता की छाया ने निराला के व्यक्तित्व को कभी धूमिल नहीं किया जब उनके पास उनके पास कुछ नहीं रहा तो गोल्डस्मिथ की तरह एक आत्म सम्मान के साथ अपने मित्रों से ले भी लिया है। और जब उनके पास हुआ है तो हरिश्चन्द्रदानी की तरह अपरचितों तक को दे भी दिया है इस प्रकार ये उस विशाल सिंधु के भाँति हैं कि जो हँसते हँसते अपनी भुजायें पसार कर सरिताओं के दान ले भी लेता है और फिर समय आने पर अपने में से ही अनेक मेघ मलाओं की सृष्टि कर प्यासों के अधरों पर पीयूष वृष्टि भी कर देता है और इस सरिताओं से सिंधु सम्मानित होता हैं और सिंधु सरितायें।

जैसे हिमाचल के उत्तुँग शिखर यदि एक ओर गगन से अपना संबंध रखते हैं तो दूसरी ओर धरा से भी, इसी प्रकार जहां तक संबंधों की बात है निरालाजी का स्नेह भी इतना ही व्यापक है। यदि किसी विशेष त्यौहार पर कोई बड़ा आदमी किसी स्टेट का राजा महाराजा या नगर का प्रभुत्व व्यक्ति इन्हें याद आता है तो दूसरी ओर इनका मित्र लखनऊ का इक्के वाला, पान वाला, अपने गांव के रिश्ते की बेटियां पोतियां तथा सहित्यिक परिवार के इनके नये सदस्य भी कम याद नहीं आते।

इनमें दर्प या अभिमान जैसी कोई वस्तु नहीं पर स्वाभिमान कूट कूट कर भरा है। संबंधों में व्यवहार की कुत्रिमता या ऊपरी चमक-दमक तथा Formality में इनका विश्वास नहीं। आज के युग में तो संबंधों में बड़ा Calculation गणना आ गई है जैसे कि यदि कोई आपके यहां दो बार आ चुका है तो संबंध बनाये रखने के लिये यह आवश्यक है कि आप भी उसके यहां एक बार आवश्य जाइये इत्यादि इत्यादि पर निराला जी, हो सकता है, किसी महल वाले के यहां बीस बार बुलाये जाने पर पर भी न जाये और एक झोपड़ी वाले के यहां बिना बुलाये भी चले जायें। आतिथ्य में जितनी प्रसन्नता उन्हें आपके षटरस पदार्थों के ग्रहण करने में होगी उतनी आप के सूखे चनों में भी केवल शर्त यही है कि आप कहीं जरा भी उनके स्वाभिमान को ठेस न पहुँचाइये क्योंकि ऋतुओं परिवर्तनशील वातावरण की विषमताओं को पराजित करने के लिये इनका शरीर जितना विशाल' बलिष्ठ मजबूत और सहनशील है उसके भीतर उतना ही कोमल एक मन भी है और उसके भीतर जलती है प्रतिभा की सजग दीपशिखा जिस पर बाहर से निरंतर इतने आघात हुए हैं कि यही कहने मन होता है कि—
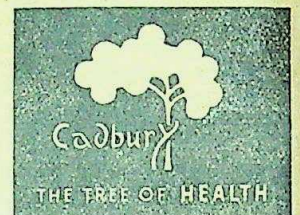
> "जलना ही रहस्य है इसका
> बुझना नैसर्गिक बात।"

निराला जी की जीवनधारा सदैव प्रतिकूलताओं के बीच बही है पर फिर भी इनके स्वभाव में न तो चिड़चिड़ापन ही आया और नरूखापन हो पर यह बात सत्य है कि मन के प्रतिकूल बात को शांति से चुपचाप सुन लेने की क्षमता इनमें नहीं जरा, सी देर में ये किसी भी व्यक्ति पर क्रुद्ध हो सकते हैं पर उसके प्रति वैर की छाया कभी भी इनकी मन और बुद्धि को ग्रस्त नहीं कर पाती।

इनके स्वाभाव में एक चरम सीमा की स्पष्ट वादिता है पर ना समझ लोग इसी को अक्खड़ पान कहते है। जिस बात को ये जैसा समझते हैं उसे वैसे ही उसी समय उस व्यक्ति विशेष के मुँह से पर कह डालते चाहे वह व्यक्ति देश का कोई महान् व्यक्तित्व हो और या कोई साधारण चलता-फिरता आदमी।

स्पष्ट वादिता के पास ही दूसरा गुण निश्छलता है। आज के युग में जहां छल को चातुर्य कौशल और विवेक की संज्ञा दी जाती है, निश्छल और सत्य वादिता दुर्लभ हो गई हैं और किसी में यदि थोड़ी बहुत मात्रा में शेष हैं भी तो इस युग से वह कदाचित ही अपना सामजस्य स्थापित कर पाये। इस दृष्टि से ह[illegible] निराला जी को इस युग का कैसे क[illegible] किसी ने एक बार निराला जी यह कहा "निराला जी! अमुक प्रकाशक [illegible] आपकी पुस्तकें छापी हैं उसको आप [illegible] लिख कर तो कोई कोपराइट बेच [illegible] नहीं दिया अपनी पुस्तकें वापिस [illegible] लीजिये न।" तो इस पर निराला [illegible] ने उत्तर दिया कि "हां भाई लिख [illegible] तो नहीं दिया पर मुँह से तो कह दि[illegible] था अब मुझसे झूट तो नहीं बो[illegible] जायगा।"

(शेष अगले अंक में)

मातृमंदिर

हिन्दू कोड बिल
क्या संबंध-विच्छेद सांस्कृतिक दृष्टि से घातक है?

लेखक, श्रीमती चंद्रकांता त्रिपाठी

आज भारत अपनी शान अपना नारी आदर्श का बल जो विश्व में सराहनीय था और है, उसे खोने जा रही है। नारी ही प्रकृति है, नारी देवी है, नारी दानवी भी जो दानवों को जन्म देती हैं। आज भारत में भी पश्चिमी रंग में रंगी हुई स्वार्थी बहनें भी हैं। हिन्दू कोडबिल में जहां बहुत सी अच्छाइयां हैं वहां पति-पत्नी का सम्बन्ध विच्छेद इतना कटु विषय बन गया है, और आगे इसकी वही हालत होगी जो शारदा ऐक्ट की हुई है। मेरी समझ में कोई भारतीय स्त्री इस संबंध में इस बिल को न मान सकेगी। क्योंकि, बंगाल हो या महाराष्ट्र अथवा संयुक्त प्रांत, जहां भी कन्या दान होता है वहां यह बेकार है। वर ढूंढते माता पिता यह कभी न चाहेंगे कि मेरी कन्या दुखी हो, विवाह पद्धति जो हैं, उसी प्रकार घर वर देखकर कन्या दान देगें। अब लड़की का भी कर्तव्य है कि जीवन से लेकर मृत्यु पर्यन्त अपनी जिस सत्यता से वर से प्रतिज्ञा करती है सूर्य, अग्नि, जल, वायु, वरूण और दिशायें तक साक्षी में रक्खे जाते हैं कि मनुष्य अगर मनुष्य को धोखा दे, पर प्रकृति की यह चीजें कभी क्षमा नहीं करतीं, जिसका फल अवश्य यहीं मिलता है यह अनुभव की बात है। अब रही सम्बन्ध विच्छेद और दूसरी शादी इसके लिये जो नारियां अग्रणी हैं अगर देखा जाय तो उनके इतिहास के पन्ने में उनका कोई प्रेमी अवश्य है। वह सब अपनी अपनी फिक्र में व्यस्त हैं। लेकिन नारी समाज समिस्ट में हानि होगी।

हां, भला होगा उनका, जिन्होंने दिन ही में तारे देखे थे और दो कूलों को कलंक लगा दिया, कोई दूल्हा बैठाई, सिविल मैरेज करके? उनकी तो पांचो घी मे हमेशा रहेगी, जब चाहें छोड़ सकते हैं, क्योंकि यह फैशन है, और प्रेम की खाई चौड़ी दोनों हो जाती हैं। हम लोगों को न भूलना चाहिये कि इस कोड बिल के पास हो जाने से पुरुष जो समाज और धर्म के बन्धन का लिहाज रखता है वह कामी क्रूर क्यों न हो किन्तु अपनी पत्नी या माता को घर में रखना चाहता है, बाहर चाहे जो करे। अगर घर में झगड़ा है तो शादी करके, चाहे औरत किसी की हो, किन्तु अब यह होगा कि किसका भला होगा वह स्त्री दुखी होगी, कचहरी की दौड़ शुरू होगी। कुछ इधर स्त्री गवाह तैय्यार करेगी और उधर पुरुष। गवाह रुपये खा खाकर झूठी सच्ची कहेंगे बकेंगे, दोनों तरफ के वकील की वकालत जोर पकड़ेगी, और फीस के रूपये सरकारी खजाने में होंगे, सवारी खर्च, पान पत्ता सभी कुछ होगा। धन की बरबादी तो होगी ही किन्तु अब जन की रक्षा भी संभव नहीं। एक पुरानी कहावत हैं कि ना बच्चे की मां मरे ना बूढ़े की जोय। मां बच्चे की मरी और बापने दूसरी शादी की, दूसरी मां विमाता बनकर आई तो वही दीर्घ जीवी छोटा बच्चा काल का ग्रास बन गया और कुछ बड़ा हुआ तो भूत भविष्य दोनों। गूंगे बहरे हो जाते हैं तो जहाँ एक विमाता सिंहासनारूढ़ होकर इतना पुन्य कर सकती है, तो दो, चार छै तो जन धन स्वस्थ्य का क्षय करने। आंऐगी ही। स्त्री कानी, चिपटी, कलूटी कैसी भी क्यों न हो, जवानी भर पुरुष रक्खेगा, किन्तु जब उसकी अवस्था चालीस के लगभग हो जायगी और वृद्धावस्था निकट होगा तो उस औरत को कौन रक्खेगा। उससे शादी कौन करेगा? बच्चों को वह बापों के यहाँ छोड़ती आई अब क्या अगर कोई बच्चा जिन्दा है तो छोड़ी हुई मां को आदर्श मां मान कर वृद्धावस्था का सहारा होगा? इस लिये स्त्रियों की जो बालिग हैं उनसे सार्वजनिक मत लेने पर ही यह सार्वजानिक कानून लागू किया जाना चाहिए। क्योंकि भारतीय नारी पत्नी बनने के बाद मातृत्व पद की इच्छुक होती है यह उनका जन्म सिद्ध अधिकार हैं और यही नारी जीवन की सफलता है।

हैदराबाद के निजाम के निवासस्थान का एक दृश्य।

हम भारतीय स्त्री हैं यह ठीक है आज स्वतंत्र भारत हुआ है और आगे बढ़ने के लिये हम इस कानून को अवश्य मानें यह कोई ऐसा घातक नहीं है किन्तु यह हमारा सरकार है इससे हम निवेदन कर सकती हैं कि हमारी संस्कृति और सुखी जीवन को कंटकमय वह न बनायें इससे स्त्रियों में धन का लोभ और वेश्या वृत्ति उत्पन्न होगी। इतने से हमारी सरकार को समझना चाहिये कि वेश्यायें कुछ थोड़ी सी हैं किसी के घर नहीं जाती तब तो सहर के पैसे वाले और गरीब कोई इनसे शादी न करके भी तन मन धन तीनों से चौपट हो जाता है कोई गवर्नमेन्ट आज तक इस चीज को न काबू मे कर सकी, तब जब हर स्त्री में धन कमाना और हर पुरुष को आसानी से छोड़कर दूसरा पति वरण करेगी तो यह वह कब चाहेगी कि मैं किसी मध्यम श्रेणी के पुरुष की पत्नी बनूँ! और तब बीमारी से धन जन और दुराचार अत्याचार से रक्षा होगी इस तरह आगे हमारा देश पतन के उस गर्त में गिर जायगा जो कभी भी संभल नहीं सकेगा! किसी सरकार की स्थापना जब होती है तो सरकार की न कोई जाति होती है न धर्म होता है। वह केवल न्याय और रक्षा के लिये होती हैं। आज राम, कृष्ण, बुद्ध, अशोक, अकबर, बापू के और हमारे कोहनूर जवाहर लालजी को जन्म देने वाली हमारी भारतीय रमणीय ही थीं जिन्होंने अपनी लड़ाई में एटम बम कोशर्म खिलाई- ऐसी पवित्र चीज को उस तरह नष्ट न करें जैसे एक बच्चा अमरूद खाकर सरदी के कारण मर जाय तो देश भर के अमरूद के पेड़ काट या जला दिये जांय। क्या यह न्याय होगा! सम्बन्ध विच्छेद के बजाय संशोधन इस तरह का करना चाहिये कि सरकारी कर्मचारी या गैर सरकारी, ओहदे पर हों निम्न श्रेणी का यदि किसी पराई स्त्री या लड़की से किसी प्रकार का नाजायज प्रेम करता हुआ या नशा पीता हुआ पाया जायगा या कोई स्त्री अथवा लड़का नाजायज प्रेम करेगी तो उसे सजा द जायगी इसके लिये हमारी सरकार उस तह में पहुँच कर धन जन की रक्षा कर सकेगी। खुफिया की सच्ची रिपोर्ट पर कि नशे का पैसा और इस प्रकार के जितने झगड़े व्यभिचार के कारण पैदा होते हैं। और सम्बन्ध विच्छेद की नौबत आती है उस जड़ को उखाड़ फेकने में समर्थ होगी और धन जन की रक्षा होगी! यों इस धारा (कोडबिल) को लादने पर वही हालत होगी जो किसी चीज पर कन्ट्रोल लगाने के बाद ब्लैक मारकेट की चलती है—पुरुषों को छूट वासना तृप्ति के लिये और स्त्रियों की खराबी होना अनिवार्य है। प्रेम, तृप्ति, घृणा की तीव्र गति से।

छात्रायें चित्रकला की शिक्षा ग्रहण कर रही हैं।

(शेष पृष्ठ ५ का)

द्वितीय महायुद्ध का इतिहास तो अभी बिलकुल ताजा ही है। इस युद्ध के जमाने में दक्षिणपूर्व एशिया के प्रवासी भारतीयों ने मातृभूमि स्वाधीनता के लिये जो अद्भुत और अभूत पूर्व आत्मोत्सर्ग किया वह भारत के इतिहास का का एक अमर अध्याय बन गया है। भगवत्कृपा से उनको अमरवीर सुभाषचन्द्र बोस "नेता जी" के रूप में मिल गये। नेताजी के आव्हान पर प्रवासियों ने जहां करोड़ो रुपये नगद दिये और स्त्रियों ने गहने उतार कर उनके चरणों पर चढ़ा दिये वहां हजारों प्रवासी नरनारी आजाद हिन्द फौज में भर्ती होकर आजादी के लिये मर मिटने को तैयार हो गये। जब रंगून की सभा में नेताजी ने कहा, "भारतमाता मांगती हैं आजादी और आजादी मांगती है, बलिदान। स्वाधीनता की वेदीपर जो जयमाल चढ़ाई जाती है वह फूलों से नहीं नरमुंडों से गूँथी जाती है। तुममें से कितने शीश कटाने का सौदा करने को तैयार है?" तब सभा में उथल-पथल मच गई। सभी आजाद हिन्द फौज में नाम लिखाने को आगे बढ़े। नेताजी ने फिर कहा—, ठहरो आजादी का इतिहास स्याही से नहीं, लहू से लिखा जाता है। मेरे हाथ में यह कोई साधारण सूची नहीं है, आजादी या मौत का परवाना है। इस पर यदि तुम हस्ताक्षर करना चाहते हो तो वह काली स्याही से नहीं अपने तन के लाल लहू से करना होगा। सारी सभा चिल्ला उठी—"हम तैयार हैं।" किसी ने छुरी से किसी ने आलपीन से और किसी ने दांत से काट कर अपने शरीर से रक्त निकाला और उससे नेताजी की सूची में हस्ताक्षर बनाया।

यह सही है कि अंगरेजी फौज के लगभग पैंतीस हजार सिपाही और अफसर नेताजी की आजाद हिन्द फौज में शरीक हो गये, पर उनसे कहीं दुगुना तिगुना उस फौज में प्रवासियों की संख्या थी। हथियार की कमी के कारण बहुत से भाइयों के अरमान पूरे न हो पाये और वे हाथ मलकर रह गये। यह कौन नहीं जानता कि नेताजी ने किसी राष्ट्र से कर्ज नहीं लिया था—प्रवासियों के धन से ही आजाद हिन्द बैंक खुला था और उसी के द्वारा आजाद हिंद सरकार और आजाद हिंद फौज का संचालन होता रहा। प्रवासी भाईयो की बात तो अलग रही प्रवासी बहनों और बच्चों की भी फौज तैयार हो गई थीं। डाक्टर लक्ष्मी के नेतृत्व में औरतों को सेना ने लड़ाई के मैदान में अपना जौहर दिखाकर दुश्मन को दंग कर दिया था और बाल सेना के वीर बालक अपनी पीठपर डायनामाइट बांध कर अंगरेजों के टेंक के नीचे घुस जाते और फिर डायनामाइट में दियासलाई लगा कर अपने शरीर के साथ नरसंहारक टेंक को भी उड़ा देते थे। क्या संसार के स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में स्त्रियों और बालकों के आत्मोत्सर्ग का ऐसा कोई और उदाहरण मिल सकता है? मातृभूमि को विदेशियों के पँजे से छुड़ाने के लिक प्रवासी भारतीयों ने जो कुछ किया है वह भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायगा।

जिस दिन भारत के माथेपर स्वराज्य का तिलक चढ़ा हिमाचल और विन्ध्याचल की ऊँची चोटीपर, दिल्ली के लाल किले और राजमहलों पर देश में एक ओर से दूसरे ओर तक सरकारी इमारतों, अदालतों, डाक और तार घरों तथा रेलवे स्टेशनों पर, करोड़ों नागरिकों के मकानों पर और हिन्द महासागर में अठिलाते हुए भारत के जंगी जहाजों पर तथा अमेरिका, रूस, चीन और इंग्लैंड की राजधानियों में भारतीय दूतावास पर स्वतंत्र भारत का चक्रधारी तिरंगा झण्डा फहरानें लगा, और विश्व के कोने कोने में यह आवाज गूँज उठी कि सदियों की बेड़ी काटकर भारत आज स्वतंत्र हो गया, उस दिन विश्व के भिन्न भिन्न देशों में बसे हुए प्रवासी भारतियों के हर्षोल्लास की सीमा नहीं रही घर-घर दिवाली मनाई गई। वह दिन उनके लिये महापर्व बन गया।

विश्वयुद्ध के कारण पैदा हुई नई परिस्थिति इंग्लैंड में टोरीदल और उसके नेता चर्चिल की करारी हार और वहाँ के मजदूर दल के हाथ में ब्रिटिश साम्राज्य की बागडोर भारत में महात्मा गांधी की अहिंसात्मक लड़ाई बर्मा से भारत पर नेता जी सुभाषचन्द्र बोस की फौजी चढ़ाई और अंग्रेजों के भारतीय जल थल और नभ चार फौज में विद्रोह भाव का खुला प्रदर्शन इन सबके संयोग से पराधीनता पाप की रात कट गई और स्वाधीनता का पुण्य प्रभात आ गया। प्रवासी भारतीय को अन्य राष्ट्र के सामने गौरव एवं गर्व से माथा ऊँचा करने का अवसर मिला। स्वदेश से दूर समुद्र पार के देशों में बसते हुए भी जिस भारत का आठोयशोगान किया करते थे उसकी स्वधीनता का सन्देश पाकर उनके आनन्द का ठिकाना कहाँ?

भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने १६ अगस्त ऑल इण्डिया रेडियो से अपने भाषण को ब्राडकास्ट करते हुए इस तथ्य को स्वीकार किया। आपने पंजाब की स्थिति पर प्रकाश डालने से पहले कहा कि १५ और १६ अगस्त को न केवल इस देश के निवासियों ने अगस्त को न केवल इस देश के निवासियों ने भारत में प्रत्युत इस विशाल विश्व में जहां कहीं भारतीय जा बसे है वहां उन्होंने स्वाधीनता के शुभागमन के उपलक्ष्य में उत्सव मनाये। इस अवसर पर मुझे महान राष्ट्रों के प्रतिनिधियों प्रख्यात पुरुषों एवं संसार के कोने कोने से से प्रवासी भारतीयों की तरह से हजारों से शुभकामना के सन्देश प्राप्त हुए। यद्यपि अन्य देश के नेताओं ने स्वतंत्र राष्ट्रों की पंक्ति में भारत के आगत स्वागत सूचक जो सन्देश भेजे उनसे मैं बड़ा प्रभावित हुआ तथापि सबसे बढ़कर असर हुआ मुझ पर प्रवास भारतीयों मर्मस्पर्शी संदेशों का। मातृभूमि में बिछुड़ जाने के कारण उनमें भारत की स्वाधीनता के लिए कदाचित हम लोगों से अधिक थी और आजादी का आगमन उनके जीवन की एक विलक्षण घटना है। नवीन भारत को अपने प्रवासी सन्तान को सदा स्मरण रखना चाहिए जो उसकी ओर अनुराग और अभिमान से देखा करते हैं और उनको यथाशक्ति सहायता देते रहना चाहिए।"

प्रवासी भारतीय आज भारतीय स्वाधीनता पर फूले नहीं समाते हैं। भारत में ब्रिटिश शासन का अन्त और स्वराज्य का सूत्रपात उनके विचार में भगवान का मंगलमय आशीर्वाद है। वे चाहते हैं कि भारत राष्ट्रध्वज सान से फहराता रहे। उसकी रक्षा के लिये वे भारी से भारी बलिदान करने को तैयार है। उनका हृदय हर्षोल्लास से प्रफुल्लित हो रहा है। वे सोचते हैं कि अब हम संसार में सर्वत्र सिर उठाकर चल सकेंगे। कौन अब हमारा अपमान करने का सहास कर सके? आज सारे प्रवासी भारतीय मातृभूमि और उसकी प्यारी पताका को स्नेह और श्रद्धा से वन्दना कर रहे हैं।

❀ ❀

(शेष पृष्ठ ६ का)

कार को हिंदेशिया की स्वतंत्रता स्वीकार करनी पड़ी। परन्तु, पुनः डचों के कैसे काले शरनामे हुए और भारत के महामंत्री पं० नेहरू की प्रेरणा से किस तरह डचों की अनुचित 'सैनिक कार्रवाई, के प्रति किया स्वरूप स्वतंत्र एशियाई राष्ट्रों का सफल सम्मेलन नई दिल्ली में हुआ और संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदेशिया के प्रश्न पर क्या-क्या घटनाएँ हुईं, यह सब तो कल की ही बातें हैं। अंत में डचों को हिंदेशिया को पुनः स्वतंत्रता देनी ही पड़ी और डा० सुकर्ण ही पुनः नवीनसंयुक्त हिंदेशिया के अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं।

आशा ही नहीं, विश्वास है कि डा० सुकर्ण के नेतृत्व में में हिंदेशिया उत्तरोत्तर उन्नति करता रहेगा और भारत तथा हिंदेशिया का अतीव प्राचीन काल से चला आता हुआ पारस्परिक सांस्कृतिक एवं मैत्री-संबन्ध घनिष्ठतर होता रहेगा। डा० सुकर्ण ने ठीक ही कहा है कि पं० नेहरू हमारे सब से बड़े मित्र हैं।

(शेष पृष्ठ १३ का)

दें। पुराने प्रमेह में न्यूनाधिक मात्रा में शहद और घी मिलाकर मिश्री के साथ दें आसवारिष्टों में देवदारावरिष्ट वात कफज प्रमेहों में और लोध्रासव कफज प्रमेह में बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है।

इनके अतिरिक्त प्रमेह रोगियों को बंगेश्वर, स्वर्ण बंग, मेहकुलान्तक, मेह मुगदरवटी सोमनाथरस, प्रमेहान्तकवटी आदि औषधियां विशेष रूप से दी जाती हैं और ये लाभ भी अच्छा करती हैं मैंने भी इनके प्रयोग से अनेक रोगी अच्छे किये हैं, परन्तु साधारणतया चन्द्रप्रभावटी, वसन्तकुसुमाकर प्रमेह मिहिर तेल आदि दवाइयों का उपयोग प्रायः सब करते हैं।

❀ ❀ ❀ ❀

पथ्यापथ्य के लिये भी थोड़ा विचार लिख देना आवश्यक होगा। प्रमेह रोगी के लिये आम तौर से पुष्टिकारक आहार दूध घी आदि नहीं देने की आज्ञा है परन्तु शुक्र प्रमेही (जिसका पेशाब वीर्य मिला हुआ अथवा जिसका वीर्य पेशाब जैसा पतला होकर निकलता है, ऐसे रोगी) के लिये पुष्टकर आहार-विहार की मनाही नहीं है। शुक्त प्रमेही के लिये अग्निबल का विचार कर दिन में पुराने चांवलों का भात. माँस, रस, मूंग, मसूर और चने की दाल, परवल, गोभी गाजर आदि की छौंकी हुई तरकारी रात के रोटी, दाल, साग और रात समय दूध दे सकते हैं।

ये सब पर्दाथ पुष्टिकाटक हैं। अतः सिर्फ शुक्तप्रमेही को ही दिये जा सकते हैं, परन्तु रोगी का बलाबल देखना आवश्यक है। अन्धाधुन्ध देने से नुकसान ही होगा।

वायलिन-केस

जीवन में कभी कभी ऐसी घटनायें घट जाती हैं जो रहस्यपूर्ण तथा आश्चर्य जनक होती हैं वायलिन-केस का रहस्य भी चकित कर देनेवाला है। किसे पता था कि पायलिन केस में सांप होगा, जो अन्य के लिये मृत्यु का कारण बनेगा। कहानी बड़ी रोचक, सुन्दर और पठनीय है।

"आप कहां जा रहे हैं ?" यह प्रश्न बहुधा रेल के यात्री एक दूसरे से पूंछा करते हैं। बहुत कम लोग ऐसे मिलेंगे जो यह पूंछते हों, "आप क्यों यात्रा कर रहे हैं ?" इस प्रकार का प्रश्न पूंछना, प्रश्नकर्त्ता में तमीज नहीं है इस बात को सूचित करता है। लोग सोचते हैं, "मुझ आखिर कोई किसी भी प्रयोजन से यात्रा कर रहा है, मुझसे क्या मतलब ?" इधर जब से रेलवे डिपार्टमेंट ने जनता को 'यात्र कम करो' का आदेश दिया है तब से मानो उसने एक बहुत बड़ी उपकार का कार्य किया है। यदि रेलवे डिपार्टमेंट किसी व्यक्ति विशेष पूंछने लगे, "तुम क्यों यात्रा कर रहे हो ?" तो इसे पता लगेगा कि ऐसा प्रश्न न केवल व्यर्थ है वरन् ऐसे प्रश्नों का उत्तर भी ठीक नहीं पाया जा सकता। संभवतः इस बात में कोई संदेह नहीं है कि किसी रेल के डिब्बे में बैठे हुए यात्रियों में कोई यह नहीं जान सकता कि उसके समीप या दूर का बैठा हुआ यात्री किसी लिये कहीं जा रहा है।

मैं राजामुन्ड्री रेलवे स्टेशन पर बैठा हुआ पुरी मद्रास पैसेन्जर की प्रतीक्षा कर रहा था। प्लेटफार्म पर जहां मैं बैठा था कड़कती धूप पड़ रही थी। उपरोक्त बातों पर विचार कर रहा था। मेरे घरवाले भी मेरे साथ थे। गाड़ी एक घंटा देर करके दो बजे पहुँची। यह कोई असाधारण बात न थी। मेरा विश्वास है कि आन्ध्र देश के गरमी के दिनों की धूप की कड़कड़ी समयानुकूलता में सहायता नहीं कर सकती। उन दिनो, युद्ध के पहले, तीसरे दर्जे में बैठकर यात्रा करने में कोई विशेष कष्ट नहीं होता था। हमलोग एक छोटे से डिब्बे में बैठे जिसमें केवल आठ यात्रियों भर के बैठने की जगह थी। हमने सोचा कि अब मद्रास तक हम बिना किसी कष्ट और परेशानी के यात्रा कर सकेंगे।

इजिन बदले गये। गाड़ी चलने लगी। थोड़ी देर में गाड़ी गोदावरी के पुल के ऊपर से होकर जाने लगी। नदी की चौड़ाई कम होती जा रही थी क्योंकि दोनों किनारों पर के बालुओं पर मुझे कड़कती धूप पड़ रही थी। पुल पार हो जाने पर मुझे प्रसन्नता हुई कि अब चाल में तीव्रता आयेगी। किसी स्टेशन पर गाड़ी रुकी। उस दोपहरी की कड़कती धूप में खिड़की से बाहर झांकना अखर रहा था। मैंने 'शटर्स' नोंचे गिराये। आराम के साथ बैठने और यात्रा करने के अभिप्राय से मैं अपना, सामान उठाने रखने लमा।

दूसरा स्टेशन चागल्लू था। एक यात्री ने हम लोगों के डिब्बे प्रवेश किया और बैठ गया। मुझे थोड़ा उठकर उसके लिये स्थान देना पढ़ा। बैठने के बाद मैं इस नवागन्तुक का अध्ययन करने लगा।

वह मुझे आन्ध्रदेश का कोई किसान लगा। आयु बड़ी थी पर देखने में वह हट्टा कट्टा लग रहा था। वह बहुत बड़ी पगड़ी पहने हुए था और उसकी मूंछे काफ़ी लम्बी थीं। अब मैं उसे देखने के बजाय उसके सामान की ओर ताकने लगा। किसी वस्तु का एक पुलिन्दा था उसके पास जिसे उसने अपने बगल में रखा था। नीचे एक 'वायलिन-केस' था जिसके चारों ओर रस्सी लिपटी थी।

वह चुपचाप बैठा हुआ था। चलती गाड़ी में वह इधर उधर हिलडुल रहा था। उसके नेत्रमानों कोई दूर की वस्तु देख रही थी। उसका मुंह बन्द था। मैं उसकी मोटी और मैली उंगलियों को देखने लगा, यह जानने के लिये कि वह वायलिन बजाने वाला हो सकता है कि नहीं, मेरे मन में उत्सुकता हुई। फिर विचार किया कि शायद अपने लड़के, लड़की या पोती के लिये उसने यह वाद्य खरीदा हो। मैं स्वयं एक संगीतज्ञ हूँ इस लिये इस विचारने कि मेरे साथ बैठा हुआ यह यात्री भी संगीत से कोई संबंध रखता है मुझमें थोड़ी सी प्रसन्नता उत्पन्न की। यदि मुझे तेलगू भाषा का ज्ञान होता तो मैं अवश्य उससे बातचीत करता और उसका वायलिन देखने की भी इच्छा प्रकट करता।

लेकिन शीघ्र ही मेरा ध्यान संगीत विषय से हट गया क्योंकि निडाडावोलू जंकशन पर गाड़ी खड़ी होने जा रही थी खाने पीने तथा अन्य वस्तुओं के बेचने वालों तथा कुलियों की आवाज ने कानों को खेदना शुरू किया। गाड़ी बिल्कुल रुकी न थी कि एक दूसरा यत्री डिब्बे में चढ़ आया। वह एक छोटी कद का, लाल रंग का व्यक्ति था। अपनी दांतों के बीच वह एक सिगार दबाये हुए था। उसके साथ एक बहुत बड़ा बन्डल था जिसमें पता नहीं क्या क्या वस्तुएं थीं। उसके जेब में कई रसीदें थीं और एक फाउन्टेनपेन थी। वह मुझे एक व्यापारी लगा। वह उस किसान के निकट बैठ गया और अपना बंडल वायलिन-केस के बगल में नीचे रख दिया।

"मैंने व्यापारी से पूछा कि 'वायलिन केस' कहाँ है ?"

❀ ❀ ❀ ❀

निडाडावोलू स्टेशन पर गाड़ी दस मिनट तक रुकी रही। इस नये व्यक्ति के बैठने के बाद ही किसान ने अपना सामान लिया और बाहर चला गया। बाहर निकलकर प्लेटफार्म की भीड़ में मिलकर वह विलीन हो गया। वह किस लिये यात्रा कर रहा था यह मुझे नहीं मालूम था। मुझे परेशान होने की कोई आवश्यकता न होती यदि वह भूल के कारण अपना 'वायलिन-केस' वहां छोड़ न जाता। मैंने देखा दूसरे प्लेटफार्म पर एक गाड़ी खड़ी थी, कहीं जाने को तैयार थी। मैंने सोचा शायद उस दूसरी गाड़ी पर बैठे हुए किसी संबन्धी या मित्र को गट्ठर देनें के लिये वह किसान उतरा था। समय बीत गया। पुरी-पैसेंजर के लिये सिगल गिर चुका था। मैं नीचे उतरा और उस किसान को खोजने के लिये इधर उधर देखने लगा।

मुझे परेशानी की दशा में देखकर उस नये आये हुये व्यक्ति अर्थात् जिसके व्यापारी होने का मैंने अनुमान लगाया था, ने मुझसे पूंछा, "क्या बात है ?" मैंने कहा; "अभी जो व्यक्ति उतरा है वह अपना वायलिन-केस भूल गया है।" मुझे उस किसान के लौट कर न आने का जो भय था वह सच निकला। उस वायलिन-केस का क्या होगा इसी विचार में मैं डूब गया।

व्यापारी ने एक लम्बी कश लगाई यह कह सकना मेरे लिये कठिन है कि उसने अपने मस्तिष्क में 'वायलिन-केस' के बारे में कौन से विचार उत्पन्न होने दिये। उसने अपनी कोई सम्मति भी नहीं प्रकट की कि उस वायलिन-केस का क्या किया जाय। मैं इस निस्कर्ष पर पहुँचने पर बाध्य हो गया कि उसे उस वायलिन केस के विषय में कोई दिलचस्पी नहीं है। तत्पश्चात् मैंने निश्चय किया कि मद्रास पहुँचने पर मैं उसे "वाच एन्ड वार्ड स्टाफ" के हवाले कर दूँगा। ऐसा मैंने इसलिये सोचा कि वहां वाले उसे स्वीकार कर लेंगे उसके वास्तविक अधिकारी के पास सुगमता से पहुँचा सकेंगे।

उपरोक्त निश्चय के बाद मुझे कुछ तसल्ली हुई। मेरी परेशानी दूर हुई। अभी तक हम लोग आराम के साथ यात्रा करते आये थे और मुझे आशा थी कि शेष यात्रा भी इसी भांति समाप्ति हो जायगी।

वह व्यापारी चुपचाप बैठा हुआ था मैंने विचार किया कि वह शायद निडाडावोलू स्टेशन पर खरीदी वस्तुओं को लाभसहित बेचने की बात सोचरमा था। वह कागज पर कुछ लिख रहा था। मैंने सोचा वह टिकट के दाम, खाने पीने के खर्च और अन्य खर्चों का हिसाब किताब कर रहा है। वह और कई विषयों पर सोचता रहा होगा; मैं किस आधार पर यह सोचता कि वह 'वायलिन केस' के विषय में भी कुछ सोच-विचार रहा था। देखने में एक प्रतिष्ठित तथा भला व्यक्ति लग रहा था। ऐसा अनुमान मैंने उसे केवल बाह्यरूप से देखने पर किया था। लेकिन उसकी एक आदत

मुझे बहुत बुरी लग रही थी। वह बार बार उठकर डिब्बे के एक कोने में थूकने जाया करता था। मैंने उससे और कोई अधिक बातचीत नहीं किया। मैंने उससे केवल एक प्रश्न पूंछा था कि वह कहा जा रहा था। उसने कहा, "आंगोल।" आंगोल काफ़ी दूर था।

बेजवादा जंकशन भी पार हो गया। ब्यापारी है अपना सिगार पीना बन्द किया। उसने अपना बंडल और सम्भालकर बगल में रख लिया। बड़ी तेर से रेल की घड़घड़ाहट कानो को खेद रही थी थोड़ी देर में हम लोगों को नींद आ गई।

❀　❀　❀

मुझे गहरी नींद आई होगी। जब मैं जगा तो गाड़ी को चिन्नागुन्टाप्लैट-फार्म पर पाया। बाहर अंधेरा था। मेरी घड़ी में चार बजे थे। मेरे सामने की सीट जिस पर वह व्यापारी बैठा था खाली थी। मैंने सोचा वह उतर गया होगा। मैंने सोचा की अब रेल की घड़-घड़ाहट सुनते सुनते मैं शेष यात्रा समाप्त कर दूगा और कोई काम मेरे पास बाकी न रह गया था। धीरे धीरे डिब्बे में प्रकाश का आगमन होने लगा। मैंने अपना सामान ठीक से देखभाल कर रखा। हाथ मुंह धोने का-समय आगया होल्डाल को लपेटकर रक्खा और अपने बैठने के स्थान को झड़न से पोछा। दूसरा स्टेशन था गुडूर जो कि बहुत बड़ा जकशन स्टेशन था। हम लोगों ने सोचा कि यहां नश्ता करेंगे और थोड़ी सी काफी भी पियेंगे।

सूर्योदय हो चुका था। 'शटर्स को ऊपर उठाना आवश्यक था। अब तक की यात्रा आरमदेह थी, इस बात को मैं प्रसन्नता थी। हम अपने सामान गिनने और संभालने लगे।

सहसा मेरी पत्नी ने पूछा,—क्योंजी वह 'वायलिन—केस कहाँ पर है?

मैं नीचे झुका और दोनों सीटों के नीचे के स्थान को छानबीन की। 'वायोलिन केस' वहाँ पर नहीं था। घबरा कर हम अपने और समान भी देखने लगे। हमारा सब सामान वहाँ जैसे के तैसे रक्खा हुआ था-बास्केट, झोले, और शीशियां—सभी वस्तएं सुरक्षित थी वहाँ पर।

हम गुडूर पहुँचे। हमारा सामान सुरक्षित था। 'वायलिन-केश' के पता लगाने की परेशानी से बढ़कर गरम काफी पीने की परेशानी थी। हम सबको जब गुडूर से गाड़ी जब चल पड़ी तब हम लोग वायलिन-केस के विषय में फिर सोचने लगे।

मद्रास सेन्ट्रल आ गया और हम अपने घर आये। अपने सम्बन्धियों से मैंने उस बूढ़े किसान की विचित्र हरकत (अर्थात् वायलिन फेस को छोड़कर शीघ्रता से रेल के डिब्बे के बाहर भीड़ में जाकर मिल जाना) और वायलिन-केस के गायब हो जाने के विषय में सब-कुछ बताया।

एक महीने के बाद हमारे घर में एक मेहमान आये। वे दूर के एक सम्बन्धी थे और रेलवे में टिकट कलेक्टर के पद पर नौकर थे।। उनकी नौकरी हाल ही में लगी थी इसलिये अपने काम में उन्हें बहुत दिलचस्पी थी। तीन ही महीनों के अन्दर उन्हें तीन स्टेशनों पर काम करना पड़ा। मैंने साधारण सा प्रश्न पूछा, "आपको अपना काम कैसा लगता है?" उन्होंने उत्तर दिया, मेरे कार्य तो एक बड़ी उत्तरदायित्व का कार्य है। जब तक लोग रेल में यात्रा करेंगे तब तक टिकट कलेक्टरों की आवश्यकता होगी।" मैं इनसे पूछा, "क्या अभी तक अपने कार्य में आपके सामने दिलचस्प अनुभव नहीं आया?"

"नहीं, हां हां! अवश्य!" उन्होंने कहा बैठते हुए। "कुछ सप्ताह पूर्व ओंगल स्टेशन पर एक बहुत दुखप्रद घटना हुई। मेरी बदली उसी स्टेशन पर हुई थी। एक रात को पुरी-पैसेन्जर तनिक देर से पहुँची, गाड़ी से लागभग २० यात्री उतरे। प्रत्येक का टिकट लेकर मैंने उन्हें बाहर जाने दिया। गाड़ी अपनी चाल को तीव्र करते हुए। इसके बाद मैं अपने रजिस्टर पर टिकट का हिसाब-किताब करने चला गया।

"एक घंटे बाद, असिस्टेन्ट स्टेशन मास्टर मेरे पास आये। उन्होंने मुझे सूचित किया की प्लैटफार्म के उत्तरी किनारे पर एक यात्री चल बसा यह अपने जीवन में पहला अवसर था कि किसी यात्री की मृत्यु की बात सुनी थी मैंने—विशेषकर इस परिस्थिति में। हम दोनों शीघ्र हो उस स्थान पर पहुँचे। वह रोशनी की अन्तिम पोस्ट थीं। मैंने देखा एक लाल मनुष्य मरा हुआ लेटा हुआ था। स्पर्श करने पर कुछ गरमाहट का अनुभव हुआ। एसिस्टेन्ट स्टेशन मास्टर के लम्प के सहारे हमने उसे ध्यानपूर्वक देखो। हम लोगों ने उसकी जेब की तलाशी ली। उसकी जेब से निडाडावालू से ओंगल का एक तीसरे दर्जे का टिकट निकाला और एक फाउन्टेन पेन, कुछ रसीदें, तीन सिगार एक दियासलाई और एक पर्स जिसमें केवल तीन रुपये थे। उसके समीप रेल की पटरी के पास एक बहुत बड़ा बंडल और एक वायलोन-केस था।

"वायलीन-केस बन्द था और एक रस्सी इसके चारों ओर लिपटी थी। 'केस' में 'हुक्स' नहीं थे इसीलिये उसे रस्सी से बांधा गया था। लेकिन हमारे पास यह सोचने का कोई आधार नहीं था कि उसमें वायलीन है।

❀　❀　❀　❀

"एसिस्टेन्ट स्टेशन मास्टर ने कहा, मेरा कर्तव्य है कि मैं सब स्टेशनों के अफ़सरों को तार दे दूं। मेरा विचार है कि यह मुसाफिर अपनी स्वाभाविक मृत्यु से मरा है।' वे तार देने गये। मैंने मृत शरीर को नज़दीक से देखा। उसके शरीर अथवा पैरों में कोई चोट नहीं थी। मुंह में फेना भरा हुआ था। उसके दाहिनी हाथ में रक्त का एक कतरा था जो कि उसके शरीर के लालवर्ण के कारण ठीक ठीक नहीं दिखलाई पड़ रहा था। मैंने गौर से देखा कि दो जगहों पर किसी सांप के कटाने का निशान बना हुआ था। अब मुझे विश्वास हो गया कि इसकी मृत्यु सांप के ही द्वारा हुई थी। घबराकर मैं तत्काल उठ खड़ा हुआ।

"असिस्टेन्ट स्टेशन मास्टर एक पुलिस कान्सटेबुल के साथ लौटे। मैंने उन्हें उसकी बांह दिखाई जहां सांप के काटने के चिन्ह थे। सभी इस बात को मान गये कि उसकी मृत्यु एक ज़हरीले सांप के कारण हुई है।

"क्या उस फेस ने कोई सांप हो सकता था पुलिस कान्स्टेबुल ने कहा, 'सम्भव है वायोलन-केस को खोलकर वायलिन निकालने के लिये उसने अपना दाहिना हांथ अन्दर किया हो कि क्रोधी सांप ने स्वतन्त्रता प्राप्त करने के पहले हो उसके हांथ को काट खाया हो।'

"एसिन्टेन्ट स्टेशन मास्टर ने जिन्होंने रेलवे के अफ़सरों को यात्री की स्वाभाविक मृत्यु का तार दिया था अपनी दलील पर ज़ोर देते हुए बोले, 'यह कैसे हो सकता है कि अपनी ही केस में जानबूझ कर इस मुसाफिर ने एक सांप रख ली हो?'

"लेकिन इस बात का क्या प्रमाण है कि वायलिन-केस इसी मुसाफिर का था?' पुलिसकान्स्टेबिल ने कहा, 'संभव है केस किसी दूसरे का रहा हो। किसी दूसरे ने यह केस इसको दिया हो, किसी अन्य व्यक्ति के दे देने के लिये। यह भी सम्भव है रेल का कोई यात्री केस को भूल से छोड़ गया हो और इसने उठा लिया हो।'

"पुलिस कान्सटेबिल कहता गया, 'यदि यह वायलिन—केस इसी यात्री का होता तो फिर रेल की पटरी के पास वह उसे खोलने क्यों जाता? इससे यह स्पष्ट है कि अवश्य यह किसी दूसरे का था? तभी तो यह यात्री उसे वहां खोलने लगा। अपने को अत्याधिक भाग्यशाली समझकर उस बहुमूल्य वास्तु के अव-लोकन के निमित्त ही तो उसने केस को खोला।'

"पुलिस कान्स्टेबिल ने कहा, 'मालूम तो सचमुच बड़ा अजीब है। लेकिन मैं यह ठीक नहीं समझता कि जो टेलीग्राम आपने दिया है उसके शब्दों को बदल-कर फिर से तार दिया जाय। वैसा करने से और अनेक प्रश्न सामने खड़े हो जायेंगे।' मृत शरीर और सब सामान पुलिस के हवाले कर दिया गया।

मेरे मेहमान (टिकट कलेक्टर) ने कहा, "मेरा विचार है कि उस 'वायोलन केस' में एक कोब्रा था। उसी ने उसे काट आया था। रापका क्या विचार है?'

❀　❀　❀　❀

अपने मेहमान की बातें मैं ध्यान-पूर्वक सुनता आ रहा था। कभी मैं चौंक उठता था, कभी शान्त हो जाता था। मेरे विचारों के उतार चढ़ाव का क्रम जारी था। मेरा शरीर कांप उठा, इस बात को जानकर कि जब हम लोग गाड़ी पर बैठे थे तब वह कोब्रा हम लोगों से दो ही गज़ की दूरी पर था उस केस में।

मेहमान कह चुकने के बाद मैंने कहा, "उस यात्री के विषय में मैं अच्छी तरह से जानता हूँ। वह एक व्यापारी था और हम लोगों साथ निडाडावोलू स्टेशन से हमारे ही डिब्बे में बैठा यात्रा कह रहा था।" फिर मैंने उस व्यापारी मृत्यु होने के पहले की समस्त बातें अपने मेहमान से कह सुनाई।

मुझे अब अनुभव होता है कि व्या-पारी को अपने तृष्णा का उचित दण्ड मिल गया। परन्तु यह बात मैं अब तक भी नहीं समझ पाया हूँ कि जब उस तेलगू में एक विषमय सर्प था, वह किस मतलब से यात्रा करने चला था! आखिर वह किसान क्यों उस अजीब तरीके से चुपके से डिब्बा छोड़कर चला गया और प्लेटफार्म की भीड़ में मिल गया? परिस्थितियां किस प्रकार की थीं, इसे कौन जान सकता है? क्या उस किसान को भी यह ज्ञात नहीं था कि उस केस में क्या था? कौन जान सकता है कि वह किसान किसलिये यात्रा कर रहा था? लेकिन इसमें किसी को सन्देह नहीं हो सकता कि एक विचित्र प्रयोजन रहा होगा उस बुड्ढे तेलगू का यात्रा करने का।❀

❀एक अंगरेजी कहानी का रूपान्तर।

ग्राहकों, एजेंटों और विज्ञापनदाताओं को समस्त पत्र व्यवहार मैनेजर, 'देशदूत' इलाहाबाद के नाम पर ही करना चाहिए।

रंगमंच

'सावन आया रे'

श्री किशोर साहू की कला का दिवालियापन

लेखक, श्री सत्यप्रकाश शर्मा

क्या यह वही "सावन आय रे" चित्र है जिसके लिये "फिल्म इन्डिया" के सम्पादक महोदय ने सिनेमा दिग्दर्शकों को भी किशोर साहू के कदमों में बैठकर कला का प्रारम्भिक पाठ याद करने का ललकरा है ? यह प्रश्न उस समय प्रत्येक दर्शक के हृदय में उत्पन्न होना स्वाभाविक था जब कि वह साहू की इस कथित महान कलाकृति को कला के दृष्टिकोण से उसकी अच्छाई और बुराइयों पर ध्यान-पूर्वक दृष्टि डालता है। निस्सन्देह साहू ने कल्पना की ऊँची उड़ाने भरने का प्रयत्न किया है, किन्तु दुख है कि जिस साहू की कल्पना की उड़ान के भीतर से "सिन्दूर" जैसे महान और कलापूर्ण चित्र का जन्म हुआ, जिसने समाज के तकिमानूश रीति रिवाजों की धज्जियां उड़ाते हुए समाज के वक्षस्थल में तीर सा चुबो दिया था आज भी साहू महोदय कल्पना की लम्बी और ऊँची उड़ान करने का प्रयत्न करके भी बुरी तरह असफलता के अन्धेरे गड्ढे में ही नहीं गिरे वरन् उन्होने अपनी पूर्व ख्याति और कला पर जबर्दस्त काली सी पोछली है। इस चित्र को जितने भी व्यक्तियों ने देखा है उनसब के हृदय में एक ही प्रश्न आयाकि नारी और नारी-त्व का अपमान करने के लिये साहू ने महान कठोर घात किया है। निसन्देह "सावन आयारे" का निर्माण करके साहू ने नारी और नारी-त्व पर एक अपमान जनक चोट की है जिसके लिये भारतीय समाज साहू जैसे महान कलाकार को कभी क्षमा नहीं कर सकता। क्योंकि कलाकार किसी भी देश की वह महत्व पूर्ण पूंजी है जिसके ऊपर राष्ट्र का उत्थान और पतन निर्भर है। साहू अपनी असफलता पर परदा डालने के लिये राष्ट्र की हजारों रुपये की सम्पति को विज्ञापन के रूप में पानी की तरह बहाया है। समझ में नहीं आता किसिने-निर्माता आकर्षक विज्ञापनों से जनता को धोखा देकर कब तक लूट खसोट जारी रखेंगे ? सिने निर्माता अभी शायद गुलामी की दुनियां में ही बसते हैं। उन्हें शायद यह पता ही नहीं है कि देश ने गुलामी की छाप अपने ऊपर से उतार फैंका है। भारत की ३० कोटि जनता गत तीन वर्ष से स्वाधीन वायु मन्डल में सांस ले रही है। स्वाधीनता ने जनता का दिमाग के विकास किया है। और आज भारतीय जनता अच्छे और बुरे की पहिचान करने की पूर्ण स्थिति में है। वह कला और कला का स्वरूप खूब अच्छी तरह जानती है। अतः जनता की एकही राय है कि साहू ने इस चित्र का निर्माण करके देश का हित न करके अहित किया है। नारी जो मानव की निर्मात्री है उसे वासना की पिटारी सिद्ध करने का निष्फल प्रयत्न किया है।

"सावन आयारे" पुरुष समाज में नारी के चरित्र के प्रति गहरा अविश्वास उत्पन्न करने का प्रयत्न किया है और प्रेरणा की है कि वह अपने घर की स्त्रियों की कठोरता से चौकीदारी करे। जब कि आवश्यकता थी स्त्री-पुरुषों में साम्यभाव जगाने की, जब कि आवश्यकता थी देश की उलझी हुई समस्याओं को सुलझानेकी जब कि कि आवश्यकता की विश्व में शान्ति स्थापित करने के प्रयत्न की किन्तु ऐसा न करके साहू ने वही पुरना वासना का राग अलापा जिसको सुनते सुनते जनता के कान पक चुके हैं। इस चित्र की कहानी भी किशोर साहू ने ही लिखी है। जिसमें मौलिकता और प्रवाह नाम को भी नहीं है। लेखक ने अपनी सारी बुद्धि एक सुशिक्षित नवयुवती को "वेश्या" या उससे भी बदतर सिद्ध करने में खर्च की है। यहाँ हम "सावन आयारे" की कहानी का सरांश भी देना उचित समजते हैं---

"आनन्द एक ख्याति प्राप्त चित्रकार है जो नैनीताल में रहते हैं। आनन्द के मित्र खन्ना का निमन्त्रंण पा कर श्री माथुर अपने परिवार सहित नैनीताल आते हैं। माथुर साहब के तीन जवान लड़कियां हैं जो सभी शिक्षित हैं। बड़ी लड़की "आशा" एक लेखिका है जिसने "शादीयों का ढकोसला" पुस्तक लिखी है, जिसमें विवाह के पवित्र बन्धन को निरर्थक सिद्ध किया है। विवाह को न मानते हुए भी आशा आनन्द की ओर आकर्षित होती है। आशा इस आकर्षक मार्ग पर चलते चलते ऐसे मोड़ पर पहुँच जाती है जहाँ दूसरा कदम उठाने का अर्थ विवाह भी सार्थकता को मानना है। आशा की छोटी बहिन 'सुधा' भी आनन्द को प्रेम करती है और यह आनन्द से विवाह करने के लिये सभी तरह की चेष्टा और प्रयत्न करती है। अन्त में सुधा एक दिन शाम को आनन्द के घर पहुँचती है और रात को आनन्द के घर ही रहती है। इस तरह एक कुमारी लड़की को रात भर गैर आदमी के साथ रहते दिखाया है। सुधा के मा-बाप सुधा के इस कृत्य से बहुत ही क्षुब्ध होते हैं। अन्त में सुधा और आनन्द का विवाह हो जाता है। आनन्द के लिये यह विवाह मृत्यु यन्त्रणा थी। पत्नी की स्वछन्दता और स्वाधीनता से तंग आकर आनन्द की बीमार पड़ जाता है। बीमारी की सूचना पा कर माथुर साहब अपने परिवार भाई आनन्द को देखने आते हैं। आशा की सेवा और परिश्रम से आनन्द अच्छा हो जाता है। इसी बीच एक और घटना होती है। सुधा, आनन्द और आशा को कमरे में बीती हुई प्रेम की बातें करते देखती है और देखकर आग बबूला हो उठती है। अपनी बड़ी बहिन को "सौत" तक कह डालती है। आशा स्वामिमानी है और बड़ी है अतः वह सुधा को एक थप्पड़ लगा देती है। सुधा जो अब आनन्द की विवाहिता पत्नी है बाहरी दुनियां में "मौज" का मार्ग पकड़ लेती है। इस मार्ग पर चलते चलते इसकी भेंट एक और पुरुष से होती है और वह पुरुष उसे आनन्द की हत्या करने को वाध्य कर देता है। सुधा चाय के साथ जहर मिला देती है किन्तु आनन्द की हत्या करने का प्रयत्न करती है और सुधा का छोटा भाई चाय की प्याली को बदल देता है जिससे आनन्द बच जाता है और सुधा की मृत्यु हो जाती है और आशा और आनन्द सदा के लिये एक हो जाते हैं। यह वह कथानक जिसको पत्रकारों ने नवीनता और प्रगति शीलता का जामा पहिनाने का प्रयत्न किया है। क्या हम उन पत्रकारों से पूछ सकते हैं कि "सुधा" जैसी शिक्षित और विवाहिता स्त्री को वेश्या सिद्ध करना ही प्रगति शीलता है ? या पत्नी द्वारा पति की हत्या कराने का प्रयत्न करना ही नवीतनता है ?

साधारणतः कहानी भारतीय सभ्यता के विरुद्ध है। यहां कोई भी बहिन अपनी बहिन का अहित नहीं चाह सकती चित्र के सम्वाद भी किशोर साहू ने ही लिखे हैं जो बिलकुल बाजारू हैं। क्योंकि खन्ना साहब जो माथुर साहब के बराबर के मित्र हैं उनसे माथुर साहब की पुत्री सुधा को कहलवाया गया है कि "इतनी सजधज के किस गरीब को निशाना बनाने चली हो। ऐसा कोई भी दोस्त अपने दोस्त की पुत्री से नहीं कह सकता। इन सम्वादों से प्रगट होता है कि साहू महोदय ईमानदारी और सच्चरित्रता का मार्ग छोड़ कर रंगीन दुनियां में पहुँचने की कोशिश कर रहे हैं।

चित्र के गीतों में कोई आकर्षण नहीं है वरन् वहीं है जिनकी बुराई बहुत से लेखक कर चुके हैं। नैनों के उलझाहट के गीत। जनता को कोई प्रेरणा नहीं देते। अतः सारांश में गीत वैसे ही निम्न कोटि के हैं जैसे 'रतन' के। अभिनय की दृष्टि से साहू ने आनन्द की भूमि का सफलता से निभाई है। आशा की भूमिका में रमोला। बिल्कुल नहीं जँची रमोला सेएक कुमारी लड़की का अभिनय करा के वही प्रयत्न किया गया है जैसे कि बाँझ स्त्री प्रसव पीड़ा का अभिनय करने का प्रयत्न करती है। सांराश में पात्रों का चुनाव ठीक नहीं हुआ। वेष भूषा भी निम्न कोटि की है। क्योंकि कोई भी पढ़ी लिखी लड़की आमतौर से ऐसा वस्त्र नहीं पहिनती जिससे उसके शरीर का कोई भी अंग खुला हुआ रह सके। चित्र में आशा और सुधा को ऐसा एक ब्लाउज़ पहिना कर दिखाया है जिससे उनका आधा पेट खुला दिखता है। यही वेष भूषा में सबसे बड़ी बुराई है।

चित्र कला की दृष्टि से चित्र पूर्ण असफल रहा है। चित्र के निर्माण में जो कुछ भी व्यय हुआ है वह राष्ट्र की सम्पत्ति का महान दुरुप योग है।

'सावन आया रे' फिल्म की प्रधान अभिनेत्री रमोला।

'सावन आया रे' फिल्म के निर्माता श्री किशोर साहू।

राष्ट्रपति

भारतीय जनतंत्र का राष्ट्रपति कौन होगा ?

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

देश के सामने आज एक अहम सवाल है। हमारे स्वतंत्र भारत का राष्ट्रपति कौन होगा ? लोगों में तरह तरह का विचार है। समाचारपत्रों में भी आये दिन यह सवाल उठ रहा है। नाना प्रकार की कल्पनायें देश में फैल रही हैं। संवाद भेजने वाले भी चुप नहीं बैठे हैं। रोज किसी न किसी का नाम मोटे शीर्षकों में पढ़ने में आता है। राजनीतज्ञ भी सोच में पड़ गये हैं। देश के उच्च कोटि के नेता गण इस उलझन को सुलझाने में लगे हुए हैं। यह सवाल छोटा नहीं है। राष्ट्रपति को देश के विधान ने बहुत व्यापक अधिकार सौंपा है। इन सारी बातों को देखते हुए—हर इन्सान चाहेगा कि हमारा राष्ट्रपति बहुत सुलझे हुए दिमाग़ का होना चाहिए।

देश की जैसी अवस्था है, सब परिचित हैं। परन्तु सवाल बड़े पेचीदे बने हुए हैं। हम केवल विदेशी जुये से मुक्त हुए है। अंग्रेजों की गुलामी से नाम मात्र के स्वाधीन हुए हैं। आजादी का मकान पोख्ता बनाना है। आजादी को ऐसा बनाना है कि हमारी तरफ लालच भरी दृष्टि से फिर कोई देख भी न सके। हम विदेशियों की कृपादृष्टि से अपने जीवन का ढांचा न बनायें बल्कि देश की संस्कृति देश की भाषा देश की पोशाक में हम आगे बढ़ें। हमारी योजनायें देशी हों, ग्रामीण हों। गांधी जी के आदर्शों पर टिकने वाल हों। देहातों का उत्थान हो किसानों का स्वाभिमान हो। देश के मजदूर भी अनुभव करें कि हमारा देश है हम देश के मालिक हैं। देश के बच्चे बच्चे में वह स्वाभिमान जागृत हो—देश हमारा है। हम अपने देश की रक्षा गांधी जी के बताये हुये मार्गों से ही करेंगे।

चोटी के नेताओं पर देश की नजर लगी हुई है। हमारी दृष्टि देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद, पं० जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल और राजगोपालाचार्य पर लगी हुई है। अब सवाल उठता है इन चार महापुरुषों में से हम किसे कहें कि ये राष्ट्रपति के योग्य हैं और ये नहीं। हमारी हिम्मत यह नहीं स्वीकार करती है और न साहस ही है कि हम एकाएक यह कह दें कि इन चारों में से फलां योग्य है राष्ट्रपति के लिये। भला ऐसा कौन होगा जो यह कहदे कि इनमें यही योग्य है। इन चारों में से ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसकी तरफ हम अंगुली भी उठा

डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद जी स्वतंत्र भारत के प्रेसीडेन्ट होने वाले हैं

सकें और उनके जीवन पर हम आलोचना कर सकें। इन चारों महापुरुषों का जीवन देश के निर्माण में लगा हुआ है। पं० जवाहरलाल जी का जीवन चमकते हुये सूर्य की भांति प्रकाशमान है। लौह पुरुष सरदार देश के प्राण हैं। उनकी संगठन शक्ति मार्शल स्टेलिन से कम नहीं है। हमारे इस विशाल देश के लिये वे आज लौह पुरुष स्टेलिन बने हुये हैं। वे राष्ट्रपतियों के राष्ट्रपति हैं। भविष्य में राष्ट्रपतियों के चुनाव में वे महात्मा गाँधी की तरह सलाहकार बन कर देश का नेतृत्व करेंगे। राजा जी की योग्यता किसी नेता से कम नहीं है। मुल्क का संचालन जितनी योग्यता से राजा जी ने किया है उतनी कुशलता विरलेही मनुष्यों में होती है। आपकी सरलता और सादगी और चतुराई पर देश मुग्ध है। आपने स्वयं मद्रास की एक सार्वजनिक भाषण में कहा है मैं राष्ट्रपति के भार को फिलहाल नहीं सम्भालूँगा—क्यों कि कुछ अवकाश लेकर सार्वजनिक सेवा करने का विचार है।

देश की जैसी परिस्थिति है उससे सभी परिचित हैं। देश के भीतर जैसी गन्दगी आ गई है वह किसी से छिपी बात नहीं है। राजनीति क्रांति हो चुकी है। अब हम सामाजिक क्रांति पर आगये हैं। देश में सामाजिक क्रांति कब होगी। यह एक प्रश्न सामने है। यह तो यहाँ के राजनेताओं की चतुराई पर निर्भर है। यहाँ के राजनीतिज्ञ सामाजिक क्रांति को दबायेंगे—यह कहना अभी बहुत कठिन है। लेकिन समाज बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है। वह प्रजातांत्रिक तरीकों से समाज में परिवर्तन करायेगा या सामाजिक उलटफेर के जरिये यह भविष्य के गर्भ में है। लेकिन यह निश्चित सा है, हम समाजिक क्रांति के द्वार पर हैं।

राष्ट्रभाषा हिन्दी का भी एक महान प्रश्न मुल्क को १५ साल के भीतर ही हल करना है। अगर हमने राष्ट्रभाषा का प्रश्न हल नहीं किया तो आप यह मानेंगे हमने आजादी भी हासिल नहीं की। किसी भी मुल्क की आजादी और महत्ता उसकी अपनी भाषा और राष्ट्रलिपि में निहित है। हमारी आजादी राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि के साथ जुड़ी हुई है। यदि हमारे कन्धों पर विदेशी भाषा का भूत सवार रहा तो आप यह निश्चित मानें—फिर हम पराधीन बन जायेंगे। तरक्की का जरिया राष्ट्र-भाषा और राष्ट्र-लिपि है। इस बात को महात्मा गांधी अच्छी तरह समझते थे। आजादी हासिल करने के पहिले ही से वे सारे देश में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार में लगे थे। उनकी राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवा से मुल्क भली भांति परिचित है।

आज यदि राष्ट्रपिता जीवित होते--तो वे राष्ट्रपति किसे बनाने की सलाह देते—यह कह सकना हमारे लिये शोभा नहीं। गांधी जी की अपनी नीति थी, और अपना विचार। लेकिन नहीं हमने गांधी जी की मौजूदगी में देखा है। जब देश के भीतर अशाँन्ति का वातावरण पैदा हुआ है। हमारी आंखें हमें धोका देने वली थीं। तब हमने गांधी जी के दिव्यचक्षु से देखा है और उनके बताये मार्ग पर चल कर देश के भीतर शन्ति का वातावरण स्थापित कर सके। हलाहल का प्याला देशरत्न डा० राजेन्द्रप्रसाद महात्मा जी के इशारा से संकेत पर पीलिया करते थे। कई बार राष्ट्रीय कांग्रेस के सभापतियों के झगड़े का हलाहल का प्याला आपको ही पीना पड़ा था। देश की जैसी कठिन परिस्थिति है वैसी विषम परिस्थिति कभी नहीं थी। देश की मौजूदगी मांग को देखते हुए हमारी दृष्टि एकाएक साधु पुरुष महान आत्मा डा० राजेन्द्र प्रसाद पर जाती है। बाबू जी सब के प्यारे और पूज्यनीय हैं। कठिनाइयों को अपनी सहज मुस्कान में हल करने की स्वाभाविक नीति बाबू जी में है।

एक बार फिर हम डा० राजेन्द्र प्रसाद को सर्व सम्मत से राष्ट्रपति निर्वाचित करके देश का भविष्य बहुत उज्जल कर सकते हैं। राष्ट्रपति में जितने स्वाभाविक गुण होने चाहिये वह राजेन्द्र बाबू में आज विद्यमान हैं।

(गतांक के आगे)

(२)

चबैने तो उन दोनों के हाथ आ गये, परन्तु वे उनको घर पर बैठ कर चबा नहीं सके। रोनी कंडे पाथने के लिये गोबर पर जा बैठी, और वहीं से उसने सावधान किया, 'एक गगरी पानी लेकर जाओ खेत पर, और वहीं कटाई करते जाओ, कलेवा करते जाओ, और पानी पीते जाओ। तुम यहाँ मौज में बैठ कर कलेवा करलो, तब तक कोई आधी फ़स्ल कट कर उठा ले जायगा।'

मोहन ने खेत को घर से अच्छा समझ कर तोता को साथ लिया और चला गया। सूर्य ऊँचे उठ आया था। धूप में कुछ तेजी आ गई थी। उन दोनों ने अपने अँगरखे उतार कर मेड़ पर रख लिये और चबैनों को फेंट में बाँध कर कटाई पर जुट पड़े। कटाई के समय मोहन के, मासल भरे हुए रग-पट्ठे उभर उभर पड़ रहे थे और तोता के छरेरे नस नसीले गठीले उछल से रहे थे। गेंहूँ के सूखे तीकुर उड़ उड़ कर उनके माथे और गर्दन पर चिपक रहे थे। गेहूँ के बीच बीचमें कहा, कहीं हरे चने के पौधे भी पड़ जाते थे। तोता उनको एक हाथ से उखाड़ उखाड़ कर बिना छिली हुई घेंटी समेत खाता चबाता चला जाता था।

मोहन ने टोका, 'नेक रुक कर चने न चबालो। इस प्रकार खेत की जिन्स को मुँह में नहीं डालना चाहिये।'

तोता कटाई करते हुए बोला, 'अब नहीं खाऊँगा भैया। चबैने थोड़ी देर, बाद चबा लेंगें, अभी काम करें।

दोनों लग भग एक घंटे तक काटते रहे तोता ने हाथ थाम कर कहा, चबाना हो तो अब सही!

मोहन ने इनकार किया, 'अभी थोड़ा काम और कर लो!'

तोता बोला, 'थोड़ी देर में तो रोटी ही आ जायगी।'

फीकी हँसी हँस कर मोहन ने कहाँ; 'सूरज अभी सिर पर नहीं आया है, अनाज नहीं पिसा होगा, रोटी कहाँ से आ जायगी?'

तोता चुपचाप फिर कटाई पर पिल गया। एक घटे के बाद मोहन ने हँसिए को बगल में रख दिया। कटे हुए स्थान पर उकड़ूँ बैठ कर बोला, 'तोता, इतनी खेती से कितने महीने काम चलेगा? मेरा तो जी उकता गया है। चाहता हूँ कि कहीं जाकर नौकरी कर लूँ! तुम घर को सँभाले रहना। तब आऊँगा जब कुछ रुपया गाँठ में हो जायगा।'

'मैं अकेले क्या करूँगा?'

'तुम हो, तुम्हारी भावी।'

'भावी की बातों का अनबाँटा बोझ कैसे ढो सकूँगा?

'जैसे भी हो; कुछ दिनों की तो बात ही है।'

'हूँ, कहाँ जाओगे, भैया?'

'यहीं कहीं किसी सरदार के बेड़े में। आगरा-बागरा में कहीं,'

हूँ।'

फिर दोनों कटाई करने लगे। प्यास लग आई। सूर्य की ओर देखा। अभी तक सिर पर नहीं आया था। हाथ रोक कर दोनों ने एक दूसरे के मुंह को हेरा। बिना कुछ कहे मेड़ पर गये और थेंटपर हाथ डाला। तोता ने हाथ खींच कर कहा, 'पानी पीकर फिर न जुट जाँय! एक घंटे बाद रोटी आ जायगी।'

परन्तु मोहन ने फेंट खोल ली थी 'आँतें जल रही हैं। केवल पानी से शान्त न होंगी। चबेने डाल लो, फिर पानी पियो,' मोहन ने कहा। तोता ने भी फेंट खोल ली और चबाने लगा। कुछ क्षण में आधे चबाकर बोला, 'आधे साँझ की जून काम में आवेंगे, क्यों कि ब्यारी कुछ देर से मिलेगीं।'

मोहन ने मान लिया। दोनों ने बाकी चने फिर फेंट मेंबाँध लिये। पानी पिया और अलसाने लगे। पासके एक पेड़ की छाया की ओर मोहन की आख गई।

मोहन ने अनुरोध किया. 'पानी पीते ही देह ढीली पड़ गई है। राय का जगा हूँ, थोड़ा सा आराम न करलें छाया में। फिर काम पर जुट पड़ेंगे।

तोता नहीं थका था, परन्तु उसने मोहन के अनुरोध को स्वीकार किया। दोनों पेड़ की छाया में जा बैठे। मोहन ने मिट्टी के एक ढेले की तकिया बनाई और पैर पसार कर लेट गया। तोता ने दूसरे ढेले की तकिया बनाई और उसने भी पैर पसारे। मोहन ने करवट ली और सो गया। थोड़ी देर में तोता को भी नींद आगई।

आध घंटे पौन घंटे उपरान्त सूर्य सिर के ऊपर आगया। हवा चल ही रही थी, उन दोनों की नींद और भी गहरी होगई। रोनी रोटी लेकर खेत की मेड़ पर पहुँची। उन दोनों को खेत के किसी भी भाग में न पाकर इधर उधर देखने लगी। पेड़ की छाया में पड़े हुए उन दोनों पर उसकी आँख जा अटकी। दाँत पीसती हुई वह पेड़ के नीचे जा पहुँची। खाँसी, पैर की आहट की परन्तु वे दोनो न जाग सके। रोनी की आँख इधर उधर पड़े हुए मिट्टी के छोटे बड़े ढेलों पर गई उसने चाहा दो बड़े ढेले उठा कर पहले एक मोहन की पीठ पर दूँ और दूसरा तोता की छाती पर। परन्तु उसने मन को मसोस लिया।

आतुरता से सांसें लेकर वह किसी निश्चय पर पहुँचना चाहती थी। अन्त में उसको एक ही उपाय सूझा। वह जोर जोर से चिल्लाने लगी।

'सत्यानाश जाए तुम्हारा, सत्यानाश। अरे खेती में आग लगा दो!! बैल बर्द बेच कर निकल जाओ कहीं डाँगड़ूगर में!!! तुम को लाज नहीं आती निगोड़े!!!!' 'सत्यानाश' का आशीर्वाद तो उन लोगों ने नहीं सुन पाया-पहले सुना होगा—पर बाकी सब उठते आँख मलते हुए उन्होंने सुन लिया।

'थक गये थे।' मोहन ने क्षमा प्रार्थना के स्वर में कहा। 'और सो लो'—वह बोली— 'और करदो खेत को चौड़ा!'

वे दोनोचुप रहे। रोनी का क्रोध और भी तीव्र हुआ। आँखों में आँसू आगए।

मेरे भाग्य फूटे सो माँ बाप चल बसे। किस काठ के टुकड़े से मेरा गला बाँध दिया गया है।' रोनी ने कहा और हिलकियाँ लेने लगीं। अपराध तो अवश्य होगया है; तोता नहीं चाहिये था पर क्या करता? मोहन ने सोचा और रोनी के आंसुओं की ओर पछतावे की उपेक्षा करते हुए तोता को सुझाव दिया।

'हाथ मुँह धोकर खा पी लो और कटाई पर जुट पड़ो। सांझ के पहले अन्न को खलियान में रख लेना है।'

तोता ने हामीं को सिर हिलाया और उठ खड़ा हुआ। रोनी ने देखा उसकी रिस या करुणा का कोई प्रभाव नहीं हुआ। गला स्थिरकिया और आँसू पोछ डाले। आँखें लाल थीं ही, गला बैठा हुआ। रोनी ने झटकार कर रोटियाँ एक ओर कर दीं। उनका कपड़ा खुल गया एक कटोरे में उर्द की गाढ़ी दाल थी। कटोरे में से थोड़ी सी गिर कर एक रोटी पर आगई। उसके नीचे थोड़ा सा मक्खन था; इस दृश्य ने मोहन की भूख कों तो नहीं चढ़ा पाया, उसके क्षोभ को बलबला दिया।

बोला, 'किसी दिन तेरी हड्डी पसली न तोड़ी तो मेरा नाम मोंहन नहीं।' रोनी ने तुरन्त क्षण के अंशमें मोहन की आंखों में भयङ्करता को निरख लिया। परन्तु वह सहज ही दबने वाली न थी। अपने पैंतरों को भी जानती थी खड़ी हो गई।

रोनी ने चिनौतीं दी,— आओ, आओ, मुझको मार ही न डालोगे, और क्या करोगे? मैं तो मरना ही चाहती हूँ।'

मोहन मारना नहीं चाहता था, परन्तु वह आगे बढ़ा। रोनी घर की ओर चली।

कहती गई, 'मैं जिस दि नन रहूँगी घर में कुत्ते लोटेंगे।'

इस भविष्यद्वाणी पर ध्यान न देकर मोहन ने रोटी दाल उठाई और खाने के लिये दोनों बैठ गए। खा पीकर वे दोनों काम पर लग गए। सूर्यास्त के काफी पहले उन्होंने खेत काट लिया, फिर खेत में कटाई के समय जो बालें छूट गई थीं बीन कर जमा की। इसके उपरान्त सब धान्य खलियान में रख लिया।

क्रमशः

संवाददाताओं के पत्र

बस्ती और बांसी में माननीय प्रधान मंत्री गोविन्द बल्लभ पंथ जी ने बांसी और और बस्ती की सभाओं में भाषण किया। दोनों सभाओं में लगभग एक लाख जनता ने भाषण सुना दूर दूर से किसान पैदल चलकर माननीय प्रधान मन्त्री का भाषण सुनने के लिये आये थे। माननीय प्रधान मंत्री ने अपने भाषण में कहा कि १५ अगस्त १९४७ को देश आजाद हुआ महात्मा गांधी की तपस्या से हमने आजादी बड़ी सुगमता से प्राप्त किया और अल्प समय में ही दुनियां की नजरों में हिन्दुस्तान का मान बढ़ गया। अपने समाचार पत्रों में पढ़ा होगा कि प्रधान मन्त्री नेहरू का जैसा शानदार स्वागत सुदूर अमेरिका में हुआ वैसा अब तक किसी का सम्मान वहां नहीं हुआ एक तरफ हमारा सिर ऊँचा हुआ है और दूसरी ओर हमारी घरेलू कठिनाइयां भी बहुत बढ़ गई। पाकिस्तान से लाखों भाई हमारे सूबे में आये, देश के और भागों में भी आकर बसे। सबकी सुसीबतों को दूर करना था। हमने उन मुसीबतों को दूर किया। हमारे सामने बड़ी बड़ी कठिनाइयां हैं लेकिन धीरे धीरे हम लोग उन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर लेंगे। हमारे सूबे की सरकार ने किसान को बहुत व्यापक अधिकार दिया है। 'भूमिधर' अधिकार प्राप्त करके किसान बहुत सुखी बन सकते हैं। अपनी जमीन के पूरे अधिकार हासिल कर सकते हैं। ऐसी सुविधा और किसी सरकार ने अब तक नहीं दीया है आवश्यकता पड़ने पर आप अपनी जमीन बेच भी सकते हैं। आज जैसी मंहगी है। वैसी हमेशा नहीं रहेगी। किसान भाइयों को अपने लगान का दस गुना जमा करके सदैव के लिये अपना लगान आधा करा लेना चहिये। सरकार की तरफ़ से कोई दबाव नहीं होगा कि वे जबरन लगान का दसगुना दें। हमने 'भूमिधरों' का दर्जा बहुत अधिक बढ़ाया है। आवश्यकता पड़ने पर १) जमा करने वाले 'भूमिधार' को १०) रुपये की तकावी मिल सकती है। बिना मुआवजे की जो चीज प्राप्त की जावेगी उसकी कीमत बाजार में स्थाई नहीं हो सकती है। लालटोपी वाले कहते हैं कि बिना मुवाजे की जमींदारी खत्म की जाये ऐसा ही एक दिन वे यह भी कहेंगे कि किसानों के पास खेत भी नहीं होना चाहिये। हम किसानों को को उनके खेत का मालिक बनाना चाहते हैं वे ऐसा अधिकार आपको नहीं देना चाहते।

जल्दी से जल्दी जमींदारी प्रथा को हम खतम करने जा रहे हैं। आप विश्वास रक्खें।

मौजा बलुआ तहसील बांसी के हरिजनों का धान खेत काटने के अपराध में जिलेदार वासुदेव, कर काहे दुनियापति, पत्थरशेख और दो अन्य सिपाहियों पर श्री महादेव प्रसाद जुड़िशियल हाकिम ने तीन तीन माह की सख्त कैद और ५०) ५०) रुपये का जुर्माना किया है। इस सजा से अब जिले में हरिजनों पर अत्याचार नहीं होगा, ऐसी आशा की जाती है।

दफ़ा ६३ रिकर्ड हाकिम के फैसले के दावों को प्रान्तीय सरकार ने बस्ती जिले में स्थापित कर दिया है। किसानों में प्रसन्नता है।

संवाददाता

उदयपुर—महिला मंडल उदयपुर की अध्यक्षा श्री कमला कुमारी श्रोत्रिय तीन व्यक्तियों के शिष्ट मंडल के साथ मंडल की सहायता के लिये सी० पी० व बरार का भ्रमण करने के लिये २ जनवरी से प्रारम्भ कर दिया है। इन्दौर, भूसावल, पांचोरा, आकोला, चांदा, वर्धा, जलगांव धूलिया, नागपुर, अमरावती, जन्द, धामनगांव, रायपुर, हींगन घाट, यवतमाल इत्यादि स्थानों पर सहायता के लिये मंडल का शिष्ठ मंडल घूमेगा। महिला मंडल राजस्थानी महिलाओं में १० साल से कार्य कर रहा हूँ। इसके तत्वावधान में महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिये विविध १० प्रवृतिया चल रही हैं। देश के बड़े बड़े नेताओं व विद्वानों ने इस संस्था का निरीक्षण किया है और आशीर्वाद दिया है। बरार केशरी श्री ब्रिजलाल बियाणी मंडल के ६ वें वार्षिकोत्सव पर पधारे और मंडल के कार्य को देखा और उसकी विकट आर्थिक परिस्थिति को देख कर देश के धनीमानी लोगों से सहायता की अपील की है।

लखनऊ—संयुक्त प्रान्तीय राजकीय चिकित्सक के मन्त्री श्री जयराम मिश्र सूचित करते हैं कि सम्मेलन का स्थायी कार्यालय अब लखनऊ में खुल गया है। अतः इससे सम्बन्धित कवियों को निम्नलिखित पते पर ही पत्र व्यवहार करना चाहिए। कार्यालय मंत्री, ५७ छितवापुर रोड, लालकुँवा लखनऊ।

—श्री नारायण विद्यार्थी

खामगां (मध्यप्रांत-बरार) में विभिन्न भाषा-भाषी शिक्षा शास्त्रियों तथा साहित्य प्रेमियों की एक सभा अमरावती के प्रसिद्ध पत्रकार श्री अणिकान्त जी बी० गोचार्य के सभापतित्व में स्थानीय हिन्दी हाई स्कूल में हुई। सभा के संयोजक श्री नेमा जी 'सा० र०' बी० ए० प्रधानाध्यापक हिन्दी हाई स्कूल ने उपस्थित सज्जनों को उस निश्चय से अवगत कराया जो राजर्षि पुरुषोत्तमदास जी टंडन के खामगांव के शुभागमन पर किया गया था। श्री आशाकान्त जी के मार्ग-दर्शन से सब तरह के भाषा भाषी साहित्य प्रेमियों की सर्वसम्मत एक समिति सर्व साहित्य का निर्माण हुआ।

—संवाददाता

प्रयाग माघ मेला में श्री १०८ प्रभुदत्त ब्रह्मचारी संकीर्तन भवन, झूसी, प्रयाग ने आयोजन किया है, कि माघ मास में गंगा तट पर बालकों का यज्ञोपवीत संस्कार कराया जाय। श्री ब्रह्मचारी जी की प्रार्थना पर स्वामी चक्रपाणि जो वेदान्ताचार्य वृन्दावन निवासी ने यज्ञोपवीत संस्कार कराने का भार अपने ऊपर लिया है। प्रान्त में दुर्दिना होने के कारण अनेक बालक आर्थिक संकट के कारण यज्ञोपवीत धारण नहीं कर पाते। ऐसे बालकों की सुविधा के लिये यह आयोजन किया गया है। माघ शुक्ला प्रतिपदा बृहस्पतिवार तदनुसार ता० १९ जनवरी सन् १९५० को यज्ञोपवीत संस्कार सनातन धर्म सभा कैम्प गंगा तट पर होगा। —मूलचन्द मालवीय

श्री सोहनलाल द्विवेदी लिखित

काव्य कृतियों के नवीन संस्करण

भैरवी

गांधी युग का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। महामना मालवीयजी के शब्दों में 'ऐसी कविता का प्रचार देश के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक होना चाहिए।' मूल्य २।।≡)

वासवदत्ता

बाबू मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं 'इस रचना से मैं बहुत प्रभावित हुआ।' स्वच्छन्दतापूर्वक जिस प्रौढ़ता की ओर द्विवेदीजी अग्रसर हो रहे हैं, जान पड़ता है, स्वयं वह भी उन्हें वरण करने के लिए आतुर हो रही है। 'वासवदत्ता' के प्रकाशन ने हिन्दी-साहित्य में एक नई क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। यह स्वयं पढ़कर निर्णय कीजिए। मूल्य १।।)

कुणाल

महापंडित राहुल सांकृत्यायन की सम्मति में—अशोक, तिष्यरक्षिता और कुणाल खास तौर से—'कुणाल' के चरित्र-चित्रण में कवि ने कमाल किया है। शब्द-सौकुमार्य और भावोत्कर्ष के साथ ही नपे तुले शब्दों के प्रयोग ने काव्य को बहुत ऊँचा उठाया है। विशेष संस्करण मूल्य २।।)

पूजागीत

राष्ट्रीय चेतना को काव्य का सच्चा स्वरूप देने के लिए द्विवेदी जी को प्रचुर सम्मान तथा लोकप्रियता प्राप्त हुई है। ये पूजा-गीत कवि के गौरव के अनुरूप ही हैं। मूल्य २)

विषपान

सुप्रसिद्ध पौराणिक कथा का सरल तथा सबल खंड-काव्य है। भाषा का प्रवाह, प्रसन्न शैली तथा कथा के मार्मिक घटना-क्रम की वर्णना ने इसे बड़ा ही हृदयग्राही बना दिया है। मूल्य १)

झरना
शिशुभारती
बाँसुरी

द्विवेदी जी पहले बालकों के कवि हैं पीछे राष्ट्र के। पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा माननीय सम्पूर्णानन्दजी ने इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा की है। 'अमृत बाजार पत्रिका' की सम्मति में—जिस प्रकार की शिक्षा बालकों को देने के लिए हमारे नेता वर्षों से प्रयत्न कर रहे हैं, इन पुस्तकों में उसी प्रकार का साहित्य है। प्रत्येक पुस्तक में कई रङ्गीन तथा अनेक सादे चित्र हैं। प्रत्येक पुस्तक का मूल्य १)

पूरे सेट का मूल्य १२ रु०

पता—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

ESTD 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेंट रिकगनाइजड AIDED

सिन्हा होमियो मेडिकल कौलेज

—पो० लहेरियासराय, बिहार—

आज हिन्दी उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़ कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्सन सहित फीस H.L.M.S. १०), H.M.B.S १५) H.M.D.S. २५) पुस्तकें—अ० परिवारिक १।।) बायोकेमिक १।।) मेटेरिया मेडिका १।।) मेडिकल डिक्सनरी २) आर्गेनन १।।) फार्मा कोपिया १।।) रेड लाइन सीम्पटम्स १।।) (१) बृ० इंजेक्सन चिकित्सा ३) बृ० अ० पारिवारिक चिकित्सा ६।।) बृ० अ० मेटेरिया मेडीका ६।।) ऐनाटोम १।।) परिक्षाविधान १।।) रिलेशन शिप, १।।) कुल किताबें २५) में एक साथ दी जायँगी डा० ख० माफ। अमेरिकन दवाइयाँ ३०—≈)।। २००—≡) ड्राम, फी औंस ।।), घरेलू बक्स पुस्तक सहित ३६ शीशी का ८) सुगर और गोली २।।) फी पाउण्ड। चौथाई Advance भेज दें। थोक खरीदार को २५ प्रतिशत कमीशन देते हैं।

नोटः—बृहत् सूची मुफ्त—सचित्र मेडिकल मैगजीन मासिक ।।) सालाना—५)

संरक्षक—राय सा० डा० यदुबीरसिंह एम० डी० यस० (U.S.A.)

सचित्र साप्ताहिक 'देशदूत' का विशेषांक

काश्मीर अंक

इस अंक का संपादन करेंगे

पंडित शिवनाथ काटजू एम० ए०, एल-एल० बी०

'देशदूत' के काश्मीर अंक विशेषांक के प्रकाशन की तैयारी जोरों से प्रारंभ हो गई है। काश्मीर की समस्या स्वतंत्र भारत को आज की एक प्रमुख समस्या है। काश्मीर भारत का अंग है। उसकी रक्षा तथा स्वतन्त्रता भारतीय सरकार का कर्तव्य है! इस विशेषांक में काश्मीर की वर्तमान समस्याओं पर राष्ट्र के बड़े बड़े नेताओं के गंभीर तथा जानकारी पूर्ण लेख रहेंगे। काश्मीर की भौगोलिक, ऐतिहासिक तथा राष्ट्रीयता का सचित्र विवरण दिया जायेगा। काश्मीर के प्रति पाकिस्तानी नीति पर भी नेताओं द्वारा सुन्दर प्रकाश डाला जायेगा। काश्मीर के संबंध में सुन्दर चित्र तथा नेशनल कान्फ्रेंस के नेताओं के संदेश आदि भी आकर्षक रूप में होंगे।

विज्ञापनदाताओं तथा एजेंटों को

अभी से अपना स्थान तथा बिक्री के लिये कापियाँ रिजर्व करा लेना चाहिये। नये ग्राहकों को यह अंक मुफ्त मिलेगा। यह अंक काश्मीर का एक अल्बम होगा।

दर्जनों चित्रों तथा कार्टूनों से सुसज्जित

इस अंक का मूल्य होगा केवल ।≈)

व्यवस्थापक 'देशदूत' इलाहाबाद

भारत के कोने-कोने में हजारों जनता-द्वारा पढ़ा

जानेवाला तथा ११ वर्षों से लगातार प्रकाशित होनेवाला

प्रमुख राष्ट्रीय साप्ताहिक पत्र

सचित्र देशदूत में

विज्ञापन देकर अपने व्यापार को बढ़ाइये

Registered No. A—295

प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल।

कृष्ण प्रेस, प्रयाग में ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल द्वारा मुद्रित तथा 'देशदूत' कार्यालय प्रयाग, द्वारा प्रकाशित।

हमारे जानवर

लेखक—कुँवर सुरेशसिंह

यह हिन्दी में अपने विषय की पहली पुस्तक है। हम अपने पास-पड़ोस के पालतू जानवरों को जरूर पहचानते हैं। उनकी आदतें और स्वभाव के बारे में भी थोड़ा बहुत जानते हैं, लेकिन इतने ही से क्या हम कह सकते हैं कि हमें सारे पशु-जगत् की जानकारी हो गई है?

इतना ही क्यों, हमें चिड़ियाखाना देखने का भी मौका मिला होगा। लेकिन वहाँ जिस सरसरी निगाह से हमने जानवरों को देखा होगा उनसे भी हम किसी पर विश्वास नहीं दिला सकते कि हमें पशुसमाज का काफी ज्ञान है।

ऐसी दशा में अपने देश के जंगल, पहाड़, बस्तियाँ और मैदानों में फैले हुए सैकड़ों पशुओं के बारे में तरह तरह की मनोरंजक बातें जानने के लिए एक ही उपाय है कि आप "हमारे जानवर" की एक प्रति आज ही मँगावें। आपको प्रायः सभी जानवरों का सचित्र वर्णन इस पुस्तक में मिलेगा। मूल्य ४)

तुलनात्मक भाषाशास्त्र

(भाषा-विज्ञान)

लेखक, डा० मंगलदेव शास्त्री एम० ए०, डी० फिल०

इसमें तुलनात्मक भाषाशास्त्र के सिद्धांतों का प्रतिपादन तथा संसार की भिन्न-भिन्न भाषाओं के परस्परसम्बन्ध की सरल और सुबोध व्याख्या है। प्रोफेसर ए० सी० बुलनर, डा० भगवानदास, म० म० गंगानाथ झा और श्री गोपीनाथ कविराज, डा० लक्ष्मणस्वरूप और धीरेन्द्र वर्मा आदि मनीषियों ने और अन्य नामी साहित्यिकों तथा पत्रों ने इसकी प्रशंसा की है। पृष्ठ-संख्या पौने तीन सौ से ऊपर; अच्छा कागज, बढ़िया जिल्द, मूल्य केवल ५)।

हमारी नई पुस्तकें

संगति

आकाशरंजन मेहता नामी डाक्टर थे। उनकी खासी आमदनी थी। किन्तु उनकी अर्द्धांगिनी सुशिक्षित हेमप्रभा यह समझती थी कि डाक्टर मेहता सिर्फ आविष्कार की धुन में रहते हैं; मेरे पिता के दिये धन से ही गुजर होता है। इससे वह सिर-चढ़ी स्त्री बन गई थी। और डाक्टर मेहता उसकी फटकार सुनकर भी भीगी बिल्ली बने हुए अपने काम में लगे रहते थे। उनका मित्र प्रणयलाल जौहरी कई वर्ष विलायत में रहकर लौटा तो उनसे मिलने आया। उन्होंने हेमप्रभा से उसका परिचय करा दिया। परिचय इतना घनिष्ठ हो गया कि उससे बचने को डा० मेहता आँखों का इलाज कराने के बहाने दूसरे प्रान्त में चले गये। इधर प्रणयलाल का रंग गहरा होता गया। कई महीने बाद डा० मेहता नकली अन्धे बनकर लौटे और इसी रूप में उन्होंने हेमप्रभा के खोये हुए प्रेम पर अधिकार किया। पुस्तक को हाथ में लेकर समाप्त किए बिना पाठक छोड़ना नहीं चाहते। लेखक के विलक्षण कथानक की सृष्टि करके गिरते हुए चरित्र को समुन्नत बनाया है। मूल्य १।।) एक रुपया आठ आने।

यात्री

श्रीयुत पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी बी० ए० ने इस पुस्तक में लिखा है कि हम सभी अनन्त पथ के यात्री हैं। यह जीवन-यात्रा कब आरम्भ हुई और कहाँ इसकी समाप्ति होगी। लेखक ने क्यों लिखूं, जीवन-पथ पर, स्मृति और शिक्षक-जीवन आदि २० शीर्षकों में विभिन्न विषयों पर परिमार्जित भाषा में उच्च विचार प्रगट किये हैं। यात्री अपने ढंग की पुस्तक है। सचित्र आवरण की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २) दो रुपया।

अनातोले फ्रांसकी चुनी हुई कहानियाँ

फ्रांस के इस नामी लेखक की प्रतिभा का अनुमान पाठकों को छाया-सुन्दरी उसका पति, रूप की परी, मदारी, पेरिस की सुन्दरी और माल आदि कहानियों से लगेगा। प्रत्येक कहानी बेजोड़ है। सामाजिक चित्रण सजीव है। ये कहानियाँ पाठकों का मनोरंजन करने के साथ ही उपकार भी करेंगी। मूल्य १) एक रुपया।

अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशन

वनवास

(खण्ड-काव्य)

कवि राजाराम श्रीवास्तव बी० एस०-सी०, वकील ने इस काव्य में मर्यादापुरुषोत्तम रामचन्द्र जी के वनवास का वर्णन बड़ी सुन्दर कविता में किया है। पुस्तक कवितापेमियों को मुग्ध कर लेती है। मूल्य ।।।=) चौदह आने।

अद्भुत कथा

इस पुस्तक में ऐसी विचित्र हृदयाकर्षक ११ कहानियाँ हैं जिनको लड़के बड़े चाव से पढ़ेंगे और सुनेंगे। कहानियों से शिक्षा भी मिलेगी। पुस्तक सभी के काम की है। मूल्य १।।) एक रुपया आठ आने।

यह सुप्रसिद्ध उपन्यास रायबहादुर बाबू बंकिमचन्द्र [...]ध्याय का बढ़िया उपन्यास है [...] हिन्दी रूपान्तर किया है कवि [...] सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' [...] "विषवृक्ष सभी के घर के [...] लगा हुआ है। क्षेत्र-भेद से [...] में रोग, शोक आदि नानावि[...] लगते हैं।" इस उपन्यास में [...] है कुन्दनन्दिनी जो थोड़ी अ[...] अनाथ हुई और नगेन्द्र [...] आश्रय पाकर उसके रिश्ते[...] ब्याही गई। फिर सत्रह साल [...] में विधवा हो गई। इसके [...] नगेन्द्र बाबू ऐसे रीझे कि उस[...] विधवा-विवाह कर लिया। [...] में वर्णित उलझनों में पड़कर [...] चकरा जाते हैं। भाषा और [...] सभी विचित्र हैं। मूल्य २) दो [...]

नवदुर्गा

नवदुर्गा बंगाली पंडित की [...] थी। उसका विवाह करने की [...] में मां-बाप और बेटी तीनों [...] कलकत्ते के लिए चले। रास्ते [...]रेश्वर तीर्थ में दर्शन करने [...] ठहर गये। वहाँ के महन्त अ[...] चरण पुरी ने नवदुर्गा को प्राप्त [...] के लिए जो जाल रचा उसका [...] पढ़कर पाठकों को दंग हो [...] पड़ता है। अन्त में महन्त का [...] चाकर अधरचन्द्र मुखोपाध्याय [...] की जूती और मियाँ का सि[...] कहावत के अनुसार महन्त [...] खासी रकम ऐंठकर और [...] को विधि से पत्नी बनाकर [...] हुआ। लेखक ने महन्त जी [...] दुर्गति काशी में लाकर कराई है [...] पाठक विस्मित और खिन्न हुए [...] न रहेंगे। मूल्य १।) एक रुपया [...] आने।

हार या जीत

इस उपन्यास में लेखक [...] ब्रजेश्वर वर्मा एम० ए०, डी० [...] ने एक देहाती लुहार की अल्प[...] बेटी को घटनाक्रम से, अनाथ [...] में, देहात से महराजगंज की [...] पृथाकुंवरि के आश्रय में पहुँचा [...] है। वहाँ रानी की कृपा [...] लड़की ने विद्या पढ़ी। फिर इस [...] गुणों का विकास हुआ जिससे [...] सभ्य होकर सम्मान पाता है। [...] असहयोग आन्दोलन में सक्रिय [...] लिया और अन्त में कलकत्ता [...] नौकरी कर ली। कई पुस्तकें [...] विदेश-यात्रा के बाद रानी [...] की प्रार्थना पर उससे विवाह [...] उपन्यास की घटनावली, वि[...] संघर्ष और चन्दा की न[...] दृढ़ता सराहने योग्य है। मू[...] दो रुपये।

देशदूत

वर्ष १२, संख्या १६]

रविवार, १५ जनवरी, १९५०

सम्पादक का पृष्ठ

हिन्द-अफगानिस्तान सन्धि

भारत-अफगानिस्तान के बीच सर्वदा के लिये शन्ति सान्धि जिस पर गत बुधवार को हस्ताक्षर किया जा चुका है नेहरू सरकार की महत्वपूर्ण सफलताओं में से एक है। किसी सरकार की अन्तर्राष्ट्रीय नीति की आलोचना उसके परिणाम की दृष्टि से करनी चाहिये। पं० नेहरू की विदेशी नीति की पूर्ण सफलता का प्रमाण भारत-अफगानिस्तान सन्धि है। पाकिस्तानी नेता संसार को इस बात का विश्वास दिलाने का प्रयत्न करते आ रहे हैं कि मध्य पूर्व तथा एशिया के मुस्लिम राष्ट्र एक बन्धु भावना से आवृत हो चुके हैं। वे अपने सजातीय बन्धु राष्ट्रों को हिन्दू-साम्यवाद के खतरे से सावधान रहने की चेतावनी भी देते आ रहे हैं। इस प्रकार की बातों में सत्य की मात्रा कितनी कम है, यह इस बात से जाहिर हो जाती है कि जब तब एक ओर भारत और अफगानिस्तान के बीच सर्वत्र शान्ति-सन्धि हो चुकी है तो दूसरी ओर अफगानिस्तान और पाकिस्तान में छिपे छिपे दाँव-पेंच चल रहे हैं।

कुछ सप्ताह बिते होंगे, पाकिस्तान ने अफगानिस्तान की निश्चल पाक विरोधी नीति पर अपने क्रोध को प्रकट करने के लिये कुछ सुविधाओं से अफगानिस्तान को वंचित कर दिया है जिनका उपभोग वह भूतकाल से करता आ रहा है कई पीढ़ियों से अफगानिस्तान अविभाजित भारत से होकर सस्ते ढुलाई-व्यय पर कुछ वस्तुओं के आयात करने के अधिकार का उपभोग कर रहा था। भारत विभाजन के बाद भी अफगनिस्तान ब्रिटिश सरकार द्वारा निश्चित सस्ती ढुलाई दर पर पाकिस्तान से होकर पेट्रोल पर आयात करता रहा। पाकिस्तान सरकार ने अब इस सुविधा को वापस ले लिया है। अब अफगानिस्तान को बढ़ी हुई पर पेट्रोल के आयात पर ढुलाई का व्यय देना पड़ेता इस सुविधा तथा इसी प्रकार की अन्य सुविधाओं के बन्द करने को वास्तविक अफगानिस्तान के विरुद्ध आर्थिक घेरा बन्दी की शुरुआत समझना चाहिये। अफगानिस्तान ने क्या किया है जिसके कारण (श्री लियाकतअली के शब्दों में बड़े भाई का रूख उसके प्रति शत्रुतापूर्ण हो गया है। अफगानिस्तान ने पठानिस्तान की मांग के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट की है और पठानिस्तान के प्रति पाकिस्तान की साम्राज्यवादी नीति की निन्दा की है। इस प्रश्न का निर्णय करने के लिये कि पठान लोग स्वतंत्र होना चाहते हैं या पाकिस्तानी नेताओं के कथनानुसार पाकिस्तान से सम्बद्ध रहना चाहते हैं, अफगान-प्रवक्ता एक पक्षपातहीन स्वतंत्र जनमतगणना की माँग करते हैं। सचमुच अफगान लोग खरा सत्य कहते हैं। उदाहरण के लिये अनिस का कथन है कि पाकिस्तान न केवल पठानिस्तान पर बल्कि अफगानिस्तान तथा मध्य एशिया के अन्य मुस्लिम राष्ट्रों पर भी नियन्त्रण स्थापित करना चाहता है। उन्होंने चेतावनी दी है कि इस्लाम मानवता के विरुद्ध पाकिस्तान के इस अपराध को कदापि सहन नहीं कर सकता। यदि पाकिस्तान अपनी नीति में परिवर्तन नहीं करता तो पाकिस्तान-अफगानिस्तान के बीच वर्तमान दाव पेंच प्रत्यक्ष युद्ध के रूप में बदल सकते हैं।

हिन्द—अफगान सन्धि के विभिन्न पहलुओं से पाक-अफगान सम्बन्ध की तुलना कीजिये। अन्य बातों के साथ ही सन्धि में दोनों राष्ट्रों के बीच सर्वदा शान्ति रहने की बात पर विशेष जोर दिया गया है। दोनों अपने अपने देश में परस्पर सांस्कृतिक संबन्धों को दृढ़ करेंगे और एक दूसरे को कृषि तथा औद्योगिक विकास में सहायता पहुँचायेंगे। इस्लामी राष्ट्र पाकिस्तान की अपेक्षा जनतान्त्रिक भारत आदर्श की दृष्टि से अफगानिस्तान के कहीं अधिक निकट है। ब्रिटिश साम्राज्यवादी भारतीय नेताओं से यह बात बार बार कहने पर भी नहीं थकते थे कि भारत का इतिहास अफगानिस्तान से होकर आये हुये मुस्लिम आक्रमणकारियों के शोषण का इतिहास रहा है और यह आपत्ति तभी समाप्त हुई जब ब्रिटेन ने भारत को अपने साम्राज्य के अन्तर्गत कर लिया। अस्तु यदि अंगरेज यहाँ से चले जायँगे तो वही परिस्थिति फिर लौट आयेगी। नेहरू सरकार ने अफगान आक्रमण के भूत को बिल्कुल दूर भगा दिया। यद्यपि भारत पश्चिमोत्तर से होने वाले किसी भी आक्रमण का सामना करने का सामर्थ्य रखता है किन्तु इस सन्धि के हो जाने से अब उधर से आक्रमण जैसी चीज का कोई प्रश्न ही नहीं रह गया। इस सन्धि के लिये हम अफगानिस्तान तथा भारत की सरकारों को बधाई देते हैं।

पुलीस मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री।

प्रधान मंत्री पंडित नेहरू

युद्ध छिड़ने पर

गत बुधवार को रात को बम्बई में दिये गये सरदार पटेल के भाषण का सबसे बड़ा महत्व यही है कि उससे पाकिस्तान के प्रति भारत की नीति का उदघाटन हो जाता है। उन्होंने कहा कि हम लोगों ने प्रेम के द्वारा पाकिस्तान की मित्रता प्राप्त करने का प्रयत्न किया किन्तु वे लोग युद्ध की बात करते हैं। हम किसी भी राष्ट्र से युद्ध नहीं चाहते किन्तु यदि पाकिस्तान युद्ध पर आमादा ही है तो हम इसके लिये भी प्रस्तुत हैं। यह तो स्वाभाविक ही है कि पाकिस्तानी क्षेत्र में सरदार पटेल की चेतावनी के विरुद्ध रोष प्रकट किया जायगा। किन्तु इस की बड़ी आवश्यकता थी। पाकिस्तानी प्रवक्ता कभी से संसार में चारों ओर कह रहे हैं कि पाकिस्तान को कोई भी शक्ति काश्मीर से वंचित नहीं कर सकती और यदि राष्ट्र संघ काश्मीर समस्या का कोई संतोष जनक हल नहीं निकालता है तो वे बिना हिचकिचाहट के तलवार का प्रयोग करेंगे। स्पष्ट रूप से काश्मीर समस्या के संतोषजनक हल का मतलब यही है कि काश्मीर पाकिस्तान का एक अंग बन जाय। पाकिस्तान का गर्म मिजाज सरदार पटेल के भाषण से जरा ठंडा हो जायगा। मुसोलिनी और हिटलर ने भी अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों को अपने लिये संतोष जनक ढंग से हल करने के निमित्त तलवार का प्रयोग किया था। परिणामतः उनके देश का विनाश हुआ। काश्मीर के झगड़े में न्याय तथा शक्ति दोनों दृष्टियों से भारत की विजय निश्चित है। इन परिस्थितियों में यदि दोनों देशों में युद्ध छिड़ता है तो परिणाम के विषय में भविष्य वाणी करना कठिन न होगा।

भारत के प्रधान मंत्री पंडित नेहरू एक सभा में

जमींदारी उन्मूलन और राष्ट्र

किसानों का भविष्य कहाँ तक निहित है ?

लेखक, श्री रमेश जोशी

भारत की प्रांतीय सरकारें जमीन्दारी उन्मूलन की योजना को कार्य रूप में परिणित कर रही हैं। इससे किसानों का भविष्य उज्ज्वल है। संयुक्त प्रान्त की सरकार भी जमीन्दारी उन्मूलन को कानूनी स्वीकृत कर चुकी है। इस लेख में लेखक ने जमींदारी उन्मूलन के महत्व को बतलाते हुए राष्ट्र के भविष्य की ओर दृष्टिपात किया है। लेखक पठनीय है।

आजकल के कानून वेत्ता और अर्थशास्त्र जानने वालों ने प्राचीन काल की मिली क्षीण रेखा के आधार पर प्राचीन ग्राम्य संघटन की रूप रेखा तैयार करने का प्रयत्न किया है। जो कुछ उस धुन्धले अतीत से मिल पाया है उससे हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि प्राचीन काल में गांव की जमीन के मालिक गांव के सभी रहने वाले माने जाते थे। बीच बीच में खेती करने वालों को आवश्यकता आ पड़ने पर अधिक जमीन बाँट दी जाती थी।

अँग्रेजी शासन की प्रारंभिक अज्ञानता और लाल चमरी गलतियों का परिणाम यह हुआ कि प्राचीन काल से प्रचलित भूमि व्यवस्था, जो समय पर क्रमशः प्रचलित हुई थी, एक दम नष्ट भ्रष्ट हो गई। अंग्रेज ज़मींदारों की तरह भारत में भी यह मान लिया गया कि ज़मीन का मालिक कोई व्यक्ति विशेष या खानदान है। कालान्तर में ज़मीन का अधिकार घटते घटते कुछ व्यक्तियों के हाथों में आ गया और खेती करने वाले बहुसंख्यक कृषक वर्ग के हाथों सिर्फ मिट्टी रह गई। देश की गुलामी का निशान ब्रिटिश राज था और कृषक की गुलामी का निशान ज़मींदार बन बैठा। किसान को अब ज़मींदार की भूमि पर खेती कर अपनी उदर पूर्ति करनी पड़ती थी। उसकी हालत दिन व दिन बिगड़ती ही चली गई। विदेशी साम्राज्यवाद के लिए स्वदेशी स्थम्भ का काम करनेवाले ज़मींदार के अत्याचार और शोषण की चक्की में वह पिसता चला गया। बाद में इन्हीं ज़मींदारों ने किसानों का शोषण करने में इतनी दक्षता प्राप्त कर ली कि वह तत्कालीन ब्रिटिश सरकार को भी मात देने लगे।

युग ने एक करवट ली। अँग्रेज गये और उनका स्थान देश में जनता की सरकार ने संभाला। सरकार ने कृषकों की दीन हीन हालत को देखा, उनकी मज़बूरियों को समझा और उनके पुनरुत्थान का बीड़ा उठाया। वैसे तो युक्त प्रान्तीय कांग्रेस के ज़मींदारी उन्मूलन की नींव ८ अगस्त १९४६ ई० के प्रस्ताव में ही डाल चुकी थी जब कि प्रान्तीय धारा सभा में उक्त आशय का प्रस्ताव पेश किया गया था। प्रस्ताव के सिद्धान्तों को स्वीकार करते हुए राज्य और कृषकों के बीच एजेन्टों...ज़मींदारी ..को हटा देने और उन्हें इसके मुआवज़े में निश्चित की जाने वाली रकम देने की स्वीकृति भी दी जा चुकी थी।

तीन वर्षों में सरकार असाधारण कठिनाइयों और परेशानियों से घिरी रही। इस बीच देश में काफी उथल पुथल मची। सन् १९४६ ई० में ज़मींदारी उन्मूलन हेतु स्थापित की गई नींव पर इमारत बनाये जाने का काम सन् १९४९ ई० में ही आरंभ किया जा सका। कांग्रेस सरकार अपने पुराने वायदे के अनुसार ही ज़मींदरी प्रथा का अन्त कर रही है। कानून का मसविदा बन कर प्रान्तीय धारा सभाओं में पेश किया जा चुका है। इस महान् कार्य को सफल बनाने के लिये प्रान्तीय सरकार ने एक छोटा सा कानून पास कराया है जिसके अन्तरगत् अपने लगान का १० गुना रुपया सरकार में जमा कर के कृषक भूमिधर बनने का अधिकारी हो जाता है।

भूमिधर बनने की यह प्रथा कोई नई नहीं है। बल्कि हमारी पुरानी हिन्दू कालीन व्यवस्था का ही नया रूप है। परन्तु आज ज़मींन की हालत यह है कि ज़मींदार ही उसका सर्वेसर्वा होता है। कृषक की किसी का मुहताज़ न रहने देने वाली अर्थ व्यवस्था अंग्रेजी काल के आगमन पर ही प्रायः समाप्त हो चुकी थी। ज़मींदार कृषकों काश्कारों से वास्तविक लगान की तिगुनी, चौगुनी रकम तक वसूल करते थे जब कि एक गुना सरकार में जमा हो कर तीन गुना उनकी

प्रां० असेम्बली के स्पीकर मान० टंडनजी

शानोशौकत और ऐशो-आराम में खर्च होता था। उत्पादन की कमी व गृह उद्योगों के अभाव के कारण कृषि पर पड़ने वाला लगान आदि का बोझ बढ़ता ही चला गया है। किसान की हालत तो ज़मींदारी प्रथा के रहते हुए सुधर ही नहीं सकती थी इसके साथ ही देश के आर्थिक ढांचे के चरमरा कर टूट जाने का भय हो चला था।

संयुक्त प्रान्त की सरकार का इस समस्या के समाधान का ढंग बिल्कुल क्रियातक है। वह किसानों, काश्तकारों और ज़मीन जोतने वालों की बेहतरी के लिए सुविधाजनक हालतें पैदा कर उन्हें कार्यरूप में परिणित करने में कटिबद्ध है। सरकार यह अपना पुनीत कर्त्तव्य समझती है कि शोषित कृषक, काश्तकार और खेतिहरों के जीवन का मापदंड ऊँचा उठे। स्वतंत्र भारत का प्रत्येक नागरिक विशेष कर उत्पादन, अपना उत्तरदायित्व समझे और अपनी आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक जीवन की नींव पक्की भूमि पर डाल सके। देश की खाद्य समस्या के इस संक्रामक काल में यह समस्या तत्कालिक बन गई। देश को पुनः समृद्धिशाली और धन धान्य सम्पन्न बनाने के लिए नई भूमि व्यवस्था और गावों का विकेन्द्री करण एक आवश्यक अंग बन गया।

संयुक्त प्रान्त ने ज़मींदारी उन्मूलन का मुख्य उद्देश्य उत्पादन की मात्रा बढ़ाना है अर्थात् जितना आज कल वास्तव में पैदा किया जा रहा है उससे कहीं अधिक उत्पादन करना है। इसके साथ साथ प्रस्तावित कानून के आधार पर ज़मींदार और काश्कार का रिश्ता एकदम गायब हो जाता है। हल चलाने वाले किसान और राज्य के बीच कोई किसान के परिश्रम से मौज उड़ाने वाला एजेन्ट नहीं रह जाता। किसान का सीधा सम्बन्ध सरकार से स्थापित हो जाता है।

आज तक ज़मींदार शोषक और किसान ज़मींदार की भूमि पर आसामी, पट्टेदारी या शिकमी काश्तकार के रूप में खेती करने वाला शोषित रहा है। अब किसान के भूमिधर बन जाने से वह भेंद सदा के लिए मिट जावेगा। आज का वह ज़मींदार आगे को उस ज़मीन का जिसमें उसका हल चलता है, भूमिधर कहलायेगा और आजका वह काश्तकार भी जो अपने लगान का १० गुना रुपया तत्काल नगद दाखिल कर देता है वह अपनी ज़मीन का भूमिधर या मालिक बन जायेगा। यों मुआविज़ा हर सूरत में किसान की जेब से ही आयेगा। मौजूदा लकाग के रूप में ही देते रहना चाहता है तो उसे ज़्यादा देना पड़ेगा और सरकार ज़मीन की मालिक रहेगी।

संयुक्त प्रांत के प्रधान मंत्री पंडित पं

भूमिधर बन जाने से किसान कई फ़ायदे हैं। भूमिधर होने पर ज़ दार के अत्याचार तो खत्म होंगे साथ ही काश्तकार का सदियों का हुआ स्वाभिमान भी उसे वापिस मि जिस भूमि को उसने अपना खून प एक कर जोता बोया है, जिसके उसका आत्मीय की तरह स्नेह हो ग लेकिन वह अभी तक उसे अपनी समझ पाया है। आज वह अपनी चिर इच्छित अभिलाषा को मूर्त्त में अपने सामने पा रहा है। कृषक में भूमि की महत्ता को कृषक हृदय अनुभव कर सकता है। अपनी और गृह के स्वामित्व में जो आ और मानसिक सतुष्टि है उसका आ उसे होगा।

जहां भूमिधर की अपनी भूमि एकाधिकार प्राप्त होगा वहां काश्तका भूमिधर बनने वाले का कर या ल सदैव के लिये आधा हो जावेगा। भू धर अपनी ज़मीन को चाहे जिस प्र भी काम में लाने का अधिकारी हो वह चाहे तो उसमें कारखाना लग आटे की चक्की लगाये, भट्ठा लगाये किराये के लिए मकान बनवाये। सब बातों से बढ़ कर उसको अधि होगा कि वह अपनी ज़मीन की जमा पर आवश्यकतानुसार कर्ज़ ले स वह किन्हीं वैयक्तिक कारणों से खेती न करना चाहे तो उसे यह अधिकार होगा कि वह अपनी भूमि चाहे बेचे, चाहे दान दे या किसी के वसीयत कर दे। ज़मीन को चाहे जि अरसे के लिये खाली रखने का अधि भी उसे होगा।

(शेष पृष्ठ १४ पर)

तीन दो पांच

लेखक, श्री बी० पी० श्रीवास्तव बी० ए०, एल० एल० बी०

जीवन में धन का महत्व विशेष होता है, एक पैसा हो या अधिक। इस सुंदर कहानी में तीन दो पाँच की करामात की रोचक घटना का मनोरंजक चित्रण आकर्षक है। कहानी पठनीय है।

जब बेचारे पति दफ़्तर चले जाते हैं
ब पत्नियां घर पर मौज करती हैं। उधर
व वे कागजों और फाइलों से सिर मारते
,आफीसरों की झिड़कियाँ सुनते हैं और
ल नीली स्याहियों से अपनी उँगलियाँ
ौर अँगूठे रंगते हैं तब इधर घर पर
ाना बजाना होता है हँसी—मजाक
ता है और पान तमाखू से
ोंठ लाल किये जाते हैं। एक तरह से
ब पति घर के बाहर पैर रखते हैं तो
ित्नियों को स्वराज्य सा मिल जाता है
ौर ग्यारह से पाँच तक के लिये तो वे
र की प्रायः रानी ही हो जाती हैं।

अतएव जब मिस्टर तिवारी पोस्ट
ाफिस, मिस्टर वर्मा कचहरी और मिस्टर
ह पावर हाउस चले जते हैं तो श्रीमती
ारी, श्रीमती वर्मा और श्रीमती सिंह,
बैठक प्रारम्भ हो जाती है और यदि
सी दिन श्रीमती सिंह के हारमोनियम
र श्रीमती तिवारी के तबलों पर गाना
ाना होता है तो किसी दूसरे दिन
मती वर्मा के ग्रामोफोन द्वारा मनोरंजक
या जाता है। बैठक बहुधा श्रीमती
ारी के यहाँ ही होती है क्योंकि
नका कार्टर तीनों कार्टरों के बीत में
ता है और इसके अतिरिक्त उनकी
भर की मुन्नी की देख भाल के
रण वे यहां वहां जा आ भी नहीं
कती हैं। इसलिए जिस दिन गाना
ाना नहीं होता तो इधर उधर की
ें ही समय काटने की सामग्री बन
ती हैं और इस बीच में तिवारी जी
कमरे में टँगा हुआ उनका फोटो भी
ोरंजन का विषय बन जाता है।
ी उनकी मूँछों की दिल्लगी उड़ायी
ाती है तो कभी उनकी लम्बी सी
ाक की। फिर किसी तीसरे दिन ताश
लकर ही समय व्यतीत किया जाता
और चूँकि चौथे खिलाड़ी की बहुधा
मी रहा करती है इसलिये अक्सर तीन
पाँच का ही खेल हुआ करता है।
जिस दिन तिवारी जी की बरौनी
संती यथा समय काम करने आगई
ौर यदि उसे अवकाश हुआ तो कभी
ी काट अथवा ३०४ का खेल भी हो
ाया करता है।

एक शनीवार की बात है। घर के
ाम काज से निवृत होकर अपने अपने

कार्टर के पिछले दरवाजे से निकल कर श्रीमती वर्मा और श्रीमती सिंह, श्रीमती तिवारी के यहाँ जा पहुँची! कुछ देर तक इधर उधर की बातें हो चुकने के पश्चात् श्रीमती वर्मा के सुझाव के अनुसार तीन दो पाँच खेलने का निश्चय किया गया। यद्यपि श्रीमती सिंह ने इसका विरोध किया और खेल में सम्मिलित होने के लिये अपनी सम्मति नहीं
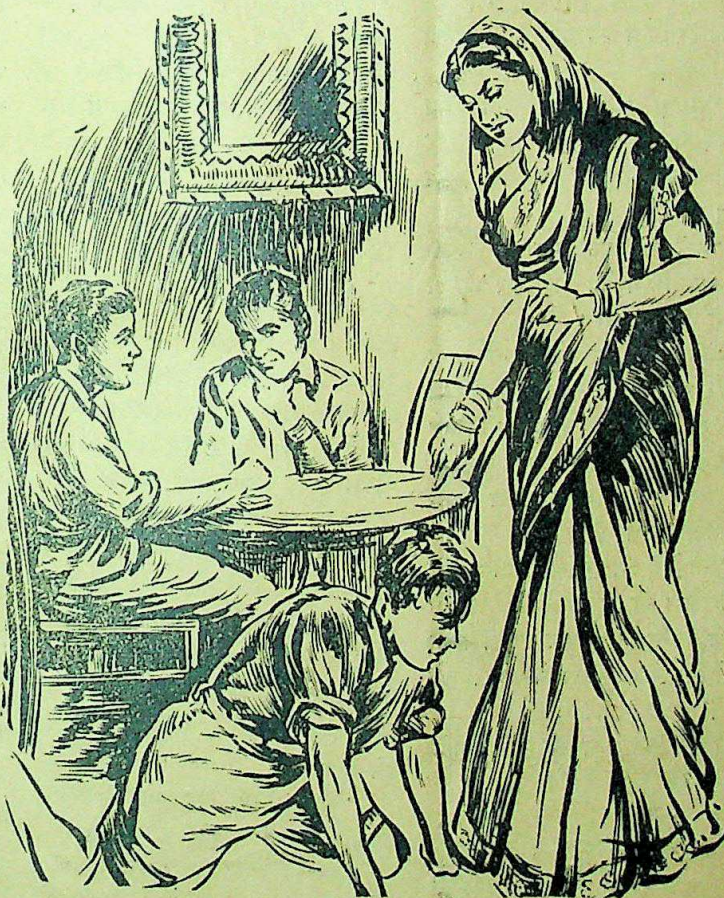
श्रीमती वर्मा ने एकाएक कमरे में प्रवेश किया तो देखा कि......।

दी—क्योंकि वे जब भी खेलती थीं तो श्रीमती वर्मा से सदैव हारा करती थीं और इसी कारण उनका श्रीमती वर्मा से एक दो बार झगड़ा सा भी हो गया था—किन्तु जब उन दोनों ने इन्हें बहुत कुछ समझाया मनाया और जोर भी दिया तो श्रीमती सिंह को विवश होकर उनकी बात माननी पड़ी और खेल आरम्भ हुआ।

यद्यपि शुरू में खेल साधारण तौर से होता रहा—न कोई विशेष रूप से हारता ही था न जीतता ही—किन्तु कुछ ही देर बाद सारे खेल की काया-पलट सी होगई। श्रीमती सिंह अब हर बार हारने लगीं। श्रीमती वर्मा हर हाथ उनके कभी एक तो कभी दो और कभी कभी तीन तीन पत्ते खींचने लगीं। इस तरह श्रीमती सिंह को काफी नुकसान होता था क्योंकि बहुधा उनके बड़े बड़े पत्ते और कभी कभी तो काट के भी पत्ते श्रीमती वर्मा के पास पहुँच जाते थे और बदलेमें उन्हें किसी दूसरे रंग के सत्ते या अट्ठे से बड़ा पत्ता मिलता ही न था। वे इस पर झुंझला उठती थीं और श्रीमती वर्मा पर अपने पत्ते देख लेने, पत्ते पहिचानने और बेईमानी करने का आरोप लगाया करती थीं। किन्तु वे जितना ही चिढ़ाती थीं, श्रीमती वर्मा उन्हें उतना ही चिढ़ाया करती थीं। इतना ही नहीं उनकी दोनों तरफ से आफत होती थीं। न केवल श्रीमती वर्मा ही उनके पत्ते खींचती थीं कभी कभी ऐसा भी होता था कि श्रीमती तिवारी और श्रीमती वर्मा दोनों ही मिलकर उनके पत्ते खींचा करती थीं और इस तरह से जो एकाध भूला भटका इक्का या बादशाह उनके पास आजाया करता था वह भी इसी खींचा तानी में वर्मा या तिवारी के पास पहुँच जाता था और उनके पास केवल अट्ठे नहलों की फौज के कुछ भी न रह जाता था। ऊपर से श्रीमती वर्मा और तिवारी की व्यंग भरी हँसी उनके हृदय में बरछी सी लगती थी। परिणाम स्वरूप उन्हें हर बार हारना ही पड़ता था। इसलिये जब उन्हें पांच हाथ भी बनाना पड़ते थे और यदि एक भी बन जाता था तो वे अपना भाग्य समझती थीं!

एक बार ऐसा हुआ कि श्रीमती वर्मा को श्रीमती सिंह का एक पत्ता खींचना था। काट हुकुम था। श्रीमती वर्मा ने श्रीमती सिंह से ऊपर से दूसरा पत्ता माँगा। श्रीमती सिंह का हृदय धड़क उठा और ज्योंही उन्होंने वह पत्ता श्रीमती वर्मा को देने के लिए देखा तो वह हुकुम का इक्का निकला। झट उस पत्ते को उन्होंने सबके नीचे कर दिया और दूसरा पत्ता जो चिड़ी का दहला था उनकी तरफ बढ़ा दिया। उनकी इस चालाकी को श्रीमती वर्मा ने देख लिया था इसलिये ज्योंहि श्रीमति सिंह ने चिड़ी का दहला उनकी तरफ बढ़ाया श्रीमती वर्मा ने उनके दूसरे हाथ को जिसमें बाकी पत्ते थे जोर से पकड़ कर कहा—

"यह बेईमानी, काट का इक्का खिंचते दिखा तो झट पत्ते बदल दिये।"

"किसने बदल दिये, तुम्हारे ही सामने तो पत्ता निकाल कर दे रही हूँ।" श्री मति सिंह ने इस तरह का भाव करते हुये कहा जैसे वे बिल्कुल निर्दोष हैं।

"रोओ मत बहिन, मैंने तो सब देख लिया है, देना हो तो वही इक्का दो नहीं तो यह दहला भी रख लो, कोई थराई थोड़े है" श्रीमती वर्मा बोलीं।

"वाह इक्का मैं क्यो दूँ जब वह खिँचा ही नहीं। लेना हो तो यह दहला लो" श्रीमति सिंह ने फिर उत्तर दिया।

किन्तु श्रीमती तिवारी चुप थीं क्योंकि उन्होंने श्रीमती सिंह की इस चालाकी को नहीं देख पाया था और इसलिये वे किसी की तरफ बोल भी नहीं सकती थीं। यद्यपि वे चाहती थीं कि किसी प्रकार यह झगड़ा समाप्त हो किन्तु जबश्रीमती वर्मा और श्रीमती सिंहमें काफी बहस हो चुकी और इस बात का फैसला न हुआ तो उन्होंने यह सलाह दी की पत्ते फिर से बाँटे जाँय और खेल फिर से आरम्भ हो। श्रीमती सिंह इस पर तुरंत तैयार हो गईं किन्तु श्रीमती वर्मा को क्रोध आ गया और उन्होंने अपने पत्ते फेंकते हुये कहा—

"खेलना हो तो ठीक से खेलो नहीं तो खेल बन्द करो। जब मेरे पत्ते खिंचते हैं तो मैं चुपचाप दे देती हूँ लेकिन तुम अपनीबार रो देती हो।"

श्रीमती सिंह को भी अब ताव सा आ गया था। उन्होंने भी झट उत्तर दिया—

"मत खेलो! मुझे ही क्या गरज पड़ी है खेलने की। तुम्हारे ही कहने से मैं खेल रही हूँ वरना मैंने तो पहले ही इंकार कर दिया था"।

और इतना कहने के पश्चात् उन्होंने भी अपने पत्ते फेंक दिये।

थोड़ी देर तक और बहस होती रही किन्तु अन्त में श्रीमती तिवारी के समझाने बुझाने पर खेल फिर प्रारम्भ हुआ। श्रीमती सिंह अब प्रायः बिलकुल चुप खेल रहीं थीं। हार जीत भी बिना कुछ कहे सुने अपने ऊपर ले लेती थीं किन्तु श्रीमती वर्मा ने अभी उन्हें चिढ़ाना नहीं छोड़ा था। जब श्रीमती सिंह हारती तो वे उन पर व्यंग कसतीं, हँसतीं और सदैव उन्हें चिढ़ाने की फिक्र में रहती थीं। किन्तु इन सब बातों का अब श्रीमती सिंह पर कोई असर नही पड़ रहा था वे चुपचाप गुमसुम खेल रही थीं। लेकिन एक बार बीच में फिर एक ऐसी घटना घट गई जिससे श्रीमती सिंह को अपनी मौन व्रत तोड़ना पड़ा। बात यह हुई की श्रीमती वर्मा को पत्ता फेंकना था और जब उन्हें इस बात की याद दिलाई गई तो उन्होंने चिड़ी का गुलाम फेंकते हुये कहा "लो मैं ये चली मिस्टर सिंह को।"

श्रीमती सिंह के हृदय में आग सी लग गई। उनकी इच्छा हुई की श्रीमती वर्मा को पत्ते फेंक कर मारें जाँय किन्तु कुछ कारण वश वे ऐसा नहीं कर सकीं और फर्श पर पत्ते फेंकते हुए उन्होंने कहा —

"मैं अब नहीं बोल सकती, बहुत हो चुका इसकी यह मजाल कि उनकी तुलना चिड़ी के गुलाम से करें।" और इतना कह कर वे उठकर जाने लगीं।

श्रीमती तिवारी ने जब देखा कि बात बहुत बढ़ गई तो उन्होंने श्रीमती वर्मा को कोई तरह से कुछ ताड़ना सी दी और श्रीमति सिंह का हाथ पकड़ कर उन्हें बहुतेरा समझा बुझाकर फिर खेलने को तैयार किया किन्तु श्रीमती सिंह इस शर्त पर राजी हुई की श्रीमती वर्मा अब उन पर और अधिक कटाक्ष न करें।

धीरे धीरे खेल फिर प्रारम्भ हुआ किन्तु इस घटना के पश्चात् कमरे में में निस्तब्धता सी छा गई थी। श्रीमती वर्मा भी अब श्रीमती सिंह की भांति गुमसुम होकर खेल रही थीं। सम्पूर्ण कमरे में एक सन्नाटा छाया था केवल पत्तों के फर्श पर गिरने की चट चट सी आवाज होती थी। कोई किसी से बोल रहा था और श्रीमती वर्मा और सिंह की भाव मुद्रा से ऐसा मालूम होता था कि दोनों एक दूसरे को निगल जाने के लिये तैयार सी बैठी हैं।

श्रीमती सिंह हर बार हार रहीं थीं और अबकीबाजी भी हारती हुई सी थीं। उन्हें इस बार पाँच हाथ बनाना था और अभी कुल दो ही बने थे किन्तु उनके पत्ते बिलकुल साधारण बचे थे और उन्हें तीन हाथ और बनाने की फिक्र थी। इसलिये एक बार उन्होंने अपने नीचे पड़े पत्ते को उठाकर चलना चाहा किन्तु ज्यों ही उन्होंनेपत्ता उठाकर चुपके से अपने हाथ के पत्तों में मिलाना चाहा त्योंही श्रीमती वर्मा ने उनका वही हाथ पकड़ कर जोर से चिल्ला कर कहा—

"फिर बेईमानी, पत्ता नीचे डालो।"

श्रीमती तिवारी ने भी इस बार श्रीमती सिंह को पत्ता उठाते देख लिया था इसलिये उन्होंने भी श्रीमती वर्मा को शह देते हुये कह—

"अरे यह बड़ी चोट्टी है, ठीक से खेलती ही नहीं।"

"जैसे मिस्टर सिंह चोट्टे हैं वैसी ही श्रीमती जी भी हैं" श्रीमती वर्मा ने तपाक के कहा।

श्रीमती सिंह अब अधिक न सह सकीं। उन्होंने पत्ते तो एक तरफ फेंक दिये और भौंहें तान कर जोर से चिल्ला कर कहा—

"कैसे चोट्टे हैं वे, बतलाओ कैसे चोट्टे हैं?"

श्रीमती वर्मा को अब चिन्ता हुई कि यह बात आगे न बढ़े इसलिये उन्होंने बात बदलते हुये कहा—

"पहिले तुम यह बतलाओ कि तुमने खिला हुआ पत्ता क्यों उठाया।"

"नहीं, पहिले तुम इस बात का जवाब दो कि वे कैसे चोट्टे हैं!" श्रीमती सिंह बोलीं!

"अच्छा छोड़ो बातें तुम दोनों मामूली सी बात पर लड़ने लगती हो" श्रीमती तिवारी ने दोनों को समझाते हुये कहा।

"नहीं इसको इस बात का जवाब देना होगा कि वे कैसे चोट्टे हैं।" श्रीमती सिंह ने फिर दुहराया।

श्रीमती वर्मा का क्रोध अब सीमा पार कर चुका था, वे यद्यपि इस बात को आगे नहीं बढ़ाना चाहती थीं किन्तु श्रीमती सिंह की अभिमान युक्त बातों ने उन्हे इसके लिये विवश कर दिया। इसलिये उन्होंने उत्तर दिया।

"चोट्टे हैं ही, दस रुपये उधार लिये थे और कहा था कि पहली तारीख को दे देंगे, किन्तु जब से अब तक दो पहली तारीखें निकल गईं औररुपये अभी मिलते ही हैं!"

श्रीमती सिंह लजा सी गईं क्योंकि बात सच थी किन्तु उन्होंने फिर उत्तर दिया—

"तो इसमें चोट्टाई की कौनसी बात, रुपये लिये है दे देंगे, कोई यह थोड़े ही कहता है कि रुपये देंगे ही नहीं।"

"दो महीने हो गये और अभी तक रुपये नहीं लौटाये, इसलिये मैं तो यही समझती हूँ कि अब वे क्या वापिस मिलेंगे।" श्रीमती वर्मा ने कहा।"

"चुप रहो मैं अब अधिक कुछ नहीं सुन सकती जिन्होने रुपये लिये दिये हैं वे जाने, तुम्हें इससेक्या मतलब" क्रोधावेश में आकर श्रीमती सिंह ने कहा!

"तुम भी चुप रहो, चोरी और ऊपर से सीना जोरी, क्या यह चोट्टाई नहीं है— मैं तो हजार बार कहूंगी कि वे चोट्टे हैं—चोट्टे।"

श्रीमती तिवारीकीबातों का इनदोनों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा था और अब तो बात इसपर दोनों में झूमाझटकी भी होने लगी। श्रीमती सिंह और श्रीमती वर्मा दोनों एक दूसरे से जूझ पड़ीं और उनके इस हल्ले से बेचारी मुन्नी की भी नींद खुल गई। उसके क्रन्दन ने और भी हल्ला मचाया। उधर दीवार पर टँगी घड़ी ने भी पाँच बजाये। बड़ा हो हल्ला मचा। दोनों एक दूसरे से भिड़ पड़ी थी और बेचारी श्रीमती तिवारी दोनों को एक दूसरे से अलग करने का व्यर्थ प्रयत्न कर रही थीं। इसी बीच में तिवारी जी की बरौनी ने अन्दर आते हुये कहा—

"अरे बाई यह कैसा झगड़ा, अपने अपने घर जाओ बाबू जी आ रहे हैं।"

किन्तु इस बात का भी उन दोनों पर कोई प्रभाव न पड़ा। इतने ही में बरामदे में साइकिल के रखने की और साथ ही घन्टी के बजने की आवाज आई और एक ही क्षण बाद तिवारी जी के कमरे में आने की आहट हुई! उन्हें देखते ही दोनों एक दूसरे को छोड़ कर पिछले दरवाजे से बेतहासा अपने क्वार्टरों को भाग गईं।

किन्तु इस घटना के कई दिनों बाद तक श्रीमती वर्मा और श्रीमती सिंह एक दूसरे से नहीं बोलींऔर न श्रीमतीतिवारी के यहां उनकी बैठक ही हुई!

सम्पादक के नाम चिट्ठियाँ

रेडियो का वहिष्कार क्यों

लखनऊ के जन पद हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने एक प्रस्ताव में रेडियो बहिष्कार को अनुचित बताते हुये कहा है कि आल इंडिया रेडियो द्वारा हिन्दी भाषा की उतनी अवहेलना नहीं हो रही है जितनी हिन्दी भाषी क्षेत्रों के श्रोताओं की और इसीलिये यह आन्दोलन केवल साहित्यकारों तक, जैसी कि वर्तमान स्थिति है, सीमित नहीं रहना चाहिये। बल्कि समस्त श्रोताओं का सहयोग प्राप्त कर इसे प्रबल जन आन्दोलन बना देना चाहिये। साथ ही यह आन्दोलन वैधानिक तरीकों से ही चलाया जाय। इसी प्रस्ताव में जनपद सम्मेलन ने यह भी कहा है कि वर्तमान आन्दोलन का स्वरुप ऐसा है, जिससे स्पष्ट होता है कि वह कुछअसन्तुष्ट अथवा पदाकांक्षी व्यक्तियों द्वारा प्रेरित किया गया है।

आल इंडिया रेडियो की हिन्दी विरोधी नीति नयी नहीं है। जिस समय रेडियो परिचालन इंडियन ब्राडकास्टिंग कम्पनी के हाथ था, उस समय वहां हिन्दी नाम मात्र को न थी, क्योंकि तब रेडियो रखने वाले ही इस देश में इनेगिने थे, जिन्हें हिन्दी से कोई प्रयोजन न था। १९३४ में सरकारी विभाग बनने पर जब रेडियो का प्रसार हुआ और नये स्टेशन खुले, तो स्वभावतः लोगों रुचि जाग्रत हुई और श्रोताओ की सं बढी। और बुखारी बन्धुओं की ठेकेदारी में मनोनुकुल भाषा तथा का क्रम न पाने पर लोगों में क्षोभ फै लगा। युद्ध काल में जब श्रोताओं संख्या अत्यधिक हो गई,तो भाषा सं क्षोभ ने असन्तोष का स्थान ग्रहण लिया और तभी उनकी ओर से हि साहित्य सम्मेलन ने रेडियो भाषा संब प्रश्न को अपने हाथ में लिया। उ रेडियो के बहिष्कार का आन्दो चलाया और समस्त हिन्दी जगत् उसके नेतृत्व को स्वीकार करके दृढ़ और स्वार्थत्याग से काम लेकर इस आन् लन को सफल बनाया।

इसी आन्दोलन के फलस्वरूप १९ में रेडियो विभाग को हिन्दी साहि सम्मेलन से समझौता करने के लि वाध्य होना पड़ा। यह समझौता पूर्ण सम्मानजनक तो नहीं कहा जा सक किन्तु फिर भी आंसू पोछने को का था। इस समझौते के अन्तर्गत हि भाषी केन्द्रों में हिन्दी उर्दू और हिन्दु स्तानी का अनुपात बांध दिया ग यद्यपि उसका पालन आज तक न किया गया। साथ ही रेडियो विभाग प्रथम बार एक हिन्दी भाषी सज्जन डि डायरेक्टर जेनरल के पद पर नियुक्त हुये यह सज्जन युक्तप्रांत के प्रमुख शि विशारद हैं और इस प्रान्त में शि प्रसार के क्षेत्र में उनके प्रयत्न प्रशंसनी हैं, किन्तु दिल्ली जाकर वह असफ रहे, ऐसा वे स्वयं स्वीकार करते हैं उनकी नियुक्ति रेडियो में हिन्दी के प्रश को दृष्टिगत रख कर की गई थी, कि वे ऐसा करने में असमर्थ रहे और उन अनुसार इसका दोष वहां की कुछ गु बन्दियों पर है, जिसने उनकी चेष्टाओं निष्फल कर दिया।

जहां तक आल इंडिया रेडियो डायरेक्टरेट जेनरल का प्रश्न है, व निःसन्देह ऐसी गुटबन्दियां हैं, जो हिन् का उत्कर्ष सहन नहीं कर सकती। पर दुनियां में काम ऐसा कौन सा है, जिस वाधक विरोधी तथा विपरीत कर्मी न हों युक्ति और बुद्धि साहस तथा दृढ़ता आत्मविश्वास से विपरीत स्थितियों विजय पाना कठिन नहीं होता। जो ऐ करने में असमर्थ रहे, उसके लिये उचि ही है कि वह किसी ऐसे व्यक्ति के लि मार्ग साफ कर दे, जिसमें ये गुण हों केवल एक पद पर हिन्दी भाषी के पहुँ जाने से तो हिन्दी का उद्धार नहीं जाता। परन्तु दुर्भाग्यवश हुआ उलटा एक साहसी और दृढ़ संकल्पयुक्त व्यक्ति आते ही नहीं बल्कि उसके इस पद

(शेष पृष्ठ १४ पर)

लाल चीन और एशिया

क्या एशिया के लिये कम्यूनिस्ट चीन का जनतंत्र शुभ होगा ?

लेखक, श्री दीनदयाल शास्त्री एम० एल० ए०

चीन में लाल साम्यवाद की स्थापना हो गई। ।भारत तथा ब्रिटेन ने चीन को स्वीकृत कर लिया है ? अब प्रश्न यह है कि क्या चीन का कम्यूनिज्म एशिया के लिये हितकार होगा या नहीं ? इस लेख में ।विद्वान लेखक ने इसी समास्या पर विवेचन किया है जो पठनीय तथा सामाजिक है।

हमारा पड़ोसी चीन अब लाल है। प्रकृति ने उसे पीला बनाया था विचारों ने उसे लाल बना दिया है। मतलब यह कि अब तक चीन अन्य राष्ट्रों की भांति राष्ट्रवादी था। अब वह रूस की भाँति लालक्रान्ति का उपासक है और साम्यवाद को जन साधारण के लिये क्षेम का मार्ग मानता है। यही कारण है कि रूस तथा उसके हिमायती राष्ट्रों ने बहुत पहले ही।लालचीन को अपने दरबार में मान्यता दे दी थी और अब कोई दूसरा चारा न देखकर संसार के सब बड़े २ राष्ट्र उसे मन्यता दे रहे हैं। पहले और इस नयें लाल चीन की मान्यता में थोड़ा भेद है। पहला चीन स्वतंत्र था, यह नया चीन भी स्वतंत्र है। स्वतन्त्र राष्ट्र को अपने दरबार में मान्यता देना उसकी अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति एवं ख्याति को स्वीकार करना है। राष्ट्रवादी चीन को मान्यता देने का केवल यही अर्थ था एक पारिपाटी हैं जो सब राष्ट्र पूर्ण करते हैं उसकी खाना पूरी भर यह मान्यता है। लाल चीन को मान्यता देना इस परिपाटी से कुछ आगे बढ़ जाता है। इसका अर्थ यह लालचीन की विचारधारा को मान्यता देना।साम्यवाद अच्छा है या बुरा, वह मानव का कल्याण द्वार है या खूनी क्रांति द्वारा उसका विनाशक इस ऊहापोह में आज दुनिया से अधिक राष्ट्र पड़े हुए हैं। वे यह नहीं निश्चय कर पाते कि मानव के लिये कौन कल्याण कारी मार्ग है इस ऊहापोह में वे साम्यवाद को अपनाने में संकोच करते हैं और इसलिये ही लालचीन को मान्यता देने में घबराहट अनुभव करते है इस विचारधारा के राष्ट्र यह मानते हैं कि यदि हमने लाल चीन को मान्यता दी तो इससे एशिया में साम्यवाद के विस्तार को मुक्तद्वार
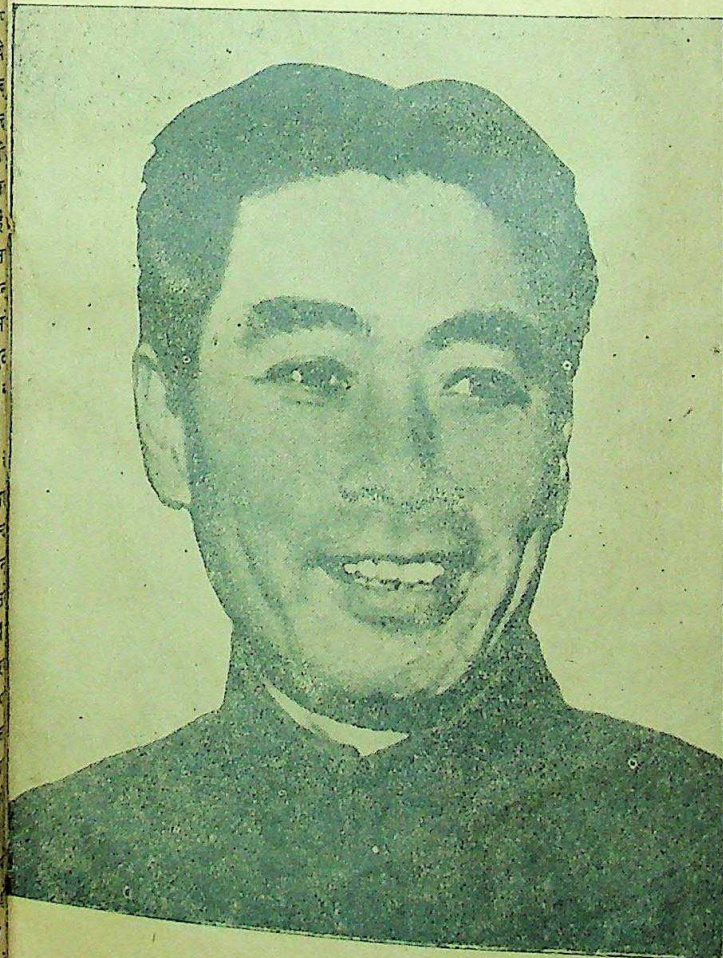
लालचीन के सेनाध्यक्ष मार्शल चू—तेह।

मिलेगा। उन्हें यह अभीष्ट नहीं है अतः वे लालचीन को अभी।नहीं अपना रहे हैं। ऐसे राष्ट्र यह भी अनुभव करते हैं कि अभी तो चीन के दोनों गुटों में संघर्ष चल रहा है भले ही चांग काई शेक के राष्ट्रवादी अब शिथिल क्यों न हों उन्होंने पराजय स्वीकार नहीं कि है। यही नहीं वे तो साम्यवादी दल से मोर्चा लेने की निरन्तर संघर्ष करने की अब तक हठ ठने हुए हैं इस सघर्ष काल में दूसरे राष्ट्रों का लाल चीन को मान्यता देना अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से साम्यवाद को प्रबल करेगा और राष्ट्रवादी चीन के लिये विघातक होगा। लाल चीन को मान्यता न देने वालों की इस विचारधारा में बहुत कुछ सचाई है इसे हम स्वीकार करते हैं किन्तु हम यह भी मानने से इनकार नहीं करते कि किसी राष्ट्र को मान्यता देना उसके सिद्धान्त को स्वीकार करना नहीं है। यदि ऐसा होता तो साम्यवादी रूस केवल साम्यवादी देशों को अपने दरबार में मान्यता देता। यही नहीं संसार के पूंजीपति राष्ट्र साम्यवादी रूस को मान्यता कभी न देते किन्तु बात इससे उलटी है। मास्को के दरबार में पूंजीपति ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस तथा अन्य सभी साम्यवाद विरोधी राष्ट्रों के प्रतिनिधि विराजते हैं। इसी प्रकार लन्दन, पेरिस किंवा वाशिंगटन के दरबारों में रूस का सजग साम्यवादी प्रतिनिधि भी चहकता नजर आता है। यह आपसी शिष्टाचार है अतः ऐसा होता है यह मानना भी भारी भूल है। सारे संसार के भाग्यों का फैसला देने वाली संस्था मंडल राष्ट्र परिषद मे भी पूंजी पति एवं साम्यवादी सभी राष्ट्र शामिल हैं। यह तो सत्य है कि इस राष्ट्र परिषद् की न्यूयार्क में होने वाली बैठकों में स्पष्टतः दो दल दिखलायी देते हैं किन्तु वे हैं एक ही मेज के चारों ओर इससे कौन इनकार कर सकता है। हमारे कहने का मतलब यह है कि साम्यवादी रूस को जब सारे राष्ट्रों के दरबार में मान्यता प्राप्त है तो लाल चीन को भी यह मान्यता प्राप्त होनी चाहिये। इस मान्यता का अर्थ होता है वस्तु स्थिति को स्वाकार करना। हम चाहें या न चाहें चीन अब लाल हो गया है, उसके नेता या विधाता रूस के मार्ग को प्रशस्त मानते हैं और वहाँ की जनता भी बहुत बरसों के संघर्ष के बाद वह मार्ग अपना लिया है। हमारी इच्छा के विपरीत चीन में वस्तु स्थिति यही है अतः हमें उस वस्तु स्थिति को मान्यता देनी चाहिये। और लाल चीन को अपने दरबार में मान्यता देनी चाहिये। हमारा देश इस वस्तु स्थिति को स्वीकार करता है अतः मुझे मान्यता देता है। यह हमारे लिये कोई अचरज की बात नहीं। भारत के लिये लालचीन को मान्यता देना इसलिये भी आवश्यक है कि चीन उसका पड़ोसी है। चीन लाल रहे या पीला इससे हमें कोई सरोकार नहीं है। यह सोचना चीनवालों के जिम्मे है लेकिन प्रकृति ने जो पड़ोस दिया है उससे आँखे मूंद लेना अंधे का काम है। भारत ही हमारी राष्ट्रीय सरकार इस वस्तुस्थिति से आंखे नहीं मूँद सकती अतः लाल चीन को अपने दरबार में मान्यता देती

(शेष पृष्ठ १२ पर)

लालचीन के प्रधान मँत्री चाउ—एन—लाई।

श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

आज के जीवन पर कुछ मनोरंजक संस्मरण

लेखक, श्री शिवचन्द्र नागर एम० ए०

आधुनिक हिन्दी युगप्रवर्तक कवि पंडित सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जीवन उलझन से पूर्ण है। वह हिन्दी के तपे हुए सहित्यकार हैं किन्तु उनकी परिस्थितियां वास्तव में दुःखजनक तथा चिन्तनीय हैं। इस सुन्दर लेख में लेखक ने निराला जी के आज के जोवन पर अपने अनुभव से कुछ संस्मरण लिखा है, जो पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

अतिथि सत्कार भी निराला जी के स्वभाव की एक विशेषता है। आप उनसे कभी भी किसी समय मिलने जाइये वे किसी भी परिस्थिति में हों जो कुछ भी उनके पास होगा आपके सामने लाकर रख देंगे और यदि कुछ भी न हुआ तो आसन, जल और सूनृता वाणी तो कहीं गई मुझे याद है कि जिस समय मिसकैप और मैं इनसे मिलने गये थे तो उस समय जोर की वर्षा हो रही थी और रात भी हो गई थी ऐसी अवस्था में चाय का प्रबन्ध नहीं हो सकता था अतः निराला जी मिसकैंप से बोले—"चाय का प्रबन्ध तो हो नहीं सकेगा, बताइये मैं आपको कैसे स्वगात करूँ। आप संगीत सुनेंगी मिस कैंप बोली "चाय रहने दीजिये हां संगीत सुनना पसंद करूँगी।"

"अंग्रेजी संगीत सुनियेगा या भारतीय" निरालाजी ने पूछा।

"भारतीय" मिस कैंप ने उत्तर दिया। तदुपरांत निराला जी ने अपने सुरीले कंठ से राग रागनियों में बँधे हुए दो तीन गीत सुनाये उनका अर्थ तो मिस कैंप नहीं समझ सकतीं थीं पर निराला जी ने उन गीतों के भावों को अपने संगीत की लय द्वारा वातावरण में उतार दिया था उसे तो उन्होंने पढ़ ही लिया क्योंकि भावों की-भाषा तो देश और काल से परे हैं।

फिर जब हम चलने लगे तो उस समय रात के ८॥ बजे होंगे, बाहर वातावरण में ऐसा लगता था कि जैसे वर्षा और अंधकार की होड़ लगी हुई हो, कभी कभी एक कड़क के साथ काली घटा का कलेजा चीर करबिजली चमक जाती थी। हम अपने अपने छाते खोल कर बाहर निकले तो साथ में निराला जी भी चलने लगे। मैंने कहा, "आप बैठिये आपने कुछ पहन भी नहीं रक्खा और बाहर वर्षा हो रही है।" तो इस पर निराला जी बोले, "नहीं, नहीं तुम रास्ते में भटक जाओगे मैं चल रहा हूँ।" यह कह कर नंगे पांव और नंगे शरीर उस घोर अंधकार और वर्षा को चीरते हुए आगे आगे हो लिये उसी चतुर नाविक की तरह कि जिसका परिचय सिंधु की लहर लहर से हो। उन्होंने उसी वर्षा में खड़े खड़े फिर आने का निमंत्रण देकर हमें हँसते विदा किया और हम अतिथि सत्कार के भावों में डूबे डूबे, खोये खोये से अपने ताँगे में बैठे उस कलासम्राट की ओर एक टक देखते रहे जब तक दूरी को भरने वाले अंधकारों ने आँखों पर एक अभेद पर्दा नहीं डाल दिया। रास्ते में कुमारी कैंप निराला जी के व्यक्तित्व की प्रशंसा ही करती रही और निराला जी के संगीत के विषय में अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि Niralaji does not sing from the throat but from the innermost of the heart

किसी भी व्यक्ति के व्यवहार की शैली वेश भूषा, रहन सहन तथा खानपान उसके बहुत से संस्कारों की देन होती है, और ये सब कुछ जितना जीवन की सुविधा तथा संस्कारों का प्रश्न है उतना सिद्धान्त का प्रश्न नहीं। निराला जी का बाल्यकाल बंगाल प्रांत में बीता है, इसीलिये कदाचित् इनकी भाषा, भोजन और वेशभूषा पर उस प्रांत के संस्कार मिलते हैं। शाकाहारी भोजन की अपेक्षा इन्हें आमिषी भोजन अधिक पंसद है और बंगालियों की माछ तो विशेष प्रिय। इसके अतिरिक्त निराला जी सिगरेट और हुक्का इत्यादि भी पी लेते हैं पर दिन में पीली पत्ती की बढ़िया सुरती उन्हें कई बार चाहिये।

कुछ लेखक अथवा कवि जिस युग में पैदा होते हैं उसमें प्रचलित धाराओं के साथ ही अपना समझौता कर साहित्य सृजन में अपना योग देने लगते हैं और कुछ अपनी प्रतिभा के बल पर साहित्य के प्रांगण में पुरुषार्थी भागीरथ की भाँति एक नवीन मंदाकिनी को प्रवाहित करते हैं। पहली प्रकार के लेखक या कवियों को हम विसृष्टिवादी (evolutionary) कह सकते हैं और दूसरी प्रकार के कवि अथवा लेखकों को क्रांतिवादी (revolutionary)। निरालाजी दूसरी प्रकार के कवियों में आते हैं। अंग्रेज़ी साहित्य का फ्रेंच इतिहासकार टेइन कहता है कि कोई भी कवि किस जाति (race) का है, किस युग का है और उसकी परिस्थितियां क्या रही हैं यह उसकी कविता से जाना जा सकता है। इसका अर्थ केवल इतना होता है कि कवि युग द्रष्टा है। पर मेरे विचार में कोई भी क्रांतदर्शी कलाकार जहाँ एक ओर युग द्रष्टा हुआ है वहाँ दूसरी ओर युग स्रष्टा भी। निराला जी मेरे विचार से एक ऐसे ही क्रान्तदर्शी महान् कलाकार हैं।

सरस्वती के चरणों में इन्होंने एक सच्चे साहित्य साधक की भाँति तथा एक

हिन्दी के युगप्रवर्तक कवि पंडित सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

महान् तपस्वी कलाकार की भाँति जीवन बिताया है और अपने प्राणों के रस से साहित्य की जड़े सींचकर उसमें फल-फूल तथा अनाज सभी की सृष्टि की है। इन्होंने जहाँ एक ओर अपनी कविताओं से, गीतों से और ग़ज़लों से साहित्य वीणा में संगीत भरा है वहाँ दूसरी ओर मुक्त वृत्त कविताओं से प्रवाह ताल और लय की मुखरता भी दी है। जहाँ एक ओर कहानियाँ और उपन्यास लिखे हैं वहाँ दूसरी ओर रेखा चित्र और निबंध भी तथा तीसरी ओर ढेर के ढेर सुन्दर बँगला ग्रंथों का अनुवाद कर उनके रस से भी हिंदी संसार का परिचय कराया है। निराला जी ने लिखा तो सभी कुछ है पर क्या नहीं लिखा इसका पता लगाने में उनके पाठकों को थोड़ी कठिनाई अवश्य होगी। निराला जी की प्रतिभा निस्संदेह दांते गेटे और विश्व कवि रवीन्द्रनाथ की कोटि की है पर इतनी बात अवश्य माननी पड़ेगी कि कहीं कहीं निराला जी की प्रतिभा का महानद अपने कूलों को परिप्लावित कर इधर उधर बिखर भी पड़ा है।

निराला जी के दर्शन करने के तथा उनकी कविता उनके मुख से के लिये जनता जितनी उत्सुक रहती उतनी उनके साहित्य को पढ़ने के नहीं, बात यह है कि निराला का अंगूरों की भाँति नहीं बल्कि यदि आलोचक श्री विश्वम्भर 'मानव' के मैं कहूँ तो नारिकेल की भाँति है जिसके रस को केवल वे ही चख हैं जिनमें उनके जटाओं से युक्त बल्काल को तोड़ डालने की क्षमता इसलिये निराला जी व्यक्ति के रूप जितने लोकप्रिय हैं कवि के रूप में लोकप्रिय नहीं।

निराला जी का बँगला और हिंदी पर ही समानाधिकार है। दोनों में सुन्दर बातचीत कर सकते हैं और में ही अपने भावोंकी सुन्दर काव्य सृ जब कभी मन में आता है तो अंग्रेज़ी धारा प्रवाह बोल लेते हैं, और कभी अंग्रेज़ी में कविता भी की है निराला जी को संस्कृत का भी अच्छा है। इस प्रकार निराला जी का भाषाओं से संपर्क है पर हिंदी उन्हें प्राणोंसे भी प्रिय है। हिंदी परहुएकिसी प्रकार के प्रहार को वे ऐसा ही सम हैं जैसे वह उनके प्राणों पर ही हुआ स्वामी विवेकानंद जी से ये प्रभावि और गोस्वामी तुलसीदास के प्रति इ विशेष श्रद्धा है।

इधर कुछ दिनों से निराला मानसिक रूप से अस्वस्थ हैं। उ भाव जगत में विचारों की सापेक्ष विश्रंखल हो गई है। इसी को मस्तिष्क की अस्तव्यस्तता भी कह स हैं, इसीलिये जब वे व्यवस्थित होते हैं सुन्दर और सार्थक बातें करते हैं लिखते भी हैं पर अस्तव्यस्तता की द में कुछ बातें ऐसी भी कर जाते हैं लिख जाते हैं कि परिस्थिति और की पृष्टभूमि के साथ उनका कुछ नहीं होता। कुछ लेखक तथा प्रका इनकी उन बातों को भी ज्यों का ही प्रकाशित कर देते हैं पर मैं तो निराला जी के प्रति उनका अन्याय कहूँगा।

इसके साथ साथ निराला जी में अपने से ही बातें करने की आदत गई है, लगता है जैसे उनका "मैं" गया हो और स्वयं को भी वे दूसरा सम उससे निरंतर बातें करते रहते हों। यह इस बात की प्रतिक्रिया है कि सं में अपने बाहर उन्हें कोई ऐसा सहानु पूर्ण मन ही नहीं मिला कि जिससे अपने सुख-दुख की बातें कर पाते।

मनोवैज्ञानिक तो पता नहीं निर्णय पर पहुँचेंगे पर मेरा ऐसा मान है कि बहुत से विचार भाव तथा अतृप्त आकांक्षायें जो परिस्थिति की ठोकरों से इनके उपचेतन निश्चेतन में जा पड़ी थीं वे अब

(शेष पृष्ठ १२ पर)

रंग मंच

श्री अन्हसिर्क अमर कौन हैं ?

'राज तरंगिणी' के नायक से एक मनोरंजक भेंट

लेखक, श्री विश्वमोहन श्रीवास्तव

अभी उस दिन हजरतगंज के न्यू इन्डिया काफ़ी हाउस में बीस बाइस वर्ष के एक नवयुवक की ओर संकेत करते हुए मेरे एक मित्र ने जब कहा कि यह ही श्री चावल की नयी फिल्म 'राजतरंगिणी' में श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित की पुत्री रीता के साथ आने वाले अन्हसिर्क अमर हैं, तो मुझे आश्चर्य सा हुआ। अभी कुछ ही दिनों पहले मैं बम्बई से वापस आया हूँ, और यदि सुरैया-देवआनन्द और कामिनीकौशल-दिलीपकुमार विषयक अफ़वाहों की बात छोड़ दी जाये तो कुमारी रीता पंडित और श्री अन्हसिर्क अमर ही इन दिनों वहाँ के फिल्मी क्षेत्रो में सर्वाधिक चर्चा के विषय हैं। कारदार, महबूब और शान्ताराम से लेकर छोटे से छोटा निर्माता निर्देशक भी श्री अमर के सम्बन्ध में जानने के लिये उत्सुक है। श्री चावला ने 'राजतरंगिणी' बनाने की घोषणा अभी बहुत थोड़े दिनों पहले की है, जिसके लिये उन्होंने गीता बाली और गिम्मी के अतिरिक्त कुमारी रीता पंडित एवं श्री अन्हसिर्क अमर को चित्र की मुख्य भूमिका के लिये चुना है। पहिले खबर थी कि श्री चावला नायक के रूप में सुप्रसिद्ध अभिनेता देव आनन्द को ला रहे हैं, पर पिछले महीने फिल्मी क्षेत्रों में जब एकाएक यह समाचार पहुँचा कि उन्होने उस भूमिका के लिये एक नये ही चेहरे को चुना है, तो लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ, क्योंकि इस नाम से उन्हें पहिले बिलकुल परिचय न था।

विगत सप्ताह जब मैं बम्बई से चलने लगा था तो फिल्मी क्षेत्रों से सम्बन्ध रखने वाले वहां के कई मित्रों ने मुझसे अनुरोध किया था कि युक्त प्रांत जाकर मैं श्री अन्हसिर्क अमर के सम्बन्ध में जल्दी से जल्दी जानकारी प्राप्त करूं और यह मौका जब मुझे इतनी जल्दी, बिना कोई श्रम किये ही मिल गया, तो मैं कैसे पीछे रह सकता था होठ में लगे काफी के प्याले को मैंने उसी वक्त नमस्कार किया, और सीधे हाल के उस कोने की ओर चल पड़ा, जहाँ श्री अन्हसिर्क अमर बैठे हुए सम्भवतः अपने किसी मित्र की प्रतिक्षा कर रहे थे।

मैंने नमस्कार किया, उन्होंने भी मुझे पहिचानने का उपक्रम करते हुए उसका उत्तर दिया। अपना परिचय देते हुए मैंने कहा—मैं हूँ विश्वमोहन श्रीवास्तव, बम्बई में पत्रकार हूँ; आपसे मिलने की इच्छा थी इससे चला आया आपको कोई कष्ट तो नहीं होगा ?

जी नहीं। इसमें कष्ट की क्या बात आइये, बैठिए न। — कुर्सी की ओर संकेत करते हुए वे मुझसे बोले।

'इस समय आपके पास वक्त है न'? मैंने पहिले ही पूंछ लेना ठीक समझा।

'जी, जब तक वक्त है, तभी तक बात की जाये—यों तो ईस समय शायद पन्द्रह बीस मिनट से अधिक में आपको न दे सकूं, क्योंकि ठीक चार बजे एक मित्र से मेरा अपाइंटमेंट है।'— कुछ लखनवी तहजीबाना ढंग से उन्होंने जब यह उत्तर दिया तो मैंने असली बातें चलाना ही अधिक ठीक समझा।

सुप्रसिद्ध भारतीय नृत्यकला विशारदा श्री आमला शंकर।

मेरा पहला प्रश्न था 'आप सिने क्षेत्र में किस आदर्श को लेकर आ रहे हैं ?', और इसके उत्तर में, मुझे आशा थी कि श्री अमर कोई लम्बी चौड़ी वक्तृता देंगे, पर मुझे आश्चर्य हुआ जब इस प्रश्न का उत्तर मुझे दो छोटे छोटे शब्दों में मिला—'मन है, इसलिये !'

'क्या आप सिने क्षेत्र की गन्दगियों से परिचित नहीं हैं ?'—मेरा दूसरा प्रश्न था, जिसके उत्तर में उन्होंने कहा—'प्रश्न तो यह है कि गन्दगी है क्या ? क्या यह सम्भव नहीं हो सकता कि जिसको आप गन्दगी समझें, उसे मैं वह न मानूं ? और फिर मान लीजिये, आज का फिल्मी समाज मैला ही है, तो भी वहां न जाने का क्या मतलब ? इस हिसाब से तो हम सब लोगों को आज भारत छोड़कर रूस या अमरीका चला जाना चाहिए, क्योंकि हमारा देश गन्दगी और जाहिलपना से भरपूर है।

मैंने देखा, इस सम्बन्ध में वे कुछ और अधिक कहना चाहते थे, पर जब बीच में ही काटते हुए मैंने पूंछा—'क्या आप आज के फिल्मी वातावरण से सन्तुष्ट हैं ?तो बोले—'कह नहीं सकता क्योंकि अभी मुझे उसका पूरा अनुभव नहीं हुआ है, पर तब भी इतना तो कहा ही जा सकता हैं कि उसमें उन बुराइयों से अधिक बुराइयाँ नहीं हैं जो मानव समाज के हर एक वर्ग में रहती हैं। फर्क केवल इतना ही है कि अपनी जिस चीज पर साधारण जन समाज पर्दा डालता है वह वहाँ प्रत्यक्ष है और बुराइयों पर पर्दा न डालकर उसको उसके मूल रूप में लोगों के सम्मुख प्रस्तुत करना मैं बुराई नहीं बहुत बड़ी अच्छाई मानता हूँ।'

'आज के चल चित्रों के सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं ?'—मैंने पूंछा।

न बहुत बुरे न बहुत अच्छे। पर आज की परिस्थितियों में जितने अच्छे चित्र आसानी से बन सकते हैं उतने अच्छे बनते नहीं; और इसका कारण केवल एक नजर आता है—वह है पैसा. पैसा पैदा करने के लिये आज के फिल्मी सेठ बड़ी से बड़ी चीजों को भी ताक पर रखा देते हैं। इस सम्बन्ध में मैं राजकपूर को बधाई देता हूँ जिन्होंने चवन्नी वालों की रुचि की पर्वाह न कर हमें 'आग' और 'बरसात' जैसे उच्च कोटि के चित्र देकर यह साबित कर दिया कि उच्च कोटि के चित्र भी बाक्स आफिस में उतनीही सफलता प्राप्त कर सकते हैं जितने निम्न श्रेणी के चित्र।'

क्या फिल्म निर्माण सम्बन्धी कुछ कमियों को आप बतला सकेंगे ?'—इस

(शेष पृष्ठ १४ पर)

भारतीय नृत्यकला का एक प्रदर्शन

(शेष पृष्ठ १० के आगे)

कभी इनके चेतन जगत में उत्क्रांति मचा देती हैं। इस प्रकार की प्रवृत्तियाँ अंग्रेज़ी कवि ब्लैक, क्लेर और स्मार्ट में भी पायी गई हैं।

यौवन काल से ही निराला जी के नेत्रों में और मुख पर स्त्रियों को लुभाने वाला सौंदर्य बहुत अधिक मात्रा में रहा है और अनेक स्त्रियों के संपर्क में आने का अवसर भी इन्हें अवश्य मिला होगा, तथा इनकी पत्नि की मृत्यु को भी कई वर्ष हो गये, पर इन परिस्थितियों में भी इस कवि का चरित्र आरंभ से ही सोने सा उज्वल रहा है। लगता है जैसे सांसारिक वासनाओं के हलाहल को पीकर निराला जी नीलकंठ हो गये हों। कुछ भी हो, साहित्य का यह शिव काव्य की मंदाकिनी को अपनी जटाओं में समाहित कर साहित्य को 'सत्यं शिवं सुंदरम्' के वरदानों से आज भी भर रहा है।

इन्होंने अपने जीवन के बहुत वर्ष जलती हुई धूप के नीचे मरुभूमि में ही बिताये हैं पर अब महादेवी सी स्नेहमयी बहिन को पाकर उनके अंतर की स्नेह सिक्त छाया के नीचे इस मरुभूमि में ही फिर से मधुवान विकास पायेगा ऐसी मुझे तो आशा ही नहीं विश्वास भी है।

संसार के सभी महान् कलाकारों का जीवन एक संघर्ष है और भारतवर्ष में तो विशेष रूप से यह युग ही संघर्ष का शोषण का है, पर लगता है कि निराला जी सदैव इस संघर्ष और शोषण के लिए चुनौती रहे हैं। एक विशाल वट वृक्ष की भाँति इन्होंने झंझाओं का निमंत्रण दिये हैं और एक अपराजित चट्टान की भाँति लहरों के आमंत्रण स्वीकार किये हैं। भीतर से चाहे वे चूर चूर किये गये हों पर बाहर से अपने मदभरे विशाल नेत्रों में मधुर मुस्कान भरे अधरों से हास्य की रश्मियाँ ही बखेरते रहे हैं। निराला जी का व्यक्तित्व सभी प्रकार से ऐसी विविध तथा विरोधी रेखाओं तथा रंगों का सुन्दर समन्वय है कि आने वाली पीढ़ियाँ कदाचित् ही विश्वास कर पायें कि एक ऐसा कलाकार भी हमारे बीच चलता-फिरता था।

समाप्त

(शेष पृष्ठ ६ का)

है। यह करते हुए भी वह लाल चीन के अपनाये हुए सिद्धान्त को मानने या न मानने के लिये स्वतंत्र है। इस दृष्टि से यदि देखें तो हमें मानना होगा कि लालचीन को अपने दरबार में मान्यता देने में हमारे देश ने जो मार्ग अपनाया है वह प्रशस्त है एवं नये चीन के साथ सम्बन्ध स्थापित करने में महत्व पूर्ण है।

प्रश्न केवल यह रह जाता है कि जब चीन जैसा महा देश साम्यवाद की गोद में चला गया तो और देशों का क्या होगा साम्यवाद अच्छा है या बुरा इस विवाद पड़े बिना हमारा विचार है कि आर्थिक विषमता का जो इलाज साम्यवाद करता है वह आज की भूखी नंगी जनता के लिये विशेष आकर्षण है। ब्रिटेन, फ्रांस या अमेरिका के समृद्ध देश भले ही इस साम्यवाद से आकृष्ट न हों एशिया व अफ्रीका को यह सुन्दर मालूम देता है। आज से तीस बत्तीस वर्ष पहले में साम्यवाद की जिन लपटों ने पूर्वी योरप के जारशाही रूस को भस्मसात किया था वहीं लपटें आज पूर्वी एशिया के चीन को भस्मसात कर बैठीं हैं। रोगीगृहों को भस्म करना चिकित्सक की दृष्टि में उचित है। इससे उन गृहों में स्थायी तौर पर डेरा डाली हुई बीमारी भाग खड़ी होती है और उसका स्थान लेते हैं नये ढंग के स्वच्छ शुद्ध वायु वाले सुन्दर भवन। इसी प्रकार रूस और चीन का जो पुराने थे और जारशाही एवं दूसरी व्याधियों से पीड़ित थे साम्यवाद से भस्मसात होना उनके लिये लाभकारी हुआ है। ऐसे ही एशिया व अफ्रीका के सभी पुराने रोगी देश भी यदि भस्मसात हो जावें और नवजीवन पा जावें तो उसके लिये हमें आनन्दित होना चाहिये दुःखी नहीं जारशाही रूस रूस की प्रजा दुःखी थी, उसका शोषण तो होता था किन्तु उसका यह शोषण का कोई उपाय न नजर आता था। जितना ज्वर बढ़ा हो उतनी दवा ही होनी चाहिये इस लिहाज से वहाँ साम्यवाद आया और रूसी तपेदिक को समाप्त कर गया। अब रूस अन्धश्रद्धालु फालतू कर्तव्य हीन जनता का देश नहीं है। वह तो सजग, मुस्तैद कियां कर्तव्य परायण लोगों का संघ के लिये तैयार देश है। चीन सदियों से रोगी था, वहाँ की करोड़ों जनता का क्या हाल है! इसे पूछने वाला न था। अब साम्यवाद के सहारे वह उठेगा, चमकेगा ऐसा वहाँ की जनता को समझाया गया है अतः चीन लाल हो गया है। एक बात और भी जो राष्ट्र निरंकुश शासन में शदियों तक पड़ा रहे, जहाँ जनता मिथ्याधर्मों में पड़ी रहे वहाँ के शासक भले ही देखने में प्रबल हों यथार्थ में उनका शासन चक्र फूस की कुटिया के समान होता है। फूस की कुटियों को आन्धी पानी नहीं हिलाते उसे तो आग खतम करती है रूस और चीन का शासन चक्र ऐसे ही थे अतः साम्यवाद की आग उन्हें खतम कर सकी, अन्य ढीलो ढालो क्रान्तियां उसके सामने खत्म हो गयीं। हम समझते हैं कि आज के संघर्ष मय संसार में जो देश जिन्दा रहना चाहता है, जो देश साम्यवाद की आग से बचना चाहता है उसे अपना शासन चक्र मजबूत बनाना चाहिये। जनता सजग रहे, उसका शोषण न हो, वह भरपेट खाये और अपने विकास के साधन पाये, ऐसा जो देश है वहाँ साम्यवाद की पहुँच नहीं है। समाजवाद और साम्यवाद बहुत मिलते जुलते से वाद हैं। दोनों का ध्येय एक है किन्तु उपाय भिन्न हैं। ब्रिटेन आस्ट्रेलिया या न्यूजीलैंड सभी समाजवाद को पसन्द करते हैं किन्तु साम्यवाद को नहीं। यह होते हुए भी अभी हाल के चुनावों में पिछले दोनों देशों में समाजवादी मजदूर को शासन से हाथ धोना पड़ा है। ब्रिटेन में ऐसा होगा या नहीं यह कौन जानता है। किन्तु यह निश्चित है कि वहाँ की, या ब्रिटेन जैसे देशों की जनता स्वेच्छया किसी बात को अपनाती या छोड़ती है। इसके विपरीत साम्यवद दूसरे ढंगों को अपनाता है और अपने विरोधी को कठोर दण्ड देने की भी बात करता है अतः उसके अपनाने में भय भी शामिल रहता है। हमें भय है कि चीन के लाल हो जाने के बाद उसके पड़ोसी दुर्बल राष्ट्र भी साम्यवाद की भट्टी में भस्म हो जायेंगे। स्याम, मलाया, बर्मा व वीहनाम साम्यवाद के आगे पैर पसारेंगे यह हमें कुछ दिखता सा है। वे स्वेच्छया साम्यवाद कोलें यह तो उनकी इच्छा पर है किन्तु वे दुर्बल हैं अतः परवशता से भी उसे ग्रहण कर सकते हैं। ऐसी हालत में हम उनका साम्यवादी होना पसन्द न करेंगे योरप के पूर्वी देश रूस के भय से साम्यवादी हैं। इसी प्रकार पूर्वी एशिया के ये देश लाल चीन के आंतक से साम्यवादी बन सकते हैं। हमारा देश सबका पड़ोसी है किन्तु यहाँ का शासन चक्र जागरूक है अतः यहाँ साम्यवाद सहसा आजाये यह तो सम्भावित नहीं है किन्तु यहाँ की जनता की भूख नंग इसे उधर आकृष्ट कर सकती है तब बाहर और भीतर की दोनों शक्तियां हमारे भवन को घेर सकती हैं। इस भय व आशंका का निवारण हम गांधीवाद से कर सकते हैं। हम कर्तव्यशील हों, राष्ट्रीय सरकार के साथी हों एवं अपने देश के सुख समृद्धि के लिए अग्रसर हों इन उपायों से ही हमारा देश साम्यवाद की आग से बच सकता है। हमें भरोसा है कि हम ऐसा करने में सफल होंगे।

सचित्र साप्ताहिक 'देशदूत'

संवाददाताओं से निवेदन

संयुक्तप्रांत, मध्यप्रांत, मध्य भारत तथा राजपूताने के संवाद भेजनेवालों से निवेदन है कि वह अपने संवाद संक्षिप्तरूप में ही भेजने का कष्ट करें।

संपादक 'देशदूत'

ग्राहकों, एजेंटों और विज्ञापनदाताओं को समस्त पत्र व्यवहार मेनेजर, 'देशदूत' इलाहाबाद के नाम पर ही करना चाहिए।

हैदराबाद रियासत के कुछ सामयिक दृश्य ।

हैदराबाद के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री मीरलायक अली का निवासस्थान ।

हैदराबाद के प्रधान सैनिक अधिकारी मेजर जनरल चौधरी

हैदराबाद के लोकप्रिय राष्ट्रीय नेता स्वामी रामानंद तीर्थ ।

(शेष पृष्ठ ८ का)

आने की सम्भावना होते ही षड्यन्त्र होने लगे और रेडियो की भाषा नीति के विरोध के नाम पर बहिष्कार की चर्चा चलने लगी। इस बहिष्कार का सुत्रपात किसी संस्था द्वारा नहीं बल्कि कुछ व्यक्तियों द्वारा प्रारम्भ हुआ। हिन्दी के हित के सभी आन्दोलनों में एकता प्रदर्शित करने का जो उत्साह हिन्दी भाषियों में इस समय है, उसके फलस्वरूप प्रारम्भ में अनेक व्यक्तियों ने इस बहिष्कार का समर्थन कर डाला, यहां तक कि साहित्य सम्मेलन की स्थायी सिमति ने भी अपने सदस्यों पर रेडियो में बोलने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। हिन्दी पत्रों ने रेडियो कार्यक्रम छापना भी बन्द कर दिया। इस प्रकार बहिष्कार का एक सामूहिक प्रयत्न हो अवश्य गया, परन्तु अब अनेक लोग इस चरम कार्य की अनर्थकता को समझने लगे हैं। लखनउ के ही एक प्रख्यात दैनिक के सम्पादक ने बातचीत के सिलसिले में कहा कि मैंने केवल हिन्दी भाषियों की एकता के विचार से रेडियो कार्यक्रम बन्द किये यद्यपि मैं इस बहिष्कार में विश्वास नहीं करता हूँ। उन्होंने एक सम्पादकीय टिप्पणी में भी बहिष्कार के औचित्य पर सन्देह प्रकट किया।

एक हिन्दी भाषी को लगभग ढाई वर्ष रेडियो के एक उच्च पद पर रखकर हम हिन्दी के लिये रेडियो विभाग में कोई स्थान नहीं प्राप्त कर सके। हिन्दी क्षेत्रों के रेडियो स्टेशनों में भाषा का सानुपातिक प्रतिनिधित्व उस समय अखंड भारत को दृष्टिगत रखकर स्वीकार किया गया था। मेरे मत से अगस्त १९४७ के पश्चात हिन्दी भाषी केन्द्रों में इस अनुपात के लिये कोई स्थान नहीं रह जाता। दूसरे उनमें इस अनुपात का पालन ही कहां तक किया जाता है। लखनऊ को ही लीजिये, जहां ७० प्रतिशत हिन्दी २० प्रतिशत उर्दू तथा शेष अन्य भाषाओं के लिये निर्धारित किया गया था। परन्तु हिन्दी को यहाँ कभी ६० प्रतिशत से स्थान नहीं मिला और उर्दू को प्रायः ही २५ से ६५ प्रतिशत तक स्थान मिला। मेरा विश्वास है कि लखनऊ, इलाहाबाद और पटना केन्द्र तो विशुद्ध हिन्दी केन्द्र होने चाहिये थे, यहां उर्दू का वही स्थान होता जो वहां अँग्रेजी, बंगला आदि अन्य भाषाओं का है। परन्तु आल इंडिया रेडियो के भाषा विभाग के डिप्टी डायरेक्टर जेनरल के पद पर एक हिन्दी भाषी के होते हुये भी वे इस कृत्रिम अनुपात को सप्ताह करने में सफल न हो सके। साथ ही हिन्दी भाषी क्षेत्रों के रेडियो केन्द्रों में अहिन्दी भाषी कर्मचारी भरे हुये हैं। उनके स्थान में हिन्दी भाषियों को नियुक्त कराने में भी उनको सफलता न मिल सकी। एक बार उन्होंने अपनी असफलताओं की मीमांसा करते हुये बताया था कि केन्द की प्रबल हिन्दी विरोधी गुटबन्दियों के कारण वे कुछ कर नहीं पा रहे हैं। ऐसी स्थित में उनके लिये अन्यत्र स्थानान्तरित कर दिये जाने की प्रार्थना करना ही उचित था। अस्तु, जब एक प्रबल हिन्दी समर्थक और वह भी दक्षिण भारतीय उक्त पद पर नियुक्त हुआ है, जो रेडियो के हिन्दी द्रोही दक्षिण भारतीय गुट्ट से सभी प्रकार का लोहा ले सकने में समर्थ है, तो उसको अपना समर्थन और सहायता देने के स्थान पर उसका विरोध प्रारम्भ कर दिया गया। यदि एक अधिकारी को ढाई वर्ष दिये जाते थे, तो क्या एक अन्य हिन्दी प्रेमी को छै महीने देना भी कठिन था?

इस प्रकार के बहिष्कार आन्दोलन ने जनता के बड़े भाग में भ्रम फैल रहा है कि यह आन्दोलन हिन्दी के हित के लिये नहीं [illegible] अथवा गुट्ट विशेष के स्वार्थसाधन के निमित्त संचालित किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त लोक प्रिय और निर्वाचित शासन में बहिष्कार असहयोग प्रभृति चरम आन्दोलनों को उचित भी नहीं कहा जा सकता। यदि हिन्दी के प्रति प्रबल जनमत जाग्रत कर लिया जाय, तो निःसंदेह शासकों को रेडियो विभाग में समुचित सुधार करने के लिये बाध्य होना पड़ेगा।

इसीलिए मैं कहता हूं कि रेडियो सम्बन्धी आन्दोलन केवल मात्र साहित्यकारों अथवा कलाकारों तक ही सीमित न रह कर जन आन्दोलन बने। हिन्दी भाषी क्षेत्रों का कोई रेडियो केन्द्र ऐसा नहीं है, जिसकी ध्वनि उसके मूल से १०० मील के बाहर स्पष्ट सुनी जा सके। इन केन्द्रों को शक्तिशाली बनाया जाय। इलाहाबाद में ५० या १०० किलोवाट के शक्तिशाली शार्टवेव प्रसार यंत्र लगा कर उसे क्षेत्रिक केन्द्र बनाने की योजना को, जो इन दिनों स्थगित है, कार्यान्वित किया जाय। रेडियो केन्द्रों में हिंदी भाषी कर्मचारियों की संख्या बढ़ाई जाय, चाहे वे किसी भी प्रदेश के रहने वाले हों। यह आवश्यक नहीं है कि केवल युक्त प्रांत निवासी ही हिन्दी भाषी हो सकता है। परन्तु इतना अवश्य देख लिया जाय कि वह वास्तव में हिन्दी भाषी है, फारसी लिपि की हिन्दी जानने वाला नहीं। इस प्रकार की मागें वैधानिक उपायों से स्वीकृत कराई जा सकती हैं और इसके लिये बहिष्कार सदृश चरम कार्य की आवश्यकता नहीं है। मैं पुनः कहता हूँ कि यदि प्रबल जनमत तैयार कर लिया जाय, तो रेडियो विभाग को अपना रवैया बदलने के लिये बाध्य होना ही पड़ेगा।

—विजय कुमार मिश्र

लखनऊ

(शेष पृष्ठ ६ का)

इन दो पहलुओं को दृष्टि मेंरखते हुए कि भविष्य में भूमि पुनः खेती न करने वाले की मिल्कियत न बन जाय या अधिक ज़मीन का मालिक व्यक्ति विशेष न बन जाये, बिल में विशेष पाबंदियां लगा दी गई हैं। इन पा बन्दियों के आधार पर किसान खेती के काम में समर्थ होने पर दूसरे को अपनी ज़मीन लगान पर नहीं दे सकता है। वैसे किसान कीं अधिकार होगा कि किसी से मज़दूर या साझीदार की हैसियत से खेती करने में किसी दूसरे की सहायता ले सके। इसका तात्पर्य यह हुआ कि आगे को कोईकाश्तकार न होगा और जब कोई काश्तकार ही नहीं होगा तो किसी के ज़मींदार बनने का भी प्रश्न पैदा नहीं होता। दूसरा यह कि भविष्य में ३० एकड़ से अधिक ज़मीन कोई पैदा न कर सकेगा। वैसे आज जिनके पास जितनी है उतनी ही रहेगी। परन्तु मौजूदा समय में जिनकेपास ३० एकड़ से अधिक भूमि है वह आगे कोई ज़मीन नहीं खरीद सकेंगे और जिनके पास कम भूमि है उन्हें ३० एकड़ तक खरीदने की छूट होगी। कई परीक्षणों से यह सिद्ध किया जा चुका है कि कुछ सीमा के बाहर जितनी बड़ी जोत होगी उतनी ही पैदावार में कमी आ जाती हैं।

महात्मा गांधी विकेन्द्री करण के परमोच्च पृष्ठ पोपक थे। वे मनसा, वाचा, कर्मणा निरंतर इसी प्रयास में जीवन भर लगे रहे। ग्रामों में गृह उद्योग बढ़े और गांव वाले स्वावलम्बी बनें इस हेतु उन्होंने 'चर्खे' पर बल दिया। पंचायत राज की आधार भूत शिला उन्हीं के बताये हुए मार्ग और उद्देश्यों पर रखी गई है। यह तो कहा ही जा चुका है कि भूमि बिना कमाई की आमदनी का ज़रिआ या चन्द मालिकों की सम्पति न रह कर हल चलाने वाले किसानों की उदर पूर्ति का ज़रिया बन जायगी। ज़मींदार के पास केवल उतनी भूमि रहेगीं जितनी आज वास्तव में उसके हल के नीचे है। जहाँ किसान के निजी जीवन व रोजगार की स्वतंत्रता की इस प्रकार सुरक्षा और शोषण की मनाही कर दी गई है वहां सारी गैर मजरूमा भूमि पंचायत को देकर हर गांव वासी में निजी स्वार्थ से ऊपर उठ कर परस्पर सहयोग द्वारा अपनी ग्राम्य जीवन की उन्नति करने तथा सामुहिक जीवन पुनः जाग्रत करने की पूरी व्यवस्था की गई है।

जोतों और बागों को छोड़ कर हर प्रकार की भूमि, जंगल, सार्वजनिक कुओं, मीनाशय, हाट व बाजार, तालाब, जाहड़, रास्ते व आबादी की ज़मीन, आदि—सबकी मालिक गांव सभा होगी। इस सभा में उस गांव के रहने वाले कुल व्यक्ति और वह व्यक्ति जो चाहे कहीं भी रहते हों लेकिन वहां की ज़मीन पर काश्त करते हों, शामिल होंगे। गांव समाज की ओर से गांव सभा को खेती सुधार, जंगल और पेड़ों की रक्षा तथा विकास, आबादी ज़मीन व मीनाशयों का रख रखाव, हाटों बाजारों का प्रबन्ध, खेतों की चकबन्दी, गृह उद्योगों का विकास आदि के पूर्ण अधिकार होंगे। यदि गांव सभा या पंचायत में एक से अधिक गांव सम्मिलित हैं तो प्रत्येक गांव की ज़मीन का प्रबन्ध उसी गांव के लोगों की चुनी हुई एक उपसमिति करेगी। कृषि योग्य जितनी भी भूमि इस समय बंजर पड़ी हैं उसे तोड़ने का अधिकार गांव पंचायत को होगा। लावारिस किसान की जमीन पंचायत को मिलेगी। और पंचायत से जमीन पाने का पहला हक भूमिधर को होगा। और पंचायत अच्छी प्रकार काम करती है तो माल गुजारी वसूल करने का अधिकार भी उसे दे दिया जायेगा। और उसे कमीशन के तौर पर प्रतिशत कुछ रुपये मिलेंगे जो पंचायत के काम आयेगे।

आज सारे संसार में यह बात मान ली गई है कि बड़ेबड़े उद्योगों की अपेक्षा छोटे छोटे गृह उद्योगों में अधिक मनुष्य काम में लगाये जा सकते हैं। इस बात की नितान्त आवश्यकता है कि गांवों के लोगों की बेकारी किसी न किसी प्रकार दूर हो। वर्तमान स्थिति यह है कि उत्पादन कम है और व्यय अधिक हैं। हमारे देश में पूंजी की अपेक्षा काम करनेवाले अधिक सुलभ हैं परन्तु मशीनों के इस युग में माल तैयार करने के लिये पहले की अपेक्षा कम व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। जिसके फलस्वरूप बड़े बड़े उद्योगों में उतने व्यक्ति काम में नहीं लगाये जाते जितने पहले कभी लगाये जाते थे और अपनी सम्पूर्ण जनशक्ति को काम में लगाने के लिये इतनी भूमि उपलब्ध नहीं है। अगर भूमि उपलब्ध हो भी जाय तो भी देश को पूर्ण रूप से समृद्धिशाली और आत्मनिर्भर बनाने के लिये कृषि के साथ साथ अन्य धन्धे स्थापित करना बहुत जरूरी हो जाता हैं। आज स्तरी करण और जलविद्युत द्वारा किसी भी देश के लिये यह संभव हो गया हैं कि उसका उद्योगी करण छोटे पैमाने पर हो सके। छोटे पैमाने पर गाँव गाँव में रोज़गार खोलने से ही हमारे गाँवों की बेकारी दूर होगी, गांव वालों की स्वतंत्रा भी बनी रहेगी और वह समृद्धिशाली भी होंगे और उनके साथ साथ देश भी समृद्धिशाली होगा। उसी उद्देश्य से केन्द्रीय सरकार व प्रांतीय सरकारें गांवों को बिजली तथा छोटे छोटे मशीनों की सुविधाएं पहुँचाने की योजनाएं बना रही हैं।

निकट भविष्य में जब यह सुविधाएं गांव वालों को हाइड्रोइलैक्ट्रिक या पन बिजली के रूप में प्राप्त हो जायेंगी। जैसा कि वर्तमान योजना के अनुसार कुछ ही समय में संभव हो गया है। तो गांव वाले ... कार्यों से बचे समय में आधुनिक साधनों की मदद से घर पर ही छोटी मोटी चीजें बनाने में अपना समय लगा सकेंगे। इसके लिये सबसे अच्छा उदाहरण स्विटज़रलेंड का लिया जा सकता है। वहाँ की विश्व भर में प्रचलित घड़ियों के पुर्जे गांवों में ही तैयार किये जाते हैं। पुर्जों को गांव वाले एक जगह एकत्रित कर पास की किसी बड़ी कम्पनी के पास फिटिंग के लिये भेज देते हैं। इसी प्रकार हमारे गांव भी छोटे मोटे गृह उद्योगों को प्रोत्साहन देकर आर्थिक रूप से अपनी और सामाजिक रूप से देश की उन्नति में सहयोग प्रदान कर सकते हैं।

ज़मींदारी नष्ट होने पर ज़मीन की सारी व्यवस्था गाँव वालों के हाथ में चली जावेगी। गाँवों में गृह उद्योग स्थापित हो सकेंगे और वस्तुत; पूंजीवाद का अन्त हो सकेगा। ज़मींदारी उन्मूलन की पृष्ठभूमि में देश को एक बार पुनः प्राचीन भारत के स्तर पर पहुँचा देने की सरकार की कितनी विषद योजना है इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है।

(शेष पृष्ठ ११ का)

सम्बन्ध में मेरा दूसरा प्रश्न था जिसके उत्तर में श्री अमर ने कहा—क्यों नहीं! सबसे बड़ी बुराई तो यही है कि केवल एक ही पृष्ठभूमि को लेकर अधिकांस चित्रों का निर्माण होता है। आज के निन्नानवे फी सदी चित्र लड़के लड़की के साधारण प्रेम पर आधारित रहते हैं। यह सही है कि युवक समाज आज के संसार का केन्द्र बिन्दु है उसी की अधिकता हैं और जीवन के विकास के युद्ध में वह ही अग्र गण्य हैं, पर इसके माने यह तो नहीं कि हम बच्चों और बूढ़ों को छोड़ दें। जब तक हमारे चित्र मानव समाज के प्रत्येक दृष्टि कोण को लेकर न निर्मित होंगे, तब तक ऐसा ही रहेगा। बच्चों की समस्या को लेकर 'छोटा भाई' एक उत्कृष्टतम चित्र था, पर उस ओर भी न्यूथिएटर्स के अतिरिक्त और किसने कदम उठाया ? मैं कहता हूँ, इसी तरह यदि बूढ़ों के जीवन पर भी कुछ फिल्में बनें, तो वह किसी से कम नहीं होंगी। युवकों की समस्या—और वह भी प्रेम और विवाहों जैसी छोटी सी समस्या—सम्बन्धी एकाधिकार जब तक फिल्म निर्माण कला से न हटेगा, तब तक हम प्रगति नहीं कर सकते।

'क्या आप इसी उद्देश्य को लेकर फिल्मी दुनियां में प्रवेश कर रहे हैं ?'—मैंने अपने पहले प्रश्न को पुनः दुहराया।

'बेशक ! यदि मैं अपने मन के अनुकूल वातावरण वहां नहीं पाता, तो एक ही चित्र में काम करने के बाद वापस चला आऊँगा।'

'आप कैसी भूमिका में काम करना अधिक पसन्द करेंगे ?'—दीवार पर लगी घड़ी में चार बजने में जब केवल पांच मिनट शेष थे, मैंने यह प्रश्न पूंछा।

'दुःखान्त में मेरे भावों की गहराइयों तक दर्शक तभी पहुँच सकते हैं जब मेरी भूमिका दुःखपूर्ण हो। आन्तरिक भावों का उतार चढ़ाव भारतीय कलाकारों में से एक दो को छोड़कर मैं सबसे अच्छा कर सकता हूँ, इसका मुझे पूर्ण विश्वास है। कामेडी चित्रों में मैं बिलकुल नहीं चल सकता।'

'क्या अपना कुछ परिचय देने की कृपा करेंगे ?'

'आपके सामने बैठा हूँ, अन्हसिकं अमर मेरा नाम है, गोरा खूब सूरत नौजवान हूँ, पढा लिखा हूँ, शरीफ हूँ, और अभिनय अच्छी तरह न कर पाता तो लिया ही क्यों जाता—इससे अधिक आप और क्या चाहेंगे !'—हंसते हुए उन्होंने कहा।

'नये कलाकारों में आप सर्वोच्च स्थान किसे देते हैं'—मैंने पूंछा, तो बोले—'अपने को !'दूसरा नम्बर निम्मी का हैं; 'बरसात' में उसने बहुत उत्कृष्ट अभिनय किया है, देखना यह है कि मेरे साथ कैसा करतीं है !'

कुमारी रीता पण्डित से क्या आप का पहिले से कुछ परिचय है ?

'मैं तो उन्हें अच्छी तरह जानता हूँ, वे भी मुझे जानती हैं या नहीं, कह नहीं सकता।'—बात को टालते हूए उन्होंने कहा।

अन्तिम प्रश्न मैंने पूंछा—'आपकी हाबीज क्या हैं ?'

उत्तर मिला—'मुझे समुद्र में तैरना बड़ा अच्छा लगता है। उससे स्फूर्ति भी बढ़ती है, और शारीरिक सुन्दरता भी। जब भी मैं बम्बई जाता हूँ, अपना अधिकांश समय जूहू, वरसोवा और वर्ली के समुद्र तटों पर ही बिताता हूँ। यो पढ़ने लिखने का भी कुछ शौक है। मैं साहित्यिकों की अन्तर्राष्ट्रीय संस्था P.E.N. का सदस्य भी हूँ।

टूटे काँटे

आज के युग का संदेशवाहक धारावाहिक उपन्यास

लेखक, श्री वृन्दावनलाल वर्मा

(गतांक के आगे)

(३)

सुस्ताने के लिये वे दोनों खलियान में बैठ गए और फेंट खोलकर बचे हुए चने चबाने लगे। उसी समय बाहरी द्वार पर कुछ शोर सुनाई पड़ा। उनकी सभी आशंकाएँ एक साथ जग पड़ीं—शायद साहूकार के आदमी हों, शायद जमादार के सिपाही हों, शायद कोई लुटेरे हों। रोनी दौड़ती हुई आई। उसने तुरन्त भैंस को उसके बच्चे सहित खोला। टूटी फूटी दीवार के निकट काँटे उखाड़े और भैंस को बाहर कर दिया, फिर काँटे ज्यों के त्यों कर दिए। वह हड़बड़ाई हुई बोली, 'जमादार के सिपाही आगए हैं।'

रोनी घर में चली गई और कुछ उलटने पुलटने लगी। मोहन और तोता ने अपने चबैने ज्यों के त्यों फेंट में बाँध लिये। हकबकाए हुए बाहर पहुँचे। वहाँ सिपाहियों की एक खासी भीड़ थी। भीड़ के आगे बड़ी तोंदवाला एक नायक था। नायक ने आदेश के स्वर में कहा, 'फ़सल काटकर चुपचाप खलियान में रखलो! बरसों की बाकी पड़ी है लगान की, उसकी भी कोई फिकिर है?'

मोहन ने फटे घिघियाए हुए कंठ से उत्तर दिया, 'सरदार साहब, अभी दायँ तो नहीं कर ली है। अनाज को छिपाकर कहाँ ले जायँगे? लगान देने का समय तो दूर है।'

नायक तेज हुआ,—'दूर के बच्चे पारसाल टालाटूली कर दी। इस साल फिर वही बहाने! हमको सब मालूम है—ब्याह कर लिया, मौज मना ली, तिथित्योहारों में सब उड़ा खा गए! तुम्हारे समय के लिये हम बैठे रहें तो एक दाना भी हमारे हाथ नहीं लग पायेगा!'

कुछ भी नहीं उड़ाया खाया' तोता ने रुआंसे स्वर में कहा।

मोहन बोला, 'तो लीजिये जो कुछ लेना हो, किसी तरह पेट पाल लेंगे।'

तोता न माना—'हमारे घर में है ही क्या?'

नायक गरम हो गया! 'हूँ! ले लीजिये का बच्चा। गँवार कहीं का!! उतार कर रक्खो अपनी औरत का जेवर।'—

नायक तीव्रता के साथ बोला, 'हम अभी सब देख लेते हैं।' अपने कुछ साथियों को उसने आदेश दिया, 'जाओ जी भीतर और गहने कब्जे में करो। भीतर भैंस बँधी होगी उसको भी ले लो। बैल भी नहीं छोड़े जायँगे।

मुगल बादशाहों का फरमान था कि किसानों के बैल न पकड़े जायँ और न अन्य ढोर, परन्तु उस फरमान का पालन शाहजहाँ के काल में ही हुआ—थोड़ा सा औरंगजेब के जमाने में भी वह पाला गया, परन्तु उसके उत्तराधिकारियों के समय में यह फरमान, जिसकी पुनरावृतियाँ सदा हुआ करती थीं, कागज पर ही रहा आया। मुहम्मद शाह के शासन में तो वह कागज भी रद्द हो गया।

नायक के कुछ साथी मोहन के घर में घुस पड़े। भीतरी द्वार से बेड़े में। वहाँ भैंस न थी, केवल बैल बँधे थे जो दत्त चित्त होकर चारा चर रहे थे।

'यहाँ भैंस नहीं है,' एक सिपाही ने चिल्ला कर कहा।

रोनी ऊँचे पैने स्वर में बोली, 'हयारे पास भैंस थी ही कब?'

रुँधे हुए कंठ से मोहन ने कहा, 'भैंस हमारे पास होती तो क्या न था।'

नायक बाहर से चिल्लाया 'पकड़ लाओ उन सबों को यहाँ बाहर।'

सिपाही उन दोनों की ओर बढ़े।

मोहन बोला, 'काहे को पकड़ते हो, वैसे ही चलता हूँ।' वे दोनों बाहर आ गए। रोनी रोने चिल्लाने लगी।

कैसे घर में ब्याही गई मैं, जहाँ न खाने को अन्न है, न पहिनने को कपड़ा। निपूतों ने किस खंडहल में मुझको डाला!! सत्यानाश जाय ऐसे आदमी का जिसने मुझको नरक का कीड़ा बना रक्खा है!!'

नायक बोला, 'बहाने बना रही है। तलाशी लो जेवर जरूर होगा।'

सिपाही भीतर घुस पड़े। रोनी रोती बिलखती बाहर निकल आई। अभी सूर्य की किरणें आकाश से गई न थीं। नायक ने देखा रोनी के शरीर पर मोटे मैले कपड़ों, कुछ चूड़ियों और काँसे के कड़ों के सिवाय और कुछ न था। जेवर भीतर होगा उसने सोचा।

तलाशी लेकर सिपाही निकल आए। कोई गहना नहीं मिला। एक मटकनी में लगभग दो सेर भुने हुए चने, एक में कुछ अनाज और दूसरी में मट्ठा, दुधाँड़ी में थोड़ा सा दही।

नायक को अपने अनुसन्धान पर हर्ष हुआ। उसने पूछा, 'यह दही कहाँ से आया? मट्ठा कौन दे गया? तुम्हारे पास भैंस नहीं है तो यह सब क्या आसमान से आ टपका?'

गाँव से माँग लाई थी, तुरन्त रोनी बोली।

'और बदले में गाँव वालों को भैंस दे आई! ह!! ह!!! ह!!!!' नायक ने अट्टहास किया, और उसकी तोंद उछल गई। उसके अन्य साथी भी हँस पड़े! मोहन की आँख उन सबों के चेहरे पर घूम गई, मानों कुछ ढूँढ़ रही हो—क्या मानव का कोई अंश इनमें से किसी में भी है?

घूंघट की ओट से रोनी ने भी देखा आंसुओं से भीगे उसके सौन्दर्य पर नायक की आंख गई।

नायक ने गंभीर होकर कहा, 'तुमको मालूम है कि हमको क्या क्या अख्तियार है। हम तुम्हारी चमड़ी टपका सकते हैं, पेड़ से बाँधे रह सकते हैं, घर में आग लगा सकते हैं। तुम्हारी औरत को—

मोहन की आँख से लौ सी छूट पड़ी। बोला, 'बस नायक जी, बस आगे मत बढ़िये। लेजाइये सारे अनाज को और बैलों को भी। राम ने हाथ पाँव दिये हैं। हम कहीं भी जाकर कमा खायँगे।

नायक सह गया, परन्तु वह अपने रोष को सहज ही खो डालने का अभ्यासी न था।

कहने लगा, 'अभी मजा चखा सकता हूं। जहन्नुम में भेज सकता हूँ। सोचा था तुम लोग के खाने के लिए थोड़ा सा अनाज छोड़ दूँगा, लेकिन तुम इतने गुस्ताख हो कि तुम्हारे तो हाथ पैर काटकर फेंक दिये जायँ तो कोई हर्ज न होगा। बड़ी औरतवाला बना फिरता है। मैंने अच्छों अच्छों की इज्जत धूल में मिलादी है, तूम तो है ही किस खेत की मूली!! जरा सी झोपड़ी, मुट्ठी भर अनाज, चूहे से बैल, बातें मारता है। जैसे कहीं का राजा हो।'

मोहन के मुँह से निकला—मेरा भाग्य हर तरह से खोटा है।'

नायक ने देखा मोहन में अकड़ धकड़ नहीं है। थोड़ा सा शान्त हुआ रोनी सिसकती रही। नायक बोला, गाड़ियाँ आरही हैं उनमें खलियान से तीन चौथाई अनाज सरकारी बड़े में जायगा। हम तुम्हारी बहुत बात रियायत

करके एक चौथाई छोड़े जाते हैं। जब गाड़ लों तब उसमें से आधा हम लोगों की हक दस्तूरी का होगा बाकी तुम्हारे खाने के लिये।' सब ले जाइए।' बहुत रूँधेस्वर में मोहन ने कहा।

—हाँ...ऑं...।' नायक के मुँह से कड़क निकली। रोनी हाथ जोड़कर चिरौरी करती हुई बोली, 'मालिक ये बहुत नासमझ है, बड़े मूर्ख। इनको माफी दीजिये। हम लोग भूखों मर जायेंगे। हमारा कोई भी नहीं है।'

नायक ने पिघलने का लक्षण दिखलाया। मोहन ने मुड़कर ऊपर की ओर देखा। उसकी आँखें अकबर के बनवाये हुए, तम्बोलिन के महल, सलीम शाही दरवाजे के ऊपरी भाग और बीरबल के भावन से जा टकराई।

नायक ने आज्ञा दी, —'पानी पिलाओ,' रोनी भीतर चली गई। सिपाहियों की निगाह भुने हुए चनों पर गई।

'कुछ खओगे' नायक ने अपने सिपाहियों से पूछा। एक ने उत्तर दिया,' सूखे चनें। साथ के लिये गुड़ ही होता।

एक गगरी पानी लेकर रोनी आगई। उसने सुन लिया था, गगरी रखकर बोली, इस घर ने गुड़ के दर्शन बरसों से न किए होंगे।'

एक सिपाही ने कहा, "हम लोग सूखे चनों पर नियत नहीं डिगाते।'

उन लोगों ने पानी पिया। थोड़ी देर में सूर्यास्त हो गया। फतेहपुर के कोट से दो गाड़ियाँ आई और तीन चौथाई अनाज भर कर ले गई। सिपाही और उनका नायक साथ चले गए।

नायक कहता गया, 'हमारी इक दस्तूरी बाकी रह गई है। अगर चाल बाजी की तो खाल उचेड़ कर भुस भर दूँगा।, और—हाँ—'

क्रमशः

संवाददाताओं के पत्र

ब्रज साहित्य मंडल का इस वर्ष का कार्यक्रम

—०—

मंडल ने अपने विगत सहारनपुर अधिवेशन में आगामी वर्ष के लिये जो कार्यक्रम की रूप रेखा तैयार की है,मंडल की प्रबन्ध समिति उसे क्रियान्वित करने में सचेष्ट है। मंडल के भवन के लिये जो भूमि वृन्दावन के मार्ग में अम्बरीष टीले पर ली गई थी वहां शीघ्र ही भवन निर्माण का कार्य प्रारम्भ होगा, ऐसी आशा है। भवन के लिये कई महानुभावों से सहायता सम्बन्धी वचन मिल चुके हैं। इस वर्ष के सभापति पं० बालकृष्ण जी शर्मा नवीन के कुशल नेतृत्व में मंडल अपने भवन के लिये उपयुक्त धन राशि एकत्रित करने में अवश्य सफल होगा। "श्री सेठ कन्हैयालाल पोद्दार अभिनन्दन ग्रन्थ" के रूप में ब्रजके विश्व कोष की सब सामग्री जुटाई जा चुकी है। हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान श्री बासुदेव शरण जी अग्रवाल की देख रेख में ग्रन्थ तैयार हो चुका है और प्रेस में जाने को है। श्री कृष्णदत्त जी वाजपेयी ब्रज के इतिहास की पांडुलिपि की अंतिम आवृत्ति में संलग्न हैं। यह ग्रन्थ भी शीघ्र ही प्रकाशित होगा। ब्रज के दर्शनीय तथा महत्वपूर्ण स्थानों का परिचय प्रकाशित करने की योजना प्रारम्भिक सीढ़ियों को पार कर चुकी है। मंडल की त्रैमासिक पत्रिका "ब्रज भारती" का प्रकाशन यथावत् चल रहा है।

भवन निर्माण तथा ग्रन्थों के प्रकाशन के अतिरिक्त मंडल श्रीकृष्ण के जन्म स्थान कटरा केशव देव पर प्रति वर्ष एक सांस्कृतिक मेले के आयोजन का निर्णय कर चुका है। आल इंडिया रेडियो के देहाती प्रोग्रामों में ब्रज के देहाती प्रोग्राम को उचित स्थान दिलाने के लिये आंदोलन का श्रीगणेश हो चुका है। आशा ही नहीं विश्वास है कि आल इंडिया रेडियो मंडल की बलवती आवाज़ की उपेक्षा न करेगा।

—गोपाल दत्त
प्रबन्ध मन्त्री

अजमेर में—बी० बी० एण्ड० सी० आई रेलवे के अजमेर वर्कशाप तथा आफिस से २०० से ऊपर अस्थायी कर्मचारियों को निकालने की चर्चा जोरों पर है। इनमें अधिकांश क्लर्क हैं।

म्यूनिसिपल चेयरमैन श्री कृष्ण गोपाल गर्ग ने पत्र प्रतिनिधियों को बतलाया कि म्यूनिसिपल के आगामी चुनाव अप्रैल ५० में बालिग मताधिकार पद्धति पर होने की सम्भावना है। नगर को २० के स्थान पर ३२ भागों में विभाजित कर दिया गया है और ३२ ही सदस्यों का निर्वाचन किया जावेगा। २ हरिजनों के लिये स्थान सुरक्षित रहेंगे। पीने के लिये जल के अभाव पर बोलते हुये आपने बताया कि गानाहेड़ा ग्राम से अजमेर तक पाइप अभी तक नहीं मिल सके हैं और इस सम्बन्ध में निर्माण-मंत्री श्री० गाडगिल साहब को शीघ्र सामान देने के लिये लिख दिया गया है।

—संवाददाता

अमरावती—में हिन्दी आई० ई० एम० विद्यालय का वार्षिकोत्सव शिवाजी वाणिज्य महाविद्यालय अमरावती के प्रिंसिपल डा० ज्वालाप्रसाद जी एम० ए० पी० एच० डी० की अध्यक्षता में हुआ। स्वागत-गीत परिचय और रिपोर्ट-वाचन के बाद डा० ज्वालाप्रसाद जी का सारगर्भित भाषण हुआ है।

मध्यान्ह में वाद विवाद और अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता हुई। रात को अमरावती के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री० आशाकान्त जी बी० आचार्य की अध्यक्षता में कवि सम्मेलन हुआ।

दूसरे दिन विद्यालय के मैदान में श्री० आशाकान्त जी बी० आचार्य जी के सभापतित्व में केम्पफायर हुआ जिसमें विध्यालय के स्काउटों ने अनेक प्रकार के मनोरंजक और शिक्षाप्रद कार्यों का प्रदर्शन किया।

सीतापुर—हिन्दी-सभा, का सातवाँ वार्षिकोत्सव लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रो० दीनदयालु गुप्त, एम० ए०, डी० लिट्० के सभापतित्व में १३, १४, १५ तथा १६ जनवरी को होगा। इस उत्सव में राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन और आचार्य नरेन्द्र देव प्रभृति महापुरुष पधार रहे हैं।

—प्रधान मंत्री

बस्ती—जिले में आजकल किसानों में भूमिधर बनने की होड़ चल रही है। जिले के किसान कार्यकर्ता बड़े परिश्रम से देहातों में प्रचार कार्य कर रहे हैं। पूर्वी जिले के भूमिधर इन्चार्ज श्री अलगूराय जी शास्त्री १पहली जनवरी से ३ जनवरी तक जिले की कई सभाओं में भाषण दिया।

सचित्र साप्ताहिक 'देशदूत'

संवाददाताओं से निवेदन

संयुक्तप्रांत, मध्यप्रांत, मध्य भारत तथा राजपूताने के संवाद भेजनेवालों से निवेदन है कि अपने संवाद संक्षिप्तरूप में भेजने का कष्ट करें।

संपादक 'देशदूत'

श्री सोहनलाल द्विवेदी लिखित

काव्य कृतियों के नवीन संस्करण

भैरवी — गांधी युग का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। महामना मालवीयजी के शब्दों में 'ऐसी कविता का प्रचार देश के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक होना चाहिए।' मूल्य २॥≈)

वासवदत्ता — बाबू मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं 'इस रचना से मैं बहुत प्रभावित हुआ।' स्वच्छन्दतापूर्वक जिस प्रौढ़ता की ओर द्विवेदीजी अग्रसर हो रहे हैं, जान पड़ता है, स्वयं वह भी उन्हें वरण करने के लिए आतुर हो रही है। 'वासवदत्ता' के प्रकाशन ने हिन्दी-साहित्य में एक नई क्रान्ति उत्पन्न कर दी है स्वयं पढ़कर निर्णय कीजिए। मूल्य१॥)

कुणाल — महापंडित राहुल सांकृत्यायन की सम्मति में—अशोक, तिष्यरक्षिता और कुणाल खास तौर से—'कुणाल' के चरित्र-चित्रण में कवि ने कमाल किया है। शब्द-सौकुमार्यऔर भावोत्कर्ष के साथ ही नपे तुले शब्दों के प्रयोगने काव्यको बहुतउँचा उठायाहै। विशेषसंस्करण मूल्य २॥)

पूजागीत — राष्ट्रीय चेतना को काव्य का सच्चा स्वरूप देने के लिए द्विवेदी जी को प्रचुर सम्मान तथा लोकप्रियता प्राप्त हुई है। ये पूजा-गीत कवि के गौरव के अनुरूप ही हैं। मूल्य २)

विषपान — सुप्रसिद्ध पौराणिक कथा का सरल तथा सबल खंड-काव्य है। भाषा का प्रवाह, प्रसन्न शैली तथा कथा के मार्मिक घटना-क्रम की वर्णना ने इसे बड़ा ही हृदयग्राही बना दिया है। मूल्य १)

झरना, शिशुभारती, बाँसुरी — द्विवेदी जी पहले बालकों के कवि हैं पीछे राष्ट्र के। पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा माननीय सम्पूर्णानन्दजी ने इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा की है। 'अमृत बाजार पत्रिका' की सम्मति में—जिस प्रकार की शिक्षा बालकों को देने के लिए हमारे नेता वर्षों से प्रयत्न कर रहे हैं, इन पुस्तकों में उसी प्रकार का साहित्य है। प्रत्येक पुस्तक में कई रङ्गीन तथा अनेक सादे चित्र हैं। प्रत्येक पुस्तक का मूल्य १)

पूरे सेट का मूल्य १२ रु०

पता—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

ESTD 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेंट रिकगनाइजड AIDED

सिन्हा होमियो मेडिकल कौलेज

—पो० लहेरियासराय, बिहार—

आज हिन्दी उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़ कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्सन सहित फीस H.L.M.S. १०), H.M.B.S १५) H.M.D.S. २५) पुस्तकें—अ० पारिवारिक १॥) बायोकेमिक १॥) मेटेरिया मेडिका १॥) मेडिकल डिक्सनरी २) आर्गेनन १॥) फार्मा कोपिया १॥) रेड लाइन सीम्पटम्स १॥) (१) बृ० इंजेक्सन चिकित्सा ३) बृ० अ० पारिवारिक चिकित्सा ६॥) बृ० अ० मेटेरिया मेडीका ६॥) ऐनाटोम १॥) परिक्षाविधान १॥) रिलेशन शिप, १॥) कुल किताबें २५) में एक साथ दी जायँगी डा० ख० माफ। अमेरिकन दवाइयाँ ३०—≈)॥ २००—≡) ड्राम, फी औंस ॥), घरेलू बक्स पुस्तक सहित ३६ शीशी का ८) सुगर और गोली २॥) फी पाउण्ड। चौथाई Advance भेज दें। थोक खरीदार को २५ प्रतिशत कमीशन देते हैं।

नोटः—बृहत् सूची मुफ्त—सचित्र मेडिकल मैगजीन मासिक ॥) सालाना—५)

संरक्षक—राय सा० डा० यदुवीरसिंह एम० डी० यस० (U.S.A.)

सचित्र साप्ताहिक 'देशदूत' का विशेषांक

काश्मीर अंक

इस अंक का संपादन करेंगे

पंडित शिवनाथ काटजू एम० ए०, एल-एल० बी०

'देशदूत' के काश्मीर अंक विशेपांक के प्रकाशन की तैयारी जोरों से प्रारंभ हो गई है। काश्मीर की समस्या स्वतंत्र भारत को आज की एक प्रमुख समस्या है। काश्मीर भारत का अंग है। उसकी रक्षा तथा स्वतन्त्रता भारतीय सरकार का कर्तव्य है! इस विशेपांक में काश्मीर की वर्तमान समस्याओं पर राष्ट्र के बड़े बड़े नेताओं के गंभीर तथा जानकारी पूर्ण लेख रहेंगे। काश्मीर की भौगोलिक, ऐतिहासिक तथा राष्ट्रीयता का सचित्र विवरण दिया जायेगा। काश्मीर के प्रति पाकिस्तानी नीति पर भी नेताओं द्वारा सुन्दर प्रकाश डाला जायेगा। काश्मीर के संबंध में सुन्दर चित्र तथा नेशनल कान्फ्रेंस के नेताओं के संदेश आदि भी आकर्षक रूप में होंगे।

विज्ञापनदाताओं तथा एजेंटों को

अभी से अपना स्थान तथा बिक्री के लिये कापियाँ रिजर्व करा लेना चाहिये। नये ग्राहकों को यह अंक मुफ्त मिलेगा। यह अंक काश्मीर का एक अलबम होगा।

दर्जनों चित्रों तथा कार्टूनों से सुसज्जित

इस अंक का मूल्य होगा केवल ।≈)

व्यवस्थापक 'देशदूत' इलाहाबाद

भारत के कोने-कोने में हजारों जनता-द्वारा पढ़ा जानेवाला तथा ११ वर्षों से लगातार प्रकाशित होनेवाला

प्रमुख राष्ट्रीय साप्ताहिक पत्र

सचित्र देशदूत में

विज्ञापन देकर अपने व्यापार को बढ़ाइये

Registered No. A—295

प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल। ... प्रयाग में ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल द्वारा मुद्रित तथा 'देशदूत' कार्यालय प्रयाग, द्वारा प्रकाशित।

देशदूत

DESHDOOT
HINDI WEEKLY
Annual Price Rs. 7-8-0
Per Copy Annas Two

वार्षिक मूल्य ७॥)
एक प्रति का ≈)

आगामी २६ जनवरी को स्वतंत्रता दिवस का समारोह सारे देश में बड़ी धूमधाम से मनाया जायेगा। यह चित्र पिछले वर्ष के स्वतंत्रता दिवस की याद दिला रहा है, जिस समय भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने राष्ट्रीय झंडा फहराया था।

...वार, २२ जनवरी, १९५०

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र

सामयिक लेख, कहानी, रंगमंच,

हमारे जानवर

लेखक—कुँवर सुरेशसिंह

यह हिन्दी में अपने विषय की पहली पुस्तक है। हम अपने पास-पड़ोस के पालतू जानवरों को जरूर पहचानते हैं। उनकी आदतें और स्वभाव के बारे में भी थोड़ा बहुत जानते हैं, लेकिन इतने ही से क्या हम कह सकते हैं कि हमें सारे पशु-जगत् की जानकारी हो गई है?

इतना ही क्यों, हमें चिड़ियाखाना देखने का भी मौका मिला होगा। लेकिन वहाँ जिस सरसरी निगाह से हमने जानवरों को देखा होगा उनसे भी हम किसी पर विश्वास नहीं दिला सकते कि हमें पशुसमाज का काफी ज्ञान है।

ऐसी दशा में अपने देश के जंगल, पहाड़, बस्तियाँ और मैदानों में फैले हुए सैकड़ों पशुओं के बारे में तरह तरह की मनोरंजक बातें जानने के लिए एक ही उपाय है कि आप "हमारे जानवर" की एक प्रति आज ही मँगावें। आपको प्रायः सभी जानवरों का सचित्र वर्णन इस पुस्तक में मिलेगा। मूल्य ४)

तुलनात्मक भाषाशास्त्र

(भाषा-विज्ञान)

लेखक, डा० मंगलदेव शास्त्री एम० ए०, डी० फिल०

इसमें तुलनात्मक भाषाशास्त्र के सिद्धांतों का प्रतिपादन तथा संसार की भिन्न-भिन्न भाषाओं के परस्परसम्बन्ध की सरल और सुबोध व्याख्या है। प्रोफेसर ए० सी० वुलनर, डा० भगवानदास, म० म० गंगानाथ झा और श्री गोपीनाथ कविराज, डा० लक्ष्मणस्वरूप और धीरेन्द्र वर्मा आदि मनीषियों ने और अन्य नामी साहित्यिकों तथा पत्रों ने इसकी प्रशंसा की है। पृष्ठ-संख्या पौने तीन सौ से ऊपर; अच्छा कागज, बढ़िया जिल्द, मूल्य केवल ५)।

हमारी नई पुस्तकें

संगति

आकाशरंजन मेहता नामी डाक्टर थे। उनकी खासी आमदनी थी। किन्तु उनकी अर्द्धांगिनी सुशिक्षित हेमप्रभा यह समझती थी कि डाक्टर मेहता सिर्फ आविष्कार की धुन में रहते हैं; मेरे पिता के दिये धन से ही गुजर होता है। इससे वह सिर-चढ़ी स्त्री बन गई थी। और डाक्टर मेहता उसकी फटकार सुनकर भी भीगी बिल्ली बने हुए अपने काम में लगे रहते थे। उनका मित्र प्रणयलाल जौहरी कई वर्ष विलायत में रहकर लौटा तो उनसे मिलने आया। उन्होंने हेमप्रभा से उसका परिचय करा दिया। परिचय इतना घनिष्ठ हो गया कि उससे बचने को डा० मेहता आँखों का इलाज कराने के बहाने दूसरे प्रान्त में चले गये। इधर प्रणयलाल का रंग गहरा होता गया। कई महीने बाद डा० मेहता नकली अन्धे बनकर लौटे और इसी रूप में उन्होंने हेमप्रभा के खोये हुए प्रेम पर अधिकार किया। पुस्तक को हाथ में लेकर समाप्त किए बिना पाठक छोड़ना नहीं चाहते। लेखक के विलक्षण कथानक की सृष्टि करके गिरते हुए चरित्र को समुन्नत बनाया है। मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

यात्री

श्रीयुत पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी बी० ए० ने इस पुस्तक में लिखा है कि हम सभी अनन्त पथ के यात्री हैं। यह जीवन-यात्रा कब आरम्भ हुई और कहाँ इसकी समाप्ति होगी। लेखक ने क्यों लिखूं, जीवन-पथ पर, स्मृति और शिक्षक-जीवन आदि २० शीर्षकों में विभिन्न विषयों पर परिमार्जित भाषा में उच्च विचार प्रगट किये हैं। यात्री अपने ढंग की पुस्तक है। सचित्र आवरण की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २) दो रुपया।

अनातोले फ्रांसकी चुनी हुई कहानियाँ

फ्रांस के इस नामी लेखक की प्रतिभा का अनुमान पाठकों को छाया-सुन्दरी उसका पति, रूप की परी, मदारी, पेरिस की सुन्दरी और माल आदि कहानियों से लगेगा। प्रत्येक कहानी बेजोड़ है। सामाजिक चित्रण सजीव है। ये कहानियाँ पाठकों का मनोरंजन करने के साथ ही उपकार भी करेंगी। मूल्य १) एक रुपया।

अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशन

वनवास

(खण्ड-काव्य)

कवि राजाराम श्रीवास्तव बी० एस०-सी०, वकील ने इस काव्य में मर्यादापुरुषोत्तम रामचन्द्र जी के वनवास का वर्णन बड़ी सुन्दर कविता में किया है। पुस्तक कविताप्रेमियों को मुग्ध कर लेती है। मूल्य ।॥≈) चौदह आने।

अद्भुत कथा

इस पुस्तक में ऐसी विचित्र हृदयाकर्षक ११ कहानियाँ हैं जिनको लड़के बड़े चाव से पढ़ेंगे और सुनेंगे। कहानियों से शिक्षा भी मिलेगी। पुस्तक सभी के काम की है। मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

विषवृक्ष

यह सुप्रसिद्ध उपन्यास रायबहादुर बाबू बंकिमचन्द्र [चट्टोपा]ध्याय का बढ़िया उपन्यास है। हिन्दी रूपान्तर किया है कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' "विषवृक्ष सभी के घर के [आंगन में] लगा हुआ है। क्षेत्र-भेद से [उस] में रोग, शोक आदि नानावि[ध फल] लगते हैं।" इस उपन्यास में [नायिका] है कुन्दनन्दिनी जो थोड़ी अ[वस्था में] अनाथ हुई और नगेन्द्र [के] आश्रय पाकर उसके रिश्ते[दार से] ब्याही गई। फिर सत्रह साल [की उम्र] में विधवा हो गई। इसके [बाद] नगेन्द्र बाबू ऐसे रीझे कि उस[से] विधवा-विवाह कर लिया। [इस] में वर्णित उलझनों में पड़कर [पाठक] चकरा जाते हैं। भाषा और [भाव] सभी विचित्र हैं। मूल्य २) दो [रुपया]।

नवदुर्गा

नवदुर्गा बंगाली पंडित [की कन्या] थी। उसका विवाह करने [के लिए] में मां-बाप और बेटी तीनों कलकत्ते के लिए चले। रास्ते में [तारके]श्वर तीर्थ में दर्शन करने [के लिए] ठहर गये। वहाँ के महन्त [गिरि]चरण पुरी ने नवदुर्गा को प्रा[प्त करने] के लिए जो जाल रचा उसका [वर्णन] पढ़कर पाठकों को दंग हो[ना] पड़ता है। अन्त में महन्त का [नौ]कर अधरचन्द्र मुखोपाध्याय [मियाँ] की जूती और मियाँ का सि[र] कहावत के अनुसार महन्त [से] खासी रकम ऐंठकर और [नवदुर्गा] को विधि से पत्नी बनाकर [सुखी] हुआ। लेखक ने महन्त जी [की] दुर्गति काशी में लाकर कराई है। पाठक विस्मित और खिन्न हु[ए बिना] न रहेंगे। मूल्य १।) एक रुपय[ा चार] आने।

हार या जीत

इस उपन्यास में लेखक [श्री] व्रजेश्वर वर्मा एम० ए०, डी० [फिल०] ने एक देहाती लुहार की अल[्हड़] बेटी को घटनाक्रम से, अनाथ [अवस्था] में, देहात से महराजगंज की [रानी] पृथाकुंवरि के आश्रय में पहुँचा[या] है। वहाँ रानी की कृपा [से] लड़की ने विद्या पढ़ी। फिर इ[सके] गुणों का विकास हुआ जिससे [वह] सभ्य होकर सम्मान पाता है। [उसने] असहयोग आन्दोलन में सक्रि[य भाग] लिया और अन्त में कलकत्ता [में] नौकरी कर ली। कई पुस्तकें [लिखीं।] विदेश-यात्रा के बाद रानी [की] की प्रार्थना पर उससे विवाह [किया।] उपन्यास की घटनावली, वि[चारों का] संघर्ष और चन्दा की न[ैतिक] दृढ़ता सराहने योग्य है। [मूल्य २)] दो रुपये।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

वर्ष १२, संख्या २०]   रविवार, २२ जनवरी, १९५०

'देशदूत' का अगला अंक होगा

'स्वतंत्रता-अंक'

टेढ़ी, सीधी, खरी-मजेदार

समाजवादी नेता श्री जयप्रकाश नारायण कहते हैं कि वर्तमान सरकार को स्तीफा देना चाहिए। बात तो बड़ा समयानुकूल है अच्छा हो २६ जनवरी के पहले ही वर्तमान सरकार के स्तीफे का शुभारंभ हो जाये जिससे श्री जय प्रकाश नारायण-सरकार का २६ तारीख को जश्न मनाया जाये।

❀ ❀ ❀ ❀

भारत ने पाकिस्तान से 'युद्ध-वर्जन' प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करने की माँग की है। अर्थात भारत और पाकिस्तान के बीच इस प्रकार का समझौता हो जाये कि किसी राष्ट्र की ओर से युद्ध-घोषणा न की जाये। अपने राम को यह जान कर आश्चर्य हुआ कि मियाँ लियाकत अली ने प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करने से इनकार किया है। भारत सरकार अगर इतने पर भी पाकिस्तानी मिल्लत का सपना देखती रहे तो इसे बेवकूफी के सिवा और क्या कहा जावेगा! राज्य की सुरक्षा शक्ति और हथियार के बल से होती है, व्यर्थ की मिल्लत की माला जपने से काश्मीर की रक्षा न हो सकेगी। भारत सरकार को पाकिस्तानी दल दल में फँस का अपनी ओर देखे तो बहुत बेहतर है।

❀ ❀ ❀ ❀

संयुक्त प्रांत की देखी देखा, विहार, उड़ीसा, मध्यप्रांत तथा राजस्थानी सरकारों ने भी जमीन्दारी उन्मूलन ढोल बजानी प्रारंभ कर दी है। हवा ही कुछ जमीन्दारी के खिलाफ ही बह रही है, किया क्या जाये! सरकार किसानों को देखे कि मुट्ठी भर जमीन्दारों को!

❀ ❀ ❀ ❀

गड़े मुर्दे उखाड़ने की कहावत पुरानी और प्रसिद्ध है। पाकिस्तान को आजकल गड़े मुर्दे उखाड़ने की धुन समाई हुई है। जूनागढ़ तथा वहां की नवाबी कब्र की जहां की तहां हो गई किन्तु पाकिस्तान अब भी जूनागढ़ के माहले में वही पुराना और बेसुरा राग अलाप रहा है। अपने राम की समझ में पाकिस्तान के पास सिवा इसके कोई खास काम भी नहीं है। इसलिये उसके पास ले दे कर और काम ही क्या है कि महीने महीने वह जूनागढ़, हैदराबाद तथा काश्मीर के शेख अब्दुल्ला की स्मृतियां दो चार बहकी बहकी बातें सुना दिया करे। पाकिस्तानी आत्मा को कम से कम इससे संतोष तो मिलता ही है साथ दुनिया को दिखाने के लिये इस्लामी साम्राज्य का नक्कारा भी पिट जाता है।

❀ ❀ ❀ ❀

मिस्र का मामला भी उलट रहा है। मिस्र के बादशाह फारूख ने जानता की दुहाई देनी प्रारम्भ कर दी है। यदि ब्रिटिश सरकार ने ऐसे अवसर पर अपनी नीति में परिवर्तन किया तो योरोप के आस पास बिगुल बजने लगेगा। फिलिस्तीन के मामले को लेकर अरब यों ही ब्रिटिश के खिलाफ हो गये हैं और यदि एटली-सरकार खास कर मि० बेविन अपना रवैया न बदला तो मिस्त्री भी ब्रिटेन के विरुद्ध चलते-फिरते नज़र आते दिखाई देंगे। दक्षिणी अफ्रीका में गोराशाही अपना नग्ननृत्य दिखा रही है, उससे कोई वास्ता नहीं। अँगरेज़ हैं तो चलते पुरजे लेकिन अगर मिस्र के मामले में उन्हें बुद्धि आजाये तब समझना चाहिए, अभी से क्या कहा जाये?

❀ ❀ ❀ ❀

भ्रष्टाचार—विरोधी हवा हिन्दी साहित्य सम्मेलन में भी बहने लगी है। हैदराबाद हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन में प्रस्ताव पास हो गया कि परीक्षा-विभाग सम्मेलन से अलग कर दिया जाये। अपने काम की समझ में प्रस्ताव अच्छा है या बुरा यह तो समय ही बतायेगा किन्तु सब से अधिक डर तो उस दलदल के प्रति है जिसकी परीक्षाओं की बदौलत रोजी चलती थी। उन पेशेवालों का अब क्या होगा? सचमुच रोज़ी के रास्ते में लंगी लगाना निहायत ज़लालत है। पता नहीं पंडित रामवृक्ष शर्मा बेनीपुरी कहाँ से हैदराबाद में टपक पड़े। सारा गुड़ गोबर हो गया। रहीमदास कह भी गये हैं—

रहिमन चाक कुंभार का,
माँगे दिया न देय।
छेद में डंडा डारि के,
चहै नाँद लै लेय।

❀ ❀ ❀

माननीय टंडन जी कहते हैं कि राजभाषा हिन्दी को राजकाज में शीघ्र इस्तेमाल किया जाये। बात तो है माकूल, किन्तु पन्द्रह वर्ष तक अँग्रेज़ी के बने रहने का कुछ तो लाभ फिलहाल उठा ही लिया जाना चाहिए, फिर देखा जायेगा।

❀ ❀ ❀

कांग्रेस कार्यसमिति ने देश की उन्नति के लिये पंच वर्षीय भोजना तैयार की है। समाचार शुभ है। देश को जब से स्वतंत्रता मिली है तब से स्कीमों और योजनाओं का विवरण पढ़ते पढ़ते नाक में दम हो गया है और कहना तो यह चाहिए कि अजीर्ण हो गया है। राष्ट्र के जनाबमन् नेताओं, कृपया जनता की गरीबी दूर कीजिये, सस्ता भोजन और कपड़ा-लत्ता दीजिए, योजनायें और स्कीमें स्थगित रखिये तो बड़ी कृपा हो।

भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू स्वतंत्रता-दिवस मनाने की तैयारी कर रहे हैं।

जीवन-नाव

लेखक, प्रोफ़ेसर चन्द्रप्रकाश वर्मा एम० ए०

बह रही संसार-सागर बीच जीवन-नाव!

वह लहर ऊँची उठी छूती हुई आकाश,
मैं कहो किसको पुकारूँ? कौन मेरे पास।

किन्तु यह किसकी कृपा वह लहर जल के बीच-
गिर गई; हिलमिल गई, खिल खो गई, तट सींच।

कौन संरक्षण रहा कर, भर रहे हैं घाव!
बह रही संसार-सागर बीच जीवन-नाव।

मैं न पहचानूं कि पथ क्या और क्या है ध्येय।
मैं न जानूं क्या सकूंगा जीत, कौन अजेय!

किन्तु वह किसकी कृपा गति बन रही संधान!
यह कृपा किसकी कि आहें बन रही हैं गान।

और पथ बतला रहा है, स्वयं मुझे बहाव;
बह रही संसार-सागर बीच जीवन-नाव।

मत पुकारो मीत! पीछे लौटना दुश्वार,
दूर मुझसे जीत है पर पास है कब हार।

तुम रहो तट पर, मुझे देते रहो आशीष,
कुछ हितू भू पर रहें ऊपर रहे वह ईश।

फिर मुझे मझधार भी जय द्वार का अपनाव;
बह रही संसार-सागर बीच जीवन-नाव।

भारत-सरकार के शिक्षा मन्त्री मौलाना अबुलकलाम आजाद आंध्र-प्रांत के गवर्नर बनाये जाने वाले हैं।

सम्पादक का पृष्ठ

कृषि की उन्नति और योजना

हाल ही में मद्रास में अखिल भारतीय कृषि एवं आर्थिक अधिवेशन की दशवीं बैठक हुई जिसमें 'अधिक अन्न उपजाओं' कृषि सम्बन्धी साधारण सरकारी नीति तथा कृषकों की विभिन्न समस्याओं पर विचार किया गया। अध्यक्ष पद से बोलते हुए डा॰ राजेन्द्र प्रसाद ने कहा की भारत में अन्न का जितना अभाव है उससे कहीं अधिक विज्ञापित किया जाता है इसका कारण यही है कि पहले कुछ इस आशय की बातें प्रकाशित की गईं कि विदेशी व्यापारी परिस्थिति से लाभ उठा रहे हैं और हमसे अनुचित ढङ्ग से ऊँचे दाम मांगते हैं। हमारा तो विश्वास है कि सरकार की विज्ञापन-संस्था दोषपूर्ण है। डा॰ राजेन्द्र प्रसाद के कथन से हमारी धारणा और भी पुष्ट हो जाती है।

जहां अब तक दश मन नाज पैदा होता था, वहीं ग्यारह मन पैदा करके हम अन्नभाव को दूर कर सकते हैं। यह तो कृषकों के सामर्थ्य के बाहर बिल्कुल नहीं है। डा॰ राजेन्द्र प्रसाद की अभिप्राय यह है कि सिंचाई के लघु योजनाओं तथा छोटे पैमाने का 'कृषि-व्यवस्था' पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिये। बड़े-बड़े खेतों के बनाने तथा कृषि को औद्योगीकरण करने में बड़ी बड़ी कठिनाइयां हैं दूसरी ओर अभी इस बात का निश्चय भी नहीं है कि इस प्रकार विशाल तथा खर्चीली योजनाओं का आर्थिक परिणाम लाभदायक ही होगा यदि छोटे-छोटे किसानों को सहकारी समितियों से अच्छे बीज, अच्छे औजार तथा विशेषज्ञों की कृषि-सम्बन्धी उचित सलाह प्राप्त हो सके तो कोई कारण नहीं की थोड़े ही समय में उत्पादन में वृद्धि न हो जाय।

इस अरोप को भी भारतीय किसान रूढ़िवादी होते हैं और आधुनिक सुधरे हुये नये तरीकों से खेती करने से दूर भागते हैं, डा॰ राजेन्द्र प्रसाद ने गलत बतलाया। डा॰ राजेन्द्र प्रसाद कृषकों के विषय में यथेष्ट अनुभव रखते हैं। इसलिये उनका कथन 'प्रामाणिक माना जा सकता है। उन्होंने कहा की भारतीय किसान में अनुचित रूढ़िवादिता नहीं मिलती किन्तु सावधान अवश्य रहता है। यदि उसे इस बात का विश्वास दिलाया जासके कि नये ढङ्ग से खेती करने पर उपज बढ़ जायगी या परिश्रम में बचत होगी या किसी अन्य दृष्टि से लाभ होगा तो वह इस तरीके को अपनाने में जरा भी नहीं हिचकिचायेगा हाँ। यह बात जरूरी है कि उसकी आर्थिक स्थिति उस नये तरीके के लिये अनुकूल हो। कृषि के विभिन्न उपायों को सरल तथा सस्ता करने की आवश्यकता है और उन्हें कृषकों के समक्ष इस ढङ्ग से रखा जाना चाहिये कि उनमें उनका विश्वास पैदा हो जाय

अधिक अन्न उपजायों 'योजना की कड़ी आलोचनायें की गईं। प्रोफेसर सी॰ यन॰ वकील ने कहा कि सरकार के पास अन्न उत्पादन तथा अन्नाभाव के ठीक ठीक आंकड़े नहीं है। बम्बई के श्री पूर्णिकन ने कहा कि न तो केन्द्रिक सरकार तथा न प्रान्तीय सरकारों के पास अन्न उत्पादन में वृद्धि करने के लिये वास्तविक योजनायें हैं। उनकी योजनायें कागजी मात्र हैं। यह बात निस्सन्देह कही जा सकती है। अन्न उत्पादन के सम्बन्ध में काफी आलस्य तथा अयोग्यता दिखलाई पड़ रही है। गन्ना, रुई, जूट इत्यादि लाभदायक फसलों के क्षेत्रफल में बिना कमी किये अन्न उत्पादन में वृद्धि के लिये आवश्यक है कि और अधिक तत्परता तथा सहयोग से काम लिया जाय। डा॰ राजेन्द्र प्रसाद ने सरकार के समक्ष अधिक अन्न उपजाओं' योजना को सफल बनाने के लिये एक नव-सूत्री कार्य क्रम पेश किया है। इस कार्य-क्रम पर उचित विचार देना चाहिये। अन्न उत्पादन के साथ ही वितरण की उचित व्यवस्था से हमारी समस्या हल होगी।

यू॰ पी॰ के प्रधान मंत्री पंडित पन्त।

हिन्दी का प्रवासी साहित्य

प्रवासियों की समस्या हल होने से राष्ट्र भाषा हिन्दी का प्रचार और भी बढ़ेगा

लेखक, प्रोफेसर शिवपूजनसहायजी

(१)

हिन्दी राष्ट्रभाषा और नागरी राष्ट्रलिपि हो गई है, हिन्दी और नागरी इसके योग्य है भी, किन्तु राष्ट्रभाषा की जवाबदेही बहुत भारी और बड़ी है, राष्ट्रभाषा का खजाना बहुत भरा पूरा होना चाहिए, दुनिया भर की जानकारियों के हासिल करने का जरिया उसे बनाना चाहिए, संसार में जो कुछ मानने योग्य है जो कुछ भी देखने सुनने कहने योग्य हैं,सबका ठीक ठीक विवरण और वर्णन उसमें मिलना चाहिए। यदि सब तरह का ज्ञान प्राप्त करने का मुख्य साधन वह न बन सकी सभी विषयों का ज्ञान प्रदान करने में वह सहायक न हुई, तो राष्ट्रभाषा की प्रतिष्ठा में बट्टा पड़ गया, अंग्रेजी भाषा के पास विश्वज्ञान है अतः उसकी व्यापकता भूमंडल के कई खंडो में है, उसके माध्यम से अनेक भाषाओं और साहित्यों का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, किन्तु यह गुण उसमें सदियों के परिश्रम से आया है, उस भाषा के हिमायती विद्वानों ने उसकी उन्नति और श्रीवृद्धि करने में अथक परिश्रम किया है, कितनों ही ने अपना सारा जीवन खपा दिया बहुतों ने त्याग भी खूब किया है, अनेकानेक वर्षों के लगातार प्रयत्न से ही वह अत्यन्त समर्थ और सर्वथा सम्पन्न भाषा मानी जाती है, अभी भी उसकी लकीर बड़ी करते जा रहें हैं।

राष्ट्रभाषा हिन्दी को भी वैसा ही प्रयास करना पड़ेगा, हिन्दी के प्रेमियों और हितैषियों को हमेंशा उसका भण्डार भरने में तत्पर रहना होगा, उसकी लिपी की सुगमता वैज्ञानिक दृष्टि से सिद्ध है, भाषा की सुबोधता भी सर्वसम्मत है उसके साहित्य की प्राचीनता और गंभीरता सम्पन्नता और व्यापकता भी राष्ट्रभाषा के सच्चे जानकारों की दृष्टि में असंदिग्ध है। फिर भी राष्ट्रभाषापद का गौरव इतना महान है, उस पद का उत्तरदायित्व ऐसा विशाल है कि उसकी रक्षा के लिए हिन्दवालों को तुरन्त सजग हो जाना चाहिए।

ऐसा कभी न समझना चाहिए। हिन्दीवाले सिर्फ राष्ट्रभाषा के लिए ही आन्दोलन करते हैं, पर हिन्दी को समृद्ध बनाने की चेष्टा नहीं करते, राष्ट्रभाषा हिन्दी को अभी पूरी तरह से राजाश्रय प्राप्त नहीं है तब भी उसको ज्ञान विज्ञान के साधनों से सम्पन्न करने में आज अनेक लेखक और प्रकाशक यथाशक्ति और यथासंभव लगे हैं। राष्ट्रभाषा की जिम्मेदारी हिन्दवाले खूब समझ रहे हैं और यथासाध्य उसकी पूर्ति में संलग्न भी हैं। जिम्मेदारी मिल जाने पर उसे संभालने की शक्ति भी स्वभावतः आ जाती है। उसके साहित्य की प्रगति को जो सूक्ष्मदर्शिता से निहारेंगे उन्हें यह बात ठीक जचेंगी।

इसी अवसर पर हम हिन्दीवालों को अपना घर टटोलना चाहिए न हमें अपने अभावों का लखो लेखा दुरुस्त करके उन्हें दूर करने में लगन के साथ जुट जाना चाहिये। हमारे अभावों में जो सबसे अधिक खलनेवाले हैं उन्हें सबसे पहले पूरा करना चाहिये, ऐसे ही अभावों में एक प्रवासी भारतवासी भाईयों के सम्बन्ध की सभी बातें जानने मालूम हो जाय। केवल उनकी राजनैतिक समस्यायें ही नहीं उनको सामाजिक स्थिति उनकी उपनिवेशों की भौगोलिक स्थिति उनके प्रवास का प्रबन्ध व क्रमबद्ध इतिहास उनकेआर्थिक विकास का प्रमाणिक विवरण उनकी संस्थाओंका पूर्ण परिचय उनके अभाव अभियोगों का और उनकी जाग्रति का पूरा व्योरा आदि आदि।

प्रवासी भाइयों के सम्बन्ध रखनेवाला जो कुछ साहित्य अबतक हिन्दी में उपलब्ध है वह बहुत अपर्याप्त है। यदि हम उनके विषय में सभी आवश्यक बातें सन्तोषजनक रीति से जानना चाहें तो हमे केवल हिन्दी के द्वारा भरपूर सामग्री नहीं मिल सकती, न तो उनके संबंध में सब तरह के आंकड़े हमारे पास है और न उनकी वर्तमान काल की वास्तविक स्थिति जानने का कोई प्रामाणिक साधन ही है। यह बात नहीं की ये चीजें दुर्लभ हैं और खोजने पर भी न मिल सकेगी। मिलने को तो सारी सामग्री मिल जायगी मगर कोई सच्ची लगन से खोज ढूंढ़ करनेवाला हो तब। हिन्दी के लेखकों और प्रकाशकों तथा पत्रकारों में जबतक अपने प्रवासी भाईयों के लिये सच्ची सहानुभूति न होगी तब तक हिन्दी पाठकों को प्रवासी भारतीयों की विविध समस्याओं को जानकारी नहीं हो सकती। हिन्दी के अखबारों और पत्र पत्रिकाओं में कभी कभी जो लेख या टिप्पणियाँ प्रवासी भारतियों के विषय में निकल जाती हैं केवल उतने ही से काम नहीं चल सकता। पत्रकारों अथवा सम्पादकों को सामूहिक रूप से इस दिशा में निरन्तर आन्दोलन करते रहने का संकल्प करना चाहिए। प्रकाशकों को इस विषय का साहित्य अच्छे अधिकारी

(शेष पृष्ठ १४ पर)

बम्बई प्रान्त में ज्यूट

उद्योगपतियों तथा सरकार को क्या करना चाहिए ?

लेखक, टी० ए० कुलकर्णी

राष्ट्र के सामने जूट की समस्या विवादग्रस्त रूप ग्रहण कर रही है। आज भारतीय दृष्टि से तथा राष्ट्र निर्माण के लिये जूट का क्या महत्व है यह किसी से छिपा नहीं है। इस लेख में लेखक ने बंबई प्रांत में जूट की समस्या पर प्रकाश डाला है, जो पठनीय तथा सामयिक है।

कपास, ज्यूट और सन थे तीन ऐसी वस्तुएँ हैं कि जिनसे निकलने वाली तंतुओं से मनुष्य की कितनी ही आवश्यक वस्तुएँ बनती हैं। भारतवर्ष में कपास और ज्यूट का विपुल उत्पादन होता था ; किन्तु भारतवर्ष का पाकिस्तान और हिन्द इन दो राष्ट्रों में विभाजन होने के पश्चात् हिंद में इनके उत्पादन सम्बन्धी ऐसी कठिन स्थिति आ गई है कि अच्चे श्रेणी की कपास और प्राय ७७ प्रतिशत ज्यूट पाकिस्तान में ही उत्पन्न होता है और हिंद युनियन में २३ प्रतिशत ज्यूट और कनिष्ट श्रेणी की कपास उत्पन्न होती है। इसके अतिरिक्त भारत वर्ष के विभाजन ने हिंद में ज्यूट के दूसरी समस्या को जन्म दिया है। पाकिस्तान में प्रायः ७७% ज्यूट उत्पन्न होता है परन्तु ज्यूट की निर्मित वस्तुएँ बनाने की सभी निर्माणियाँ हिंद में ही हैं। इसलिये हिंद की सभी निर्माणियां को कच्चे ज्यूट के लिये पाकिस्तान पर ही निर्भर रहना पड़ता है।

बंगाल में ज्यूट के पौधे दो जाति के पाए जाते हैं। प्रथम जाति में कोर कोरस कॅपसूलरीस नाम का पौधा होता है और दूसरी जाति में कोर कोरस ऑलिटोरियस नाम का पौधा होता है। दोनों पौधे के तंतु लगभग समान ही होते है। अन्तर केवल उनके लम्बाई में होता है। प्रथम जाति के तंतु अधिक लम्बे होते हैं तथा इस जाति के ज्यूट के पौधे ही बंगाल में प्रायः उत्पन्न होते हैं। अन्य सभी बातों में दोनों प्रकार के पौधे के तंतु एकसे ही होते है, उनमें सूक्ष्म भेद करना भी कठिन है। 'किन्तु पौधे के बीजकोषों में अन्तर है। प्रथम जाति के पौधों के बीजकोष गोलाकार (Roundish) होते हैं और दूसरी जाति के पौधों के बीजकोष लम्बाकार होते हैं। भारत के अन्य देशों में ज्यूट का उत्पादन करने के बहुत प्रयास किये गये थे। विशेषतः अमेरिका के अनेक आशावादी वैज्ञानिकों ने अमेरिका में ज्यूट का उत्पादन करने के बहुत प्रयत्न किये, परन्तु व्यापार के लिये पर्याप्त ज्यूट का उत्पादन करने में वे असफल सिद्ध हुये। स्वाभाविक ही लोगों की यह श्रद्धा हो गई कि बंगाल के सिवा अन्य स्थान पर ज्यूट का उत्पादन होना असम्भव है।

विभाजनोत्तर काल में हिंद की ज्यूट सम्बन्धी हुई क्षति की पूर्ति करना आवश्यक हो गया है। बंगाल के सिवा अन्य स्थानों पर ज्यूट की उत्पत्ति होना असंभव है, यह श्रद्धा हमारे मार्ग में एक रुकावट है। क्या हमने हमारे देश में दूसरे किसी प्रदेश में ज्यूट का उत्पादन करने का प्रयास किया है ? यदि किसी प्रदेश की जलवायु ज्यूट के उत्पत्ति के लिये पोषक है तो उस प्रदेश में ज्यूट की पर्याप्त मात्रा में उत्पत्ति करना असम्भव नहीं है।

तंतु निकालने की क्रिया के संबंध में मैं १९०३ से अन्वेषण कर रहा हूँ। मेरे अन्वेषण में एक ऐसा पौधा मेरे देखने में आया कि जिसमें और बंगाल में उत्पन्न होनेवाले ज्यूट के पौधे में विलक्षण साम्य है। मैंने इन जंगली पौधों को बंगाल के ज्यूट उत्पादकों को दिखाया और वे ज्यूट है यह पहचान सके। तत् पश्चात् मैंने इस पौधे को केन्द्रिय ज्यूट समिति (Central jute Committee) के टेक्नॉलॉजिकल संस्था के प्रयोग शाला में विश्लेषण के लिये भेजा इस संस्था के डायरेक्टर महाशय का यह अभिप्राय रहा कि इस पौधे का तंतु जुट के तंतु के समान ही है। उनके कथनानुसार यह जंगली पौधा अच्छे श्रेणी का ज्यूट दे सकता है। और इसके तंतु से ज्यूट के तंतु द्वारा जितनी भी वस्तुएँ बनाई जाती है वे सब अच्छी तरह से बन सकती हैं। इसी पौधे का एक नमूना मैंने बंगलोर की प्रयोगशाला में इस पौधे पर अनेक प्रयोग करने के पश्चात् उक्त धारणा सिद्ध हो गई। इस विषय में मैंने ईस्टर्न-एकानॉमिस्ट (Eastern Economist) में एक लेख भी लिखा था। उस लेख द्वारा मैं केन्द्रिय ज्यूट समिति के कृषि ज्यूटसमिति की कृषि-ज्यूट संशोधन संस्था के (Agricultural Jute Research Institute) डायरेक्टर साहब के सम्पर्क में आया इन महाशय ने मेरे पास से इस पौधे के [illegible] लेकर उनका सूक्ष्म परिक्षण किया। और वे भी अन्त में, मेरे लेख में प्रतिपादित किये मत से सहमत हुये।

यह पौधा टिलियासिया (Tiliaceae) नाम के वनस्पति की जाति का है। यह पांच से छः फीट की उंचाई तक बढ़ता है तथा इसके डंठल को पांढरे रंग के फूल आते हैं। यह पौधे जून माह के मध्य में भूमि पर उगते हैं और प्रायः चार मास पश्चात् उन्हें फूल आने लगते हैं। इसके पन्ने फीके हरे रंग के होते हैं

व्यवसाय मंत्री डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी।

और उनकी लम्बाई तीन इंच और चौड़ाई एक इंच होती है। नवम्बर के माह में इनके डंठल पर बीजकोष आते हैं। यह बीज अल्पावकाश में ही सूख कर भूमि पर गिर जाते हैं और पुनः जून में प्रथम वर्षा होते ही वह भूमिपृष्ठ पर उगते हैं। इन पौधों से तंतु निकालने की क्रिया भी बहुत सरल है। अपने यहाँ के कृषिकों को इस क्रिया के अपनाने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होगी। इन पौधों को फूल आते ही काटना चाहिए और उनकी छोटी छोटी गठरियाँ बाँध कर पानी में रख देना चाहिए। दो तीन सप्ताह तक पानी में रहने से उनका गोंद और हरित पदार्थ (Green Matter) निकल जाता है। पश्चात् इन गठरियों का पानी से निकल कर उनके पोने डंठलो से तंतु निकालने चाहिये। इनके तंतुओं का चमकिलापन कायम रखनेके लिये उनको बार बार पानी में धोने की आवश्यकता है।

इस पौधे की फसल के लिये विपुल वर्षा और उष्ण जल वायु आवश्यक है। कम से कम ६० इंच की वर्षा होनी चाहिये। जितनी अधिक वर्षा होगी उतनी अधिक पौधे की उंचाई होगी एवं उतना ही अधिक लम्बा, उनका तंतु होगा। चावल के फसल के लिये जिस प्रकार की जलवायु आवश्यक है ठीक उसी प्रकार की जलवायु में इसपौधेकी अच्छी फसल हो सकती है। बम्बई प्रान्त में दक्षिण के चार जिलों में इस प्रकार की जल-वायू पाई जाती है। विशेषतः ठाना, कुलाबा, रत्नागिरी, और उत्तर कन्नड में वर्षा भी विपुल होती है और जलवायु भी युक्त है। इस प्रदेश में चावल की भूमि पर ज्यूट का अच्छा उत्पादन हो सकता है परन्तु इससे चावल की उत्पति कम होगी। इस प्रदेश में चावल ही प्रधान खाद्य है, और ज्यूट के उत्पादन से चावल की कमी हो जायगी। अतः पहाड़ियों की ढालों पर तथा वार कास नाम से पहचाने जाने वाली भूमि पर ज्यूट की उत्पति करनी चाहिये। इस प्रदेश में

(शेष पृष्ठ १४ पर)

पाकिस्तानी बंगाल में जूट की खेती करने वाले किसान।

चकबन्दी की आवश्यकता क्यों है?

आजकी कृषि-उन्नति की यह भी एक सीढ़ी है

लेखक, श्री चन्द्रमा लाल श्रीवास्तव एम० ए०

आजकल खेती की उन्नति की अनेक योजनायें बन रही हैं। यदि वह कार्य रूप में परिणित हो जायें तो किसानों की निर्धनता दूर हो जाये। इस लेख में किसानों के लिये चकबन्दी का महत्व बतलाया गया है। लेख अत्यन्त सामयिक और उपयोगी है।

आज हमारे किसानों की समस्याएँ अनेक हैं। पैसे की कमी है दरिद्रता का राज्य है तथा सिंचाई की दुर्व्यवस्था है। इस वर्तमान दुर्दशा के मुख्य कारण दो हैं। पहिला जमींदारी प्रथा; दूसरा है खेतों का तितर-बितर तथा आकार में छोटा होना। जमीदारी प्रथा ने किसान को अपने खेतों के प्रति उदासीन बना दिया है। अपने खेतों के स्थायी मालिक न होने के कारण वह अपने खेतों में हृदय से काम नहीं करता है बहुधा उसके कृषि संबंधी कार्य परम्परा को निभाने के लिये ही होते हैं। सन्तोष इतना ही है कि इस प्रथा का अन्त हो रहा है।परन्तु इस प्रथा का अन्त हो रहा है। परन्तु इस प्रथा को उन्मूलन से ही कोई विशेष अन्तर नहीं आने वाला हैं यदि दूसरी समस्या का जो जमींदारी से भी अधिक अहितकारी है हल निकाला गया। दूसरी समस्या खेतों का तितर बितर होना है। आज यह समस्या ग्राम के कई समस्याओं की कननी बन रही है। प्रतिदिन मार भगड़ा, पारस्परिक वैमनस्य तथा उत्पादन की महान् कमी इसी समस्या के कारण हैं इस समस्या का एक मात्र हल चकबन्दी है। चकबन्दी किस अधार पर हो तथा इसकी क्या उपयोगिता होगी, हम आज इसी पर विचार करेंगे।

प्राचीन काल में हमारी कृषि एकत्रित तथा समूहिक होती थी न तो हमारे खेत इतने छोटे थे न इतने तितर बितर ही थे। खेतों की वर्तमान दुर्दशन पिछले २०० वर्षों से हुई है। प्रसिद्ध अर्थ शास्त्री डाक्टर मन्न जिन्होंने दक्षिणी भारत में कृषि सम्बन्धी अनेक बातों की खोज की है, बतलाया है कि १७७१ में खेतों का औसत क्षेत्रफल ४० एकड़ था परन्तु १९१५ तक उन्हीं खेतों का क्षेत्रफल घटते घटते केवल सात रह गया जिसमें से लगभग ६००% खेतों का क्षेत्रफल तो अब केवल तीन ही एकड़ रह गया है यदि औसत क्षेत्रफल चार एकड़ भी रह गया हो तो हमें सन्तोष रहता परन्तु वास्तविक स्थिति तो इससे भी अधिक सोचनीय है हमारे खेत कितने छोटे हो गये हैं, इसका आभास नीचे लिखे आंकड़ों से मिल सकता है। दक्षिणी भारत में ५८% खेत ऐसे हैं जिनका क्षेत्रफल एकड़ से भी कम है २५% खेत तो ऐसे हैं जिनका औसत् क्षेत्रफल ³⁄₄ एकड़ से भी कम हैं तथा २५% खेत ऐसे निकलेंगे जिनका औसत् क्षेत्रफल ³⁄₄ विस्वा से भी कम है निकलेगा। उत्तरी भारत में भी केवल पंजाब को छोड़कर लगभग सभी प्रान्तों की यही दुर्दशा है। संयुक्त प्रान्त तथा बंगाल की दशा तो और भी अधिक शोचनीय है। वहां पर लगभग ८०% खेत ऐसे मिलेंगे जिनका रकबा केवल कुछ विस्वांसी ही में आंका जा सकता है। एकड़ के बराबर क्षेत्रफल रखने वाले खेत तो शायद ही मिलेंगे।

हमारी दशा ऐसी क्यों हुई

प्रश्न उठता है हमारी दशा ऐसी क्यों हुई।कौन कौन से ऐसे कारण आये जन्होंने हमें इस दशा को पहुँचा दिया? कारण अनेक हैं परन्तु सबसे मुख्य कारण हमारे पैत्रिक संम्पत्ति वितरण का कानून है हमारे देश में हिन्दू मुसलमान दोनों सम्प्रदायों में पैत्रिक सम्पत्ति में प्रत्येक लड़के का बराबर का हिस्सा होता है। यह कानून प्राचीन समय के लिये तो बहुत ही उयुक्त थी जब की हमारे यहाँ आजिविका का एक मात्र सहारा कृषि ही था और लोग संयुक्त परिवार में रहना पसन्द करते थे। परन्तु भाग्य ने पलटा खाया। पश्चिमी सभ्यता तथा संस्कृति का ऐसा प्रमान पड़ा कि हम व्यक्तिगत परिवार ही में अपना कुशल समझने लगे। फल बड़ा ही बुरा हुआ। खेत बटने लगें और यह वभाजन बराबर जारी रहा इस विरोध में एक भी कानून न पास हो सका। परन्तु इसका सारा दोष हम इसी कानून के ऊपर ही नहीं मढ़ सकते। विदेशी राज्य ने हमारे घरेलू उद्योग-धन्धों को नष्ट कर दिया तथा दूसरी ओर आबादी बढ़ती गई। जीविका का कोई दूसरा उपाय न देखकर लोग भूमि ही को अधिक महत्व देने लगे और फल यह हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति कुछ न कुछ भूमि का मालिक बनना ही श्रेय कर समझा। इससे बटवारे की प्रणाली को काफी प्रोत्साहन मिला। जैथार एवं वेरी के शब्दों में हमारे खेतों की वर्तमान दुदशा के अनेक कारण हैं। "आबादी में बढ़ती उद्योग धन्धों की कमी, संयुक्त पारिवारिक जीवन की अवहेलना तथा पैत्रिक - सम्पत्ति - वितरण-कानून खेतों के क्षेत्रफल को इतना कम करने में इन सभी का पर्याप्त हाथ है"

इसका कुपरिणाम

यदि आप किसी खेतिहार से इस इस सम्बन्ध में बातें करें तो सांधारणतया आपको यह उत्तर मिलेगा कि खेतों के तितर-बितर होने से काफी लाभ रहता है क्योंकि भिन्न-भिन्न तरह की मिट्टी मिल जाती है जिसके अभाव में भिन्न भिन्न फसलों की खेती नहीं हो सकती इस कथन में कुछ तथ्या तो अवश्य है परन्तु इस थोड़े से लाभ के लिये हमें काफी हानि उठानी पड़ती है जिन लोगों को गावों में रहने का अवसर मिला होगा या जिनका सम्बन्ध कृषि-व्यवसाय से किसी भी तरह का रहा होगा, उन्हें भलीभांति अनुभव होगा कि इस समस्या ने ग्रामीण जीवन को कितना नारकीय बना डाला है। आप किसी भी समस्या का विवेचना करने बैठे, मूल में यही समस्या आती है। सिंचाई को लीजिये एक किसान को सींचना तो केवल चार एकड़ है परन्तु उसके खेत गांव के चारों सिवानों में हैं। निश्चय है उसे ग्राम के चारों ओर की सिंचाई के साधनों पर आधिपत्य जमाना आवश्यक है। फल यह होगा कि सिंचाई के दिनों में कुछ जर्मान तो खून से ही सिंच जाती है जरा आर्थिक हानियों पर भी दृष्टिपात कीजिये। सिंचाई, रक्षा तथा जर्मान तैयारी के लिये काफी पैसा खर्च करना पड़ता है। यदि गांव के पश्चिम ओर उनका एक भी खेत है चाहे उसका

(शेष पृष्ठ १४ पर)

बौद्धधर्म के अनुयाई एकएटैलियन व द्धौभिक्षु।

सरिता के किनारे

लेखक, श्री भरत व्यास

आज सरिता के किनारे-फूल बन कर खिल गया मैं!
बादलों को भेद, झीनी-
झूमती जब किरण छूटी,
रूप-यौवन की कपोलों पर
प्रथम नवरेख फूटी
विहग ने मधुगान गाया
मन गई मधु-वीण रूठी
ओस भर अंजलि चढ़ाई
आज कलियों ने अनूठी
हिल गया हीरक-जड़ित संसार सारा; हिल गया मैं!!
मूक मानव बिन्दु केवल,
लहर, बहता एक पानी
हाय! कितनी बार जाना
विश्व है कोरी कहानी
जीत पर हँसती पराजय
बात है बूढ़ी, पुरानी
दो क्षणों का दिव्य-जीवन,
दो घड़ी की ज़िंदगानी
सांध्य-तम के रजकणों में धूल बनकर मिल गया मैं!!!

एकांकी नाटक

ग्रेजुएट!

लेखक, श्री वंशीलाल पुन्डीर एम० ए०

—०—

आजकल पढ़ने लिखने का क्या मूल्य है ? प्रत्येक वर्ष हजारों ग्रेजुएट विश्व विद्यालयों से निकलते हैं, किंतु उनका भावी जीवन अंधकारमय दिखाई देता है ? इस सुन्दर एकांकी में ग्रेजुएट की सामयिक जीवन समस्या का चित्रण किया गया है, जो अनुभूति तथा वास्तविकता से पूर्ण है। एकांकी पठनीय है।

सतीश, अरे क्या सब जगह यही हाल है ?

पात्र

सतीश— बी० ए० सेकंड इयर का छात्र.

कैलाश— बी० ए० फर्स्ट इयर का छात्र.

माधोराम— सतीश के पिता.

दृश्य १

[स्थान— लॉज का एक कमरा जो कि मामूली ढंग से सजा हुआ है। कुछ किताबें आलमारी में बिखरी हुई हैं और कुछ किताबें व कापियाँ मेज पर पड़ी हैं। एक ओर सन्दूक रखे हुये हैं और एक ओर मच्छरदानी कोने में रखी है। सतीश कुर्सी पर बैठा हुआ एक किताब पढ़ रहा है। कमरे में उसका मित्र कैलाश प्रवेश करता है]

कैलाश— अरे भाई ! ये भी कोई पढ़ने का वक्त है, घंटे आध घंटे तो कम से कम टहल जाया करो। अपनी आंखों को खराब करोगे और कुछ नहीं।

सतीश— नहीं, घूमने तो मैं रोज ही जाता हूँ पर आज सोच रहा था कि इस अध्याय को खत्म करके ही जाऊँगा अब जाने ही वाला था कि तुम आ गये।

कैलाश— अच्छा खैर, ऐसा तो तुम कहोगे ही पर ये तो बताओ कि कैसी तैयारियां हो रही हैं। इम्तहान तो अब सिर पर आ ही गये हैं।

सतीश— क्या बताऊँ भाई ! इम्तहान से अधिक चिन्ता तो मुझे भविष्य की है। इम्तहान में तो किसी-न-किसी तरह पास हो जाऊँगा पर आगे क्या होगा ? जमाना खराब है। कहीं छोटी मोटी नौकरी का भी ढंग नहीं दिखाई दे रहा है।

कैलाश—हाँ भाई, अपने राम से इस बला से एक दो साल दूर हैं। जब पड़ेगी तब ही फिक्र करूंगा। अभी तो कालेज लाइफ का आनन्द लूट लूँ।

सतीश— तुम तो साल दो साल मौज कर लो। मैं तो साल भर पहले से ही अखबारों के वान्टेड देख रहा हूँ पर कहीं रंग जमता हुआ दिखाई नहीं दे रहा है।

कैलाश— अरे भाई ! बेकार वान्टेड के पीछे पड़े हो, आजकल तो सिफारिस का जमाना है। अगर कहीं ऐप्रोच हैं तो अच्छी नौकरी मिल जायेगी वरना ठोकर खाते फिरोगे।

सतीश— बस इसी डर से तो मरा जा रहा हूँ। आदतें खराब हो गई हैं, जैसा-तैसा काम करने की तबीयत नहीं करती। अच्छी नौकरियों में कम्पटीशन पीछे पड़ा है।

कैलाश— मैं तो साल दो साल तक बिलकुल फिक्र नहीं करना चाहता हूँ और इस गम से दूर रहना चाहता हूँ। कालेज लाइफ के दो साल अच्छी तरह बिताने का प्रयत्न करूंगा।

सतीश— तुम तो ठीक हो पर मैं जिन अरमानों को लेकर कालेज में आया था वे आज छिन्न-भिन्न हो गये हैं। बड़ी मुश्किल से भरती हुआ वरना आजकल भरती होने में कितनी कठिनाइयां हैं। कालेजों और विश्व-विद्यालयों में भी सिफारिशों से भरतियाँ होती हैं। हॉस्टल में जगह नहीं मिली इसलिए बाहर ही रहना पड़ा और अन्त में भी हमें बेकारों की फौज में भरती होना पड़ रहा है। आह ! पहिले मैं कितने सुखद स्वप्न देखा करता था।

कैलाश— तुम तो आज निराशावादी बन गये हो। आज से पहिले तो बड़ी-बड़ी गप्पें हांका करते थे।

सतीश— उस समय जीवन के यथार्थ से पाला नहीं पड़ा था पर अब इस जीवन की कड़ुवाई बातों को समीप से देख रहा हूँ।

कैलाश— यह तो ठीक है पर आखिर इन बातों में माथापची करने से क्या फायदा ?

सतीश— पता नहीं तुम क्यों नहीं समझ रहे हो कि कितने ही जवानों का जीवन पढ़ाई के इस बुरे ढंग और समाज की विकृत व्यवस्था के कारण नष्ट हो रहे हैं। लोग पढ़-पढ़ कर दिमाग खपा रहे हैं पर अन्त में अच्छी तरह रहने सहने लायक रुपये भी नहीं मिल पाते। पढ़ाई शुरू करते वक्त सोचा था कि यह हूंगा और वह होगा। माँ-बाप के इतने रुपये खर्च करके यह शिक्षा प्राप्त की पर अन्त में क्या पाया ? दाल रोटी की समस्या उसी तरह मुँह बाये खड़ी है।

कैलाश— घबराओ मत मेरे दोस्त। हम नौजवान हिम्मत हारने वाले नहीं हैं। मुसीबतें कुछ दिनों तक अवश्य रहेंगी ही पर हम नये समाज की स्थापना करने में अवश्य सफल होंगे जहां बेकारी भूख, कंगाली और दुःख का नामोनिशान नहीं रहेगा।

❀ ❀ ❀

दृश्य २

[स्थान— माधोराम का मकान जो कि मामूली ढंग का है जिस तरह कि मध्यम श्रेणी के व्यक्ति का होता है। माधोराम एक कमरे में बैठे हैं। सतीश का प्रवेश]

सतीश— पिताजी प्रणाम।

मा०— खुश रहो बेटा। तू तो थोड़े दिन के लिये गया था पर इतने दिन कहाँ लगा दिये। रिज़ल्ट तो तेरे जाने के कुछ दिन बाद आ गया था।

स०— हाँ, रिजल्ट तो अच्छा ही रहा।

मा०— हाँ, तो अब आगे के संबंध में क्या सोचा है ? बस अब कहीं नौकरी के रंग ढंग देख। बहुत साल पढ़ चुका मैं तो अब दो तीन साल तक और खर्चा नहीं बर्दाश्त कर सकता। तेरे और छोटे भाइयों को भी पढ़ने के लिये खर्चा चाहिए।

स०— हां, मुझे तो इसकी स्वयं चिन्ता है पर क्या करूं आजकल जमाना बहुत नाजुक है। पढ़ने-लिखने वाले बहुत बढ़ गये हैं पर नौकरियाँ कम बढ़ी हैं इसलिये बेकारी दिन-ब-दिन बढ़ रही है। पढ़े लिखे व्यक्ति और कोई काम न करके सरकारी नौकरी की ओर ही देखते हैं।

मा०— हाँ, यह तो ठीक है पर इतने दिन बाहर रह तूने क्या किया ?

स०— मैं कई जगह के चक्कर काट चुका हूँ। कहीं नौकरी मिल रही है तो वेतन कम और काम अधिक है। कह बगैर सिफारिश के कोई दफ़्तर में नहीं घुसने देता है पर यहाँ हमारा सिफारिश करने वाला कौन है ! इसलिए निराश होकर लौट आया हूँ।

मा०— अखबारों में वान्टेड भी देखे हैं या नहीं। कहीं न कहीं कोई जगह तो अवश्य होगी।

स०—सब छान मारी हैं। एक जगह खाली होती है तो सैकड़ों मुझसे भी ज्यादा पढ़े-लिखे व्यक्ति अर्जियाँ दे देते हैं फिर मेरी कौन सुनता है ?

मा०— क्या सब जगह यही हाल है ?

स०— हां, मैं कई जगह देख चुका हूँ। जो कुछ सोचा था वह सब मिट्टी में

(शेष पृष्ठ १० पर)

सतीश—क्या बताऊँ भाई, इम्तहान से अधिक चिन्ता तो मुझे भविष्य की है

मैं भी भूमिधर बनूंगा !

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

मेरी गाड़ी बड़ी तेज रफ्तार से चल रही थी। जोरों की ठन्डी पड़ रही थी। गाड़ी में बड़ी भीड़ जमा हो गई थी। बड़ी मुसीबतों से आज लोग गाड़ी पर चढ़ सके। एक यात्री ने बड़े दुःख के साथ कहा न मालूम कब से अब गाड़ियों में सुविधा मिलेगी। अँग्रेजों के चले जाने के बाद भी अब तक कोई सुख सुविधा नहीं मिली। जिन चीजों को देखो उन चीजों की कमी ही कमी दिखाई पड़ती है। मुसीबतों का अन्त आता नहीं दिखाई दे रहा है। शहरों में रहना अब तो नर्क मालूम होता है। सड़ा गला अन्न खाने को मिलता है। जहाँ देखो वहाँ घूसखोरी हो रही है। कंट्रोल की चीजों ने हर आदमी को खुशामदखोर बना दिया है। बिना कुछ लालच पाये कोई भी काम नहीं करना चाहता। सप्लाई विभाग ने देश को गर्त में गिरा दिया। भ्रष्टाचार का अड्डा सप्लाई विभाग है। कंट्रोल से बनियों और सरकारी कर्मचारियों की बन आई। मध्यम श्रेणी के श्रमिकों और किसानों मजदूरों की मौत हो रही है। देश के कर्मचारियों का माथा सातवें आसमान पर चढ़ा रहता है। अंग्रेज गये। यह तो अच्छी बात है। लेकिन अब तक देश के शासकों में परिवर्तन नहीं आया। पंडित नेहरू की सरकार में लम्बी लम्बी तनख्वाहें लेते हैं। लेकिन नेहरू सरकार की जैसी आलोचना अपने घरों की कुर्सियों पर बैठ कर करते हैं। यह उनके बंगलों और घरों पर जाने से सुनने को मिलता है। घूस न लेने की जब बात चलती है तब झट से कर्मचारीगण कहते हैं। आपको मालूम नहीं मन्त्री लोग कितना वेतन पाते हैं? कैसे बंगले में बैठकर शासन चलाते हैं? साल के भीतर उनके मोटर बदल जाते हैं। मोटर का रंग फीका न होने पावे। इसका पूरा ध्यान रक्खा जाता है। हम गरीब कर्मचारी यदि घूस न लें तो अपना काम कैसे चला सकते हैं? सूट चाहिये। घड़ी का होना आवश्यक है। आवश्यकतानुसार मोटरबाईसिकिल का भी होना जरूरी ही है। सिनेमा जाना ही पड़ता है। घर पर इष्ट मित्रों का आना जाना लगा रहता है। इतना भारी खर्च सौ दो सौ रुपये मासिक में कैसे चल सकता है?

इस आलोचनाभरी बातों को मैं बड़े गौर से सुन रहा था। गांधी जी ने कहा था हिन्दुस्तान के प्रजातंत्र राज्य में राह चलते लोगों की बातों को भी सुनना होगा तभी सच्चा प्रजातंत्र स्थापित होगा।

राहगीरों की आलोचना बड़े महत्व की होती है। अनुभव की होती है। पार्टी पोलिटिक्स से दूर की होती है। ऊपर की आलोचना में जनता और सरकार की बातों का एक मार्मिक विवेचन है। अनुभव से हीन नहीं कहा जा सकता है। न यही कहकर ठुकराया जा सकता है यह तो अपनी पार्टी को बढ़ाने के लिये कहा जा रहा है। यहाँ तो अपनी मुसीबतों की वाणी बोल रही है। आत्मा की तड़पन है। एक बेचैनी है। सरकार को अपनी आँखें खोलने की सच्ची नेक सलाह है। देश को बनाने की तमन्ना है। अपने देश की अवस्था का चित्र है। मैं सोच में पड़ गया। गांधी जी एक ऐसे महान नेता थे। जो अपनी छोटी कमियों और भूलों को हिमालय ऐसी भूल कहकर स्वीकार करते थे। आज अपनी आलोचना सुनना लोग पसन्द करेंगे या प्रशंसा।

इतने में एक किसान बोल बैठा। चाहे जो हो। अंग्रेजों के जाने के बाद बहुत सुख मिला। मिलेगा। मेरी उम्र अब ६०, ६५ साल की हो रही है। इसी गोरखपुर स्टेशन पर जब आता था तो सैंकड़ों गोरी चमड़ी वालों को देखता था। इसी रेलवे में बड़ी बड़ी नौकरियों पर अंग्रेज नियुक्त किये गये थे। हर जिले में अंग्रेज कलक्टर होता था। पुलिस कप्तान अंग्रेज होता था। गाँव के थानों पर थानेदार और पुलिस वाले हम गाँव वालों को बहुत धमकाया करते थे। बेगार लेते थे। नाजायज काम लेते थे। जमींदारों का जैसा जुल्म होता था—यहाँ बैठे भाई खूब अच्छी तरह जानते हैं। सरकार की आलोचना ठीक है। लेकिन भाई इस थोड़े से वक्त में उन लोगों ने बहुत बड़ा काम किया। वर्षों की बुराई एक दिन में कैसे दूर होगी। फिर भी हमारे नेता हमारी उन्नति में लगे हैं। सरकारी पदों पर अब हमारे हिन्दुस्तानी भाई नियुक्त किये जाते हैं। हमारे जिले में अंग्रेज अफसर कहीं दिखाई नहीं पड़ते। हमारे भाई थोड़े दिन पहिले इन्हीं विदेशियों की हुकूमत में चलते थे, अब स्वयं शासक हैं। हमारे लड़के ही तो मालिक हैं। किसका लड़का नौजवानी में मस्तानापन नहीं दिखाता। हमारे बच्चों में नई हुकूमत आई है। नये नये पद पाये हैं। गर्मी शांत होते ही अपने घर की गिरना सम्भाल लेंगे। घूस-घास की बातें स्वप्न की बातें हो जावेंगी। धीरे धीरे सारी बुराइयों का अन्त होगा। हाँ यदि हमारे मन्त्री खराब होंगे तो हम अपने वोटों से बदल देंगे। चिन्ता नहीं। बालिग मताधिकार दिलाकर गांधी स्वर्गलोक गये हैं। आपने देखा अब गाँवों में कहीं भी जमींदार ज्यादती नहीं करते। बाबू, जब से जमींदारों ने 'भूमिधर' कानून की बातों को सुना है तब से उनकी नींद हराम हो गई है। हमारी सरकार ने कितना अच्छा कानून बनाया है। जो किसान अपने लगान का दस गुना लगान एक मुस्त देगा, उसका लगान हमेशा के लिये आधा हो जावेगा। अपनी जमीन का मालिक हो जावेगा। हम ज़ोतेंगे बोयेंगे अपने खेत के पूरे अर्थों में मालिक होंगे। हमारे सिर पर से हमेशा के लिये लड़ाई झगड़े का अन्त होगा। पटवारी महाराज की मुरही छुरी का चलना भी बन्द हो जावेगा। जमींदार से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं होगा। इतना सीधा-सादा कानून आज तक कभी बना ही नहीं था। खेतों के लिये जमींदारों ने कितने गाँवों को बर्बाद कर दिया। कितनों को फाँसी के तख्ते पर झुला दिया! बहू बेटियों की इज्जत बिगाड़ डाला। अब तो सब 'भूमिधर' होंगे। कोई ऊँच-नीच किसान नहीं होगा! आपने देखा कितना परिवर्तन हो गया। जिस दिन गाँव के भूमिधर बनकर अपना दल अपने खेत का स्वामी बनकर चलायेंगे; उस दिन से जमीन की उपजाऊ शक्ति भी दूनी हो जावेगी।

अब हमारे ऊपर किसी बाहरी शक्ति का बल प्रयोग नहीं होगा। जब तक दुनियां रहेगी। और किसानों का हल बैल चलेगा तब तक हम लोगों को हमेशा सरकार चलाने के लिये कुछ न कुछ लगान देना होगा। अब तक किसी दल ने यह घोषणा तो नहीं किया कि मेरा शासन होने पर किसानों से लगान नहीं लेंगे। लगान तो हर सूरत में हमें देना है और सबको श्रम करना है, फिर भूमिधर बनकर हम शक्तिमय तरीकों से इस सड़ी गली व्यवस्था को क्यों न फेक दें। बिना खून खराबी और अशान्ति पैदा किये कुछ पैसों को दे देने से समाज में अमूल्य परिवर्तन हो जावेगा। इससे बढ़कर और व्यवस्था मुझे अच्छा नहीं लग रहा है। भाई आलोचना करना सरल होता है लेकिन व्यवस्था बना कर कार्य करना दुष्कर होता है। अभी तो हमको सरकार के काम में पूरा-पूरा सहयोग करके चलाना है। मौका देना चाहिये।

दोनों बातों को मैंने फिर एक नये ढंग से सोचना प्रारम्भ किया। दोनों की अपनी स्वतन्त्र रायें थी। समाज की उलझने थीं। देश की उन्नति अवनति की विचार धारायें काम कर रही थीं। दोनों की बातों से सत्य का पुट था। 'भूमिधर' की एक गहरी तमन्ना थी। देश की नई विचार धारा पर सोचने की प्रवृत्ति थी।

हमारा रंग-मंच

"दिल्लगी" ग्राम्य जीवन की दिल्लगी है

निर्माता कारदार की कला का क्या यही नमूना है ?

लेखक, श्री सत्यप्रकाश शर्मा

समय प्राकृतिक चाल के अनुसार अपनी गति के आगे बढ़ रहा है। इस बदलते हुए समय और परिस्थितियों में मानव स्वभाव तथा मानव के मस्तिष्क में भी परिवर्तन होना ही चाहिये। समय बदला, गुलामी का सूर्य अस्त होकर स्वाधीनता के सूर्य के दर्शन हुए। किन्तु हमारे अधिकांश सिनेनिर्माता व दिग्दर्शक अपनी उसी पुरानी लकीर पर चल रहे हैं जो न सिर्फ राष्ट्र के लिये घातक है वरन् मानवता, सभ्यता और संस्कृति पर करारी चोट है। इन पिछड़े हुए लकीर के फकीर निर्माता व दिग्दर्शकों में एक श्री कारदार भी हैं। जिन्होंने अपने फिल्मी जीवन में एक भी ऐसे चित्र का निर्माण नहीं किया जो राष्ट्रीय, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में प्रेरणा व जाग्रति प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुआ हो। यों तो कारदार के सभी चित्रों को कला और परिस्थितियों की कसौटी ने असफल सिद्ध कर दिया है। इतना होते हुए भी श्री कारदार अपनी उस पुरानी लकीर को न छोड़ सके और उन्होंने "दिल्लगी' का निर्माण करके भारतीय ग्रामीणता की ऐसी दिल्लगी उड़ाई है जिसके लिये श्री कारदार को ग्रामीण जनता कभी क्षमा नहीं कर सकती। क्या श्री कारदार को पता नहीं है कि भारत का सच्चा स्वरूप शहरों के घृणित और संकुचित वातावरण में न होकर गाँव के स्वच्छ और सुन्दर वायु मन्डल में है। अतः ग्रामीण सभ्यता का मजाक उड़ाना राष्ट्र का मजाक उड़ाना है, और राष्ट्र का मज़ाक उड़ाना राष्ट्रीय अपराध है, खुले शब्दों में राष्ट्र के प्रति ग़द्दारी है। समझ में नहीं आता कि सरकारी सैन्सर बोर्ड ऐसे निम्नकोटि के चित्रों को प्रदर्शित करने के लिये कैसे और क्यों स्वीकृति देता है। दिल्लगी का कथानक एक ऐसा बेढंगा और बेसुरा राग अलापता है जिसका आधार पुरातन समय से लेकर आज तक के सभ्य जीवन की किसी भी घटित घटना पर आधारित नहीं हो सकता। भारतीय ग्रामीण वालायें स्वच्छन्द, हंसमुख और चंचल अवश्य होती हैं किन्तु कोई भी अजनबी उन्हें अपनी वासना वृत्ति को शान्त करने के लिये कदापि आकर्षित नहीं कर सकता।
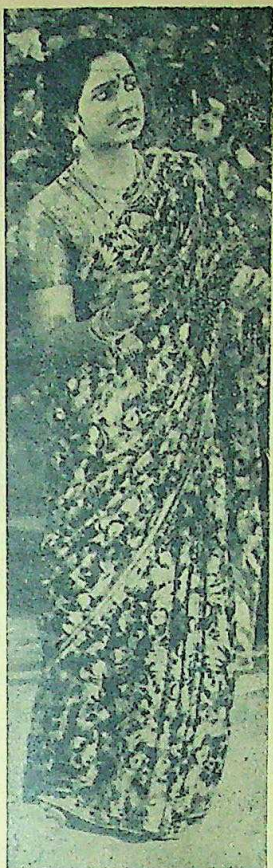
प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री मुमताज शांति यही हैं।

दिल्लगी का कथानक एक गाँव से आरम्भ होता है। एक ग्रामीण युवक श्याम अपनी भावज से लड़कर गाँव छोड़ कर दूसरे गाँव में जाता है। वहाँ उसकी सर्व प्रथम भेंट गाँव की कुछ अल्हड़ लड़कियों के समूह से होती है। उन लड़कियों के समूह ने श्याम के साथ प्रथम बहुत ही उदंड व्यवहार किया। इस उदंडता में श्याम के पैर में चोट आ गई। श्याम की चोट से उस समूह की एक लड़की इतनी प्रभावित हुई कि वह उसे अपने घर ले गई और उसने अपने पिता से नौकर रखने की सिफ़ारिश की। पिताने बेटी की सिफ़ारिश मान कर श्याम को अपने खेतों की रखवाली के लिये नौकर रख लिया। ज्यों ज्यों दिन बीतते गये श्याम और मालिक की बेटी एक दूसरे की ओर अधिक आकर्षित होने लगे। आकर्षण इतना बढ़ा कि ग्रामीण वाला रात के अन्धेरे में समाज, सभ्यता और शर्म हया को ताक में रख कर खेत पर श्याम से मुलाकात करने लगी। घटनाओं का क्रम बदला और इस प्रेम के नाटक का भेद पिता को मालूम हुआ। पिता जो गाँव का प्रमुख व्यक्ति था, ने श्याम को जेल भेजवा दिया। लड़की की शादी एक अन्य व्यक्ति के साथ कर दी। विवाह के पश्चात भी लड़की स्वयं को एक पतिव्रता स्त्री नहीं बन सकी। श्याम जेल से छूटा। उसे जब मालूम हुआ तो वह उस गाँव में पहुँचा जहाँ उसकी प्रेमिका थी। रात के प्रेमिका गांव के बाहर एक स्थान पर श्याम से मिलती है। यहीं कहानी का दुखद अन्त करते हुये लेखक ने प्रेमी औरो प्रेमिका दोनो को मौत की भट्टी में झोंक कर उनकी लाशों को गाँव की कहाँ से मिलेगा ? रोनी को अन्न की धूल में पड़ा हुआ दिखाई दिया है। यह है वह कहानी जिसको श्री कारदार ने अपनी नई खोज कहा है और इस नई खोज के रचयिता हैं श्री अजीम वैजादपुरी। लेखक ने इस बेढंगी कहानी को लिख कर राष्ट्र, समाज, साहित्य और प्राचीन ग्राम्य गौरव को धक्का पहुँचाया है। दिल्लगी की कहानी से प्रतीत होता है कि लेखक ने कभी गाँवों की स्थिति का अध्ययन किया ही नहीं, लेखक को पता ही नहीं कि गाँव की एक अल्हड़, स्वतन्त्र, स्वच्छन्द और अनपढ़ शहर की पढ़ी लिखी वालाओं से कहीं अधिक नैतिक और चारित्रिक दृढ़ता रखती हैं। यदि लेखक ने ग्रामीण सभ्यता और ग्रामीण वालाओं की हृदय भावनाओं का अध्ययन एक ग्रामीण के दृष्टिकोण से किया होता तो निश्चय ही अज़ीम साहब ग्रामीण युवती को वासना की पुतली सिद्ध करने का साहस कर ही नहीं पाते। वस्तुस्थिति का अध्ययन किये बिना "दिल्लगी" की कहानी लिख कर अज़ीम साहब ने गाँवों को लैला-मजनू का उत्पादन केन्द्र सिद्ध करने का असफल प्रयत्न किया है। अतः कहानी लेखक भी उतने ही बड़े अपराधी हैं जितने कि उनकी कहानी का चित्र बनाने वाले निर्माता व दिग्दर्शक श्री कारदार।

चित्र के सम्वाद निम्न कोटि के हैं। जिनमें न कोई रोचकता है और न कोई प्रभावही। गीत भी ऐसे निम्नकोटि के है जितने कि आज तक किसी अन्याचित्र में नहीं रहे। चित्र के गीत श्री शकील वदायूंनी के द्वारा लिखे गये हैं। चित्र के गीतों से प्रगट होता है कि शकील साहब अपनी अरमानों की दुनियां को गली कूंचो में रेवड़ी की तरह बाँटते फिरते हैं। शकील साहब की अपनी जिन्दगी इतनी सस्ती हो तो हो जो हर समय किसी पर जान देने की तन्ना रखते हों। किन्तु भारत की ३८ करोड़ आबादी में तलाश कर के देखा जाये तो शायद ही कोई जिन्दगी को इस छोटी चीज़ के लिये मौत में बदलने को तैयार हो। सारांश में गीत बेढंगे और अप्राकृतिक हैं। इन अप्राकृतिक गीतों को नौशाद का संगीत निर्देशन भी सफल, रोचक और प्रभावकारी नहीं बना सका।

'दिल्लगी' फिल्म की प्रमुख अभिनेत्री सुरैया।

चित्र की प्रधान भूमिका में श्याम और सुरैया ने कार्य किया है। श्याम ने मजनू बनने का वैसा ही पूरा प्रयत्न किया है जैसा कि सुरैया ने लैला का। किन्तु दोनों ही सफलता से दूर रहे हैं।

सारांश में "दिल्लगी" स्वयं कारदार की कला की दिल्लगी है।

(पृष्ठ ७ के आगे)

मिल गया है। सर्द आहें भरने के अलावा और कुछ नहीं है।

मा०— तो आखिर में क्या सोचा है?

स०— बस एक जगह प्रबन्ध किया है। भी तो पद और वेतन भी कम है पर अगर भाग्य चमक सके तो, कभी न कभी तरक्की कर ही लूँगा।

मा०— (प्रसन्नता से) तो क्या नौकरी है?

स०— कलार्की और ६०) मासिक वेतन।

मा०— (उदास भाव से) हैं क्लार्की! क्या इसी पद के लिये इतने रुपये खर्च करके तुझे पढ़ाया था?

(सब चले जाते हैं)

पटा क्षेप.

प्रेषक :—

प्रभात अभिपद (सिंडी केट)
वर्धा

शरीर में खून ही की कमी पान्डु रोग की जड़ है।

हमारी अनुभूत दवा शरीर का पीलापन बदहजमी खासी बोखार को दूर कर शरीर में शुद्ध रक्त संचालन करता है। ३१ दिन के सेवन से जीवन से निराश रोगी भी सर्वदा के लिये निरोग हो जाता है, एक बार परीक्षा कर देखें। कीमत पूरा खोराक ६) आधा ४) नमूना के लिये ३) पेशगी १) आने पर ही दवा भेजी जाती है, बिना १) पेशगी मिले दवा नहीं भेजी जायेगी।

श्री० विष्णु आयुर्वेद भवन
पो० वारसलीगंज (गया)

डाक्टर बनिये

थोड़े पढ़े लिखे भी घर बैठे होम्योपैथी, बायोकेमिस्ट्री, प्राकृतिक चिकित्सा, जल चिकित्सा, वायु चिकित्सा तथा सूर्य चिकित्सा के डाक्टर बन सकते हैं। नियमावली मुफ़्त मँगायें।

इंटर नेशनल इंस्टीट्यूट रजिस्टर्ड
अलीगढ़

सम्पादक के नाम चिट्ठियां

एल० टी० में हिन्दी पुस्तकें

संयुक्तप्रात की सरकारी भाषा हिंदी स्वीकृत हो चुकी है। सरकारी विभागों में भी हिन्दी में काम होने लगा है। प्रांतीय शिक्षा विभाग ने भी अपना समस्त कार्य हिन्दी में करना स्वीकृत कर लिया है। इंटरमीजिएट तथा ट्रेनिंग कालिजों में शिक्षा का माध्यम हिन्दी स्वीकृत हो चुका है। सरकार कि ओर से यह निश्चय हो चुका है कि ट्रेनिङ्ग कालेजों के विद्यार्थी अपने प्रश्न-पत्र हिन्दी तथा अँग्रेजी दोनों भाषाओं में कर सकते हैं। ये ही नहीं सरकार की ओर से इस प्रकार का कोई प्रतिबन्ध नहीं है कि कोरी में जो पुस्तकें स्वीकार की जायें वह केवल अँग्रेजी में ही हों। यदि किसी विषय की उच्चकोटि की पुस्तक हिन्दी में उपलब्ध हो तो वह भी विषय के अनुसार कोर्स में रक्खी जा सकती हैं। किन्तु काम इसके विपरीत हो रहा है। पिछले दिनों सरकारी ट्रेनिङ्ग कालेजों में एल० टी० में पढ़ाई जाने वाली पुस्तकों के चुनाव के लिए एक कमेटी बैठाली गई थी। कमेटी ने कोर्स के लिए जितनी भी पुस्तकें स्वीकृत की वे सभी अँग्रेजी में हैं। कहा जाता है कि कमेटी के एक सदस्य का ध्यान जब उनके एक सहकारी ने इस ओर आकर्षित किया कि हिन्दी में भी शिक्षा मनोविज्ञान तथा अन्यान्य विषयों की कई अच्छी पुस्तकें हैं। इसलिए उन्हें भी कोर्स में रखना चाहिए। इसपर कमेटी के एक सदस्य ने बड़े आश्चर्य से कहा—अच्छा, क्या हिन्दी में भी ऐसी पुस्तकें हैं। मुझे तो नहीं मालूम। सदस्य ने ऐसा कहकर हिन्दी की पुस्तकों की ओर पूरी उदासीनता दिखलाई। कहने का तात्पर्य ये है कि यदि उस कमेटी में एक आध सदस्य हिन्दी का जानकार होता तो सम्भवतः जान बूझ कर कोर्स के उपयुक्त हिन्दी की उच्चकोटि के पुस्तकों की उपेक्षा करना शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर के लिए यह समझने की बात है अनभिज्ञता के कारण सरकार द्वारा स्वीकृत मूल सिद्धान्तों की हत्या कम से कम उनके द्वारा कदापि नहीं होना चाहिए जो स्वयं सरकारी नौकर हैं। क्या शिक्षा विभाग के प्रधान अधिनारी भविष्य में इस ओर सजग रहने का प्रयत्न करेंगे।

—गंगाधर शास्त्री

❀ ❀ ❀

'साहित्य वाचस्पति' की उपाधि

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रतिवर्ष हिन्दी के स्वीकृत विद्वानों तथा अधिकृत साहित्य सेवियों को साहित्य वाचस्पति के उपाधि से विभूषित करता है। इस वर्ष भी कई विद्वानों को साहित्य वाचस्पति की उपाधि दी गई है। हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवियित्री श्रीमती महादेवी वर्मा को भी साहित्य वाचस्पति की लकब दी गई है। हिन्दी में श्रीमती वर्मा प्रथम महिला साहित्य सेविका हैं जिनको प्रथम बार यह प्रथम लकब मिली है। किन्तु यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि साहित्य वाचस्पति से महान लकब को उन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन के पास उलटे पाँव वापस कर दिया है। अब तक इस प्रकार की घटना सम्मेलन के इतिहास में पहले कभी नहीं हुई। हिन्दी साहित्य सेवियों का सम्मेलन के प्रति कितना अनुराग-प्रेम है, साथ ही उनके हृदय में कितनी प्रतिष्ठा है, उसका यह ज्वलन्त उदाहरण है।

—प्रेम

बस्ती—श्री ज्योतिलाल पटवारी हाकिम परगना बाँसी ने कोइरी महन्थ के पक्की सीर के खेतों का गलत इन्दराज करने के अपराध में मुअत्तल कर दिया है। कागज दाखिला के समय किसानों से कुछ नाजायज रकम पा कर से ५० बीघे की जमीन पर नाम लिख दिया। गाँव सभा ने इस अन्यायपूर्ण कार्य से असन्तोष प्रकट किया है और जिलाधीश महोदय से उचित कार्यवाही करने के लिये कहा है।

श्रीमान जिलाधीश कैलाशचन्द्र मित्तल की बुद्धिमत्ता से अब तक भूमिधर कोष में लगभग ३० लाख रूपया जमा हो गया है। जैसा गरीब और हर मामले में अछूत जिला है उस दृष्टि से 'भूमिधर, कोष में काफी धन थोड़े समय में जमा हो गया। श्रीमान जिलाधीश महोदय छोटे बड़े सभी श्रेणी के लोगों से मिलकर 'भूमिधर' कोष में काफी रुपया जमा करा लेने की चेष्टा कर रहे हैं। आप यहाँ के स्थानीय कार्यकर्ताओं से बड़ी मुहब्बत से पेश आकर कार्य कर रहे हैं। जिले के कांग्रेस कार्यकर्ताओं से आपका बहुत अच्छा सम्बन्ध चल रहा है। आपके सहयोग और आपसी सम्बन्ध से जिले में नई सान आगई है।

जिले में अब तक गरीबों को और मध्यम श्रेणी के लोगों को सीमेन्ट नहीं मिल रही थी। लेकिन जब से जिलाधीश महोदय के हाथ में प्रबन्ध आ गया है तब से सब लोगों को कुछ न कुछ सीमेंट मिलने लगी है। सीमेंट मिलने का अच्छा प्रबन्ध जिला सप्लाई अफसर के जिम्मे कर दिया है।

सम्वाददाता

सचित्र साप्ताहिक 'देशदूत'

संवाददाताओं से निवेदन

संयुक्तप्रांत, मध्यप्रांत, मध्य भारत तथा राजपूताने के संवाद भेजनेवालों से निवेदन है कि वह अपने संवाद संक्षिप्तरूप में ही भेजने का कष्ट करें।

संपादक 'देशदूत'

स्वास्थ्य और व्यायाम

[सों]ठ—उपयोगी औषधि [और] अनेक रोगों का उपयोगी उपचार

लेखक, श्री रमेश बेदी
[हि]मालय हर्वलइंस्टिट्यूट, हरिद्वार

अच्छी सौंठ लेकर पीस लें और कपड़े [से] छान लें। इसमें समान भाग गुड़ और [श]हद तथा गौ का घी मिला कर चिकने [ब]रतन में भर लें। ढक्कन को अच्छी [त]रह बन्द करके धान के ढेर में दबा दें। [ए]क महीने के बाद निकाल कर शुद्ध [श]रीर वाला पुरुष पुण्य दिन में प्रयोग [आ]रम्भ करे। रोज़ एक एक तोला [ब]ढ़ाता हुआ एक सप्ताह तक इसे चाटता [र]हे। आठवें दिन से मात्रा को क्रमशः [ए]क एक तोला घटाता जाय। छः महीने [त]क इस तरह निरन्तर सेवन कर लेनेवाला [म]नुष्य बूढ़े वाचस्पति के समान वेद, [न्या]य आदि, शास्त्रों का विद्वान बन [क]र दो साल तक जीवित रहता है। [आ]नन्दकन्द का रचयिता लिखता है कि [सों]ठ के इस दिव्य रसायन के लाभों को [उस]ने स्वयं अनुभव किया है।

कम्बोडिया में अद्रक सुगन्धित बल-[दा]यक औषध के रूप में दी जाती है। [ची]न और मलाया में बहुत सी बलदायक [औ]र उत्तेजक औषधियों के योगों में इसे [ड]ाला जाता है।

पान्डु

पान्डु (खून की कमी) में दशमूल [के] काढ़े, और गौ घी केसाथ सौंठ केकल्क [क]ो पका कर बनाये घी को देते है। एक [से]र सौंठ, चार सेर गौ का घी, और सोलह [से]र दशमूल का काढ़ा। ८ सेर दशमूल [क]ो ६४ सेर पानी में पका कर १६ सेर [ब]चा लें। लेकर विधि पूर्वक घी पकाया जाता है। चौथाई से आधे तोले की [मा]त्रा में यह घी पान्डु रोगी को दूध के अन्दर दिया जाता है। सौंठ और लोह [भ]स्म को मूत्रगौके साथ कफ प्रधान पान्डु [में] सेवन करना चाहिये।

कामला में सोठ के चूर्ण को गुड़ के [सा]थ प्रयोग करना चाहिये।

क्षय

क्षय में अग्नि मन्द हो जाने के कारण रोगी को प्रायः आवयुक्त दस्त आने लगते हैं। मुख का स्वाद बिगड़ [जा]ने से अन्न खाने में रुचि नहीं रहती। [इ]स अवस्था में अग्नि, दीपक, अतिसार [न]ाशक, मुख को शुद्ध करने वाले तथा अरुचि नाशक योगों का प्रयोग करना [च]ाहिए। सौंठ और इन्द्र जौ के चूर्ण को चावलों के पानी के साथ रोगी को देतेहैं [स]ोंठ और धनियें से पकाया पानी भी क्षय [में] दिया जाता है। क्षीण पुरुषों के लिये चरक ने सौंठ और मुलहठी का कल्प लिखा है। इनको एक तोला से आरम्भ करके प्रति दिन एक तोला बढ़ाते हुए आठ तोले तक बढ़ा कर एक मास तक सेवन करना चाहिये। इसके सेवन काल में अन्न खाने की मनाही है। भूख लगने पर केवल दूध ही पिलाते हैं।

वृन्द माधव बताते हैं कि गलगन्ड में जीभ के नीचे और पार्श्व की हिरायें जब फूल जाती है तो चीरा देकर उनसे खून निकाल देने के बाद रोगी को अदरक और गुड़ चबाने के लिये देना चाहिये।

खून बहना

कफ के जीते जाने पर जो रक्तपित शान्त नहीं होता वहां वायु को प्रवृद्ध समझ कर सोंठ से पकाया मीठा दूध पिलाना चाहिये। गुदा से जाने काले खून को बन्द करने के लिये सोंठ, गन्धबाला और नीलोफ़र से पकाया दूध हितकर होता है।

मदात्यय

अदरक से बनाई गई एक शराब को चरक मदात्यय में देते है। मदात्यय में वायु की शान्ति के लिये चावलों की शराब में सोंठ का चूर्ण बुरक कर दिया जाता है मदात्यय के वातिक योगी को अदरक भरे समोसे खाने को दे सकते है। कफज मदात्यय में अदरक से संस्कृत किये हुए मांस को खिलाते हैं। अदरक को घी में भून लेने के बाद उसी में मांस को भून लें। पक जाने पर मिरच, नमक अजवायन और सौंठभी बुरक लें। वाग्भट्ट तो मांस में बहुत सी सोंठ काली मिरच और अदरक आदि डाल कर समोसे तल लेने को कहते हैं।

गठिया तथा वायु के रोग

चक्रदत और वृन्दामाधव ने वातघ्न गण में सोंठ गिनायी है। गृधसी, आमावात आदि वाति विकारों से ग्रस्त व्यक्ति घी में भुनी अदरक का प्रयोग भोजनों में बहुत करते हैं। ताज़ी अदरक प्राप्त न हो तो सोंठ के चूर्ण को घी में भून लिया जाता है। दही और लस्सी में सौंठ का चूर्ण डाला जाता है। गठिया और आमावात के रोगी को दहीं और लस्सी पीने के लिये मना किया जाता है परन्तु उत्तर पंजाब के कुछ स्थानों पर सोंठ डाल कर इन्हें देने में कोई दोष नहीं समझा जाता।

उरुस्तम्भ में सोंठ के गरम कषाय से धोना चाहिये। अदरक का रस शहद मिला कर सेवन करने से अन्डकोष के वात विकार नष्ट होते हैं। और श्वास खांसी, अरुचि तथा जुकाम दूर होते हैं। एक माशे से एक तोला एक सोंठ का चूर्ण कांजी के साथ रोज खाने से आमावात में लाभ करता है। यह कफ और वायु का नाशक है। सोंठ के कल्क को चौगुनी सौवीर कांजी में डाल कर सिद्ध किया घी आमावात में सेवन कराते हैं। यह भूख को भी चमकाता है। चार सेर गौ के घी में एक सेर सोंठ का कल्क और सोलह सेर सौंठ का क्वाथ या केवल पानी ही डाल कर बनाया घी कमर की दर्द आमावात, वायु तथा कफ को शमन करता है और अग्नि प्रदीप्त करता है। सौंठ एक माशे का क्वाथ

इस लेख के लेखक
श्री रामेशबेदी आयुर्वेदालंकार
प्रातः काल सेवन करने से आमावात तथा कटिशूल दूर हो जाते हैं।

(शेष पृष्ठ ५ का)

ज्यूट की उत्पति यहाँ के कृषिकों के लिये रोक की फसल (cosh-crob) सिद्ध हो सकती है। और उनके आर्थिक कठिनाई और तंगी के समय पर सहायक हो सकती है।

इस पौधे के तंतु की लम्बाई छः फीट से आठ फीट तक होती है। इसके तंतु को तीन भागों में काटा जाता है। अधोभाग बहुत मोटा और निकृष्ट होता है; इससे बोरे बनाने में आते है। मध्य भाग कैंन्वहास बनाया जाता है। उपर के दो फीट के श्रेष्ट तंतु से ज्यूट के वस्त्र (linen) बनाये जात हैं। उपर का भाग बहुत अच्छा होता है और उसे प्रायः सभी उच्च श्रेणी का ज्यूट विदेशों में जाता है। ज्यूट के वस्त्र बनाने की निर्माणियाँ स्थापन करने की ओर अपने उद्योग पतियों का ध्यान आकृष्ट होना अनिवार्य है।

उपर्युक्तलेख में मैंने ऐसे प्रदेश में उँचे श्रेणी के ज्यूट की उत्पति की विवेचना है कि जहाँ के लोगों का अद्यपि इस ओर ध्यान नहीं गया हैं। ज्यूट के पौधे इस प्रदेश में उगते हैं और उनसे बिना ज्यूट निकाले ही नष्ट हो जाते हैं। विशेषज्ञों के कथना नुसार यह ज्यूट बंगाली ज्यूट से किसी प्रकार कम नहीं है। यदि वैज्ञानिक साधनों द्वारा ज्यूट की उत्पति करने में आयी तो उसमें अधिक सुधार की ही संभावना है। ज्यूट के उत्पति के साथ ही उसकी निर्मित वस्तुएँ बनाने के लिये निर्माणियाँ भी स्थापन करनी चाहिये।

युद्ध काल में बहुत से व्यवसायियों को अगणित लाभ प्राप्त हुआ है और उनकी पूंजी इस धन्धे में अच्छी तरह से से विनियुक्त की जा सकती। उनके लिये यह सुवर्ण संधि है। इसके कारण बहुत से लोगों को काम भी मिलेगा, अतएव, इस धन्धे की ओर सरकार, उद्योगपति तथा जनता का ध्यान आकृष्ट होना नितान्त आवश्यक है।

(शेष पृष्ठ ६ का)

क्षेत्रफल कुछ बिस्वे क्यों न हो तो उसके लिये भी उनको उतना ही परिश्रम करना पड़ता है जितना परिश्रम से वह कई एकड़ भूमि की देख रेख कर सकत है। ऐसी दशा में किसी किसन के लिये भी कृषि-संबन्धी कोई ठोस कोर्य करना असम्भव सा है। मान 'लिजिये कि किसी किसान ने एक कूआं बनवाने की आर्थिक क्षमता है। परन्तु उसका उसे कोई विशेष लाभ नहीं है क्योंकि उसके खेत तो तितर-बितर हैं। एक स्थान पर कूआं बनवाने से उसका कोई विशेष लाभ नहीं होने वाला हैं। फल यह होगा कि वह कूआं बनवाने से अपना मुंह मोड़ लेगा। आज हमारे किसान सामूहिक रूप से आर्थिक क्षमता रखते हुये भी प्रत्येक कार्य के लिये सरकार पर निर्भर रहते हैं और उनमें आत्मकार्य के लिये सरकार पर निर्भर रहते हैं और उनमे आत्म निर्भरता का एक दम अभाव सा हो गया है। आप किसी पहलू से देखें खेती के तितर-बितर होने से हानि ही हानि हैं। समय तथा शक्ति का आनावश्यक व्यय होता है। फसल एवं बीज की बेहद हानि होती है तथा खेतों की रक्षा की समस्या बड़ी जटिल हो जाती हैं। सीमा, रास्ता, तथा घेरा के प्रश्नों पर प्रतिदिन झगड़े हुआ करते हैं और आर्थिक दुर्दशा के साथ ही साथ सामाजिक जीवन भी नरक बन जाता है।

तो हम क्या करें?

इन सब कठिनाइयों का हल एक ही है। वह है खेतों की चकबन्दी। इस पर लगभग सभी अर्थशास्त्री एक मत हैं प्रसिद्ध रायल कमीशन ने जिसने कृषि सम्बन्धी अनेक सुझाव पेश किये इस बात पर जोर दिया कि यदि हमें किसानों को उनकी वर्तमान कठिनाइयों से उबारना है तथा उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करना है तो अविलम्ब चकबन्दी प्रारम्भा कर दी जावें। चकबन्दी से हमारी कृषि-सम्बन्धी सभी समास्यायें हल हो जाती है। खेतों के तितर-बितर होने के दोष दूर ही हो जाते हैं साथ ही साथ हमें अपने खेतों के रकबों को बढ़ाने का उपयुक्त अवसर मिलता है वर्तमान अवस्था में असम्भव है। आप याद रखें यदि हमारे खेतों के रकबे नहीं बढ़ते हैं तथा उनमें वर्तमान ढंग पर खेती नहीं कीं जा जाती है तो हमारी भोजन समस्या दिनो दिन, बढ़ती ही जावेगी।' अधिक अन्न उपजाओ इस प्रचार से कुछ भी प्रभाव पड़नेवाला नहीं क्या हमारी जनप्रिय सरकार इस समस्या को गम्भीरता की अवहेलना करने की चेष्टा कर सकती है? कदापि नहीं कि यदि नहीं तो चकबन्दी का काम तुरन्त प्रारम्भ करना चाहिये। हमें प्रसन्नता है कि हमारी सरकार गावों में उनकी वर्तमान सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक कठिनाइयों को दूर करने के लिये ग्राम-पंचायत की आयोजना करती है। ग्राम-पंचायत का एक मात्र उद्देश्य ग्राममें शांति तथा ग्राम-निवासियों के आपस के भेदभाव को दूर करना है। चकबन्दी इस कार्य में काफी सहायक होगी। गाँव के मुकदमें तो लगभग मिट जावेंगे। आपसी वैमनस्य का भी अन्त हो जावेगा तथा आर्थिक लाभ काफी होगा। चकबन्दी से हम एक समस्या और हल कर सकते हैं वह है स्वास्थ्य समस्या। जन-व्यक्ति तथा परिवारिक बन्धन की अवहेलना के कारण गांवों का आकार बढ़ता जा रहा है आबादी के विषय में भी गांवों में वही समस्यायें आ रही हैं जो नगरों में है। आवश्यक स्थान न रहने पर भी लोग अपने निवास स्थान इतना संकीर्ण बना रहे हैं कि घरों में शुद्ध वायु तथा तथा प्रकाश की कमी होता जा रही है। चकबन्दी से इस इस समस्या का अच्छा हल निकल जावेगा। एकात्रित खेत मिल जाने के कारण लोग अपना निवास स्थान तथा पशुशाला अपने खेतों में ही बनाना पसन्द करेंगे। यह अनुभव की बात है कि देहात में जिन लोगों के खेत एकत्रित हो जाते हैं उनका अधिक समय खेतों में बीतता है तथा निवास-स्थान भी वहीं बन जाते हैं।
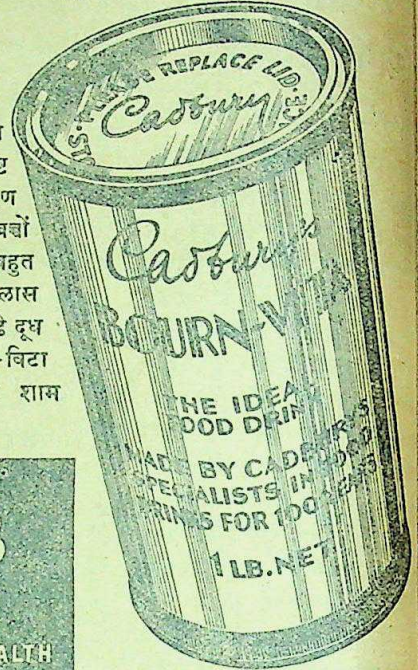
चकबन्दी की कठिनाई

चकबन्दी की पहली कठिनाई जमींदारी प्रथा है। मालिक 'अ' है। खेती 'ब' को करती है। 'ब' को सदैव निर्बल रखने के लिये 'अ' उसे खेत जान बूझ कर तितर बितर देता है ताकि वह अधिक बलशाली न हो जावे। जमीदारी प्रथा के रहते हुये चकबन्दी में काफी अड़चने आवेंगी इसलिये इस प्रथा का अविलम्बनिमूलन होना चाहिये दूसरी कठिनाई खेतों नवइयत की है। किसी खेत कीं नवइअत शिकमी है तो किसी की शरहमुअइअन। नवइअत के अन्तर के कारण खेतों के मूल्य में काफी अन्तर पड़ जाता हैं यद्यपि अन्न दोनों में एक ही सा होता है। सरकार चाहिये कि खेत का मूल्य उप[ज] निर्धारित करे और खेतों की न[वइअत] एक कर दे इस परिवर्तन से [...] दृष्टि में कोई हानि होने की सम[्भावना] नहीं है। परन्तु यह तभी हो सक[ता है] जब जमींदारी मिट जावे। तीसरी [कठि]नाई किस्म-जमीन की है। किसान सभी तरह की फसलें चाहता है इसलिये उसे सभी तरह की भूमि की आवश्यकता पड़ती [है।] हमारा कर्तव्य है कि किसान की इन भावनाओं को [...] और उसे स्पेशलाइजेशन की [ओर] अग्रसर करें।

पिछले अङ्कों का सारांश

[मोहनलाल, उसका चचेरा भाई तोता और उसकी पत्नी रोनी, साधारण तथा गरीब किसान का जीवन। दो बैल, एक दुधारू भैंस और थोड़ी सी खेती। यही उनकी निधि थी। खेत पक गया था। मोहनलाल, तोता तथा रोनो ने खेत की कटाई की और खलियान लग गया। जिन्हें खाने का ठिकाना नहीं था, उन्हें आशा हुई कि मड़ाई होने के बाद ही उन्हें दोनों वक्त कम से कम रोटियाँ मिलने लगेंगी और बैलों तथा भैंस को चारा भी कुछ दिनों के लिये हो जायेगा। किन्तु उर्भगम का समय, खलिहान में एकाएक जमीदार के सिपाही आ पहुँचे, और जोर-जबरदस्ती करके अनाज के ढेर का तीन हिस्सा बैलगाड़ी पर लाद ले गये। मोहनलाल और रोनी ने दया की प्रार्थना की किन्तु जमीदार के सिपाहियों ने एक न सुनी। खलियान में अनाज के ढेर का केवल चौथाई भाग वह छोड़ गये। मोहनलाल और रोनी का हृदय भावी चिंता से व्याकुल हो उठा। और फिर.........]

(गतांक के आगे)

(४)

छ देर बाद चन्द्रमा का उदय होआया टे हुए खेत की सोंधी वायु फूलों की इक को लपेटती हुई आने लगीं, परन्तु हन के चूल्हे में आग न परच पाई श न मालूम किस किसने छू लिया , इसलिये फेंक दिया गया। रोनी ने ने हुए चने जहाँ के तहां रख दिये थे, टा और अनाज भी।

रोटी बनाने की बात कहने के लिये हन की हिम्मत नहीं पड़ रही थी, और ता को तो मानो काठ ही मार गया ।

चांदनी बढ़ती चली गई। हवा में क और मिठास और भी आगई। मन्द दनी में उजड़े हुए खल्यान की थिर- री हुई थोड़ी सी बालों और अस्पष्ट गओं वाले उपलों और गोबर के सूखे ले खाद पर फिर से आँख घुमाते हुए हन ने अँधेरे कोने में सिमट कर पड़ी रोनी से विचार के रूप में प्रस्ताव ट किया और दूर तक सुनाई पड़ने ली एक आह भारी: रोटी तो खानी ही गी।

जैसे किसी ने कठोर चुटकी भरली रोनी यकायक उठ बैठी और चिल्ला बोली,' हाँ रोटी क्यों नहीं खानी गी? बड़ा करतब किया है न आज ने! कब से कह रही थी फसल काट गाह लो, पर कान पर जूँ तक न ं!! निठल्ले, निकम्में, निगोड़े, चाहती कुएँ में गिरकर तुमको हत्यारा कर ऊँ, पर तुमको मेरे पीछे और भी मौज ा .मिलेगा इसलिये रह जाती हूँ। ी खाने को मन दौड़ रहा है। लाज नही आती। वे रह गई हैं थोड़ी सी वालें, डकार लो इनको। फिर भीख मांगना।'

मोहन ने धीरे से कहा,' काहे को विरथा बरस रही हो। मैंने क्या किया है?

'क्या किया है!'—रोनी ने फट-कारा—'इनको और दे देते अपने उन—'

मोहन ने फुफकार को दबाते हुए कहा,,रोटी बनानी हो बनाओ न बनानी हो न बनाओ परन्तु ज्यादा बक-बक मत करो।'

रोनी और भी तीखी हो गई 'उन बापों से न बना कुछ कहते हुए मुझसे ही उलझते रहते हो।'

मोहन भी कड़वा पड़ा' मेरे पिता सिपाहीगोरी भी जानते थे। उन्होंने न मालूम कितनों के खोपड़े चटकाये थे, और 'मैं—'और मैं भी खोपड़ी चटका सकता हूँ, पर घर की औरत की ही।

'तुमको औरत जो कहे, वह औरत!'

'और तुम हो कपूत, कायर। घर में ही मुँह जोरी चलती है। बाहर ऐसे हो जाते हो जैसे बिल्ली के सामने चूहा। इस घर और बेड़े के भीतर ही चलता है तुम्हारा पराक्रम।

'कपूत! कायर!! हुँ!! खैर अब न रहूँगा इस घर या बेड़े में। जिस घर में तुम सरीखी लक्ष्मी हो उस घर में मुझ सरीखा कोई रह भी नही सकता।

'न जानूँ कितने बार सुन चुकी हूँ, देखा बाहर जाकर कमाई करते एक दिन भी नहीं।'

तोता बोल उठा,' भैया, रहने भी दो। थोड़ी देर में रोटी बनी जाती है। फिर सोचेंगे आगे क्या करना है।

'पत्थर करना है!—रोनी ने टीप दी—'आगे करेंगे अपने छाती के हाड़!!'

मोहन कड़का—'बस! बहुत हो चुकी।' और वह उठ खड़ा हुआ।

रोनी भी खड़ी हो गई।

फुफकारती हुई बोली,' आ, आ। मार। मुझे मार डाल! मैं भी अब नही जीना चाहती।'

तोता बीच में आ खड़ा हुआ।

मोहन ने कण्ठावरोध के साथ कहा, मैं इतना नीच नहीं हूँ कि स्त्री पर हाथ उठाऊँ, पर तुम जैसी कमीनी हो उसका इलाज डंडा ही है। तोता मैं अभी हाल जाता हूँ, शायद ही कभी लौट कर आऊँ। लौटूँगा तो अपने बाप का सपूत बनकर ही आऊँगा जिसको आज इसकमीनी ने गाली दी है। संभालना इस घर को तुम।'

रोनी उलट कर कुछ कहना ही चाहती थी कि इधर तोता ने उसके हाथ जोड़े उधर मोहन लकड़ी और चादर उठाकर घर के बाहर हो गया!

'भैया, ! भैया !!' तोता चिल्लाता रहा पर मोहन फतेहपुर सीकरी के टीले टोरों की ओर तेजी के साथ चला गया।

चाँदनी और भी अधिक ऊँचे चढ़ आई थी। वायु के झकोरे में और भी मधुरता ठंडक और सुगन्धि बढ़ गई थी। मोहन एक पगडन्डी पर तेजी के साथ चला जा रहा था। पीठ पर फतेह-पुर सीकरी के ऊँचे ऊँचे प्राचीन प्रासाद और भवन भीगी हुई चांदनी में हँस से रहे थे। उस छोड़े हुए खलियान, झोपड़े, उपलों और सूखे खाद कूड़े पर उन विशाल भवनों की छाया सी पड़ रही थी। मोहन ने पीछे लौटकर एक बार भी नहीं देखा।

वह सुनसान में चला जा रहा था। झींगुर झंकार रहे थे। झाड़ी झकाड़ में चिड़ियां चिहुक कर फड़फड़ा जाती थीं। मोहन के फटे हुए जुतों से पगडंडी की धूल थोड़ी सी उड़कर चादनी की चमक में रिपट कर फिर जहाँ की तहाँ गिर गिर जाती थी। मोहन चला जा रहा था, परन्तु उसको नहीं मालुम था की कहां।

मोहन के चले जाने पर तोता रो पड़ा।

रोनी बोली,'ओ हो! हो!! जैसे कोई कभी लौटेगा ही नहीं। जाओ भैंस को ढूँढ़ लाओ। सवेरे के पहिले-फिर कहीं छिपा लेंगे। थोड़ी देर में रोटी बनी जाती है। फिर ,दोनों खालेना आफत तो यह है कि थोड़े से अनाज को कुचल खाने के बाद फिर क्या करेंगे।

तोता ने गला और नाक साफ करके कहा,' भैया दुपहरी में कह रहे थे कि बाहर जाकर कहीं नौकरी करूँगा तब आऊँगा जब कुछ रुपया गांठ में हो जायगा।'

अरे, किन बातों में पड़े हो'—रोनी बोली—'ऐसे करमीले होते तो घर की यह दुर्गति ही क्यों होती?

तोता ने तो कोई उत्तर नहीं दिया वह घर की दुर्दशा का कारण उस नायक और उन सिपाहियों पर केन्द्रित करता हुआ भैंस को पकड़ लाने के लिये चला गया।

संकल्पों विकल्पों के बीच झुलता हुआ चक्कर काटता हुआ एक दिन मोहन दिल्ली साम्राट मुहम्मद शाह के मीर बख्शी सादतखाँ की छावनी में आगरा के निकट पहुँच गया।

छावनी की शान को देखकर पहिले तो उसकी आँखों में चकाचोंध सी लग गई। हाथी, घोड़े, तड़क भड़क वाले

सामान, झंडे, और रङ्ग बिरंगे कपड़े, और सरदारों के बहुमूल्य गहने देखकर वह दङ्ग रह गया। साधारण सिपाहियों को भी उसने अच्छे वस्त्र पहिने स्वस्थता में मग्न पाया। एक ओर तोपों हाथियों के समूह को देखकर उसके मन में भी एक अनुराग उत्पन्न हुआ। इस छावनी में नौकरी मिल जाने से मैं भी कुछ हो सकता हूँ उसने सोचा।

फटे जूते, फटे कपड़े, पैरों पर ढेरों धूल चढ़ी हुई, छोटी सी दाढ़ी मूँछ पसीने और धूल से रंगी हुई। उसने अपनी अवस्था को देखा' हुँ।, उसने अपनी चौड़ी छाती को फुलाकर उस दुरवस्था को उपेक्षा के साथ झटका और एक चमकीले रङ्ग बिरंगे तम्बू के पास जा खड़ा हुआ।

पहरे वाला उसके पास आगया। उसने पूछा,—'कौन? हो क्यों यहां मटर गश्ती कर रहे हो? क्या किसी सामान पर निगाह है?

मोहन ने साँस साध कर अदम्यता के साथ उत्तर दिया, 'नौकरी के लिये आया हूँ मेरा बाप भी सिपाही था।'

'कौन लोग हो?'

'जाट ठाकुर।'

'तुम्हारे पास घोड़ा है?'

'नहीं है। क्या ये सब हाथी घोड़े सिपाहियों के ही हैं?'

'हाथी नहीं हैं। पर कुछ घोड़े हैं।

'घोड़े पर चढ़ना जानते हो?'

'जानता हूँ'

भीतर से अधेड़ आयु का एक मुसलमान सरदार निकल आया। उसके गले में सोने के आभूषण थे। उसने नीचे से ऊपर तक मोहन को परखा। मोहन का कद, गठन और चौड़ाई अच्छी थी, परन्तु मुँह पचका हुआ सा था लम्बी नाक और सकरे माथे के बीच में बड़ी बड़ी आँखें भयावनी सी लगती थीं। सरदार को बुरा नहीं लगी।

सरदार ने प्रश्न किया 'अब तक क्या करते थे?'

'खेती किसानी,' मोहन ने उत्तर दिया।

'खेती का क्या हुआ? कहाँ करते थे?'

'फतेहपुर सीकरी में।'

'खेती का क्या हुआ?'

'मन नहीं लगा।'

'अच्छा तुमको शाही फौज के अपने दस्ते में भरती कर लूँगा। हथियार चलाना जानते हो?'

'जी हाँ,'

'कौन कौन से?'

'लाठी, कुल्हाड़ी, गँड़ासा, इत्यादि'

सरदार हँस पड़ा। मोहन सहमा नहीं परन्तु उसने आँखें नीची करलीं।

सरदार ने कहा 'बन्दूक तलवार चलाना जानते हो या नहीं?' मोहन ने उत्साह के साथ उत्तर दिया, 'सीख लूँगा, कुछ कठिन नहीं है। जो लाठी कुल्हाड़ी चलाना जानता है वह सब कर सकता है।'

सरदार मुस्कराने लगा। आश्चर्य प्रकट करते हुए बोला, 'जाट होकर बन्दूक तलवार चलाना अभी तक नहीं सीखा।'

मोहन ने कहा, 'बाप छुटपन में मर गया था, मैं दूसरों के ढोर चराने लगा। घर की थोड़ी सी जमीन थी। बड़ा होने पर अपनी खेती करने लगा।'

मोहन भरती कर लिया गया। वेतन नियुक्त हो गया— दस रुपया मासिक। कपड़े मिल गए हथियार भी परन्तु खाने को गाँठ में कुछ न था।

सरदार ने उसके खाने पीने का प्रबंध करके बतलाया, 'जो कुछ मिले उसमें से बचाकर रखते जाना। वैसे तनख्वाह महीने दो महीने में मिलती रहती है लेकिन कभी कभी बाकी में भी पड़ सकती है।'

अपनी नई परिस्थिति में मोहन का उत्साह इस आगाही से कम नहीं हुआ।

वह अपने काम पर चिपट गया। अन्य सैनिकों को आराम से पड़े हुए हुक्का गुड़गुड़ाते, नाच तमाशों में मग्न रहते देखकर उसको आश्चर्य होता था। ये सब अपना काम बहुत पहिले सीख चुके हैं, वह सोचता था। आस पास के सिपाही उसकी भूखी लगन को देखकर समझते थे कि कोई खप्ती है। जैसे वह काम में एक एक दाने को बीन बीन कर इकट्ठा कर रहा हो।

उसके मन में आकांक्षा सब से अधिक बढ़ जाने के लिये हूँकें सी मारती थी। छावनी की आनबान और अच्छे वस्त्रालङ्कारों को नित्य अपनी आंखों के सामने देखते हुए भी वह उनमें सन जाने की वान्छा नहीं रखता था, परन्तु क्या कोई दिन ऐसा आयगा जब मेरे पास भी रुपया पैसा गहना गुरिया हो जायगा? वह कभी कभी सोचता था। और तब, कहीं सिर उठाकर जा सकूँगा। कहाँ? इसके आगे वह कल्पना को पल्लवित नहीं होने देता था।

क्रमशः

संवाददाताओं के पत्र

रतनगढ़ (बीकानेर)—प्रान्तव्यापी संगठन के निर्माण के हेतु जनवरी के अन्तिम सप्ताह में रतनगढ़ में राजस्थान के प्रमुख साहित्यिकों की राय से राजस्थान प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन किया जा रहा है। इस अवसर पर समस्त राजस्थान के प्रमुख साहित्यसेवी इकत्रित होकर अपना एक सुदृढ संगठन बनायेंगे।

—संयोजक

हरद्वार में—मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी के संगठन मंत्री पं० भालचन्द जी शर्मा हरिद्वार पधारे। हमारे संवाददाता से मिलने पर आपने कहा कि कुम्भ मेले के अवसर पर सोसायटी ने अपना विशाल कैम्प खोलने का निश्चय किया है। उसके अनुसार आपने यहाँ के सम्भवित मेला स्थान का निरीक्षण किया। आपने बताया कि सोसायटी एक मेडिकल कैम्प खोलेगी जिसमें कुशल डाक्टर तथा कंपाउंडर रहेंगे। साथ ही एम्बुलेंस गाड़ी भी रहेगी जो यत्रतत्र से घायल तथा रोगियों को लाकर हस्पताल में चिकित्सा करेगी साथ ही कमती मूल्य पर शुद्ध भोजनालय खोलेगी जिसमें हजारों यात्री एक साथ एक प्रकार का भोजन कर सकेंगे।

—संवाददाता

जोधपुर—(डाक से) मारवाड़-बालचर-संघ की १६ वीं सालगिरह पर जोधपुर में बालचरों की एक विराट सम्मेलन २४ जनवरी से २७ जनवरी तक कोकसटीर, जोधपुर में होगा। मारवाड़ के लगभग २५०० बालचर इसमें सम्मिलित होंगे। २७ तारीख को रैली में राजस्थान के शिक्षा मंत्री श्री प्रेमनारायण माथुर भी भाग लेंगे। २८ जनवरी को राजस्थान को विभिन्न इकाइयों की स्काउट संस्थाओं के प्रतिनिधियों का सम्मेलन राजस्थान के डाइरेक्टर आफ एजुकेशन श्री मदनमोहन गुप्ता की अध्यक्षता में होगा।

निरक्षरता विरोधी दिवस मनाने की अपील मारवाड़ जिला कुमार साहित्य परिषद् के प्रधान मंत्री श्री अध्यापक प्रसाद जी ने एक वक्तव्य में परिषद की समस्त शाखाओं से २६ जनवरी को स्थापना दिवस मनाने की अपील की है। उन्होंने कहा कि परिषद् अपने जीवन के चार वर्ष पूरे कर उस दिन पाँचवें वर्ष में प्रवृत होगी। ग्रामो में साहित्यिक जागरण आजतक उसका कार्य रहा है। अब हमें साक्षरता केंद्रों की स्थापना कर निरक्षता के विरुद्ध संग्राम छेड़ देना चाहिये। अपने हर सदस्य से 'पढ़ो-पढ़ाओ' आंदोलन चलाने के हेतु अंत में अनुरोध किया।

संवाददाता

रतनगढ़—(बीकानेर) शीघ्र ही होनेवाले राजस्थान हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्वागतकारिणी का चुनाव हुआ। स्वागताध्यक्ष-सेठ विश्वेश्वर धानुका। स्वागतमन्त्री—आचार्य श्रीअद्भुतशास्त्री (कवि-कार्यकर्ता-पत्रकार) कार्यसमिति के ७ सदस्य चुने गये। स्वागत व्यवस्था के लिये अर्थसंग्रह का निश्चय हुआ।

—प्रचार मन्त्री

संगरिया—(बीकानेर) ग्रामोत्थान विद्यापीठ संगरिया बीकानेर का महोत्सव आगामी मार्च के प्रथम सप्ताह में हो रहा है।

—मंत्री

(पृष्ठ ४ का शेष)

लेखकों से तैयार कराना चाहिए। को और लेखकों को भी प्रवासी समस्या कुछ लिखते रहने का अनवरत प्र करना चाहिए। जिसे हिन्दी पढ़ने जनता अपने उन स्वदेशी बन्धुओं सुधि न भूल सके जो सदर देशान्त जाकर बस जाने पर भी भारत के ममता रखते हैं भारत में रहने वाले स्वतंत्र हो गये पर अभी लाखों म संतान भूमण्डल के भिन्न भिन्न भागों उत्पीड़ित एवं पददलित हैं। पूज्य स्व भवानीदयालजी संन्यासी ही एक ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने अपना जीवन प्रवासी भाईयों के हितार्थ उ कर दिया है। उनके निजी संग्रहाल प्रवासी साहित्य तैयार करने योग्य मसाला मौजूद है पर कौन ऐसा प्रकाशक है जो उस मसाले को तक पहुँचाने की उदारता दिखा उनके पुस्तकालय में जितनी सा संग्रहित है यदि उतनी भी प्रकाश आजाय तो हिंदी का प्रवासी सा काफी समृद्ध हो सकता है। किंतु दे सरकार और दानी मानी धनाढ्यों ध्यान इधर है ही नहीं। हिन्दी के प्रकाशकभी इधर उदासीनता ही रहे हैं।

इंडोनेशिया के प्रेसिडेंट डाक्टर सुकर्ण भारत आ रहे हैं।

ग्राहकों, एजेंटों और वि पनदाताओं को समस्त पत्र वहार मैनेजर, 'देशदूत' इलाहा के नाम पर ही करना चाहि

देशदूत के एजेन्ट बनिये और ग्राहक बनिये

श्री सोहनलाल द्विवेदी लिखित

काव्य कृतियों के नवीन संस्करण

भैरवी

गांधी युग का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। महामना मालवीयजी के शब्दों में 'ऐसी कविता का प्रचार देश के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक होना चाहिए।' मूल्य २।।≡)

वासवदत्ता

बाबू मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं 'इस रचना से मैं बहुत प्रभावित हुआ।' स्वच्छन्दतापूर्वक जिस प्रौढ़ता की ओर द्विवेदीजी अग्रसर हो रहे हैं, जान पड़ता है, स्वयं वह भी उन्हें [illegible] करने के लिए आतुर हो रही है। 'वासवदत्ता' के प्रकाशन ने हिन्दी-साहित्य में एक नई क्रान्ति उत्पन्न कर दी है [illegible] स्वयं पढ़कर निर्णय कीजिए। मूल्य१।।)

कुणाल

महापंडित राहुल सांकृत्यायन की सम्मति में—अशोक, तिष्यरक्षिता और कुणाल खास तौर से—'कुणाल' के चरित्र-चित्रण में कवि ने कमाल किया है। शब्द-सौकुमार्य और भावोत्कर्ष के साथ ही नपे तुले शब्दों के प्रयोगने काव्यको बहुत ऊँचा उठाया है। विशेषसंस्करण मूल्य २।।)

पूजागीत

राष्ट्रीय चेतना को काव्य का सच्चा स्वरूप देने के लिए द्विवेदी जी को प्रचुर सम्मान तथा लोकप्रियता प्राप्त हुई है। ये पूजा-गीत कवि के गौरव के अनुरूप ही हैं। मूल्य २)

विषपान

सुप्रसिद्ध पौराणिक कथा का सरल तथा सबल खंड-काव्य है। भाषा का प्रवाह, प्रसन्न शैली तथा कथा के मार्मिक घटना-क्रम की वर्णना ने इसे बड़ा ही हृदयग्राही बना दिया है। मूल्य १)

झरना
शिशुभारती
बाँसुरी

द्विवेदी जी पहले बालकों के कवि हैं पीछे राष्ट्र के। पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा माननीय सम्पूर्णानन्दजी ने इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा की है। 'अमृत बाज़ार पत्रिका' की सम्मति में—जिस प्रकार की शिक्षा बालकों को देने के लिए हमारे नेता वर्षों से प्रयत्न कर रहे हैं, इन पुस्तकों में उसी प्रकार का साहित्य है। प्रत्येक पुस्तक में कई रङ्गीन तथा अनेक सादे चित्र हैं। प्रत्येक पुस्तक का मूल्य १)

पूरे सेट का मूल्य १२ रु०

पता—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

ESTD 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेंट रिकगनाइजड AIDED

सिन्हा होमियो मेडिकल कौलेज

—पो० लहेरियासराय, बिहार—

आज हिन्दी उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़ कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्सन सहित फीस H.L.M.S. १०), H.M.B.S १५) H.M.D.S. २५) पुस्तके—अ० परिवारिक १।।) बायोकेमिक १।।) मेटेरिया मेडिका १।।) मेडिकल डिक्सनरी २) आर्गेनन १।।) फार्मा कोपिया १।।) रेड लाइन सीम्पटम्स १।।) (१) बृ० इंजेक्सन चिकित्सा ३) बृ० अ० पारिवारिक चिकित्सा ६।।) बृ० अ० मेटेरिया मेडीका ६।।) ऐनाटोम १।।) परिक्षाविधान १।।) रिलेशन शिप, १।।) कुल किताबें २५) में एक साथ दी जायँगी डा० ख० माफ। अमेरिकन दवाइयाँ ३०—≈)।। २००—≡) ड्राम, फी औंस ।।), घरेलू बक्स पुस्तक सहित ३६ शीशी का ८) सुगर और गोली २।।) फी पाउण्ड। चौथाई Advance भेज दें। थोक खरीदार को २५ प्रतिशत कमीशन देते हैं।

नोटः—बृहत् सूची मुफ्त—सचित्र मेडिकल मैगजीन मासिक ।।) सालाना—५)

संरक्षक—राय सा० डा० यदुबीरसिंह एम० डी० यस० (U.S.A.)

सचित्र साप्ताहिक 'देशदूत' का विशेषांक

काश्मीर अंक

इस अंक का संपादन करेंगे

पंडित शिवनाथ काटजू एम० ए०, एल-एल० बी०

'देशदूत' के काश्मीर अंक विशेषांक के प्रकाशन की तैयारी जोरों से प्रारंभ हो गई है। काश्मीर की समस्या स्वतंत्र भारत को आज की एक प्रमुख समस्या है। काश्मीर भारत का अंग है। उसकी रक्षा तथा स्वतन्त्रता भारतीय सरकार का कर्तव्य है! इस विशेषांक में काश्मीर की वर्तमान समस्याओं पर राष्ट्र के बड़े बड़े नेताओं के गंभीर तथा जानकारी पूर्ण लेख रहेंगे। काश्मीर की भौगोलिक, ऐतिहासिक तथा राष्ट्रीयता का सचित्र विवरण दिया जायेगा। काश्मीर के प्रति पाकिस्तानी नीति पर भी नेताओं द्वारा सुन्दर प्रकाश डाला जायेगा। काश्मीर के संबंध में सुन्दर चित्र तथा नेशनल कान्फ्रेंस के नेताओं के संदेश आदि भी आकर्षक रूप में होंगे।

विज्ञापनदाताओं तथा एजेंटों को

अभी से अपना स्थान तथा बिक्री के लिये कापियाँ रिजर्व करा लेना चाहिये। नये ग्राहकों को यह अंक मुफ्त मिलेगा। यह अंक काश्मीर का एक अलबम होगा।

दर्जनों चित्रों तथा कार्टूनों से सुसज्जित

इस अंक का मूल्य होगा केवल ।≈)

व्यवस्थापक 'देशदूत' इलाहाबाद

भारत के कोने-कोने में हजारों जनता-द्वारा पढ़ा जानेवाला तथा ११ वर्षों से लगातार प्रकाशित होनेवाला

प्रमुख राष्ट्रीय साप्ताहिक पत्र

सचित्र देशदूत में

विज्ञापन देकर अपने व्यापार को बढ़ाइये

Registered No. A—295

विविध विषयों के हमारे बढ़िया ग्रन्थ

इस पुस्तकमाला की ४ प्रसिद्ध पुस्तकें हैं—(१) 'योगायोग' कवित्वमय श्रेष्ठ उपन्यास। मूल्य ४) (२) 'विश्व परिचय' विज्ञान-विषय अनन्य ग्रन्थ। मूल्य २), (३) 'रूस की चिट्ठी। रूस का आँखों देखा वर्णन, मूल्य २) (४) 'चार अध्याय' ऐसा उपन्यास जिसमें राजनीति, समाज और स्त्री-पुरुष-समस्या आदि पर विचार हैं मूल्य १।)

इसमें प्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव के नये गीतों का संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अन्तर्द्वन्द्व से पूर्ण है। छपाई सफाई नयन मोहक। सचित्र सजिल्द प्रति का मूल्य २) दो रूपये।

लेखक भू० पू० काकोरी सके के कैदी श्री मन्मथनाथ गुप्त और राजेन्द्र वर्मा। समाजवाद के अध्ययन के लिये पढ़ना आवश्यक है। मार्क्सवाद के दर्शनों में यह सबसे गहन है। एक दर्जन अध्यायों में विषय का प्रतिपादन हुआ है। मूल्य ६) छः रुपये।

यह श्री श्यामनारायण पाण्डेय, की प्रसिद्ध रचना है। इसमें महाराणा प्रताप के हल्दीघाटी वाले संग्राम का वीरता पूर्ण वर्णन बढ़िया छन्दों में है। सजिल्द सचित्र पुस्तक का मूल्य २॥।) दो रुपये बारह आने।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड ३६ पन्नालाल रोड, इलाहाबाद

प्रधान संपादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल।
कृष्ण प्रेस, प्रयाग में ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल द्वारा मुद्रित तथा 'देशदूत' कार्यालय प्रयाग द्वारा प्रकाशित।

[वर्ष १२, संख्या २५] रविवार, २६ जनवरी, १९५० (फरवरी)

टेढ़ी, सीधी, खरी-मजेदार

पाकिस्तान के विदेशी मंत्री श्री जफरुल्ला आजकल अमरीका में पाकिस्तान की वाहवाही और भारत की तबाही के पुल बांध रहे हैं फिर भी उन्हें आशंका हो गई है कि कहीं उनकी हत्या न कर दी जाये। पाकिस्तान में हत्या और लूट का बाजार तो यों ही गरम है, अमरीका में जफरुल्ला साहब को हत्या की हवा क्यों लगने लगी है, यह बात समझ में नहीं आ रही है।

❀ ❀ ❀

कलकत्ता की एक खबर है कि बंगाल—नागपुर रेलवे के दो स्टेशनों के बीच एक भैंसा राज्य करता था। एक माल गाड़ी आ रही थी, भैंसा उससे लोहा लेने के लिये लाइन पर खड़ा हो गया। इंजन से उसने लोहा लिया, इंजन रेल की पटरी से नींचे उतर गया किंतु भैंसा भी गिर कर वीर गति को प्राप्त हो गया। आज उसी पूर्वी ।बंगाल की उर्दशा सुनाई दे रही है। अंधर नहीं तो और क्या है ?

* ❀ *

प्रोफेसर मजीद कहते हैं कि पाकिस्तानी नेता आजकल विष-वमन कर रहे हैं। अपने राम की समझ में कोई नई बात नहीं है। पाकिस्तानी नेता विष-वमन न करें तों क्या करें ? उनके सलाहकारों और मार्ग दर्शक अंग्रेजों ने मुसलिम लीगी काल से उन्हें विष-वमन करने की ही सलाह दे रखी है। अकबर ने कहा भी है कि "आदत जो पड़ी है। हमेशा से, वह दूर भला कब होती है। रक्खी है, चुनौटी पाकेट में पतलून के नीचे धोती है।" पुरानी आदत दूर कैसे हो सकती है ?

* * *

भारतीय पार्लामेंट में एक प्रश्न पूछे जाने पर सहायता और पुनर्वास मंत्री श्री मोहन लाल सक्सेना ने बतलाया कि पश्चिमी पाकिस्तान में लगभग ८०० गुरुद्वारे और मंदिर पाकिस्तानियों द्वारा तोड़ डाले गये हैं। अपने राम की समझ में यह भी पाकिस्तानियों के लिये कोई नई बात नहीं है। बाबा आदम के जमाने से यह पेशा उनकी नस्ल में चला आ रहा है। लेकिन अंत में क्या होगा, डाइन जब सब को खा डालती...है...तो अपने को खाना प्रारंभ करती है। पाकिस्तान जब अपने यहाँ तोड़-फोड़ समाप्त कर लेगा तब स्वयं अपने को तोड़ना प्रारंभ करेगा। समय आ रहा है, क्यों कि जो बादल गरजते हैं वह बरसते नहीं।

❀ ❀ ❀

अमरीका बड़ी तेजी के साथ खबर मिल रही है कि रूस विश्व-विजय के स्वप्न के कारण सामूहिक हत्या की ओर अग्रसर हो रहा है। बात तो सही है, परन्तु अमरीका भी विश्व विजय का स्वप्न देखता हुआ सामूहिक शोषण की ओर अग्रसर हो रहा है अपने राम की समझ में जोड़ तो दोनों का अच्छा है। देखना है यह जोड़ मैदान में कब उतरता है ? जोड़ मैदान में उतरी और तीसरे महायुद्ध का डंका पिटा हुआ समझिये।

ब्रिटिश चुनाव का परिणाम दिखलाई दे रहा है मजदूर सरकार की जीत हुई और टोरी दल की हार। चुनाव को देख कर यह प्रगट है कि अभी ब्रिटेन में प्रति क्रियावादी दलों की शक्ति कम नहीं हुई। यद्यपि मजदूर दल की जीत दिखाई दे रही है किन्तु थोड़े ही वोटों से। अपने राम की समझ में आ रहा है कि ब्रिटिश जनता अभी बाबा आदम का ही स्वप्न देख रही हैं। ऐसे ब्रिटेन के लिये ईश्वर ही मालिक है।

❀ ❀ ❀

आखिरकार चर्चिल साहब जीतते जीतते हार गये। चर्चिल साहब ने सोचा था कि इस बार चुनाव विजय प्राप्त करके भारत से स्वाधीनता छीन लेंगे और सारे संसार में प्रति क्रियावाद की धूम मचा देंगे किन्तु जान पड़ता है कि यह तनसती भेंट अब नाहीं। चर्चिल साहब को बदा नहीं है कि वह फिर अपनी बादशाही स्थापित कर सकेंगे। यदि आज ब्रिटेन में चर्चिल शाही की स्थापना हो जाती तो सचमुच दुनिया उलट जाती। लेकिन चलते चलाते जान पड़ता है कि अभी ब्रिटेन जीवित रहेगा। समय को गति इसी को कहते हैं।

❀ ❀ ❀

पाकिस्तान अपनी सैनिक शक्ति लगा कर पठानिस्तान को समाप्त करने की उपाय कर रहा है। अपने राम की समझ में पाकिस्तान को यही करना ही चाहिए। एक म्यान में दो तलवार कैसे रह सकती है। या तो पठानिस्तान ही रहेगा या पाकिस्तान ही। लेकिन पठानिस्तान आज नहीं तो कल जिंदा होगा, और पठानिस्तान डूबेगा क्योंकि अत्याचार का फल मिलता अवश्य है किंतु कुछ देर को ; देर आयद दुरुस्त आमद।

मौलाना अबुलकलाम आजाद ने पूर्वी पाकिस्तान की हत्याओं का विरोध किया है।

कानपुर बिरहाना रोड की दुकान कलकत्ता साइकिल मोटर कम्पनी के मालिक बा० रामनिवास के पास एक हरिहरनाथ श्रीवास्तव एम. एल. ए. जाहिर करके जा पहुँचे और सिगरेट एजेन्सी दिलाने के बहाने १०१००) लेकर अपने साथी श्रीनिवास शास्त्री के साथ चम्पत हो गए। दूकान दार को बाद में सन्देह हुआ और पुलिस में रिपोर्ट की गई तो जाली एम. एल. ए. का तो पता न लग सका परन्तु उनके साथी श्रीनिवास शास्त्री गिरफ्तार कर लिए गए।

सूचना

होली के उपलक्ष में छुट्टी होने के कारण देशदूत का अगला अंक (५ मार्च का) प्रकाशित न होगा। ता० १२ मार्च को अंक प्रकाशित होकर एजेंटों तथा ग्रहकों के पास जायेगा।

—प्रबंधक 'देशदूत'

पंडित नेहरू श्री राजगोपालाचारी से पाकिस्तानी अनाचारों के संबंध में परामर्श कर रहे हैं।
(२) पंडित नेहरू बरमा के प्रधान के साथ।
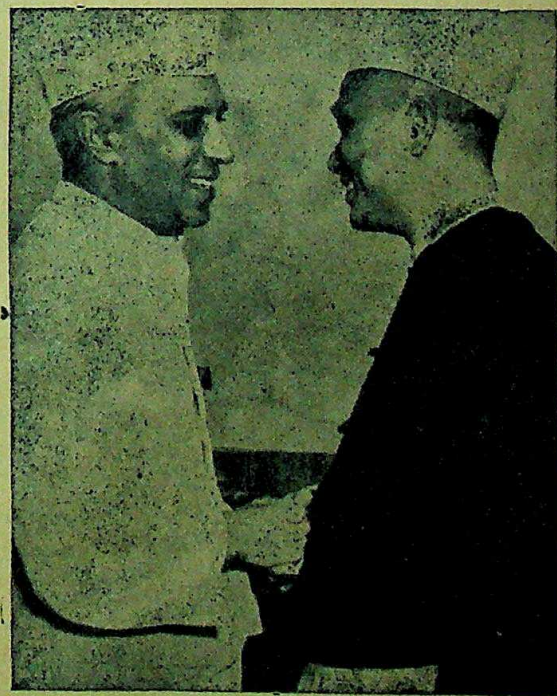
अणु और उद्जन का निर्माण

क्या अमरीका अपना विनाश करेगा

लेखक, श्री चंद्रोदय दीक्षित

अणुबम या उद्जन का निर्माण साम्राज्यवादी राष्ट्र कर रहे हैं और आगामी युद्ध का आह्वान कर रहे हैं। अमरीका और सोवियट रूस दोनो देश इसी विनाशकारी पथ को अपना रहे हैं प्रश्न यह है कि क्या साम्राज्य वादी राष्ट्र विनाश की ओर बढ़ रहे हैं। इस लेख में लेखक ने इसी संबंध में प्रकाश डाला है। लेख सामयिक और पठनीय है।

आज संसार में अणुबम और उद्जन बम की बड़ी चर्चा है। अणुबम का प्रयोग केवल प्रयोगशाला में ही नहीं वरन् जापान के नगरोंपर भी किया जा चुका है। उसकी विनाशकारी शक्ति से अभी तक हिरोशिमा में प्रतिक्रियायें हो रही हैं और उसके स्मरण से ही मनुष्य कोटिके व्यक्ति को रोमांच हो जाता है। बतलाया जाता है कि उद्जन बम उससे हजार गुना अधिक विनाशकारी है। अणुबम का रहस्य सबसे पहले अमरीका को मालूम हुआ था और उसने उस रहस्य को अत्यन्त गुप्त रखने की चेष्टा की लेकिन अब यह मालूम हो चुका है कि सोवियट रूस में भी अणुशक्ति का विकास तेजी से हो गया है। सोवियट रूस द्वारा अणुशक्ति के रहस्य को जानने के समाचार के प्रकाश में बाद पश्चिमी योरोप और अमरीका में थोड़ी निराशा छा गई। कुछ समय के बाद ही अमरीका की ओर से उद्जनबमके बनाने की सफलताकी घोषणा की गई। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि उद्जन शक्ति का रहस्य सोवियट रूस को भी मालूम है। इस प्रकार हम देख रहे हैं कि अमरीका और रूस जो इस समय संसार के दो गुटो के नेता हैं शस्त्रास्त्रों की दौड़ में संलग्न हैं। यह भी स्पष्ट होता जा रहा है कि यदि दोनों अपने विकराल युद्ध-अस्त्रों का प्रयोग करके अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध करें तो बहुत सम्भव है पूरे संसार का ही विनाश हो जाय। लेकिन तीसरे महायुद्ध को किसी भी ओर से अनिवार्य नहीं कहा जा रहा है। अतः यदि यह स्वीकार कर लिया जाय कि तीसरा महायुद्ध नहीं होगा और विज्ञान का इसी प्रकार विकास होता जायेगा तो यह निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि पूंजीवादी पद्धति स्वयं अपने अन्तर विरोध और अपनी पद्धति के संकट के फलस्वरूप नष्ट हो जायेगा। प्रस्तुत लेख में हम इसी बात पर विचार करेंगे।

सोवियट रूस और अमरीका से आये हुये समाचारों से यह भी मालूम हुआ है कि जहाँ अमरीका अणुशक्ति और उद्जन शक्ति का प्रयोग केवल शस्त्रास्त्रों के निर्माण के रूप में कर रहा है उसके विपरीत सोवियट रूस में इनशक्तियों का प्रयोग देश के निर्माणकारी कार्यों में किया जा रहा है। यह बात नहीं है कि अमरीका में अणुशक्ति के रचनात्मक प्रयोग को लोग नहीं जानते हैं वरन् अमरीका को अपनी व्यवस्था की रक्षा के लिये अणु शक्ति के रचनात्मक प्रयोग को रोकना पड़ रहा है। यह बात तो सर्व विदित है कि अमरीका एक पूंजीवादी देश है और वहाँ पर पूंजीपतियों का व्यक्तिगत लाभ ही सब बातों का केन्द्र विन्दु है। यही कारण है कि द्वितीय महायुद्ध में एक ओर मित्रराष्ट्र हिटलर के विरुद्ध युद्ध कर रहे थे और दूसरी ओर अमरीका व्यवसायी गुप्त रूप से उससे व्यापार कर रहे थे। आज भी अमरीका की जितनी नीतियाँ है उनको भी उसने अपनी पद्धति के लाभ के लिये अपना लिया है। ब्रिटेन फ्रांस, डच आदि साम्राज्यों के अधीन देशों की तथा कथित स्वतंत्रता प्राप्ति से अमरीका को अपने व्यापार प्रसार के लिये सुन्दर अवसर के साथ ही विस्तृत बाजार भी मिल गया है। पश्चिमी योरोपीय देशों को मार्शल योजना की जो सहायता दी जा रही है

नये चुनाव के सम्बन्ध में ब्रिटिश नेता विचार-विनिमय कर रहे हैं।

उसका भी एक ही रहस्य है कि अमरीका उन देशों की पूंजीवादी पद्धतियों के विनाश को रोकना चाहता है और साथ ही उक्त योजना के द्वारा अपनी पूंजी और युद्ध प्रयोगों के सामान के लिये बाजार को सुरक्षित रखना चाहता है। लोगों को यह मालूम होने पर आश्चर्य होगा कि अमरीका की कुल उद्योगो के ३३ प्रतिशत उद्योग लड़ाई का सामान बनाते हैं और इन उद्योगों से उसे अपनी राष्ट्रीय आय को दो तिहाई धन प्राप्त होता है। यही कारण है कि अमरीका के राजनीतिज्ञ सदैव युद्ध उत्तेजना को लगातार बनाये रखने दिलचस्पी लेते हैं। इस बात के लिये उन्हें सदैव इस बात की भी घोषणा करनी पड़ती है कि संसार में सब से भयंकर अणुबम बन सकता है। उद्जन रहस्योद्घाटन का भी यही रहस्य मालूम होता है।

अमरीका अपने युद्ध उद्योगों और पूंजी के एक भी करण एवं केन्द्री कारण के विरोध जाल में भयंकर रूप से फंस गया है। उसके साथ ही विज्ञान के विकास से उसकी स्थिति और भी खराबहो गई है अभी अमरीका में जो उत्पादन के साधन है उनकी उत्पत्ति और वितरण की विषमता के कारण उसको अपनी पूजी और सामान का विनाशकरने परध्य होना पड़ता है। दूसरी ओर यदि वह आणु शक्ति का प्रयोग करने लगे तो उसकी निर्माण करी शक्ति इतनी बढ़ जायगी कि उसकी पूंजी वादी पद्धति को स्वतः छिन्न-भिन्न हो जाना पड़ेगा।

निकट भविष्य में दूसरी ओर आज कल और आने वाले दिनों में सोवियट रूस जिसके प्रभाव में काफी बड़े देशआ गये है वह अणुशक्ति और उदजन शक्ति अथवा इससे भी अधिकशक्तिशाली का रचनात्मक प्रयोग करेगा जिसमें उस क्षेत्र में समृद्धता आ जायेगी यह भी सभी लोग स्वीकार करते है कि सोवियट में वितरण की वैसी विषमता नहीं है जैसी पूजी वादी पद्धति में है) इस प्रकार वितरण की विषमता के चक्र में फंस कर एक ओर अमरीका अणु अथवा उद्जन केविनाश कारी अस्त्र तैयार करने में अपनी पूजी और शक्ति नष्ट कर देगा और दूसरी ओर सोवियट पद्धति उसके प्रयोग से अपने देश के उत्पादन में वृद्धि करेगा और अधिक शक्तिशाली बनेगा। साथ ही साथ संसार के सभी देशों में लोगों की चेतना बढ़ती जाती है और उनका यह अनुभव भी बढ़ता जारहा है कि अमीरीका एकसेन्ट की सहायता भी अपने शोषण की भावना को त्याग कर नहीं दे सकता है। उसे दूसरे राष्ट्रों के हितों के केवल इसी सीमा तक चिन्ता है कि वे देश अमरीका के परोक्ष रूप में गुलाम बन जाय वह उनका आर्थिक शोषण कर सके। पिछड़े हुये देशों की बढ़[illegible] चेतना के फलस्वरूप ही साम्राज्य[illegible] देशों को अपने टूटे हुये शासन चौखटे को हटाने को जल्दी बाध्य [illegible] पड़ा इसी आधार हम हम कह सकते [illegible] कि अमरीका के विरुद्ध सभी देशों में [illegible] कर विद्रोह होगा जिसे वह अणुशक्ति प्र[illegible] रूप से नहीं दबा सकेगा। इस प्र[illegible] वर्तमान और उद्जन शक्ति के वैज्ञा[illegible] विकासकेहो जाने केबाद अमरीका उ[illegible] विनाश कारी अस्त्रों के निर्माण के द्वा[illegible] पूजी वादी युद्ध के के विनाश [illegible] मार्ग प्रशस्त कर देगा और इस पद्ध[illegible] का विनाश अनिवार्य हो जायगा क्यों[illegible] नवीन उत्पादन के साधनों को पुरा[illegible] व्यवस्था के अन्तर्गत संगठित नहीं कि[illegible] जा सकेगा और नवीन व्यवस्था अ[illegible] शक्तिशाली होकर अधिक सुदृढ़ [illegible] जायगी।

❀ ❀ ❀

ब्रुसेल्स में आयोजित अखिल वि[illegible] साइकिल की दौड़ प्रतियोगिता में भा[illegible] लेने के लिए जो भारतीय टीम जाय[illegible] उसके सदस्यों के नाम घोषित कर दि[illegible] गये हैं। टीम में १० व्यक्ति बम्बई [illegible] ३ बंगाल के, १ मद्रास के, १ दिल्ल[illegible] के, २ पूना के, १ बड़ौदा के और [illegible] गुजरात के हैं। प्रतियोगिता अगस्[illegible] १९५५० में होगी।

सचित्र
साप्ताहिक 'देशदूत'
संवाददाताओं से निवेदन

संयुक्तप्रांत, मध्यप्रांत, मध्य भारत तथा राजपूताने के संवाद भेजनेवालों से निवेदन है कि वह अपने संवाद संक्षिप्तरूप में ही भेजने का कष्ट करें।

संपादक 'देशदूत'

ग्राहकों, एजेंटों और विज्ञापनदाताओं को समस्त पत्र व्यवहार मैनेजर, 'देशदूत' इलाहाबाद के नाम पर ही करना चाहिए।

ग्वालियर राज्य और हिन्दी

राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिये न्यायालयों में प्रतिबंध क्यों ?

लेखक, श्री श्यामलाल गौड़ बी० ए०, एल० एल० बी० (उज्जैन)

मध्यभारत तथा ग्वालियर में राष्ट्रभाषा हिन्दी की क्या स्थिति है ? विधान परिषद के निर्णय के बाद भी राष्ट्रभाषा हिन्दी के मार्ग में क्या क्या बाधायें उत्पन्न हो रही हैं या की जा रही हैं, इसका स्पष्ट वर्णन इस लेख में किया गया है। भारत सरकार विशेष कर देशीराज्य विभाग को जनता के हितों का ध्यान रख कर राष्ट्रभाषा को समस्या को हल करने की ओर आगे बढ़ना चाहिए।

मध्यभारत के राजप्रमुख महाराजा ग्वालियर

संविधान परिषद ने राष्ट्र-भाषा के पद पर हिन्दी को आसीन कर अपनी दूरदर्शिता का परिचय दिया है। परिषद के अनुभवी एवं विचारशील सदस्य इस वास्तविकता से परिचित थे कि यदि हिन्दी को उसका योग्य अधिकार न दिया गया तो देश के सामने "हिन्दी" भी एक समस्या के रूप में होगी।

संविधान परिषद का निर्णय यद्यपि सर्वमान्य हुआ परन्तु १५ वर्ष के वनवास के इस दुःखद प्रतिबन्ध से जन साधारण में क्षोभ उत्पन्न होना स्वाभाविक था। हमारे नेताओं ने जिस त्याग, तपस्या और बलिदान के बल पर अंग्रेजों को अपने बिस्तर गोल करने के लिये बाध्य किया, हमें यह विश्वास था कि भारत का संविधान परिषद् उसी आत्मिक बल के आधार पर सम्पूर्ण सत्ता सम्पन्न स्वतन्त्रता की स्थापना के शुभ अवसर पर दासता के अन्तिम प्रतीक अंग्रेजी भाषा का भी परित्याग कर देगा। अंग्रेजों का मोह तो हम त्याग सके परन्तु अंग्रेजी प्रियतमा का वियोग सहन करना हमारे लिये असहनीय प्रतीत हुआ। अंग्रेज़ गये. अंग्रेजी रह गई। १५ वर्ष के इस "वनवास" को हमने इसलिये धैर्य के साथ सहन किया कि इस वनवास में "अज्ञात वास" का कोई प्रश्न नहीं था।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व भारतवर्ष में गवालियर राज्य ही एक ऐसा राज्य था जिसने विदेशी शासन काल में भी हिन्दी को उसका योग्य अधिकार प्रदान किया, राज्य भाषा के पद पर हिन्दी को आसीन किया। केवल शासन के कार्यों में ही नहीं वरन् राजनियमों एवं राज्य में प्रचलित विधानों का भी हिन्दी रूपान्तर किया गया। "कोर्ट" और "अदालत" के स्थान पर "न्यायालय" एवं "न्याय मंदिर" की स्थापना हुई। "वज़ीरों" और "मिनिस्टरों" का स्थान "सचिवों" और "मंत्रियों" ने ग्रहण किया "सशन्स कोर्ट" की समाप्ति की जाकर "सम न्यायालय" को जन्म दिया गया और "असेसर्स" के स्थान पर "परामर्श दाताओं" की नियुक्ति की गई। केवल यही नहीं, कानूनी लुगद और "लीगल डिक्शनरी" के स्थान पर "शासन शब्द कोष" का निर्माण हुआ और "ट्रस्ट-एक्ट" के स्थान पर आया "न्याय विधान" "वकील" अभिभावक बने और "मुवक्किल" पक्षकार ! इस परिवर्तन के लिये गवालियर राज्य को लाखों रुपये व्यय करने पड़े। आम फहम भाषा के हामियों ने पुकार उठाई। पत्रों में गवालियर शासन के विरुद्ध प्रचार किया, शासन को साम्प्रदायिक शासन बनाने का षडयन्त्र रचा परन्तु उसका कोई परिणाम न हो सका। गवालियर शासन में हिन्दी की विजय हुई-विरोधी झुक गये !

अंग्रेज भारत से गये अंग्रेजी भारत में छोड़ कर मुसलमानों ने पाकिस्तान लिया—कई मुसलमान पाकिस्तान गये उर्दू को "हिन्दुस्तानी" के रूप में भारत में छोड़ कर। गवालियर शासन का अन्त हुआ और मध्य भारत का निर्माण परंतु क्या गवालियर शासन मध्य भारत को अथवा अपने प्रचार कार्य में यह भले ही दें कि उनका प्रान्त हिन्दी की देन दे सका ? मध्य भारत के नेता चाहे उसका उत्तर अपने भाषणों में हिन्दी भाषी है। उनके प्रान्त की राज्य भाषा हिन्दी ही है परन्तु वास्तव में यह प्रचार मात्र है वास्तविकता से दूर गवालियर राज्य के साथ ही मध्य भारत में हिन्दी ने भी अपनी अंतिम सांसें लेली। हिन्दी के स्थान पर उच्च न्यायालयों में आई अंग्रेजी और अन्य स्थानों पर रूकी भाषा जिसे न हम हिन्दी ही कह सकते हैं न हिन्दुस्तानी, न वह मराठी का ही शुद्ध रूप है न गुजराती का ! भाषा के नाम पर इन्दौर के अत्यधिक एवं असहनीय प्रभाव से हिन्दी का दाह संस्कार हो गया और गर्विता हिन्दी की चिन्ता पर एक रूसी "खिचड़ी भाषा" का प्रादुर्भाव मध्य भारत शासन में हुआ है जिसके "कुल" का पता लगाना ही कठिन है। "अरोधी" शब्द का जन्म "आरोप" से हुआ। आरोपी का सीधा अर्थ है आरोप करने वाला—आरोप लगाने वाला परन्तु यहां उसका अर्थ लगाया जाता है उल्टा ही। आरोपी से मध्य भारत में वह व्यक्ति माना जावेगा जिस पर आरोप लगाया लगाया गया है। जो अभियुक्त का दूसरा रूप है। "प्रार्थी" के स्थान पर आज के मध्य भारत में "अर्जदार" मिलेगा और "माणा" के स्थान पर "रानी"। "कूट परिक्षण" शब्द का अंत किया जा कर उलट तापनी शब्द का प्रयोग किया जा रहा है। "पूरव" के स्थान पर "फुरवाणी" और "आपत्ति" के स्थान पर "हरकत" शब्दों का प्रयोग प्रकट करता है कि इसे विज्ञ पाठक और भाषा शास्त्री स्वयं देखें और परखें।

हिन्दी के उचित एवं उपयुक्त शब्दों के स्थान पर अन्य भाषा के शब्दों की तोड़ मरोड़ कर ठूंस ठांस क्या उचित है ? क्या इसी हिन्दी (१) को मध्य भारतीय नेता राज्य पद पर आसीन करने के पक्षपाती हैं ?

यदि इतना ही होता तो संभव है गवालियर राज्य के निवासी जिन्होंने हिन्दी भाषा को अपनी राष्ट्र भाषा, अपनी राज्य भाषा और अपनी मातृ भाषा के रूप में उस समय स्वीकार किया जब भारतीय प्रदेश अंग्रेज और अंग्रेजी का दास था। परन्तु कुछ घटनाएं एसी हुई है और होती जा रही हैं कि जिससे एक साधारण व्यक्ति का धैर्य भी टूट जाता है। विलीनी करण के कारण कुछ न्यायालयों में एसे न्याया धीशों की नियुक्ति हुई है जो अंग्रेजी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं का ज्ञान ही नहीं रखते। आज्ञाएं प्रचलित होती हैं अंग्रेजी में जिसे कर्मचारी समझने में ही असमर्थ हैं फिर इस प्रकार की आज्ञाओं के पालन होने की बात तो दूर की है। हम इस बात को स्वीकार करते हैं कि वर्तमान समय संक्रमण काल है और इस काल में कठिनाइयां उत्पन्न होना स्वाभाविक है परन्तु इसका यह अर्थ तो कदापि नहीं लगाया जा सकता कि संक्रमण काल में है और इस काल में कठिनाइयां उत्पन्न होना स्वाभाविक है परन्तु इसका यह अर्थ तो कदापि नहीं लगाया जा सकता कि संक्रमण काल में हमें अन्याय को न्याय कहने के लिये और दिन को रात कहने के लिये बाध्य किया जावे।

भारतीय संविधान की धारा ३४३ के अनुसार हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार कर लिया गया है परन्तु उसी धारा की उपधारा २ में अंग्रेजी भाषा को १५ वर्ष के लिये सुरक्षित रखा है। परन्तु संविधान के १५ वें अध्याय का यदि अध्ययन किया जाय तो इसी परिणाम पर पहुँचेगे दि राज्यों में हिन्दी भाषा की

(शेष पृष्ठ १४ पर)
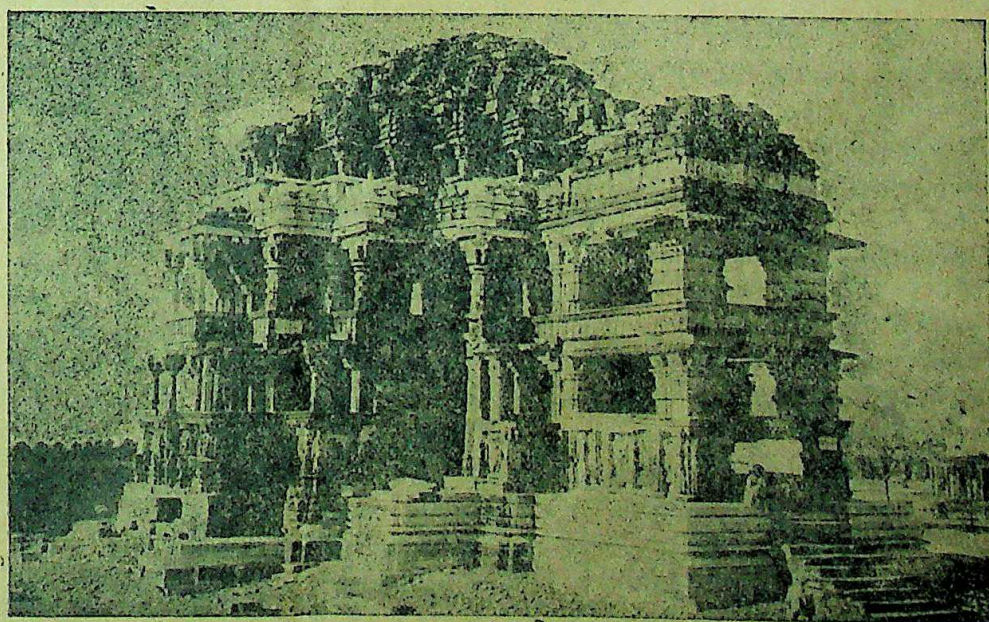
ग्वालियर में सास-बहू के प्राचीन मंदिर का एक दृश्य।

किसान पर कर्ज

यह बोझ उन पर क्यों लदा है ?

लेखक, श्री उमाशंकर

आज का किसान निर्धन तथा गरीब है। यद्यपि राष्ट्र की रीढ़ वही है, क्यों वही अन्न उत्पादक है, और सारे राष्ट्र का भरण पोषण करता है। फिर भी वह कर्ज दार है। आखिर उस पर कर्ज का बोझ इतना क्यों है यह विचारणीय है। इस लेख में लेखक ने किसान की वर्तमान आर्थिक स्थिति का उल्लेख करते हुए यह बतलाया है कि उसकी निर्धनता कैसे दूर हो सकती है! लेख सामायिक तथा पठनीय है।

देश की आर्थिक दशा दिनों दिन खराब हो रही है। इसके साथ ही साथ किसानों के कर्ज का बोझ भी बढ़ता जा रहा है। किसानों की ऋण समस्या ने आज भीषण रूप धारण कर लिया है। किसानों के आर्थिक तथा सामाजिक जीवन का अध्ययन करने के बाद यह पता लगता है कि ऋण समस्या को जटिल बनाने वाले कई कारण है।

बंगाल की प्रांतीय बैंकिंग जांच कमेटी ने कर्ज़ के कारण का पता लगाने की चेष्टा की थी। उसने कहा था कि १६२८-२६ के साल में किसानों ने नीचे लिखी हुई बातों के लिए कर्ज लिया था :—

	रुपए
पुराने कर्ज अदा करने के लिये	३८६
अपनी हालत में पक्का सुधार करने के लिए जिसमें नये ज़ानवरों का खरीदना भी शामिल है	१०८७
मालगुजारी और लगान अदा करने के लिए	५७३
खेती के लिए	४७३
सामाजिक और धार्मिक कार्यों के लिए	१५०
मुकदमों के लिए	१५
फुटकर	६५
कुल जोड़ ——	२,७०५

श्री एस० बोस ने बंगाल में दक्षिण पश्चिमी बीर भूमि के देहात में कर्ज की जांच १९३३-३४, शीर्षक निबन्ध में यों कहा है :

	रुपए		फी सदी
लगान देने के लिए	१३,०००	...	२४.१
अपने सुधार के लिए	१२,७३६	...	१३.७
सामाजिक और धार्मिक कामों के लिए	१२,०२१	...	२२.३
पुराना कर्ज अदा करने के लिए	४,५००	...	८.४
खेती के लिए	२,४२३	...	४.५
मुकदमों के लिए	७०८	...	१.३
फुटकर	८,४०१	...	१५.३

इन आंकड़ों से पता चलता है इस कर्जदारी की समस्या को जटिल बनाने वाली जमींदारी प्रथा है। भारत में इस प्रथा के अनुसार लाखों मनुष्य मर गये और कितने मर रहे हैं, इसका पता नहीं लगान दिनपर दिन बढ़ता हीजाता है। गैरकानूनी लगान की बात भी खुल्लम खुल्ला जारी है। राधाकमल मुकर्जी ने अपनी पुस्तक "हिन्दुस्तान" में भूमि की समन्याएँ, में लिखा है मद्रास, बम्बई और संयुक्तप्रांत में खास तौर से मालगुजारी की दर बेतहाशा बढ़ाई गई। १८६० ६१ और १६१८-१६ के बीच की मालगुजारी २४ करोड़ रुपये से बढ़ कर ३३ करोड़ रुपये हो गई थी और इन तीस वर्षों में खेती की आमदनी संयुक्तप्रांत, मद्रास और बम्बई में मोटे हिसाब से ३०,६० और २३ प्रतिशत के हिसाब से बढ़ी केवल लगान की बात रहे तो एक बात है इसके अलावे मोटर कर, हाथी कर, चूल्हा कर, वगैरह, वगैरह बहुत से कर हैं। किसान भी जमीन्दारों के प्रहार से बचने के लिए तथा अपने खेतों को नीलाम से बचाने के लिए महाज़नों की शरण लेते हैं।

इस समस्या को जटिल बनाने में जमीन्दारों के बाद महाजनों का हाथ है। उन लोगों का काम केवल किसानों को सूद में रूपया देना है। इस तरह के महाजनों की संख्या भी कम नहीं है। हिन्दुस्तान ईयर बुक १९४० के अनुसार उनकी संख्या विभिन्न प्रांतों में बंटी हुई है :—

प्रांत के नाम	...महाजनों की संख्या
बंगाल	... ४५,०००
बम्बई	... २०,०००
पंजाब	... ५५,०००
मध्यप्रांत	... ४३,०००
विहारऔरउड़ीसा	... १,०००००

इस रोमांच कर देने वाले आंकड़े को देख कर हृदय कांप उठता है। जब किसानों का छुटकारा जमीन्दारो के हाथों से होता है। और वे जिन्दा निकलते है तो वे महाजनों के हाथों में आते हैं। वे अवसर देखकर १०० रुपए ही की जगह २०० रुपये के हैंड नोट लिखवा लेते है। दर असल में वे १००रुपये ही देते हैं। विहार में ऐसा वर्ग है जो ७५ प्रतिशत लेता है। सावन भादों के महीनों में वे रुपये देना आरंभ करते हैं और पूस और अगहन के जाड़े तक वे कर्ज देने का काम जारी रखते हैं। किसानों को भी उन दिनों रुपये की आवश्यकता होती है। कुआरी और चैती कटनी के समय में खाली बोरा लेकर खलिहान में पहुँच जाते हैं और किसानों के साल भर की उपज को सूद में ले लेते हैं। अभागे किसानों के घर एक दाना नहीं जा पाता।

कर्जदारी की समस्या को जटिल बनाने में हमारे धर्मपुरोहितों का कम हाथ नहीं है। किसानों के हृदय में मजहबी भूतों ने अपने डेरा बना लिया है मार्क्ज ने आज से वर्षों पहिले कहा था कि जितना धर्म ने किसानों और मजदूरों का खून चूसा है, उतना शायद महाजन और जमीन्दारों ने भी नहीं चूसा। मार्क्स का प्रत्येक शब्द आज हमारे यहां लागू हो सकता है। जमीन्दारी को टेक्स नहीं देने में किसान को भल रहता है कि घर नीलाम होगा, गाय भैंस कुर्क होंगे, जेल जाना पड़ेगा पुरोहितों को टेक्स न देने से किसानों को भय रहता है कि वे नरक में पड़ेंगे। एक में स्वर्ग जाने की लालसा है, दूसरे में गाली से बचने की अरमान। जमीन्दार का टेक्स तो तहसीलदार, पटवारी को घूस घास देकर कुछ दिनों तक रोका जा सकता है। इसके लिए किसानों कों अधिक से अधिक कर्ज देना पड़ता है।

प्रकृति का भी हाथ उस समस्या को जटिल बनाने में कम नहीं है। अनावृष्टि, अतिवृष्टि, बाढ़, भूकम्प आदि के प्रकोप के द्वारा भी किसान तबाह और बर्बाद है। वर्षा नहीं होने से खेत सूख जाता है। किसान भखों मरने लगता है। भूख से बचने के लिए कर्ज लेना ही पड़ता है। अतिवृष्टि होने से फसल मारी ज़ाती है। बाढ़ आने से भी खेती में गड़ी हुई फसल या तो सड़ जाती है या बह जाती है। भूकम्प के द्वारा भी ज़मीन कट जाती है। बालू को फेंकने के लिए कर्ज लेना ही पड़ता है। अभी १६३४ के भूकम्प में हमारे यहां जमीन कट गई थी। खेतों में बालू भर आयी थी। बालू को साफ करने के लिए कर्ज लेना ही पड़ता है।

किसान स्वयं इसके लिए कम उत्त दायी नहीं है। उनमें मुकदमा लड़ की इतनी बुरी लत पड़ गई है कि छो छोटी बातों के लिये उन्हें कचहरी त बिना दम लगाये चैन नहीं मिलती है सभी बातों के लिए कचहरी के दरवा खट खटाते हैं। छोटे से प्रांत पांजब किसान करोड़ रुपये हर एक साल मुक दमा बाजी में खत्म कर देते हैं। पंजा में ही यह हालत नहीं, हर जगह पा की तरह रुपये बहाये जाते हैं। विवा और श्रृंगार में इतना फिजूल खर्च कर हैं कि उसके लिए उन्हें कर्ज लेना पड़ता है। घर में खाना हो चाहे न विवाह में आतिशबाजी और रोश जरूर ज़िलेगी। नृत्य ज़रूर होगा वे अपने समय को आल बनाकर जुआ खेलने में, तम्बा पीने में, गांजे का दम लेने में, ता पीने में खर्च कर देते हैं। किसानों समझना चाहिए कि उन नासमझी, आलस्य तथा उद्योगहीन ही के कारण कर्जदारों की समस इतनी जटिल बनी हुई है।
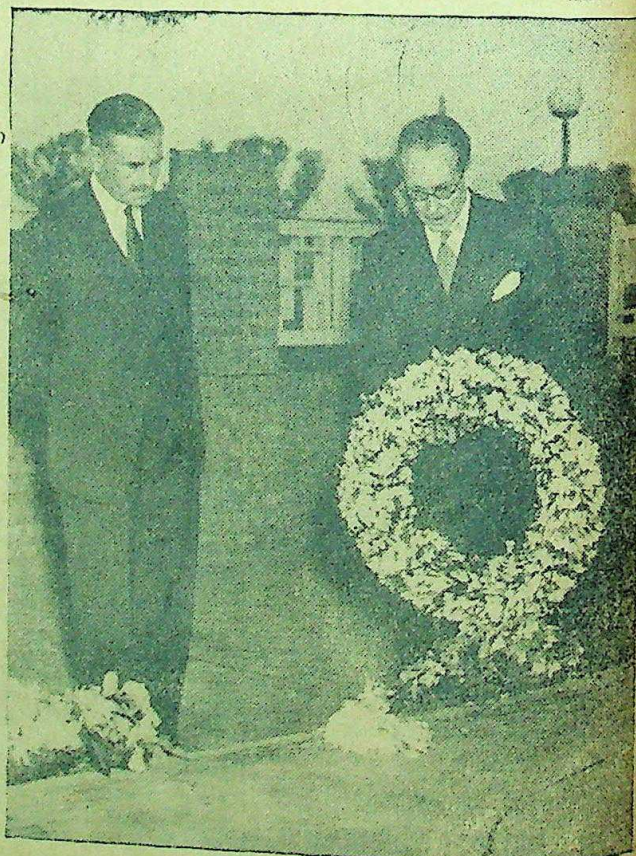
श्री क्लिमि नावेल ब्रेकर, ब्रिटिश उपनिवेश विभाग के मंत्री दिल्ली में।

शादी

लेखक, श्री वीरेन्द्र कुमार खापडे

जीवन में शादी का विशेष महत्व है। स्त्री या पुरुष दोनो के लिए यह परिवर्तनशील है। शादी कैसी होनी चाहिए, किस प्रकार की शादी कौन पसंद करता है, क्या उनकी इच्छा में पूरी होती है, इसी सब समस्या को लेकर इस कहानी में सुन्दर चित्ररण किया गया है। कहानी सुन्दर और पठनीय है।

चारों ओर मन्द-मन्द पवन के झोंको में तारूजटित आकाश मण्डल जगमगा रहा है। शीतल चान्द की रोशनी में तारकाएं प्रफुल्लित हों, मृत्यु लोक को प्रकाश दे रहा हैं, मानों तारकाएं आपस में शान्ति और निस्तब्धता का साम्राज्य फैलाने के लिए स्पर्धा कर रही हैं, और एक दूसरे को अग्रसर होने के लिए उत्साह-वर्धक बातचीत कर रहे हैं। मानव समूह शान्ति से अपने-अपने निवासस्थान पर निद्रा के पाश में जकड़े हुए आराम कर रहे हैं।

रमेश अपने कमरे में कभी आकाश की तरफ देखता कभी एकाग्र दृष्टि से जमीन पर देखता, जड़-हृदय से अपने मन भावों में डुबा हुआ है। उसके मस्तिष्क में किसी गूढ विषय का चिन्तन जारी है। उसके विचार तरंगों में उसके माता-पिता के कहे हुये शब्द गूंजते !

ओह शादी। एक गहरी साँस लेकर वह खड़ा हुआ। उसने शीशे में अपनी सूरत देखी।

रमेश की उम्र लगभग २२ साल की होगी। उसकी आयु बाल्य-अवस्था के अटकलियों का साथ छोड़ कर यौवन के दालान में प्रवेश कर रही थी। मुख पर यौवन की मादकता की झलक थी। तारूण्य का नस नस में तड़फन थी। साथ ही निश्चय और दृढ़ता की गहरी छाया मुख पर दृष्टिगोचर हो रही थी।

वह जीवन संग्राम का नवयोद्धा अपना प्राकृतिक लिवाज पहने, कर्मभूमि की ओर कदम बढ़ा रहा था। था युवक... तरूण युवक !

कपोल पर स्वच्छदता से बिखरे हुए बालकों को संवारते हुए वह मुस्कराया। मुस्कुराहट में खिन्नता थी। विषाद और गंभीरता भावों का मिश्रण था। हृदय में भारी पन था। वह मुस्कुराहट उसके गूढ़ चिंतन की प्रतिनिधि थी। वह चिंतन थी शादी, इस विषय पर कितना महत्व पूर्ण और अर्थ पूर्ण शब्द है शादी।

आकाश में चान्द के साथ तारकाओं की आंख-मिचौनी छिप-छिप कर लज्जा और संकोच भरे नेत्रों से चान्द को छूने को स्पर्धा कर रही थी। वह प्रेम क्रीडा थी। थी भावपूर्ण।

चान्द स्वयं एक रूपेरी बादल में छिप गया। वह झांक रहा था अपने प्रियतमा के तरफ कुतुहूल पूर्ण नजरों से। सर्वत्र भूमण्डल पर हल्का-हल्का प्रकाश छा गया।

इन दोनों का विवाह-संबंध होने ही वाला है।

रमेश बादल के तरफ देख रहा था। उसे देखते हुए भास होने लगा कि, उसके भी हृदय पर चिंतन और विचार-धाराओं की आंख-मिचौनी शुरु है। विचार निराश के [illegible] में छिप रहा है और उसका मन निराशा के निविड अंधकार में भ्रमण कर रहा है। उसके मुँह से अस्पष्ट शब्द निकले—शादी

आज रमेश की पत्नी के देहांत का तीसरा दिन था। वह अपने कमरे में अकेला अपने भूत घटनाओं के स्मृति में डुबा हुआ था। उसे दो साल पहिले की घटनाएं याद आ रही थीं। जिस दिन पिताजी को...सविनय कहा था कि मैं शादी न करुंगा ! आप मुझे क्षमा कीजिये।

बहुत सोचने के बाद उसने यह निर्णय किया था। लेकिन पिताजी के मर्मस्पर्शी शब्दों ने तथा ममता पूर्ण-भावों के उसे विचलित कर दिया था। उसने विरोध किया। लेकिन जब पिताजी ने अश्रु-भरित नेत्रों से आशा-पूर्ण भावों से कहा—अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ। न जाने मेरा दिल क्यों बार-बार यही कह रहा है कि जल्द से तुम्हारी शादी हो जाए। और मेरा आग्रह है कि शादी जल्दी ही कर कर लो। मैं बहू को देखना चाहता हूँ। यह बूढ़ी आखें बहू को देखने के लिए कितनी लालायित हैं (बेचैन हैं)। तुम बचपन से मेरी एक-एक बात मानते आए हो, क्या यह हमारी आखिरी आशा भी पूरी न कर सकोगे।

पिता जी का कहना स्वाभाविक तथा व्यवहारिक ही था। उसमें नई को बात नहीं थी। प्रत्येक पितृ को अपने पुत्र की सन्तान तथा गृह-सौभाग्य देखने की प्रबल इच्छा रहती है। वह स्वाभाविक है। लेकिन रमेश इस बात को विशेष नहीं समझा था। वह अपना दृष्टि-कोण अलग रखता था। उसे अपनी आर्थिक-स्थिति तथा कुटुंबिक अड़चनों की कठिनाइयों का सवाल ज्यादा महत्वपूर्ण महसूस होता था। कारण उसकी आय बहुत कम केवल ६०) रुपया माहवार थी। और घर में ६-७ जीव आश्रित थे। दूसरी बात यह थी कि वह नए ढंग-रंग को पसंद करने वाला था। उसकी होने वाली पत्नी चार दिवालों के अन्दर पुराने ढग से अपना जीवन व्यतीत करे-और यह होना उसके लिए अटल था। कारण कुटुंब के सारे लोग पुराने रहन-सहन के थे। उसकी विचार धाराएं थी कि, जब आदमी दिन रात मेहनत करके कमाता है, तो स्वाभावता यह इच्छा होती है कि उसके परिश्रम का उत्तम पुरस्कार मिले। उसकी सहचारिणी केवल उसकी दासी बन कर पुराने विचारों के सिकचों में पड़ी न रहे। स्त्रियाँ केवल भोजन बनाने, बच्चे पालने, पति-सेवा करने और जिस प्रकार दूसरे चाहें वैसा रहना इसी के लिए नहीं हैं। वरना उसके जीवन का लक्ष इससे भी उंचा है। वे मनुष्य के समस्त सामाजिक और मानसिक विषयों में समान रुप से भाग लेने के अधिकारिणी हैं। उन्हें मनुष्य के भांति स्वतंत्र रहने का भी अधिकार प्राप्त है। जीवन के आमोद प्रमोद के संगिणी बनकर वह अपने प्रिय पति का हाथ पकड़े जीवन पथ आरुढ़ हुए पत्नी को देखना चाहता था। वह अपनी पत्नी को वन्दिनी बनाना नहीं चाहता। इसी लिए उसने अनुरोध किया। लेकिन माता जी के उपयुक्त शब्दों ने उसकी जवान थाम ली। दिल चाहता बहुत कुछ कहे, अपने विचार वंचित होना था, पिता जी की आशाओं का भंग करना यह उसके विचार के दो पहलू बार-बार उसके आखों के सामने नाचने लगे। पिताजी के आशाओं का अपने हाथों चूरा करने में उसका दिल हिचकिचा रहा था। वह अपने अंतरंग में उठे हुए विचार तरंगों, को (समूहकों) किस शब्दों में समझावें—इस विचार में उसकी मनस्थिति विचार सागर में। डुबकियां ले रही थीं। वह अपने विचारों को शब्द रुप में उद्गार करने में पिताजी के समक्ष असमर्थ था। वह पिताजी के मुंह के तरफ केवल देखते ही रह गया।

पिताजी की धारणा और कुछ हो गई। वह समझे, रमेश संकोच कर रहा है। क्यों न करे ? कौन पुत्र अपने पिता के समक्ष संकोच और मर्यादा-रहित होकर इस विषय पर बोलता है। वे चल दिए।

कह सुनकर रमेश की शादी तय हो गई। उसे जबरन सगाई के झमेले में गिरना पड़ा।

दिन पर दिन व्यतीत। हुए एक दिन एक ऐसा भी आया, जिसने पैसों का सवाल उपस्थित किया। पिताजी ने मौका पाकर जिस आफिस में रमेश काम कर रहा था, उस आफिस से तो पैसों की बात पूरी कर आए। और लग्न की घड़ी देखकर लग्न दिवस निश्चित कर दिया।

आठ-एक दिन शादी कोवाकी देखकर रमेश स्वयं मालिक के पास पहुचा। मालिक को देखकर उसका कठ रुद्र से भर गया। मालिक ने उसकी हालत देखकर कहा रमेश क्या बात है, ऐसी कौनसी मुश्किल है जो'......उसके शब्द पूरे होते न होते रुद्र का आवेग बढ़ा और फूटकर सिसकिया भरने लगा। मालिक ने अपना उसकी पीठ पर घुमाते हुए फिर कहा रमेश क्या बात है। रमेश ने आवेग को रोकते हुए कहा—आप जानते हुए मुझे पूछते हैं कि क्या बात है।

आपने इतना भी तनिक नहीं सोचा कि रमेश के घर की क्या परिस्थिति है। घर चलाने के लिए कितनी मुसीबतें पार करता है, इतना जानते हुए भी आप गृहदाह ढकेलना चाहते हैं।

रमेश को सान्त्वना करते हुए मालिक ने कहा—. यदि मानों तो एक बात हो सकती है, तुम्हें जितने रुपए चाहिए ले लो और कहीं मेरे परिचित अन्य स्थान में रहकर एक साल गुजार दो, ताकि यह शादी ही रुक जाए। और उस देवी को कहीं अन्य स्थान दे दें। यह सुनकर रमेश को पहली बात जितना दुःख था उससे दुगना हो गया।

रमेश ने कहा—यदि में कहीं अन्य स्थान जाकर रहूँ। पहली बात यह है कि उस बेचारी लड़की का क्या हाल होगा। कहीं अन्य स्थान भी न दे सकेंगे। समाज से तो आप परिचित हैं ही। दूसरी बात यह है कि माता पिता की जन्म भर के लिए नाक कट जायगी। न मैं ही उन्हें मुँह दिखा सकूंगा न वे ही समाज को मुंह दिखाने के कबिल रहेंगे। कई प्रकार की अनुचित बातें होंगी। ऐसा होने के पहले ही अपनी खुशियां कुर्बान कर माता-पिता की अभिलाषा पूर्ण करके उनकी लाज बचा के मुझे शादी करना बेहतर है।

घर लौटकर रमेश ने शादी के तैयारिओं में उत्सग पूर्ण भाग लेना शुरू किया यह देखकर पिताजी के आनन्द ठिकाना ही न रहा; जिधर-उधर मानों दिवाली ही घर में मनाई ऐसी है। शादी का कार्य क्रम बड़े सफालता के साथ समाप्त हो गया।

शादी हो जाने के तीन महीन बाद अचानक पिताजी को हृदय विकार होकर स्वर्गलोक की आशा हो गयी है। रमेश को इस घटना से बड़ा दुःख हुआ उसका वर्णन करना असमर्थनीय है। वह चिन्तीत हुआ।

रमेश की पत्नी सुन्दर थी। उसे पाकर बहुत आनन्द हुआ था। वह उस से प्रेम करता था, चाहता था। उसके प्रकृतिक सौन्दर्य में कोई विशेष कला भर के लेकिन उसे आर्थिक-परिस्थिति बेचैन करती थी, फिर भी वह उसे शृंगार तथा लावण्य की शोभा बढ़ाने के लिए कोशिश करता वह उसे संकोच रहित हुआ समझता वह कहता—है! देवी मुझसे शर्म करने की अवश्यकता नहीं। परमात्मा सुन्दरता देता है तो चाहता है कि उसका शृंगार भी होता रहे... परन्तु वह बेचारी रमेश के विचारों पर कैसे सहमत हो सकती थी। वह भी चाहती थी कि मैं पति के अनुसार चलने की दृढ़ता करूँ। वह अपने देवता को किसी भांति अप्रसन्न करती। लेकिन उसे अन्य लोगों का भी विचार करना है। वे लोग कैसे बरदास्त कर सकते हैं। अपने सास तथा रमेश से बड़े भाई की पत्नी तथा बहनों का भी लिहाज रखना अवश्य था इस विचार से रमेश के अनुसार वर्णन करने में उसे हिचकिचाहट होती थी। उसे धैर्य न होता था।

वह उनसे छिपकर बनाव शृंगार कर लेती और रमेश को रिझाने का प्रयत्न करती लेकिन यह सब मालूम होता तो उसके शृंगार पर घरवाले तो नाकभौंसिकोड़ते झिड़किया मिलती...वह वह रमेश की प्रेम भरी पूर्ण दृष्टि के लिए झिड़कियां भी सहन करती थी।

आगे कुछ दिनों बाद रमेश की अम्मा तथा अन्य परिवार के लोगों ने उससे बोलना छोड़ दिया। मुहल्ले में तिय परिहास होने लगा। उसे बड़ा कष्ट होता था उस बनविता से उसके ऊपर सबसे गुरुत दोषावरोपण यह था कि उसने रमेश पर कोई मोहनी मंत्र फूंक दिया है, वह उसके इशारों पर चलता है। यथार्थ में बात उलटी थी। यद्यपि वह उन लोगों से बड़ी नम्रता से पेश आती थी।

एक दिन रमेश की भवज ने कहा सबेरे के जलपान के लिए दालमोट बना लेना, परन्तु वह इस बात को भूल गई। कारण रमेश एक नई किताब लाया था। उसके पढ़ने के लिए उसे रोक लिया था। वह दालमोट बना नहीं सकी इस पर रमेश की भावज को क्रोध आया और रमेश के जाने के बाद वह उस कमरे में आकर कड़ककर कहने लगी लो, तुम्हारे पास रहना ही सबसे बड़ा काम है। यह क्या हो गया आजकल तुम किस घमंड में हो, क्या सोचती हो कि मेरा पति कमाता है, तो मैं काम क्यों न मौज करूँ। इस घमंड में न भूलना। तुम्हारा पति लाख कमाएँ लेकिन हम भी घर में कोई हैं। आज वह चार पैसे कमाने लगा है तो तुम्हें मालकिन होने की हवस हो रही है लेकिन उसे पालने-पोसने तुम नहीं आई थी। हम लोगों ने उसकी देखभाल कि और इस योग्य बनाया है। वाह। कल की छोकरी और अभी से इतना गुमान!

रमेश की पत्नी रोने लगी। मुँह से एक बात न निकली। उस समय रमेश कमरे में आ गया था। यह बातें उसने सुनी। उसे बड़ा कष्ट हुआ। रात को जब यह घर आया तो बोला-देखा तुमने भावज का क्रोध। यही अत्याचार है, जिससे स्त्रियों की जिन्दगी में बेचिराग होती है, उसे जिन्दगी पहाड़ सी मालूम हौने लगती है। इन बातों से कितनी वेदना होती है, इनका जानना असंभव है। जीवन, भार-स्वरूप हो जाता है, हृदय जर्जर हो जाता है, और मनुष्य की उन्नति रुक जाती है, हमारे घर में बड़ा अंधेर है। मैं उनका जो ठहरा। उनके सामने मुँह खोलना लज्जा की बात है। उनका मेरे उपर बहुत अधि. कार है। अतां इनके विरुद्ध एक शब्द भी कहना मेरे लिए लज्जा की बात होगी और यही बन्धन तुम्हारे लिए भी है ऐसी दशा में यही उनकी घुड़कियाँ सुनना।

बढ़ते-बढ़ते यह समय आया की रमेश की अम्मा रमेश की पत्नी को मारने लगी। रोज यह व्यवहार सा ही बन गया था।

जब रमेश आफिस से घर लौटता तो यही उसकी पत्नी की शिकायत होती रहती थी। दिन भर आफिस में काम कर लौटता तो रोज यही शिकायतें। उसकी पत्नी में अप्रसन्नता और भय के चित्र दिन पर दिन बढ़ते चले जा रहे थे— उसके मन की कुन्दवना हो रही थी— वह विकसित कलियां जैसे जल प्रकाश वायु के बिना पौधे सूख जाते हैं इस प्रकार मुरझाई सी जा रही थी।

उसकी यह दशा देखकर रमेश को को बड़ा दुःख होता था। वह हमेशा खिन्न तथा निरुत्साह सा रहता था— आफिस में सदैव खिल खिलाकर बातें करने वाला रमेश सदैव मौन धारण किये रहता था— वह उदासी और अप्रसन्नता के दाह में जलाजा रहा था। आफिस के लोगों को बड़ा आश्चर्य होता था रमेश की इस हालत को देखकर। लेकिन वह कैसे जान सकते थे रमेश की दिल की बात को।

एकदिन आफिस छुटने पर लौटा तो क्या देखता है—मा और भावज खाना अलग पका रहे हैं और बेचारी उसकी पत्नी एक कोने में बैठकर रो रही है।

यह देखकर रमेश से न रहा गया। वह अपने चारपांई पर जाकर-फुस फुस कर रोने लगा। इधर घरवाले खाना पकाकर बड़े चाव तथा लगन के साथ हँसा मजाक करते हुए खाना खा रहे थे। जब रमेश ने अपने आंखों देखा उसके मन स्थिति पर भाव उठने लगे— वह पिताजी के याद में रोता। तो कभी कहता— भगवन! मैं कैसे बचूँ ? यह दाह में जला जा रहा हूँ। आज मेरी बुझे बिना बुलाये खाना खा रही। ... मेरे जीवन में यह पहला दिन है।

[इ]स घटना के बाद रमेश की ... का, इनकठोर परिस्थिति का का... गया। तपेदिक बिमारीं से देहांत हो...

जिस दिन की हम घटना लिख... है उस दिक रमेश कमरे में ... अपने भूत घटनाओं के स्मृत में ... हुआ था। उसकी पत्नी की याद ... विकल कर रही थीं। उसको सब घट... याद आकर उन घटनाओं ने उसे ... जैसा बना दिया था। वह सोचता ... इस जीवन का त्याग कर दें। ... नजर सामने दिवाल में बुद्धभगवान ... लगी हुई तसवीर के तरफ गई। ... निर्विकार की वह मूर्ति उपदेश ... रही थी। बुद्धंशरणम गच्छामी— ... शांति........ वह उस तसवीर के ... गया। हाथ जोड़कर बैठ गया। ... में........ मालती जो उसकी ... छः साल की थी दौड़ते हुए क... आई उसने अपने नन्हें नन्हें हाथ ... गले में डाल कर कहने लगी— ... मिट्टी नहीं मारी। रमेश ने जल ... नेत्रों से उसे हसाता वह हंसता ... बालिका निर्विकार चिन्ता से निर्वि... चित्रके गले लिपटी हुई रमेश से ... रही थी। रमेश को उसे देखकर प्रेम ... आवेग बढ़ आया। उसने उसे उठा... उसके कपोल का दीर्घ चूंबन लि... उसके विदीर्ण हृदय पटल परके नि... केभाव धीरे धीरे हंटने लगे और मति... मे एक विचारधारा बहने लगी। व... अपने लिए नहीं बल्कि दूसरों के ... जीना इसलिये ही सच्चा त्याग ...

रंगमंच

क्या यह जनता का मनोरंजन है ?
रणजीत फिल्म कंपनी का 'नजारे' कैसा है?

लेखक, श्री दीनदयाल-दिनेश

फिल्म जगत के सुप्रसिद्ध अभिनेता ईश्वरदास ।

सिनेमा से सम्बन्ध रखने वाले तथा उसके प्रेमी, यह अच्छी तरह जानते हैं, कि पिछले दिनों सुप्रसिद्ध फिल्मी संस्था रणजीत मुव्हीटोन ने हम लोगों के सामने भारतीय संस्कृति को लेकर कई कला पूर्ण चित्रों को पेश किया है। भारतीय फिल्म क्षेत्र में आज तक कोई भी ऐसी संस्था नहीं जिसने चित्रों के निर्माण करने में, उक्त संस्था की बराबरी की हो। सौ से भी अधिक चित्र का निर्माण इस संस्था ने किया है। किन्तु, अब हमें खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि यह संस्था दिन ब दिन उन्नत होने के बजाय गिरती ही जा रही है।

अभी हाल ही में इस संस्था ने नजारे चित्र का निर्माण किया है। इस चित्र की कथा के सिर है न पैर। कथा इस तरह शुरू होती है। सोलापुर के राजकुमार वीरसिंह आखेट के समय अपने साथियों से बिछुड़ जाते हैं। वे एक गांव में पहुँचते हैं। भाग्यवश वह एक इस तरह के मकान में जाते हैं, जहाँ एक बूढ़ा अपना सोलह वर्षीय कुंवारी भतीजी को नाचना गाना सिखाता रहता है। राजकुमार के वहां पहुँचने पर भी उसका नाच गाना जारी ही रहता है; जैसे वह राजकुमार उन्हीं में से एक हो। बूढ़े की भतीजी-बिजली-उस नव आगन्तुक के सामने भी कमर लचका, लचकाकर और आँखे मटका, मटका कर नाचती रहती है। राजकुमार उसके प्रेम-जाल में एक भोले पक्षी की तरह फँस जाता है। वह बिजली के लिये अपना राजपाट छोड़कर, अपने एक मित्र प्रेम की सहायता से एक थिएटर कंपनी खोल देता है। हजारों और लाखों रूपये की वह अपनी सम्पति बर्बाद—बिजली के लिए........ करने लगता है। बिजली भी राजकुमार की कृपा और प्रेम के जाल में फंस जाती है। राजकुमार को अपने घरवालों की फ़िकर नहीं रहती। राजकुमार की मां चाहती हैं, मेरे बेटे की शादी किसी अच्छी, धनवान और इज़्जतदार लड़की के साथ हो। आखिर मां को हार खानी पड़ती है। बस! बिजली राजकुमार की ओर राजकुमार बिजली का।

यही इस चित्र की कथा है। इस चित्र को देखने से यह साफसाफ दिखाई देता है कि इसके दिग्दर्शक महादेव... श्री प्रल्हाद दत्त......... भारतीय गावों की स्थिति से एकदम अपरिचित हैं। गांव की एक लड़की को किसी अजनवी के सामने नाचते देख, ऐसा जान पड़ता है कि दिग्दर्शक महोदय ने जमीन आसमान को एक करने की कोशिश की है। राज़कुमार को तो दिग्दर्शक ने पता नहीं किस जमाने की याद में रखा है। वह न अच्छी तरह बोल सकता है, न चल-सकता है, न कुछ समझ ही सकता है उससे तो कहीं अच्छा होता यदि किसी पागल को ही वहां खड़ा कर दिया जाता क्या भारत वर्ष में ऐसा भी राजकुमार आपने कभी देखा है ? बिजली तो... [illegible]नरी... बिजली है। सभ[illegible]ते हैं कि गांव की लड़कियाँ यूं चंचल प्रकृति की होती हैं, किन्तु उनमे यह नहीं होता कि वे निर्लज्जता के साथ किसी के भी साथ पेश आएं। हमें खेद है कि एक भारतीय दिग्दर्शक के, भारत के ही गांवों की लड़कियों के बारे में ऐसे (भयंकर?) विचार हैं। अच्छा होता यदि उस भोली भाली गांव की लड़की को।

चित्र भर में 'मैं तेरी, तू मेरा' के सिवा और कुछ भी नहीं है। चित्र को जबरदस्ती राष्ट्रीयता की ओर खींच कर अपने दोष छिपाने के नाते, पंडित जवाहर लाल नेहरू और सरदार बल्लभभाई पटेल के चित्र भी दिखाये गये हैं। आज कल के मनोरंजन में यह कला भी काम करने लगी है, कि सारे चित्र में मुहब्बत के राग अलापे जायें और जब प्रेमी प्रेमिका की जीत हो जाय तो हमारे पूजनीय नेताओं को वहां ला खड़ा किया जाए। वाह !

चित्र के संवाद बिलकुल भद्दे हैं। उनमें कोई आकर्षण नहीं। हमें तो सन्देह है कि जो शब्द अभिनेता या अभिनेत्री अपने मुख से निकालते हैं; वे स्वयं भी उस शब्द का अर्थ समझते हैं या नहीं। अरबी फारसी शब्दों की भरमार है। पात्र जो कुछ कहता है, वह अपने लिये नहीं, दर्शक के लिये; जो उस शब्द का अर्थ समझता ही नहीं। वह सोचता है कि पात्र ने...... उस शब्द का प्रयोग शायद ठीक ही किया होगा। ऐसी भाषा किस काम की जो न अपने काम की और न हो किसी दूसरे के काम की। चित्र के गीत श्री राजेन्द्र कृष्ण ने लिखे हैं। गीतों से मालूम होता है कि कविजी को गीत लिखते समय नजारे की कथा का बिलकुल ध्यान नहीं रहा। संगीत निम्न कोटि का ही है। हम श्री बुलोसी रानी से आशा करते हैं कि वे संगीत शास्त्र का कुछ तो अध्ययन करें।

चित्रों के पात्रों में किसी भी अभिनेता ने अच्छा अभिनय नहीं किया। बिजली के रूप में शशिकला का अभिनय बिलकुल अस्वाभाविक है। अभिनय में न भाव है, न आकर्षण। राजकुमार के रूप में सतीश ने अपने आपको निकम्मा साबित कर दिया है। सच्चे और प्रभावपूर्ण अभिनय के लिये चेहरे और अंगों में जबर्दस्ती प्रभाव नहीं पैदा किया जा सकता। प्रेम के रूप में आगा ने अपने पुराने अभिनय की छाप लगाई है। उन्हें तो बस, एक ही बात सूझती है...... उठा और पटक। स्टन्ट चित्रों के से अश्लीलता पूर्ण इशारे करना, किसी भी महिला के साथ इस तरह पेश आना जैसे सारी शर्म बेंचही खाई हो।

फिल्म जगत के सुप्रसिद्ध अभिनेता स्वर्गीय चद्रमोहन।

एक मित्र ने मुझ से कहा—आजकल मनोरजन के लिए ऐसे ही चित्रों की आवश्यकता है। मनोरंजन ? यही मनोरजन है, आंखों को मटका कर गाना ? यही मनोरंजन है, कमर को सौ डेढ़ सौ बार, लचका कर नाचना ? लानत है ऐसे मनोरंजन पर।

साहित्य-चर्चा

राष्ट्रतीर्थ वर्धा और सेवा ग्राम

लेखक, श्री उमाशंकर शुक्ल

प्रकाशक भारतेंदु हिन्दी सिंडीकेट वर्धा। दाम आठ आने।

महात्मा गांधी के निवास स्थान के कारण वर्धा व सेवा ग्राम को बहुत ही महत्व प्राप्त हो गया है और वहां पर अनेकों रचनात्मक संस्थाएं हैं जो दिन रात गांधी जी के कार्य को आगे बढ़ाने में प्रवृत्त हैं सेवाग्राम तो युग युगांतरतक लोगों को स्फूर्ति एवं प्रेरणा देता रहेगा और वह तो महात्मा गांधी जी का अमर स्मारक बन गया है। वह तो राष्ट्रतीर्थ बन गया है और विश्व के कोने कोने से यात्री वहां राष्ट्र पिता को अपना विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करने जाते हैं। बापू की कुटिया आज भी संसार को अपना पावन संदेश सुना रही है। अब तक राष्ट्रतीर्थ वर्धा व सेवाग्राम के सम्बन्ध में कोई पुस्तक नहीं था और न वर्धा की संस्थाओं का अधिकृत परिचय ही लोगों को था। हिन्दी के सुप्रसिद्ध पत्रकार पं० उमाशंकर शुक्ल वर्षों से वर्धा रह रहे हैं और उन्होंने प्रस्तुत पुस्तक लिखकर एक बहुत बड़ी कमी की पूर्ति की है पुस्तक में वर्धा की संस्थाओं तथा सेवा ग्राम की कुटिया के फोटो दे दिये गये हैं— इस वजह से पुस्तक की उपयोगिता बढ़ गई है। आशा है पुस्तक का हिन्दी संसार स्वागत करेगा। पुस्तक का अधिकाधिक प्रचार होना चाहिए। शुक्ल जी का प्रयत्न प्रशंसनीय है।

पुस्तक की छपाई आदि सुन्दर है। पुस्तक के ऊपर बापू का चित्र दिया गया है।

वाटिका विज्ञान

लेखक, श्री भगवान सिंह

चन्देल, साहित्य-रत्न। प्रकाशक-गुप्त ब्रदर्स, मढा धनौरा, मुरादाबाद (उत्तर-प्रान्त। मूल्य।≈), पृष्ठ संख्या ३८, मुख-पृष्ठ पर रंगीन चित्र तथा सादे चित्रों से सज्जित।

प्रस्तुत पुस्तक प्राथमिक शालाओं में कृषि एवं बागवानी के पढ़ने वाले विद्यार्थियों को उक्त विषयक साधारण प्रारम्भिक ज्ञान कराने के हेतु से लिखी गई है।

पूज्य गाँधी जी की "वर्धा-शिक्षा-योजना" आधुनिक शिक्षा के हेतु सर्वोपयोगी पद्धति स्वीकृत हो चुकी है। लेखक के इस योजना द्वारा शालाओं के छात्रों के पाठ्यक्रम को लक्ष्य में देख कर ही इसमें विषय का प्रति पादन किया है।

छोटे छोटे बालक संवाद और कहानी को अधिक रुचि के साथ सुनते हैं। अतः 'वाटिका-विज्ञान' की रचना-शैली इसी सुकर-प्रणाली से ओत-प्रोत है। बीच-बीच में उपयुक्त चित्रों से अलंकृत किया जाकर पुस्तक तथा प्रतिपादित विषय को अधिकार्पित बना दिया है। पाठान्त में विषय को हृदयंगम कराने के लिए तद्विषयक प्रश्न भी लिख दिए गए हैं।

पुस्तक में बालकों को केवल पुस्तकीय ज्ञान पर निर्भरित नहीं किया गया है किन्तु व्यवहारिक ज्ञान दान हेतु भी प्रयत्न किया है इसी लिए प्रत्येक पाठ में ज्ञानात्मक और व्यवहारिक पाठों को अलग-अलग निर्देशित कर दिया गया है।

ज्ञान और कर्म हमारी राष्ट्रीय-शिक्षा की मौलिक सृष्टि है। आधुनिक ग्रामीण वातावरण में इस समन्वयात्मकपद्धति को प्रश्रय प्रदान कराना है। केवल मस्तिकीय व्यायाम हमारे लिए खिलवाड़ की वस्तु बन गया है। अंग्रेजी-शिक्षण का यही दिवालियापन था।

हमारी स्वतंत्रता ने हमें आत्म-निर्भर बनाने का श्रीगणेश कर दिया है। बड़ी प्रसन्नता की बात है कि देश के कोने-कोने में अन्न समस्या और किसान के प्रश्न को हल करने की ओर हिन्दी के लेखक गण अनुदिन आकर्षित होते जा रहे हैं। वाटिका-विज्ञान जैसी मस्तक द्वारा बागवानी सिखाने की प्रवृत्ति बालकों में जाग्रत करना राष्ट्र और कृषि-समस्या सब के लिए हितकर है।

लेखक का प्रयत्न स्तुत्य है। आशा करते हैं कि शाला छात्रों को यह पुस्तक उचित मार्ग दर्शन कराके उन्हें साग भाजी उपजाने की सद्-प्रवृत्ति सिखाएगी। मूल्य और उपयोगिता की दृष्टि से पुस्तक शाला के पाठ्यक्रम में स्थान पाने योग्य है। लेखक मध्य-भारत निवासी है, अतः वहां की शिक्षा संस्था अपने प्राथमिक शालाओं के पाठ्यक्रम में उक्त पुस्तक को स्थान देकर लेखक का उत्साह बढ़ाना चाहिए।

प्रूफ संबंधी नागण्य त्रुटियां हैं, जो आगामी संस्करण में संशोधित की जा सकती हैं।

—रामभरोसे गुप्त, 'साहित्यरत्न' "राकेश"

बापू के आँसू

पूज्य 'बा' की पुण्य स्मृति में

लेखक, श्री शिवचन्द्र नागर एम० ए०

भारत माँ की
साक्षात् प्रतिमा सी
शांति-स्वरुपिणी
आदर्श नारी तुम
पर्वती, सीता
सावित्री, अरुन्धती
तुम थी भारत की
एक मात्र भारती,
बापू के चरण-चिन्ह,
तुम्हारे आराध्य थे
तुम उनके जीवन की
साक्षात् छाया थीं
तुम उनके भावों की
एक मात्र तंत्री
तुम चिर-संगिनी
तुम अच्छी गिरि
भारत के लालों की
एक मात्र जननी
तुम राष्ट्र रानी थीं
मोहन की राधा थीं
सेवा गाँव की
साक्षात् सेवा तुम
अपने बच्चों की
एक मात्र सेवा में
दीपक सी घुल घुल कर
मृत्यु बंधनों को—
तोड़ अमर हो गई
विश्व के कण-कण में
आभा बन सो गई
स्वासों की वीणा के
कोमल से तार तोड़
लौह-श्रृंखलाओं के
कड़े से बंध खोल
मुक्त हो गई तुम

❀ ❀ ❀

बाइस फर्वरी की
रक्तमयी सन्ध्या के
भारता जिर में
अंगारे बरसाये
यों तो प्रति दिन वह
आ कर स्वयं ही
तम की छाया में
विलीन हो जाती थीं
किन्तु आज 'बा' की
जीवन ज्योति को
आँचल में समेट कर
जगती को विषाद की
नाड़ी से ढाँप कर
धीरे धीरे पश्चिम में
चुप विलीन हो गई
देखते ही देखते
माँ तुमछोड़ गई
बच्चों को निराश्रित
अब तुम संध्या में
प्रति दिन चमकती हो
क्षितिज की रेखा पर
अरुण सी साड़ी में
चरखा कात रहीं
दे रही विश्व को
अपनी वाणी
सत्य औ अहिंसा का
अमर संदेश दिव्य।

❀ ❀ ❀

जिन की अंगुली से
विश्व भी हिल उठता
जिनके चरणों पर
जगती झुक जाती
उन्हीं प्रिय बापू के
हृदय से अश्रु बिन्दु
नयनों के कोनों से
छलक नहीं पाया था
धरा की छाती पर
ढुलक नहीं पाया था
किन्तु जनता के
कलित कपोलों से
ढुलक गये हजारों हीं,
मुखर से अश्रु बिंदु
व्यथा के आँसू के
श्रद्धा के फूल थे,
बालक अधीर हो
माँ के वियोग में
अपने वे आँसू
पलकों में छिपा न सके
किन्तु श्री बापू के
हृदय की वेदना
व्यथा और आँसू तो
केवल व शब्द थे
जो उनके हृदय से
'बा' के शव को
कठोर रस्सा से
बँधता हुआ देखकर
स्वयं ही निकल पड़े
"इन को रस्सा से
मत बाँधो,
ऐसे ही रहने दो।"
ये शब्द क्या थे?
अंतरतम व्यथा की
निर्मम सी छाया के
"बा" के प्रेम की
गूढ़ निहित भावना
उर की साकार व्यथा
बापू के आँसू थे।

हमारी दिल्ली की डायरी

अखिल भारतीय हिन्दी परिषद्

पाकिस्तान जाने वालों की संपति का प्रश्न कैसे हल होगा—मशीन से बने हुए मकान कांग्रेस का भविष्य किधर?

(विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

भारत पार्लियामेंट में एक बिल प्रस्तुत हो रहा है जिसके अनुसार दिल्ली में अखिल भारतीय हिंदी परिषद् की स्थापना की जायगी इस परिषद् के लिये सरकार दस लाख की सहायता देगी। हिंदी भाषा में पुस्तकें तेयार करना और हिंदी को एक आधुनिक भाषा बनाना इस परिषद् का कार्य होगा। संसार की भिन्न भिन्न भाषाओं के प्रमुख ग्रंथों का अनुवाद किया जायगा। यह परिषद् एक विश्वविद्यालय का रूप लेगा और यह भारत में इस प्रकार की एक नयी संस्था होगी।

❀ ॐ ❀

पाकिस्तान जाने वाले मुसलमानों की सम्पति के विषय में पार्लमेंट में जो बिल प्रस्तुत किया गया है उस पर गरम गरम बहस हुई। इस का निचोड़ यह है कि भारत सरकार की पाकिस्तान के प्रतिनीति बहुत नरम है। पार्लियामेंट के सदस्यों ने सरकार पर जोर डाला कि वह पाकिस्तान के साथ दृढ़ता और सख्ती का वर्ताव करे।

❀ ❀ ❀

वादविवाद का दूसरा पहलू यह था कि पाकिस्तान से आए हुए हिन्दुओं की सहायता की जाय। यह सुझाय गया कि मुसलमानों की सम्पति बेच कर शरणार्थी हिन्दुओं को रुपया बांट दिया जाए। इस प्रकार ६०० करोड़ रुपया प्राप्त होने की आशा है। हिन्दू २००० करोड़ की सम्पति पाकिस्तान में छोड़ आए हैं। उनको इससे कुछ न कुछ सान्त्वना तो अवश्य मिलेगी। कुछ सदस्यों ने जोर दिया कि उन मुसलमानों की सम्पति भी सरकार को ले लेनी चाहिए जो स्वयं पाकिस्तान चले गए हैं किन्तु अपने कुटुम्ब के कुछ व्यक्ति यही छोड़ गए हैं। जो रुपया वसूल कर उन्हें भेजते रहते हैं। भारत सरकार को चाहिए कि यह रकम पाकिस्तान न जाने दे। मुस्लमान सदस्यों ने बिल को नरम करने का आग्रह किया।

मुसलमानों की सम्पति की रक्षा करना भारत सरकार का कतव्य है किन्तु उसका यह भी कर्तव्य है कि पाकिसतान में स्थित हिन्दुओं की सम्पति की कीमत दिलाने का भी प्रवन्ध करे। पाकिस्तान इस सम्पति को हड़प कर चुका है। जब तक उस के साथ सख्ती का बर्ताव न किया जावेगा। वह न केवल इस सम्पति के बारे में कुछ न करेगा, वरन् पूर्वी पाकिस्तान से भी हिन्दुओं को निकालने की चेष्टा करेगा

यह भी सुझाया गया कि भारत सरकार पाकिस्तान को पानी और बिजली देना बन्द कर दे। विश्वस्त स्थ्रोत से पता चला है कि यह प्रश्न भारत सरकार के विचाराधीन है और कोई बड़ी बात नहीं कि भारत सरकार शीघ्र ही पाकिस्तान को नहरों का पानी और बिजली देना बन्द कर दे।

❀

दिल्ली में मकान बनाने की फैक्ट्री स्थापित कर दी गई है। मकान कब बनने लगेंगे इस के बारे में विचित्र प्रकार के हास्यप्रद अनुमान लगाए जा रहे हैं। सरकार ने निश्चय किया था कि गत जून में यह फैक्ट्री मकान बनाने लगेगी फिर अगस्त मास में आशा दिलाई गई कि अगस्त मास में मकान बनने आरम्भ होंगे। उस के पश्चात् दिसम्बर मास नियत किया गया। अब कहा जाता है कि अगले अप्रेल में मकान बनने अरंभ हो जाएँगे।

भारत में इस प्रकार की यह पहली फैक्ट्री है इसलिए इसकी वार्ता लोगों के लिए मनोरन्जन का विषय बना हुआ है। यदि अप्रेल में मकान बनने लग गए तो फिर किसी सरकारी दफतर को दिल्ली से बाहर भेजने की आवश्यकता न रहेगी।

❀ ❀ ❀

कांग्रेस वर्किंग कमेटी कांग्रेस में सुधार करना चाहती है। इसके लिए ए० आई० सी० सी० (A.I.C.C.) की बैठक दिल्ली में हुई है। यह तो सबने स्वीकार किया है कि कांग्रेस के अधिकांश सदस्य भ्रष्ट हो गए हैं और कांग्रेस में अनेकों त्रुटियाँ आ गयी हैं। कांग्रेस में सुधार सम्भव भी है या नहीं यह प्रश्न राजनैतिक क्षेत्र में बार बार दोहराया जा रहा है। वास्तव में कांग्रेस अपने जीवन के दिन पूरे कर चुकी है। इस की सफलता ने इस को मृत समान कर दिया है और कांग्रेस के मृत शरीर में जीवन डालना संभव प्रतीत नहीं होता। कांग्रेस के कार्य कर्ता न केवल महात्मा गांधी के नियमों को भुला चुके हैं बल्कि उन में से कुछ तो मनुष्यत्व से भी गिर गए हैं। जो कार्य कांग्रेस कर रही थी वह अब भारत सरकार को करना है और वास्तव में कांग्रेस की कोई आवश्यकता अनुभव नहीं की जा रही है। वही कांग्रेस नेता कांग्रेस को बनाए रखना चाहते हैं जो इस से लाभ उठा रहे हैं, ऐसा विचार प्रकट किया जा रहा है। जो संशोधन ए० आई० सी० सी० ने कांग्रेस के विधान में किया है वह अधूरा है।

सचित्र साप्ताहिक 'देशदूत'

संवाददाताओं से निवेदन

संयुक्तप्रांत, मध्यप्रांत, मध्य भारत तथा राजपूताने के संवाद भेजनेवालों से निवेदन है कि वह अपने संवाद संक्षिप्तरूप में ही भेजने का कष्ट करें।

संपादक 'देशदूत'

सम्पादक के नाम चिट्ठियां
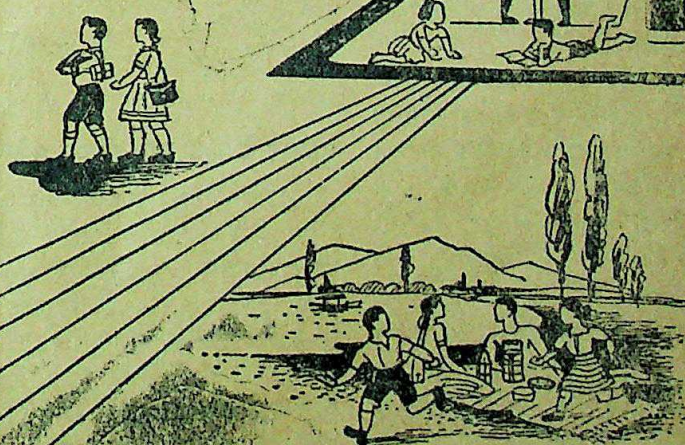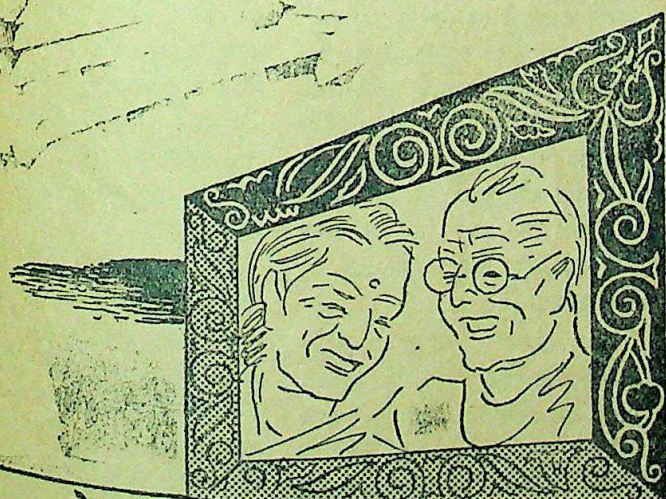
कन्ट्रोल-टैक्स और किसान

आज के कन्ट्रोल और टैक्स ने जितना किसान को चूसा और परेशान किया है उतना अन्य वर्ग को नहीं। देश के पोषक किसान पर जो भार लदा हुआ है उससे उसकी कमर टूटती जाती है और इसी प्रकार यदि यह असहनीय बोझा बढ़ता ही रहा तो फिर इस सोने की मुर्गी का पेट फटा ही समझिये।

ग्रामीण जनता की कठिनाई और परेशानी का नग्न दृश्य उन दफ्तरों में प्रत्यक्ष दृष्टि गोचर होता है जहाँ एक कृषक या मजदूर अपनी आवश्यक सामग्री की प्राप्ति के लिए पटवारी कानूनगो इत्यादि से शिफारशें लिखाता लिखाता कन्ट्रोल के दफ्तर में पहुँचकर "फिर आना" "फिर आना" "नम्बर पर मिलेगा" "नम्बर नहीं आया" के विचित्र नारे सुनकर निराश लौटता है। जबकि शहरी जनता प्रत्येक वस्तु सुभीते से प्राप्त कर पाती है। मजा यह है कि भारत वर्ष की जन संख्या ग्रामों में ही अधिक बसी है परन्तु इन्हीं को जनसंख्या के अनुपात से वस्तुएं दुष्प्राप्य हैं। कन्ट्रोल का सामान व्यक्तिगत रूप से न दिया जाकर अमिरों को दिया जाता है और गरीबों को उनके अधिकारों से वंचित रखा जाता है। कन्ट्रोल के सामान की लिस्ट उठा कर देखने से यह रहस्य भलिभांति प्रकट है कि शहर के निवासी कितना ले भागते हैं और गाँव का रहने वाला कितना कम प्राप्त कर पाता है। यही समस्या चीनी की भी है। गाँव के भोले कृषक अपनी वास्तविक आवश्यकता को भी जिसका वे उत्पादन करते हैं नहीं पूरा कर पाते। तमाम चीनी का अत्यधिक भाग अल्प संख्यक शहरी हजम कर जाते हैं और जाड़े, पाले, गर्मी में मर मिटकर गन्ना उगाने वाला कृषक चीनी की सूरत को भी तरसता है।

एक नया टैक्स "कृषि आय कर" के नाम से प्रचलित है जिसका फार्म भी ऐसा विचित्र तथा कानूनी एंच पेंच का है कि उसके बनवाने में दसों, रुपये कृषक को व्यय करने पड़ते हैं। और धक्के खाकर भी उसकी पूर्ति हो जाय तो सौभग्य।

चूंकि गाँव का मजदूर कन्ट्रोल से वस्तु नहीं पाता अतः कृषक से अत्यधिक मजदूरी मांगता है। कृषक अत्यधिक मंजूरी का भार उसकी पैदा की हुई वस्तु कन्ट्रोल से लेने के कारण सहन नहीं कर पाता। अतः कृषक व मजदूर के आपसी सम्बन्ध कटु होते जा रहे हैं। निर्धन कृषक मजदूरी व टैक्स के भार से घुटने टेकता जा रहा है। सरकार इस स्थिति को समय रहते समझे और इन बेचारे मुसिबत के मारे निर्धन कृषकों को सुख की सांस लेने दे।

सरधना मेरठ, —गनेसीलाल

❀ ❀ ❀

दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार

आजकल भारत में हिन्दी प्रचार बड़े पैमाने पर हो रहा है। कई प्रचारक इस काम में संलग्न हैं। हर एक प्रांत में इसके लिये सामितियां बनवायीं गयीं हैं। दक्षिण भारत के लोग हिन्दी बड़ी खुशी से सीख रहे हैं। मद्रास प्रान्त में एक सभा है जिसका नाम दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा है। इस सभा की महात्मा-गांधी ने उन्नीस सौ अठारह में नींव डाली थी। तब से यह सभा दिन दूने रात सौगुने बढ़ती चली आरही है। सभा के प्रधान मंत्री एम० सत्यनारायण हैं। ये बहुत मिलनसार और सरल हृदय के व्यक्ति हैं। उन की मेहनत से आज मद्रास प्रान्त हिन्दी सीखने में कदम आगे बढ़ा रहा है।

हिन्दी प्रचार के लिये माद्रस प्रांत के कई खास बालकोपयोगी किताबें उन्होंने ही लिखी थीं।

हमारे (मद्रास) प्रांत के लोग ज्यादातर तमिल और तेलुगु बोलते हैं। इस लिये यहाँ लोगों को हिन्दी सीखने में मुश्किल पड़ती है, तो भी यहाँ के लोग अपने उत्साह को खो न बैठ तो विजयवाड़ा, में भी एक हिन्दी प्रचार कार्यालय स्थित है। उस कार्यालय में भी हिन्दी प्रचार के लिये अनगिनत कृषि कर रहीं हैं। बूढ़े आदमी भी बड़े चाव से हिन्दी सीख रहे हैं।

हमारा संतोष उत्तर भारत के भाइयों को बतलाने के लिये हमारे पास विचारसामग्री का अभाव है इसलिये हम आशा करते हैं कि उत्तर भारत के भाई क्षमा करें।

नेल्लूर (मद्रास) —वं० वें० रेड्डी

❀ ❀ ❀

गुरुकुल में नये बालकों का प्रवेश

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी, हरिद्वार में नये बालकों का प्रवेश इस वर्ष स्वर्णजयन्ती के अवसर पर ६ मार्च १९५० २३ फाल्गुन २००६ को होगा। गुरुकुल की उपाधियों को सरकार ने और यूनिवर्सिटियों ने स्वीकार कर लिया है। जो सज्जन अपने बालकों को गुरुकुल में प्रविष्ट कराना चाहते हों वे आचार्य, कुरुकुल कांगड़ी, जिला सहारनपुर, से नियमावली और प्रवेशार्थ प्रार्थनापत्र मंगा कर शीघ्र स्वीकृति प्राप्त कर लें क्योंकि नियत संख्या तक ही यहां बालक प्रविष्ट हो सकते हैं।

—आचार्य

इधर उधर की

चीनी का लेखा-जोखा

१९३५ के चीनी उत्पादन नियमों के अनुसार प्राप्त आंकड़ों के आधार पर कानपुर के इंडियन इंस्टिट्यूट आफ शूगर टेक्नोलोज के डाइरेक्टर ने बताया है कि १५ जनवरी १९५० को समाप्त होने वाले पखवारे में भारत के (जिसमें हैदराबाद भी सम्मिलित है) चीनी के केन्द्रीय कारखानों में चीनी का प्रारम्भिक संग्रह, उत्पादन, निकासी और पखवारे के अन्त में बचा हुआ संग्रह क्रमशः ४१,७२,००० मन, ३५,२२.००० मन, ११,१७,००० मन और ६५,६७,००० मन था। पिछले वर्ष इसी पखवारे के आंकड़े क्रमशः ५७,५३,००० मन, २६,७२,००० मन, १३,०५,००० मन तथा ७१,२०,००० मन थे। उपर्युक्त पखवारे के आंकड़े १३२ करखानों के सम्बन्ध में हैं, और देश की कुल गन्ना पिराई का ६७ प्रतिशत इसमें शामिल है पिछले वर्ष के आंकड़े १२२ कारखानों के संबन्ध में है, और इसमें कुल गन्ना पेरने की शक्ति केवल ६४.७८ प्रतिशत शामिल है।

१ नवम्बर १९४९ से चीनी का कुल उत्पादन ८६,६५,००० मन और निकासी ३२,२८,००० मन हुई, जब कि पिछले वर्ष इस अवधि में ये आंकड़े क्रमश ५७,३५,००० मन और ४८,६४,००० मन थे।

१९४९-५० में, नवम्बर १९४९ से पहले, चीनी का उत्पादन ६१,००० मन था।

❀ ❀ ❀

मिस्र के प्रतिनिधि की प्रिया

लखनऊ में अन्तर्राष्ट्रीय खाद्य व कृषि संगठन की ओर से पशु-वंश सुधार के बारे में १३ राष्ट्रों का जो सम्मेलन हो रहा है उसके सदस्यों के लिए आज सुबह लज्जा सीमाकी नहींरहीं जब कि उन्हीं के एक साथी मिश्री प्रतिनिधि डा० ए० जे० सिदकी ने अत्यन्त विरह-व्याकुलता और दुःख के साथ अपनी "स्थूलांगी प्रेयसी" का जिसे वे अपने साथ नहीं ला सके, वर्णन कर के प्रारम्भ किया।

जब मिश्री प्रतिनिधि अत्यन्त प्रगल्भता से अपनी प्रेयसी के आपाद-मस्तक नख-शिख का वर्णन कर रहे थे तो उनके साथी शर्म के मारे जमीन में गड़े जा रहें थे। डा० सिदकी ने अपनी प्रिया के पूर्ण यौवन का वर्णन करते हुए कहा "अभी वह षोडशी है। उसका यौवन पूर्णता को प्राप्त हो गया है। उसका नाम अमीन है। शायद उसका रूप बहुत सुन्दर नहीं है किन्तु रूप ही क्या एक मात्र सुह[illegible] वस्तु है।"

यह कह कर वे सहसा नाटकी[य] ढंग से रुक गये और फिर बोले: "[illegible] एक बार ब्याहने पर ८७०० पौं[ड] [illegible] देती है और जनाब, दूध भी [illegible] मक्खन और मलाई से भरपूर।" अ[क]स्मात प्रिया गया के इस अद्भुत रह[स्य] दुघाटन से लज्जा टूट गई और सभा [में] स्कूल की कक्षा की तरह बेतहाशा [हँसी] का फव्वारा छूट पड़ा।

बेतार का तार लगेगा

भारतीय डाक और तार विभाग [ने] बंबई, कलकत्ता, दिल्ली और मद्रास [के] बीच बेतार का तार संबन्ध स्थापि[त] करने की योजना स्वीकार की है [और] आवश्यक उपकरण के लिए आर्डर [दे] दिया गया है। जैसे ही उपकरण प्रा[प्त] हो गये, यह संबंध स्थापित कर दि[या] जायेगा। जबसे, दो मास पूर्व, "अ[पने] अपने टेलीफोन के खुद मालिक बनें" की योजनाभी पेश कीगई, तबसे अबत[क] उस मद में १ करोड़ पच्चीस लाख रु[पये] प्राप्त हुए हैं। समस्त भारत में योज[ना] का हार्दिक स्वागत हुआ है। इस [वर्ष] में २००० नये डाक घर खोलने [का] निश्चय किया गया था। उनमें अब[तक] वर तक १५०० डाकघर खोल दिये गये [हैं।] शेष का कार्य आर्थिक कठिनाई के का[रण] स्थापित कर दिया गया।

भारत में कितनी विलाइती ची[ज़ें] आई हैं

भारत और ब्रिटेन के मध्य गत[वर्ष] हुए व्यापार के आंकड़ों के अध्ययन [से] पता चलता है कि भारत १९४[९ में] ब्रिटेन का तीसरा सबसे बड़ा बाजार [था।] इस वर्ष में ब्रिटेन के कुल निर्यात का [[illegible]] प्रतिशत माल भारत आया।

ब्रिटेन से भारत भेजे गये माल [में] मुख्य वस्तुएं मशीनरी, वाहन, बिज[ली] का सामान, रुई का सूत, रासायनि[क] पदार्थ, दवाएं और रंग थीं। १९[४९] में ब्रिटेन ने भारत को ३ करोड़ ६० ला[ख] पौंड की १४००० टन मशीनरी दी [जब] कि इससे पहले वर्ष ३ करोड़ [[illegible]] पौंड की १२१००० टन मशीनरी [दी] गई थी।

इसके मुकाबले में भारत ने ब्रिटे[न] को मुख्यतः पदार्थ और कच्चा मा[ल] भेजा, जिसका स्थान ब्रिटेन के आयात [में] व्यापार की दृष्टि से पांचवा था। भा[रत] द्वारा ब्रिटेन को दी गई अकेली चाय [का] मूल्य ही ४ करोड़ १७ लाख पौंड [था।] यह राशि इससे पिछले वर्ष ब्रिटेन भे[जी] गई चाय के मूल्य से १९ प्रति[शत] अधिक है भारतीय चाय के कुछ निर्या[त] का दो-तिहाई के लगभग भाग ब्रिटे[न] को भेजा गया।

❀ ❀ ❀

पिछले अङ्कों का सारांश

[मोहनलाल, उसका चचेरा भाई तोता और उसकी पत्नी रोनी, साधारण तथा गरीब किसान का जीवन। दो बैल, एक दुधारू भैंस और थोड़ी सी खेती। यही उनका निधि था। खेत पक गया था। मोहनलाल, तोता तथा रोनी ने खेत की कटाई की और खलियान लग गया। जिन्हें खाने का ठिकाना नहीं था, उन्हें आशा हुई कि मड़ाई होने के बाद ही उन्हें दोनों वक्त कम से कम रोटियाँ मिलने लगेंगी और बैलों तथा भैंस को चारा भी कुछ दिनों के लिये हो जायेगा। किन्तु उर्भगम का समय, खलियान में एकाएक जमींदार के सिपाही आ पहुँचे, और जोर-जबरदस्ती करके अनाज के ढेर का तीन हिस्सा बैलगाड़ी पर लाद ले गये। मोहनलाल और रोनी ने दया की प्रार्थना की किन्तु जमींदार के सिपाहियों ने न सुनी। खलियान में अनाज के ढेर का केवल चौथाई भाग वह छोड़ गये। मोहनलाल और रोनी का हृदय भावी चिंता से व्याकुल हो उठा। और फिर.........]

नूरबाई ने गज़ल कोमल स्वरों वाली रामकली रागिनी में गाई थी। मुरकियों के उसने ऐसे झकोरे दिये थे और नृत्य तथा हावभाव ने ऐसा साथ किया था—उन सबको तीक्ष्ण बनाने के लिये सारंगी और तबले की मीठी थाप थी ही कि सादतखाँ ने मन में कसम खाई नूरबाई को इस अदा को कभी न भूलूँगा और मेरी होकर रहेगी।

गायन की समाप्ति पर सच्ची वाह वाहों का ढेर सा लग गया। उन वाह वाहों में एक धीमी आवाज मोहन की भी थी इन सबके ऊपर सादत खाँ के शब्द तैरने से लगे।'

'कमाल किया नूरबाई आज आपने !'

नूरबाई नत मस्तक हुई। आदाब बजाया और खनकते दुए स्वर में बोली। आपने लौंड़ो को बहुत बहुत इज्जत बख्शी।

मोहन ने भी सुना। क्या वह लौंठी ही है, उसको आश्चर्य हुआ।

सादत खाँ के मन में ऊँची से ऊँची लहरें उठ रही थीं। उसने कहा, 'कोई साम नहीं जो इस कमाल के साथ बैठ भी सके।'

'हुजूर है।' नूरबाई नीचे ही नीचे आँख चलाकर और मुस्करा कर गोली।

सादत खाँ की उमंग में और भी जोर मारा। माँगी नूरबाइ दूगा। सिरतक देदूँगा।' सादत खाँ के मुँह से निकला।

सबके चेहरे उत्सुकता औह कुतूहल के साथ नूरबाई की ओर फिर गए। मोहन से सोचा कि एक लौंडी की हजारों सैनिकों का नायक अपना सिर देने के लिये तैयार हैं। ऐसा तो इसके गोत नाचने और रिझाने में कुछ था नहीं।

'कुसूर माफ हो तो अर्ज करूँ नूरबाई में हाथ जोड़ कर कहा।

देर न लगाओ। सादत खाँ बोला।

नूरबाई जरासा खाँसी, जैसे किसी स्वर ने झंकार खाई हो। उतने माँगा:— बादशाह सलामत के सामने एकबार मेरा मुजरा करा दिया जाय। और तो सब हुजूर से पाया ही है।

नूरबाई ध्यान के साथ नीची निगाहों से सादत खाँ को देखने लगी। सादत खाँ ने एक झटका सा खाया। अन्य सरदार दूसरी ओर देखने लगे। सादत खाँ ने जल्दी जल्दी आने वाली साँसों को साधा। हुक्के का एक कश खींचा जिसमें धुँवा नाम मात्र ही को था।

बोला, 'क्या कुछ मुश्किल है?

नूरबाई बाई ने उत्तर दिया, 'वहां मुजरा करन के पहिले गाने वालियों को दरोगा की खुशामद करनी पड़ती है। वह मेरे बस का नहीं। सुनती हूँ हज़रत सलामत संगीत के बड़े ही बारीक पारखी हैं, मैं भी कुछ अपनी बुरी भली कला उनके सामने पेशा करके जानना चाहती हूँ कि मैं इस गहरे समुद्र में कहाँ हूँ।

हुजूर मदद करें।

'करूँगा'। एक आह को दबा कर साहत खाँ ने कहा।

नूरबाई ने धन्यवाद दिया और साहत खाँ की ओर बिना देखे हुए साजिदों के पास चली गई।

एक नर्तकी ने अपनी कला दिखाने की प्रर्थना की।

सादत खाँ ने रूखाई के साथ अस्वीकार किया,—'अभी नहीं ; फिर कभी देखा जायगा। महाफिल समाप्त हो गई।

दिनभर काफी सोलेने के उपरान्त सादत खाँ ने मुहम्मदशाह बादशाह के पास एक साँड़नी सवार द्वारा समाचार भेजा—जहाँ पनाह के कदमों की दुआ से बाजीराव पेशवा की सारी फौज को हरा कर भारत गदरद कर दिया है हजारों दुश्मन मारे गये हजारो नादी में डूब कर मर गए एक हजार से ऊपर कैद करलिए गए ; कई सरदार भी। बाजी राव निकल कर भाग गया। उसके पकड़नेकी कोशिश कर रहा हूँ।

बाजीराव को भी अपनी टुकड़ी की पराजय के साथ ही सादत खाँ के इस डीग भरे पत्र का पता लग गया।

बाजीराव ने उत्तर भार तके अन्य समाचारों के साथ अपने भाई चिमना जी आपा को पूना एक पत्र लिखा मैंने निश्चय कर लिया कि मुगल साम्राज की और झूँठ का अन्तर दिखलाउँगा। जब मराठे दिल्ली के दरबाजे पर पहुँच जायँगे-तब उनकी वह अन्तर सहज ही समझ में आजायगा। दिल्ली को जला कर राख न कर दिया तो बात कहे की।'

सादत के उस पत्र को पाकर बादशाह बहुत प्रसन्न हुया। खिलक मेजी। सादत खाँ अपने कटक को लेकर दिल्ली की ओर बढ़ा। मार्ग में मथुरा पर उसको दिल्ली का वजीर समसुद्दौला अपनी सेना सहित मिल गया। राग रंग और दावते उड़ने लगीं।

क्रमशः

संवाददाताओं के पत्र

आगरा के अखिल भारत वर्षीय पशु रक्षा-सम्मेलन के द्वितीय अधिवेशन की प्रबन्ध सिमति की मीटिंग में निश्चय हुआ हैं कि अ० आ० पशु रक्षा सम्मेलन का द्वितीय अधिवेशन जो १६, २० फरवरी ५० को रामलीला मैदान में होने वाला था, वह कई आवश्यक कारणों से इन तारीखों में नहीं होगा। अब वह २४, २५,२६, मार्च ५० को उसी स्थान पर होगा। उस में पशु प्रद-शिनी,कृषि प्रदर्शनी,स्वदेशी प्रदर्शिनी और कवि सम्मेलन आदि का आयोजन किया गया है।

—प्रेम

कानपुर आयुर्वेद सेवा आश्रम की दातव्य औषधि वितरल योजना के अनु-सार देहातों में मुफ़ दवा बाँटने के केन्द्र खोले जाते हैं। जो महानुभाव इस शुभ कार्य में सहयोग दे सकें वह पत्र लिख कर नियम आदि मालुम कर लें।

बाल मुकुन्द द्विवेदी वैद्य

जयपुर राजस्थान केशिक्षा मंत्रि श्री प्रेमनारायण माथुर ने जयपुर महाराज कालेज के वार्षिकोत्सव पर कल विद्या-र्थियों को पारितोषिक वितरण किया। आपने विद्यार्थियो को बताया कि इस तरह के सम्मेलनों में आकर हम प्रेरणा का आदान प्रदान करते हैं।

जोधपुर डिवीजन के बलून्दा से समाचार मिले हैं कि डाकुओं के एक सशस्त्र गिरोह ने वहां की एक सम्पन्न स्त्री को जीवित जलाकर मार डाला और पचास हजार रुपयों से अधिक मूल्य के जेवर और नकदी रुपया डाकू लूट कर ले गए। इस क्रूर अमानुषीय कांड से आस पास के विस्तार में आतक और भय फैल गया है।

पड़ोस के बीकानेर डिवीजन के डूंगरगढ़ और कोलाही जिलों से समा-चार आए हैं कि इन जिलों में दिन दहाड़े डाकुओं ने दो गावों को लूट लिया और लूट के बाद ऊंटों पर बैठकर डाकू माल लेकर भाग गए। किसी भी अपराधी को गिरफ़ार नहीं किया जा सका है।

राजस्थान में आये दिन पशुतापूर्ण हत्यायों डाको और लूट की घटनाओं का बोल बाला होता जा रहा है और नित्य प्रति भिन्न भिन्न स्थानों से राजस्थान व्यापी अत्याचारपूर्ण कांडों की सूचनाए मिल रही हैं। छोटे छोटे देहातों से गांवों के लोग कस्बों और शहरों की ओर रक्षा के लिए भाग रहे हैं।

—संवाददाता

जोधपुर (डाक से) विश्वस्त सूत्रों के आधार पर ज्ञात हुआ है कि पूरे एक वर्ष कांग्रेस महाधिवेशन की स्वागत समिति ने हिसाब तैयार कर लिया है। यद्यपि हिसाब अभी तक प्रकाशित नहीं किया गया है, परन्तु निकटतम संपर्क से पता चला है कि तीन लाख रूपयों की बचत हुई है।

राजस्थान के होनहार और प्रतिभा शाली छात्र श्री अजीत सिंह भन्डारी अखिल भारतीय चार्टर एकाउन्टेंसी परीक्षा में सर्वप्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए हैं। आप राजस्थान संघ के प्रथम छात्र हैं जिन्हे सफलता का श्रेय मिला है संबंधित अधिकारियों ने आपको गवर्नर जनरल पदक से सम्मानित किया है।

मारवाड बालचर संघ की रैली का समारोह यहाँ के इतिहास में पहली बार ही बड़ा शान दार रहा। स्टेट स्काउंटस कमिश्नर श्री रामचन्द्र जी वामन कुंभारे और प्रचाराध्यक्ष प्रो० लखपत राज जी शाह के अथक परिश्रम स्वरूप रैली का इतना विशाल आयोजन सफल रहा। गृह मन्त्री ने विशेषकर रैली में भाग लिया था!

—संवाददाता

जोधपुर—(डाक से) मारवाड़ बालचर सङ्घ की सोलहवीं सालगिरह बड़ी ही शानदार रही। रेली में मारवाड़ के १५०० बालचरों, १४८ टुपों १६० बालचर अध्यापकों ७० सक्रिय कार्य कर्ताओं, २० चौपासनी बेन्ड के पात्रों ने भाग लिया। अखिरी दिन हजारों लोगो ने बालचरों के कार्यक्रमों को देखा इस दिन राजस्थान सरकार के शिक्षा और गृहमन्त्री प्रेमनारायण मथुरा और श्रम मन्त्री श्री कछावाद प्रधान मेहमान थे।

—संवाददाता

महात्मा जी की समाधि पर

लेखक, प्रभुदयाल विद्यार्थी

हर ३० वीं जनवरी को हिन्द के लिए एक भीषण दुःखदायी दिन था। मनुष्य मात्र के हृदय को कम्पित कर देने वाला था। संसार को उठाने वाला दिन था। पवित्रता की याद दिलाता था। इतिहास का कालिया दिन गिना गया था। हृदय में शोक की काली काली घटाये छाने वाला हृदय उपस्थित था। हृदय मंथन का त्योहार था। अपने कामों पर गौर कर करने की याद दिलाता था गांधी भक्तों के लिए प्रार्थना का पवित्र त्योहार हो गया था। उपवास का दिन है।

बापू हम लोगों से अचानक छीन लिए गये। हिन्दुस्तान के धर्म और इति-हास को ऐसा बदनाम किया गया— फिर ऐसा मौका शायद ही मिले। धर्म के उन्माद में महात्मा का भी बध किया जा सकता है यह अबतक के हिन्दू इति-हास में पढ़ने को नहीं मिला था। सच्चे और परोपकारी महात्मा को भी हिन्दू धर्म के पुजारी और अपने को रक्षक कह लाने वाले गोली चलाकर हत्या कर सकते हैं। यह अब हर साल ३० जन-वरी याद दिलायेगी। सम्प्रदायवादियों के लिए चुनौती का दिन था। संसार के ऐसा कौन साधर्म है जिसमें लिखा होकि सन्तमत्माओं को मार कर धर्म की रक्षा की जावे।

महात्मा जी चले गये। अपनी शान से गये। अपने मिशन को पूरा करके गये। अपने पीछे करोड़ों रोनेवालों को विलखते छोड़ गये। हिन्दुस्तान की अभिलाषा पूरी करके गए। अपने युद्ध का अन्यन्तम पार्ट आदा करके गये।

३० जनवरी ५० को मैंने भी राज घाट नई दिल्ली पर उस महान पवित्र आत्मा की समाधि पर हाथ कते सूतों की माला चढ़ा कर अपने ज़ीवन को कृतार्थ माना। दुनियाँ भर के यात्रियों के लिए राजघाट आज एतिहासिक स्थल बन गया है। हर इन्सान अपने प्यारे बापू की समाधि को कैसे भूल सकता है? राजा से लेकर रंक तक उसकीं समाधि पर फूलों की माला चढ़ाने के लिये होड़ मचाये रहते हैं। राजघाट की भूमि देश विदेश के मनुष्यों को अपनी तरफ खीच लेती है। ३० उस जनवरी ५० को मैंने प्रातःकाल से लेकर शाम तक अपनी आंखों देखा। सबेरे से लेकर शाम तक कई लाख मनुष्यों का झुन्ड आया होगा। हर मनुष्य बड़ी गम्भीरता और पवित्रता से समाधि की परिक्रमा कर के फूलों का गुच्छा राष्ट्रपिता की समाधि पर चढ़ा कर प्रणाम करके अपनी भूलों के लिए क्षमा की भीख मांगता नजर आया।

राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद, पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल आदि भारतीय नेताओं ने बड़ी पवित्रा से समाधि पर फूलों का गुच्छा चढ़ा कर और दोनों हाथों को जोड़ कर बापू को सादर प्रणाम किया। एक घन्टे तक समाधि के पास बैठ कर गीता के १८ अध्यायों का पाठ किया। साथ ही साथ आश्रम में गाये जाने वाले पवित्र भजनों को सुन्दर स्वरों में गाया गया।

बाद को दिल्ली के रचनात्मक कार्य करने वाले और भारतीय नेताओं तथा हिन्द के राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद आदि ने एक साथ राजघाट की प्रार्थना भूमि पर बैठ कर नमस्कार किया। बापू को चर्खा चलाना बहुत ही प्रिय था। इसीलिए सभी लोग एक साथ जमीन पर बैठ कर सूत कात रहे थे। यह दृश्य देखने योग्य था। सब लोगों के चेहरों को देखने से यही मालूम दे रहा था कि मानो हम लोगों ने कितना महान अमूल्य रत्न खो दिया है। ऐसा रत्न खो गया है जो अब शायद सदियों बाद भी न आवे बापू की पवित्र यादों को याद करके सब का हृदय भर आया था। पं० जवाहर लाल जी और राष्ट्रपति के चेहरों से जाहिर हो रहा था कि मानो उनके कन्धों पर कितना भारी बोझ आ गया है जिसे बापू अपनी सरल मुस्कान में गुलाब का फूल बना देते थे। शाम की प्रार्थना में पं० ज़वाहरलाल जी ने कहा कि देश को महात्मा गांधी के बताये मार्ग पर चलना है।

(शेष पृष्ठ ५ के आगे)

प्रगति के लिए पर्याप्त क्षेत्र दिया गया है। हिन्दी भाषा का प्रयोग सर्वथा वर्जित नहीं है। गवालियर के उच्च न्यायालय में अभी तक हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि में कार्य होता आया है। परन्तु नवीन विधान के लागू होने पर गवालियर के उच्चतम न्यायालय में हिन्दीं का प्रयोग वर्जित किया जाना किसी भी दशा में शोभनीय नहीं। ऐसा प्रतीत होता है कि ज़ब संविधान सभा में संविधान के १७ वें अध्याय पर विचार किया जा रहा होगा गवालियर एवं मध्य भारत के प्रतिनिधि सम्भवतः किसी अन्य विचार में उलझे होंगे और यही कारण है कि आज गवालियर के उच्च न्याया-लय के सामने भाषा सम्बन्धी वैधा-निक कठिनाई उत्पन्न हो रही है।

एक ओर तो विधान में यह प्रयत्न किया गया है कि हिंदी के विकास को प्रोत्साहन मिले (धारा ३५१) और दूसरी ओंर उच्च न्यायालयों पर यह प्रतिबन्ध लगाया गया है कि वे अपने अंतिम निर्णय जय-पत्र एवं अन्य आज्ञायें अंग्रेजी में दें परस्पर विरोधी हैं। य[illegible] उचित और न्याय संगत होता यदि विधान निर्माता उन राज्यों को जिनमें हिन्दी का प्रयोग पूर्व से ही होता आ रहा है हिन्दी का प्रयोग करने की स्वाधी-नता प्रदान कर देते जिससे आज। य[illegible] वैधानिक संकट उत्पन्न न होता और हिन्दी को अज्ञात वास न लेना पड़ता [illegible] वीन विधान के अनुसार गवालियर की जनता को और साथ ही साथ राजस्थान के एक भाग की जनता को उस भाषा कोपुनः अपनाना होगा जिसका परित्याग वे अंग्रेजी शासन काल में कर चुके थे।

क्या हमारे माननीय राष्ट्रपति, हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति इस समस्या को इस प्रकार सुलझाने का प्रयत्न करेंगे कि हमें हिन्दी को त्यागने का अवसर न आवे?

Registered No. A—295

प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल। कृष्णा प्रेस, प्रयाग में ... 'देशदूत' कार्यालय प्रयाग, द्वारा प्रकाशित।

सचित्र 'देशदूत'
हिन्दी संसार का लोकप्रिय
साप्ताहिक
र्षिक ७॥)
ति संख्या =)

DESHDOOT
HINDI WEEKLY
Annual Price Rs. 7-8.0
Per Copy Annas Two.
वार्षिक मूल्य ७॥)
एक प्रति का =)

हमारी नई पुस्तकें

संगति

आकाशरंजन मेहता नामी डाक्टर थे। उनकी खासी आमदनी थी। किन्तु उनकी अर्द्धांगिनी सुशिक्षित हेमप्रभा यह समझती थी कि डाक्टर मेहता सिर्फ आविष्कार की धुन में रहते हैं; मेरे पिता के दिये धन से ही गुजर होता है। इससे वह सिर-चढ़ी स्त्री बन गई थी। और डाक्टर मेहता उसकी फटकार सुनकर भी भीगी बिल्ली बने हुए अपने काम में लगे रहते थे। उनका मित्र प्रणयलाल जौहरी कई वर्ष विलायत में रहकर लौटा तो उनसे मिलने आया। उन्होंने हेमप्रभा से उसका परिचय करा दिया। परिचय इतना घनिष्ठ हो गया कि उससे बचने को डा० मेहता आँखों का इलाज कराने के बहाने दूसरे प्रान्त में चले गये। इधर प्रणयलाल का रंग गहरा होता गया। कई महीने बाद डा० मेहता नकली अन्धे बनकर लौटे और इसी रूप में उन्होंने हेमप्रभा के खोये हुए प्रेम पर अधिकार किया। पुस्तक को हाथ में लेकर समाप्त किए बिना पाठक छोड़ना नहीं चाहते। लेखक के विलक्षण कथानक की सृष्टि करके गिरते हुए चरित्र को समुन्नत बनाया है। मूल्य १।।) एक रुपया आठ आने।

यात्री

श्रीयुत पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी बी० ए० ने इस पुस्तक में लिखा है कि हम सभी अनन्त पथ के यात्री हैं। यह जीवन-यात्रा कब आरम्भ हुई और कहाँ इसकी समाप्ति होगी। लेखक ने क्यों लिखूं, जीवन-पथ पर, स्मृति और शिक्षक-जीवन आदि २० शीर्षकों में विभिन्न विषयों पर परिमार्जित भाषा में उच्च विचार प्रगट किये हैं। यात्री अपने ढंग की पुस्तक है। सचित्र आवरण की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २) दो रुपया।

अनातोले फ्रांसकी चुनी हुई कहानियाँ

फ्रांस के इस नामी लेखक की प्रतिभा का अनुमान पाठकों को छाया-सुन्दरी उसका पति, रूप की परी, मदारी, पेरिस की सुन्दरी और माल आदि कहानियों से लगेगा। प्रत्येक कहानी बेजोड़ है। सामाजिक चित्रण सजीव है। ये कहानियाँ पाठकों का मनोरंजन करने के साथ ही उपकार भी करेंगी। मूल्य १) एक रुपया।

हमारे जानवर

लेखक—कुँवर सुरेशसिंह

यह हिन्दी में अपने विषय की पहली पुस्तक है। हम अपने पास-पड़ोस के पालतू जानवरों को जरूर पहचानते हैं। उनकी आदतें और स्वभाव के बारे में भी थोड़ा बहुत जानते हैं, लेकिन इतने ही से क्या हम कह सकते हैं कि हमें सारे पशु-जगत् की जानकारी हो गई है?

इतना ही क्यों, हमें चिड़ियाखाना देखने का भी मौका मिला होगा। लेकिन वहाँ जिस सरसरी निगाह से हमने जानवरों को देखा होगा उनसे भी हम किसी पर विश्वास नहीं दिला सकते कि हमें पशुसमाज का काफी ज्ञान है।

ऐसी दशा में अपने देश के जंगल, पहाड़, बस्तियों और मैदानों में फैले हुए सैकड़ों पशुओं के बारे में तरह तरह की मनोरंजक बातें जानने के लिए एक ही उपाय है कि आप "हमारे जानवर" की एक प्रति आज ही मँगावें। आपको प्रायः सभी जानवरों का सचित्र वर्णन इस पुस्तक में मिलेगा। मूल्य ४)

तुलनात्मक भाषाशास्त्र

(भाषा-विज्ञान)

लेखक, डा० मंगलदेव शास्त्री एम० ए०, डी० फिल०

इसमें तुलनात्मक भाषाशास्त्र के सिद्धांतों का प्रतिपादन तथा संसार की भिन्न-भिन्न भाषाओं के परस्पर सम्बन्ध की सरल और सुबोध व्याख्या है। प्रोफेसर ए० सी० वुलनर, डा० भगवानदास, म० म० गंगानाथ झा और श्री गोपीनाथ कविराज, डा० लक्ष्मणस्वरूप और धीरेन्द्र वर्मा आदि मनीषियों ने और अन्य नामी साहित्यिकों तथा पत्रों ने इसकी प्रशंसा की है। पृष्ठ-संख्या पौने तीन सौ से ऊपर; अच्छा कागज, बढ़िया जिल्द, मूल्य केवल ५)।

अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशन

वनवास

(खण्ड-काव्य)

कवि राजाराम श्रीवास्तव बी० एस०-सी०, वकील ने इस काव्य में मर्यादापुरुषोत्तम रामचन्द्र जी के वनवास का वर्णन बड़ी सुन्दर कविता में किया है। पुस्तक कविताप्रेमियों को मुग्ध कर लेती है। मूल्य ।।।=) चौदह आने।

अद्भुत कथा

इस पुस्तक में ऐसी विचित्र हृदयाकर्षक ११ कहानियाँ हैं जिनको लड़के बड़े चाव से पढ़ेंगे और सुनेंगे। कहानियों से शिक्षा भी मिलेगी। पुस्तक सभी के काम की है। मूल्य १।।) एक रुपया आठ आने।

विषवृक्ष

यह सुप्रसिद्ध उपन्यास रायबहादुर बाबू बंकिमचन्द्र ... ध्याय का बढ़िया उपन्यास है। ... हिन्दी रूपान्तर किया है कृति... सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ... "विषवृक्ष सभी के घर के ... लगा हुआ है। क्षेत्र-भेद से ... में रोग, शोक आदि नानावि... लगते हैं।" इस उपन्यास में ... है कुन्दनन्दिनी जो थोड़ी अ... अनाथ हुई और नगेन्द्र ... आश्रय पाकर उसके रिश्ते... ब्याही गई। फिर सत्रह साल ... में विधवा हो गई। इसके ... नगेन्द्र बाबू ऐसे रीझे कि उस... विधवा-विवाह कर लिया। ... में वर्णित उलझनों में पड़कर ... चकरा जाते हैं। भाषा और ... सभी विचित्र हैं। मूल्य २) दो ...

नवदुर्गा

नवदुर्गा बंगाली पंडित की ... थी। उसका विवाह करने की ... में मां-बाप और बेटी तीनों ... कलकत्ते के लिए चले। रास्ते में ... रेश्वर तीर्थ में दर्शन करने ... ठहर गये। वहाँ के महन्त श्री... चरण पुरी ने नवदुर्गा को प्राप्त ... के लिए जो जाल रचा उसका ... पढ़कर पाठकों को दंग हो ... पड़ता है। अन्त में महन्त का ... चाकर अधरचन्द्र मुखोपाध्याय ... की जूती और मियाँ का सि... कहावत के अनुसार महन्त ... खासी रकम ऐंठकर और न... को विधि से पत्नी बनाकर ... हुआ। लेखक ने महन्त जी ... दुर्गति काशी में लाकर कराई है ... पाठक विस्मित और खिन्न हुए ... न रहेंगे। मूल्य १।) एक रुपया ... आने।

हार या जीत

इस उपन्यास में लेखक ... ब्रजेश्वर वर्मा एम० ए०, डी० ... ने एक देहाती लुहार की अल... बेटी को घटनाक्रम से, अनाथ ... में, देहात से महराजगंज की ... पृथाकुंवरि के आश्रय में पहुँचा ... है। वहाँ रानी की कृपा ... लड़की ने विद्या पढ़ी। फिर इस... गुणों का विकास हुआ जिससे ... सभ्य होकर सम्मान पाता है। ... असहयोग आन्दोलन में सक्रि... लिया और अन्त में कलकत्ता ... नौकरी कर ली। कई पुस्तकें ... विदेश-यात्रा के बाद रानी के ... की प्रार्थना पर उससे विवाह ... उपन्यास की घटनावली, विचार... संघर्ष और चन्दा की नम्र... दृढ़ता सराहने योग्य है। मू... दो रुपये।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

वर्ष १२, संख्या २१] रविवार, २९ जनवरी, १९५०

जनतंत्र के राष्ट्रपति

प्रथम राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद की विशेषताएं

लेखक, श्री उमाशंकर

रस्किन एक स्थान पर कहा है... जीवन में वही अग्रसर हो सकता है, जिसका हृदय मृदुलतर, बुद्धि तीव्रतर, रक्त उष्णतर तथा जिसकी जीवन शक्ति सजीव शान्ति के पथ पर अग्रसर हो रही हो। बाबू के प्रति ये वाक्य अक्षरशः सत्य हैं। आज बाबू बिहार के ही नहीं, देश के प्रमुख शासक हैं। देश उन्हें अपना अध्यात्मि, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक गुरू मान रहा है। उनके व्यक्तित्व की प्रतिक्रियाएं बहुत बड़े क्षेत्रों में हो रही हैं और उनके कार्य और विचार की छाप चारों तरफ देख पड़ने लगी है। देश उनकी ममता, सादगी तथा स्मरण शक्ति से बहुत अधिक प्रभावित हुआ है।

ममता

इसका मुख्य कारण है उनकी ममता। वे बहुत ही अनुकूल व्यक्ति हैं। राजनीति के द्वन्द्व एवं क्षोभपूर्ण जीवन में भी उन्हें मानवता ही मिली है। उनकी सरलता, परिस्थितियों का सामना करने की क्षमता, निर्मल चरित्र, नारी सुलभ भावना, तीव्रबुद्धि, दृढ़ विचार, विरोधियों के लिए उच्च स्थान। ये सभी उनके व्यक्तित्व के निर्माण के तत्व हैं। उन्हीं तत्वों के कारण हमारे बाबू देश के 'बाबू' हो पाये हैं।

उनके जीवन के संपर्क में जो भी व्यक्ति आया...उनके परिवार का अंग बन गया है। वे स्वयं गान्धी जी के सामने जाकर उनके प्रियपुत्र बन गये। बाबू की कार्यशीलता और संलग्नता का उनपर गहरा प्रभाव पड़ा था। उन्होंने अपनी आत्म कथा में लिखा है... राजेन्द्र बाबू की तत्परता ने मुझे वाध्य कर दिया कि उनकी सलाह बिना मैं एक कदम भी न आगे बढ़ूं। आज भारत का कण कण बोल रहा है कि अगर नेहरू जी बापू के कानूनी वारिस हैं तो देशरत्न उनके आध्यात्मिक उत्तराधिकारी।

अपने लोगों के लिये उन्हें काफी ममता है। १९४२ की बात है। बाबू पटना जेल में कैदी थे। पास ही के कमरे में फूलन बाबू भी कैद थे। दोनों मिल नहीं पाते थे। बाबू को इसके लिये खेद नहीं था। मिलना जरूर चाहते थे, पर कैदी थे, जेल के नियमों का पालन कर रहे थे। जेल के अधिकारियों को आदेश मिला...बाबू को, ज़ेल में जो भी सुविधा चाहें, दी जाय। जेल के अधिकारियों का अनुमान था कि बाबू चाहेंगे अपने आरामके लिये कुछ खास चीजें, पर उन्होंने कहा कि मैं कुछ सुविधा नहीं चाहता, बहुत मजे में हूँ, केवल चाहता हूँ...फूलन बाबू मेरे साथ ही रहें। यही सुविधा आप दे सकें तो दे दें।

उन्हीं दिनों की एक अन्य घटना है। जेल में २४ ३० सुद्दा बन्दी थे। प्रायः सभी धनी नेता थे, एक बेचारा साधारण कार्यकर्ता था। एक दिन बाबू ने उस कार्यकर्ता को फटी गंजी और फटे कुर्ते में देखा। बाबूजी की ममता मचल पड़ी। उन्होंने अपने । प्राइवेट. सेक्रेटरी चक्रधर बाबू को बुला कर तथा उक्त कार्यकर्ता की ओर संकेत करते हुए कहा कि उनको कई दिनों से फटा कपड़ा पहनते मैं देख रहा हूँ। उनकी आर्थिक हालत जानते ही हो। अपने पास से कपड़ा मंगवाकर उनके लिये उचित प्रवन्ध कर दो।

स्मरण शक्ति

बाबू की स्मरण शक्ति बहुत ही तीव्र है। विद्यार्थी काल में तो स्मरण शक्ति के लिये बहुत ही प्रसिद्ध थे। कहा जाता है कि एक बार पुस्तक पढ़ लेने के बाद उन्हें दूसरी बार पढ़ने की आवश्यकता नहीं होती थी। उनके विद्यार्थी जीवन के ३२ वर्ष बाद की एक कहानी है। उनके बड़े बेटा मृत्युंजय जी उन दिनों एक विद्यार्थी थे। कोई गणित का प्रश्न हल नहीं हो रहा था। बाबू की स्मरण शक्ति ने साथ दिया वह प्रश्न तीन मिनट में हल हो गया।

वे अपने छोटे२ कार्यकर्ताओं को भी भूल नहीं पाते। एक बार जिसको देख लिया, वह उनके स्मृतिपट पर अंकित हो गया। सन् १९३४ की घटना है। आज के उनके प्राइवेट सेक्रेटरी चक्रधर भाई उन दिनों एक साधारण कार्यकर्ता थे। कभी भी सदाकत आश्रम में नहीं आते थे। केवल एक बार बाबू से १९३० में मिल पाये थे। उन्हें स्वप्न में भी ख्याल नहीं था कि बाबू उन्हें पहचान सकेंगे। जब उन्हें कहा गया कि बाबू के पास सन्देश ले जाओ, तो चक्रधर भाई कुछ घबड़ा गये और उन्हें सरयू बाबू के परिचय पत्र के साथ आना पड़ा। चक्रधर भाई ने कहा है... परिचय पत्र हाथ में ही रह गया। बाबू देखते ही कहने लगे कि...'केने चललह चक्रधर।'

सन् १९४५ की घटना है। बाबू बिहार का दौरा कर रहे थे। ९ नवम्बर की सन्ध्या समय वे मोतीहारी के एक सभा मंच पर बैठे थे। साथ में प्रांत के बड़े बड़े नेता बैठे थे। बाबू की आखें घूमती फिरती 'बत्तखमियाँ' पर जा पड़ीं। उनकी ओर संकेत करते हुए बाबू ने अपने साथियों से कहा 'बत्तखमियां' भी आइल बाड़न। नेताओं को आश्चर्य हुआ कि यह बत्तख मियां कौन'। बाबू उसका स्वयं परिचय देते हुए कहते हैं... यह बत्तखमियां १९१८ के निलहों के अत्याचार के शिकार बने थे और उनके विरोध में जांच कमेटी के सामने उन्होंने एक बयान दिया था।

अभी कल की घटना है। बाबू रांची आये हुए थे। ताना भगत भी बाबू के दर्शन निमित्त गये थे, ताना भगत ने १९२१ की गया कांग्रेस के समय काम किये थे, बाबू ने उनको जल्द ही पहचान लिया।

प्रयाग की ही एक दूसरी घटना है। सदाकत आश्रम का देवता आनन्द-भवन के प्राण नेहरू से मिलने के लिए प्रयाग चला। किसी को खबर नहीं दी गयी कि बाबू प्रयाग जा रहे हैं। गाड़ी काफी रात को वहां पहुँची। उनके प्राइवेट सेक्रेटरी मथुराबाबू की राय हुई कि बाबू स्टेशन पर ही रह जायं या एक अच्छी मोटर गाड़ी पर आनन्द भवन चलें। राजेंद्र बाबू स्टेशन पर रहना नहीं चाहते थे। उन्हें आशंका रहती थी कि लोग उन्हें पहचाँन लेंगे, भीड़ हो जायेगी रही मोटर, उसमें पैसा विशेष अधिक खर्च हो जाने की आशंका थी। इसलिये वे टमटम पर ही आनन्द भवन गये। आनन्द भवन के चौकीदार ने उन्हें एक साधारण कार्यकर्ता समझ कर बाहर के ओसारे में सोने का स्थान दे दिया। उस भेष में बाबू अपने को बहुत देर तक छिपा नहीं सके। उन्हें खांसी का दौरा शुरू हुआ और नेहरू जी की नींद उसके चलते भंग हुई। नौकर पर बिगड़ते हुए बाहर आये और वहां राजेन्द्र बाबू को देख कर दंग रह गये। उनकी सादगी के आगे नेहरू जी की महानता झुक गयी।

आज उनके पवित्र जन्म दिवस पर उनके चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। ईश्वर इन्हें चिरायु बनाये।

जनतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति
डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद।

गीत

लेखक, युगप्रवर्तक कवि 'निराला'

प्रथम बन्दूं पद विनिर्मल, परा पथ पाथेय पुष्कल।
गणित अगणित नूपुरों के
ध्वनित सुन्दर स्वर सुरों के
सुरभि गुंजन नपुरों के, कला निस्तल की समुच्छल।
वासना के विषम शर से
विंधे कोई छुए कर से
शत समुत्सुक उत्स बरसे, गता गाथा हुई उज्वल।
खुली अन्तःकिरण सुन्दर
दिखे गृह, वन, सरित सागर
हंसे खुल कर हार बाहर, अजन जन के बने मंगल।

२६ जनवरी

आत्म चिंतन का पवित्र दिवस

लेखक, श्री उमाशंकर शुक्ल
(—पत्रकार—)

जब तक देश आजाद न हुआ था, सब देशवासी देश को स्वतंत्र करने के लिये कंधे से कंधा भिड़ाकर उत्साह के साथ कार्य करते थे और जब स्वराज्य प्राप्त हो गया तो देश में इस समय सर्वत्र आलस्य, अकर्मण्यता व आपसी मतभेद बढ़ गये हैं और सब पदों की प्राप्ति के लिये व्याकुल हो गये हैं।सब अपने अपने स्वार्थों के लिये आकुल हैं देश की उन्नति की तो सभी बातें करते हैं। किंतु उसके लिये कुछ करते नहीं हैं। आज का जमाना बातों का नहीं किंतु कार्य करने का है। अगर हम यह समझ लें कि देश तो आजाद हो गया, अब हमें क्यों कुछ करना चाहिये सरकार सब ठीक कर लेगी, तो ऐसा सोचना गलत है। बिना जनता के सहयोग के सरकार एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकती और अगर वह बढ़ने का प्रयत्न करेगी तो लड़खड़ा कर गिर जायगी। उस दिन सरदार पटेल ने साफ शब्दों में बंबई की एक विशाल जनसभा में कह दिया है कि—"सबका आपस में और साथ ही सरकार से सहयोग होना चाहिये निंदा से कुछ नहीं होगा, वरन् सभी को अपनी गलतियां देखकर उन्हें सुधारना होगा।"

आज २६ जनवरी का दिन "भारतीय जनतंत्र" का महत्व पूर्ण दिवस है। जानता का राज्य तभी सफल होगा, जब कि जनता उसमें दिलचस्पी ले। एक बार एक अंग्रेज शासक ने लोकमान्य तिलक से पूछा था कि अगर आप लोगों को स्वराज्य मिल जाय तो आप पहला काम क्या करेंगे। तिलक ने जवाब दिया था—"हमारा पहला काम होगा देश की आजादी की रक्षा करने का और बाद में दूसरा काम।" वही बात आज भी लागू है। अभी हमें पूरी आज़ादी कहां मिली है। अभी तो सिर्फ राजनैतिक आजादी प्राप्त हुई है। जब तक हमारी आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक प्रगति नहीं होगी हमें काम करते ही रहना है।

आज के पवित्र दिन आइये हम सब प्रतीज्ञा लें कि हम देश के लिये इमानदारी के साथ कार्य करेंगे। बीस वर्ष पूर्व हमने आज के दिन स्वतंत्रता की प्रतीज्ञा ली थीं और वह प्रति हर साल दुहराते थे—परन्तु आज हमें जो ... निष्ठा के साथ लेना ... अनेकों समस्यायें हमारे सामने हैं, उन्हें हल करने के लिये प्रयत्न करना है। देश की स्वातंत्र्य प्रिय जनता को अपने वर्गीय मतभेदों को दूर करके पारस्परिक सहयोग द्वारा शांति, समृद्धि और प्रगति की ओर अपने जनतंत्रीय राष्ट्र को आगे बढ़ा ले जाना चाहिये। छोटे-मोटे प्रश्नों में पड़े बिना सभी यदि अपना कर्तव्य श्रद्धा करें और काम करें तो हमारी समस्यायें हल हो जायँ। सभी बातों के लिये सरकार पर निर्भर रहना ठीक नहीं देश में अन्न का उत्पादन अधिक हो और मजदूर काम करें—यही आज की मुख्य बात है।

यह निश्चित बात है कि गांधीजी के बताये रास्ते पर चलने में ही हमारा व हमारे देश का कल्याण है परन्तु दुःख की बात तो यह है कि हम गांधी जी को भूलते जा रहे हैं और पश्चिमवाले गांधी जी के रास्ते को अपना रहे हैं। वे लोग गांधी जी के बताये तरीकों के अनुसार अपना कार्य कर रहे हैं।

स्वतंत्रता रूपी इमारत की नींव में शहीदों का खून बह रहा है उनकी इंडिया नींव को मजबूत बनाये हुये हैं। हमें उन अज्ञात लोगों का पता नहीं जिन्होंने देश की आजादी के लिये अपना खून बहाया। क्या हमारा यह कर्तव्य नहीं है कि हम उन अज्ञात व ज्ञात सभी शहीदों के खून की कद्र करें ताकि उनका बहाया खून व्यर्थ न जाय। स्वतन्त्रता रूपी भवन पर अभी हमें मुकुट रखना है। तब कहीं हमारा कार्य पूरा होगा। कोई भी निर्णय करने के पूर्व हमें अच्छी तरह सोचना चाहिये। "भारतीय जनतन्त्र" की स्थापना से हमारा महत्व बहुत ही बढ़ गया है और अन्य देश यह महसूस करने लगे है कि भारत उन्हें शांति का सबक सिखायेगा। भारत ने वर्षों पूर्व संसार को शांति की शिक्षा दी थी और भगवान बुद्ध व महावीर स्वामी ने अपना संदेश सुनाया था। गांधीजी ने संसार को कोई नई चीज नहीं दी किन्तु उन्होंने अपने पूर्व के लोगों की बात नये ढङ्ग से जनता के सामने रखी थी। सत्य, अहिंसा, प्रेम व भाई चारे के द्वारा ही विश्व में शांति की स्थापना हो सकती है। दुनिया में इस समय जो अशांति का वातावरण फैला है, उससे लोग घबड़ा गये हैं और वे भारत की ओर आशा भरी निगाह से देखते हैं।

आज का दिन आत्मचिंतन का दिन है, आज का दिन कुछ कार्य करने के निश्चय का दिन है और आज का दिन कुचले, त्रस्त, गिरे हुये, पीड़ित व भूखों को उठाने का दिन है। मानवता की रक्षा का प्रश्न हमारे सामने है। हर व्यक्ति की सेवायें राष्ट्र चाहता है जो असली ... दूसरों की मिहनत से अपनी तिजोरियां भरते हैं, जो अपने स्वार्थ साधन के लिये राष्ट्र का अहित करते हैं ऐसे व्यक्ति राष्ट्र के दुश्मन हैं ऐसे व्यक्तियों से राष्ट्र आगे बढ़ने के बजाय पीछे हटेगा। २६ जनवरी भारतीयों को मूक संदेश सुना रहा है कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ने के लिये ललकार रहा है और अपनी ऐतिहासिक महत्ता को प्रकट कर रहा है।

आजादी हमें १५ अगस्त ४७ को मिली थी। उस आजादी के नशे में हम इतने बेसुध हो गये कि हमें ख्याल ही नहीं रहा कि हम क्या कर रहे हैं और किधर जा रहे हैं। राष्ट्र पिता गांधीजी की हत्या क्यों हुई क्या इस पर भी हमने कभी विचार किया है? देश पर क्या-क्या आपत्तियां आई और उनसे हमें कैसे मुक्त किया गया यह सब को ज्ञात ही है। देश के नेताओं ने अपनी पूर्ण शक्ति के साथ समस्याओं का सामना किया। आज चारों ओर से एक ही आवाज आ रही है हमारी माँगें पूरी करो। परन्तु कोई ठहरता नहीं है। धीरज हम खो चुके हैं। जनता चाहती तो बहुत कुछ है, पर कार्य करने से वह मुख मोड़ती है और यही कारण है कि राष्ट्र नायक पं० जवाहर लाल जी को हर जगह हर सभाओं में यही बराबर कहना पड़ता है कि देशवासी क्या करें काम करें और खूब काम करें।

आज हमारी दशा गंदले तालाब के समान हो गई हैं संकुचित मनोवृत्ति का त्याग करना बहुत जरूरी है। उदार दृष्टि कोण रखने से हम राष्ट्र का ... कर सकेंगे। सर्वोदय की भावना के अनुसार हमें चलना है सर्वोदय यानी सब का उदय विष्शटों का उदय नहीं।

भारतीय जनतंत्र का आदर्श गांधीवाद युग युग जीवित रहेगा

❀ ❀ पुरातन भारत नवीन चेतना की ओर ❀

लेखक, डाक्टर सोमनाथ गुप्त एम० ए०, पी० एच० डी०

जनतन्त्र भारत का आदर्श गाँधीवाद युग युग तक जीवित रहेगा। यदि भारत अपने प्राचीन आदर्श और सभ्यता को पुनर्जीवित करना चाहता है तो उसे गांधीवाद के तत्वों को ग्रहण करना ही पड़ेगा। इस लेख में विद्वान लेखक गांधीवाद की उपयोगिता की समीक्षा की है, जो विशेष रूप से नया विधान बन जाने पर पाठनीय है। लेख सामयिक और सुन्दर है।

हमारे युग की मांग क्या है? और उसकी पूर्ति कैसे हो सकती है? यह एक प्रश्न है—गंभीर परन्तु उपयोगी, महत्व पूर्ण और मनन योग्य। 'हम' की व्याख्या अब केवल थोड़े से जन-समूह तक नहीं रह गई। इसकी परिधि बढ़ती जाती है। वह केवल एक कुल-विशेष, एक समाज-विशेष, एक प्रान्त-विशेष, एक देश-विशेष तक सीमित नहीं। उसका क्षेत्र केवल एक राजनीतिक दल-विशेष अथवा सरकार-विशेष नहीं। 'हम' केवल एक देश के मजदूरों और किसानों को लेकर ही नहीं चलता और न ही उस में अर्थ-धन के आधार पर विभाजित वर्ग समुदाय की भावना है। यातायात के साधनों, परस्पर आर्थिक-निर्भरता के कारणों और बुद्धिवादी दृष्टिकोण ने, आध्यात्मिक एकत्व के साथ सन्धि करके, उसे विश्व बन्धुत्व के आदर्श-केन्द्र पर ला कर बिठा दिया है इसी स्थिति का नाम रख दिया गया है-अन्तर्राष्ट्रीयता।

परन्तु हमारी सब विचार धारायें और उनके परिणाम स्वरुप होने वाले क्रिया कलाप सभी सापेक्षिक हैं। इन विचार धाराओं में अधिकांश स्वार्थ और अल्पांश परमार्थ। कम से कम आज के युग की यही दशा है। इस स्थिति पर थोड़ा विचार करने की आवश्यकता है तभी हमारे प्रश्न का उत्तर मिल सकेगा।

गत महायुद्ध लड़ा गया था दो बातों के लिए:—

१. किसी एक ही व्यक्ति को समाज पर अपना आदर्श लादने और अपनी मनेमानी करने अथवा कराने का एकछत्र अधिकार नहीं है।

२. प्रत्येक व्यक्ति को खुलकर अपने विचारों को प्रगट करने का अधिकार है और प्रत्येक को बिना किसी अवरोध के ऐसा करने का सुअवसर मिलना चाहिए। राजनीतिक स्वार्थ और आर्थिक दृष्टि से इस महायुद्ध के चाहे अन्य कारण भी हों परन्तु भूभाग का अधिकांश उपरोक्त दो उद्देश्यों की पूर्ति के निमित्त ही इस संग्राम में कूदा था और उसकी जनता को यही विश्वास दिया भी गया था।

आज दशा भिन्न है। विजयी और शक्तिशाली जातियाँ अन्य छोटी जातियों को आत्मसात करने पर तुली हैं। उनके हितों की रक्षा का आश्वासन उन्हें भक्षण करने के प्रयत्नों में परिवर्तित हो गया है। जिस फासिष्ट प्रवृत्ति को रोकने की दुहाई दी गई थी, जनतन्त्रवाद के नाम पर उसी का भयंकर रूप हमारे सामने खड़ा है।

इसमें सन्देह नहीं कि उपरोक्त दोनों प्रश्न के उत्तर ही हमारे युग की मांग है और उन्हीं के समयोचित एवं टिकाऊ उत्तर पर सरकार का भविष्य और विश्व शान्ति अवलम्बित है। प्रत्येक देश की

महात्मा गाँधी

आर्थिक और राजनीतिक स्थिति ने इन प्रश्नों को जटिल बना दिया है परन्तु फिर भी इनका निर्णय तो वरबा ही होगा।

(२)

विश्लेषण करने पर प्रथम प्रश्न का सार है-व्यक्ति उसका उत्तरदायित्व समाज और उसका संगठन तथा व्यक्ति और समाज का परस्पर सम्बन्ध और दूसरे का तत्व है—उपज और उसका न्यायोचित वितरण, व्यक्ति और समाज की शिक्षा, उनका स्वच्छ रहन सहन तथा व्यक्ति एवं समष्टि रूप से विकास करने के समुचित अवसर।

पश्चिमी देशों के अनुसार आदर्श स्थिति लाने के दो साधन है। जनतंत्रवाद—जिसका उच्चतम प्रतिनिधि इंगलैंड की शासन-व्यवस्था है और दूसरा मार्क्सवाद—जिसका प्रतिनिधित्व करने वाली रूस की शासन व्यवस्था है और जिसमें साम्यवाद एवं समाजवाद का विचित्र मिश्रण है!

जनतंत्रवाद—सिद्धान्त की दृष्टि से जनता द्वारा जनता के लिये शासन करने की व्यवस्था है। परन्तु इसे आदर्श रूप में स्थिति रखने के लिए दो बातें आवश्यक हैं। जनता को मानसिक विकास इतना होना चाहिए कि वह अपने हित और अहित से परिचित हो और दूसरा उसके प्रतिनिधि अपने कर्तव्य का पालन किसी दल या वर्ग की सुविधाओं का ध्यान किए बिना सब के हित की कामना से करें। व्यवहृत रूप में इस प्रणाली का जो परिणाम हुआ है वह सबके सामने है। जनतंत्रवाद के नाम पर जिस Inperialism का विकास हुआ और उसके द्वारा शोषण होने पर उन पर आश्रित एवं उनका विश्वास करने वाली जातियों में जो प्रतिक्रिया हुई भारत का स्वतंत्रता आन्दोलन अथवा उपनिवेशों में होने वाला वर्तमान रङ्ग-भेद आन्दोलन-स्वय इस व्यवस्था के कलंक हैं। अतएव जब तक सब जातियों को अपना अपना विकास करने की स्वतंत्रता नहीं मिलती और जब तक दूसरों के स्वार्थों का अब तक शिकार बनी हुई इन जातियों और देशों को निस्वार्थ भाव से ऊंचा उठने में सहायता नहीं दी जाती जनतंत्रवाद का नारा एक थोथी और स्वार्थ पूर्ण व्यवस्था मात्र है। जिनके पास धन है, साधन हैं और जिन्होंने दूसरों के लाभ को हड़प कर अपना कोष भरा है उन्हें कम से कम और नहीं तो प्रायश्चित स्वरूप अपने पड़ोसियों को छोटा भाई समझ कर उन्हें सहायता देनी ही चाहिए। ऐसा करने से भी वह अपने प्रति उस विश्वास को पुनः स्थापित करने में समर्थ हो सकते हैं जो अब उनके ऊपर से उठ गया है।

यह त्याग तभी आ सकता है जब अपने को जनतंत्रवादी कहलाने वाले देश स्वार्थ को छोड़ कर भौतिकता को तिलांजलि देकर आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर हों और अपनी सांसारिक लिप्साओं का त्याग कर परमार्थ की ओर दृष्टि डालें। जब तक सांसारिक वैभव उनकी दृष्टि को आकर्षित करता रहेगा, उनके मन से स्वार्थपरता का निकलना असंभव है? दर्शन की भाषा में यह माया-मोह छूटना चाहिए।

साम्यवादी और समाजवादी व्यवस्था में भी कुछ दोष जन्म जात हैं। धन सम्बन्धी विषमता को शीघ्र मिटाकर शोषित वर्ग में एक मनो-वैज्ञानिक संतुष्टि लाने के लिए साम्यवादी व्यवस्था है। उत्तम व्यवहारिक प्रणाली है, यह सत्य है। इसलिए यह अल्पकालीन व्यवस्था है और इसका आधार अधिक मजबूत नहीं क्यों कि कालांतर में स्वेच्छावादिता का रूप धारण कर दूसरे पर आधिपत्य

रखने की प्रेरक शक्तियाँ हो जाती हैं और फिर नये संघर्ष का श्रीगणेश हो जाता है। व्यक्ति की स्वतंत्रता और समाज का विकास भौतिक आवश्यकता के आधार पर अवलम्बित होने के कारण प्रभुता का रूप धारण कर लेता है और 'प्रभुता पाय न को बौराई' वाली लोकोक्ति सत्य हो जाती है।

समाजवाद में व्यक्ति की अपेक्षा समाज की शक्ति अधिक है और उसका नियंत्रण कभी-कभी इतना होता है कि व्यक्ति उसके नीचे कुचल दिया जाता है! प्रत्येक उद्योग को, प्रत्येक व्यवस्था को राष्ट्रीय कर देना कुछ सीमा तक तो उचित है परन्तु प्रत्येक विकास-नीति में व्यक्ति को समाज के नीचे रखना मानव का अपमान है और उसके स्वाभाविक गुणों के विकास का प्रत्यक्ष अवरोध है।

साम्यवाद उस देश के लिए आवश्यक और उपयोगी है जहां व्यक्तित्व का एक प्रकार से सर्वनाश हो चुका हो—जहां का मानव किसी कारण इतना कुचला गया हो कि वह आत्म-विश्वास ही खो बैठा हो। साम्यवाद उन व्यक्तियों के साथ समानता की स्थिति जो की अन्य प्राणियों की हेय और तुच्छ समझते थे—एक प्रेरणा लेकर आता है, थोड़ी सी देर के लिए 'बड़े' और 'छोटे' के भेदभाव को मिटा कर वह मनुष्यता का संचार करता है, परन्तु सांसारिक पदार्थों का उपभोग ही अपने जीवन 'का लक्ष्य मान कर जब वह पनपने लगता है तो भयंकर रूप धारण कर लेता है। इस भय करता से उसे रोकने का कोई उपाय भी तो होता चाहिए। वह तो मिलेगा जनता के भौतिक विकास में, अतएव साम्यवाद के साथ-साथ मानसिक और आध्यात्मिक आदर्श भी अवश्यक है।

इसी प्रकार जब समाजवाद अपनी समाज-शक्ति के मद में व्यक्ति की स्वतन्त्रता का अपहरण कर बैठता है तो वह 'व्यक्ति' और 'समाज' के सन्तुलन में परस्पर सम्बन्ध की समन्वय भावना का घातक बन कर अप्रिय बन जाता है।

मार्क्स ने मानव का मोल-मान ऊंचा उठाकर उसे एक विशेष आसन पर ला बिठाया है। उसका दर्शन मानव को केवल 'निर्मित' ही नहीं मानता, वह उसे 'निर्माता' भी स्वीकार करता है। मानव निर्माता है अपने समाज का, अपने चारों ओर पाई जाने वाली दुनियां का, 'हम' का। मानव देवी-देवता का अंश नहीं, वह स्वयं विधाता है—बनाने वाला भी और बदलने वाला भी। और यही 'मानव' समाज का अंश है। आधुनिक संसार में रहते हुए हमें 'मानव' के उद्गम को अभी यहीं तक सीमित रखना है। इस अवस्था के आगे बढ़ने पर हम उसके आध्यात्मिक उद्गम को जान सकेंगे।

यह आवश्यक है कि समाज और व्यक्ति के बीच मान-महत्व का सन्तुलन रहे। यह उत्तरदायित्व किसी एक व्यक्ति अथवा कुछ व्यक्तियों पर नहीं छोड़ा जा सकता। वह रह सकता है समस्त जनता के हाथों में।

यदि जनता कोई गलती करेगी भी तो शीघ्र ही सँभाल भी लेगी। व्यष्टि की अपेक्षा समष्टि में त्रुटि को आंकने और सुधारने की क्षमता अधिक सुगमता से कार्यान्वित हो जाती है।

(३)

मार्क्स का दर्शन भौतिकवाद पर अवलम्बित है और यही कारण है कि उसमें आध्यात्मिक पक्ष का अभाव है। वास्तव में जिन देशों के लिये इस दर्शन का निर्माण हुआ उनके वातावरण में वह उपयुक्त है। संभवतः इसीलिये योरुप में उसका प्रचार बढ़ रहा है और आश्चर्य नहीं, कही जाने वाली जनतन्त्रवादी जातियां भी, उसके प्रभाव में आकर अपने रूप को परिवर्तित कर वास्तव में जनतन्त्रवादी बन जावें।

पश्चिमी दुनियां से भारत और एशिया की स्थिति भिन्न है। एशिया की समस्त संस्कृतियां भौतिकवाद पर विकसित नहीं हुई। हिन्दू धर्म के सभी रूप आध्यात्मिक आदर्श पर ही फले फूलें, ईसाई धर्म का प्रचार त्याग सेवा और प्रेम की भावनाओं पर ही अवलम्बित था और इस्लाम का सन्देश भी शांति और मानव की परस्पर समानता का ही सन्देश था।

यह निर्विवाद है कि शांति, क्षमा, त्याग, प्रेम आदि ईश्वरीय गुणों का विकास संसार और उसके वैभव को अपने जीवन का लक्ष्य मान कर नहीं हो सकता। एशिया ने सदैव संसार के आनन्द को क्षणिक बताया है और चिरन्तन आनन्द की प्राप्ति का लक्ष्य एवं साधन सबके सामने रक्खा है। भारत ने इस ओर विशेष सफलता प्राप्त की है। आध्यात्मिक क्षेत्र में वह सदा से सब का सिरमौर रहा है। अपने सदियों की गुलामी और संकटों में यह आत्मवादिता ही उसका संबल रही हैं। अनर्थकारी प्रतिस्पर्धा, ईर्ष्या और द्वेष भारतीयता के स्वाभाविक लक्षण कभी नहीं रहे। अतएव यहां की शासन व्यवस्था, यहां के समाज का संगठन यदि किसी आधार पर हो जाता है तो उसमें आध्यात्मिकता का होना परम आवश्यक है।

यह व्यवस्था व्यक्ति धर्म और समाज-धर्म की मर्यादा को अक्षुण्य मान कर ही की जा सकती है। हमारे सामने प्रश्न भी है कि व्यक्ति और समाज के परस्पर हितों को ध्यान में रखते हुए हमें अपने शासन की व्यवस्था किस दर्शन और विचार धारा पर स्थिर करती है।

हम एकदम पुरानी परम्पराओं पर नहीं जा सकते। वाणिज्य धर्म की नीति व्यक्ति और समाज के लिए समन्वय युक्त होते हुए भी आज की स्थिति हमारे लिये उपयुक्त नहीं है।

कहा जाता है 'हमें वर्ण हीन समाज बनाना है' 'हमें वर्ग-हीन समुदाय की सृष्टि करनी है'। ठीक है, परन्तु इस वर्णहीन और 'वर्ग-हीन' से क्या अभिप्राय है? यही न, कि समाज में 'ब्राह्मण', 'क्षत्रिय', 'शुद्र' नामधारी कोई नहीं रहना चाहिये। और यही न कि 'पूंजी वादी,' 'शोषक' 'शोषित', 'सामन्तवादी,' 'श्रमिक,' 'कृषक' आदि कोई वर्ग नहीं रहना चाहिये। हम मानते हैं इस बात को परन्तु आगे—?... ...?

हमारे नये समाज में भी किसी प्रकार का वर्गीकरण होगा या नहीं? क्या सब प्राणी सब काम करेंगे अथवा अपनी रुचि, अपने विकास और अपनी स्थिति के अनुकूल कुछ एक काम करेंगे कुछ दूसरा? यदि ऐसा होता तो हम उसे किस नाम से पुकारेंगे?

'वादों' के युग में एक विचारधारा के वशीभूत होकर जीवन की वास्तविकताओं को भूला देना उचित नहीं है। अब मानव जागरूक होता जा रहा है, यह प्रचार के आधार पर अपनी अपनी अवश्यकताओं की पूर्ति नहीं चाहता—उसे चाहिये ठोस अवलम्ब।

(४)

गांधीवाद—यदि वह कोई 'वाद' हो सकता है तो—या गांधी जी के क्रियात्मक आदर्शों का अनुगमन हमारे युग के प्रश्न का उत्तर है।

गांधी जी ने अपने जीवन को उदाहरण स्वरूप सबके सामने रखकर जो आदर्श उपस्थित किया उसका सार है;

१. व्यक्ति और व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा—मानव को उन्होंने भी बहुत महत्वपूर्ण स्थान दिया। उसे व्यक्तिगत साधना द्वारा ऊंचे से ऊंचे उठने की प्रेरणा दी। अपनी कमजोरियों को मानकर, उन पर विजय प्राप्त करने का आदर्श सामने रखा। और यह होता है अहिंसा के बल पर।

२. सत्य के आग्रह की प्रतिष्ठा—जो आत्मगत सत्य है उसकी सब प्रकार रक्षा करनी। परन्तु सत्य क्या है? इसका उत्तर बुद्धिवाद और अध्यात्मवाद पर अवलम्बित है। अतएव व्यक्ति को उपयुक्तपात्र बनने के लिए सत्य के स्वरूप को समझने के लिये एक विशेष साधना की आवश्यकता है जिसके बिना वह स्वयं मार्ग द्रष्टा नहीं बन सकता। और इस प्रकार मार्ग द्रष्टा बनकर ही वह सत्य का आग्रह कर सकता है?

३. बुराइयों का उत्तर बुराई करने में नहीं। शत्रु को ईर्षा और द्वेष से नहीं प्रेम और त्याग से वशीभूत करना चाहिये। यह साहस केवल हृदय की शुद्धता और सब प्रकार की निर्भयता से उत्पन्न होता है। और निर्भयता होती है शुद्ध आचरण से सत्य का अनुगमन करने से।

४. व्यक्ति के व्यक्तित्व का पर्यवसान केवल उसके निजी उत्थान में नहीं पर—सेवा में है। सेवा किसी एक ही वर्ग, समुदाय तक सीमित नहीं—वह सब प्रकार के पीड़ितों के लिये है। अतएव अपने से अन्य प्रत्येक व्यक्ति सेवा का अधिकारी है। यही विश्व-बन्धुत्व का मूल उद्गम है?

५. अहिंसा का व्यक्ति से हटकर समस्त क्षेत्रों में व्यवहार।

इस प्रकार गांधी जी का सन्देश मानव को आत्मिक मर्यादा की उच्चतम नैतिक तरणी पर लाकर बिठाता है। ऐसे मनुष्य से न कभी दूसरे के विरोध की आशा हो सकती है, और न किसी अन्य के अधिकार को आत्मसात कर लेने की सम्भावना हो सकती है। जब मानव इस कोटि पर पहुँच जायगा, अन्य विषमता में जो केवल उसके स्वार्थों और दम्भ का परिणाम मात्र होती हैं—अपने आप ही छिन्न भिन्न हो जायेंगी। अपने व्यक्तित्व को सभा—सेवा में विलीन कर डालने वाली भावना 'व्यक्ति' और 'समाज' के समन्वय की भावना है! यह दोनों का प्रथक अस्तित्व ही नहीं रहने देती अतएव वर्ग और वर्ण का प्रश्न ही कहां उठता है। यदि 'छोटे' और 'बड़े' अपने को मनुष्य मानकर मानवता के कल्याण में अपने स्वार्थों का त्याग करते रहें तो विषमता उत्पन्न ही कैसे हो?

गांधी जी का आचार विचार सभी व्यक्ति की प्रतिष्ठा पर अवलम्बित है, अतएव इस दृष्टि से उनके और मार्क्स के दृष्टिकोण के कोई भेद नहीं। भेद है केवल साध्य के स्वरूप और साधन के उपयोग का। उसमें अन्तर होना स्वाभाविक है, क्योंकि एक का आधार भौतिकता है और दूसरे का परमार्थ। भारत के लिये गांधी जी का आदर्श उसकी संस्कृति के अधिक निकट है, परन्तु विश्व को शांति स्थापित करने के लिये अभी आदर्श को अपनाना है। रही आर्थिक विषमता और परस्पर निर्माता की इस विषय में भी गांधी जी—वर्तमान उद्योगी करण के पक्षपाती न होकर प्राचीन भारतीय परम्परा के ही अनुयायी थे। इसका कारण था जिस आदर्श की प्रस्थापना का उन्होंने अदेश दिया वह नियमित आवश्यकताओं, उच्च विचारों और आध्यात्मिक विकास की परम्परा पर ही तो अवलम्बित है न कि पदार्थ विज्ञान द्वारा सुलभ जीवन को वर्तमान सुखी बनाने वाले साधनों पर। मशीन जब तक हमारे शरीर, मन और आत्मा पर अनुशासन करती रहेगी तब तक हम

(शेष पृष्ठ १५ पर)

स्वतन्त्र भारत का नया विधान

क्या भारतीय विधान संसार के विधानों में श्रेष्ठ है ?

लेखिका, कुमारी लाज वरमाणी एम० ए०

भारत का नया विधान २६ जनवरी से कार्यरूप में परिणित हो गया है। अब भारत पूर्ण सत्ताधारी जनतंत्र कहलायेगा। भारतीय विधान कैसा है ? संसार के विधानों की तुलना में इसमें क्या विशेषता है, लेखिका ने बड़ी योग्यता से इन प्रश्नों को स्पष्ट किया है तथा भारतीय विधान की रूप-रेखा प्रस्तुत की है। लेख सामयिक और महत्वपूर्ण है।
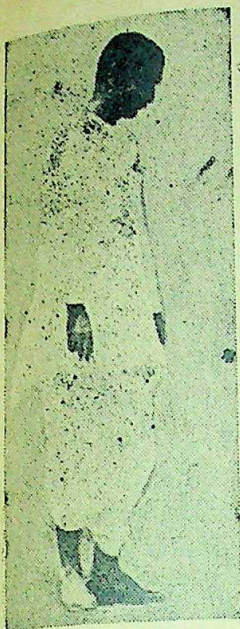
स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रेसिडेंट महामहिम डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद

भारतीय विधान की सबसे पहली विशेषता यह है कि संसार के किसी देश विधान इतना बड़ा नहीं है किसी देश को अपना विधान बनाने में इतना समय नहीं लगा जितना समय भारतीय विधान बनाने में लगा है। भारत सरकार के कानून मन्त्री डा० अम्बेदकर को दावा है, जो बहुत हद तक ठीक है कि इस विधान में संसार के सभी विधानों के गुण हैं और यह चेष्टा की गई है कि इसमें कोई त्रुटि बाकी न रह जाय।

हमारे विधान में ३९५ धाराएँ हैं। और आठ सूचियां हैं। इतना भारी विधान किसी देश का न होगा। वास्तव में जिस परिश्रम और योग्यता से हमारा सविधान तैयार किया गया है उतना किसी देश का नहीं था ? संयुक्त राज्य अमरीका ने बहुत जल्दी में अपना विधान तैयार किया था। वहां तिहत्तर प्रतिनिधि चुने गए थे, किन्तु उनमें से केवल ५५ उपस्थित हुए और उनमें से भी १६ ने संविधान पर हस्ताक्षर नहीं किए। तेरह रियास्तों में से केवल उसे ११ ने स्वीकार किया। इसके निर्माण करने में केवल ७ रियासतों का हाथ था। फ्रांस का विधान तो अब तक भी स्थायी रूप से नहीं बन पाया। वहाँ इतने विधान बने हैं और बिगड़े हैं कि उसे विधान भूमि ही कहना चाहिए। इङ्गलैण्ड में कभी विशेष रूप से विधान बनाया ही नहीं गया। इङ्गलैण्ड का विधान वहां की रूढ़ियों का संग्रह मात्र है। जर्मनी में सन १८४८ में विधान बनाया गया था, किन्तु क्रान्ति के कारण लोकतन्त्र आन्दोलन को दबा दिया गया और उसके साथ ही उस विधान की समाप्ति भी हो गई। सन् १९२१ में जो विधान बना उसे नाजी पार्टी ने १९२३ में समाप्त कर दिया। आयरलैण्ड, केनेडा, आस्ट्रेलिया और दक्षिणी अफ्रीका में भी विधान बनाए गए, किन्तु उनमें वे खूबियां नहीं, जो हमारे विधान में हैं। नियमित विधान बनाने वाला सबसे पहला देश संयुक्त राष्ट्र अमरीका था। इसी से भारतीय विधान परिषद ने प्रेरणा ली है। भारत में भी संयुक्त राज्य अमरीका की भांति प्रधान (राष्ट्रपति) होगा और हमारा केन्द्रीय शासन अमरीका की भांति संघ शासन होगा। विधान का मसविदा देखने से प्रतीत होता है कि हमने प्रेरणा अवश्य अमरीका से ली है। किन्तु इसका आधार स्पष्टत: बेलजीयम के विधान के मौलिक सिद्धान्तों पर है। बेलिजियम के विधान में व्यक्तियों को पूर्ण स्वतन्त्रता और उनके व्यक्तिगत अधिकारों को शाश्वत माना है, जिन्हें कोई कानून छीन नहीं सकता। बेलजियम में व्यवस्थापक और न्याय विभाग अलग अलग हैं। और दोनों पूर्ण रूप से सर्वोपरि हैं। वहां की व्यवस्थापिका सभा के दो सदन हैं उनका 'प्रधान' भी आरम्भ में चुना गया था, किन्तु बेलजियम वालों ने देखा कि किसी राजा को प्रधान बनाना अधिक उपयोगी रहेगा उसे बार बार चुनने की जरूरत न रहेगी यह उपाधि पीढ़ी दर पीढ़ी चली जायगी, किन्तु वहां के राजा के अधिकार बहुत सीमित हैं। उसकी किसी आज्ञा का तब तक पालन नहीं होता जब तक उस पर किसी मंत्री के हस्ताक्षर नहीं हो जाते। बेलजियम के विधान की एक और खूबी यह है कि उसमें २६७०कम्यून अर्थात् पंचायतों के अस्तित्व को स्वीकार किया गया है। पंचायतों की प्रथा बेलजियम में १५ वीं शताब्दी से भी पूर्व से है। यहां पर पंचायते केन्द्रीय सरकार के शाखाएँ नहीं, वे छोटे छोटे स्वतन्त्र राज्य हैं, बेलिजियम एक छोटा सा देश है और उसका विधान १८३१ मे बना था, किन्तु फिर भी यह इतना उत्तम है कि योरप के सभी देशों ने इसे अपने विधान का आधार बनाया है।

भारतीय विधान की विशेषताएँ ये हैं। हमारे देश का प्रमुख अधिकारी प्रधान होगा, पर यह प्रधान अमरीका की भाँति न होगा। अमरीका में प्रधान के लिए अपने मन्त्रियों की सम्मति लेना अनिवार्य नहीं है। भारत के प्रधान को साधारणत: अपने मन्त्रियों की हरेक बात माननी होगी। दूसरा अन्तर यह है कि भारत मन्त्री जनता के प्रति उत्तरदयी होंगे। अमरीका में ऐसा नहीं, वहां पर हर दूसरे साल निर्वाचन द्वारा यह देखा जाता है कि अधिकारियों ने पूरी जिम्मेवारी से काम किया है या नहीं, हमारे यहां इसकी जांच प्रतिदिन हो सकेगी। किसी समय भी पार्लिमेन्ट में प्रश्न पूछे जा सकेंगे, या मन्त्री मण्डल के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव पास किया जा सकेगा। इस बात में हमारा विधान इङ्गलैंड के विधान से मिलता है।

भारतीय विधान के अनुसार हमारे देश भारत इंडिया कहा जायगा। भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी होगी और लिपि देवनगरी।

केन्द्र और घटक इकाइयों का एक अत्यंत विवादास्पद विषय रहा है १९३०-३१ की गोलमेज कांफ्रेंस से इस पर गम्भीर विवाद होता रहा मुस्लिम नेता हिन्दुओं के बहुमत शासन को प्रभाव शून्य करने के लिए प्रान्तीय स्वाराज्य की माँग करते थे और अग्रेज सरकार भी केन्द्र पर अपना प्रभाव रखने तथा जनता को सतुष्ट करने के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए तथा प्रान्तों के परस्पर संस्कृति, आर्थिक भेद देखते हुए प्रान्तीय स्वराज्य को पसन्द करती थी। संघ विधान का निश्चय सन् १९३५ के विधान की विशेषता थी। स्वतन्त्रता प्राप्ति तक प्रायः सभी राजनीतिज्ञ प्रान्तों को अधिकाधिक अधिकार देने के समर्थक थे, पर मुस्लिम बहुत प्रान्तों के पृथक हो जाने तथा प्रान्तो में संघर्ष छिड़ जाने के बाद केन्द्र को बलवान बनाने की धारणा ने जोर पकड़ा। बहुत विवाद के बाद विधान में देश को संघीय रूप देते हुए प्रांतों वा केन्द्र के सम्बन्ध इस तरह रखे गए हैं।

(१) केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभा सारे भारत के लिए कानून बनायेगी और प्रान्तीय सभा केवल उस प्रान्त के लिए।

(२) कोई प्रान्तीय कानून केन्द्रीय कानून को रद्द नहीं कर सकेगा।

(३) निश्चित विषयों पर जिनक विवरण दिया गया है। केवल केन्द्रीय सभा ही कानून बना सकेगी। प्रान्तीय सभा जिन विषयों पर कानून बना सकेगी, भी नियत और निश्चित होंगे।

भारत के लोकप्रिय नेता पंडित नेहरू।

(४) हाईकोर्ट के बारे में विधान बनाने और उसके अधिकारों को नियत करने की जिम्मेवारी भी केन्द्र पर होगी।

(५) केन्द्रीय सरकार और प्रान्तीय सरकारों के समझौता द्वारा नियत किए जायेंगे। इसे तोड़ने वाले को इसकी क्षति पूर्ति करनी होगी।

(६) हर प्रान्त का प्रबन्ध केन्द्रीय सभा के बनाए हुए कानून के अनुसार होगा और कोई प्रान्तीय सभा अपनी प्रबन्ध शक्ति को इस प्रकार प्रयोग में नहीं लायगी की उससे केन्द्रीय कानूनों का उलंघन हो।

भारत जैसे देश के लिए केन्द्र को शक्तिशाली बनाना अति आवश्यक है फिर भी लोकतन्त्र के सिद्धान्तों को सामने रखकर पूरा-पूरा प्रयत्न किया गया है कि सत्ता विकेन्द्रीत रहे, जनता के हाथ में रहे।

किसी भी विधान में नागरिकों के मौलिक अधिकार बहुत महत्वपूर्ण होते हैं, अनेक देशों में इन्हीं अधिकारों के लिए जानता ने बड़ी-बड़ी राजनैतिक क्रांतियां की हैं। भारत के विधान में नागरिकों के निम्नलिखित अधिकारों की घोषणा की गई है।

(१) प्रत्येक व्यक्ति को अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति पर पूरा-पूरा अधिकार होगा। यदि सरकार यह सम्पत्ति लेना चाहेगी तो इसके लिए इसे उचित क्षति पूर्ण करनी पड़ेगी। इस धारा द्वारा व्यक्तिगत पूंजी व पूंजीवाद को स्वीकार कर लिया गया है।

(२) व्यक्ति को राज्य की ओर से जीविका-उपार्जन के साधन दिए जायेंगे।

(३) देश की उपज पर सब भारतीयों का समान अधिकार होगा।

(४) आर्थिक पद्धति इस प्रकार स्थापित की जायगी कि सम्पत्ति एक

(शेष पृष्ठ १६ पर)

आर्थिक स्वतंत्रता की ओर

स्वतंत्र नागरिक के उत्तरदायित्व का अनुभव कब कीजिएगा ?

लेखक, माननीय पंडित केशवदेव मालवीय
(विकास तथा उद्योग सचिव, युक्त प्रांत)

भारत को स्वाधीनता प्राप्त हो गई किन्तु अभी आर्थिक स्वतंत्रता हम पूर्ण रूप से अभी प्राप्त नहीं कर सके हैं। राष्ट्र की आर्थिक स्थिति ठीक होने के क्या उपाय हैं अथवा उसे आर्थिक स्वतंत्रता कैसे प्राप्त हो सकती है, इसी संबंध में लेखक ने इस विचार पूर्ण लेख में प्रकाश डाला है। लेख सामयिक और पठनीय है।

हमें स्वतंत्र हुए प्रायः २॥ वर्ष हो गये। अब आज हमारे देश में पूर्ण प्रजातंत्र की स्थापना होने जा रही है परन्तु हमारे चेहरों पर स्वातन्त्र्य जन्य सुख और सम्पन्नता की झलक का अभाव है। हम जनता को किसी न किसी अभाव की शिकायत करते और वर्तमान शासन की आलोचना करते पाते हैं। इसका एक प्रधान कारण यह है कि सदियों की गुलामी के कारण जनता की मनोवृत्ति हर कार्य के लिए सरकार पर निर्भर रहने की हो गयी है। उसने स्वतंत्रता द्वारा अपने ऊपर आयी हुई स्वतंत्र नागरिक की जिम्मेदारी को अनुभव नहीं किया है। हमारे पूर्व शासकों ने बड़ी निर्ममता के साथ हमारे देश का शोषण किया और हमें उजड़ा हुआ घर मिला।

अब हमें अपने देश का नये सिरे से निर्माण करना है। राजनीतिक आजादी के बाद देश के लिये आर्थिक आजादी प्राप्त करनी है। हमें अपनी जनता अपने किसान और मजदूरों को सभी प्रकार के शोषणों से मुक्ति दिलानी है।

देश की आर्थिक समृद्धि का पूंजीवाद एक पुराना साधन है परन्तु उसमें जनता का शोषण होता है। सरकार द्वारा दी जानेवाली सुविधाओं का लाभ एक वर्ग विशेष को ही मिलता है। हमारे किसान और मजदूर भी यदि व्यक्तिगत रूप से कोई छोटे उद्योग धंधे करते हैं तो उनमें भी आगे चलकर पूंजीवाद की गंध आ ही जाती है। इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत रूप से छोटे उद्योग धंधे करने की पद्धति अपनाने से यह संभव नहीं है कि सरकारी सुविधाओं का लाभ सारा समाज उठा सके। परन्तु यदि हमारी जनता मिल जुलकर पंचायती ढंग से काम करने की अपनी पुरानी पद्धति अपना ले तो सारी दिक्कतें आसान हो जाये। सरकारी सुविधायें भी ऐसे संगठन द्वारा हर व्यक्ति तक पहुँच सकती हैं और सारे समाज तथा राष्ट्र का हित हो सकता है। यही मिलजुल कर काम करने की पद्धति सहकारिता है जो एक आदर्श व्यवस्था है। इसमें समाज का हर सदस्य अपनी स्वतंत्र आवाज उठा सकता है और देश के निर्माण में अपने उत्तर दायित्व को निभा सकता है। इसीलिए हमारे विधान निर्माताओं ने स्वतंत्र भारत का लक्ष्य ही सहकारी प्रजातंत्र निर्धारित किया है।

अपने प्रांत में हमारी सरकार ने सन् १९४६ ई० में पुनः पदग्रहण करने पर जनहित की योजनाओं पर विचार किया और सुधार योजनाओं का अधिकाधिक भार जनता को ही सौंपने का निश्चय किया। सारी विकास योजनाओं की आधारशिला सहकारी प्रजातंत्र पर ही रखी गई। कृषि-प्रधान देश भारत की आर्थिक समृद्धि में वृद्धि कृषि पद्धति में सुधार और उसके लिए आवश्यक साधनों को जुटाने, उत्पादक को अपने उत्पादन की समुचित कीमत दिलाने व किसान की अतिरिक्त आय के साधनों की व्यवस्था करने तथा उसकी आवश्यकता की वस्तुओं का वितरण करने से ही हो सकती है। किसान के जीवन में चहुर्दिक विकास लाने में प्रयत्नशील बहुधंधी सहकारी समितियों की योजना का यही आधार है। नयी योजनानुसार हर बीज-भंडार को केन्द्र मानकर उसके इर्द-गिर्द के १०,१५ गांवों का विकास

भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू एक सभा में।

क्षेत्र बनाया गया और उनमें बहुधंधी समितियां गठित की गयीं। हर विकास क्षेत्र की समितियों का एक यूनियन बनाया गया जो जिला फेडरेशन से सम्बद्ध हो रहे हैं। और इस भांति प्रांत का गांव गांव सहकारी शृंखला में आबद्ध हो रहा है। अभी तो ये समितियां और संघ कृषि उत्पादन की वृद्धि पर ही जोर दे रहे हैं और इसके लिये सुधरे किस्म के बीज, खाद और खेती के उन्नतिशील औजार आदि वितरण किये जाते हैं। परन्तु आगे चलकर गल्ला तथा अन्य उत्पादनों की सामूहिक बिक्री पशुओं की नस्ल में सुधार, कुटीर उद्योगों का संगठन आदि सभी उन्नतिशील कार्य इन्हीं संघों और समितियों द्वारा किये जायेंगे। अब तक प्रांत में १२०० विकास क्षेत्र बनाकर [illegible] गांवों में बहुधंधी सहकारी समितियों की स्थापना की जा चुकी है।

देश की शासन व्यवस्था में जनता अपना उत्तरदायित्व समझें और अपने को स्वतंत्र तथा स्वयं अपना भाग्य निर्माता अनुभव करे इसलिये कृषि विभाग द्वारा संचालित ५६७ बीज गोदाम जिनकी कीमत करीब २ करोड़ रुपये के है विकास क्षेत्रीय संघों को सौंपने के लिये सरकार ने प्रांतीय मार्केटिंग फेडरेशन को सौंप दिया। इन समितियों में जनता की दिलचस्पी और उनके कार्य का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि सन् १९४८-४९ ई० में ३८४ नये बीज भंडार खुले। और पुराने चालू भंडारों ने १३ लाख मन बीज और काफी खाद तथा खेतिहर औजार वितरित किये। बीज की वसूली भी बहुत ही संतोषजनक रही। इन समितियों और संघों ने कपड़ा और कहीं कहीं नमक, मिट्टी का तेल, सीमेंट, आदि आवश्यक वस्तुओं को वितरण भी किया है और कर रही है।

प्रांत में लगभग २० हजार गांवों में गन्ने की खेती में सुधार करने और उसकी बिक्री की समुचित व्यवस्था करने के लिये गन्ने की समितियां हैं जिनके करीब १० लाख सदस्य हैं। ये समितियां अपने सदस्यों को अच्छे किस्म के गन्ने का बीज और खाद वितरित करती हैं। गत वर्ष उन्होंने १५ लाख मन बीज, ७ लाख मन खाद और बहुत औजार वितरित किये तथा २० करो[illegible] की कीमत का गन्ना मिलों को पहुँचाया। उनकी कारोबारी पूंजी १ करोड़ [illegible] लाख है जिसमें ८० लाख तो उनकी खुद की है।

इस भांति छोटे रकबे के छितरे हुए खेतों की चकबन्दी करने के लिए पश्चिमी जिलों में लगभग ३५० समितियां काम कर रही हैं जिन्होंने अब तक लगभग १॥ लाख एकड़ भूमि की चकबन्दी करके अलाभकर जोतों की समस्या हल कर दी है।

छोटे अलाभकर रकबों की चकबन्दी और मिलजुल कर पंचायती ढंग से कृषि साधन जुटाने की बहुधंधी समितियों से व्यक्तिगत रूप से की जाने वाली खेती के उत्पादन में वृद्धि हो जाती है परन्तु कुछ हालतों में मिलजुल कर सहकारी ढंग से खेती करना भी उपयोगी देखा जाता है। यह हमारे देश के लिए नई चीज है। हमारे प्रान्त के बहुत बड़े होने के कारण इसमें जलवायु और भूमि सम्बन्धी स्थितियों में भारी विभिन्नता है इसलिए अपने देश की परिस्थितियों के अनुकूल इसका अध्ययन करने के लिए विभिन्न स्थितियों में इसके प्रयोगों की आवश्यकता है। मेरठ जिले के गं[illegible] सैनिकों को बसाने के लिए द[illegible] झांसी जिले के दो गाँवों में सहकारी कृषि समितियां गठित कर सहकारी खेती शुरू की गयी जिसका परिणाम बहुत ही उत्साहवर्द्धक रहा। इन स्थानों में प्राप्त अनुभवों की पृष्ठभूमि पर अन्य स्थानों में भी सहकारी खेती का शुरू किया जायेगा।

शहरों में शुद्ध दूध और घी का अभाव दिन पर दिन बढ़ रहा है। दूसरे उसके उत्पादन में वृद्धि ग्रामीणों की आर्थिक उन्नति [illegible] खादर और नैनीताल के [illegible] क्षेत्र में शरणार्थियों और विस्थापितों [illegible] है। इसलिए लखनउ, कानपुर, इलाहाबाद, बनारस, नैनीताल और मेरठ के इर्द गिर्द के गांवों बन गये हैं जो समितियां द्वारा एकत्र दूध ला कर नगरों में वितरित करते हैं। मैं दुग्ध संघ उत्पादन समिति सगठित करके नगरों में उनके दुग्ध संघ अपने इर्दगिर्द की दुग्ध समिति द्वारा किसान को अच्छी नस्ल के दुधारू पशु और उनके लिए अच्छी खुराक जैसे खली आदि की व्यवस्था करते हैं। इससे उत्पादक और उपभोक्ता दोनों ही लाभ होता है। दूध उत्पादक को अपने दरवाजे पर उचित कीमत मिल जाती है और ग्राहक को उचित कीमत पर दूध। साथ ही अच्छी नस्ल के पशु और उनकी अच्छी खुराक मिल जाने से दूध के उत्पादन वृद्धि द्वारा किसान की अतिरिक्त आय का एक और साधन [illegible]

(शेष पृष्ठ १४ पर)

एकांकी नाटक

हिटलर का प्रेत

लेखक, प्रोफेसर चन्द्रप्रकाश वर्मा एम० ए०

हिटलर आज संसार में नहीं है किन्तु उसका प्रेत अवश्य वर्तमान है, क्योंकि उसकी मृत्यु कैसे हुई यह रहस्यपूर्ण है। इस एकांकी नाटक में हिटलर का प्रेत की स्थिति का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया गया है साथ ही उसकी दृष्टि से अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर प्रकाश डाला गया है, जो पठनीय तथा अत्यन्त सुन्दर है।

दृश्य १

स्थान—द्वितीय महायुद्ध के बाद बर्लिन में रशीटाग के खंडहर।

समय—२५ सितम्बर १९४६ की संध्या।

[दिन ढल चुका है। अंधकार। क्षितिज से ऊपर उठकर आकाश में फैलने लगा है। रात्रि का प्रथम चरण समीप है सर्वत्र एक जड़ नीरवता छाई हुई है नगर के कोलाहल का क्षीण रव कभी कभी खंडहरों से टकरा उठता है। एक हलकी आंधी खंडहरों के बीच बहती है और उसके प्रवाह के साथ ही हिटलर की छाया-मूर्ति का प्रवेश]

हिटलर—यह है मेरा शक्ति-पीठ! यहां मैंने स्वप्नो का निर्माण करना सीखा और यहीं वे स्वप्न एक-एक कर टूट गए। (कुछ रुक कर) मेरा उत्थान महान था और पतन संभवतः उससे भी महान। मैंने दुनियां को एक नया इतिहास दिया। एक नई अवस्था दी एक नई विचारधारा दी एक नया दर्शन दिया मेरे इंगितपर विश्व की सुख-शांति वर्षों निर्भर रही। खंडहर के दीवालों! मैं आ गया। मेरी स्मृति से बनी काल की उपेक्षा करती रहो। पुरुषार्थ की नवीनतम व्याख्या अमर हूँ।

(एक अन्य छाया-मूर्ति का प्रवेश यह जर्मन अभिनेत्री इवाब्रान की आत्मा है ऐसा अनुमान है कि बर्लिन-पतन के कुछ ही दिवस पूर्व हिटलर इस रूपवती के साथ विवाह-बंधन में आबद्ध हो गया था।)

हिटलर—(इवा की छाया-मूर्ति को देखकर)...तुम कौन? इवा—मैं इवा......संसार की दृष्टि में आपकी पत्नी! प्रेयसी!!

हिटलर—(क्षुब्ध स्वर में) पत्नी! प्रेयसी!! हिटलर की कल्पनाओं में इस कल्पना को स्थान नहीं। कवि मेरा शत्रु—ये दो ही तुम्हें मेरे नाम के साथ जोड़ सकते हैं।

इवा—मुझे भी इस कल्पनापर आश्चर्य है। मुझे आज भी स्मरण है-इसी रीशटाग के पार्श्व भाग में होने वाले उस दिन के उत्सव की वह मनमोहनी साँझ। सारा जर्मन-राष्ट्र आप पर श्रद्धा के फूल फेंकने को उत्सुक था। मैंने उस दिन अपनी कला का प्रदर्शन कर आपके परिचय का वरदान पाया था। और फिर यह समाचार सभवतः अनेक रूपों में वायु की तरंगों पर चढ़कर विश्व में फैल गया। पर मुझे तो समाधान ही है। मेरे उस जन्म से मेरा यह मरण सुन्दर। जीवन में आपके महान नाम के साथ मेरा नाम न जुड़ सका। जो जीवन में सम्भव न था वह मरण में संभव हो गया। मेरा नाम अब आपके नाम के साथ है।

हिटलर—(चीखकर) चुप रहो! चुप रहो!! (हिटलर की छाया-मूर्ति क्षुब्ध हो जल भँवर सी घूमती है) तुम गत जन्म में नारी रह चुकी हो। इसलिए हिटलर विवश हैं, अन्यथा दन्ड देना जीवन और जगत के बंधनों को तोड़ चुकने के बाद भी हिटलर किसी नारी के प्रणय को स्वीकार करने के लिए प्रस्तुत नहीं।

इवा—पर नारी शक्ति है।

हिटलर—नारी वास्तव में दुर्बलता है पर जो उसे शक्ति बना सकती हैं ऐसी महान आत्माएँ संसार में कम आती हैं। इसलिए अर्द्ध-विश्व को अल्पकाल में पद दलित कर देने वाला वज्र-पुरुष हिटलर इन कोमल प्रणय-स्वप्नों से दूर ही रहा। मेरे नाम को तुम्हारे नाम के साथ जोड़ने वाला संसार झूठा है।

इवा—आप बहुत उत्तेजित हो गए हैं।

हिटलर—यह तो मेरा स्वभाव है। गत जन्म का संस्कार सहसा कैसे चला जावे इस। रीशटाग की नभ-

हिटलर—उसे सहना मनुष्य का पुरुषार्थ है। अच्छा, इवा जाओ। आदेश देना ही मेरा अभ्यास रहा है। अब अधिक बहस नहीं।

इवा—जाती हूँ। पर उस पौधे को देखिये जो विनाश के बीच भी सृजन का संदेश लिये खंडहरों के ऊपर उठ रहा है। वह तो अब बढ़कर छोटा वृक्ष बन गया है।

हिटलर—आश्चर्य है। मेरा साम्राज्य नष्ट हुआ और यह कोमल पौधा.................।

इवा—(बीच में ही बात काट कर आतुरता से) उस पौधे की जीवन-क्षमता आपने शक्तिशाली साम्राज्य से कहीं अधिक है। वह उस रस से पनप रहा है जो अक्षय है, अनंत है। वह पौधा उसी स्थल पर खिल रहा है जहां प्रथम बार आपके दर्शन का सौभाग्य-क्षण मुझे मिला था। यह पौधा उस भेंट की पवित्र स्मृति है। ज्यों ज्यों यह बढ़ता है, मेरी आत्मा शांति पाती है।

हिटलर—(रोष से) मैं इस पौधे को नष्ट करूंगा। यह तुम्हारी आत्मा को दुर्बल बना रहा है। शरीर की दुर्बलता किसी सीमा तक क्षम्य है पर आत्मा की दुर्बलता कभी भ क्षम्य नहीं।

इवा—ओह! आप निर्दय हैं।

हिटलर—पर विश्वासघाती नहीं।

इवा—और मेरी भावनाएं?

हिटलर—वे सदा तुम्हारी ही रही हैं मेरी नहीं। चंद्रमा स्वप्न देखने वालों की गणना नहीं करता। वह तो आकाश को ज्योतिर्मय करता है और डूब जाता है।

(खंडहरों के बीच आंधी सी उठती है आर हिलता हुआ पौधा कराहता सा टूटकर गिर पड़ता है। इवा की छाया-मूर्ति पवन-प्रवाह के साथ चीखती सी अदृश्य हो जाती है। कुछ क्षण बाद धुंध मिटता है। हिटलर का आत्मा स्थिर होती है। एक कोण से एक अन्य छाया मूर्ति प्रवेश करती है।)

हिटलर—फिर कौन? तुम! रूजवेल्ट! प्रेसीडेन्ट रूजवेल्ट!

रूजवेल्ट—हां, मुझे पहचान गए?

हिटलर—तुम्हें पहचानना कठिन कब था! आज यहां आए हो संभवतः मेरा विनाश देखने।

रूजवेल्ट—हां, तुम्हारा विनाश और अपनी विजय देखने आया हूं। तुम्हारा उद्दंड दर्प खंडित हुआ। तुम्हारा साम्राज्य नष्ट-भ्रष्ट हो गया

हिटलर—जीवन के बाद असत्य कथन अधिक लाभप्रद नहीं, रूजवेल्ट मेरा साम्राज्य कहां नष्ट हुआ? साम्राज्य की भौतिक सीमाओं के परिवर्तन मात्र को हिटलर साम्राज्य का नाश नहीं मानता। जो साम्राज्य एक महापुरुष मनुष्यों के भाव-जगत में स्थापित करता है, वही उसका सच्चा शासन क्षेत्र है। मेरे सिद्धान्तों और विचारों की पूजा तो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से विश्व के अनेक भूखंडों में हो रही है। एक मात्र बल मेरा कर्म सूत्र था।

बल मेरा सिद्धान्त था। बल मेरा जीवन दर्शन था। आज उसी अंध बल की पूजा संसार कितनी लगन से कर रहा है! समीप आओ रूजवेल्ट! हिटलर अशरीर है। आत्मा की वायु-तरंगों से भयभीत हो?

रूजवेल्ट—हां भयभीत हूं, चिन्तित हूं संसार को अब तो सुरक्षित रहने दो। शांत रहने दो। तुम वायु रूप हो और इन वायु तरंगों में विद्युत कण प्रवाहित हैं। इन विद्युत लहरों में विश्व को क्षार क्षार करने की शक्ति है। मरण के बाद भी तुम्हारा प्रतिशोध संभवतः जीवित है। तुम्हारी वृत्तियां सदा विनाशकारी हैं। तुम मूर्त्तिमान विनाश हो!

हिटलर— एटम बम के निर्माण के प्रेरक तुम मुझसे कहते हो कि मेरी बुद्धियां विनाशकारी हैं। हिरोशिमा की विदीर्ण धरती युगों तक मानव सद्वृत्तियों का उपहास करती रहेगी। उस विनाश को देखकर मैं भी स्ताम्भित हूं, रूजवेल्ट!

रूजवेल्ट—यह नाश तो महानाश को रोकने का प्रयत्न था। महानाश को बन्द करने के लिये लघु नाश वर्जित नहीं।

हिटलर—यह तो एक तर्क हैं, रूजवेल्ट सचाई इससे छिप न सकेगी।

रूजवेल्ट—सचाई छिपाता नहीं, सचाई प्रकट करता हूं। हिरोशिमा का नाश ही महानाश का अंत था। विनाश का जो धुंआ सुदूर पूर्व के आकाश में लहराता हुआ उठा था वह शांति के छंद पढ़ता हुआ शून्य में तिरोहित हो गया। और फिर विश्व में अखंड शांति छा गई।

हिटलर—शांति छा गई! शांति छा गई!! (अट्टहास) सत्य की पुकार करते हुए कितना ज्वलंत असत्य कह रहे हो, रूजवेल्ट! तो हिटलर का नाश भी इसी विश्व शांति की स्थापना के लिये ही था?
चुम्बी दीवालें। कितनी बार मेरे प्रचंड स्वाघातों से आहत हुई हैं। इवा मैं हिटलर हूँ! महान हूँ! अंहकारी हूँ पर इस अहंकर का आधार है।

(इवा की छाया-मूर्त्ति मौन रहती है।)

हिटलर—(आवेश सहित) बोलो! तुम बोलो! स्वीकृति दो! क्या मैं महान नहीं? बर्लिन की भूमि पर पर चलते हुए जिसकी गम्भीर पद चाप स्टालिन ग्रेड में सुनाई देती रही। जिसकी पद चाप इंग्लिश चेनल की तुंग तरंगों का मान मर्दित करती हुई इंग्लैन्ड में सुनाई देती रही। जिसकी पद-चाप से धरा डोल गई। यदि वह महान नहीं तो फिर महानता की परिभाषा मानवता को बदलनी होगी।

इवा—आप महान हैं, इसमें संदेह नहीं पर संसार का मत है कि आपने जीवन काल में अनेक भूलें की हैं।

हिटलर—यह तो मनुष्य का अधिकार है।

इवा—पर परिणाम भयंकर हुआ।

रूजवेल्ट—निस्संदेह।

हिटलर– तब तो तुम दया के पात्र हो, रूजवेल्ट! तुम्हारी पराजय मेरी राह से बड़ी है। मेरे साम्राज्य की भौतिक सीमाएं छिन्न भिन्न हुईं और तुम्हारे सिद्धांत छिन्न-भिन्न हुए।

रूजवेल्ट—नहीं।

हिटलर—'नहीं' मत कहो रूजवेल्ट 'हां' कहो! वे शांति स्थापना के सिद्धांत इसलिए नष्ट-भ्रष्ट हुए कि वे सच्चे न थे। मैंने माना कि मेरी नीति अशांति मूलक थी पर वह छल न थी। शांति-दूत बनने का अभिनय हिटलर ने जीवन में कभी नहीं किया। संसार को अशांत बनाने वाला यदि केवल एक मैं था तो मेरी मृत्यु के उपरांत संसार को शांत होना था। पर रूजवेल्ट! संसार आज अधिक अशांत है।

(रूजवेल्ट की छाया-मूर्ति मौन रहती है।

हिटलर—मौन हो रूजवेल्ट! मेरी बात पर विश्वास नहीं। आओ देखो अपने उस शांत संसार को जिसे तुम अपने पीछे छोड़ आए हो। यहां आओ रूजवेल्ट, यहां! समीप आओ (हिटलर और रूजवेल्ट की आत्मनाएँ समीप आती हैं) देखो! वह देखो!! दूर, बहुत दूर! धुन्धलापन मिटा, अब दृष्य स्पष्ट है। यह आग की लपटों में झुलसता हुआ इंडोनेशिया है। यह अधमरा, भूखा, रक्तरंजित चीन। यह कराहता हुआ बर्मा। यह देखो, अरब और पैलिस्टाइन के उत्तप्त मरुस्थलों में छाया हुआ बारूद का धुंआ। यह कहीं दूर रूस एटम बम का विस्फोट यह देखो, तुम्हारे देश अमेरिका की भावी समर की अभूतपूर्व तैयारियां और यह देखो, इंग्लिश चेनल के पार समुद्र से घिरे उस छोटे से द्वीप इङ्गलैंड के महत्त्वकांक्षी लोगों की विकल दौड़-धूप। यह सब किस सत्य का संकेत है? उत्तर दो, रूजवेल्ट!

रूजवेल्ट—ओह! यह सब क्या है! मैंने संसार को इतना असुन्दर नहीं छोड़ा था। मनुष्य पशु बन गया है और उस पशु को रक्त का स्वाद मिल गया। हिटलर! यह कैसी आग लग गई है।

हिटलर—आग जिसका बुझाना कठिन हो रहा है। घोर भौतिकवाद के बीच आत्मा की पुकार को आज कोई स्थान नहीं। आध्यात्मिक शक्ति निरंतर क्षीण होती जा रही है और फल स्वरूप अशांति भी बढ़ती जावेगी। प्रार्थना और चिंतन के क्षण मनुष्य-जीवन से अपरिचित्त होते जा रहे हैं। मैंने जीवन के अन्तिम क्षणों में इस दिशा में सोचा पर फिर होता क्या? सिर तो सासों के तार ही टूट गए।

रूजवेल्ट—हिटलर और दार्शनिक की सी वृत्ति! आश्चर्य है।

हिटलर—मैं वास्तव में दार्शनिक था और यदि जीवित रहता तो विश्व का महान दार्शनिक बनता। असफलता ही दार्शनिकता की जननी है। पर मेरे सरल दर्शन को वक्र संसार-चक्र ने विकृत कर दिया। सत्ताओं के दम्भ ने, विश्व-व्याप अनीति अन्याय ने गुप्त अभिसंधियों और मंत्रणाओं ने, विजयी की लिप्सा और पराभूत के क्षोभ ने तथा विजित पद दलित जर्मन जाति के प्रेम ने मुझे वह बनाया जो मैं था। मैं क्या था? मैं इस बीसवीं शताब्दी के घोर भौतिकवाद की चरम पूर्णता मुझ में जो कुछ था वह संसार का था। संसार अपने से अलग रख कर मुझे क्यों देखना चाहता है। मेरी स्तुति आज के संसार की स्तुति है और मेरी निंदा आज के ससार की निंदा है। रूजवेल्ट! यही मेरा आत्म-दर्शन है।

रूजवेल्ट—तुम्हारी बात अब समझ में आती है, हिटलर! जीवन के शत्रु मरण में तुम मेरे मित्र बन गए! वास्तव में हम दोनो पराजित हैं। तो बताओ, कल्याण की दिशा कौनसी है? वास्तविक-शान्ति का मार्ग कौन है? संसार यदि इसी गति से चलता रहा तो प्रलय का दिन पास है।
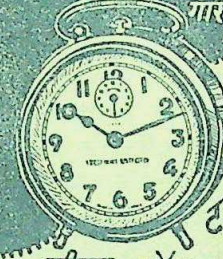
हिटलर—शांत! अखंड शांति की केवल एक दिशा है। अमर शांति का पुण्य स्थल एक ही है। आओ, वह भी देखो। आत्मा की शक्तियां अनन्त हैं, उन्हें पहचानो। वह देखो, दृश्य स्पष्ट है वे रहीं इटली देश की विस्तृत गिरिमालाएँ। और पास ही देखो भूमध्यसागर की उत्ताल नील तरंगों का वह चंचल ससार। वह आगे देखो, वह स्वेज का मुहाना। वह लाल सागर और आगे देखो वह अरब सागर और वह हिन्द महासागर की गहरी जलराशि और पास ही देखो वह भारत वर्ष। वह जमुना। वह राजघाट और वह रही पूज्य बापू की महात्मा गाँधी की शांत समाधि। यही थल भूतल का तीर्थ है, शांति का स्वर्ग है। यही शांति का देवता सो रहा है। उसके संदेश जाग रहे हैं। विश्व-तीर्थ के दर्शन करो रूजवेल्ट! हम दोनों इस समाधि के सम्मुख लज्जित हैं और श्रद्धा से नत-मस्तक हैं। विश्व यदि वास्तविक शांति का प्रार्थी है तो इस पुण्य-थल पर प्रार्थना करे। उसे सफलता मिलेगी। (कुछ रुक कर) अच्छा, अब विदा।
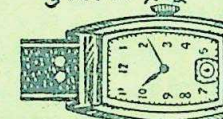
(रीशटाग के खंडहरों के बीच एक आंधी सी उठती है और उस धुंध के बीच हिटलर और रूजवेल्ट की आत्माएं अदृश्य हो जाती हैं। सर्वत्र फिर नीरवता छा जाती है। दूर बार्लिन नगर के घंटाघर में रात्रि के आठ बजते हैं।

हमारा रंग-मंच

दुलारी

निर्माता कारदार की दूसरी दिल्लगी

लेखक, श्री वेदप्रकाश शर्मा एम० एस-सी० (रिसर्च स्कॉलर)

'दुलारी' कारदार प्रोडक्शनस की नयी कृति है, कारदार की 'दिल्लगी' के बाद यह आशा की जाती थी कि कारदार अब भविष्य में अच्छे और शिक्षाप्रद खेल बनायेंगे परन्तु 'दुलारी' के देखने के बाद यह मालूम होता है कि यह कारदार की दूसरी दिल्लगी है।

कहानी में कोई विशेष नवीनता नहीं है। कहानी हसरत लखनवी की लिखी है। सेठ हीरालाल (अमर) की लड़की शोभा को बंजारे इसके बचपन में ही उठा ले जाते हैं। लड़की के बाएँ गाल पर आंख के नीचे एक तिल था। अमर लड़की के विछोह में अपनी आंखें खो बैठता है परन्तु आशा के कारण जीता रहता है। बारह वर्ष के उपरान्त शोभा बड़ी हो जाती है और उसका नाम बंजारे दुलारी रखते हैं। उसी टोली में कस्तूरी नाम की भी लड़की है जग्गू नाम का बंजारा दुलारी से प्रेम करता है। परन्तु दुलारी को एक दिन शहर में नाचते समय प्रेम बाबू नामक युवक से प्रेम हो जाता है। इधर कस्तूरी जग्गू से प्रेम करती है। मुहब्बत भी एक मुसीबत है' यह कस्तूरी का तकिया कलाम मालूम पड़ता है। प्रेम अपनी एक अंगूठी दुलारी के नाच के बाद उसके फैले हुये आंचल पर फेंक देता है। और अपने नौकर को उसका पता लगाने को भेजता है।

पहिचानिये, नृत्य करनेवाली यह कौन अभिनेत्री है!

इधर जग्गू सरदार से अपनी शादी दुलारी से करने की मंज़ूरी ले लेता है। परन्तु दुलारी प्रेम के साथ भागने की फिक्र में रहती है। एक दिन रात के समय दुलारी कस्तूरी को अपना भेद बताकर प्रेम के पास खंडहरों में मिलने चली जाती है। परन्तु जग्गू पता लग जाने पर वह अपनी टोली के साथ उन पर हमला कर देता है। दुलारी फिर पकड़ ली जाती है। इधर हीरालाल को अपने एक शिकारी मित्र से पता लगता है कि उसने एक शरीफ लड़की बंजारों की टोली में देखी है। हीरालाल अपने उस मित्र के साथ वहाँ जाते हैं। परन्तु रास्ते में मोटर बिगड़ जाने के कारण बंजारों द्वारा लूट लिये जाते हैं। इधर प्रेम दुलारी को भगा ले जाता है। परन्तु उसको अपने पिता के नाराजगी के कारण घर पर न लेजाकर बाग के एक मकान पर ठहराता है। इधर जग्गू को जब पता लगता है कि दुलारी फिर भाग गई है तब वह अपने साथियों द्वारा फिर दुलारी को उड़ा ले आता है।

जब प्रेम पुरोहित को लेकर वापिस आता है तो अपने नौकर द्वारा पता लगता है कि दुलारी को जग्गू फिर भगा लेगया है। वह बंजारों की टोली की तरफ जाता है और इधर प्रेम के पिता पुलिस को लेकर बंजारों की टोली की तरफ जाते हैं।

दुलारी की शादी जग्गू से तय हो गई है। कस्तूरी में नाचा। उसने दो छुरियों से जग्गू को मारना चाहा। पर सफल न हो सकी। इस पर जग्गू ने कस्तूरी को आग में ढकेल दिया। तभी पुलिस के पहुँच जाने पर बंजारों में झगड़ा मच जाता है। जग्गू दुलारी को लेकर भागता है। परन्तु प्रेम के मौके पर पहुँचने के कारण जग्गू के कार्य में बाधा पड़ती है। जग्गू और प्रेम में लड़ाई होती है और जग्गू मारा जाता है।

प्रेम दुलारी को लेकर घर आता है और बंजारों की टोली में से एक आदमी के पास शोभा के बचपन का लाकेट होने के कारण दुलारी का पता लगता है कि यह कौन है। दुलारी को हीरालाल की लड़की मालूम होने पर प्रेम के पिता प्रेम को दुलारी से शादी करने की आज्ञा दे देते हैं।

मातृ मंदिर

वेश्यावृत्ति-सामाजिक अभिशाप

क्या सरकार तथा समाज-सुधारकों के कानों में जूं न रेंगेगी ?

लेखिका, श्रीमती सावित्री निगम 'व्रजांगना'

श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय ने समाज सुधार का बीड़ा उठाया है।

एक विचारक का कथन है कि "वेश्यायें धर्म की चतुर पहरेदार हैं। सर्वसाधारण की नैतिकता की रक्षा करने के लिये हमें वेश्याओं की अनैतिक संस्था कायम रखनी होगी। उसके अस्तित्व का यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण सामाजिक उद्देश्य है।

किन्तु क्या इस विचित्र तर्क में कोई सहृदय व्यक्ति सहमत हो सकता है। वह धर्म क्या संसार का सब से निकृष्ट धर्म नहीं है जिसकी चौकीदारी करने के लिये मातृ जाति को तिल तिल करके पुरुष की वासना गति में जलना पड़े। एक के थोड़े से हित के लिये दूसरे की हत्या कहाँ का न्याय है। वह क्या सबसे बड़ी अनैतिकता नहीं है। जिसकी रक्षा के लिये असहाय नारियों को नारकीय एवं पाशविक जीवन बिताना पड़े।

कुछ लोगों का कथन है कि कुछ महिलायें स्वेच्छा पूर्वक ही यह गर्हित व्यवसाय अपनाती हैं और उसे सहज में छोड़ने को प्रस्तुत नहीं होती हैं और अतिकाम तथा लैंगिक कारण ही इस प्रथा के लिये उत्तरदायी हैं। कहने के लिये तो हम जो चाहें कह उठें किन्तु क्या कोई ऐसी देवियों की सम्मति आंकड़े बताकर उन्हें सत्य प्रमाणित कर सकेगा? सच बात तो यह है कि स्वयं अपवित्र होने अथवा लान्छित होने के भय से उनके सुधार की बात बड़े बड़े सुधारकों ने भी कभी नहीं सोची। आंकड़े भला कौन लेता और यदि कभी अवसर पड़ने पर ऐसी आहत व्यथित वारांगना ने, जिसे समाज की क्रूरता का पत्नीत्व के अभिशाप और धर्म के ठेकेदारों की ठोंकरों का भली भांति स्वाद मिल चुका होगा फिर से एक तरफ से निकल कर दूसरे तरफ में आने से इनकार कर दिया हो तो यह उसके लिये नहीं हमारे समाज के लिये ही लज्जाजनक एवं घृणित बात है और यह बात इस कटु सत्य को प्रमाणित करती है कि उससे कहीं अधिक उनको उस नारकीय स्नेहशून्य कृत्तिम जीवन में मिलता है। वेश्यावृत्ति की उत्पति अतिकाम अथवा लैंगिक कारणों द्वारा बताने वालों की बुद्धि की भी बलिहारी है। यह बात कौन नहीं जनता कि बड़े बड़े मनोवैज्ञानिक और सेक्सो-मेथालाजिट्स ने सतत: परिक्षणों के आधार पर यह निश्चित किया है कि पेशेवर औरतें लगभग शत् प्रति शत् अन्डर सेक्स "क्षीण काम" अथवा फिरजंड काम 'हीनकाम' होती है। और केवल व्यवसाय के लिये विवशता पूर्वक उन्हें पुरुष की वासनावृति को तृप्त करना पड़ती है।

इस घृणित नारकीय प्रथा का जन्म हुआ है दरिद्रता, लालच, पूंजीवादी वैषम्य नैतिकता के कठोर बन्धन, धर्माधर्म का ढोंग और पक्षपात पूर्ण धार्मिक प्रतिबन्धों की कोख से और यह प्रथा युगों से उन्हीं की गोद में पलती आई है।

कुछ लोगों का कथन है कि जब गरीबी और अभाव नहीं थे तब भी वेश्यायें थीं। इसलिये पूंजीवाद से उत्पन्न विनाशकारी व्यवसायें इस प्रथा के लिये उत्तरदायी नहीं हैं 'हाँ पूंजीवादी युग' के पहिले कुछ स्त्रियां कला आराधना और कला प्रेम के नाम पर नर्तकी बनाई जाती थीं किन्तु उनकी संख्या एक दो उंगलियों हर गिनी जाने योग्य होती थी। दूसरे उन्हें पूर्ण नागरिक अधिकार प्राप्त थे। उनका तिरस्कार और उपेक्षा की कौन कहे, उन्हें राजकीय सम्मान भी मिलता था। मातृ सत्ता युग के पश्चात् जब मानव ने डगमगाते कदमों से सभ्यता प्रांगण में चलना सीखा तो एक तो नियमों और आदर्शों के निर्माण में उसने पदार्थ के स्थान कल्याण को ही अधिक स्थान दिया, दूसरे पशुबल से प्राप्त अधिकार सत्ता ने भी उसे ऐसा मदान्ध बना दिया कि उसने अपने सुख और सुविधाओं का इतना अधिक ध्यान रखा कि उसे यह पता ही नहीं चला कि वह अपने स्वार्थों के लिये दूसरों के हितों की निर्मम हत्या कर रहा है। सुख और सुविधायें सदा से शक्ति की अन्ध उपासक रही हैं। जो अधिक सबल थी उसे अधिक सुख के साधन मिले. पुरुष को नारी के पत्नी रूप से सुख, भक्ति पूजा और ईश्वर का महान पद मिला। माता से अजश्र स्नेह, वात्सल्य मिला। भगिनी से मिली अतुल शुभ कामनायें, आदर और प्यारा किन्तु फिर भी उसे इतने से ही संतोष न हुआ। उसे तो मनोविनोद के लिये नारी का चिरप्रेयसी रूप चाहिये था और तभी से नारी को केवल जीवन भर प्रेयसी बने रहने का अभिशाप मिल गया। किन्तु क्या मनोरंजन का यह साधन उन सामन्तों के शेर और जीवित मनुष्यों के नर संहारक युद्ध वाले मनोविनोद से भी निकृष्टतर तथा घृणित नहीं है? उन मनुष्यों के जीवन का क्षण भर में ही अन्त हो जाता था और वे मुक्ति पा जाती थीं। किन्तु यहां तो बेचारी नारी, जीवन भर तिल तिल करके जलाई जाती और उसका अभिशाप उसे ही नहीं उसकी सन्तानों को भी भोगना पड़ता है और उसके बाद ही सभी पीढ़ियाँ को घर, पत्नीत्व और समाज से निर्वासित होना पड़ता है। इस प्रकार पुरुष सत्ता युग की देन यह घृणित प्रथा पूंजीवादी वैषम्य के पालने में भूल भूल इतना विकसित हुई कि आज करोड़ों ऐसी स्त्रियां अभिशप्त जीवन बिता रही हैं।

वेश्यावृत्ति नारीत्व का घोर अपमान है। अध्यात्मवादी अहिंसा पुजारी भारत का यह सब से बड़ा कलंक का टीका है। मानवता के कोढ़ को यदि दूर न किया गया तो अवश्य ही यह विनाशकारी रोग अनेक विषमताओं को जन्म देगा। नैतिकता के इस पाखंड महल को धर्म की पोली दीवारों को गिराकर सच्ची नैतिकता के उस न्याय महल का निर्माण करना होगा जिसमें स्त्री पुरुष के लिये एक न्याय, एक नियम और एक नैतिकता होगी। इस युग में जब मानव धर्म सर्वश्रेष्ठ धर्म प्रतिष्ठित हो चुका है तब भी क्या नारी को पाषाणी मूर्ति बनने के लिये विवश किया जायगा और दूसरे के मनोविनोद के लिये, धर्म की सता के लिये उसकी क्रूर निर्मम हत्या होगी?

यदि अन्ध विश्वास के उस युग में अम्बपाली को बुद्ध देव से महान व्यक्ति की शिष्या बनने का गौरव प्राप्त हो

श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित स्वतंत्र[illegible] दिवस पर भारत पधारी हैं।

सकता था तो आज हमारी उन अ[illegible] बहनों को स्कूलों, कालेजों में छ[illegible] आदि देकर पढने के लिये क्यों [illegible] उत्साहित किया जाता? अब [illegible] संख्यकों के उद्धार की या उन्नति [illegible] सरकार पूरी व्यवस्था कर रही है, [illegible] पता नहीं कि इन अल्प-संख्यकों [illegible] उद्धार की या उन्नति की ओर से, सर[illegible] क्यों उदासीन है?

सरकार तथा समाज को इस [illegible] समस्या को जो हमारे देश का [illegible] दुर्भाग्य बनी हुई है शीघ्र सुलझ[illegible] चाहिए और ऐसी देवियों को डा[illegible] शिक्षिका आदि बनने के लिये प्रो[illegible] हित करना चाहिये। जब तक [illegible] दुखियारी बहनों को नागरिकता [illegible] पूर्ण अधिकार, सामाजिक सम[illegible] पवित्र गृहस्थ जीवन बिताने के [illegible] पूर्ण सुविधायें, सफल पत्नीत्व और मा[illegible] पढ़ने के लिये वजीफे, नौकरियां [illegible] स्थान की सुविधायें न दी जा[illegible] वे कभी अपना पूर्व निश्चित पथ [illegible] छोड़ सकेंगीं।

ग्राहकों, एजेंटों और वि[illegible] पनदाताओं को समस्त पत्र [illegible] वहार मैनेजर, 'देशदूत' इलाहा[illegible] के नाम पर ही करना चाहिए

सम्पादक के नाम चिट्ठियाँ

निराला-जयन्ती

पिछले दिनों साहित्यकार संसद प्रयाग में निराला जयन्ती मनाई गई। प्रयाग के कुछ साहित्यकार और कवि इस अवसर पर एकत्रित हुए थे। निराला जी को इस अवसर पर मौखिक और लिखित श्रद्धांजलियाँ भेंट की गईं। निराला ऐसे महाकवि की जयन्ती मनाना वास्तव में हिन्दी संसार के लिये गौरव की बात है, किन्तु जिस सीमित ढंग से यह जयंती मनाई, गई वह साहित्यारकार संसद जैसीसंस्था के लिये गर्व की बातरही है। एक छोटी संस्था की ओर से निराला-जयन्ती मनाई जाय और साहित्यकार संसद की ओर से केवल जल पान करा कर संतोष ग्रहण कर लिया जाय अथवा केवल तिलक लगा कर, नारियल थाम कर और गजरा पहिना कर सन्तोष ग्रहण कर लिया जाय निराला जी उस खोखले नारियल को लेकर क्याकरते। यह समझ से परे की चींज़ है। वास्तविकता यह है कि आज कल निराला के नाम की लूट मचाई जा रही है। निराला के नाम की उपयोग करकेलाभ उठायाजा रहा है। निराला जी की पुस्तकेंछाप कर निराला पर एहसान किया जा रहा है। निराला के नाम पर चन्दा इकट्ठा करके साहित्यकारोंके उपकारका डंकापीटा जा रहा है किन्तु, निराला की दशा वैसी ही है जैसी अब तक थी। किसी भी जयन्ती मनाने वाले यहसंस्था ने यह नहीं सोचा कि निराला की भी आवश्यकतायें हैं उसकी कैसे पूर्ति हो। निराला जी को केवल भोजन करा कर तथा धर्मशाले की भांति ठौर देकर निराला के नाम का दुरुपयोग करना वास्तव में बड़े दुख की बात है। पंडित नन्द दुलारे वाजपेयी ने दो वर्ष पूर्व काशी मे जिस निराला जयन्ती का प्रदर्शन किया था उसका स्मरण निराला जी को आज तक बना हुआ है। लोग निराला जी की जयन्तियां मना कर अपने तथा अपने यश की तृप्ति तो अवश्य कर लेते हैं, किन्तु अपनी आर्थिक चिन्ता दूर करने के लिये उन्हें असाहित्यिकों का ही द्वार खट खटाना पड़ता है। हमारी समझ में हिन्दी वालों को निराला जी के प्रति अपना भक्ति प्रदर्शन कम करके उन्हें आर्थिक चिन्ताओंसे मुक्त करनाचाहिये। किसी भी कलाकार के जीवित रहने पर जो जयंन्ती मनाई जाती है उसका अर्थ है कि कलाकार की आर्थिक स्थिति सुधारी जाय। निराला जी केलल हवा और पानी पर ही जीवित नहीं हैं इसलिये निराला जयन्ती की सार्थकता तभी हो सकती है जब कि उन्हें जीवन पर्यन्त आर्थिक चिन्ताओं से मुक्त न कर दिया जाय। हिन्दी वालों ने, हिन्दी के टुच्चे प्रकाशकों ने निराला जी का सदा शोषण किया है। उनकी रचनाओं से हज़ारों रुपये कमा लिये हैं किन्तु प्रचारित यही करते हैं कि उनकी रचनायें तो बिकती ही नहीं। निराला जी के खुशामदी निराला जी का पेट केवल खुशामद और प्रशंसा से भरना चाहते हैं। और नाज़ायज़ तरीके से लाभ उठा रहे हैं। किन्तु निराला जी स्वयं इस प्रकार की वस्तुस्थितियों से पूर्ण रूप से परिचित हैं। क्या हम आशा करें कि निराला के नाम पर लूट मचाने वाले, चाहे धन की हो या यश को, वास्तविकता की ओर ध्यान देंगे;

"कान्ती"

❀ ❀ ❀

प्रजातंत्र उद्घाटन दिवस पर

भारतवर्ष के प्रत्येक नर-नारी के लिये २६ जनवरी सन् १९५० बड़े गौरव और उल्लास का दिवस है, जब कि हमारे देश में एक स्वतंत्र प्रजातंत्र राज्य की घोषणा हो रही है।

यह दिवस भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य होगा। यद्यपि विगत अनेकों शताब्दियों में भारत दासता की शृङ्खला में बद्ध रहा और उसकी संस्कृति, सभ्यता, धर्म और साहित्य पर प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष आघात होते रहे, तथापि जीवनमुक्त महर्षियों तथा महात्माओं के अतुल त्याग और तपस्या के प्रताप से भारतीय संस्कृति, सभ्यता महानता और सनातन विश्वबन्धुत्वपूर्ण मानवधर्म आज भी इस विजयोल्लास में भूतल पर प्रकाशवान हो रहा है।

इन्हीं जीवनमुक्त मनीषियों में महात्मा गांधी भी हुए, जिन्होंने अपने आध्यात्मिकता और अद्वितीय धर्मपरायणता से राजनैतिक, सामाजिक और धर्म के क्षेत्र को ओत-प्रोत कर के भारत को स्वतंत्रता के सूर्य से जगमगा दिया। आज जो प्रजातंत्र की घोषणा तथा उद्घाटन भारत में हो रहा है उसका वास्तविक श्रेय उन्हीं राष्ट्रपिता को है। यदि देश उनके बतलाये हुए मार्ग पर न चला होता और उसने हिंसा का मार्ग ग्रहण किया होता तो न जाने कब तक वह पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा रहता। यदि हम नवप्राप्त स्वतंत्रता की रक्षा करना चाहते हैं तो हमें सर्वज्ञ और सर्वव्यापक परमात्मा को साक्षी करके सत्यनिष्ठा के साथ आज दृढ़ प्रतिज्ञा करना चाहिये कि हम महात्मा गांधी के आदर्शों और उनके आध्यात्मिक, व्यावहारिक जीवन की शैली पर अपने भावी जीवन में अग्रसर होकर देश को उन्नतिशिखर पर पहुँचायेंगे।

पंचायर राज महात्मा जी की ही देन है। उन्होंने राम राज्य की व्याख्या अनेकों बार की है, जिसमें जनता का राज्य और जनता की सत्ता, संयम और नियम के अन्तर्गत सत्य, अहिंसा और पवित्र-प्रेम के आधार पर स्थापित होती है। महात्मा जी द्वारा बतलाये हुए श्रद्धा और भक्तिपूर्ण कर्मयोग का अवलम्बन भारत के नर नारियों को आत्म-सुधार के लिए परमावश्यक है। जब तक हम ऐसा नहीं करेंगे तब तक न हमारा देश, जिसमें ग्रामीणों का ही मुख्य भाग है, स्वावलम्बी, समृद्धिशाली और अकृत्रिम सुखी हो सकेगा और न यह प्राचीनतम देश अतीत की भांति संसार का मार्ग- प्रदर्शक हो सकेगा।

हमारा कर्त्तव्य है कि हम केवल भौतिक सुख और उन्नति में समय नष्ट न करके अपने नैतिक, सामाजिक और धार्मिक स्तर ऊंचा करने में प्रगतिशील हों। यह प्रभु की अनन्त कृपा का फल है कि हमारे प्रांत में पंचायत राज की स्थापना अद्वितीय और वृहत् रूप से सफलतापूर्वक हो गई है और ग्रामीण बहिनें और भाई उत्साह और प्रेम से कार्यसंचालन कर रहे हैं।

उन सब से मेरा विनम्र प्रार्थना है कि वे प्रजातंत्र के उद्घाटन के समारोह में हार्दिक सहयोग देवें और अपने त्याग, तपस्या और परमार्थ द्वारा केवल अपने ही जीवन को नहीं, अपितु सारे देश और संसार के जीवन को पवित्र और स्थायी सुख का भाजन बनावें। ऐसा करने के लिये ईश्वर हम सब को सन्मति और सामर्थ देवे, यही मेरी हार्दिक कामना है।

—भगवन्नारायण भार्गव,
संचालक, पंचायत राज,
लखनउ, युक्त प्रांत।

(पृष्ठ ८ के आगे)

खुल जाता है। यह सत्य है कि हम अपनी योजना के अनुसार अभी तक २०० मन दूध प्रतिदिन वितरित नहीं कर पा रहे हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि दुद्धों द्वारा देहात के दूध इकट्ठा करने तथा उनमें पानी मिला कर बेचने आदि पर कोई विशेष रोकथाम नहीं है। फलस्वरूप वे दूध उत्पादकों को अधिक कीमत देकर दूध खरीद लेते हैं। दूध संघों के लिए यह करना सम्भव नहीं है। खाद्यों में मिलावट करने की इस बुरी प्रथा को रोकने के लिए एक कानून इस समय सरकार के विचाराधीन है।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है जीवन के हर कार्य मिलजुल कर करने में आसानी होती है और चित को संतोष भी होता है। पिछले युद्धकाल और कंट्रोल के जमाने में कीमत चुकाने पर भी अच्छी वस्तु का न मिलना एक आम शिकायत थी। इसलिए नगरों के लिए उपभोक्ता सहकारी आन्दोलन चलाया गया। आज तो पुनः राशनिंग होने के बाद नयी सरकारी खाद्यनीति के अनुसार हर नगर में गठित सहकारी भंडार और उनकी दूकानों से सभी नागरिक परिचित हैं। ये भंडार और कुछ नहीं हैं वे तो शहरी जनता के रोजगारी संगठन हैं जिसके द्वारा मुहल्ले की जनता पंचायती ढंग से अपने लिए गल्ला या जरूरी सामान थोक खरीद कर आपस में आवश्यकतानुसार बाँट लेती है और मुनाफाखोरों को बिलकुल अलग कर देती है। पिछले वर्ष पुनः राशनिंग होने पर सहकारी भंडारों को राशन का अन्न वितरण करने का कार्य सौंपने के निश्चय से इन उपभोक्ता समितियों की प्रगति में बड़ा सहारा मिला। इस समय पूर्ण राशन वाले ६० नगरों में से ४० में तो जिनमें मुरादाबाद मेरठ, बरेली सरीखे बड़े नगर भी हैं, सारा वितरण कार्य सहकारी भंडारों द्वारा ही हो रहा है। ये भंडार हर माह लगभग १ करोड़ रुपया का अन्न वितरित करते हैं। इनके सुदृढ़ संगठन और लोकप्रियता से उत्साहित हो कर सरकार ने प्रारम्भ में प्रयोग के तौर पर कुछ चुने हुए उपक्षेत्रीय (सब एरिया) राशन दफ्तरों का कार्य भी इन्हीं भन्डारों को सौंपने का निश्चय किया है। यह कार्य हमारी इस इच्छा का द्योतक है कि हम यह चाहते हैं कि जनता स्वयं अपने को अपना शासक समझे; उसे यह अनुभव न हो कि उसके ऊपर कोई और शासन कर रहा है।

नगरों में मकानों की कमी को दूर करने और नगरवासियों को मकान मालिकों के शोषण से बचने के लिए गृह-निर्माण समितियों को प्रोत्साहित करने का निश्चय किया गया और सन् १९४८,४९ ई० में जनता ने ऐसी ७५ समितियों को संगठित किया। परन्तु जगह प्राप्त करने में समय लगने तथा इमारती सामान की कमी के कारण इस ओर मार्के का कार्य नहीं हो पाया। इन सारी अड़चनों को मिल जुलकर सुलझाया जा रहा है।

ग्रामोद्योग के क्षेत्र में १४ सहकारी उत्पादन केन्द्र करघे के कपड़े के उत्पादन का कार्य कर रहे हैं। इनका उत्पादन प्रायः खास खास किस्म के कपड़ों तक सीमित रहता है जैसे संडीला के मेजपोश, बाराबंकी के कालीन, मगहर (जिला बस्ती) का गाढा, गोरखपुर के तौलिये तथा मऊ (जिला आजमगढ़) की सड़ियां इत्यादि। इसके साथ साथ साधारण वस्त्र का भी उत्पादन होता है। कुटीर उद्योग विभाग के अन्तर्गत करने वाले टेकनिकल स्कूलों में दी जाने वाली टेकनिकल शिक्षा के प्रसार से अनेक औद्योगिक सहकारी समितियां, विशेषकर चमड़ा उद्योग की, संघठित हो रही हैं। आगरा के चमड़े तथा अलीगढ़ के ताला बनाने के कुटीर उद्योगों को सहकारी पद्धति पर संघठित करने का भी प्रयत्न किया जा रहा है।

आवश्यकता आविष्कार की जननी है। इन योजनाओं के अतिरिक्त ग्रामीण अपनी स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार अपना संगठन कर सकते हैं। उदाहरण के लिए लकड़ी और मिट्टी के खिलौने बनाने वाले, बास की टोकारियां बनाने वाले, तेली तथा अन्य धंधे करने वाले यदि मिलजुल कर अपनी अपनी समिति बना लें तो उन्हें धंधे के लिए आवश्यक सामान प्राप्त करने में सुविधा हो और साथ ही उनके उत्पादन की बिक्री में भी आसानी हो। सरकार ऐसी समितियों को सुविधा पहुँचाने और उन के उत्पादन की बिक्री की व्यवस्था करने के लिए बराबर ही प्रस्तुत रहती है।

ग्रामों और नगरों में उत्पादकों और उपभोक्ताओं के इस भांति सहकारी संगठन में आबद्ध हो जाने और दोनों को किसी केन्द्रीय संघ द्वारा एक श्रृंखला में सम्बद्ध हो जाने से दुग्ध समितियों और दुग्ध संघ की भाँति जनता शोषण से मुक्ति पा जायेगी। दोनों तरह की उत्पादक और उपभोक्ता समितियों को श्रृंखलाबद्ध करने उनमें सामंजस्य स्थापित करने में हमारे प्रान्तीय सहकारी मार्केटिंग फेडरेशन से बड़ी मदद मिलेगी। प्रान्त में यह सबसे बड़ी सहकारी व्यवसायिक संस्था है। जिला फेडरेशनों द्वारा यह विकास-संघों और बहुधंधी समितियों से सम्बन्धित है। कपड़े के ... और वितरण रूप में इससे उपभोक्ता आन्दोलन को बड़ी मदद मिल रही है। गत वर्ष ६ प्रायः माह में इसने ... करोड़ का कपड़ा वितरित किया था।

देश के नव निर्माण में योग देना देश के हर नागरिक का कर्तव्य है। ... में सहकारी प्रजातंत्र की स्थापना के लिए यह आवश्यक है कि हम अपनी ... की रकम सहकारी बैंकों में जमा ... ताकि पंचायती ढंग से उत्पादन ... वितरण की योजनायें सफल हों तथा ... के बच्चे बच्चे को आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त हो और वह आर्थिक चिन्ता से मुक्त हो। राजनीतिक आजादी इसका साधन मात्र है।

❀ ❀ ❀

देश की स्वाधीनता और गांधी जी

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

गाँधी जी ने मुल्क को आजाद बनाने के लिये क्या किया ?
घोर तपस्या से भारत माता की गुलामी की जंजीर काटा।
आजादी के लिये अपने प्रिय से प्रिय साथियों का बलिदान दिया।
आजादी के लिये ही देश में रचनात्मक कार्यों का जाल बिछाया।
आजादी के लिये ही चर्खे का आधुनिक ढंग पर आविष्कार किया।
आजादी के लिये ही हिन्दुस्तान से छूत-छात को अन्धकार से प्रकाश की तरफ ले गये।
आजादी के लिये आश्रमों की स्थापना की।
आजादी के लिये ही देश से इस छोर से उस छोर तक दिन रात भ्रमण किया।
आजादी के लिये ही उन्होंने सत्य-अहिंसा का अवतार लिया।
आजादी के लिये ही अपनी छोटी सी भूल को भी हिमालय जैसा बतलाया।
आजादी के लिये ही कई बार अपनी जान की बाजी लगा दी।
आजादी के लिये ही जेलों के सीकचों के अन्दर जीवन का अनमोल समय वन्दीगृह में काटा।
आजादी की आवाज को दुनिया में बुलन्द किया।
आजादी के लिये गुलामों को संगठित किया।
आजादी के लिये ही सात लाख गाँवों को उठाने के लिये कहा।
आजादी के लिये ही उन्होंने धनिकों से ट्रस्टी बन जाने की सलाह दी।
आजादी के लिये ही उन्होंने हिन्दू मुसलमानों मे एका स्थापित करने की चेष्टा की।
आजादी के लिये ही उन्होंने गृह उद्योगों को नये ढंग से चलाने की प्रेरणा की।
आजादी के लिये अन्याय के सामने विरोध प्रकट करने के लिये उपवास का अविष्कार किया।
आजादी के लिये ही भारत की नारियों को उठाया।
आजादी के लिये ही उन्होंने ऊँच-नीच के भेद को मिटाया।
आजादी के लिये गाँधी टोपी का अहिंसक चिह्न देश को दिया।
आजादी के लिये ही स्वच्छ खादी का बाना देश को पहनाया।
आजादी के लिये हँसते हुये फाँसी पर चढ़ जाने का मंत्र सिखाया।
आजादी के ही लिये उन्होंने सब के लिए जेल जाना आसान बना दिया।
आजादी के लिये ही नई तालीम का नया आविष्कार किया।
आजादी के लिये ही नौखाली की धूल छान डाला।
आजादी के लिये ही अन्त में अपने प्रिय से प्रिय साथियों को गाँवों में भेजा।
आजादी के लिये ही गाँधी बाबा ने क्या नहीं किया ?
आजादी के लिये उन्होंने जितने अविष्कार किये हैं क्या कोई वैज्ञानिक उनकी समता कर सकता है ?
आजादी के लिये ही गाँधी बाबा ने देश में एक राष्ट्र भाषा और एक राष्ट्रलिपि अपनाने को कहा।

आजादी और स्वाधीनता गाँधी जी ने प्राप्त किया और कहा—"जन तंत्र वह है जिसमें रास्ते चलने वाला जो बोले वह भी [illegible]

हिन्दी का प्रवासी साहित्य

प्रवासियों की समस्या हल होने से राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार और भी बढ़ेगा

लेखक, प्रोफेसर शिवपूजनसहायजी

यह ठीक है कि भारत के स्वतंत्र हो जाने पर भी उसकी बहुत सी घरेलू समस्याएं अत्यन्त जटिल होकर हमारे सामने उपस्थित है जिन्हे सुलझाने में हमारी हर तरह की शक्ति काफी मात्रा में खर्च हो रही है फिर भी हिन्दी साहित्य के विविध अंगो की पूर्ति एवं पुष्टि में हम यथाशक्ति लगे ही हुए हैं। तब क्यों न हम उस महत्वपूर्ण अंग को भी सबल और सुसज्जित करें जो हमारी ही उपेक्षा के कारण क्षीण और रूग्ण सा प्रतीत होता है तात्पर्य यह कि प्रवासी साहित्य की रचना और वृद्धि तथा उसका प्रकाशन और संवर्धन राष्ट्रभाषा की मर्यादा रक्षा के लिये सम्प्रति अत्यावश्यक है। जैसे साहित्य के और और विभागों की ओर हमारा ध्यान गया है या जा रहा है वैसे ही इस विभाग की ओर भी हमारा ध्यान जाना चाहिए। इसके लिये यदि प्रत्येक पत्र पत्रिका में स्वतंत्र रूप से प्रवासी स्तम्भ खोलना पड़े तो अविलम्ब खोल देना चाहिए। यदि साधन सम्पन्न प्रकाशक अपनी पुस्तकमाला में प्रति वर्ष एक भी उपयोगी पुस्तक इस विषय की निकालते चले तो थोड़े ही दिनों में हिन्दी का प्रवासी साहित्य दर्शनीय बन जाय। आवश्यकता तो इस बात की है कि जो प्रकाशन संस्था इस क्षेत्र में अनेक वर्षों से सतत कार्य संलग्न है उसी को शक्तिशाली बना कर प्रवासी साहित्य के प्रकाशन एवं प्रचार का मुख्य केन्द्र कर दिया जाय। ऐसी संस्था हिन्दी संसार में बस एक ही है; अजमेर का प्रवासी भवन जिसके पास प्रकाशन कार्य के सभी साधन मौजूद हैं भले ही वे थोड़े हैं मगर क्रमशः बढ़ाये जा सकते हैं और प्रवासी भवन का जो संग्रहालय है वह तो हिन्दी में प्रवासी साहित्य की अभिवृद्धि करने का सर्वोत्तम साधन है। वह स्वामी जी की जिन्दगी भर की कमाई है, एक प्रकार से हमारी एक राष्ट्रीय निधि है उसका संरक्षण एवं सदुपयोग जनता और सरकार दोनों को करना चाहिए।

अब तो स्वतंत्र भारत में एक और भी जरूरत महसूस होती है। वह यह है कि हिन्दी के साहित्यकारों को प्रवासी भारतीयों के उपनिवेशों में भ्रमण करने के लिए जाना चाहिए। वहाँ जाकर वे प्रवासी भाइयों के जीवन का हर पहलू से परिचित होंगे और भी नाना प्रकार के अनुभव प्राप्त होंगे। वहाँ के वास्तविक वातावरण का ज्ञान होगा, विचार-विनिमय से सांस्कृतिक सम्बन्ध भी दृढ़ होगा।

इस तरह वहाँ भारतीय भावनाएँ बराबर सजीव बनी रहेंगी। इसके सिवा वे साहित्यकार ऐसी रचनाएँ तैयार कर सकेंगे जिनमें प्रवासी भाइयों के पारिवारिक जीवन में और सामाजिक जीवन में असली चित्र अंकित करेंगे। हिन्दी में आज कथा साहित्य की प्रगति बड़े वेग से हो रही है। कहानियों और उपन्यासों की संख्या दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही है। किन्तु उसमें भारत के बाहर रहने वाले भारतीयों का जीवन-चित्रण नहीं मिलता। हिन्दी में ऐसी कहानियाँ और ऐसे उपन्यास बहुत ही कम हैं जिनमें प्रवासियों के वर्णन सुलभ हों। ऐसा कोई नाटक या एकांकी या काव्य भी नहीं है। स्वामी भवानीदयाल जी के पुत्र ब्रह्मदत्त जी ने एक उपन्यास ऐसा लिखा है, और कुछ कहानियाँ भी दीख पड़ी हैं मगर इतना तो बस रेंतों पर एक बूँद के समान है। प्रवासी समस्या प्रवासी जीवन और प्रवासी समाज पर आज अनेक कहानी संग्रहों, उपन्यासों तथा नाटकों की आवश्यकता है। जिन्हें पढ़कर हिन्दी में पाठक कथा द्वारा मनोरंजन के ख्याल से प्रवासी भाइयों की ओर आकृष्ट हों, उनके प्रति सहानुभूतिशील होने को उत्सुक हों। साहित्य को शक्ति अमोघ होती है वही मनुष्य के लिए उसके हृदय में क्रान्ति के बीज बो सकता है, उसी के सहारे युगान्तरकारी परिवर्तन हो सकते हैं।

क्या प्रवासी भारतवासियों में आज तक ऐसा कोई न हुआ जिसकी जीवनी हिन्दी में लिखी जाय? कुछ थोड़ी सी जीवनियाँ हैं पर वे इनी गिनी ही हैं। स्वामी जी ने अपनी रामकहानी के सिवा कुछ और विशिष्ट प्रवासियों की जीवन कहानी भी लिखी है पर अभी असंख्य ऐसे प्रवासी भारतीय नर नारी हैं जिनकी जीवनियों का हिन्दी में न होना बड़ी भारी कृतघ्नता की बात है। हिन्दी वालों को आज भी कुछ पता नहीं कि भारतीयों के उपनिवेशों में भारत से कितने प्रचारक या उपदेशक गये, वहाँ कौन कौन सी ऐसी संस्थाएँ हैं जिनके द्वारा वहाँ भारतीयता की सत्ता कायम है। वहाँ कौन ऐसे पत्र और जननायक हैं जो जन जागरण के शुभ कार्य में संलग्न हैं, वहाँ कितने हिन्दी प्रेमी हैं, कितने लेखक और पुस्तकालय हैं इत्यादि। हमारे प्रकाशक और पुस्तक व्यवसायी आज भी कूपमण्डूक बने हुए हैं वे भारतीय उपनिवेशों में अपनी पुस्तकों के प्रचार का उद्योग अभी नहीं करते, एक बहुत विस्तृत एवं व्यापक क्षेत्र बहुतांश में अछूता पड़ा है। वहाँ के साहित्य के बाजार पर कब्जा करने की सूझ किसी में नहीं नजर आती। हमारे अपने ही लाखों भाई हमारी ओर उत्सुक दृष्टि से देख रहे हैं और हम उनकी सहानुभूति से लाभ उठाने की बात भी नहीं सोचते।

लक्षणों से प्रतीत होता है कि हमारे अन्दर अब भी "मिशनरी स्पिरिट" का एकदम अभाव है। जो लोग भारतीय सभ्यता और संस्कृत का झण्डा फहराते फिरते हैं वे "द्विज देवता घरहि के बाढ़े" हैं वे भूमण्डल की छाती पर अपना झण्डा गाड़ना नहीं चाहते बल्कि भारत के सीमित घरौंदे में ही उसे रोके रखना चाहते हैं। आर्य धर्म के गुछ संदेश वाहक भारतीय उपनिवेशों में जाकर जो कुछ कर आए हैं और आज भी कुछ वहाँ कर रहे हैं उतने ही काम से सन्तुष्ट हो रहना हमारी निर्जीवता और अकर्मण्यता का सूचक है। हमारी राष्ट्रीय सरकार को वहाँ साहित्य का दल भेजना चाहिए क्योंकि अधिकांश साहित्यिक प्रायः निर्धन हैं। जब वे वहाँ जायँगे तभी ऐसा साहित्य तैयार कर सकेंगे। जो हिन्दी पाठकों को नई प्रेरणा देने वाला होगा। समर्थ प्रकाशक भी चाहें तो साहित्यिकों के ऐसे अभियान से लाभ उठा सकते हैं। इस समय ऐसा साहित्यिक प्रयत्न करने का उपयुक्त अवसर आगया है। हिन्दी पत्रकारों के आन्दोलन करने से ऐसा होना सम्भव भी है। हिन्दी के अनेक नवयुवक एवं उत्साही प्रौढ़ लेखक भी अपने अनुभव क्षेत्र को उर्वर और विस्तृत तथा अपने दृष्टिकोण को विशाल बनाने के लिए भारतीय उपनिवेशों की यात्रा के निमित्त तैयार हो जायँगे। इस तरह हमारे साहित्य की संकीर्णता भी नष्ट हो जायगी। हिन्दी की व्यापकता असीम हो जायगी।

यदि गम्भीर विचार करके देखा जाय तो भारतीय शरणार्थियों की समस्या से प्रवासी भारतीयों की समस्या कुछ जटिल नहीं है। देश के भीतर की ज्वलन्त समस्याओं का ध्यान रखते हुए भी महात्मा गांधी सदा प्रवासियों की समस्याओं पर भी दृष्टि रखते थे। उनकी वाणी और लेखनी सदैव प्रवासी समाधान में सचेष्ट और सजग रहती थी। उनका अभाव प्रवासी भाइयों को खलता होगा। ऐसी दशा में प्रवासियों को सान्त्वना देने का यही उपाय है कि हिन्दी में उनके सम्बन्ध की सारी बातें संकलित की जाय। यदि हम उनके सम्बन्ध में हर तरह के आंकड़े और विवरण अनुभव और चित्रण एकत्र करके साहित्य सिरजने लगेंगे तो उन्हें केवल आश्वासन ही नहीं प्राप्त होगा बल्कि वे हमसे बहुत दूर रहते हुए भी हमारे हृदय के बहुत समीप आते जायँगे। और इस प्रकार उनकी और हमारी हार्दिक सहानुभूति भी आकृष्ट होती जायगी। संक्षेप में आशय यह है कि हिन्दी में प्रवासी साहित्य तैयार होने से राष्ट्रभाषा की सम्पत्ति तो बढ़ेगी ही प्रवासी प्रश्न के हल होने में भी मदद मिलेगी।

(पृष्ठ ६ के आगे)

अपने व्यक्तित्व की चरमसीमा को प्राप्त नहीं कर सके—यह उनका दृढ़ विश्वास था। उनका चरखा, उनका संदेश उनकी गो सेवा संघ, उनका किसान और जनसम्पर्क आन्दोलन सबके सब इसी उद्देश्य की पूर्ति के साधन हैं। वह तो विषमता की जड़ ही काट देना चाहते थे? 'न होगा बांस न बजेगी बांसुरी'।

'स्वरक्षा' के नारे पीछे जब तक 'हिंसा भावना' बनी रहेगी तब तक जातियों में 'विस्तार नीति' का अंकूर जमता रहेगा, कोई भी व्यवस्था विश्व शांति स्थापित करने में समर्थ नहीं हो सकती। अतएव जब तक संसार त्याग प्रेम और सेवा की इसी भावना से अनुप्राणित नहीं होगा तब तक विश्व का कल्याण सम्भव नहीं और हमारे युग की मांग का उत्तर भी असम्भव है और इसलिए गांधी जी के देश वासियों का विश्व के प्रति एक बड़ा उत्तरदायित्व है। इस उत्तरदायित्व की सक्रिय पूर्ति ही प्रश्न का उत्तर है!

सचित्र साप्ताहिक 'देशदूत'

संवाददाताओं से निवेदन

संयुक्तप्रांत, मध्यप्रांत, मध्य भारत तथा राजपूताने के संवाद भेजनेवालों से निवेदन है कि वह अपने संवाद संक्षिप्तरूप में ही भेजने का कष्ट करें।

संपादक 'देशदूत'

(पृष्ठ ७ के आगे)

एक जगह इकट्ठी न हो और देश को आर्थिक रूप से किसी प्रकार हानि न पहुँचे।

(५) स्त्रीपुरुष सब को काम के अनुसार वेतन मिलें।

(६) परिश्रमी, बच्चों स्त्रियों और पुरुषों के स्वास्थ्य और शक्ति को बनाए रखने की और उसके अनुसार उन्हें काम दिलाने की जिम्मेवारी राज्य पर होगी।

(७) जो व्यक्ति (बूढ़े और बच्चे) जीविका उपार्जन के योग्य न हों, उनकी रक्षा करना भारतीय सरकार की जिम्मेवारी होगी।

(८) नागरीका को लेखन, भाषण और संगठन की स्वतन्त्रता। होगी पर सशस्त्र प्रदर्शन न हो सकेंगे।

(९) अपने धर्म व संस्कृति की मान्यता पर कोई प्रतिबन्ध न होगा।

(१०) कोई भी नागरिक जन्म जाति के कारण अस्पृश्य नहीं माना जायगा।

भावी भारत का मुख्य शासक प्रधान कहलायेगा। इसे भिन्न-भिन्न घटक इकाइयों और केन्द्र की लोक सभाओं के सदस्य चुनेंगे। वह पाँच साल तक इस पद पर रहेगा, बशर्ते कि मृत्यु, त्याग-पत्र या अभियोग द्वारा उसे अलग न होना पड़े।

केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभा के दो सदन होंगे। एक राज्य-सदन और दूसरा लोक सदन। राज्य सदन के २५० सदस्य होंगे, जिसमें से पन्द्रह प्रधान द्वारा नियुक्त किए हुए विशेषज्ञ होंगे। और शेष घटक इकाइयों के चुने हुए सदस्य द्वारा चुने जायेंगे।

लोक सभा के सदस्य पांच सौ से अधिक न होंगे और उनका चुनाव आम जानता करेंगी। हरेक बालिग को राय देने का हक होगा।

हरेक नया कानून दोनों सदनों द्वारा पास किया जायगा। बजट या दूसरा अर्थ सम्बन्धी बिल लोक सभा में ही पास हो जायगा। दूसरे बिलों के बारे में यदि दोनों सदनों में मतभेद होगा तो दोनों की इकट्ठी बैठक होगी और बहुमत से बिल पास हो जायगा।

हर एक बिल की अन्तिम स्वीकृति प्रधान द्वारा दी जायगी। यदि प्रधान किसी बिल को स्वीकार न करेगा तो उसे फिर लोक सभा में पेश किया जायगा।

घटक इकाइयों की अलग अलग लोक सभाएँ होंगी। जिनकी नियुक्तिउग प्रान्त की लोक सभा की अनुमति पर देश का प्रधान करेगा। यदि कोई इकाई चाहेगी तो वहाँ दो सदन हो सकते हैं।

यदि किन्हीं कारण वश किसी प्रान्त की लोक सभा को तोड़ना पड़ेगा तो उस प्रान्त का राज्य-कार्य सम्भालने की जिम्मेवारी केन्द्र पर आ जायगी।

साधारणतः लोक सभाओं की अवधि पांच साल होगी किन्तु प्रधान को अधिकार होगा कि असाधारण-परिस्थितियों में किसी प्रान्त का गवर्नर वहाँ की लोक सभाओं को तोड़ सकेगा और सर्व अधिकार ले लेगा, किन्तु उसे न्यायालयों पर कोई अधिकार न होगा और इसकी सूचना उसे एकदमप्रधान को-देनीहोगी।

इस प्रकार के अधिकार वह केवल दो सप्ताह तक रख सकेगा किन्तु वह स्थिति लोक सभा की स्वीकृति के बिना ६ महीने से अधिक नहीं चल सकेगी। प्रधान को आर्डनेंस बनाने का अधिकार होगा। यह आर्डिनेंस लोक-सभा के बनाए हुए कानून के समान समझा जायेगा किन्तु इस आर्डनेंस को लोक-सभा के सामने रखना होगा और लोक सभा के बुलाने के पश्चात् ६ सप्ताह से अधिक लागू न रह सकेगा।

सोशलिस्टों की ओर से घोषणा की गई है कि भारतविधानवास्तव में जनता को शक्ति प्रदान नहीं करता, यह एक प्रजातान्त्रिक विधान नहीं। कुछ लोगों की ओर से यह आपत्ति उठाई जाती है कि इस विधान को बनाने वालों ने महात्मा गांधी के सिद्धान्तों को ध्यान में नहीं रखा। केन्द्र को इतनी अधिक शक्ति दी है कि घटक-इकाइयों को किसी विषय में स्वतन्त्रता नहीं रही और प्रधान को यह अधिकार दिए गए हैं जो एक डिक्टेटर को हासिल है।

यह स्पष्ट है कि केन्द्र को बहुत शक्ति दी गई है और यह भी सत्य है कि प्रधान के अधिकार बहुत अधिक हैं। सरकार की ओर से यह युक्ति दी जाती है कि यद्यपि केन्द्र की शक्ति अधिक है किन्तु प्रांतों को कानून बनाने की स्वतन्त्रता है। केन्द्रों को शक्ति छीनेगा जब देश में कोई असाधार स्थिति होगी। असाधारण स्थिति में आवश्यक होता है कि जनता के उनका कर्तव्य स्पष्ट और निसंदिग्ध से रखा जाय। यह एक ही व्यक्ति सकता है और इसीलिए असा स्थिति में एक व्यक्ति को सर्व अ दिए गए हैं।

महात्मा गांधी के सिद्धांतों का आंकना इस पीठी के लिए असम्भ उनके सिद्धान्तों के वास्तविक उनके सच्चे भक्त पं० जवाहर नेहरू भी नहीं समझ सके। गांधी एक आदर्श युग की करना चाहते थे जिसके लिए अभी तैयार नहीं। फिर भी गांधी के मुख्य विषयों को विधा सम्मिलित किया गया है।

पिछले अङ्को का सारांश

[मोहनलाल, उसका चचेरा भाई तोता और उसकी पत्नी रोनी, साधारण तथा गरीब किसान का जीवन। दो बैल, एक दुधारू भैंस और थोड़ी सी खेती। यही उनकी निधि थी। खेत पक गया था। मोहनलाल, तोता तथा रोनी ने खेत की कटाई की और खलियान लग गया। जिन्हें खाने का ठिकाना नहीं था, उन्हें आशा हुई कि मड़ाई होने के बाद ही उन्हें दोनों वक्त कम से कम रोटियाँ मिलने लगेंगी और बैलों तथा भैंस को चारा भी कुछ दिनों के लिये हो जायेगा। किन्तु उभंगम का समय, खलियान में एकाएक जमींदार के सिपाही आ पहुँचे, और जोर-जबरदस्ती करके अनाज के ढेर का तीन हिस्सा बैलगाड़ी पर लाद ले गये। मोहनलाल और रोनी ने दया की प्रार्थना की किन्तु जमींदार के सिपाहियों ने एक न सुनी। खलियान में अनाज के ढेर का केवल चौथाई भाग वह छोड़ गये। मोहनलाल और रोनी का हृदय भावी चिंता से व्याकुल हो उठा। और फिर.........]

(गतांक के आगे)

(६)

जमादार और सिपाहियों की बला को टले कई दिन हो गये थे। उनको नये नये आसामी मिलते गये और वे उनपर अपना हाथ साफ करते गए। केवल एक बार जमादार कुछ सिपाहियों को लेकर आया था, अपनी चौथ उगाहने के लिये उगाहकार अहसान बरसाता हुआ चला गया—

भैंस तुम्हारे पास जरूर थी और है, पर खैर, रियायत करे देते हैं।' भैंस के रखने की खुलासी तो मिल गई, परन्तु बैल गांठ में नहीं थे। रोनी को चिन्ता थी, तोता को भी। रोनी सोचती थी मोहन एक न एक दिन आ ही जायगा, कुछ रुपये लायगा, तब बैल हो जायँगे। तोता को विश्वास था मोहन बहुत समय बाद लौटेगा। यदि किसी सेना में भरती हो गया और लड़ाई में मारा गया तो? तोता इससे विचलित नहीं होता था। तत्काल समस्या बैलों की थी। उसने सोचा किसी की सोंझ बैल मिल जायँगे मैं बदले में मजदूरी कर दूँगा, परन्तु फसल के आने तक अन्न कहाँ से मिलेगा? रोनी को अन्न की इसकी चिन्ता न थी। भैंस दुधार है घी होता चला जायगा, घी बेंच कर अन्न ले लेंगे।

भैंस को दोह कर तोता मज़दूरी के लिये गाँव में चला गया। रोनी ने दूध जमाया, हाथ मुँह धोकर भैंस के पास आई। भैंस को थपथपाया हाथ फेरा और उससे लिपट गई।

भैंस 'हुँ हुँ' की दीर्घ कण्ट श्वास से उसको उत्तर देने लगी। रोनी के चेहरे पर ओज था और होठों पर प्यार भरी मुस्कराट। आँखों में गर्व का आनन्द। वह कुछ समय तक भैंस से लिपटी हुई उसकी पीठ पर हाथ फेरती रही। फिर उसके पिस्सुओं को निकालने लगी। भैंस को आराम मिल रहा था और वह घुर्र घुर्र कर रही थी। वह भैंस से जरा हटी भैंस ने तुरन्त उसकी ओर मुँह फेरा। छोटे छोटे मुड़े हुए सींगो वाले सिर को झुका झुका कर वह रोनी को लिपट जाने और हाथ फेरने के लिये मानों आमन्त्रण देने लगी। रोनी हँसने लगी। उसके मोतियों जैसे दाँत चमकने लगे।

'अच्छा, फिर तुमको गले से लगा लूँ? पीठ खुजला दूँ? देखो बहुत लाड़ प्यार नहीं करूँगी नहीं तो अल्हड़ हो जाओगी? तुम घुर्र घुर्र करके क्या माँग रही हो? अच्छा अच्छा मैं तुमको अभी कल का मट्ठा पिलाती हूँ और क्या खाओगी थोड़ी सी वासी रोटी मट्ठे में मीड़ दूँगी। फिर बाहर चर चराकर साँझ के पहिले आ जाना। एँ, भला? रोनी की बात मानो भैंस ने समझ ली। वह गले की रस्सी को ज़ोर ज़ोर के साथ झटका देने लगी। रोनी उससे फिर लिपट गई भैंसने अबकी बार सिर घुमा कर चाटने के लिये उसकी टाँग पर जीभ डाली और चाटने लगी। रोनी ने उसको कुछ क्षण चरने दिया। जब उसकी जीभ अधिक खुर खुरी लगी तब उसको गुल गुली आई और वह हँसती हुई उछल कर दूर खड़ी हो गई। भैंस फिर घुर्र घुर्र करने लगी रोनी के सुन्दर मुख पर आनन्द की रेखायें बिखर गईं। वह भीतर गई और एक कूँड़े में मट्ठा और थोड़ी सी बासी-रोटी मीस कर ले आई। भैंस के सामने रख कर चारा इकट्ठा करने लगी। चारे के पास ही उपले और गीला सूखा गोबर पड़ा था। यदि वे होते तो कलेवा मांगते। उहँ, होंगे कहीं। और मोहन को ध्यान में और अधिक नहीं आने दिया। फिर भी एकाध बात ने ध्यान को पकड़ ही लिया। कलेवा मांगते तो कहां से देती? भैंस का पेट तो काटती नहीं। पीसने के उपरान्त रोटी दी जा सकती थी। तब तक थोड़ा सा मट्ठा पीं लेते। फिर अपने लिये तोता के लिये क्या रह जाता? बिचारा कितना श्रम करता है! वे भी करते। हुँ, उतना कहाँ करते थे? और फिर किस बुरी तरह बोलते थे! एक बार तो मिठास के साथ रोनी न कहा!! उहँ, फिरते होंगे कहीं मुँह उठाए!!!

रोनी ने अनाज पीसा। रोटी बनाई खाई और गाँव में मजदूरी पर गए हुए तोता के लिये ले गई। क्रोध करने के लिये उसको उन दिनों कोई नहीं मिला।

क्रमशः

(पृष्ठ ११ के आगे)

दुलारी का अभिनय मधुबाला ने किया है इसका अभिनय काफी अच्छा है, प्रेम की माता के रूप में प्रतिमा देवी का कार्य भी रहा है, परन्तु कस्तूरी की भूमिका में गीताबाली बिलकुल नहीं जंची है। यह अभिनेत्री सुहागरात के बाद जितने चित्रों में आई उनमें किसी में इसका कार्य ठीक नहीं रहा। जयन्त प्रेम के पिता के रूप में असफल रहा। सुरेश भी प्रेम की भूमिका में ठीक नहीं उतरा। वह एक निहायत रूखा व्यक्ति मालूम पड़ता है। सोना चांदी में सुरेश के हीरो बनने पर यह आशा की जाती थी कि यह युवक आगे चलकर और अच्छा अभिनय करेगा परन्तु दुलारी [illegible] का है। कोई नयी धुने इस फिल्म में नहीं हैं।

इसके अतिरिक्त कहानी में कई कमजोरियाँ है। प्रेम के पिता और माता मजाक करते हुए दिखलाये जाते है। मजाक भी निहायत अश्लीलतापूर्ण हैं। मालूम नहीं कि क्यों संसार की निगाह यहाँ नहीं पड़ी। हिन्दू घराने में ऐसा भद्दा मजाक देखने को नहीं मिलता है जैसे कि इस फिल्म में दिखलाया है। कस्तूरी और जग्गू के वर्तालाप जगह २ निहायत अश्लील और उत्तेजनापूर्ण है क्या। हिन्दूस्तानी फिल्मों में संवाद लेखकों ने अश्लील और उत्तेजनापूर्ण संवादों को स्थान देना ही उचित समझा है?

इस फिल्म में करीब एक दर्जन गाने और आधे दर्जन नाच हैं हर दस मिनट बाद एक गाना होता है ऐसा मालूम होता है कि यह एक गीतों भरी कहानी है। चित्र अश्लील संवादों और कोई नवीनता के कारण देखने योग्य नहीं है।

संवाददाताओं के पत्र

जोधपुर कांग्रेस के अध्यक्ष श्री मानमल जी के सभापतित्व में कई हज़ार लोगों की सर्वजानिक सभा में भाषण देते हुए राजस्थान के भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री माणिक्यलाल जी वर्मा ने कहा कि राजस्थान प्रान्तीय कांग्रेस ने राजस्थान मंत्री मंडल के विरुद्ध जो अविश्वास का प्रस्ताव पास किया उसका प्रतिफल यह मुकदमा है, हम इसका जवाब शानदार ढंग से देंगे या इतने नीचे उतर कर दें इस पर हमें सोचना है, हमें संगठन की इज्जत करना है हमारा सारा प्रयत्न संगठन को बचाने के लिये होना चाहिए, हमारा प्रयत्न उसी नीति को अपनाना नहीं है, हमें शांति, संयम और धैर्य से आने वाले प्रहार का मुकबला करना है।

लोकनायक श्री जयनारायण जी व्यास ने भाषण देते हुए कहा कि मुझे अपने और मुकदमें के विषय में कुछ नहीं कहना है। मुझे और आपको अपने दीमाग कोसंभाल कर रखना होगा। इस मुकदमें की वजह से कांग्रेस के काम में धक्का नहीं लगना चाहिए। प्रान्तीय कांग्रेस ने तो मंत्री मंडल में अविश्वास प्रकट कर दिया और उस पर हमें जो कार्य समिति ने कहा उसका उत्तर भी प्रान्तीय कांग्रेस ने दे दिया। प्रान्तीय कांग्रेस अपनी नीति पर दृढ रही है, उसने अपनी पद्धति को नहीं छोड़ा है, हमने व्यक्तिगत मामलों में बोलना छोड़ दिया पर सामुहिक मांगे जनता की रखते रहे हैं किन्तु आज प्रान्त में कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ सरकार ऐसे व्यवहार कर रही है जयपुर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष चौधरी हरलाल सिंह जी जिन्होंने प्रान्तीय कांग्रेस में मंत्रीमंडल के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव रक्खा था उनकी शिक्षा संस्था की तलाशी ली परन्तु उनके यहां कुछ नहीं मिला, इसी प्रकार बीकानेर में कांग्रेस कार्यकर्ता गिरफ़्तार किये जा रहे हैं, दमन हो रहा है।

कुछ भी हो, श्री व्यास ने भाषण देते हुए कहा कि, कांग्रेस को हमें छोड़ना नहीं है, कांग्रेस हमारी है हम कांग्रेस के हैं। मुकदमा चलने पर मैंने कांग्रेस के प्रान्तपति पद की जिम्मेवारी को छोड़ा है, मैंने कांग्रेस केसभापति पद से त्यागपत्र नहीं दिया है। कांग्रेस से हमें शरारतियों को निकालना है, जोर की तालियां, आप तन, मन, धन से कांग्रेस की मदद कर उसे मजबूत बनाइए।

रतनगढ़ (बीकानेर) २६ ३० जनवरी को रतनगढ में होने वाले राजस्थान हिन्दी साहित्य सम्मेलन में ये सभापति निर्वाचित हुए हैं। प्रधान-मुनि श्री जिन विजयजी (बम्बई) साहित्यपरिषद्-श्री कन्हैयालालजी ओझा एम० ए० (उदयपुर) कवि सम्मेलन-श्री सुमनेशजी जोशी (जोधपुर) राष्ट्रभाषा परिषद्-श्री अभिन्नहरिजी (कोटा) राजस्थानी परिषद्-राजकुमार मानसिंह जी (बनेड़ा) राज शिक्षा सम्मेलन-श्री गौरी शंकरजी आचार्य (बिकानेर) पत्रकार सम्मेलन-श्री चन्द्रगुप्त जी वार्ष्णेय (अजमेर)

अजमेर—इस वर्ष अजमेर-मेरवाड़ा प्रांत में वर्षा की कमी तथा फस्ल में कीड़ा लग जाने के कारण और चारे का भीषण अकाल पड़ गया है। चीफ कमिश्नर महोदय ने एक प्रेस विज्ञप्ति में बताया है कि अन्न अधिक देने के लिये भारत सरकार से प्रार्थना की गई है। गेगल-रामेश्वर-धार्वा, बांदन बाड़ा-नियारन और ब्यावर-कोटरा-जवाजा की सड़कों पर निर्धन किसानों को आजीविका दिलाने के लिये कामपर लगा दिया गया है। इसके अतिरिक्त ३ अन्य सड़कों तथा एक तालाब को खोदने का काम प्रारम्भ किया जावेगा। सस्ता चारा वितरण करने के लिये भी अजमेर ब्यावर, विजयनगर और बांदन बाड़ा में व्यवस्था की है। तकावी कर्जा तथा लगान में कमी करने का प्रश्न भी विचारणीय है।

जोधपुर—मारवाड़ जिला कुमार साहित्य परिषद के केन्द्रीय कार्यालय प्रकाशित एक विज्ञप्ति में परिषद समस्त शाखाओं को परिषद की वर्ष गांठ उत्साह वर्धक वातावरण सादगी से मनाने का आदेश गया है। स्मृतिफल स्वरूप २६ जन से एक फरवरी तक सुविधानुसार शाखाओं को प्रभात फेरियों, जनिक कार्य कर्ताओं की सभाओं, और संगीत गोष्ठियों, नाट्य प्रद लेट रिन शो का जनता में प्रद वाद विवाद प्रतियोगिताओं का आ जन, पत्रिका प्रदर्शन आदि कार्य को इस एक सप्ताह में स्थान देना चाहि

Registered No. A—295

विविध विषयों के हमारे बढ़िया ग्रन्थ

इस पुस्तकमाला की ४ प्रसिद्ध पुस्तकें हैं—(१) 'योगायोग' कवित्वमय श्रेष्ठ उपन्यास। मूल्य ४) (२) 'विश्व परिचय' विज्ञान-विषय अनन्य ग्रन्थ। मूल्य २), (३) 'रूस की चिट्ठी। रूस का आँखों देखा वर्णन, मूल्य २) (४) 'चार अध्याय' ऐसा उपन्यास जिसमें राजनीति, समाज और स्त्री-पुरुष-समस्या आदि पर विचार हैं मूल्य १।)

इसमें प्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव के नये गीतों का संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अन्तर्द्वन्द्व से पूर्ण है। छपाई सफाई नयन मोहक। सचित्र सजिल्द प्रति का मूल्य २) दो रुपये।

लेखक भू० पू० काकोरी सके के कैदी श्री मन्मथनाथ गुप्त और राजेन्द्र ...र्मा। समाजवाद के अध्ययन के लिये पढ़ना आवश्यक है। मार्क्स-... के दर्शनों में यह सबसे गहन है। एक दर्जन अध्यायों में विषय ...पादन हुआ है। मूल्य ६) छः रुपये।

यह श्री श्यामनारायण पाण्डेय, की प्रसिद्ध रचना है। इसमें महाराणा प्रताप के हल्दीघाटी वाले संग्राम का वीरता पूर्ण वर्णन बढ़िया छन्दों में है। सजिल्द सचित्र पुस्तक का मूल्य २।।।) दो रुपये बारह आने।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, ३६, पन्नालाल रोड, इलाहाबाद

प्रधान संपादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल।

कृष्ण प्रेस, प्रयाग में ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल द्वारा मुद्रित तथा 'देशदूत' कार्यालय प्रयाग द्वारा प्रकाशित

अनेक विषयों की बढ़िया पुस्तकें

हिन्दी भाषा का संक्षिप्त इतिहास

यह राय बहादुर डाक्टर श्यामसुन्दर दास के इसी नाम के ग्रन्थ का सारांश है। विषय नाम से ही प्रकट है। अपनी भाषा का इतिहास संक्षेप में पढ़ने के लिए इसे लीजिए। अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य १) एक रुपया।

आदर्श भूमि अथवा चित्तौर

चित्तौर राजपूतों के त्याग के कारण तीर्थ बन गया है।'भारत के गौरव स्वरूप उसी चित्तौर का ओजपूर्ण भाषा में लिखा गया इतिहास पढ़कर अपनी जानकारी बढ़ाइए। मूल्य २) दो रुपये।

पंडित जी

नामी उपन्यास लेखक शरद बाबू के इस उपन्यास में कुलीनता, उच्च शिक्षा, द्विज और द्विजेतर, गाँव की भलाई और अपनी उन्नति, नई शिक्षा और मिथ्या अभिमान आदि के सम्बन्ध में बहुत ही विशद विवेचना की गई है। मूल्य २) दो रुपये।

मैक्सिम गोर्की

रूस के इस विश्रुत कलाकार के परिचय के लिए इस पुस्तक को पढ़िए। है तो यह जीवन चरित, पर इसे पढ़ने में कहानी का आनन्द मिलेगा। इसकी जीवनचर्या का वर्णन पढ़कर पाठक जान सकेंगे कि इस कलाकार को किन विकट कठिनाइयों में होकर गुजरना पड़ा था। छोटे टाइपों में छपी लगभग ढाई सौ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य ३) तीन रुपये।

युद्ध और शान्ति

यह संसार के श्रेष्ठ उपन्यास-लेखक और विचारक काउण्ट लियो टाल्सटाय के प्रसिद्ध रूसी उपन्यास 'वार एण्ड पीस' का हिन्दी रूपान्तर है। यह ऐतिहासिक उपन्यास तब लिखा गया था जब लेखक की शैली परिमार्जित हो गई थी और उन्हें अन्तर्द्वन्द्व से छुटकारा मिल कर शान्ति मिल गई थी। लेखक ने उसमें मानव-जीवन का सम्पूर्ण चित्र, अपने समय के रूस की तस्वीर और राष्ट्रों की खींचतान बड़ी खूबी से चित्रित की है—जीवन और मृत्यु के रहस्य का भी उद्घाटन किया है। लगभग पौने सात सौ पृष्ठों की सजिल्द प्रति का मूल्य ५।-) पाँच रुपये पाँच आने।

कुलबोरन

श्री चन्द्रभूषण वैश्य ने इस उपन्यास को सत्य घटना के आधार पर लिखा है। समाज की अन्ध परम्पराओं से देश की जो हानि हो रही है उसका इसमें सजीव चित्र है। सुधार करनेवाले को रूढ़ियों के अन्ध भक्तों से जैसा लोहा लेना पड़ता है उसका नमूना उपन्यास का नायक, 'कुलबोरन' है। अच्छे कागज पर छपी सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥) दो रुपये आठ आने।

अल्पता की समस्या

'साम्प्रदायिक भेद पर विशेष अधिकार माँगना और ऊलजलूल दावे पेश करना तथा उन माँगों के पूरा न होने पर देशद्रोह के लिए कमर कस लेना किसी देश-भक्त का काम नहीं।' इसी पर दृष्टि रख कर पंडित वेंकटेश नरायण तिवारी एम० ए० ने तथ्यों और आँकड़ों के साथ पुस्तक में उलझन को समझाया है। पाकिस्तान बन जाने पर भी जिनके मन में ऊपर लिखी भावना है उनके समाधान के लिए इसमें सप्रमाण उत्तर है। मूल्य २) दो रुपये।

ईरान

महा पंडित राहुल सांकृत्यायन ने इस पुस्तक में अपनी ईरान-यात्रा का विशद वर्णन किया है। इसके पढ़ने से ईरान की बहुत-सी जानकारी पाठकों को हो जायगी। भ्रमण-वर्णन कहानी का सा आनन्द देगा। मूल्य १॥=) एक रुपया ग्यारह आने।

मध्य प्रदेश और बरार का इतिहास

इस अत्यन्त प्रामाणिक इतिहास में उक्त प्रदेश से सम्बन्ध रखनेवाली सभी प्राचीन और अर्वाचीन महत्त्वपूर्ण बातें आ गई हैं। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

सुन्दरी-सुबोध

इस पुस्तक में पति-पत्नी को सन्तुष्ट रखने के उपाय इस ढंग से बताये गये हैं कि कहानी का आनन्द देते हैं। इसके सिवा सास-पतोहू, देवरानी-जेठानी, ननद-भौजाई, माता-पुत्र आदि स्त्री के दूसरे सम्बन्धों को भी ठीक २ रखने के उपाय बताये गये हैं। पुरुषों के लिए भी बहुमूल्य अनुभूत बातें दी गई हैं। इनको उपयोग में लाने से गृहस्थी सुखमय हो सकती है। ३०० पृष्ठों से अधिक की सजिल्द प्रति का मूल्य २॥) दो रुपये आठ आने।

आदर्श महिला

इस पुस्तक में सीता, सावित्री, दमयन्ती, शैव्या और चिन्ता आदि पाँच प्रसिद्ध देवियों की जीवन-घटनाओं का सजीव सचित्र वर्णन दिया गया है। इसको पढ़ने में कहानी का आनन्द मिलेगा और शिक्षा सहज ही। मूल्य २॥=) दो रुपये ग्यारह आने।

कथा सरित्सागर

इस पुस्तक में आदि से ... तक एक से एक बढ़िया कहानि... जैसा इसका नाम है, यह क... का समुद्र है। प्रत्येक कथा के ... एक न एक दृष्टान्त है। ... सजिल्द प्रति का २॥=) मू... रुपये ग्यारह आने।

देव दर्शन

इसमें व्रजभाषा के प्रख्यात ... देव की जीवनी और उनके ... काव्यों का आलोचनात्मक ... दिया गया है। व्रज काव्य के ... अतिरिक्त साहित्य के विद्यार्थि... लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उ... है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ... एक रुपया पाँच आने।

बन्दना

यह श्रीमती चन्द्रमुखी ओझा ... के ५२ मधुर गीतों का संग्रह ... आरम्भ में श्री सूर्यकान्त ... 'निराला' की लिखी प्रशं... अच्छे कागज पर छपी ... पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

तुलसी के चार दल

(प्रथम और द्वितीय ... गोस्वामी तुलसीदास जी के रा... नहछू, बरवै रामायण, पार्वती ... और जानकी मंगल का आ... नात्मक परिचय तथा इन चारों ... की अध्ययनपूर्ण टीका। इसे इ... की कुंजी समझिए। मूल्य प्रथम ... का ३) रुपये, द्वितीय भाग का ... दो रुपये ग्यारह आने।

ग्रह-नक्षत्र

इस पुस्तक में ग्रहों और ... आदि से सम्बन्ध रखने वाली ... सभी आवश्यक बातों का ... वर्णन सरल भाषा में है। मू... तीन रुपये।

हार या जीत

इस उपन्यास में लेखक ... व्रजेश्वर वर्मा एम० ए०, डी० ... ने एक देहाती लुहार की अल... बेटी को घटनाक्रम से, अनाथ ... में, देहात से महराजगंज की ... पृथाकुंवरि के आश्रय में पहुँचा ... है। वहाँ रानी की कृपा ... लड़की ने विद्या पढ़ी। फिर इस... गुणों का विकास हुआ जिससे ... सभ्य होकर सम्मान पाता है। ... असहयोग आन्दोलन में सक्रिय ... लिया और अन्त में कलकत्ता ... नौकरी कर ली। कई पुस्तकें लि... विदेश-यात्रा के बाद रानी के ... की प्रार्थना पर उससे विवाह ... उपन्यास की घटनावली, विचार ... संघर्ष और चन्दा की न... दृढ़ता सराहने योग्य है। मू... दो रुपये।

मैनेजर—बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

वर्ष १२, संख्या २२] रविवार, ५ जनवरी, १९५०

पूर्वी जर्मनी के प्रेसिडेंट विलियम् क्रूक अपने कूटनीतिज्ञ सहकारी के साथ।

टेढ़ी, सीधी, खरी-मजेदार

संयुक्त प्रांत का नाम अब 'उत्तर प्रदेश' हो गया है। चलिये यह अच्छा हुआ, कम से कम अंग्रेजी जाननेवालों के लिये तो यू॰ पी॰ सुरक्षित रह गया, यही क्या कम है।

❀ ❀ ❀

हिन्दी साहित्य सम्मेलन से परीक्षा विभाग अलग कर दिया गया ठीक ही है क्योंकि डाक्टर अमरनाथ झा के आजाने से हिन्दी महाविश्वविद्यालय बनने वाला है।

❀ ❀ ❀

जनतंत्र भारत की वर्तमान पार्लामेंट में पहले से अब दो स्त्री सदस्यायें कम हैं। जनतन्त्र भारत में स्त्रियों के लिये यह सम्मान की बात है। अभी तो दो ही की कमी हुई है, यदि नया हिन्दू कोडबिल पास हो गया तो कहीं उनकी सफाई ही न हो जाये, भय इसी बात का है।

❀ ❀ ❀

विहार के गवर्नर माननीय अणे ने इन्जीनियरों की एक सभा मे कहा हैं कि वह जनता की आवश्यकतायें पूरी करें। देखना है यह सूट-बूट धारी इन्जीनियर कन्ट्रोल हटा देते हैं या अधिक अन्न उपजाने में सहायक होते हैं?

❀ ❀ ❀

बहावलपुर के नवाब ने पाकिस्तानी सरकार को अल्टिमेटम दिया है कि यदि पाकिस्तान गड़बड़ करेगा तो उससे मोर्चा लिया जायेगा ! भला पाकिस्तान में पाकिस्तान से मोर्चा लेने वाला एक नवाब तो उत्पन्न हुआ?

❀ ❀ ❀

चीन के भारतीय राजदूत श्री पन्नीकर ने मद्रास की एक सभा में कहा है कि भारत की एकता के लिये भाषा के आधार पर प्रांतों का निर्माण अनुचित है। लेकिन भाषा के आधार पर प्रांतों की निर्माण-योजना के जनक डाक्टर पट्टाभि की रिपोर्ट का क्या होगा बेचारे आंध्र वाले टुकुर टुकुर ताकते ही रह जायेंगे क्या?

❀ ❀ ❀

अमरीकन सीनेट के एक सदस्य ने अमरीका पर यह आरोप लगाया है कि उसने चीन को कम्यूनिस्टों के हाथ बेच दिया है। एज़ेन्ट जनरल च्यांग तो फारमूसा में बैठे ही हैं। विक्रय तो एज़ेंट की मार्फत होता है। जहां च्यांग काई शेक वहां प्रजातंत्र चीन। जैसे शांघाई वैसे फ़रमूसा।

❀ ❀ ❀

श्रीजयप्रकाश नारायण अनशन करने वाले थे किन्तु अब वह अनशन नहीं करेंगे क्योंकि श्री रफी अहमद किदवाई ने उन्हें अश्वासन दिया है कि अब डाक कर्मचारियों की मंहगई कम न की जायेगी। किदवाई—नारायण मुलाकात का मेल मिल गया है।

❀ ❀ ❀

ब्रटेन के प्रधान मंत्री एटली ने कहा है की भारत एशिया का प्रकाश स्तंभ बनेगा क्योंकि भारत ने प्रजातंत्र का सिद्धान्त ब्रिटेन से सीखा है। बात सोलह आना पाव रत्ती है क्योंकि अंग्रेज जब से भारत से चले गये तब से यहां अंग्रेजियत और भी जोर मारने लगी है।

भारतीय जनतंत्र के नये विधान के अनुसार संयुक्त प्रांत में १३२ वर्ष से चालू एक पुराने कानून की अंत्येष्ठि किया होने वाली है। १३२ वर्ष से पहले से वह प्रथम चली आ रही है कि डिप्टी कलेक्टर के पद पर पुराने वाशिन्दे ही नियुक्त किये जाते हैं। लेकिन अब द्वार उन्मुक्त हो जायेगा। विदाई के उपलक्ष में इस कानून की कम से कम जयंती तो मना डालना चाहिये। नहीं तो कवि सम्मेलन या मुशायरा ही हो जाना चाहिए, रेडियो ब्राडकास्ट कर ही देगा।

❀ ❀ ❀

पाकिस्तान के प्रधान मंत्री श्री लियाकत अली खाँ स्टालिन से मिलने के लिये मास्को जाने वाले थे परइस वक्त रुक गये हैं। वह १ अप्रैल को स्टालिन से भेंट करेंगे। मुहूर्त शुभ है।

❀ ❀ ❀
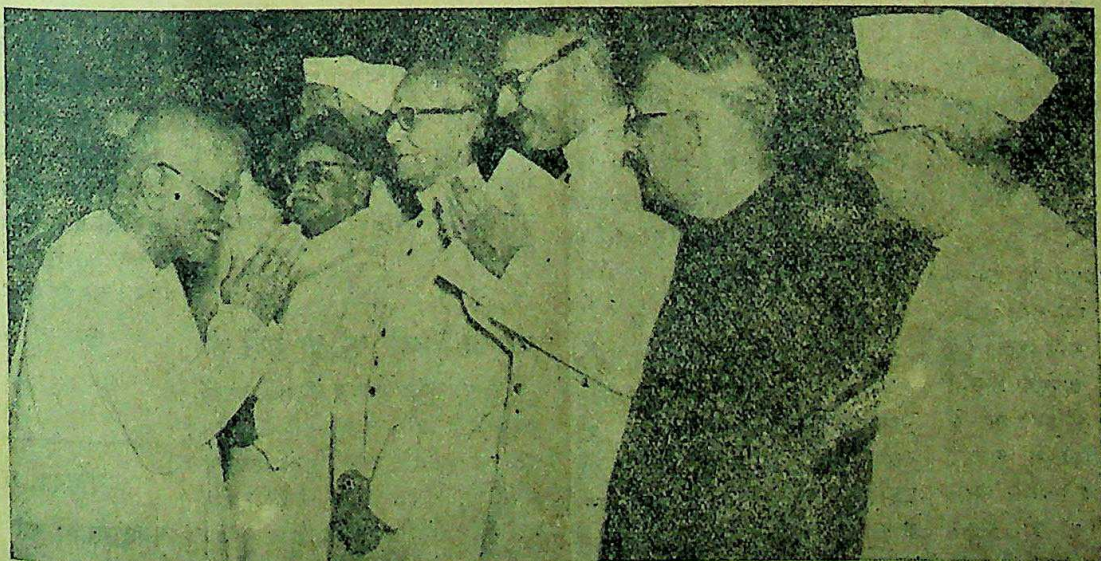
भारत को भूतपूर्व गवर्नर जनरल चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचारी को प्रांतीय गवर्नर विदाई दे रहे हैं।

सम्पादक का पृष्ठ

महासभा और कांग्रेस

हिन्दू महासभा अपना पुराना राग अलापती चली जा रही है। उसे भारतीय जनतंत्र का विधान पसंद नहीं आया। वह विधान में वास्तविकता नहीं देखती। उसने यह भी निश्चय किया है कि आगामी चुनाव अखंड भारत तथा ब्रिटेन से किनाराकशी के नाम पर लड़ा जायेगा। हमारी समझ में यह नहीं आता है कि हिन्दूमहासभा आखिर चाहती क्या है? आज जिस बहुमत के हाथ में शासन की बागडोर है, वह क्या हिन्दू नहीं हैं? यह ठीक है कि वह अपने को हिन्दू घोषित नहीं करते किंतु वह अपने को मुसलमान या ईसाई भी तो नहीं कहते। ऐसी दशा में हिन्दू महासभा क्यों अपना रूप पदर्शित कर रही है? रही आगामी चुनाव की बात, तो इस सम्बन्ध में यह भी निश्चय है कि जनता कांग्रेस को ही वोट देगी, हिन्दू महासभा को नहीं।

❀ ❀ ❀

जनरल च्यांग और अमरीका

जनरल च्यांग काईशेक जब तक चीन में थे, तब तक अमरीका के डालरों ने उनका मुँह तोप रखा था, अब जब चीन में कम्यूनिस्ट राज्य स्थापित हो गया हैं और जनरल च्यांग फारमोसा पहुँच गये हैं तो भी अमरीकन डालर उनका मुँह तोपने को आतुर हो उठा है। अमरीका के वैदेशिक मंत्री फरमाते हैं कि रुपया अमरीका का है, वह जैसा चाहेगा उसे वैसा खर्च करेगा। बात ठीक भी है कि अमरीका का पैसा है, वह चाहे उसे कुँये में डाल दे या प्रशांत महासागर में डुबादे, लेकिन उसने जनरल च्यांग के मुँह में उसे फेंकना बेहतर समझा। समझना भी यही चाहिए, क्योंकि च्यांग ने अमरीका के लिये अपनी जिन्दगी खराब कर दी और अब चलते चलाते वह क्या करें, कहां जायें? च्यांग को ईश्वर जिंदा रखे, अमरीका उन्हें तोप के मुहड़े की तरह कम्यूनिस्ट चीन की तरफ लगाये ही रहेगा।

❀ ❀ ❀ ❀

शांति के ठेकेदार

अमरीका आटमबम से अधिक हजार बार शक्तिशाली बम तथा शस्त्र उत्पादन की योजना बना रहा है। हमारी समझ में उसे अवश्य बनाना चाहिए क्योंकि जब से सोवियट रूस ने स्वयं ही अणुबम अमरीका से अधिक शक्तिशाली बना लिया है तब से अमरीका की हैसियत कौड़ी की हो गई। यह तो लागडाट का मामला है। या तो दुनिया में अमरीका ही रहेगा या फिर सोवियट रूस ही रह गया! ब्रिटेन, वह तो उस सियार की भांति है जिसनें दो शेरों को मूर्ख बना कर अपना मतलब हल किया था। संसार में यदि तीसरा महायुद्ध हुआ तो अमरीका और रूस की जोड़ देखने लायक होगी। ब्रिटेन दूर से तमाशा देखते हुए गेहूँ के साथ धुन भांति पिसेगा। अणुबम बनाने वाले इसी फेरफार में पड़े हैं। संसार में शांति स्थापना की प्रकार मचानेवालों की लीला विचित्र है।

❀ ❀ ❀ ❀

काश्मीर की लीपापोती

काश्मीर के मामलों में सुरक्षा परिषद की ओर से नियुक्त काश्मीर कमीशन के सदस्यों ने पिछले वर्ष बड़ी भाग दौड़ की लेकिन परिणाम कुछ नहीं निकला। अभी तक मामला खटाई में पड़ा हुआ है। हमें भी इसका ज्ञान पहले ही से था। भारत ने गलती की कि वह सुरक्षा परिषद के पास गया कि वह काश्मीर के सम्बन्ध में निर्णय दे दे। उसी का फल उसे अभी तक भोगना पड़ रहा है। योरोपियन विशेष कर अमरीकन और ब्रिटिश अपनी बंदरबांट नीति के लिये प्रसिद्ध हैं। काश्मीर के प्रश्न के सुलझाने में भी वह अपनी पुरानी बंदरबांट नीति का पूरा परिचय दे रहे हैं। इससे प्रगट है कि काश्मीर की खैरियत नहीं है। चाहे पंडित नेहरू अमरीका का धावा बोलें या शेख अब्दुल्ला साहब, वजीरे आजम काश्मीर।

❀ ❀ ❀

पाकिस्तान तथा आजाद काश्मीर की फौजें आज भी काश्मीर में अपना तमाशा दिखा रही हैं। पाकिस्तान के प्रधान मंत्री श्री लियाकत अली खाँ तथा उनके कुछ बाडीगार्ड हफ्ते-पन्द्रह दिन में कुछ न कुछ काश्मीर के संबंध में कह ही डालते हैं, बस और क्या चाहिए। सुरक्षा-परिषद तथा काश्मीर कमीशन के सदस्यों के लिये बस इतना ही काफी है। इसी से वह काश्मीर के मामले को जीवित रखना चाहते हैं। काश्मीर का मामला हल हुआ कि भारत पाकिस्तानी नाटक भी समाप्त। फिर विदेशी गोरों को नाटक देखने को कहाँ मिलेगा?

* * *

भारतीय पार्लमेंट में श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित ने भाषण करते हुए पंडित नेहरू की अमरीका यात्रा के महत्व का वर्णन किया। एक सदस्य ने जब यह पूछा कि पंडित नेहरू को अमरीका यात्रा से काश्मीर की समस्या से हल करने में कितनी सफलता मिली तो पं० नेहरू बीच में बोल उठे कि 'बहुत कम'। नेहरू जी ने श्रीमती पंडित को उत्तर देने नहीं दिया। समझ में नहीं आता कि काश्मीर के मामले में लुकी-छिपी बातें क्यों की जाती हैं? पंडित नेहरू ने स्वयं बतलाते हैं और दूसरे को बतलाने देते हैं। गोपनीयम्-गोपनीयम् करते करते कहीं मुसल्लम् गोपनीयम् की नौबत न आजाये, भय इसी बात का है।

❀ ❀ ❀

जयन्ती जिन्दों की या मुर्दों की

हिन्दी संसार में अब नई नई प्रथायें बुद्धिवादियों द्वारा चलाई जा रही हैं। अब तक कबीर, सूर, तुलसी तथा भारतेन्दु आदि की, जो इस असार-संसार को छोड़ कर चले गये हैं जयंती मनाई जाती है। किंतु अब जीवित-कलाकारों की जयंतियाँ की छाया वादी चाल भी हिन्दी साहित्य के कुछ धर्म ध्वजियों द्वारा चली जा रही है। निराला-जयंती इसकी जीती जा[illegible] मिसाल है। महाकवि निराला के कष्टों [illegible] परसा हाल कोई नहीं दिखाई देता [illegible] निराला के नाम पर जयंती मना [illegible] दोने दोने चाटने वालों की संख्या [illegible] जा रही हैं। नीरव गान वाले मुर्दा [illegible] जिन्दा का भेद ही भाव भूल बैठे [illegible] समय का फैर इसी को कहते हैं।

❀ ❀ ❀

ऐसे युग-क्षण के चरणों में मेरे कोटि प्रणाम

लेखक, श्री गोपीकृष्ण 'गोपश'

आज स्वर्ग है नया, नये हैं देवी-देव हमारे,
आज नये हो गये अचानक सूरज-चांद-सितारे!
आसमान है नया, धरा का यह उपहार नया है,
राष्ट्र-पर्व के इस वसन्त का यह श्रृंगार नया है!
नये-नये तन, नये-नये मन, नये-नये नारी-नर,
ऐसी मधु ऋतु कभी न आई भारत की धरती पर!
देखो, वह देखो, मधुबन के वे गुलाब के फूल,
देखो, देखो, बड़े-ताल के वट का बड़ा बबूल!
ये गुलाब हैं भारत-माँ के बड़े लाड़ले बेटे,
जो कि देश के लिये विहंसकर इन काँटों पर लेटे!
कांटों पर लेटे कि उन्होंने अपनी साख जमा दी,
आखिर को ले आये वापस वे अपनी आज़ादी!
उनके वे सारे सपने जो हुये न पूरे बरसों!
मुस्काते हैं मन-मन बन-बन बन फागुन की सरसों!
ऐसे में हरषों कि शम्भु का आसन डोल उठा है,
सरसों सुख कि हिमालय अपना सहसा बोल उठा है!—
आज देश पर गिरि-श्रृंगों का
नद-नदियों का राज,
बीती सदियों का,
आनेवाली सदियों का राज!
मां-बहिनों का राज,
अनगिनत जन-अशेष का राज,
अरे, उठाओ शीश,
देश पर आज देश का राज!
ऊपर नज़र करो कि सूर्य
अब हम हो नहीं जलाता,
सुनो कि देखो सारा जग-भारत के स्वर दोहराता!
इन्द्र-धनुष बन गई क्षितिज पर
भरी हृदय की तानें,
बादल के पंखों पर अंकित बापू की मुस्कानें!
पानी की बूँदें न, अरे, ये
आशिर्वचन अमोल,
इनसे पटे रहे हैं
वैष्णव 'वैष्णव-जन' के बोल!
यह क्षण काश्मीर की सुषमा बनकर अजर-अमर हो,
यह क्षण गंगा हो, यमुना हो, यह क्षण 'रामेश्वर' हो!
यह क्षण संतों की वाणी हो,
यह क्षण मन-निष्काम.
ऐसे युग-क्षण के चरणों
में मेरे कोटि प्रणाम!!

२६ जनवरी १९५०

ग्राहकों, एजेंटों और वि[illegible] पनदाताओं को समस्त पत्र [illegible] वहार मैनेजर, 'देशदूत' इलाहा[illegible] के नाम पर ही करना चाहिए

राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद

दैनिक जीवन में मैंने उन्हें कैसा पाया ?

लेखक, उमाशंकर शुक्ल, वर्धा

जनतंत्र भारत के राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद का जीवन कैसा है ? वह किस प्रकार दैनिक जीवन व्यतीत करते हैं, इसका रोचक वर्णन इस लेख में किया गया है। लेखक अनेक बार राष्ट्रपति से भेंट कर चुका है, इसलिये यह लेख जानकारी से पूर्ण है।

राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद माननीय श्री जगजीवनराम के साथ।

राष्ट्रतीर्थ वर्धा में एक पत्रकार के रूप में मैं अपना जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। गत दश वर्षों में न जाने कितने ही अपने नेताओं से बार बार मिलने के अवसर आये। उनसे समाचार प्राप्त करने के लिए मुझे मिलना जरूरी भी होता है। अपने छोटे से पत्रकार जीवन में मैंने यही देखा कि देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद महान से महान होते हुए भी वे छोटे से छोटे आदमी से उसी तरह मिलते हैं, जिस तरह वे पं० नेहरू या सरदार पटेल से मिलते हैं। उनके जीवन की यही विशेषता है। वे बहुत ही सादगी के साथ रहते हैं और किसी प्रकार का उनके पास दिखावा नहीं है। इन पंक्तियों के लेखक को उनसे मिलने के कई अवसर आये हैं। सरलता की तो वे मूर्ति ही हैं।

राष्ट्रपिता गांधीजी से मिलने के लिए वे कई बार सेवाग्राम आते थे और वर्धा में राजेन्द्र बाबू का तो विशेष प्रेम है वे कई बार यहां पर महीनों रह चुके हैं। यहाँ की जलवायु उनके स्वास्थ्य के अनुकूल रहती है। वर्धा को तो वे अपना घर ही मानते हैं। बजाजवाड़ी के बड़े बूढ़ों से तो वे परिचित हो हैं किन्तु छोटे छोटे बच्चों के भी वे परिचित बन गये हैं। और बच्चे राजेन्द्रबाबू के पास निडर होकर पहुंच जाते हैं। एक बार तो उन्होंने बच्चों के साथ फोटो भी खिंचवाया था।

देश की आजादी के लिए उन्होंने अनेक कष्ट झेले हैं। जब जब देश पर संकट आये, राजेन्द्र बाबू अपने गुरू के आदेशों के अनुसार बराबर सामने आये उनकी कर्तव्य-परायणता के कारण उन्हें बिहार का गांधी कहा जाने लगा। स्वतंत्र भारत के प्रथम अध्यक्षपद के लिए आपको प्रतिष्ठित करके देश ने आपका बड़ा भारी सम्मान किया है और आप इस पद के उपयुक्त व सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति हैं। प्रसन्नता की बात है कि आपका चुनाव अविरोध हुआ है।

गांधीजी ने कहा था कि स्वतन्त्र भारत का सर्वोच्च पदाधिकारी एक एक किसान होगा। उनकी वाणी सच निकली और आज हम देखते हैं कि राजेन्द्रबाबू देश के सबसे बड़े किसान हैं। वे किसानों के दुःख-दर्दों को जानते हैं। किसानों के जीवन से आप घुल-मिल गये हैं। राजेन्द्र बाबू का समादर देश के किसानों का समादर है।

हमारे राजेन्द्र बाबू भाषणों व वक्तव्यों की अपेक्षा कार्य करने में विश्वास करते हैं। बीमारी की उन्हें चिंता नहीं रहती वे काम की चिंता रखते हैं। पिछले दिन वे वर्धा में यद्यपि अस्वस्थ थे तो भी भारतीय विधान के हिन्दी अनुवाद के कार्य में लगे हुए थे। साथ ही मिलने जुलने वालों को भी अपना समय दे देते थे। उनके पास कोई भी जाय, वे उससे बड़े प्रेम से बातें करते हैं। यही कारण है कि राजेन्द्र बाबू ने बहुत ही लोक प्रियता प्राप्त की है। उनके चुनाव पर फ्रांस के 'एपोक, नामक दक्षिण पंथी पत्र ने डा० प्रसाद को एक आश्चर्यजनक संगठन कर्ता, एक दयालु हृदय के महान् पुरुष व भारतीय स्वतंत्र संग्राम में आगे रहने वाले महात्मा गांधी के सच्चे अनुयायी आदि शब्दों से जो भूरि भूरि प्रशंसा की हैं वह उपयुक्त ही है। उनके हाथों में शासन सूत्र सौंपकर प्रत्येकजाति, प्रत्येक धर्म और प्रत्येक व्यवसाय का व्यक्ति अपने को सुरक्षित अनुभव करता है।

अपने राष्ट्रपिता गांधीजी से विरासत में बहुत से गुण पाये हैं उतने और किसी ने नहीं पाये। अपना 'बापू' की तरह काम में ही विराम मानने की अद्भुत आदत उन्होंने डाल ली है।

प्रतिभा का वरदान प्राप्त तपस्वी पत्र-सम्पादक पं० माखनलाल जी चतुर्वेदी ने कर्मवीर में ठीक लिखा है कि ऊंचाई पर पत्थर की तरह कठोर और नीचे गिरते ही पानी बनकर बहने वालों में से हमारे राजेन्द्र बाबू नहीं हैं। जीवन की किसी भी अवस्था में वे सच्चे किसान हैं। विद्वानों का मत है कि हमारे देश की आत्मा देहात में निवास करती है और इस देहाती नेता के रूप में हमारे देश की आत्मा ही मानों अपनी सादगी और सरलता को लेकर अपनी सात्विक बुद्धि के द्वार शहराती कुटनीति को चुनौती देती हुई राष्ट्र के सिंहासन पर आसीन हुई।

कुछ नेता फोटोग्राफरों को देखकर नाक-भौं सिकोड़ते हैं—पर राजेन्द्र बाबू ने, मैं समझता हूँ कि आज तक किसी फोटो ग्राफर का दिल न दुखाया होगा। स्वयं मैंने न जाने कितने ही पोज राजेन्द्र बाबू के लिए हैं।

उन्हें पहले अखबार वाले प्रायः देश-रत्न लिखते थे किन्तु जब उन्हें पहली बार 'डाक्टरेट प्राप्त हुई तो उन्हें डाक्टर लिखा जाने लगा और आज तो हर अखबार उन्हें 'डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद लिखता है। इस पर एक बार उन्होंने विनोद में कहा की पं० नेहरू सरदार पटेल व अन्य साथियों की 'डाक्टरी' नहीं चली किन्तु मेरी 'डाक्टरी' चल गई और ऐसा कहकर के मुसकुराने लगे।

❀ ❀ ❀

राजेन्द्रबाबू में बुद्धि और भावना का हम बड़ा सुन्दर समन्वय पाते हैं। वे लोगों में मिलकर अपना समय काटना अच्छा समझते हैं। उनके व्याख्यानों में शब्दों का आडम्बर नहीं रहता किन्तु कुछ करने की प्रेरणा रहती है। बात घुमा फिराकर नहीं कहते किन्तु सीधे-सादे शब्दों में कहते हैं। उनकी बाजी में जादू है,जादू। गांधीजी के सिद्धान्तों का उनके भाषणों में बहुत पुट होता है और कभी तो ऐसा मालूम होता है कि गांधीजी की वाणी उनके मुख से ही निकल रही है। गत ईसा जयंती के अवसर पर राष्ट्रपिता गांधी की कुटिया में से राजेन्द्र बाबू ने विश्व के नाम जो शांति संदेश दिया था उसमें उन्होंने स्पष्ट कहा था—

"आज मानवता के पास अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा जीवन को संतुष्ट तथा आरामदेह बनाने के सब साधन उपस्थित हैं, परन्तु उनका प्रयोग विनाशात्मक कार्यों के लिए उपयोग में लाया जा रहा है। उन्हें रचनात्मककार्य के लिये उपयोग में लाया जा सकता है। यह है संदेश शांति के उस आधुनिक दूत का जिसके चरण-चिह्न अभी कुछ समय पूर्व तक इसी धरती पर सुनाई पड़ते थे और जिसने अपने जीवन और विश्वास से इस दुनियां के लक्ष लक्ष नर नारियों प्रभावित किया।"

राजेन्द्रबाबू साधु पुरुष हैं। उनके हृदय में काम करने की तमन्ना है और देश को प्रगति पथ पर ले जाने की निरंतर चिन्ता। भारतीय विधान को बनाने में उनका महत्वपूर्ण हाथ रहा है और विधान परिषद् के अध्यक्ष की हैसियत से उन्होंने बहुत बड़ा काम किया। देश के जो तीन बड़े हैं—उनमें राजेन्द्र बाबू भी एक हैं—अन्य दो हैं नेहरू व सरदार पटेल। तीनों अपने अपने क्षेत्र में बड़े हैं...कोई किसी से न छोटा है और न बड़ा। तीनों बापू की विरासत इस भारत की प्रगति के लिए दिनरात परिश्रम कर रहे हैं। राजेन्द्र बाबू त्याग, सेवा व श्रद्धा के अद्भुत मिश्रण हैं। अहंकार तो उन्हें छू तक नहीं गया है।

भारत के प्रथम अध्यक्ष के महान पद पर उन्हें बैठा देखकर राष्ट्रपित महात्मा गांधी की दिव्यात्मा प्रसन्न हो रही होगी और अपना आशीर्वाद दे रही होगी। बापू के रामराज्य की जो कल्पना थी उसे मूर्त-रूप देने का कार्य राजेन्द्रबाबू करेंगे, ऐसी आशा है।

बापूजी भारत में रामराज्य चाहते थे। उनकी रामराज्य की कल्पना इस प्रकार थी—धर्म की परिभाषा में इसका अर्थ होगा पृथ्वी पर ईश्वर का राज्य-राज करण की भाषा में इसका अनुवाद किया जाय तो इसकी व्यवस्था होगी—एक ऐसा लोकतंत्र, जिसमें गरीब,-अमीर स्त्री और पुरुष, गोरे और काले, जाति या मजहब के कारण असमानता मिट गई है, ऐसे राज्य में सब जमीन व सत्ता जनता के हाथ में होगी। न्याय शीघ्र, शुद्ध व सस्ता होगा। उपासना होगी

(शेष पृष्ठ १२ पर)
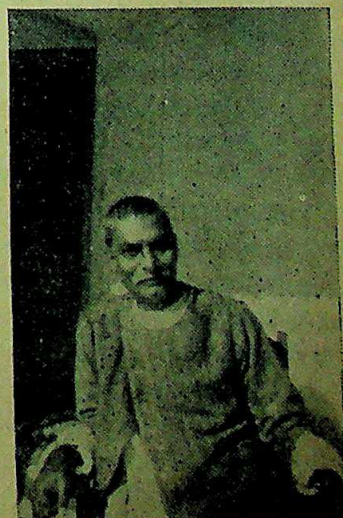
राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद साधारण भेष में।

पूर्वी पंजाब का नव निर्माण

भारतीय जनतंत्र उसे शक्ति और साहस प्रदान करेगा

लेखक, माननीय डा० गोपीचन्द भार्गव

पूर्वी पंजाब की स्थिति आज कैसी है ? पाकिस्तान की उत्पत्ति से पंजाब विषम परिस्थिति का शिकार हुआ वह भारतीय राजनीति में एतिहासिक है। पूर्वी पंजाब के राष्ट्रीय नेता डाक्टर गोपीचंद भार्गव ने इस लेख में पूर्वी पंजाब की स्थिति जो का चित्रण किया है वह महत्वपूर्ण तथा पठनीय है।

आज से ढाई वर्ष पूर्व हमें एक नया प्रान्त बनाने की आवश्यकता हुई थी हमने इस उत्तरदायित्व को सहर्ष स्वीकार किया था। हमारे रास्ते में बड़ी कठिनाइयां थीं राजनैतिक दृष्टिकोण से इस प्रान्त की समस्या दूसरे प्रान्तो से जटिल थी। पर आर्थिक स्थिति कुछ अच्छी थी। इस प्रान्त की नहरों को पांच नदियां पानी देतीं हैं। इन नहरों ने दक्षिणीय... पश्चिमीय ज़िलों को भारत का अन्न दाता बनादिया था। मध्यवर्ग के लोगों ने बहुत से उद्योग चन्दे चालू कर रखे थे। आर्थिक दृष्टि से तथा अन्य कई कारणों से पश्चिमीय तथा मध्य पंजाब की उन्नति को अधिक ध्यान दिया गया था। लायलपुर, लाहौर और मिन्टगुमरी के जिले। प्रान्तीय उद्योग धन्धों शिक्षा तथा व्यापार के केन्द्र थे। सारे उत्तरीय भारत में ऐसा कोई नगर नहीं था जो लाहौर से अच्छे शिक्षा प्रबंध का दावा कर सकता हो।

हमारे मांग में पंजाब का वह क्षेत्र आया जो कृषि और आर्थिक उन्नति दोनों में पिछड़ा हुआ था। साथ ही साम्प्रदायिक झगड़ों की देन इतनी भयानक थी जिसका उदाहरण सारे विश्व के इतहास में नहीं मिलता।

जिस समय विदेशियों ने राज्य की बागडोर भारतीयों के हाथ पकड़ाई। लाखों हिन्दू और सिख जो वर्षों ही पश्चिमी पंजाब में अपने घरों में रहते थे एक दम बेघर हो गए। उन्हे साम्प्रदायिक अग्नि में से होते हुऐ, खून की होली में से गुज़रते हुए सीमा पार करने पर बाध्य होना पड़ा। लाखों मनुष्यों का इस भांति निष्क्रमण भारत के दूसरे भागों के अहिंसक विप्लव के सामने और भी भयानक लगता था।

लगभग पचास लाख हिन्दुओं और सिखों को अपना घर बार धन दौलत और सब प्रकार की निजी सम्पति छोड़ कर इधर आना पड़ा।

उन मुसलमानों की भी कमी न थी जिन्हें सीमा पार कर दूसरी ओर जाना था। यदि हम अपने अतीत को देखें तो दिल कांप जाता है यह सोच कर कि हमें इतनी कठिनाइयों का सामन करना पड़ा। हमारे पास जितना सामान था सब उधर रह गया। हमें अपने सरकारी दफतर अन्य स्थान पर भेजने पड़े क्यों कि हेडक्वाटर पर तो सामान की बहुत कमी थी। हमारे सूचना और यातायात के सब साधन समाप्त हो चुके थे। नदियों की बाढ़ आगई उस मुसीबत को और बढ़ा दिया। हमने धीरज नहीं छोड़ा केन्द्रीय सरकार और सेना की सहायता से हम लोंग अपना काम करते रहे। इतने व्यक्तियों के निष्क्रमण का कार्य महान था परन्तु उनके पुनर्वास की समस्या भी छोटी न थी। आज यह देख कर कितना सन्तोष होता है कि प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकार ने मिल कर इस महान कार्य को करने में कितनी सफलता प्राप्त की है। सबसे अधिक प्रशंसनीय काम तो पुरुषार्थियों ने स्वयं किया है। उन्होंने जीवन का उत्साह इतने कष्ट होने पर भी नहीं छोड़ा। इस विपति को वीरता से सामना करके यह पुनः अपने पैरों पर खड़े हो गए हैं।

सबसे अधिक पुरुषार्थियों को सहायता और अब उनका पुनर्वास हमारी महत्वपूर्ण समस्याएं हैं जिनका उदाहरण इतिहास में भी नहीं मिलता। २७ लाख से अधिक व्यक्तियों को भूमि देकर बसाना था और ११ लाख को शहरों में। उन बातों को याद करने से कोई लाभ नहीं है। हमने समस्या को भली प्रकार हल कर लिया है और आगामी दो भाषा में हमारे ग्रामीण शरणार्थियों को प्रायः स्थायी तौर पर भूमि निर्धारित हो जाएगी।

इस बात का बड़ा प्रयत्न किया गया है कि प्रान्त के आर्थिक और सामाजिक जीवन में उधर से आने वालों को स्थान दिया जाए। टैक्नीकल ट्रेनिंग के लिए तथा उद्योग धन्धो को सिखलाने के लिए पुरुषार्थियों को पूरा पूरा अवसर दिया गया है। बहुत से लोगों ने अपना व्यापार आरम्भ कर लिया है। जिन मजदूरों की भूमि नहीं है वह कार्य केन्द्रो में लगा दिए गए हैं। जैसे भाखरा तौर नांगल की योजनाओं में बहुत से मजदूर काम कर रहें हैं।

पूर्वी पंजाब के शहरों में १४ लाख के लगभग पुरुषार्थियों को अपने में सम्मिलिन कर लेना बड़ा कठिन कार्य था। क्योंकि इधर आर्थिकस्थिति अच्छी न थी। केवल एक ही उपाय रह गया था कि लोगों को शहरों में बसाने के लिये जीविका के नये साधन ढूंढ़े जाएं। कार्य केन्द्रों वाली योजना इस दृष्टि कोण से बड़ी सकल रही है। नगरों में पुरुषार्थियों को दुकानों घर और फैक्टरियों के निर्धारण ने भी पुनर्वास की समस्याको काफी सीमा तक हल किया है।

हमारे कठोर से कठोर आलोचक भी इस बात से इनकार नहीं कर सके जब हमने १५ अगस्त १९४७ में आरम्भ किया था तो परिस्थितियां खराब थीं। परन्तु इससे हमारा ... कम नहीं हुआ। हमें तो पता ... यह थोड़े समय की बात है। ... शान्ति और कानून की कार्यवाही ... ही हमारा निर्माण कार्य आरम्भ ... था। हमारे बड़े बड़े कर्मचारी भी ... पर काम आए है उन्होंने हमें पूरी सहायता दी है। आज हम दावे ... कह सकते है कि हमारे प्रांत की ... उतनी ही अच्छी है जितनी किसी ... प्रांत की। लोग सब अपने अपने धन्धो में लगे हैं।

हमारे नव निर्माण के ... भाखरा और नांगला की योजनाएं ... सहायक सिद्ध होंगी। इनका काम शीघ्रता पूर्वक हो रहा है। हम ... प्रयत्न कर रहे हैं कि सब प्राप्त ... से हम इसे आगे बढ़ाएं। यह ... कि इसका निर्माण हमारी अतीत ... को काफी हद तक आपस ले ... हमें अपनी खाद्य वस्तुओं के मा... पूर्णतया आत्म निर्भर होना चा... अन्न और अन्य कृषि उत्पादनों ... के लिए कई अल्प कालीन योज... चलाई जा रही हैं। इसके साथही ... और उद्योगों पर भी सरकार बहुत ... दे रही हैं। इस सम्बन्ध में जिन ... समस्याओं को सुलझाना है वे ... इमारत बनाने की सामग्री की ... यातायात की असन्तोस जनक ... और अत्यधिक आर्थिक तंगी। ... कहते हुए प्रसन्नता होती है कि ... अधिकांश प्रयत्न सफल हुए हैं। ...न्धर में खेल उद्योग, लुधियाना ... होजरी उद्योग और प्रांतों के ... केन्द्रों में बुनने और कातने के ... दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति ... रहे हैं। ये इस बात के सूचक हैं ... उद्योग की दृष्टि से स्थायी एवं ... रहा है।

राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की ... शिक्षा का बहुत महत्व पूर्ण ... और हमने अत्यन्त संकट के दिनों ... इसकी उपेक्षा नही की। यूनिवर्सिटी ... नए सिरे से संगठित किया गया। ... कतर स्थानान्तरित संस्थाओं ... संस्थापित किया गया विद्यार्थियों ... संख्या तेजी से बढ़ रही है और ... धंधों और पेशों की शिक्षा फिर ... भांति शुरू हो गई है। अभी बहुत ... करना बाकी है पर मुझे विश्वास ... हमें अवश्य सफलता मिलेगी।

नई राजधानी

लाहौर छिन जाने के ... सरकार को अपनी राजधानी ... बनानी पड़ी यह शासन व्यवस्था ... और सार्वजनिक सुविधा के ... से उपयुक्त स्थान न था। अनेक

(शेष पृष्ठ १२ पर)

प्रधान मंत्री पंडित नेहरू अमरीका के वैदेशिक मंत्री के साथ।

जनतंत्र राज की प्रथम झांकी

दिल्ली में होने वाले समारोह में हमने क्या देखा ?

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

भारतीय जनतंत्र का महोत्सव राजधानी में बड़े समारोह के साथ मनाया गया था। महोत्सव की क्या विशेषतायें थीं, इसका आंखों देखा वर्णन इस लेख में किया गया है। लेखक स्वयं इस उत्सव के अवसर पर उपस्थित थे। लेख सामयिक और पठनीय है।

सरदार वल्लभ भाई पटेल मौलाना आजाद के साथ एक दावत में।

महात्मा गांधी की घोर तपस्या के बाद हमने २६ जनवरी १९५० को हजारों वर्षों के बाद अपने मुल्क में जनता का वास्तविक राज्य देखा। अब हमारे मुल्क के ऊपर किसी विदेशी हुकूमत का शासन नहीं है। हम विदेशी दासताओं से एक-दम मुक्त हो गये हैं, अंग्रेजों के चंगुल से अलग हो गये। देश का बनाना बिगाड़ना जब हमारे हाथों में है। अपने देश के भाग्य विधाता हम स्वयं हैं। राजा प्रजा में जो भेदभाव का वह मिट गया। अब सभी राजा हैं और सभी प्रजा। ऊँच-नीच की खाई खतम हो गई। हमारे कामों पर देश की उन्नति और अवनति निर्भर है।

गत ३६ जनवरी १९५० का दिन स्वर्ण अक्षरों में इतिहासकार लिखेगा। हिन्दुस्तान के लिये गर्व का दिन है। ऐसे दिन बारबार नहीं आते हैं। हमारे मुल्क को इस पवित्र दिन को लाने के लिये कितनी कुर्बानी करनी पड़ी है। क्या यहाँ की जनता नहीं जानती ? उस ८० साल के दुबले पतले सत्य अहिंसा के पैगम्बर को किस लिये बलिदान होना पड़ा ? भगतसिंह और चन्द्रशेखर आजाद को गोली का शिकार क्यों बनाया गया ? यतीनदास ६३ दिन उपवास करके क्यों तड़प-तड़प कर मर गये ? आजादी का रास्ता सीधा नहीं है। आजादी की पहली शर्त कुर्बानी है।

हम लोगों ने विदेशी दासता तोड़ने के लिये अपनी शक्तियों की कुर्बानी की है। भले ही सरकार में मेरी आवाज न हो। हम मंत्रियों के प्रियपात्र न बने हों। देश की राजनीति किधर जायगी कुछ परवाह नहीं। लेकिन २६ जनवरी का दिन हमारे लिये बड़े महत्व और अभिमान का है। मैं भी दूर देहात से चल पड़ा अपनी आँखों से जनतंत्र राज्य का उदय बेला का प्रभात देखने के लिये। राजधानी से ही हम अनुमान लगा सकते हैं। इस पवित्र अवसर पर लोगों में कितना उत्साह भर हुआ था।

२५ जनवरी को ही मैं दिल्ली पहुँच गया था। दिल्ली अब वह दिल्ली नहीं है जो आज से चार साल पहिले थी। बहुत परिवर्तन हो गया है। आबादी बहुत बढ़ गई है। मैं तो जनतंत्र राज का समारोह देखने आया हूँ। घूम घूम कर पार्कों में सड़कों पर और सरकारी भवनों में आने जाने वालों का विचार और उनके हृदय की उमग देख सुन रहा हूँ। यह तो मैं निर्विवाद रूप से कह सकता हूँ। छोटे बड़े सभी लोगों में अपने जन राज्य के प्रति बड़ी श्रद्धा है। नेताओं के कामों को भले ही पसन्द न करते हो लेकिन जन राज के प्रति पूरी निष्ठा है। किसे अपनी स्वतंत्रा प्रिय न होगी ? जननी जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़ कर है। कल की तैयारी चारों तरफ हो रही है। हालांकि आसमान साफ नहीं है। दो दिन बदली छाई हुई है। पानी भी बरस रहा है। मन्द मन्द हवायें चल रही हैं। धीमी धीमी ठन्डी पड़ रही है। दिल्ली अपनी ठन्डी के लिये मशहूर है। जिस पर बदली और पानी का साथ ! अगर ऐसी ही बदली कल भी रहेगी तो जनराज्य का उत्सव फीका न पड़ जाये, यह फिकर हर एक के सामने है। बहुत से लोगों का विचार है, ऊपर से भी ईश्वर जन राज्य के उत्सव में फुहारा छिड़क रहा है। स्वागत का प्रारम्भ है। सबके साथ प्रकृति भी जनराज्य की खुशियाँ मना रही है। नई दिल्ली और पुरानी दिल्ली में सरकारी भवनों पर राष्ट्रीय झन्डे सजा दिये गये हैं। राष्ट्रपति की सवारी जिधर से निकलेगी सड़कों को राष्ट्रीय पताकाओं से सजाया जा रहा है। दरवाजे बनाये गये हैं। बुद्ध भगवान के उपदेश बाज जगहों के दरवाजों पर शुद्ध नागरिक लिपि में लिखा गया है। आत्मसंयम, त्याग और सेवाधर्म वाक्यों की खास विशेषता थी। त्याग में ही राज है। यह आदर्श वाक्य बड़े बड़े अक्षरों में लिखा गया था। दरवाजों पर महात्मा बुद्ध के कुछ खास चित्र बनाये गये थे। विशेष ध्यान सादगी पर रक्खा गया था। दिल्ली के नागरिकों ने अपने अपने घरों को राष्ट्रीय पताकाओं से से सजाया था। चारों तरफ उत्साह का दृश्य नजर आ रहा था।

विश्ववंध गांधी जी की निधन-तिथि सारे देश में ३० जनवरी को मनाई गई।

२६ जनवरी को प्रातःकाल से ही जनता महात्मा गांधी की समाधि पर आकर पुष्पवर्षा करने लगी। राष्ट्रपति डा॰ राजेन्द्र प्रसाद और सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भी सुबह आकर गांधीजी की समाधि का दर्शन किया और आशीर्वाद की भिक्षा मांगी गांधीजी की समाधि से जनतंत्र राज का प्रारम्भ होना शुरू हो गया दिल्ली के नागरिकों में अपने राष्ट्रपिता के प्रति बड़ी श्रद्धा उमड़ रही थी। छोटे छोटे बालक कह रहे थे—"बापू ने ही तो अंग्रेजों से राज छीना है बापू आजादी के मसीहा थे। शहर की बूढ़ी मातायें बड़े पवित्र भाव से गांधीजी के समाधि पर माथा टेक कर आशीर्वाद मांग रही थीं। बहुत से लोग गांधीजी प्रिय भजन 'रघुपति राघो राजा राम पतित पावन सीताराम' की धुन लगा रहे थे।

समाधि से सीधे मैं 'इन्डिया गेट' औरगौर मेन्ट हाऊस की तरफ चला को तरफ चला गया। १२ बजते बजते 'इंडिया गेट' और गौरमेन्ट हाऊस में १२-२३ लाख का मजमा जमा हो गया। राष्ट्रपति की सवारी की प्रतीक्षा बालक बालिकाओं तक ने घन्टों प्रतीक्षा किया नर-नारियों का समुद्र ही मालूम हो रहा था मैंने तो सोचा सारी दिल्ली भगी चली आरही है। गौरमेन्ट हाऊस के 'सेक्रेटियट के छातों पर हजारों आदमी चढ़ गये थे। पार्क के पेड़ों पर हजारों आदमी लद गये थे दूर दूर के देहाती किसान भी

(शेष पृष्ठ १४ पर)

प्रवास- उद्योग

सरकार की यह नई योजना कब कार्यान्वित होगी

लेखक, श्री फूलचंद बाफना 'विशारद'

स्वतंत्र भारत की केन्द्रिय यातायात मंत्रीमंडल द्वारा देश में एक नवीन राष्ट्रीय उद्योग के निर्माण व उसकी प्रगति करने की घोषणा की गई है। यह नवीन राष्ट्रीय उद्योग है—'प्रवास उद्योग' Tourits Traffic Dudnritsy।

यह तो सर्वविदित है कि प्रवास का व्यवहारिक जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान है। एक दूसरे देश की स्थिति, व्यापार व अन्य बातों सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। अतः व्यापार शिक्षा व अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से प्रवास आवश्यक है। आजकल यूरोप व अमेरिका में प्रवास व्यवहारिक जीवन का एक महत्वपूर्ण घटक माना जाता है और इस उद्योग की वहां पर विशेष रूप से प्रगति भी हुई है।

भारत में इस नवीन राष्ट्रीय उद्योग के निर्माण व उसकी प्रगति करने का अर्थ होगा विदेशों से यात्रियों को भारत के ऐतिहासिक, धार्मिक व प्राकृतिक दर्शनीय स्थानों को देखने के लिए आकर्षित करना, व उनके भ्रमण सम्बन्धी यातायात व निवास आदि सभी बातों का प्रबन्ध करना। इस प्रकार यदि भारत में इस उद्योग के लिए केन्द्रिय व प्रांतिय सरकारों द्वारा विशेष रूप से ध्यान दिया जावेगा तथा यात्रियों के प्रवास सम्बन्धी सभी बातों का ठीक ठीक प्रबन्ध होगा तो भारत में विदेशों से प्रतिवर्ष कई यात्री आवेंगे। भारतवर्ष में ऐतिहासिक, धार्मिक, व्यापारिक एवं प्राकृतिक दर्शनीय स्थानों की कमी नहीं है। विदेश के लोग तो भारत में भ्रमण करने की तीव्र इच्छा भी रखते हैं। इन सभी बातों पर ध्यान रखकर यदि इस नवीन राष्ट्रीय उद्योग की प्रगति की गई तो भारत को दो लाभ होंगे :—(१) राष्ट्रीय आय में वृद्धि (२) अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भारत की ख्याति। जब विदेशों से प्रतिवर्ष यात्री भारत के दर्शनीय स्थानों का भ्रमण करने की इच्छा से आवेंगे तो यह स्वाभाविक ही है कि उन यात्रियों के विदेशों से भारत आने व यहां भ्रमण करने पर भारत सरकार की राष्ट्रीय आय में अवश्य ही वृद्धि होगी। साथ ही साथ जब वे यात्री भारत इन विशाल ऐतिहासिक धार्मिक व प्राकृतिक दर्शनीय स्थानों के कला कौशल व सौंदर्य का निरीक्षण करेंगे तो यह भी स्वाभाविक ही है कि वे अपने देशवासियों के सन्मुख भारत की प्रशंसा करेंगे। इससे भारत को अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में ख्याति प्राप्त होगी।

यद्यपि सभी देशों से इस उद्योग सम्बन्धी ठीक ठीक आंकड़े प्राप्त नहीं हैं फिर भी जहाँ तक इस सम्बन्धी में समाचार प्राप्त हैं उनसे यही ज्ञात होता है विदेशों में इस उद्योग का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि ग्रेट ब्रिटेन में सन् १९२६ व सन् १९३८ के बीच प्रवासी यात्रियों का प्रतिवर्ष व्यय लगभग २४० लाख पौंड व ३०० लाख पौंड के लगभग रहा है जो कि ग्रेट ब्रिटेन के ऊनी व्यवसाय या कोयले के निर्यात मूल्य के बराबर रहा है। सन् १९३६ में अमेरिका के लोगों ने विदेशों में प्रवास परलग भग ६६० लाखपौंड व्यय किया। स्विटजरलैंड में तो इस उद्योग को काफी प्रगति हुई, है स्विटजलैंड में सन् १९-२९ के फेडरल जनगणना के अनुसार उसी उद्योग के लिये ७७७२ होटलें व निवासगृह थे जिनमें ६३२५८ कर्मचारी नौकरी पर थे। इस उद्योग का स्विटजर लैंड में द्वितीयस्थान था। प्रथम उद्योग यंत्र निर्माण करने का उद्योग समझा जाता था जिसमें ७६५१२ कर्मचारी कार्य करते थे। इन विभिन्न आंकड़ों से हम यह भली भांति निष्कर्श निकाल सकते हैं कि विदेशों में यह उद्योग बहुत बढ़ा-चढ़ा है।

भारत में आकर्षण:—

प्रवास उद्योग के लिये भारत में बहुत संभावना है। भारतवर्ष में यात्रियों के देखने योग्य कई ऐसे ऐतिहासिक धार्मिक व प्राकृतिक दर्शनीय केंद्र हैं जिनसे विदेशी यात्री आकर्षित हो सकते हैं। भारत के दर्शनयी केंद्र—धार्मिक—बनारस, सारनाथ, ऐतिहासिक अजन्टा, एलोरा, आगरा, दिल्ली, प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण काश्मीर जो कि "एशिया का क्रीडांगन" कहलाता है, ऐसे महत्वपूर्ण स्थान हैं जिन्हें विदेश के लोग देखने की इच्छा रखते हैं। परन्तु अबतक इस उद्योग की प्रगति के लिए कोई विशेष कार्य संगठित रूप से नहीं किया गया है।

भारत में प्रयत्न:—

द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् सन् १९४५ में उस समय की सरकार ने इस उद्योग की प्रगति करने का निश्चय किया। इस उद्योग सम्बन्धी बातों की पूरी जांच करने का लिए डा० जान सारजेन्ट साहब के सभापतित्व में एक कमेटी बनाई गई। इस कमेटी के निर्माण करने का ध्येय था कि कमेटी इस उद्योग संबन्धी जांच करके भारत सरकार के सन्मुख अपनी राय प्रकट करे कि भारत में विदेशों से यात्रियों को किन सुविधाओं व साधनों से आकर्षित किया जाय भारत के दर्शनीय स्थानों पर किस प्रकार की सुविधायें होनी चाहिये, तथा उनके विषय में किस प्रकार का साहित्य व मार्गदर्शक पुस्तकें तथा अन्य साधनों में प्रगति करनी चाहिऐ।

सारजेन्ट रिपोर्ट:—

सारजेन्ट कमेटी ने इस उद्योग सम्बन्धी जांच करके अपनी रिपोर्ट तैयार की तथा सरकार के सन्मुख इस बात की सम्मति प्रकट की कि इस उद्योग की प्रगति के लिए भारत एक उपयुक्त देश है अतः इसकी प्रगति अवश्य ही होनी चाहिये। इस उद्योग की प्रगति से भारत की राष्ट्रीय आया में वृद्धि होने के साथ ही साथ अर्तराष्ट्रीय ख्याति की दृष्टि से भी भारत को काफी लाभ होगा।

इस कमेटी ने इस बात पर विशेष जोर दिया कि सभी संभव साधनों द्वारा इस उद्योग की प्रगति अवश्य ही की जानी चाहिये। विदेशों में भारत के दर्शनीय व आकर्षित स्थानों सम्बन्धी विज्ञापन कर के विदेशी यात्रियों को भारत में भ्रमण करने के लिये आकर्षित करना चाहिये। यदि विदेशी यात्री भारत में आते हैं तथा यहां के दर्शनीय स्थानों पर यातायात व निवास व भोजन सम्बन्धी उचित व्यवस्था व अन्य सुविधायें व सेवायें प्राप्त करते हैं तो निस्संदेह कहा जा सकता है कि उनके हृदय में भारत के प्रति एक अच्छी ख्याति होगी।

भारतसरकार का प्रयत्न :—

'प्रवास उद्योग' की प्रगति का ध्यान रखते हुये यातायात व अन्य सेवा संबन्धी सुधार करने के लिये भारत सरकार द्वारा गत वर्ष यह निश्चय किया गया है कि एक "संगठन" बनाया जाय जो कि सारजेंट कमेटी के सुझावों व योजनाओं को कार्यान्वित कर सके। अतः इस उद्योग सम्बन्धी सरकारी कर्मचारियों व प्रवास यातायात संस्थाओं के प्रतिनिधियों की एक कमेटी बनाई गई। गत२७ नवम्बर १९४९को इस कमेटी की पहिली बैठक का कार्य आरम्भ माननीय के० सन्तानम् द्वारा हुआ जिन्होंने इस उद्योग की प्रगति की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि आज के वर्तमान समय में इस उद्योग का केवल आर्थिक महत्व ही है, परंतु इसका नैतिक महत्व भी है। स्वतंत्र भारत को अर्तराष्ट्रीय क्षेत्र में ख्याति अवश्य ही प्राप्त करनी चाहिए, तथा यह कार्य निस्संदेह केवल यात्री ही कर सकते हैं। दुर्लभ मुद्रा प्रदेशों से दुर्लभमुद्रा प्राप्त करने का भी यह एक साधन है। है, अतः आशा है कि इस उद्योग की शीघ्र प्रगति होगी।

—०—

दो कहानियाँ

बंजारे का कुत्ता

लेखक, श्री मधुसूदनदास चतुर्वेदी एम० ए०

बनजारे आज भी सड़कों पर डेरा डाले दिखाई देते हैं। उसके पास कुत्तों की अपार शक्ति होती है। उन्हीं के बल से वह एकाकी जीवन बिताने में समर्थ होते हैं। इस कहानी में बनजारे के कुत्ते का सुन्दर चित्रण किया गया है जो पठनीय है।

(१)

जब वह अपनी ऊँची उठी हुई पूँछ में शिथिलता का संकेत लिये उसके समीप आकर बैठ जाता, तो बंजारे को अपार हर्ष होता था। उसकी श्वेत राम राजि पर अपना एक स्थापित कर वह उसे अपने अविरल प्रेम का विश्वास दिलाता। कुत्ता भी अपने दोनों नेत्र बंद कर उत्सुक कानों में उसका मूक संदेश सुन गदगद हो उठता था। बंजारे का दुधमुहा बालक अपने प्रिय पिता को किसी दूसरी ओर इतना आकर्षित होते देख कभी रोकर तथा कभी किलक कर अपना असंतोष प्रकट कर देता था। परन्तु बंजारे के लिये यह असंभव था कि वह अपने सहयोगी का निरादर करे।

इस कुत्ते की माँ उसके शैशव में ही उसे छोड़ गई थी। उसके लालन पालन का सारा भार उस बन्जारे पर ही था। बड़े होकर कुत्ते ने जब शिकार में उसके साथ सहयोग देना प्रारम्भ किया तो दोनों में और भी मैत्री स्थापित हो गई थी।

बंजारों का जीवन विचित्र होता है। आज उनकी झोंपड़ी यदि स्थान में स्थिर है, तो कल दूसरी जगह डेरा जमा हुआ है। कुत्ता उनका मित्र, अंगरक्षक, स्वामिभक्त सेवक और पुत्र की भांति परम प्रिय होता है।

(२)

उन दिनों कार्यवश उस नगर के किसी कोने में डेरा डालना पड़ा। दैव दुर्विपाक से उसका पुत्र रूग्ण हो गया। जंगल की जिन जड़ी-बूटियों का ऐसी दशा में उसे लाभ मिल सकता है, वह दूर छूट गई। अब तो सरकारी अस्पताल ही विपत्ति निवारण का एक मात्र साधन था।

बन्जारे ने पुत्र को अस्पताल में दिखलाया। डाक्टर साहब बड़े मिलनसार थे। उन्होंने श्रमपूर्वक उसके पुत्र का उपचार किया। दिनों दिन उसका स्वास्थ सुधरने लगा।

बन्जारा नित्य पुत्र को देखने अस्पताल आता। उसके साथ उसका स्वामिभक्त सेवक भी डाक्टर साहब की आंखों के सामने नित्य ही आता। उसके रूप रंग और स्वभाव ने डाक्टर को अत्याधिक आकर्षित किया।

बन्जारे का पुत्र स्वस्थ होगया। वह डाक्टर से विदा मांग कर चलने लगा। उसका हृदय कृतज्ञता से डूबा हुआ था उस निर्धन के पास कुछ अधिक धन न था फिर भी उसकी इच्छा हुई कि वह डाक्टर साहब को कुछ भेंट कर सके। उसके मन के भाव अत्यन्त विनम्रता से वाणी द्वारा प्रकट हुए। डाक्टर साहब ने उसकी इस सद्भावना का विरोध किया। परन्तु उपकृत बन्जारे को इससे संतोष न था।

डाक्टर साहब ने यह अधिक उपयुक्त समझा कि इस निर्धन व्यक्ति से धन की अपेक्षा कोई अन्य वस्तु मांगी जा सकती है। उन्होंने उस कुत्ते के उन्हीं पास छोड़ जाने का प्रस्ताव रखा।

"डाक्टर साहब !" वह बन्जारा बोला। "आपने मुझे बड़ी द्विविधा में डाल दिया। यदि मैं जानता कि पुत्र का मूल्य यह है, तो मैं उसके स्वस्थ होने की विशेष चिन्ता न करता।"

"भाई मुझे क्षमा करो" डाक्टर साहब बोले।" मैंने तुमसे इतनी प्रिय वस्तु मांगने में वास्तव में भूल की है। परन्तु तुम स्वतंत्र हो। मैं अपनी मांग वापस लेता हूँ।"

"नहीं डाक्टर साहब ! मनुष्य की जबान एक होती है। अब यह कुत्ता आपका हो गया।" यह कहते-कहते बन्जारे ने कुत्ता वहीं अस्पताल के बीच के पाये से बांध दिया।

बन्जारा अपने पुत्र को लेकर चलने लगा। कुत्ते ने उसे जाते देख चिल्लाना प्रारंभ किया। बन्जारा फाटक तक जाकर लौट आया। उसने कुत्ते का कान मरोड़ कर उसके कान में कुछ कह दिया। बन्जारा चला गया परन्तु कुत्ते ने चूं तक न की। आज से वह अपने नवीन स्वामी की सेवा में तत्पर था।

(३)

डाक्टर साहब कुत्ते को बड़े प्रेम से पालते थे। खाते पीते उठते बैठते हर समय उसकी चिन्ता रखते थे। प्रभात और सायं वह उनके साथ भ्रमण को जाता था। जब अस्पताल में बैठकर वे रोगियों के समूह को औषधि-उपचार सम्बन्धी पत्रक देने में रत रहते, वह उनके बालकों के मनोरंजन की सामग्री बनता।

रविवार के दिन डाक्टर साहब शिकार के लिये वन-भ्रमण को जाते। उस दिन कुत्ता को भी अपने नवीन

चुड़ैल

लेखिका, कुमारी आशा बी० ए०

मानव-जीवन में चुड़ैल का विशेष महत्व है। जो लोग भयभीत होते हैं, या जो चुड़ैल के अस्तित्व को मानते हैं, उनके लिये यह बड़ी भयावनी होती है। इस कहानी में चुड़ैल की भयग्रस्त तथा आश्चर्य जनक घटना का सुन्दर और आकर्षक चित्रण किया गया है, जो पठनीय है।

"आशा !"
क्या दीदी।
'अस्पताल चलती हो ?'
हम लोग कब तक लौटेंगे ?

"एक दो घन्टे में। आज अधिक काम नहीं है। चलना हो चलो। घर में भी अकेली बैठकर क्या करोगी ?

"अच्छा चलती हूँ" कुछ देर सोच कर मैंने कहा। किन्तु तुम्हें थोड़ी देर तक रुकना पड़ेगा। हाथ की पुस्तक मेज पर रख कर साड़ी बदलने के लिये जाते हुये मैंने दीदी को थोड़ी देर रुकने के लिये कहा।

मेरी बड़ी बहन दीदी मेडिकल कालेज में प्रोफेसर थी। कालेज के पास के अस्पताल में वह लेडी सर्जन का भी काम करती थीं। जिस दिन आपरेशन का कोई केस न होता उस दिन उसे अस्पताल में अधिक काम भी न रहता। कुछ कागज पत्र देख कर अस्पताल का एक चक्कर लगाया कि हो गया काम आज दिन भी ऐसा ही था।

इलाहाबाद से मेरी बी० ए० की परीक्षा हाल ही में समाप्त हुई थी। परीक्षा-फल प्रकाशित होने में अभी काफी देर थी। कुछ दिन कहीं तो भी बिताने थे। अतः दीदी के साथ लखनऊ में रहने का निश्चय किया गया यद्यपि मैं युक्तप्रान्त में पैदा हुई किन्तु मैंने अब तक लखनऊ नहीं देखा था अतः मुझे भी इसमें प्रसन्नता ही हुई।

"मेम साहब हुआ या नहीं ?"

इस प्रकार दीदी की आवाज सुनते ही मैं एक हाथ से आंचल सँवारती हुई तथा दूसरे हाथ से कधों पर के आंचल में पिन खोंसती हुई बाहर आई। और मैं लगभग कूद कर ही दीदी के पास तांगे में बैठ गई। दौड़ कर आने के कारण मैं हाँफ रही थी। मेरी यह हालत देख कर दीदी के चेहरे पर मुसकुराहट छा गई।

उसने कहा 'आशा ! तुझे ग्रेजुएट कौन कहेगा। यदि तू कहीं प्रध्यानाध्यापिका रही तो लड़कियों पर तेरा रोब भी रहेगा।'

दीदी की बातों से मैं कुछ शरमा सी गई। मैं कुछ नाराज भी हुई। मैंने यह निश्चय किया कि अब दादी से न बोलूँगी। मैं सड़क के दूसरी ओर देखने लगी। इधर बातचीत बन्द हो गई और उधर धूप भी तेज थी जिससे मेरी आखे कुछ झेंपने सी लगी। अतः तांगा अस्ताल के हाते में कब घुसा यह मुझे पता भी न लगा। किन्तु तांगा रुकने पर मेरी आँखे खुली तो मैंने सामने देखा कि एक पुलिस की मोटर और दो लाल पगड़ी वाले पुलिस खड़ी थी। उन्हें देख कर मुझे लगा कि अस्पताल बगीचे का सौंदर्य किसी ने छीन लिया है। मैंने कहा-पुलिस और यहाँ क्यों ?

दीदी का गम्भीर चेहरा और भी गंभीर हो गया था। उसके माथे पर बल पड़ गया। उसके मुँह से निकला, 'पुलिस केस'। उसे यह रोज की ही एक बात मालूम हुई। किन्तु मेरे लिये यह बिलकुल एक नई बात थी जिससे मेरी आंखें उत्सुकता से चंचल हो उठीं।

हम लोग जैसे ही दफ़्तर में घुसे पुलिस सब इन्सपेक्टर ने आकर सलाम किया दीदी ने सर हिला कर इशारे से ही केस सामने लाने की आज्ञा दी। किन्तु मेरी आंखें और क्या नवीन दिखलाई देता है यह देखने के लिये इधर उधर दौड़ रही थी।

दफ़्तर के कमरे में एक स्त्री सर नीचे कर बैठी हुई थी। अवस्था लगभग ३० साल की होगी। उसकी ओर देखते ही प्रतीत होता कि वह केवल ग्रामीण ही नहीं किसान भी है। उसके सांवले रंग में भी एक प्रकार की दृढ़ता तथा सुडौलपन का सुन्दर मिश्रण था। किन्तु इस समय वह किसी पत्थर की मूर्ति की तरह चुपचाप बैठी थी। वह जरा भी हिलडुल नहीं रही थी। शायद इसीलिये उसके मन के भाव जानने की मुझे प्रबल इच्छा हो रही थी।

उसके पास थोड़ी दूर पर कपड़े से ढंकी कोई चीज़ थी। मैंने मन में कहा कि चोरी का मामला मालूम होता है। इतने में सब इन्सपेक्टर की आवाज ने मेरे ध्यान को अकर्षित किया।

इसका नाम तुलसा, उम्र ३०, पति का पेशा किसानी, मलिहाबाद के पास एक गाँव में रहती है, इसका पति दो साल से घर में ही किसी रोग से बीमार है। इस पर पैदा होते ही बच्चे का खून करने का अभियोग है। पोस्ट मॉटम के लिये इस बच्चे को तथा इस औरत को यहाँ लाया गया है। रूखी आवाज में सब इन्सपेक्टर ने अपनी बात सामने रखी।

पति के जीवित रहते लड़के की हत्या असंभव, मेरे मुँह से शब्द अपने आप निकले। दीदी कुछ बोली नहीं।

(शेष पृष्ठ १० पर)

स्वामी की सेवा का अधिक अवसर मिलता। यदि उनकी बन्दूक के छर्रे से कोई पक्षी भूमि पर आ गिरता, तो कुत्ता दौड़ कर उसे उठा लाता था-तथा अपने स्वामी की सेवा में उसे उपस्थित कर देता था। यदि किसी अवसर पर बन्दूक के छर्रे व्यर्थ सिद्ध हो जाते, तो भी शिकारी को निराश न लौटना पड़ता था। उनका सेवक किसी न किसी झाड़ी में प्रविष्ट होकर कोई ऐसी भेंट ले आता जो उन्हें बहुत रुचिकर थी। अंधे के हाथ बटेरें कभी लगी हों या नहीं परन्तु इस कुत्ते की कृपा से डाक्टर साहब को उनकी आखेट-यात्रा में एक दो बटेर अवश्य मिल जाते थे।

कुत्ते की सेवा ने डाक्टर साहब का हृदय जीत लिया था। वे बन्जारे के परम कृतज्ञ थे जिस ने उन्हें अपना सर्वस्व भेंट कर उपकृत बनाया था।

(४)

एक स्वच्छ सरोवर के निकट देवयानी का मन्दिर था। यहीं कदाचित कच ने शुक्राचार्य से ज्ञान प्राप्त किया था तथा यहीं देवयानी ने कच से प्रेम करना सीखा था। स्वर्ग की विभूति होने के कारण कच न तो इस पृथ्वी पर देवयानी के साथ ही रह सका और न वह देवयानी को अपने साथ स्वर्ग में ही ले जा सका। देवयानी कदाचित इसी भूमि में अपने जीवन के शेष दिन प्रिय की स्मृति में बिताती रही थी तथा उसके प्रेम की स्मृति को स्थायित्व देने के लिये ही यहां इस मन्दिर का निर्माण हुआ था। इसी कारण देवयानी को लोग तीर्थों की नानी कहते हैं। मन्दिर में देवयानी की मूर्ति स्थापित है तथा कच की स्मृति में वह स्वच्छ सरोवर विकच वारिजों से सदैव ही भरा रहता है।

प्रतिवर्ष देवयानी का मेला भी जुड़ता था। विजन वन में स्थित इस मन्दिर के चारों ओर खासी भीड़ एकत्रित हो जाती थी। तीर्थ का माहात्म्य जहां प्राचीनता प्रेमियों को इस ओर आकर्षित करता था वहां वनोपसेवन की कामना नवीन विचार वालों को इधर ले आती थी।

आज रविवार था। डाक्टर साहब ने आज आखेट का कार्यक्रम स्थगित कर दिया था। सपरिवार वे भी आज इस मेले में ही चले आए थे तथा उनके साथ वह कुत्ता भी आया था, जो उनके परिवार का ही अब एक अंग बन चुका था।

आज जहाँ वह लोग भ्रमण कर रहे थे, वहाँ इतनी भीड़ थी कि झाड़ियों के बटेर भय-भीत होकर न जाने कब के किसी अन्य वन में जा चुके थे। स्वामि-भक्त सेवक के दो तीन प्रयास असफल हो चुके थे। वह चिन्तित था कि आज स्वामी को क्या उपहार देवे। सरोवर के निकट आकर उसकी दृष्टि एक मछली पर पड़ी। कुत्ता तुरन्त ही सरोवर में कूद पड़ा।

ठीक इसी समय इधर डाक्टर साहब ने अनुभव किया कि उनकी अल्पवयस्क बालिका भीड़ में कहीं छूट गई है। चिन्ता से व्यग्र होकर सारा परिवार उसकी खोज के लिये लौट पड़ा। उस समय वे यह न अनुभव कर सके कि यहाँ भी वे किसी दूसरे प्राणी को छोड़े जा रहे हैं, जो उनके परिवार का ही एक अंग बन चुका है।

मछला तो कुत्ते के मुँह में आगई परन्तु विकच वारिजों में उलझ जाने से तैर कर उसे अपने स्वामी की सेवा में उपस्थित करने का उसका प्रयास निष्फल सिद्ध हुआ। जब तक अपना बालिका को खोज कर डाक्टर साहब इधर लौटे, उनका सेवक जल निमग्न हो चुका था।

मरने के पूर्व कदाचित उसने अपने पूर्व स्वामी का स्मरण किया हो संभव है, उसने सोचा हो कि मेरे पूर्व के स्वामी अपनी सवाक सन्तति की अपेक्षा इस अवाक सन्तान की अधिक चिन्ता करते थे। परन्तु यह तो देवयानी की स्मृति भूमि थी। यहाँ तो एक ओर से ही प्रेम का महत्व था।

जाल डाल कर कुत्ते को बाहर निकाला गया। डाक्टर परिवार ने अपने एक साथी की मृत्यु पर शोक मनाया। डाक्टर साहब तो पश्चाताप की मूर्ति बन गये—परन्तु इतना पश्चाताप तो कच ने भी देवयानी को छोड़ते समय किया होगा।

(पृष्ठ ६ के आगे)

किन्तु उसके चेहरे पर भी आश्चर्य दिखलाई दिया। कुछ बोलना उसे शोभा नहीं दे सकता था।

मृत बालक का शरीर पास मेज पर रखने की आज्ञा देकर उसने सब को वहाँ से बाहर जाने की आज्ञा दी। अतः पुलिस के कुछ कहने के पहले ही तुलसा उठ खड़ी हुई। किन्तु दादी ने उसे इशारे से रुकने के लिये कहा।

सब इन्सपेक्टर सुविधा में पड़ा। खूनी औरत के साथ डाक्टर को अकेले छोड़ना उसे अच्छा नहीं लग रहा था। किन्तु दीदी का फिर संकेत मिलते ही वह चुपचाप बाहर चला गया। किन्तु उसके चेहरे पर अप्रसन्नता तथा अपमानित होने के भाव स्पष्ट दिखलाई दे रहे थे।

दफ़्तर में आवश्यक शान्ति होने पर दीदी मेज के पास गई और उसने बच्चे पर की चादर दूर हटाई। बचा अभी भी ऐसा दिखलाई देता था मानों जीवित ही है। दफ़्तर के सामने ही लगे हुये गुलाब के फूल की ओर मेरी नजर गई। किन्तु वह उससे भी कोमल और सुन्दर चेहरा था। ऐसे सुन्दर बालक का खून और वह भी माँ करे। मेरे विचार अनजान में ही ध्वनित हो उठे। 'चुड़ैल' मैंने कठोर वाणी में कहा।

मेरी आवाज सुनते ही अब तक चुप बैठी हुई तुलसा ने सर ऊपर उठाया। "मेरी कहानी सुनने के बाद फिर कुछ कहिये।" उसने साहस के साथ कहा। उसके इस साहस से हम दोनों को ही आश्चर्य हुआ। दीदी ने सिर हिला कर ही उसे अपनी बात कहने की अनुमति दी।

किसान स्त्री का जीवन-उसमें कहने लायक और बात ही क्या होगी। छोटे से खेत पर काम करना उसमें न रात समझना और ना दिन। किन्तु उसमे लगान-जमीदारी आदि देने के बाद दो महीने का भी गल्ला हाथ नहीं लगता था। कोई दूसरा काम किया जाय तो बेगार से छुट्टी मिले। तब तो १ राय साहब की बड़ी जमीदारी थी, कुछ न कुछ काम वहाँ हमेशा ही रहता था। राय साहब के कहने से उन्होंने सन् ४२ में कुछ काम किया पकड़ लिये गये। उन्हे एक साल की कड़ी कैद हुई। इधर बाढ़ आई। उसमें सारा गाव और मेरे दो लड़के बह गये। मैं औरत की जात क्या कर सकती थी, लगान कहाँ से देती! रायसाब ने जमीन ले ली। वहाँ उन्होने गांधी जी के नाम से एक पाठशाला खोली है। वे जब घर लौटे, उन्होने राय साहब से वह या उसके बदले में कोई दूसरी जमीन देने के लिये मिन्नत की। किन्तु साहब ने [illegible] कर दिया। 'उन्हे' यह सदन न हुआ वे शराब के चक्कर में पड़ गये और उसी में बीमार पड़े। मैं अभागिन [illegible] बीच यह बचा आया क्यों बढ़ूँ उसे कुत्तों की मौत से मरने के लिये! [illegible] उसने बच्चे के सारे शरीर पर से [illegible] दूर हटाई। दीदी बिजली का [illegible] लगते जैसी पीछे हटी। लड़के के शरीर पर गर्मी के छाले पड़े हुऐ थे।

गरीब के घर पैदा होना [illegible] बात नहीं है बहुत बड़ा अपराध है इस उपराध के लिये सजा देने का मुझे अधिकार नहीं है! क्या मैं [illegible] नहीं हूँ।

बोलेते बोलते तुलसा रूकी। उसका गला भर आया था। आखों में [illegible] दिखाई देने लगा था। उसने [illegible] हाथ से फिर चादर बालक पर डाली। चादर डालते समय उसकी आखों [illegible] मानों माता का स्नेह ही टपक रहा था।

मुझे कुछ भी सूझ नहीं रहा था। केवल तुलसा के यह शब्द कानों [illegible] गूँज रहे थे—" मैं चुड़ैल नहीं माँ हूँ"

देशदूत के एजेन्ट और ग्राहक बनिये

रंगमंच

कलाकार, निर्माता और निर्देशक श्री राज कपूर

फिल्मी कला पर दृष्टि एवं उनसे एक दिलचस्प भेंट

लेखक, श्री उमेश जोशी

भारतीय रजतपट का जाज्वाल्यमान कलाकर एवं प्रगतिशील तरुण निर्माता तथा नवीन युग का सृजन-हार निर्देशक श्री राजकपूर को आज कौन नहीं जानता इस कलाकार ने स्क्रीन की दुनियां में एक नई क्रान्ति का आविर्भाव किया है, ऐसी क्रान्ति का कि जिसने चित्र निर्माण कला की कायापलट ही कर डाली है। श्री राज कपूर की रम्य कला ने चित्र निर्माण के इतिहास में एक नवीन स्वर्ण पृष्ठ जोड़ा है, जिसको देख-कर मानव-समाज चकित हो गया। श्री राज कपूर ने सर्व प्रथम "आग" चित्र प्रदान किया। "आग" ने चित्र निर्माण कला की मुर्दा नसों में जीवन डाल दिया समाज की जर्जरता, खोखलापन, दाकियानूसी रिवाजो को आग ने बिल्कुल जला कर ही छोड़ा। मानव समाज को एक नया सन्देश दिया, जिसका कि मानव वर्ग ने दिल खोलकर स्वागत किया। "आग" की रोशनी ने हमारे अन्धकार मय दिलों में प्रकाश का प्रवेश किया, हमें जिन्दा दिल बनाया। चित्र निर्माण कला का एक अभिनय रूप हमारे सामने आया। हांलाँ की श्री राज का यह प्रथम चित्र ही था, किन्तु फिर भी इस चित्र ने फिल्मकला के महान् दिग्दर्शकों, उत्कृष्ट निर्माताओं एवं सर्व श्रेष्ठ कला-कारों को चुनौती दी। श्री किशोरशाहू श्री विजयभट्ट, श्री व्ही० शान्ताराम, निसार महबूब के छक्के छुड़ा दिये। श्री राज कपूर की नूतन कला का जनता ने हृदय से अभिनन्दन किया। सभी दृष्टिकोण से "आग" उत्कृष्ट चित्र था। नये दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने में श्री राजकपूर को संघर्षों की बड़ी चोटियो पर चढ़ना पड़ा है। इन विषम परिस्थि-तियों की चोटियों पर चढ़ते वक्त हमारे तरुण कलाकार श्री राजकपूर कभी घबड़ाये नहीं, वह लगन और-उत्साह के साथ आगे बढ़ते ही गये कभी उन्होंने अपने पैरों को डगमगाया नहीं जिस दकियानूसी वातावरण में उन्होंने काम किया, उसने उनको विद्रोही बना दिया। उन्होंने समझ लिया कि जब तक ऐसे संकीर्ण रूढ़िवादी वातावरण को नष्ट नहीं किया जायेगा तब तक फिल्मी दुनिया में प्रशस्त उज्जवल एव संस्कृति का जन्म नहीं हो सकता। उन्हें आदर्श में पूर्ण विशास है, इसीलिये वह आज विषम परिस्थितियों को आंधी तूफान में से होकर बड़ी सावधानी के साथ प्रगति की मंजिल की ओर बढ़ रहे है।

श्री राजकपूर का विश्वास है कि—"सच्ची कला का जन्म परिश्रम की पृष्ठ भूमिपर होता है। जो लोग परिश्रम से घबड़ाते हैं, वह कभी कला के नजदीक नहीं पहुँच सकते।" इसी पवित्र विश्वास को लिए हुए आप आज कठिनाइयों की पहाड़ियों पर बड़े वेग के हाथ चढ़ रहे हैं। कोई भी रुकावट आपको आगे बढ़ने से रोक नहीं पाती। आपकी गति में सावन की चढ़ती हुई सरिता जैसा वेग है। "बरसात" आपका दूसरा चित्र है। जिसने जजबातों एवं भावनाओं की दुनियां में क्राति की नूतन लहर का प्रादुर्भाव किया है। "बरसात" को आप अवश्य देखिये, वह इसलिये कि उसमें आपको कला का उत्कृष्ट चित्र मिलेगा और मिलेगा मानव" के सुन्दर रूप की झांकी। इस वर्ष का बरसात" एक सर्वश्रेष्ठ चित्र है।

चित्र में कहीं भी ऊटपटांग असंयमता नहीं है। प्रेम को नैतिकता की दुनिया में लिए हुए चलना यह हमें श्री राज ने "बरसात" में बतलाया। नई कल्पना नई भावना, नया जीवन, नया दृष्टिकोण, नया रूप, नई सूझ, नई संस्कृति; और नई काला का आप दर्शन करेंगे "बरस त" में। साहित्य और कला की सुन्दर अगड़ाइयो का सुन्दर दृश्य यदि आपको देखना हो तो आप "बरसात" को देखना न चुकिये। चित्र का प्रारम्भ देखकर ही आप कुर्सी से उछल पड़ेंगे और सारा कासारा चित्र आप देख जायेंगे' फिर भी आपकी तबि-यत भरेगी नहीं। जितनी बार आप "बरसात" को देखेंगे उतनी ही बार

प्रसिद्ध अभिनेत्री श्रीमती उषामंत्री अपने पति के साथ। यह पूना की है।

आपको उसमें से नई २ प्रेरणायें नई कल्पनायें मिलेगी।

श्री राज कपूर की अभिनय की विशेषतयें

(१) आपका अभिनय दृश्य,केवाता-वरण से पूर्ण अनुकूल होता है, दृश्य के दायरे के परे का चित्र आपके अभिनय में नहीं मिलेगा। वातावरण को अपने अन्दर जज्ब करने की आपमें एक बड़ी खूबी है जो कि प्रायः कम कलाकारों में पाई जाती है।

(२) साहित्य की गहराई और ऊँचाई के भी आपके अभिनय में दर्शन होंगे आपके अभिनय का जन्म साहित्य की पृष्ठभूमि पर होता है, इसलिये उसमें एकओज भी आ जाता है। इसलिये आपके अभिनय में मानव जीवन की गहराई और ऊँचाई अधिक होती है, जिससे आपका वह बड़ा प्रभावोत्पादक बन जाता हैं।

(३) "डायलाग डिलेवरी" आपकी बड़ी स्वाभाविक एवं कलापूर्ण होती है। कोई भी डायलाग आपके अभिनय के क्षेत्र को कवर नहीं कर सकता। डायलोग, बिजनेस, एक्शन तीनों का सम्मिश्रण आपके अभिनय में अनुपात के हिसाब से होता है। इसलिए आपके अभिनय की टैक्नीकल पृष्ठ भूमि काफी मजबूत हो जाती है।

(४) एक्सप्रेशन का प्रादुर्भाव करते वक्त आप हृदय की दुनियाँ का वास्त-विक चित्र खीच देते हैं। उस चित्र में जजबातों की जवानी, भावना के यौवन का प्रशस्त रूप होता है जो देखते ही बनता है।

(५) भाव और भावता दोनों का सम्मिश्रण बिलकुल स्वाभाविक रूप से होता है। जहां मूक भाव का आप प्रदर्शन करते है, वह अभिनय का स्थल बड़ा ही सुन्दर और पुरअसर होता है। अन्य कलाकार लम्बे २ डायलाग बोलकर जिस स्थिति को प्रकट करते है उसको हमारे श्री राज भाव संचालन कला के द्वारा ही एक क्षण में प्रकट कर देते हैं, और मजा यह कि दर्शक बहुत शीघ्र ही उनकी अभिनय की सुन्दर भाषा को समझ जाता है।

(६) कल्पना की ऊँची उड़ान भी आपक अभिनय में देखने को मिलती है आपका अभिनय छायावादी दायरे में से निकलकर पूर्ण प्रगतिशील अभिनय हो गया है। जीवन के सूक्ष्म सूक्ष्म रहस्य का हमें आपके अभिनय में एक उलझा हुआ रूप नहीं मिलता, बल्कि प्रत्येक बारीक से बारीक तथा बड़े ही सुन्दर ढंग से चित्रण मिलता, है। प्रत्येक तत्थ्य अभि-नय के प्रवेश द्वार में स्वाभाविक रूप से प्रवेश करता है। प्रवेश करते वक्त किसी तत्थ्य में लेशमात्र भी लचक या काभी नहीं आने पाती।

(७) नये ख्यालों नये जजबातों नये उसूलों, नई, कल्पनाओं की पृष्ठ भूमि पर ही आपके अभिनय का जन्म होता है। आपका अभिनय जीवन की ऊँचो नीची घाटियों को पार करता हुआ कला के "सत्य शिवं, सुन्दरम" की मंजील पर पहुँच जाता है।

(८) अरमानों की चट्टानों और घाटियों के नीचे जीवन सी सुनहली रेत में फंसी इन्सन के भाग्य की नोका का खीचकर उमंगों की जलप्रवाह में बहा

(शेष पृष्ठ १४ पर)

बाल अभिनेता राम मराठे ?

(पृष्ठ ६ के आगे)

वित स्थानों की सावधानी से जांच करने के बाद चंडीगढ़ को राजधानी बनाने का निर्णय किया गया है। यह स्थान शिवालक पर्वत माला की तलहटी में स्थित है। इस स्थान का सावधानी से सर्वा कर लिया गया है और नए नगर की सर्वांगीण योजना बनाने के लिये एक नगर योजना विसारद (टाउन प्लेनर) नियुक्त कर लिया गया है। हमारा यह विचार है कि शीघ्रातिशीघ्र निर्माण कार्य आरम्भ कर दिया जाए।

अविभक्त पंजाब अपनी आर्थिक समृद्धि और स्थिरता के लिये प्रसिद्ध था प्रांतीय स्वायत्त शासन के दिनों में निरन्तर कई वर्ष तक प्रति का अतिरिक्त बजट रहा। विभाजन ने हमारी सुदृढ़ आर्थिक व्यवस्था को पूर्णतया विध्वंस कर दिया और हमें क्षतिग्रस्त अवस्था में डाल दिया। इसका कारण अंशतः औद्योगिक और कृषि कार्यों का स्थानाच्युत होना था और अंशतः शासन व्यवस्था की पुनः स्थापना और स्थानान्तरित व्यक्तियों की पुनर्वास के संबन्ध में होने वाली बहुत ज्यादा व्यय थी। परन्तु हमने सब बाधाओं और कठिनताओं पर विजय प्राप्त कर लीं और सब विघ्नों और दुर्भाग्यों का बहादुरी से सामना किया और खड़े हो गए। हमारा मूल मत उद्देश्य है नए पंजाब का निर्माण इसकी सफलता निश्चित और अनिवार्य है।

स्वतंत्रता का रक्षक

पंजाब अब भारत संघ का सीमा-प्रान्त है। इसने अतीत में देश के रक्षक और प्रहरी के रूप में कार्य किया है और भारत की रक्षक भुजा के नाम से विख्यात हुआ है। यह ठीक है कि विभाजन के जख्म अभी हरे हैं और प्रान्त के निवासियों पर जो अभूतपूर्व कष्ट और मुसीबतों का पहाड़ अब गिरा है उससे संभलने में अभी समय लगेगा फिर भी हमने तूफान पर विजय प्राप्त कर ली है धीरे धीरे एक नया प्रान्त बन रहा है। यह पुराने महान सुखद पंजाब की याद दिलाएगा। जिसमें की मेहनती किसान और सुसमृद्ध और संतुष्ट मध्यम वर्ग के लोग होंगे। हमें अभी कई वर्ष तक धैर्य पूर्वक महान श्रम करना होगा। तभी हम अपने उस पुराने स्तर को फिर से लापाएंगे। जिसके की हमारे पश्चिमी पंजाब से आए हुए भाई अभ्यस्त हैं। यदि नए पंजाब को अपने पुराने गौरव को फिर से वापस पाना है तो हमें बहुत कठिन श्रम करना होगा। हमें चाहिए कि हम अन्य का सीमाओं में शान्त और व्यवस्था कायक रखने के लिए सर्वतोभावेन प्रयत्न करें। मातृभूमि की विदेशी आक्रान्तो से रक्षा करें। उत्पादन बढ़ाएं और सब प्रकार के आन्तरिक झगड़ों से बचें। हमें अतीत से शिक्षा लेनी चाहिए। हमारे प्रान्त में रहने वाले सब श्रेणियों व सम्प्रदायों के व्यक्तियों को चाहिए कि वे परस्पर एक भाव व एक रस होकर कार्य करें।

कठिनताओं के मुकाबिले में सिर उठा कर खड़े होना और संकट काल में हिम्मत कायम रखना महान् बाधाओं और दिनों से संघर्ष करना पंजाबी चरित्र की मुख्य विशेषताओं में से एक है।

आइए हम सब मिल कर इस महत्वपूर्ण दिन में शपथ लें कि हम एक नए पंजाब के लिए मिल कर कार्य करेंगे ... पंजाब पुरुकलता ... और समृद्धि से सम्पन्न शान्ति और एक रसता तथा साहस और शक्ति और सबसे बढ़कर इस दहान् जनतंत्र का योग्य अंग जिसका कि आज के दिन जन्म हुआ है।

(पृष्ठ ५ के आगे)

और लेखन की स्वतंत्रता होगी और इन सबका आधार होगा स्वेच्छा से संयम, धर्म का पालन। ऐसे राजतंत्र की रचना सत्य और अहिंसा पर हो सकती है। सुखी, समृद्ध, स्वावलंबी देहात और देहाती प्रजा उसके मुख्य लक्षण होंगे। चाहे यह स्वप्न कभी भी सिद्ध न हो सके परन्तु इस स्वप्नजगत में रहने और इसको जल्दी से जल्दी निर्माण करने के प्रयत्न में ही मेरे जीवन का आनंद है।

आज भारत का जो विधान हमारे सामने है, उसमें गांधीजी की कल्पना के 'रामराज्य' की झाँकी दिखाई देती है। उसे मूर्तरूप में लाने का कार्य हम सबको करना है। राजेन्द्र बाबू हमारे अगुवा हैं और वे सत्य, अहिंसा व प्रेम के द्वारा देश में नवचेतना का निर्माण करने में समर्थ हों— ऐसी ईश्वर से प्रार्थना है। आज कोटि कोटि भारतीय हृदयों से यही आवाज निकल रही है कि हमारी राष्ट्र नौका का यह अनुभवी कर्णधार अंधड़ों और तूफानों से मुकाबला करता हुआ हमें गंतव्य-स्थान की ओर अग्रसर करें। राजेन्द्र बाबू दीर्घायु हों और देश को आगे बढ़ावें।

ग्राहकों, एजेंटों और विज्ञापनदाताओं को समस्त पत्र व्यवहार मैनेजर, 'देशदूत' इलाहाबाद के नाम पर ही करना चाहिए।

सम्पादक के नाम चिट्ठियाँ

'बांसुरिया'

मैं अभी 'बाँसुरिया' बोलपट (बोलने वाला चित्रपट) देख आया हूँ। घर पर पहुँचते ही लिखने बैठा हूँ। क्योंकि कुछ बातों को देखकर बड़ा दुख हुआ है और बिना उसे जनता के सामने रखे, मुझ से नहीं रहा जाता।

सब से अधिक दुख कर बात है हिन्दुओं की विवाह-विधि को भद्दे रूप में दिखाना। जब जग्गु और गोपी के ब्याह का प्रारंभ होता है तब पुरोहित वेदी में जाइये अग्नि की स्तु जिस मंत्र से करता हुआ दिखाहै है—' करोतु कल्याणं आरोग्यं धन संपदा। शत्रु बुद्धिविनाशाय दीपज्योतिर्नमां खुते किसी भी वैदिक पद्धति से विवाह में भारतभर में कहीं भी, जिस मंत्र से हवन नहीं होता है। क्योंकि, यह वैदिक मंत्र नहीं, पौराणिक है और संझ वाती के समय प्रभु के सामने दीप जराने पर कहा जाता है। क्या, 'बाँसुरिया' के दिग्दर्शक नामतो हिन्दुस्तान जान पडता है। हिन्दू धर्म विधि से जितने अनज़ान हैं! और जिस तरह हम भारितियों के सामने हमारी ही खिली उडाने का साहस करते हुऐ क्या उन्हे……।

निगारिस्तान बनाने वाले निर्मातओं को क्या हिन्दु धर्मतिथि से खिलवाड़ कर अधिक धन मिलता है!

दूसरे, दिसंबर १९४९ में प्रकट हुऐ जिस बोलपट भाषा का नाम हिंदुस्तानी बनाया गया है; मैं जिस विषय में निर्मातओं को कम दोषी मानता हूँ। जिन दोषवेचकों ने (सेन्सर ने) प्रमाण-पत्र दिया उनका यह दोष ही नहीं दंडता है। क्या वे नहीं जानते कि भारतीय संविधान सभा ने १४ सितंबर १९४९ को 'हिन्दी' को भारत की राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा के रूप में स्वीकृत किया है! जिस पर भी कोई जानबूझ कर या अनजान में भाषा का नाम हिंदुस्तानी लिखे और उसे मान्यता दे तो वह पूरी तरह राष्ट्रद्रोही है।

राज्यद्रोही भो। जैसे द्रोहियों को आश्रय देने वाला भी उसी अपराध का भागी है। सब को इस विषय में सतर्क रहना ही चाहिए।

तीसरे, प्रारंभ में अपने सब कलाकारों, दिग्दर्शकों तथा निर्माताओं के नाम रोमन अक्षरों में दिये गये हैं? सो क्यों! कलाकारों के साथ तो जिस से सब से अधिक अन्याय होता है। क्या, वे कलाकार नहीं चाहते कि उनके नाम आम जनता जानें! उनकी कला की प्रशंसा हो। और उनकी उन्नति हो? देवनागरी लिपि में ही उनके नाम लिखे जाने चाहिये! वास्तव में, यह तो अब नियम ही बनना चाहिये, कि बोलपट में सब कुछ देवनागरी लिपि ही में लिखा जाये, रोमन अक्षरों का उपयोग किसी दशा में न होना चाहिये।

चौथे, भारत में बने चित्रों में भारतीय बातों की वास्तविकता ही दिखानी चाहिये। 'बाँसरिया' में अन्तिम कुछ दृश्यों में दिखाया गया है कि, खूनी अभियुक्त से नायक तथा नायिका मिलते हैं तो बिल्कुल पास जा कर। अभियुक्त उन दोनो के हाथ मिला देता है। उसके बाद जब रामू और गोपी लौट रहे हैं तो जग्गू की कोठरी पर से वे गुजरते हैं और जग्गू अन्दर चक्कीपीस रहा है। किसीकी अभियुक्तको, जिसके अभियोग का निर्णय हो कर उसे दण्ड न सुनाया जाय तब तक, भारत में कभी कोई काम नहीं दिया जाता, फिर चक्की पीसना तो दूर।

पाँचवें, इस चित्र का नाम बाँसरिया' क्यों रखा है? केवल इसलिये कि रामू के हाथ में बाँसरी रहती है? समूच बोलपट में बाँसरी के कारण भी महत्वपूर्ण घटना नहीं बनी।

छठवें, हर लड़की का रामू के पीछे पड़ना, क्या भारतीय समाज का प्रतिबिम्ब है? गाँवन भर में रामू लुहार के बिना कोई नौजवान रहा ही नहीं? सुसार की लड़की लुहार के लड़के से यह जान्ते हुए भी प्रणय किया करे कि वह किसी सेठ की लड़की से प्रेम करता है? क्या, यह भारतीय संस्कृति का परिचायक है? क्या, उत्तर भारत में जात पाँत सब नष्ट हो चुकी हैं? अन्यथा, ऐसा दृश्य किस प्रांत का प्रतिनिधि है?

संपादक जी? हमारे चित्रों में तो यही मात्र बतलाया जाता है कि किसी ने किसी को देखने भर से वे एक दूसरे के प्रेमी बन गये और शमा-परवाना बन कर लगे घुटने! समाप्त हो गया उनका कर्तव्य? जीवन की केवल यही साध, कि किसी लड़की को लेकर 'दूर, जहाँ कोई दूसरा न हो' घर बसाये? क्या, यही हमारे नौजवानों का आदर्श है?

इन निर्माताओं तथा दिग्दर्शकों तक मेरी पुकार पहुँचेगी?

पुणे —ग० र० वैशंपायन

❀ ❀ ❀ ❀

संस्कृत शिक्षा पर आघात क्यों?

स्वतंत्रता के उदय के साथ ही हिंदी के राष्ट्रभाषा पद पर आसीन होने का सुखद विश्वास जब सत्यारूढ़ हो गया, तब कम से कम युक्तप्रांत में संस्कृत के गौरव के बढ़ने की आशा करना अनुचित न था। लोगों की यह धारणा थी कि हिन्दी के साथ साथ संस्कृत को भी शिक्षा में उचित और व्यापक स्थान मिलेगा, पर न जाने क्यों उसका ह्रास ही सधिक दृष्टि गोचर होता जा रहा है।

शिक्षा विभाग द्वारा उच्च श्रेणियों में हिन्दी के प्रथम प्रश्न पत्र के साथ केवल पन्द्रह नम्बर का संस्कृत अतिवार्य रखागया है, उसका शिक्षार्थियों की दृष्टि में क्या मूल्य हो सकता है, यह जनता भली भांति ज़ानती है। कोई भी विद्यार्थी इतने लघु अंकों को प्राप्त करने की चिंता करेगा? उतीर्णता में लिये उसका मूल्य बहुत ही कम है। इस प्रकार संस्कृत की अवहेलता ही दृष्टिगोचर होती है। चाहिये तो यह था कि कम से कम एक प्रश्न पत्र स्वतंत्र रूप से अलग परीक्षा के लिये रख जाता। अनुभव के आधार पर यह कहा जा सकता है कि संस्कृत भी उसी सरलता के साथ सीखी जा सकती है जिस सरलता से हिन्दी। सस्कृत तत्सत शब्दों की प्रचुरता के कारण आज की हिन्दी, विभक्तियों की भिन्नता को छोड़ कर, संस्कृत पदावली से परिपूर्ण है। संस्कृत भाषा में एक तथा उसके निर्माण की विभिन्न विधियाँ लसित होती है ज़िनके द्वारा आवश्यक उचित शब्दों का निर्माण अनेक अपेक्षाओं के लिये किया जा सकता है। हर धातु से अनेकयुक्तियों द्वारा सहस्रों शब्द बनाये जाते हैं—जा सकते हैं। ऐसी दशा में केवल पन्द्रह नम्बर की संस्कृत से हिन्दी में छात्रों को कहां तक सहायता मिल सकती है यह विचारणीय है।

संस्कृत की उपेक्षा के साथ साथ संस्कृत शिक्षकों की दुर्दशा का भी मूल्याङ्कण विभिन्न समयों में प्रकाशित उन विज्ञाप्तयों द्वारा किया जा सकता है जो समय समय पर शिक्षा विभाग द्वारा सम्बधित विद्यालयों को भेजी जाती रही हैं। पहले तो एक विज्ञप्ति द्वारा शास्त्री, आचार्य कामिल आदि उपाधियों को बी. ए., एम. ए. के समकक्ष मानकर एल० टी० ग्रेड पाने का अधिकार संस्कृत शिक्षकों को दिया गया, हाई स्कूल की नवमीं दसवीं श्रेणियों को पढ़ाने वाले को रिफ्रेशर कोर्स की ट्रैनिङ्ग दी गई, परन्तु दूसरे समय एक विज्ञप्ति में यह पाया गया कि यदि किसी विषय में पांच से कम पढ़ने वाले छात्र हों, तो उस विषय का अध्ययन समाप्त कर दिया जाय। इसका परिणाम यह हुआ कि शास्त्रियों और आचार्यों एवं कामिल पास अध्यापकों पर स्कूलों की प्रबाध समितियों की क्रूरदृष्टि पड़ी। साथ ही संस्कृत छात्रों की न्यूनतम संख्या, जो नवमीं दसवीं श्रेणी में प्रायः पाई जाती है, संस्कृत के अध्यापन की समाप्ति में सहायक हो गई। इस प्रकार धीरे धीरे, परन्तु नीरवता के साथ ही संस्कृत शिक्षा की कमी अपने आप हो जायगी और साथ में संस्कृत शिक्षकों की भी।

संस्कृत शिक्षक नाम का संस्कृत शिक्षक होता है। उसे हिन्दी भी पढ़ानी होती है और उसी सफलता के साथ पढ़ाता है या उससे कभी अधिक सफलता के साथ, जिस सफलता के साथ कोई अनुभवी हिन्दी में एम० ए० पास अध्यापक। पर प्रबन्ध समितियां शास्त्री आदि को १२०) न देने की भावना से उन्हें निकालने का स्थान स्थान पर विचार कर रही हैं। युक्त प्रांत का शिक्षा विभाग इस पर भी मौन है इसका रहस्य क्या है?

वस्तुतः शिक्षा विभाग यदि संस्कृत को इस विषम दशा से उबारना चाहता है, तो शीघ्र ही इसका उपाय इस रूप से करना चाहिये कि जिससे संस्कृत को उसका गौरवपूर्ण पद मिले तथा साथ ही संस्कृत शिक्षकों पर किये जाने वाले कुव्यवहार से उन्हें मुक्ति मिले। संस्कृत शिक्षक आज निराश्रय प्राणी है। सरकार को उन्हें निराशागर्त में गिरने से, विषय दशा में पहुँचने से पहिले ही, बचाना चाहिये।

बेलनगंज आगरा —गोपालदत्त शास्त्री एम० ए०

गीत

लेखिका कुमारी पुष्पा सक्सेना

बसन्ती इस वेला में आज, बिखरते हैं उर के उद्गार,
कभी सुख-दुख के कोमल गीत, उमड़ आते हैं बारम्बार ॥
हृदय में स्पन्दन आया एक किसी का सुनकर के प्रस्थान,
बिछुड़ने की यह कातर घड़ी, आज गाती किसका गुणगान॥
विश्व के परिवर्त्तन में नहीं विश्व की कर पाई पहचान,
आज क्यों प्राणों में खिच गई, अपरिचित जीवन की मुसकान॥
अर्ध विकसित जीवन के पुष्प, देखतें हैं किसको उस पार,
और सुख की वेला में आज, हुआ किस उर के झंकृत तार॥

× × ×

(पृष्ठ ७ के आगे)

अपने प्रथम जनराज के राष्ट्रपति का दर्शन करने आये थे।

ठीक २॥ बजे राष्ट्रपति अपने छः घोड़ों की सवारी पर चढ़कर गौरमेन्ट हाऊस बाहर निकले। राष्ट्रपति का दर्शन करने के लिये जनता एकदम उमड़ पड़ी। सरकारी घेरों को छिन्न-भिन्न कर डाला। लाहे के बड़े बड़े छड़ो को टेढ़ मेढ़ कर दिया। एक के ऊपर एक समूह टूट पड़ा। एक अर्जीब दृश्य था। आंखेंचौंधिया जाती थीं। बड़ा अनोखा दृश्यथा। मनुष्यों का समुद्र जमा हुआ रास्तों था। तिल रखने की जगह नहीं थी।पर चलना कठिन हो गया था।

सबसे खुशी और आनन्द की बात तो यह थी। आज का दिन बड़ा अच्छा था। एका एक सर्दी कम हो गई थी आसमान बहुत साफ हो गया था। जब राज्य का सारा कार्यक्रम अपने समय के अनुसार निश्चित घड़ी पर हो रहा था।

सबसे बड़ी विशेषता यह थी। चारों तरफ सादगी का ख्याल रक्खा गया था। राष्ट्रपति की सवारी भी फूलमालाओं से नहीं सजाया गया था। रथ पर नियमानुसार सुवर्ण जटित छतरी ऊपर तानी गई थी। छतरी के आगे राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद बहुत सादगी में बैठे हुये थे। आप जैसा सादा स्वच्छ गांधी टोपी पहिनते थे वैसा ही आज भी पहने थे। काली शेरवानी और चूड़ीदार स्वच्छ खादी के वेश में बहुत शोभायमान दे रहे थे। लाखों जनता से दोनों हाथ जोड़े हुये जयहिन्द ले रहे थे और ईश्वर से राज चलाने की प्रार्थना कर रहे थे।

देहातों से आये हुये किसानों ने कहा की हमारा राजा कितना साधु है! साधू का राज है। यह साधू तो इतना सीदा साधा है, गले तक में एक माला भी नहीं पहना है। कैसा राज हो रहा है! समझ में नहीं आ रहा है? एक किसान तुरन्त उत्तर दिया तुमको मालूम नहीं है। महात्मा की धूमधाम और आडम्बर पसन्द नहीं करते थे। यह हमारा राजा उन्हीं का पक्का शिष्य है। उन्हीं के पद-चिन्हों पर चलेगा तभी आज इतनी सादगी है। लोग कहते हैं कि महात्मा गांधी बुद्ध भगवान के औतार थे और अहिंसा की मूर्ति तब तो भाई राजेन्द्र बाबू हमारे जैसे किसान लगते हैं। अशोक राजा के उत्तराधिकारी हैं। अब धर्म-चक्र का राज होगा। इतना सच्चा आत्म संयम और त्यागी राजा हजारों वर्षों के बाद आज फिर मिला है। हमारे देश का भाग्य फिर उदय हुआ है। दिल्ली का राज त्यागी संयमी और सदाचारी ही चला सकता है।

जनतंत्र राज्य के उत्सव के उपलक्ष सरकारी और गैर सरकारी इमारतों पर रंग बिरंगे बल्बों की बड़ी अच्छी रोशनी की गई थी राजधानी के योग्य ही यह उत्सव था।

(पृष्ठ ११ के आगे)

देना, यह अभिनय का ही कार्य है। आपके अभिनय की विराटता में दर्शक अपने को खो बैठता है।

श्रीराज कपूर का व्यक्तित्व बड़ा ही प्रभावशाली एवं आकर्षक है। मिलने वाले पर आपका व्यक्तित्व जादू का काम करता है। आपकी मीठी २ बातों में तो बड़ा आनन्द आता है, दिल यही चाहता है कि आपसे वार्ता करता ही रहे। आप सभी से मिलते जुलते है। आपसे मिलने के लिए कोई खास रुकावट नहीं, लेकिन मिलने वाले को भी आपका ख्याल रखना चाहिए। जब वह किसी काम में फँसा हों तो उस वक्त आपको परेशान न करना चाहिये। आपके साथ जितने भी व्यक्ति काम करते हैं, वे सब प्रसन्न रहते हैं। सभी आपकी तारीफ करते हैं।

"आपके जीवन का आदर्श क्या है और आप अपने आदर्श को सफलीभूत बनाने में कहाँ तक कामयाब हुए है? मैंने प्रश्न किया।

श्री कपूर ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया—हर आदमी का अपना एक ख्वाब होता हैं, और वही ख्वाब उसका आदर्श होता है। हर आदमी अपने ख्वाब को सरकार बनाने के लिए प्रयत्न करता है। ठीक वैसे ही मैंने भी किया-मैंने अपनी जिन्दगी में एक ऐसा ख्वाब देखा कि जिसने मुझे बेचैन कर दिया। मेरा ख्वाब था कि क्यों न चित्र निर्माण शाला धाम और संस्कृति के विद्यापीठ बन जायें? क्यों न उनमें मानव को जीवन के उच्चतम आदर्शों का ज्ञान सिखाया जाये? क्यों न हम चित्रों के द्वारा जीवन के निकटतम पहुँचने की कोशिश करें? क्यों न हम दानवता, पशुता को विश्व के रंगमंच से चित्रों के द्वारा उठाने का कदम उठायें? क्या हम यह सब नहीं कर सकते? क्या हम कला और सौन्दर्य के द्वारा मानव की हैवानियत को नष्ट नहीं कर सकते? क्यों न हम मानव को कला और सौन्दर्य का पूर्ण उपासक बनाये ताकि हमारी दुनियाँ का स्वरूप उज्ज्वल और सुन्दर हो जाये। क्या हम गन्दगी उच्छृंखलता पर कला के द्वारा विजय प्राप्त नहीं कर सकते। मुझे अपनी आत्मा से यही जवाब मिलता कि दुनियाँ में सब से बड़ी शक्ति "कला और सौन्दर्य" की है। इसलिये मैं इस काम में जुट पड़ा। आप चाहे मेरे ख्वाब को भली प्रकार न समझ रहे हों लेकिन मैं तो अपना इसे आदर्श बना बैठा हूँ, और मैं बराबर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहा हूँ मुझे अपने आदर्श में पूर्ण विश्वास है। इसलिए पूर्ण उत्साह के साथ मैं आगे कदम बढ़ा रहा हूँ। अब तक मैं आपके सामने दो चित्र भेंट कर चुका हूँ। वे आपने देखे ही होंगे। उनको देख कर आपने अन्दाज लगा लिया होगा कि मुझे कहाँ तक सफलता मिली है। यह मेरे दो चित्र कला और सौन्दर्य की ओर जाने के लिए दो सोपान से बने हैं। मुझे अपने आदर्श की मंजिल तक पहुँचने में कुछ वक्त जरूर लगेगा। किन्तु इतना मुझे इतमीनान है कि एक दिन मैं पहुँचूगा जरूर। मुझे आँधी तूफानों का डर नहीं चाहे कितनी ही भयंकर क्यों न हो, मुझे दुनियाँ की कोई ताकत अब रोक नहीं सकती—मैं आगे बढ़ूँगा, और जरूर बढ़ूँगा। मैं इसी अमर विश्वास के सहारे अपना प्रत्येक कदम उठा रहा हूँ। जिस दिन मेरा यह अमर विश्वास जायगा उसी दिन मेरी भी मृत्यु हो जायेगी, इसे आप ठीक मानिये। मुझे अपनी कला धोखा नहीं दे सकती। मैं कला को ईश्वर का रूप मानता हूँ। कला की मंजिल पर पहुँचना मानो ईश्वर तक पहुँचना है।"

सिनहा होमियो मेडिकल कालेज, पो० लहेरियासराय (विहार)

वार्षिक परीक्षाफल १९४९-५०

श्री यदुवीर सिंह प्रिंसिपल, लिखते हैं—

एच०एम०डी०एस० प्रथम श्रेणी

श्री लक्ष्मीनारायण साहु (स्वर्णपदक प्राप्त) श्री जगदीशनारायण सिंह (स्तवेपदक-प्राप्त) श्री विद्या प्रसाद सिंह, श्री हमीदा, खातून हासमी।

द्वितीय श्रेणी

श्री उपेन्द्रनारायणशर्मा, श्री सीताराम पुर्वे, श्री द्रव्यमानसिंह नेपाली, श्री गंगाप्रसाद।

तृतीय श्रेणी

श्री रामचन्द्र प्रसाद सिंह, श्री वीर प्रसाद सिंह, श्री रायाजुररहमान, श्री कन्हैया प्रसाद श्रीवास्तव, श्री महम्मद जामीरूल हक्क, श्री रघुनाथ चौधरी, श्री राभेश्वर चाटिया, श्री चन्द्र प्रसाद सिंह, श्री सच्चिदानन्द सिंह, श्री रामसेवक साह,

एच० एम० बी० एस० प्रथम श्रेणी

श्री इन्द्रनन्द शर्मा विकलसिद्धान्तरत्न, (स्वर्णपदक प्राप्त) श्री केशवेन्द्रनारायण सिंह (स्वेतपदक प्राप्त,) श्री भवरंजन सुशील, श्री पृथ्वीनाथ सिंह, श्री रामकान्त राय, सुरेंद्रनारायण चौधरी,

द्वितीय श्रेणी

श्री सदाशिव प्रसाद सिंह, श्री जमीन्दार सिंह, श्री गुलाम नब्बी सिद्दीकी श्री, एस०एम० जामीलुद्दी एहक्बार, श्री महेश झा, श्री द्वारिका प्रसाद सिंह, श्री कृष्णचन्द्र वर्मा, श्री शत्र घन प्रसाद वर्मा श्री कमल मोहन झा, श्री कपिलदेव मिश्र श्री महम्मद उसमान अंसारी, श्री रासबिहारी गोयेट, श्री लाल बहादुर सिंह, श्री महेश प्रसाद मंत्री पी० सी०, श्री अर्जुन नारायण सिंह, श्री मूखीलाल साह, श्री महादेव राय, श्री उमाकान्त मिश्र, श्री महावीर प्रसाद, श्री रामएकबाल... श्री बासुदेव पोद्दार, श्री नागेश्वर प्र...

तृतीय श्रेणी

श्री गोरख प्रसाद, श्री गोरख पाण्डेय, तिलधकारी राय, श्री मनमोहन ... श्री रामानन्द प्रसाद सिंह, श्री ... सिंह, श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह, श्री ... मंडल, श्री जगदीशलाल कर्ण, ... नसरूल्ला खां, श्री भाग्यनारायण ... श्री महम्म ईसा, श्री रामदेवप्रसाद ... श्री रामएकबाल सिंह, श्रीचन्द्रिका प्र... श्री महम्मद सैयद खां, श्री जीतेन्द्र ...

एच०एल०एम० एस० प्रथम श्रेणी

श्री गणेशनाथ शर्मा (स्वर्ण पदक प्रा...) श्री जयनारायण शाही, श्री अताउर... मान, श्री रामबली सिंह,

द्वितीय श्रेणी

श्री महम्म हाफीजूरहमान, श्री ... चन्द्र प्रसाद, श्री रामचन्द्र सिंह, श्री ... दशो नारायण तिवारी।

तृतीय श्रेणी

श्री शुकदेव यादव, श्री मुशुकलाल ... दव, श्री पशुपतिनाथ सिंह, श्री महम्म... सीन, श्री ब्रह्मदेव राय, श्री जीवछ ... श्री रामएकबाल साह, श्री भोला... कर्ण, श्री कामेश्वर चौधरी, श्री सत्य... रायण यादव, श्री ब्रजभूषण तिवारी, ... ललन तिवारी, श्री बासुदेव प्रसाद ... श्रीसुरेन्द्र नारायणसिंह, श्रीफकीर ... श्री देवकृष्ण प्रसाद, श्री महम्म... आलम श्री रघुवंश सिंह।

मातृ मंदिर

गांधी जी और नारी जाति

गांधी जी ने भारतीय महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा किस प्रकार की

लेखिका, श्रीमती सुमित्रा कुमारी सिनहा

महात्मा गांधी का युग भारत की सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना का युग था। मोह और जड़ता के बन्धनों ने हमें शताब्दियों से बांध रखा था और जीवन के चिन्ह हम में केवल नाममात्र का शेष रह गये थे। परन्तु समय ने अपने चरण मोड़े, पन्थ बदला और परिवर्तन को इस बेला में कुछ अन्यतम विभूतियां उपलब्ध थीं। गांधी जी के रूप में हमने करुणा में चेतना भर देने वाला मुक्तिदूत पाया।

महात्मा गांधी सच्चे अर्थों में महान आत्मा थे इसमें संदेह नहीं। वास्तव में आज के प्रपंचपूर्ण और दुरुह संसार में जब कि जीवन केवल एक यंत्र बनकर रह गया था, हमें एक ऐसे महापुरुष की अत्यन्त आवश्यकता थी, जो भ्रमों का निवारण कर हमें "सत्यं शिवं सुन्दरम्" के आदेश दान दे सकता। अतः यदि यह कहा जाय कि गांधी जी युग की एक आवश्यक देन थे तो अत्युक्ति न होगी। ध्वंस और निवास के इस युग में उनके सत्य और अहिंसा के सिद्धान्त ही कवच-रूप होकर मानव जाति की रक्षा कर सकते हैं, यह तथ्य मिथ्या नहीं है। भारत की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के सुदृढ़ आधार पर ही उन्होंने रामराज्य के स्वप्न देखे थे और एक ऐसे समाज की कल्पना की थी जिसमें नर और नारी के अधिकार और कर्तव्य समान दृष्टि से देखे जाँय। भारतीय नारी के उत्थान हेतु उन्होंने जो कुछ भी किया वह वस्तुतः उनके राष्ट्रीय सामाजिक और सांस्कृतिक विकास मार्ग का एक महत्वपूर्ण एवं आवश्यक चरण था। क्योंकि उनका ऐसा विश्वास था कि मूलतः स्त्री और पुरुष एक हैं और उनके अधिकार और कर्तव्य भी समान ही हैं।

नारी अधिकारों की चर्चा के संबंध में कुछ बहुत आवश्यक प्रश्नों पर गांधी जी ने विचार किया। महिला स्वातंत्र्य के लिये सर्व प्रथम आवश्यक वस्तु उन्होंने सत्य, अहिंसा और प्रेम के आदर्शों में निष्ठा मानी। नारी हृदय अक्षय दया और प्रेम का भंडार होता है और वह सत्य और अहिंसाके सिद्धान्तों पर चलकर आत्म विश्वास और मुक्ति का ध्येय निश्चित ही पासकती है। महात्मा जी का यह विश्वास था कि नारी यदि चाहे तो अपने अनुकूल आदर्श वातावरण का निर्माण कर सकती है। उसकी सहायता के लिये दूसरों के हाथ बढ़ाने की भावना से वे सहमत नहीं क्योंकि नारी स्वयं जगत् विधात्री और कल्याणी है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि वह शुद्ध, पवित्र और विवेकशील रहे। अन्यथा उसके पतन का द्वार उन्मुक्त है।

महिलाओं के अन्य अधिकारों के संबन्ध में महात्मा जी शिक्षा का प्रमुख स्थान देते हैं। अशिक्षा और अज्ञान के कारण शताब्दियों तक नारी जाति की जो दुर्दशा रही उसके परिणामों से वे पूर्णतया परिचित थे। अतः स्त्री शिक्षा पर उन्होंने बहुत अधिक जोर दिया। यह अवश्य था कि शिक्षा के समर्थक होते हुए भी वे स्त्री शिक्षा प्रणाली का भिन्न होना आवश्यक मानते थे। वे चाहते थे कि नारियों की शिक्षा ऐसी हो जो कि उनके सुगृहिणी बनने में सहायक हो संके, न कि फैशन की पुतली बनने में। यहां पर वे हिन्दू संस्कृति के अधिकार स्तम्भ होकर नारी को सीता और सावित्री के आदर्शों का अनुकरण करने को कहते हैं। हिन्दू संस्कृति का एक अपराध तो यह अवश्य मानते हैं कि उसने पत्नी को पति की अतुल पराधीनता में रक्खा और नारी के व्यक्तित्व की समाप्ति में सहायता की परन्तु अन्य आदर्शों को वे कुछ अच्छा समझते हैं। नारी की स्वतंत्रता सत्ता हो यह उन्हें अभीप्सित है, परन्तु वे यह नहीं चाहते कि नारी उच्छृंखल हो जाय। उनकी दृष्टि में अत्यधिक स्वतंत्रता हानिकर है, क्योंकि उसका फल यही होगा कि स्त्री का एक मात्र ध्येय फैशन और पुरुषों का अपने सौंदर्य के प्रति आकर्षित करना हो जाये। यही कारण है कि अत्यधिक स्वतंत्रता प्राप्त आधुनिक भारतीय रमणी के लिये गांधी जी ने एक बार कहा कि यह कम से कम बीस मजनुओं की लैला बनती है। प्रेम के नाम पर इस प्रकार का अनाचार शोभा नहीं देता।

यह सब होते हुए भी गांधी जी नारी का वे अधिकार अवश्य दिलाना चाहते थे जिनकी वह अधिकारिणी हो। यह अधिकार प्राप्त करना स्त्री के अपने वश के ही है। परिस्थितियों का अध्ययन करके और उसी के अनुरूप उपाय का अवलम्बन लेकर स्त्रियां अपने अधिकारों को सहज ही में प्राप्त कर सकती हैं। अपने मार्ग को खोजना उनके ही हाथ में है, क्योंकि स्त्रियों की समस्या का समाधान पुरुष करें यह उचित नहीं

अमरीका में भारतीय राजदूत श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित

जान पड़ता। यदि कोई स्त्रियों को अबला कहे, तो वह भूल करेगा, क्योंकि नारी के अहवान को अबला का अहवान कहना ठीक नहीं। बल को पशुता के अर्थ में कोई ले तब तो निश्चय ही पुरुष से नारी निर्बल पड़ेगी परन्तु यदि बल का तात्पर्य नैतिक शक्ति से है तब नारी अपरिमित रूप में पुरुष से श्रेष्ठ है। वह अपने अधिकारों के लिये संघर्ष कर सकती है और उन्हें ले भी सकती है क्योंकि अब पराधीनता का युग समाप्त हो चुका है और प्रगति और जागरूकता का समय प्रारंभ हुआ।

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि गांधी जी ने भारतीय नारी से उत्थान में अपूर्व सहयोग दिया और यह उन्हीं के प्रयत्नों का फल है कि आज भारतीय नारी में भी जागृति के चिन्ह दिखलाई देते हैं। यह समय है कि अब भी राम राज्य के आदर्श पूरे नहीं हुये और न आज की नारी में सीता और सावित्री की निर्भीकता, पवित्रता और सौम्यता ही आसकती है फिर भी गांधी जी के चरण चिन्हों में चलकर हमने बहुत कुछ पा लिया है और शेष के लिये सर्वदा आशावादी हैं।

स्वास्थ्य और व्यायाम

'आंवला'

भारत का एक उपयोगी पौदा

लेखक, श्रीरामेश वेदी आयुर्वेदालंकार
संचालक, हिमालय हर्बल इंस्टिट्यूट

देवताओं का प्रिय होने से भारतवासी आंवले के वृक्ष को बहुत पवित्र मानते हैं। पत्र, पुष्पमालाएं आदि चढ़ाकर इसकी पूजा करते हैं। उनका विश्वास है कि आंवला सब पापों को दूर कर देता है और इसके पानी से स्नान करने से स्वस्थ रहता हुआ मनुष्य सौ साल तक लक्ष्मी सम्पन्न होकर जीवित रहता है।

आंवले के वृक्ष के बारे में एक पौराणिक गाथा इस प्रकार प्रसिद्ध है—भगवती और लक्ष्मी एक बार तीर्थ यात्रा को निकलीं। भगवती ने लक्ष्मी से कहा, 'देवी! आज मैं स्वकल्पित किसी नवीन द्रव्य से हरि की पूजा करना चाहती हूँ।' लक्ष्मी ने उत्तर दिया कि त्रिलोचन को भी किसी नये पदार्थ से पूजने की हमारी इच्छा है। फिर दोनों की आंखों से निर्मल अश्रु जल भूमि पर गिरा। उसी से माघ मास शुक्ल पक्ष की एकादशी को आंवले की उत्पत्ति हुई। इस वृक्ष को देख कर देव और ऋषि आनन्दोल्लसित हो उठे। तुलसी और बिल्व के समान ही यह पवित्र माना जाता है। इसके पत्तों से शिव और विष्णु दोनों की पूजा होती है। माघ मास की एकादशी को उनकी उत्पत्ति होने से उस दिन विष्णु देव की इससे पूजा करने से देव प्रसन्न होते हैं।

यह कथा गरुड़ पुराण के २१५ वें अध्याय में विस्तार से लिखी गयी है। पुराणकार ने इसमें माघ मास के साथ आंवले का विशेष सम्बन्ध स्थापित किया है। मैंने इस पर आयुर्वेदिक दृष्टि से विचार किया और माघ मास में आंवले के महत्व को जानना चाहा। करीब दिसम्बर में आंवला बाज़ार में बिकने आ जाता है। प्रायः मार्च के अन्त तक बिकता रहता है और उसके बाद हरे आंवले का मौसिम समाप्त हो जाता है। मौसिम के अन्तिम दिनों के आंवले को चैती आंवला कहते हैं। मौसिम के आरम्भकालीन दिसम्बर में आंवला बिकता है वह रस और वीर्य से सम्यक्तया भरपूर नहीं होता। माघ में जाकर यह पकने लगता है और आधे चैत तक यह इसी अवस्था में रहता है। यही काल है जिसमें आंवले के अन्दर गुणों का परिपाक होने लगता है, हमारी सम्मति में इसीलिए पुराणकार ने इस मास के साथ आंवले के विशेष महत्व का प्रतिपादन किया है। वृक्ष के प्रति पूज्य भाव होने से लोग इसको भली भांति सींचते रहेंगे जिससे फलों के लिए आवश्यक पोषण उन्हें मिलता रहेगा, औषधि प्रयोग के लिये जब आंवलों को तोड़ कर भविष्य के लिये सुखाना होता है तो पूर्ण पक्व फलों को फाल्गुन या चैत में वृक्षों पर उतारना चाहिये। अच्छी तरह सुखा कर वायुरहित सूखे कनस्तरों में बन्द करके इन्हे रख लेना चाहिये।

चिकित्सा में आंवले का उपयोग

भारतीय चिकित्सा का आंवला एक महत्व पूर्ण पदार्थ है। प्राचीनतम लेखक चरक सुश्रुत से लेकर आधुनिक लेखकों तक ने भी इसे बहुत महत्व दिया है। अनेक योगों में यह महत्व पूर्ण भाग लेता है और बहेड़े तथा हरड़ के साथ मिलकर त्रिफला के रूप में यह प्रायः सब रोगों में विभिन्न रूपों में प्रयुक्त किया जाता है।

लेख के लेखक श्री रामेश वेदी

ताजा फल प्यास को शान्त करने वाला, पेशाब खुल कर लाने वाला और अनुलोमक होता है। सूखा फल संग्राही और पाचक होता है। फूल शीतल और सारक होते हैं। साल में पके फलकी संग्राहकता होती है। इस प्रकार आंवले के वृक्ष का प्रत्येक भाग चिकित्सा में काम आता है। मुसलमान हकीम इसे हिन्दू चिकित्सकों की तरह प्रयोग करते हैं। वे इसे ग्राही, तृषाशामक, हृदय के लिए हितकर और शरीर के दोषों को शुद्ध करने वाला समझते हैं। शीतल संकोचक गुण के कारण ये इसे बाहरी प्रयोग में करते है। बाहरी तथा भीतरी प्रयोग में शीतल होने से आंवला पित्त को शान्त करता है। गरमी और पित्तके प्रकोप से यदि हृदय में धड़कन और शूल हो तो आंवले के योग खिलाने चाहिये। पैत्तिक विकारों में आंवले के मुरब्बा का उपयोग किया जाता है। ऐसे रोगी इसे प्रति दिन सुबह धारोष्ण या गरम करके ठंडा किये हुए दूध के साथ लेते हैं और भोजनों में भी इसे खाते हैं। रक्त, प्रदर, खूनी बवासीर, नक्सीर बहना, पेशाब के रास्ते खून और पीप आना आदि पित्त प्रकोप जन्य रोगों में आंवले के प्रयोग पित्त प्रकोप को शान्त करने के लिए दिये जाते हैं। ग्रीष्म ऋतु गरमी से बचने के लिए आंवलों को खाने का एक सुगम तरीका है। सूखे आंवलों को छांट कर साफ करलें। गुठलियां अलग करके इसे पानी में धोकर मिट्टी छुड़ा लें। रात को शीशे के गिलास या कोरी हांडी में इसे भिगो दें। सुबह मल कर छान लें। नमक मिलाकर या ऐसे ही इसे पी जायं। नये विचारों के धनी और शौकीन लोग जो पुराने तरीकों और पुरानी चीजों को पसन्द नहीं करते वे आंवले के इस शीत कषाय में खांड या शहद मिलाकर और बर्फ में रख कर ठंडा करके इसे ले सकते हैं। जिन लोगों को गरमी बहुत सताती है, पित बहुत निकलता है, भूख मर जाती है और प्यास सदा बेचैन किये रहती है उन्हें आंवले का यह ठंडा पानी रोज सुबह पीना चाहिये।

एक लाभप्रद व्यवसाय

बड़े पैमाने पर यह फल संरक्षण का काम करने वाले लोगों तथा स्केश आदि फल पेयों के निर्माताओं को मैं सलाह दूंगा कि यदि वे आम, शन्तरा, निंबू आदि के स्कैस की तरह आंवले के स्केश को भी बाजार में रखें तो जनता में इसकी अच्छी मांग पैदा हो जायगी और निर्माताओं के लिए यह अच्छे मुनाफे का धन्धा होगा। आंवला हमारे बड़े देश के अधिक भू भाग जंगल में स्वयं पैदा होता है। इसकी उत्पति इतनी अधिक है कि पूरी पैदावार का हम ठीक तरह उपयोग नहीं कर पाते। जिन प्रदेशों में यह होता है वहां से पास के शहरों और मंडियों में बिकने आ जाता है। आचार, मुरब्बे तथा दवाओं में प्रयोग किये जाने के बाद जो पैदावार बचती है वह सुखा कर रख ली जाती है। हमारा विश्वास है कि इन उपयोगों के बाद भी पैदावार का एक बड़ा हिस्सा नष्ट हो जाता है। स्वेशेष के रूप में यदि इसका प्रयोग आरम्भ कर दिया जाय तो हमें विश्वास है कि सारी पैदावार का हम पूरा लाभ उठा सकेंगे जिससे हमारी राष्ट्रीय सम्पत्ति में भी वृद्धि होगी। इसका व्यवसाय आरम्भ करने वालों को मैं एक उदाहरण देता हूँ। पठानकोट के आसपास पहले निम्बू, खट्टा आदि साइट्रस जाति के कुछ फल बड़े परिमाण में पैदा होते थे। मौसिम में इकट्ठे किये जा कर जब ये स्थानीय मंडी में आते थे तो इनका मूल्य प्रायः एक रुपया प्रति मन हुआ करता था और अच्छा गाहक न मिलने से बहुत सी पैदावार योंही खराब हो जाती थी। फल संरक्षण की शिक्षा प्राप्त एक युवक बी० एस-सी० को उस इलाके में फल संरक्षण का काम शुरू करके साइट्रस फलों का उपयोग करने की सलाह दी गयी। जब से वह कारखाना वहां खुला और इसके रसों से स्केश बनने लगे तो उन फलों की अच्छी खपत हो जाने से इनकी कीमत पहले से दसगुना अधिक हो गयी। उस इलाके के लोगों को इससे अपनी पैदावार की पूरी कीमत मिलने लगी।

खाद्योज 'सी'

आंवले में जितनी अधिक मात्रा में खाद्योज विटामिन सी रहता है उतना सम्भवतः किसी दूसरे फल में नहीं। ताजे आंवले के रस में नारंगी के रस की अपेक्षा बीस गुना अधिक सी रहता है। एक आंवले में डेढ़ दो सन्तरों के बराबर सी रहता है फलों और सब्जियों को गरम करने, पकाने या सुखाने से उनके खाद्योज का अधिक भाग या सम्पूर्ण अंश नष्ट हो जाता है, परन्तु आंवला इस नियम का अपवाद है। पकाने पर भी इसका खाद्योज नष्ट नहीं होता। हमारे देश में युद्ध जनित असाधारण परिस्थितियों के कारण फलों, शाक सब्जियों की भी जो सामान्य कमी है उसके कारण सर्व साधारण को जीवन के लिए यह आवश्यक खाद्य पदार्थ खाद्योज सी भी पर्याप्त नहीं मिल रहा है। इस कमी को पूरा करने के लिए हमारे पास सब से अधिक सस्ता और बहुत बड़े पैमाने में मिलने वाला आंवला ही फल है। भारत सरकार का जंगल विभाग इस महायुद्ध में इसी प्रयोजन के लिए फौजियों को आंवला देता रहा है। यह आँवला सूखी शक्ल में जाता था और इसका यह रूप भोजन की अपेक्षा दवा में अधिक प्रतीत होता था। आंवला दवा के साथ साथ एक महत्व पूर्ण भोजन भी है। इसके ताजे रस को सुरक्षित करके जो स्केश बनाये जावें उनका भोजनों के रूप में हमारे घरों में होटलों और रेस्तरों में बहुत उपयोग होगा ताजे आंवले का स्वाद खट्टा होता है। इसकी खटास में जो हलका सा कसेलापन होता है उसकी अपनी विशेषता है। पंजाबी की एक प्रसिद्ध कहावत का आशय है कि वृद्ध जनों की बात का और आंवले के स्वाद का बाद में ही महत्व का पता चलता है। प्रकट रूप में आंवला खट्टे और कसले वाला एक फल है परन्तु यह कहावत इसमें छिपे हुए उस मिठास की ओर संकेत करती है जिसका स्वाद बाद में ही आया करता है। आंवले के ताजे रस का रंग बहुत सुन्दर सफेदी लिये हरा सा होता है। स्वाद, रूप, रंग और सस्तापन तथा मांग आदि सभी दृष्टियों से आंवले के स्केश तथा दूसरे प्रकार के पेय अच्छे लोकप्रिय होंगे, ऐसी सम्भावना है। (कापी राइट—हिमालय हर्बल इंस्टिट्यूट।)

हमारी दिल्ली डायरी

जनतंत्र के दिवस समारोह

बच्चों को मिठाइयाँ-दीपमालिका की रंगत-पंडित जवाहरलाल नेहरू को अभिनंदन ग्रंथ भेंट

(विशेष संवाददाता द्वारा)

दिल्ली में जिस धूमधाम से रिपब्लिक डे मनाया गया उस से प्रतीत होता है कि भारत में एक नया युग आरम्भ हो रहा है। भारत के प्रथम प्रधान डा० राजेन्द्र प्रसाद ने इस युग की परिभाषा इस प्रकार की कि नव भारत महात्मा गांधी के बताए हुए सिद्धान्त अन्हिसा प्रेम और सत्य का अनुसरण करेगा। और नम्रता से संसार की प्रगति का कारण बनेगा।

दरबार हाल की कार्रवाई प्रधान का सरल एवम् शानदार जलूस और अर्विन स्टेडियम की परेड भारतीय इतिहास का एक स्वर्ण अध्याय बन गया है। जिन लोगों ने इस अवसर पर जनता के समारोह और आनन्द को देखा है वे अनुभव कर रहे हैं कि जिस प्रकार २० वर्ष पूर्व स्वतन्त्रता की शपथ लेकर भारतीयों ने अपने आप को देश सेवा के लिए अर्पण किया था उसी प्रकार अब वे भारत को उन्नत करने के प्रयत्न में उत्सुकता दिखाएंगे। वे अवश्य ही अपने प्रधान की भाँति अपना जीवन सरल और उच्च बनाएंगे। प्रधान ने उन कठिनाईयों को स्पष्टतः जनता के सामने रखा जिन्हें भारत ने हल करना है और उस कर्तव्य की ओर ध्यान दिलाया जो प्रत्येक भारतीय को अपने सामने रखना है। २६ जनवरी को रिपब्लिक डे की घोषणा करने में जनता ने मनोवैज्ञानिक रूप से यह अनुभव किया है कि उनकी पूर्व की सभी त्रुटियों का बहिष्कार होगा। प्रधान की शपथ भारत के सभी भारतीयों की शपथ है जो वर्ष प्रति वर्ष दोहराने योग्य है।

❁ ❁ ❁

२६,२७ जनवरी को दिल्ली और नई दिल्ली दुल्हन की भांति सजे हुए थे। दीपमाला ने उस प्रकास को जाहिर किया जो रिपब्लिक की स्थापना से सर्व साधारण के मन में उत्पन्न हुआ है। आर्थिक संकटों ने उस इस प्रकाश को कुछ धीमा कर दिया था किन्तु प्रधान ने यह आश्वासन दिलाया कि आर्थिक संकट अब कुछ दिनों का मेहमान हैं। प्रधान ने खाद्य मन्त्री की हैसियत से जो कार्य किया था वह लोगों को भूला नहीं उन्हें आशा है कि शीघ्र ही वे उस कमी को पूरा कर देंगे जो २६, २७ जनवरी की रात्रि की दीपमाला में दिखाई देती थी। वह दिन दूर नहीं जब जनता प्रफुल्लित हो उस ज्योति को दर्शायेगी जो उनके हृदय में इस नए युग ने जगाई है।

❁ ❁ ❁

बच्चों में यह भाव उत्पन्न करने के लिए कि उन के देश में आनन्द और उल्लास का अवतरण हो रहा है, जलसे हुए और मिठाइयाँ बांटी गई। मिठाई बांटने के की जिम्मेदारी स्कूलों पर व्यक्तिगत रूप से डाली गई थी। कुछ स्कूल आर्थिक कठिनाइयों के कारण बच्चों में मिठाई नहीं बांट सके। यह एक छोटा सा तत्य है किन्तु जिन्होंने बाल मनो विज्ञान का अध्यन किया है वे समझ सकते हैं कि छोटे से तथ्य का कितना महत्व है। उन बालकों के मन में जिन्हें मिठाई नही मिली अपनी संस्था और देश की ओर क्या भाव उत्पन्न हुए होंगे। यह तथ्य आँखें खोलने वाला है। नई पौध ने ही देश का निर्माण करना है, उसके मन में इस अवसर पर असमानता के भाव न आने देने का प्रयत्न करना अति आवश्यक था। इस तथ्य से यह भी स्पष्ट हो गया है कि जो संस्थाएं बालको मिठाई देने की सामर्थ नहीं रखती वे उन्हें शिक्षा की सुविधाएं जुटाने की सामर्थ कैसे रख सकती हैं। भारत सरकार को सावाधान होना चाहिए और बालकों के प्रति अपने कर्तव्य को समस कर सब स्कूलों में सरकारी प्रबन्ध स्थापित करना चाहिए ताकि उन बालकों को वास्तविक स्वतन्त्रता का अनुभव हो और वे ये समझ सकें कि वे ऐसे देश में रहते हैं जहां सब को एक समान सुविधाएं प्राप्त हैं। समानता तो भारतीय विधान की आधार शिला है।

❁ ❁ ❁
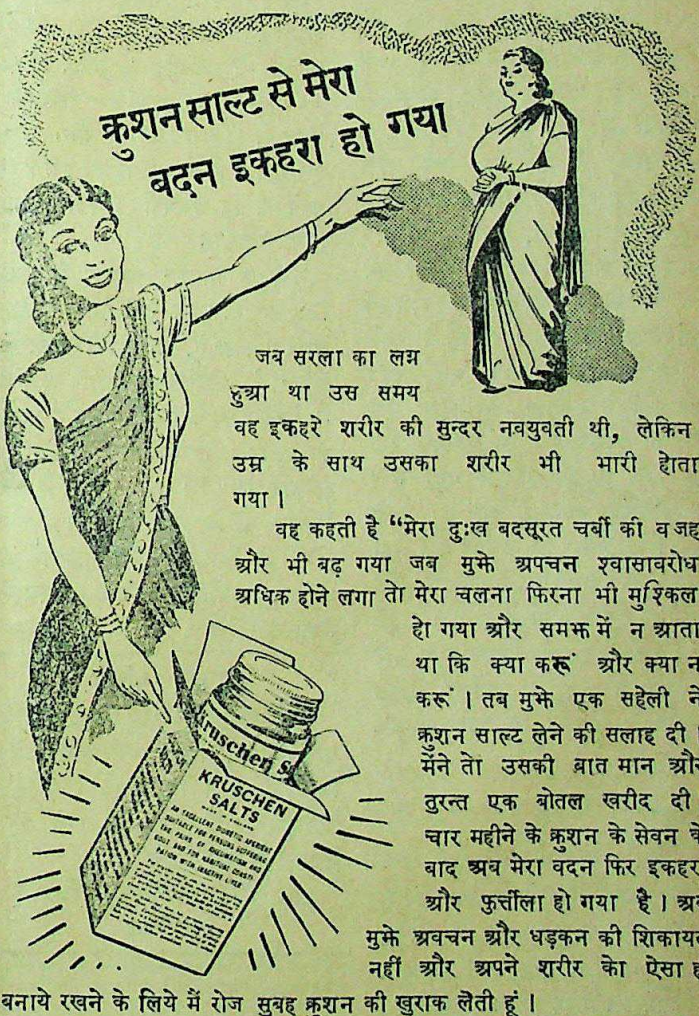
प्रधान मन्त्री पं० जवाहर लाल को रिपब्लिक डे पर अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया गया जिसमें हिन्दी और अँग्रेजी में भिन्न भिन्न लेखकों और नेताओं ने पं० जवाहर लाल के प्रति श्रद्धा प्रगट की है। यह अभिनन्दन ग्रन्थ गत १४ नवम्बर को भेंट किया जाना चाहिए था किन्तु उस समय प्रधान मन्त्री विदेश में थे। यही फैसला किया था कि यह भेंट रिपब्लिक डे पर की जाए।

यह ग्रन्थ श्री पुरुषोतम दास टंडन ने भेंट किया। इस ग्रन्थ की तैयारी में श्री राजेन्द्र बाबू, श्री टंडन जी, सर राधा कृषनन्, मि० के० एम० मुन्शी, सेठ गोविन्ददास, श्री नन्द लाल बोस और कई दूसरे प्रसिद्ध भारतीय सम्मिलित थे। यह ग्रन्थ दो हज़ार पृष्ट का है और इसमें २६० चित्र हैं। ग्रन्थ संसार के प्रसिद्ध पुस्तकालयों को भेंट किया जायगा। पं० जवाहर लाल ने अपने भाषण में एक विचित्र उदासीनता का प्रदर्शन किया। बचपन में उन्हें अपने जन्म दिवस पर एक विशेष आनन्द का अनुभव होता था और वे चाहते थे कि जन्म दिवस बार बार आए, किन्तु इस अवसर पर उन्होंने खेद प्रगट किया और कहा कि जन्म दिवस बूढ़ा होने की याद दिलाता है और वे चाहेंगें कि जन्म-दिवस न मनाया जाए। पं० जवाहर लाल मे ने एक और उदासीनता की बात कही कि वे शायद नई पौध से पीछे रह गये हैं और उनके भावों को पूर्णतः नहीं समझते। पं० जवाहर लाल में अभी तक यौवन की स्फूर्ती है और उनके विचार आधुनिक, प्रगतिशील और विशाल है। उनके विचारों में बुढ़ापे के कोई चिन्ह दिखाई नहीं देते। भारत का सौभाग्य है कि उसे इस प्रकार का प्रधान मन्त्री मिला है। इससे लोगों को अथाह खुशी हो रही है कि इस समय हमारे देश की बागडोर दो ऐसे व्यक्तियों के हाथों में है जो महात्मा गांधी के पक्के अनुयायी हैं और भारत की आधुनिक समस्याओं को समझते हैं। २६ जनवरी सतेव ही पं० जवाहर लाल नेहरू के नाम से मनसूब रहेगी।

लखनऊ की चिट्ठी

६ जनवरी के बाद

पशु पालन विभाग की योजना

स्वतंत्र भारत के इतिहास का द्वितीय आध्याय गत सप्ताह २६ जनवरी का प्रारम्भ हुआ जब कि भारतीय जनतंत्र विधान का उद्घाटन हुआ था। जनगण मन" को भारत का राष्ट्रीय गान घोषित किया गया। भारत के राष्ट्रीय झन्डे के संबंध में सभी नियमों को एक व्यवस्थित रूप दिया गया। इन नियमों के अन्तर्गत उन सभी आदेशों का समावेश हो जाता है जो भारत सरकार द्वारा इस विषय पर समय समय पर जारी किए गए हैं।

❀ ❀ ❀

संयुक्त प्रान्तीय सरकार के पशुपालन विभाग की मेकेनाइज्ड- स्टेट-फार्म-योजना को बड़ी योग्यता के साथ व्यापक बनाया जा रहा हैं। इस योजना का उद्देश्य यह है कि कृषि योग्य परती भूमि पर यथासंभव अधिक से अधिक खेती की जाए ताकि देश में खाद्य एवं चारे की कमी न रहे। उक्त योजना जुलाई १९४८ में चलायी गयी थी। और १९४८-४९ में इस योजना के अन्तर्गत पहली फसल उगाई गयी। यद्यपि खेतों में कार्य देर से शुरू किया गया था, फिर भी मेकेनाइज्ड स्टेट फार्मों में लगभग ८७५९ मन रबी का अनाज तथा लगभग १०८३२६ मन चारा पैदा हुआ। खरीफ में इससे भी अधिक अर्थात् १५००० मन अनाज और लगभग २ लाख मन चारा पैदा होने की आशा हैं। उल्लेखनीय बात यह है कि यह सब अनाज ऐसी भूमि से पैदा किया गया है जहां की इसके पहले किसी प्रकार का अनाज नहीं पैदा हुआ था। अब तक मेकेनाइज्ड-स्टेट फार्मों की संख्या लगभग १ दर्जन तक पहुँच चुकी है इस योजना के लागू होने के समय से दूध का औसत दैनिक उत्पादन भी ७.५ से बढ़ कर ३५-६८ तक हो गया है।

❀ ❀ ❀

अन्य समस्याओं के साथ साथ सरकार इटावा जिले के पाइलट डेवलपमेन्ट योजन के सिलसिले में अच्छे बीजों की मात्रा में बृद्धि करने के प्रश्न पर विशेष रूप से विचार कर रही है। ३१ दिसम्बर १९४९ को समाप्त होने वाले पक्ष में योजना की प्रगति संबंधी रीपोट से पता चलता है कि फसल की प्रगति सन्तोषजनक रही और देशी किस्म की तुलना में फस्ल में अच्छी बृद्धि होने तथा किसानों की संख्या बढ़ जाने के फलस्वरूप पी. बी. ५९१ किस्म का बीज बहुत अच्छा पाया गया। पाइलट डेवलपमेंन्ट योजना कार्यालय के अनुसार यदि १ से लेकर ५ प्रतिशत के अल्पमतवाले व्यक्तियों को भी प्यार सीड़ ल्टीप्लीकेशन ऐक्ट द्वारा प्रभावित किया जा सके तो यह आशा करना अनुचित न होगा कि आगामी वर्ष तक सम्पूर्ण क्षेत्र में उन्नत प्रकार के गेहूँ के बीजों का प्रयोग किया जा सकेगा।

❀ ❀ ❀

संयुक्त प्रान्तीय सरकार ने दुग्धशाला विकास की योजना के प्रसार की अपनी नीति का अनुसरण करते हुए निम्नलिखित व्यक्तियों को अब्याज ऋण देने की स्वीकृति दी है।

आजमगढ़ जिले में एक दुग्धशाला स्थापित करने के निमित्त राय बिहारी लाल को २० हजार रुपये लखनऊ जिले में मोहनलाल गञ्ज के समीप दुग्धशाला स्थापित करने के लिए आवश्यक मशीन और सामन तथा दूध देने वाले मवेशियों की खरीद के लिएबनारसी बाग, लखनऊ की गोपाल दुग्धशाला के मैनेजर श्री के सी. तीवारी को १०,००० रु०, बस्ती जिले बंजरिया: गनेशपुर में एक दुग्धशाला स्थापित करने के लिए बस्ती के वकील श्री अब्दुल मुईजं खां को १०,००० रु०। २०,००० रु० लेनेवाले से ऋण दो दो हजार की दस और दस दस हजार रुपये लेने वालों से एक एक हजार रुपये की दस अर्द्धवर्षीय किश्तों में वसूल किया जायगा।

संयुक्त प्रान्तीय सरकार ने हरदोई जिले के गोपामऊ में पीलीभीत जिले के देबरियां कलां में, बाराबंकी जिले के असेन्द्रा में, शाहजहांपुर जिले के खुदागज में, मेरठ जिले के परीक्षित गढ में ग्रामीण डाक्टरी चिकित्सालय खोलने की स्वीकृति दी है। ऐसा सरकार के उस निश्चय को कि यथाशीघ्र प्रान्त ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सा संबंधी सुविधायें दी जायेंगी, कार्यान्वित करने के उद्देश्य से किया गया है।

संवाददाताओं के पत्र

बीकानेर रतनगढ जनवरी २९-३० को रतनगढ में होनेवाले राजस्थान हिन्दीसाहित्य सम्मेलन को सफल बनाने के हेतु विशिष्टराजस्थानियों ने संयुक्त वक्तव्य: दिया है, जो इस प्रकार है

"विशाल राजस्थान साहित्यकर्मियों का केन्द्र हैं पर यहाँ के साहित्य सेवी अेकसंगठन के अभाव में अपना अभयुदय नहीं कर पा रहे हैं इस समय जहां सभी प्रान्तों में साहित्यसेवी हिन्दी के विकास और उत्कर्ष के लिये सारी शक्ति लगा रहे हैं वहां हमारे इस प्रान्त में इस ओर किसी का ध्यान नहीं है अतअेव प्रान्त व्यापी संगठन निर्माण के लिये रतनगढ में राजस्थान हिन्दी साहित्यसम्मेलन हो रहा है हमारी अभिलाषा है कि इस अवसर पर राजस्थान के साहित्य सेवी एकत्रित होकर अपना अेक सुदृढ संगठन बनालें तथा भाविष्य में उसको उत्तरोत्तर उन्नत करते हुऐ हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि करें

ईश्वरदास जालान भंवरमल सिंघी मोती लाल तापड़िया, अेस्.अेल् कोठारी मगतूराम जयपुरिया, भवानीदयाल संन्यासी, सर भागचन्दजी सोनी मुकुट बिहारी लाल भार्गव चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय नन्द चतुर्वेदी, ओंकारेश्वर पुरोहित स्वरूपनारायण पुरोहित श्री नारायण चतुर्वेदी इन्द्रलाल शास्त्री जैन श्री गीरधारीलाल शर्मा, श्री कनक मधुकर, श्री पुरुषोत्तम मेनारिया, श्री सुमनेश जोशी, खैरातीराम अग्रवाल, विद्याधरशास्त्री, गौरीशंकर आचार्य, श्री बद्री प्रसाद आचार्य, श्री कुमार शर्मा

इटावा में १५ जनवरी सन् ५० का थियोसोफि कललाँजमें सम्मेलन संस्थापिका समिति की बैठक हुई। श्री युत जगत नारायण जी तिवारी, एडवोकेट, सभापति के स्थान पर आसीन थे। सम्मेलन के पदाधिकारियों का प्रथम चुनाव इस प्रकार हुआ :—

सर्वश्री द्वारिका प्रसाद जी चतुर्वेदी सभापति जगतनारायण जी तिवारी प्रधानउपसभापति, भूप नारायण जी दीक्षित उप सभापति रघुवर दयाल जी मिश्र "मान" प्रधान मंत्री, रूप नारायण जी बाजपेई "सुबोध" प्रचार मंत्री, रत्नाकर जी शास्त्री अर्थमंत्री, कार्य कारिणी के सदस्य बाबू सूरज नारायण जी अग्रवाल, चौधरी कृष्ण गोपाल जी, एडवोकेट श्री युत शिशुपाल सिंह जी "शिशु" श्री मती सरला देवी चतुर्वेदी, कृष्णा माधव चौधरी एम ए बृजकिशोर जी, राम भरोसे त्रिपाठी, राजेन्दर नाथ जी द्विवेदी डीडनावा श्री बाँगड़ हाई स्कूल (मारवाड़)के अन्तर्गत हिन्दी भाषा और साहित्य का प्रचार एवं प्रसार तथा रचनामक कार्य करने वाली हिन्दी-साहित्य-परिषद् ने एक शानदार जनतन्त्र सप्ताह मनाया जो २१ जनवरी से आरम्भ होकर २७ जनवारी को समाप्त हुआ। सुलेख अन्त्याक्षरी, गीत नक्शा फेंसी-ड्रस शो, पहेली भाषण, कविता और निबन्ध प्रतियोगिता आदि प्रतियोगिताओं में प्रथम और द्वितीय आने वालों को पुरस्कृत किया गया। छात्र वक्ताओं ने जनतन्त्र का महत्व बताया तथा साम्प्रदायिकता तथा प्रान्तीयता से दूर रहने की नागरिकों से अपील की। २७ जनवरी को नगर के समस्त शिक्षालयों के छात्रों को, श्री बाँगड़ हाई स्कूल के प्रबन्ध को की ओर से जनतन्त्र स्थापना भी प्रसन्नता में मेवे बांटे गए। नगर में इस राष्ट्रीय पर्व पर दीवाली-मनाई गई। तिरंगे झण्डे के प्रति वफादार रहने की नागरिकों ने शपथ ग्रहण की। जनता से प्रांतीयता तथा साम्प्रदायिकता से दूर रहने की अपील की गई।

सचित्र साप्ताहिक 'देशदूत'

संवाददाताओं से निवेदन

संयुक्तप्रांत, मध्यप्रांत, मध्य भारत तथा राजपूताने के संवाद भेजनेवालों से निवेदन है कि वे अपने संवाद संक्षिप्तरूप में ही भेजने का कष्ट करें।

संपादक 'देशदूत'

Registered No. A—295

विविध विषयों के हमारे बढ़िया ग्रन्थ

इस पुस्तकमाला की ४ प्रसिद्ध पुस्तकें हैं—(१) 'योगायोग' कवित्वमय श्रेष्ठ उपन्यास। मूल्य ४) (२) 'विश्व परिचय' विज्ञान-विषय अनन्य ग्रन्थ। मूल्य २), (३) 'रूस की चिट्ठी। रूस का आँखों देखा वर्णन, मूल्य २) (४) 'चार अध्याय' ऐसा उपन्यास जिसमें राजनीति, समाज और स्त्री-पुरुष-समस्या आदि पर विचार हैं मूल्य १।)

इसमें प्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव के नये गीतों का संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अन्तर्द्वन्द्व से पूर्ण है। छपाई सफाई नयन मोहक। सचित्र सजिल्द प्रति का मूल्य २) दो रुपये।

लेखक भू० पू० काकोरी सके के कैदी श्री मन्मथनाथ गुप्त और राजेन्द्र वर्मा। समाजवाद के अध्ययन के लिये पढ़ना आवश्यक है। मार्क्सवाद के दर्शनों में यह सबसे गहन है। एक दर्जन अध्यायों में विषय का प्रतिपादन हुआ है। मूल्य ६) छः रुपये।

यह श्री श्यामनारायण पाण्डेय की प्रसिद्ध रचना है। इसमें महाराणा प्रताप के हल्दीघाटी वाले संग्राम का वीरता पूर्ण वर्णन बढ़िया छन्दों में है। सजिल्द सचित्र पुस्तक का मूल्य २।।।) दो रुपये बारह आने।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, ३६ पन्नालाल रोड, इलाहाबाद

प्रधान संपादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल। कृष्ण प्रेस, प्रयाग में ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल द्वारा मुद्रित तथा 'देशदूत' कार्यालय प्रयाग, द्वारा प्रकाशित

देशदूत

DESHDOOT
HINDI WEEKLY
Annual Price Rs 7-8-0
Per Copy Annas Two.
वार्षिक मूल्य ७॥)
एक प्रति का ≈)

[र]विवार, १९ फरवरी, १९५०

हिन्दी भाषाभाषी

अनेक विषयों की बढ़िया पुस्तकें

हिन्दी भाषा का संक्षिप्त इतिहास

यह राय बहादुर डाक्टर श्यामसुन्दर दास के इसी नाम के ग्रन्थ का सारांश है। विषय नाम से ही प्रकट है। अपनी भाषा का इतिहास संक्षेप में पढ़ने के लिए इसे लीजिए। अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य १) एक रुपया।

आदर्श भूमि अथवा चित्तौर

चित्तौर राजपूतों के त्याग के कारण तीर्थ बन गया है। भारत के गौरव स्वरूप उसी चित्तौर का ओजपूर्ण भाषा में लिखा गया इतिहास पढ़कर अपनी जानकारी बढ़ाइए। मूल्य २) दो रुपये।

पंडित जी

नामी उपन्यास लेखक शरद बाबू के इस उपन्यास में कुलीनता, उच्च शिक्षा, द्विज और द्विजेतर, गाँव की भलाई और अपनी उन्नति, नई शिक्षा और मिथ्या अभिमान आदि के सम्बन्ध में बहुत ही विशद विवेचना की गई है। मूल्य २) दो रुपये।

मैक्सिम गोर्की

रूस के इस विश्रुत कलाकार के परिचय के लिए इस पुस्तक को पढ़िए। है तो यह जीवन चरित, पर इसे पढ़ने में कहानी का आनन्द मिलेगा। इसकी जीवनचर्या का वर्णन पढ़कर पाठक जान सकेंगे कि इस कलाकार को किन विकट कठिनाइयों में होकर गुजरना पड़ा था। छोटे टाइपों में छपी लगभग ढाई सौ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य ३) तीन रुपये।

इंडियन प्रेस

युद्ध और शान्ति

यह संसार के श्रेष्ठ उपन्यास लेखक और विचारक काउण्ट लियो टाल्स्टाय के प्रसिद्ध रूसी उपन्यास 'वार एण्ड पीस' का हिन्दी रूपान्तर है। यह ऐतिहासिक उपन्यास तब लिखा गया था जब लेखक की शैली परिमार्जित हो गई थी और उन्हें अन्तर्द्वन्द्व से छुटकारा मिल कर शान्ति मिल गई थी। लेखक ने उसमें मानव-जीवन का सम्पूर्ण चित्र, अपने समय के रूस की तस्वीर और राष्ट्रों की खींचतान बड़ी खूबी से चित्रित की है—जीवन और मृत्यु के रहस्य का भी उद्घाटन किया है। लगभग पौने सात सौ पृष्ठों की सजिल्द प्रति का मूल्य ५।-) पाँच रुपये पाँच आने।

कुलबोरन

श्री चन्द्रभूषण वैश्य ने इस उपन्यास को सत्य घटना के आधार पर लिखा है। समाज की अन्ध परम्पराओं से देश की जो हानि हो रही है उसका इसमें सजीव चित्र है। सुधार करनेवाले को रूढ़ियों के अन्ध भक्तों से जैसा लोहा लेना पड़ता है उसका नमूना उपन्यास का नायक, 'कुलबोरन' है। अच्छे कागज पर छपी सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥) दो रुपये आठ आने।

अल्पता की समस्या

'साम्प्रदायिक भेद पर विशेष अधिकार माँगना और ऊलजलूल दावे पेश करना तथा उन माँगों के पूरा न होने पर देशद्रोह के लिए कमर कस लेना किसी देश-भक्त का काम नहीं।' इसी पर दृष्टि रख कर पंडित वेंकटेश नरायण तिवारी एम० ए० ने तथ्यों और आँकड़ों के साथ पुस्तक में उलझन को समझाया है। पाकिस्तान बन जाने पर भी जिनके मन में ऊपर लिखी भावना है उनके समाधान के लिए इसमें सप्रमाण उत्तर है। मूल्य २) दो रुपये।

ईरान

महा पंडित राहुल सांकृत्यायन ने इस पुस्तक में अपनी ईरान-यात्रा का विशद वर्णन किया है। इसके पढ़ने से ईरान की बहुत-सी जानकारी पाठकों को हो जायगी। भ्रमण-वर्णन कहानी का सा आनन्द देगा। मूल्य १॥=) एक रुपया ग्यारह आने।

मध्य प्रदेश और बरार का इतिहास

इस अत्यन्त प्रामाणिक इतिहास में उक्त प्रदेश से सम्बन्ध रखनेवाली सभी प्राचीन और अर्वाचीन महत्त्वपूर्ण बातें आ गई हैं। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

सुन्दरी-सुबोध

इस पुस्तक में पति-पत्नी को सन्तुष्ट रखने के उपाय इस ढंग से बताये गये हैं कि कहानी का आनन्द देते हैं। इसके सिवा सास-पतोहू, देवरानी-जेठानी, ननद-भौजाई, माता-पुत्र आदि स्त्री के दूसरे सम्बन्धों को भी ठीक २ रखने के उपाय बताये गये हैं। पुरुषों के लिए भी बहुमूल्य अनुभूत बातें दी गई हैं। इनको उपयोग में लाने से गृहस्थी सुखमय हो सकती है। ३०० पृष्ठों से अधिक की सजिल्द प्रति का मूल्य २॥) दो रुपये आठ आने।

आदर्श महिला

इस पुस्तक में सीता, सावित्री, दमयन्ती, शैव्या और चिन्ता आदि पाँच प्रसिद्ध देवियों की जीवन-घटनाओं का सजीव सचित्र वर्णन दिया गया है। इसको पढ़ने में कहानी का आनन्द मिलेगा और शिक्षा सहज ही। मूल्य २॥=) दो रुपये ग्यारह आने।

कथा सरित्सागर

इस पुस्तक में आदि से [...] तक एक से एक बढ़िया कहानि[याँ] [...] जैसा इसका नाम है, यह [...] का समुद्र है। प्रत्येक कथा के [...] एक न एक दृष्टान्त है। [...] सजिल्द प्रति का २॥=) मू[ल्य] [...] रुपये ग्यारह आने।

देव दर्शन

इसमें व्रजभाषा के प्रख्या[त] [...] देव की जीवनी और उनके [...] काव्यों का आलोचनात्मक [...] दिया गया है। व्रज काव्य के [...] अतिरिक्त साहित्य के विद्यार्थि[यों के] लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त [...] है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य [...] एक रुपया पाँच आने।

बन्दना

यह श्रीमती चन्द्रमुखी ओझा [...] के ५२ मधुर गीतों का सं[ग्रह] [...] आरम्भ में श्री सूर्यकान्त [...] 'निराला' की लिखी प्रस्[तावना] [...] अच्छे कागज पर छपी [...] पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

तुलसी के चार दल

(प्रथम और द्वितीय [...] गोस्वामी तुलसीदास जी के [...] नहछू, बरवै रामायण, पार्वती [मंगल] और जानकी मंगल का [...] नात्मक परिचय तथा इन चा[रों] [...] की अध्ययनपूर्ण टीका। इसे [...] की कुंजी समझिए। मूल्य प्र[थम भाग] का ३) रुपये, द्वितीय भाग [...] दो रुपये ग्यारह आने।

ग्रह-नक्षत्र

इस पुस्तक में ग्रहों और [...] आदि से सम्बन्ध रखने वा[ली] सभी आवश्यक बातों का [...] वर्णन सरल भाषा में है। [...] तीन रुपये।

हार या जीत

इस उपन्यास में ले[खक] [...] व्रजेश्वर वर्मा एम० ए०, [...] ने एक देहाती लुहार की [...] बेटी को घटनाक्रम से, [...] में, देहात से महराजगंज [...] पृथाकुंवरि के आश्रय में [...] है। वहाँ रानी की कृ[पा] [...] लड़की ने विद्या पढ़ी। फिर [...] गुणों का विकास हुआ [...] सभ्य होकर सम्मान पाता [...] असहयोग आन्दोलन में [...] लिया और अन्त में कल[...] नौकरी कर ली। कई पुस्त[...] विदेश-यात्रा के बाद रानी [...] की प्रार्थना पर उससे विवा[ह] [...] उपन्यास की घटनावली, [...] संघर्ष और चन्दा की [...] दृढ़ता सराहने योग्य है। [...] दो रुपये।

देशदूत

वर्ष १२, संख्या २४] रविवार, १६ जनवरी, १६५०

राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद अध्ययन के समय

टेढ़ी, सीधी, खरी-मजेदार

अमरीका के वैदेशिक मंत्री श्री अचिसन कहते हैं कि रूस तथा साम्यवादी चीन की संधि में कोई नवीनता नहीं है। इस संधि से साम्यवादी चीन की हानि ही होगी। अपने राम की समझ में अचिसन साहब फरमाते बजा हैं। जनरल च्यांग काई शेक सरकार की अमरीका ने ऐसी सहायता की वह कहीं का नहीं रहा और यदि कहीं माओ से तुंग की सरकार अमरीका से संधि कर लेती उसके लिए भी तुरंत भगौडा घर का दरवाजा खुल जाता। लेकिन अपने पड़ोसी रूस से जब उसने संधि की है तो जरूर कुछ न कुछ नया गुल खिलेगा। न सौ घराती न एक पड़ोसी। श्री अचिसन साहब कहें जो चाहे लेकिन मन में तो वह सोचते ही होंगे कि चीन की साम्मवादी सरकार रूस से संधि न करती तो क्या हजार कोस पर बसने वाले अमरीका से।

*   *   *   *

काश्मीर के निर्णय के संबंध में भारत पर अमरीकन गुट का दबाव पड़ रहा है कि वह मैकमनाटन-प्रस्ताव को स्वीकार कर ले! मैकनाटन साहब ने काश्मीर के संबन्ध में जो निर्णय दिया है, उस पर पाकिस्तानी पर्दा पड़ा हुआ है। लेकिन यहां न लगी है राउरमाया। भारत स्वयं सचेत है। शेख अब्दुल्ला खुद ही सारे काश्मीर को अपने सर पर उठाये फिर रहे हैं, इसमें क्या भारत करेगा और क्या दूसरा? शेरे काश्मीर के आगे मैकनाटन एण्ड कंपनी की बोलती बंद है।

❀   ❀   ❀

पाकिस्तान-सरकार काश्मीर के संबंध में अपनी नीति चालू कर रही है। पाकिस्तान के वैदोशिक मंत्री जफरूला साहब सुरक्षा परिषद में अपनी खिचड़ी पका रहे हैं और मिया लियाकत अली खां भारत में अपनी खंजड़ी बजा रहे हैं लेकिन जफरूल्ला लियाकत के सामने शेख अब्दुला की तोप के आगे पाकिस्तान कितने दिन ठहर सकता है। काश्मीर जनता पाकिस्तान के साथ है या काश्मीर सरकार के साथ इसका फैसला तो तब होगा जब जनमत संग्राह किया जायेगा। आजाद काश्मीर, कितने दिन हुल्लड़बाजी करती रहेगी?

❀   ❀   ❀

सोवियट रूस में राजदूत सर राधा कृष्णन् ने एक भाषण में कहा है कि अमरीका और ब्रिटेन रूस के साथ समझौता के लिए एक और प्रयत्न कर सकते हैं बशर्तें कि रूस अपने रवैया में कुछ परिवर्तन करने को तैयार हो जाये। अपने राम की समझ में। सोवियट रूस की चाल गोजर की भांति हैं। वह वही चाल चलता रहेगा जैसी चाल वह चलता आया है। भले ही अमरीका और ब्रिटेन उसकी दो एक टांगे तोड़ देने में समर्थ हो जायें। जिस के सैकड़ों टांगे हैं, दो एक टूट जाने में उसकी चाल में कोई अन्तर न आयेगा। चाहे अमरीका तथा ब्रिटेन समझौता करें या न करें। यह तो राजनीति है। राजनीतिक दांवपेंच का रवैया ऐसा ही होता है।

*   ❀   ❀

कहा जाता है कि भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी हो गई है। हाँ कानून की दृष्टि से अवश्य हो गई है इसमें संदेह की गुंजाइश नहीं है लेकिन ढाक में तीन पात की कहावत इस समय चरितार्थ हो रही है। अंग्रेजी अपनी चाल से बाज नहीं आ रही है। अभी तो केवल साइनबोर्डों को हिन्दी में करने का प्रथम कार्य सरकार की ओर से हो रहा है जिसमें बिना चश्मे के भी सरकारी अधिकारी पढ़ लिया करें। बोर्डों की लिखाई समाप्त हो जाये तब देखिये, किधर सरकार का कदम बढ़ता है। भगवान ह मालिक है हिन्दी की प्रगति में राष्ट्रभाषा प्रति यह लीला कब तक चलेगी? पंद्रह वर्ष तक अंग्रेजी बनाये रखने का यही फल होना चाहिए।

❀   ❀   ❀

नये देवता

लेखक, श्री श्रीपाल सिंह 'क्षेम' एम० ए०

जागो नये सृजन के युग के नये देवता जागो।

मिटी अमा की रात भ्रमों का मिटता सघन अँधेरा।
उड़ा न पल संस्कृति का पंछी, तज कर तिमिर-बसेरा !!
टूट रहे पलकों से उलझे मोहों के शत सपने-
अरुण-किरण-ध्वज लिए क्षितिज पर उतरा नया सवेरा !!

जागो, नये सृजन के युग के नये देवता जागो।

मुसका उठो प्रकृति-पुलकन सी उमड़ रही कन-कन में !
पलक खोलती नये सृजन की ज्योति प्रमन जन-जन में !!
ऋषि-पुत्रों में नव मंत्रों की गूँज रही नव-वाणी,
किरण-कुंतला मुक्ति उतरती भारत के आँगन में !!

जागो नये सृजन के युग के नये देवता जागो !!

नव जीवन का यजन-जहाँ निःशोषण का नव-पट है
नव अद्वैत- वेंदि पर समता का नव मंगल-घट है।
निकल पड़ा स्वातंन्त्र जलधि में अब जनता का बेड़ा-
बढ़ी चले पतवार अधिक अब पूरन अपना तट हैं।

जागो नये सृजन के युग के नये देवता जागो।

नये भाव ले, नयी कला ले, लेकर नई कहानी,
जीवन के रुक गये छन्द में लेकर नई रवानी,
दिग्-दिगन्त में राम-राज्य के फैलाने सन्देशे,
चली बोल जय नव-उमंग में उठती नई जवानी।

जागो नये सृजन युग के नये देवता जागो।

सम्पादक का पृष्ठ

रूस-चीन की संधि

सोविवट रूस और साम्यवादी चीन की सन्धि हो गई, गत सप्ताह की अन्त र्राष्ट्रीय राजनीति की महत्वपूर्ण घटना है दोनों राष्ट्रों के बीच यह सन्धि ३० वर्षों के लिये हुई है। यदि अन्य राष्ट्र इन दोनों पर आक्रमण करेगा तो प्रत्येक एक दूसरे की सैनिक सहायता करेगा। एशिया की यह सन्धि भविष्य में क्या रूप ग्रहण करेगी इस पर भविष्य वाणी अभी से न करना ही अच्छा है किन्तु कम्यू-निस्ट चीन को यदि अपने पड़ोसी शक्ति कम्यूनिस्ट शासक से सांधि कि है तो यह कोई नई बात नहीं है। ऐसा तो होना ही चाहिए था। अमरीका तथा ब्रिटेनके हितों के लिए यह सन्धि उपयुक्त नहीं है, निर्विवाद है। अमरीका और ब्रिटेन ने पूर्वी एशिया पर अब तक अपना प्रभुत्व स्थापित कर रखा था, उसकी समाप्ति का यह श्री गणेश है। पूँजी पति राष्ट्रों ने अब तक अपने धन तथा पैसे की शक्ति से पूर्वी एशिया में अशांति स्थापित कर रखी थी, इस संधि से उसकी इतिश्री हो गई है अमरीकन भले ही इस संधि को अनुपयुक्त तथा साम्यवादी चीन के लिये अहितकर सिद्ध करें किन्तु साम्यवादी चीन के लिये यह संधि लाभप्रद सिद्ध अवश्य होगी। रहा एशिया में साम्यवादी भावनाओं तथा विचार के प्रचार की समस्या, इस पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया जा सकता। यदि साम्यवाद की वृद्धि होती है तो साम्यवादी चीन तथा रूस उसमें सहायक अवश्य सिद्ध होंगे केवल कहने से यह कार्य रुक नहीं सकता अमरीका और ब्रिटेन भी साम्यवादी लहर को रोकने में अब असमर्थ प्रमाणित होंगे।

रहा भारत वह अपनी मर्यादाकी रक्षा करेगा। भारत के पड़ोसी राष्ट्र भी साम्यवाद से अपनी सुरक्षा करेंगे साम्य-वाद सिद्धान्त रूप वर्जनीय नही हैं किन्तु जिस प्रकार की तोड़-फोड़ वाली नीति के अनुसार साम्यवादी आज अशांति व्यापक विष बो रहे हैं, उसका फल एशिया मात्र के लिए हानिकारक है। अगर रूस तथा साम्यवादी चीन के गठबंधन का फल यह होगा कि एशिया में शक्ति तथा अस्त्र-शास्त्र से केवल साम्राज्य स्थापित किया जाय तो भारत उसका मुकाबला करेगा। जनतंत्र भारत किसी भी रूप में अशांति तथा अन्य साम्राज की स्थापना का विरोध करेगा। साम्यवादी चीन की भविष्य में क्या नीति होगी यह तो, भविष्य ही बतायेगा

संयुक्तप्रांत के शिक्षा मंत्री माननीय श्री सम्पूर्णानन्द जी कहते हैं कि शिक्षा प्रसार की सब से बड़ी बाधा है अर्था-भाव। बात तो सही है क्योंकि पूँजी पतियों को शिक्षा-प्रसार से क्या वास्ता? उन्हें तो तीतर-बटेर लड़ाने से ही आज कल फुरसत नहीं है। वह कांग्रेसी, साम्य वादी, समाजवादी, हिन्दूमहासभाई, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघी आदि को पैसा देकर प्रतिदिन का तमाशा देखें या शिक्षा-प्रसार में पैसा देकर मूर्खों को साक्षर बनायें। आजकल का सारा दल-दल और राजनीति पैसे के बल से उछल कूद रही है। कही हवा में भी राज-नीति पनपी है?

* * *

श्री जयप्रकाश नारायण कहते हैं कि कांग्रेस कहती कुछ है और करती कुछ। अपने राम की समझ में समय को देखते हुए यह कार्य अवांछनीय नहीं है। बुद्धिमान शासक के यही लक्षण हैं। हाँ—हाँ में सारी दुनिया मुग्ध हो जाती है, कहने में केवल जबान ही तो घिसती है, अपने पास से जाता क्या है? करना-कराना तो अपने हाथ की बात है अंग्रेज़ सदा से यही पेशा करते आये हैं और उनकी विरासत संभाली है कांग्रेस ने। इसलिये कुछ न कुछ तो असर पड़ना ही चाहिए। यदि कल श्री जय-प्रकाश नारायण के गुट का शासन हो जाये तो उसका भी रवैया वैसा ही होगा जैसा आज हो रहा है। उपदेश और आदर्श तो सभी बघार सकते हैं लेकिन उँट की अपनी उँचाई का ज्ञान तब होता है जब वह पहाड़ के नीचे आता है। सच तो यही है।

* * *

ब्रिटेन के नये चुनाव की चहल पहल शुरू हो गई है। सब के सब अपनी जोड़ तोड़ में लगे हैं। मजदूरदल लिबरलदल तथा अनुदारदल अपने अपने भाग्य को चुनाव के हवाले कर रहे हैं। बेचारे मिस्टर चर्चिल इस बुढ़ाई में परेशान हैं। लीडरी के मोह में वह व्याकुल हो रहे है। कभी वह अपने पुराने निर्वाचन-क्षेत्र की ओर देखते हैं और कहीं दौड़कर स्टालिन से मिल जाना चाहते हैं। यद्यपि चर्चिल साहब समाजवाद के घोर शत्रु हैं लेकिन चुनाव किसको कहां ले जाकर पटकेगा इसे कौन जान सकता है? मिस्टर चर्चिल पुरानी गोराशाही के युग का सपना देख रहे हैं लेकिन वह दिन गया जब रूपये में तीन अठन्नी भुनाई जाती थी। अब तीन अठन्नी वालों का युग चला गया। अब न सत-युग है न त्रेता, न द्वापर और न कलि-युग, यह है लेबरयुग है लेबर!

देशदूत के एजेन्ट और ग्राहक बनिये

भारत के लिये नया हवाई जहाज
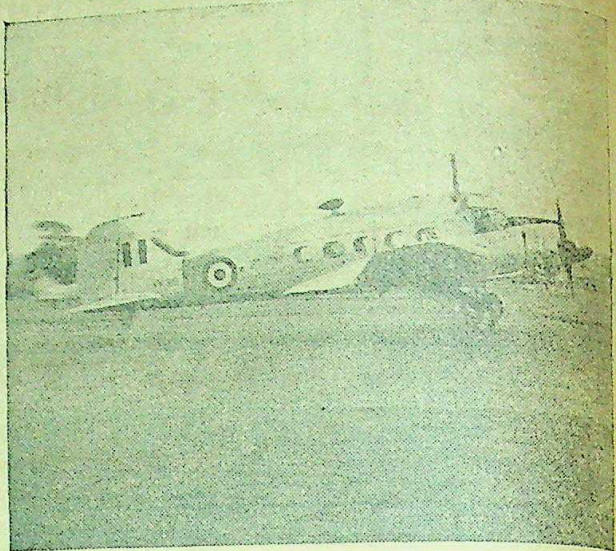
भारत अपनी सैनिक शक्ति को प्रबल बना रहा है विदेशों हवाई जहाजों के दल भारत आ रहे हैं। यह हवाई जहाज भी इंगलैंड से भारत आ रहा है भारत सरकार ने इस हवाई जहाज को मंगाने में विशेष उत्सुकता दिखाई है।

देशदूत

आज की नई योजनायें किधर ?

अपने को परिस्थिति के अनुरूप बनाना चाहिए

लेखक, प्रोफेसर जे० सी० कुमारप्पा

आज हम किधर जा रहे हैं। भारत में जनतत्र स्थापित हो गया किन्तु जनता की परेशानी अभी दूर होती हुई नहीं दिखाई देती। सरकार की ओर से अनेक योजनायें बन चुकी हैं किन्तु उनका कियात्मक रूप नहीं दिखाई देता। इस लेख में प्रसिद्ध गाँधीवादी विद्वान ने राष्ट्र की वर्तमान स्थिति का चित्र खींचा है, जो पठनीय तथा विचारणीय है।

प्रधानमंत्री पंडित नेहरू ने कई योजनायें बनाई हैं।

खुद को परिस्थिति के अनुकूल बना लेना, यह मनुष्य की विशेषता है। निम्न कोटि के जीव प्राकृतिक परिस्थिति में रह जाते हैं, पर मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है, जो कुछ हद तक अपनी परिस्थिति पर काबू रख सकता है। हम जिस हद तक यह कर सकेंगे, उतने प्रमाण में हम जंगली प्राणियों से श्रेष्ठ समझे जावेंगे। हम में से बहुत से लोग ऐसे हैं, जो खुद कोई खोज-बीन नहीं कर सकते, या और भी किसी तरह हाथ-पैर नहीं हिलाना चाहते। वे दूसरों ने परिस्थिति पर कैसे काबू पाया, यह देखकर उसकी नकल कर के ही सन्तोष कर लेते है।

स्वराज्य आने के बाद हिन्दुस्तान में हर प्रकार के लोग परिस्थिति पर इस प्रकार अंकुश प्राप्त करना चाहते है, जिससे लोग समझें कि हम प्रगति कर रहे हैं। अमरीका के संयुक्त राष्ट्र के लोगों के समान वे भी उन्हीं के साधनों का अवलम्बन करके बहुत जल्द धनवान बनना चाहते हैं। पर ऐसा करते समय वे यह भूल जाते हैं, कि अमरीका और हिन्दुस्तान की परिस्थितियों में भिन्नता है। अमरीकन लोगों ने यदि जीवन का एक पैमाना निश्चित कर लिया है और उसे बनाने के लिये अगर प्रकृति पर काबू पाया है, तो वही पैमाना और साधन हमारे लिये भी उपयुक्त होंगे, यह समझना भूल है। कई लोग अमरीका से सभी प्रकार की चीजें आयात करने के पक्षपाती हैं। यह प्रवृत्ति हमारे देश को तहस-नहस कर देगी। खास कर अधिक अन्न उपजाने के लिये अमरीकन ट्रैक्टरों द्वारा जो कोशिशें की जा रही हैं, वे बहुत ही हानिकारक हैं।

अमरीका की जमीन और उस का बन्दोबस्त जिन जिनपरिस्थितयों हुआ है वे परिस्थितियाँ हमारे यहां की परिस्थितियों से एकदम भिन्न हैं। अमरीका के संयुक्त राष्ट्रों में दुनिया के ६% आदमी हैं और वहां दुनिया की कृषि जमीन का ½ हिस्सा जमीन है। इसका यह अर्थ होता है, कि अमरीका अपनी खेती की पद्धति में बहुतांश में बरबादी सहन कर सकता है। अधिक अन्न पैदा करने की लालच में जमीन अनुपजाऊ बन जावेगी यह सोचते ही नहीं, क्योंकि ज्यों ही वे देखते हैं, कि जमीन कम उपज देती है, तो वे तुरन्त उसे छोड़ कर दूसरी जमीन पर चले जाते हैं। इसलिये अभी उन्हें नये नये प्रयोग करते रहने की सहूलियत है। इसलिये जमीन की खराबी का विचार करने की जरूरत उन्हें नहीं पड़ती जमीन यह भीएक केन्द्रिय चीज हैयह वे भुला दे सकते हैं, इहलिये खेती के लिये वे यन्त्रों का उपयोग कर सकते हैं और उनके द्वारा प्रति मनुष्य उत्पादन प्रमाण बहुत ऊँचा दिखा सकते हैं।

इसके विपरीत हिन्दुस्तान में जमीन बहुत मर्यादित है और दुनिया की ⅕ लोक संख्या को खुराक प्राप्त करना पड़ती है। इसलिये हम ऐसे साधन खेती में प्रयोग नहीं कर सकते, जिनमें नुकसान होने की सम्भावना हो। जमीन कितने दिनों में अपनी खोयी हुई उत्पादन शक्ति प्राप्त करेगी, यह हमारे लिए बहुत महत्व रखता है। जब हम किसी जमीन किसी चीज की खेती करते हैं, तब हम उस जमीन में से कुछ तत्व खींच लेते हैं जिन से हमें शक्ति मिलती है। इतनी अवधि के बाद जमीन ये खोये हुए तत्व फिर से प्राप्त कर लेती है। यह चक्र जारी रखने के लिए हमें जमीन को उतना समय देना ही चाहिये और उसमें की जानेवाली काश्त भी इस प्रकार बारी बारी से करनी चाहिये कि जमीन का उपजाऊपन कायम रहे। यह एक पूरा पूरा शाला है। और उसी पर हम अमुक जमीन में से कितनी उपज निकाल सकते हैं, यह अवलम्बित है। इसलिये यदि हम जमीन को ऐसी हालत में कर दें, कि कुछ दिनों तक उसे यों ही छोड़ देना पड़े, तब कहीं जा कर वह फसल देने लायक हो जायगी, या फिर एकदम ऊसर बन जायगी। इसलिये हमें चाहिये, कि हम हमारी संचित शक्तिको खूब सोच समझ कर इस्तेमाल करें।

कुछ प्रमाण तक अमरीका कीहालत मालदार बाप के उस लड़के जैसी है, जो अपने चालू खर्च के लिये अपनी आमदनी के अलावा कुछ पूँजी का भाग भी खर्च करता है; और हिन्दुस्तान की हालत अपनी कमाई द्वारा अपना खर्च चलाने वाले के समान है, इस कारण उमे अपना खर्च अपनी कमाई के अन्दर रखना जरूरी है। इसलिये यहाँ का उत्पादन जमीन की शक्ति ख्याल में रख कर ही निश्चित करना पड़ेगा। अमरीका में जब जमीन कम फसलें देने लगती है, तो उसमें कृषि करना छोड़ देते हैं और उसमें घांस फूस और जंगली पौधे उगने दिये जाते हैं और दूसरी ताजी जमीन पर काश्त कों छोड़ दी जाती है उसमें बरसात से काफी कटाव होने का डर रहता है। हर बार नयी जमीन जोतने की आदतों के कारण अमरीकों को ट्रैक्टरों का उपयोगकरना पड़ता है। पर उनके ट्रैक्टरों के लिये आवश्यक इन्धन बाहर से आता है। यदि हम ट्रैक्टरों की सहायता से खेती करने लग जायँ और बाहर से धन आना बंद हो जाय, तो हमारी हालत तो "दोऊ दिन से गयेपाण्डे" जैसी हो जाय, क्योंकि फिर से बैल मिलना, यकायक सम्भव नहीं, और हम तेजी से मरने लग जायेंगे।

हमारे इलाज हमारे देश की परिस्थिति के अनुकूल नहीं हैं। हमारी खेती प्रधान रूप से बरसात पर अवलम्बित रहती है। उसके ऊपर अवलाम्बित रहना न पड़े इसलिए सरकार ने कुछ भागों में सिंचाई के लिये यान्त्रिक शक्ति का उपयोग करना शुरू कर दिया है। जहाँ बिजली सस्ती मिलती है, वहाँ सिंचाई के लिये बिजली पम्प इस्तेमाल किये जाते है। इसका परिणाम यह होता है, कि नैसर्गिक वर्षा का पानी सब बेकार समुद्र में बह जाता है, केवल उसका ६% काम आता है, और सो भी केवल मालदारों के। जिन में बिजली के पम्प बिठाने की शक्ति प्राप्त है, वे ही जमीन में समाया हुआ पानी अपने खेतों के लिये इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके कारण गरीबों को मिल सकने वाला पानी भी दुश्वार हो जाता है, क्योंकि बिजली के पम्प चलने से जमीन के अन्दर के पानी का परिणाम बहुत तेजी से घट जाता है, और पानी की लेवल घट जाती है, जिससे गरीबों के कुएँ और तालाब जाते हैं। इतना ही नहीं, बल्कि जमीन के पानी की सतह घट जाने से बड़े बड़े झाड़ों की जड़ें उस तक नहीं पहुँच पाती, और फलतः झाड़ सूख जाते हैं। झाड़ सूख जाने पर वे का डाले जाते हैं. और फिर जमीन का कटाव तेजी से शुरू होता है।

गङ्गा कछार और नदियों के मुख के आस पास के भदेशों में इस प्रकार बिजली के पम्प का उपयोग करने से शायद जमीन पर कुछ बुरा असर न पड़े, क्योंकि वहाँ पानी बहुयात से रहता है। पर देश के अन्य सब भागों में, जहां जमीन के अन्दर का पानी का प्रमाण वैसे ही काम रहता है, इन पर पम्पों का बूरा असर पड़े बिना नहीं रह सकता। इसलिये हमारे देश की परिस्थिति मे जमीन के अन्दर के पानी का तेज गति उपयोग कर लेने के बजाय बरसात का अधिकांश में समुद्र में बेकार बहने वाला पानो इस्तेमाल करना, अधिक बुद्धिमानी का होगा दूमरे शब्दों में कहें, तो हिन्दुस्तान में बिजली के पम्पों के बजाय छोटी बड़ी नदियों में बांध बांध कर बरसात का पानी इकट्ठा कर रखने की अधिक जरूरत है। यह एक ऐसा उदाहरण है, जिससे स्पष्ट होता है, कि यांत्रिक शक्ति के उपयोग की डींग मारने वालों को साबित किया किया जा सकता है, कि किस प्रकार यान्त्रिक शक्ति का उपयोग हमें बरबाद कर देगा।

हमें अगर अमरीका से सचमुच कुछ सीखना ही है, तो वह है उनकी सरकार का लोगों की खेती से निकट सहयोग। वहां सरकारी वैज्ञानिक बड़ी दिलचस्पी से इसके प्रयोग करेंगे कि अधिक फल, साग, अनाज, जानवर, मुर्गियां कैसे पैदा की जांय और इसकी जानकारी लोगों के देते रहेंगे, पर यहां की सरकार दो-चार शीघ्र फलदायी प्रयोग करके संतुष्ट रहती है, दूर दृष्टि धारण कर यहां के जानवरों की नस्ल कैसे सुधारी जाय, इसके बारे में कोई कोशिश नहीं करती।

अमरीका की सरकार खुद जमीन की विभिन्न किस्मों की कृषि कैसे की जाय यह किसानों को सप्रयोग बताती है, और उनके लिये आवश्यक जगहों पर तालाब भी बना देती है, पर हमारी सरकार हमारे किसानों के ताकत के बाहर की बात सोचती है और सो भी अब तक केवल कागज पर रखी है। अमरीकन वैज्ञानिक रोग निवारण की परवाह रोगों की रोक-थाम कैसे की जाय, इस पर अधिक जोर देते हैं, कब कौन से रोग पैधों को होना सम्भव है, इसकी किसानों को वे पूर्व सूचना देते है और उन की रोकथ-ाम के इलाज भी बतला देते हैं। इधर हम फसल नष्ट होते तक देखते ही रहते हैं। और अंत में जो इलाज सुझाते हैं वह फसल की कीमत भारी रहता है।

(शेष पृष्ठ १४ पर)

जमींदारी उन्मूलन किधर ?

जनता के कल्याण का केवल यही मार्ग है

लेखक, श्री चरण सिंह एम० एल० ए०

भारत किसानों की भूमि हैं किन्तु उनका शोषण सदियों से विदेशी शासकों द्वारा हो रहा है। देश को स्वाधीनता प्राप्त होने पर इस ओर ध्यान दिया जा रहा है। कांग्रेस सरकार जमीन्दारी उन्मूलन की योजना कार्यान्वित कर चुकी है, इसका अंतिम परिणाम किसानो की पूर्णस्वाधीनता है। इस लेख में जमीन्दारी उन्मूलन की उपयोगिता बतलाई गई है, जो सामयिक तथा जानकारी से पूर्ण है।

उत्तर प्रदेश के जमींदारी विनाश एवं भूमि व्यवस्था का आलेख आज कल राज्य की विधान सभा में प्रस्तुत है और उसकी एक एक धारा परविचार हो रहा है। कुछ महीनों में यह आलेख विधान का रूप ले लेगा। स्वाराज्य प्राप्ति के उपरान्त जनता के कल्याण का मधान जितना यह विधान होगा उतना भारत गण राज्य या उत्तर प्रदेश राज्य के शासन का कोई दूसरा कार्य नहीं हो सकता। यह एक ऐसी विधि है जिससे हमारे समाज में आमूल और समूल परिवर्तन हो जायेगा। वैयक्तिक व सामाजिक जिवन के पुराने पैमाने एक दम समाप्त हो जायेंगे और भविष्य में न्याय व अन्याय, भलाई व बुराई, औचित्य व अनौचित्य और छोटाई बड़ाई के नये माप दण्ड व आदर्श उनका स्थान ले लेंगे। व्यक्ति व समाज के परस्पर कर्तव्य व के अधिकारों का एक सर्वथा नया चित्र हमारे सामने आयेगा, जिसकी हम पूर्ण रूपेण अभी कल्पना भी नहीं कर सकते साथ ही यह क्रान्ति अहिंसात्मक व रक्त हीन होगी इतनी शान्ति पूर्ण नीरव कि कभी कभी आशंका होने लगती है कि कहीं इसका महत्व व प्रभाव हमारे मस्तिष्कों से ओझल न हो जाय।

भूमि परमात्मा या प्रकृति ने सृजन की है, न कि मनुष्य ने। अतएव भूमि उसी के अधिकार में रहनी चाहिये जो उसमें कृषि करता हो, जो अपने परिश्रम द्वारा अपने परिवार व समाज के लिए अन्न व अन्य आवश्यक वस्तुएं उपजाता हो और किसी ऐसे व्यक्ति का भूमि से कोई सम्बन्ध नहीं रहना चाहिये जो उसमें स्वयं खेती या किसी प्रकार का परिश्रम नहीं करता। फलार्थ, इस नियम के अधीन उत्तर प्रदेश की उपर्युक्त विधि के अनुसार हर किसान का स्वत्व अपने उन सब खेतों पर सदैव के लिये स्थिर किया जा रहा है जिनमें आज वह स्वयं खेती करता है, चाहे उसकी वर्तमान हैसियत कुछ ही क्यों न न हो अर्थात् चाहे वह अपनी भूमि या खेतों का पूरा मालिक हो या जमींदार अदना मालिक हो या पुख्तेदार, मुआफीदार हो या साकितउल मिलकियत काश्तकार, दखिलकार हो या मौरूसीदार, और शिकमी काश्तकार हो या ३० जून १९४९ को किसी जमींदार की भूमि में बिला तसफिया लगन, काबिज या गासिब दर्ज हो। मुरतहिन के पास उतनी सब भूमि रहेगी जोराहिन कीसीर या खुदकाश्त में न रही हो और ठेकेदार के पास इस प्रकार की उतनी भूमि रहेगी जो क्षेत्रफल में ३० एकड़ से अधिक न हो।

आज हमारा यह प्यारा भारत देश सैकड़ों वर्षों की पराधीनता के बाद स्वतंत्र हुआ। विदेशी शासन के विदा होते ही जनराज्य स्थापित हुआ और हर वयस्क को मताधिकारी मिल गया। परन्तु केवल इतना ही पर्याप्त नहीं है। पूर्ण रूप से अर्थात् सच्चे अर्थों में मनुष्य तभी सुखी होता है जब वह अपने व्यवसाय में किसी दूसरे के अधीन न हो, अपनी रोटी कमाने के कार्य में जब उसको किसी दूसरे के मुंह या हाथ की ओर न ताकना पड़े। आज किसान जब तक कि जमींदारी कहलाने वाला व्यक्ति उसको किन्हीं दशाओं में, चाहे वह दशायें कितनी ही कम व सीमित क्यों न हों, उसके मकान य खेतों से बेदखल करा सकता है, स्वाधीन नहीं कहा जा सकता। उत्तर प्रदेश में अब कुछ महीने के अनन्तर किसान की भूमि से किसी भी अन्य व्यक्ति का किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं रह जायगा। उसका सीधा सम्बन्ध राज्य शासन से जुड़ जायेगा और उसके व शासन के बीच में जो लोग हैं जितने मध्यवर्ती या बिचौलिया हैं, वह सब निकल जायेंगे। किसान खेती करने के काम में पूर्ण स्वतंत्र होगा और किसी के अधीन न रह जायेगा।

वह समाज न्याय पर आश्रित नहीं है जिसमें कोई मनुष्य निठल्ला व निकम्मा बैठे रहकर दूसरे की कमाई खाता हो। जमींदार एक ऐसा ही व्यक्ति है जो जमीन में स्वयं परिश्रम नहीं करता वरंच परिश्रम करने वाले की कमाई का का शोषण करता है जमींदारी विनाश व भूमि व्यवस्था विधान के लागू होते ही किसान का शोषण करने वाला कोई नहीं रह जायेगा। और शोषक व शोषित का नाता पुनः दो मनुष्यों में स्थापित न हो जाय इसलिए भविष्य में कोई किसान जो खेती करने की सामर्थ्य अपने शरीर में रखता है लगान पर अपने खेत दूसरे को न उठा सकेगा। हाँ, किसान यदि स्त्री, नाबालिग, विद्यार्थी, पागल अधिक

जमींदारी उन्मूलन में किसानों की स्त्रियाँ भी दिलचस्पी रखती हैं।

रोगी, बहुत बूढ़ा, अपाहज, कैदी हो य सेना में भरती हो गया है तो अपनी भूमि लगान पर उठा सकता है। लगान पर उठाने का अर्थ यह है कि किसान अपनी भूमि पर कब्जा पूर्णतया किसी दूसरे को दे दे और बदले में नगद या जिन्स के रूप में कुछ ले। परन्तु खेत से यदि वह अपना सम्बन्ध रक्खे और अपने कार्य में किसी से सहायता ले या साझा कर ले तथा सहायता देनेवाले या साझीदार को किसी रूप में भी उसका बदला या प्रतिफल दे या मिले तो इस प्रकार का प्रबन्ध भूमि को लगान पर उठाना नहीं कहा जा सकता।

जितनी भूमि में जिसकी खेती होती है वह उसी किसान की होगी और हर व्यक्ति अपने पेड़, बाग, निजी कुँए व मकान का भी मालिक होगा। इसके अतिरिक्त कृषि के अयोग्य जितनी भी भूमि, रास्ते, तलाब, खलिहान बंजड पशुचार, श्मशान आदि गांव के अन्दर हैं उन सब की मालिक पंचायत होगी। पंचायत को पहिले ही न्याय व शासन सम्बन्धी बहुत अधिकार दिये जा चुके थे इस विधान द्वारा उनके अधिकार व कर्तव्य और भी बहुत बढ़ जायेंगे। मनु महराज के काल से हमारे पूर्वज अपने गांवों का प्रबन्ध स्वयं करते आये थे। अंग्रेजी शासन ने उस प्रबन्धयानी पंचा- को नष्ट कर दिया। अब वह फिर जीवित हो जायेंगी। गांवों का सामूहिक जीवन फिर फले फूलेगा और प्राचीन काल का परस्पर प्रेम व सहानुभूति का वायु मन्डल हमारे देहात में फिर जाग उठेगा, जिसकी गाथाएं हम सुनते आए हैं।

ज़मीदारी समाप्ति के अनन्तर जब किसान अपनी ज़मीन का मालिक हो जावेगा, तो अपने खेत में अधिक परिश्रम करेगा, कीमती खाद डालेगा, कुआं बनायेगा क्योंकि अब खेत उसका अपना हुआ जिससे वह निकाला नहीं जा सकता। इस प्रकार किसान की आय व देश में अन्न आदि की पैदावार बढ़ेगी।

आज जिसके पास जितनी भूमि है उतनी रहेगी, परन्तु आगे को कोई इतनी भूमि नहीं खरीद सकेगा जिससे उसके पास ३० एकड़ से अधिक हो जाय क्योंकि हमारे देश में जन संख्या को देखते हुए भूमि की कमी है। बड़े फार्मों के हो जाने से मशीनों का प्रयोग होने लगेगा जिससे बेकारी बढ़ेगी। बड़े खेतों पर वैसे भी प्रति एकड़ कम पैदावार होती है और खेतिहर सर्वहारा के रूप में मनुष्य का शोषण भी होता है।

एक बात और है। हमारी सरकार व नेताओं ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के परामर्श से निश्चय किया था कि ज़मीन्दार को जो उसके अब तक के स्वत्व थे उनका कुछ प्रतिकर दिया जाय। वह प्रतिकर जनता अर्थात् किसानों की अपनी जेब से ही आना है। जो लोग नगद प्रतिकर देना चाहते हैं, उनको कम देना पड़ेगा अर्थात् केवल दस साल के लगान के बराबर ही। जो नगद नहीं देना चाहते हैं उनको वर्तमान लगान के रूप में अधिक देना पड़ेगा। नगद देने वाला भूमिधर कहलायेगा, दूसरा सीरदार। भूमिधर अपने खेतों का पूरा मालिक होगा और उसका लगान सदैव के लिये आधा हो जायगा। सीरदार का लगान बढ़ भी सकता है। भूमिधर अपनी जमीन का चाहे जो इस्तेमाल कर सकता है, सीरदार केवल खेती कर सकता है। भूमिधर अपनी भूमि बेच सकता है, दान में दे सकता है, वसियत कर सकता है, व आड़ भी कर सकता है। सीरदार नहीं कर सकता। भूमिधर आड़ा समय पड़ने पर सरकार से अपने लगान या मालगुजारी से चालीस गुणा तकावी ले सकता है, सीरदार को केवल चार गुणा मिलेगा। भूमिधर बन जाने से और अनेक लाभ हैं जो पहले बतलाये जा चुके हैं। जो लोग २८ फर तक भूमिधर बन जायेंगे, उनको खरीफ के लगान में भी, जिसकी मियाद कई सप्ताह हुए निकल चुकी है, चौथाई की छूट मिल जायगी। इस सम्बन्ध में किसान को एक ही बात याद रखनी है। वह यह है कि प्रतिकर आना है उसके पास से ही। एक दशा में अर्थात् नगद व थोड़ा दे कर, वह भूमिधर बन जात्ता है।

बदला और मौत

लेखक, श्री अरुणेन्द्रनाथ उपाध्याय

आज कल के बाजारू प्रेम का अंतिम परिणाम मृत्यु के सिवा और कुछ नहीं दिखाई देता। विनोद को भी उसी परिणाम पर पहुँचना पड़ा क्योंकि उसने भी राह चलतू दृष्टि से प्रेम का आह्वान किया था। बाजारू प्रेम में बदला और मृत्यु का सामना करना अनिवार्य है। इस कहानी में भी ऐसी घटना का वर्णन किया गया है, जो पठनीय तथा रोचक है।

विनोद अपने मां बाप का इकलौता बेटा था। वह शंकर मुहल्ले में एक छोटी सी कुटिया में अपने बूढ़े माता-पिता के साथ रहता था। छोटा सा खेत और दो भैल थे, जिससे तीनों प्राणियों का निर्वाह बड़ी मुश्किल से होता था।

ग्राम में एक छोटी सा स्कूल था। जहां प्रायमरी और चार कक्षा तक अंग्रेजी पढ़ाई जाती थी। गाँव के बच्चों को भला इतनी कहाँ फ़ुर्सत, जो स्कूल में जाकर पढ़ें? लेकिन विनोद उन बच्चों में से नहीं था। वह स्कूल की पढ़ाई खत्म कर चुका था। गरीबी के कारण वह आगे की पढ़ाई न कर सका। उसकी स्मरण शक्ति तेज़ थी। इकहरे बदन का गोरा सुन्दर लड़का था।

एक दिन अपने माँ बाप की आज्ञा लेकर वह कुछ धन कमाने की इच्छा से मोतीनगर आया। पहले-पहल उसने नारियल बेचने शुरू किए, फिर मिठाइयाँ और बांसुरियाँ, जैसे जैसे उसे लाभ होता गया, वैसा वैसा उसका व्यापार भी बढ़ता गया। कुछ दिनबादवह उसनगर का प्रतिष्ठित व धनी आदमी हो गया।

उसका मन आगे बढ़ने का था। उसने सब कार्य-भार अपने मैनेजर को सौंप दिया और बी० ए० तक की पढ़ाई समाप्त की। कुछ ही वर्ष हुए होंगे कि किस्मत के निर्दयी झोंकों ने सब चौपट कर दिया, करा कराया खेल बिगाड़ दिया। साम्प्रदायिक उपद्रवों से विनोद के बूढ़े माता-पिता को परलोक भेज दिया, गाँव में आग लगा दी। गई इधर मैनेजर ने भी मौका देखा और सब अपने नाम कर लिया। विनोद दरबदर भटकने लगा। घर जाने को खाने-पीने को फूटी कौड़ी भी न रही। वाह! री दुनियाँ, यह क्या रहस्य है? इसको बनाना उसको मिटाना, इस दुनियाँ का ढंग पुराना।

बिना टिकिट के विनोद गाड़ी में सवार हो गया। उसके दिल पर इतना गहरा असर पड़ा कि कहा नहीं जा सकता। 'टिकिट' टिकिट प्लीज़ कहते हुए टिकिट चेकर ने जो झबला स्टेशनसे गाड़ी में सवार हुआ था; जिस प्रकार सबसे टिकिट मांगा, उसी तरह विनोद से भी मांगा।

अफ़सोस, मिस्टर! आई हेव नोटिकिट।

मज़ाक न करोसाहब शीघ्र ही टिकिट दो।

"अरे भाई मैं मज़ाक क्यों करने लगा। मज़ाक व्यर्थ दुनियाँ वाले मुझसे करते हैं (गला भर जाता है)

"अरे कौन? विनोद बाबू-आप"। प्रमिला ने कहा। वह भी उसी डिब्बे में बैठी थी। प्रमिला कॉलेज की क्लास फेलो थी, जो कि फिल हाल गेमेगीरड नामक गांव जा रही थी। बड़ी चंचल युवती थी वह, गोरा रंग दुबली पतली और सुन्दरी थी। उसने विनोद के मन ही मन अपना बना लिया था।

'अरे आप की मह भी ख्यालन रहा कि दोनों टिकिट मेरे ही पास रह गये थे।'

चेकर के चले जाने पर दोनो इत्तमिनान से बैठ कर बातें करने लगे।

विनोद—"अजी आप यह तो बतलाइये कि आपने गरीब पर इतनी मेहेरबानी क्यों की?"

"वाह! विनोद बाबू, आपको शायद यह न मालूम होगा कि मैं हमेंशा सफ़र करते वक्त एक टिकिट ज्यादा ले लिया करती हूँ। न जाने कौन कब कैसा समय आ जाय? खैर। जाने भी दो इन बातों को। पहले। यह बताईये कि, आप तशरीफ कहाँ ले जारहे हैं?"

"जहाँ, तक़दीर ले जाय।" विनोद से इसके आने कुछ कहते सुनते न बना, उसकी आँखों में आँसू झलक आए

प्रमिला—"अरे विनोद बाबू यह क्या? पुरुष हो कर रो रहे हैं?" विनोद ने प्रमिला का हाथ अपने हाथ में ले लिया और हृदय पर रख कर सारी घटनाएं सुना दी। दयार्द्रश्रुवती की आंखों से भी पानी की धार लग गई।

सेंव, पेड़ा, सोडा लेमन, चाय ग़रम पान बीड़ी मॉचीस की आवाज़ें आने लगी। "अरे! यह क्या? शहापुर स्टेशन आ गया।" "बस, विनोद बाबू, इस स्टेशन के बाद अगला स्टेशन उतरने का ही का है।" जेमिनी स्टेशन पर दोनों उतरे प्रमिला विनोद को अपने यहाँ ले गई। माता-पिता से परिचय करवाया और विनोद की आत्म कहानी का भी वर्णन कर दिया।

उसने कहा—लीजिए, मेरे पास एक दूसरा टिकट भी है।

प्रमिला के पिता, करुणा, सगुना और जमुना तथा गिरधारी मिलो के एक रईस आदमी थे। खूब ठाट बाट था। विनोद प्रमिला के पिता का प्राइवेट सेक्रेटरी हो गया था। उसके कार्य से श्याम बाबू बड़े प्रसन्न रहते थे। प्रमिला और विनोद का प्रेम दिन प्रति दिन बढ़ता गया और भविष्य की दोनों ने कल्पना की, ऐसाकरेगें वैसा करेंगे।

प्रमिला की कई सहेलियाँ तथा कॉलेज मित्र थे। केवे विनोद को भी जानते थे। कइयों को प्रमिला और विनोद की मित्रता अखरती। ज्यादातर काशीनाथ को, जो उसी गाँव का था। एक दिन काशीनाथ भी प्रमिला के साथ तालाब के किनारे सैर करने गया। संध्या का समय था, सुहावनी ऋतु थी, मन्द मन्द हवा चल रही थी। प्रमिला की सुन्दरता हवा से कामदेव का आव्हाहन कर रही थी। वह दृश्य भी बड़ा सुन्दर था। दोनों उस तालाब की सूखी जमीन पर बैठ गपशप लड़ा रहे थे। बातों बातोंमें अधिक समय व्यतीत हो गया। "अरे! काशी, अब चलना चाहिए, रात्रि होने को आई।' काशीनाथ ने मौका देखकर उससे मीठी मीठी बातें करते हुए, उसके सिर पर हाथ फेरते हुए गालों पर हाथ फेरा। प्रमिला के सारे शरीर में बिजली दौड़ गई। "यह क्या काशीनाथ?" काशीनाथ अधीर हो उठा और उसे अपने बाहुपाश में खींच ओठों का चुम्बक ही लेना चाहता था कि तमाकू से प्रमिला ने कसकर एक तमाचा उसके गाल पर मारा और ऐसी पैर से ठोकर दी कि वह गिर पड़ा।

"नीच कमीने तेरी यह मज़ाल! तुझे शरम न आई तुझे मालूम होना चाहिए कि में सिर्फ विनोद की ही हूँ पर नारी जो अकेली देख तेरी ऐसी नीयत? मैं तेरे इरादे अच्छी तरह से जानती थी, लेकिन मैं यहनहीं समझी थी कि तू इतना गयागुज़रा है।"

काशीनाथ दर-असल में इसी लायक था; उसने कई मासूम लड़कियों की जिन्दगी बर्बाद कर दी थी। वह हमेशा नई कलियों का स्वाद लेता था। वह गुस्से में आ गया और लपक कर प्रमिला की ओर बढ़ा और कहने लगा—"आज मैं अपनी इच्छा पूरी किए बगैर तुझे नहीं छोड़ूंगा।" प्रमिला ने अपनी इज्जत जाते देखकर-मोटर में रखे हिंडल को उठा उसके सिर परदे मारा। वह वहीं गिर पड़ा। बेहोशी जाने पर देखा कि प्रमिला चली गई है। वह उससे बदला लेने की धुन में रहने लगा। कई दिनों तक वह प्रमिला और और अन्य साथियों को नहीं देखा।

प्रमिला ने उस दिन की सारी बातें विनोद से कह दी। विनोद को काशी पर शक होने लगा और मन ही मन डरने लगा कि कहीं वह प्रमिला से ऐसा वैसा

काम न कर बैठे, जिससे कोई मुसीबत का बवंडर खड़ा हो जाय। वह इस इरादे से कि काशीमाथ प्रमिला से बदला लेगा, प्रमिला को सब बातें समझा दीं और श्याम बाबू से विचार विमर्श कर शादी तय कर ली। बड़ी धूम धाम से शादी हुई। दोनों सुखी जीवन बिताने लगे।

गर्मी के दिनों में प्रमिला और भोलानगर गए, जहाँ की जलवायु समशीतोष्ण थी। दोनों को यह न मालूम था कि काशीनाथ यहां के शहर में मोटर ड्राईवर की नौकरी कर रहा है।

रोज दोनों घूमने जाते, तरह-तरह की वस्तुएँ खरीदते; एक दिन काशी ने दोनों को देख लिया। वह मौके की ताक में ही था। बाहरी किस्मत! जब मनुष्य का अंत होने को आता है, तब उस बेचारे को उसकी कोई खबर पहले नहीं होती।

एक शाम को दोनों मुरलीघाट की सैर करने निकले। ऐ टैक्सी वाला, ऐ टैक्सी वाला, कहकर विनोद ने ५६ नंबर की टैक्सी वाले को बुलाया, काशी की वेश भूषा बदली हुई थी, जिसको आसानी से पहचानना मुश्किल था। वह आया और दोनों को लेकर मुरली घाट पहुँचा। विनोद और प्रमिला गाड़ी से उतरे और इधर-उधर घूमने लगे थक कर वे वहाँ की हरियाली घास पर लेट गए। प्रमिला को पानी की प्यास लगी थी, उसने विनोद से कहा—"प्यारे, मुझे बड़ी प्यास लगी है, पानी चाहिये। विनोद थरमांस लेकर पानी लेने चला गया। ड्राईवर ने यह मौका अच्छा देखा, वह प्रमिला के पास आया और कहने लगा—"हुजूर ने मुझे पहिचाना क्या? प्रमिला ने उसकी ओर गौर से देखा।" काशी" हाँ, काशी, काशी ने कहा उसने जेब से पिस्तौल निकाल कर कहा—"यह क्या है प्रमिला "?—"पिस्तौल"।

काशी—"याद रखो, यदि शोर करने की कोशिश की तो......।"प्रमिला ने उस निर्दयी को बहुत समझाया, लेकिन वह नहीं माना। वह उसकी ओर बाहें बढ़ाकर कहने लगा—"आओ प्यारी—कब से मेरी बाहें तुम्हारे आलिंगन के लिए तरस रही है और ओठ चुम्बनो के लिए तड़प रहे हैं।" उसने उसे बहुपाश में कस लिया और ओठों से ओंठ मिलाकर चुम्बन लिए।

विनोद पानी लेकर आ रहा था अंधेरे में उसे साफ दिखाई दे रहा था जेब से बैटरी निकाल कर उसे जलाई देखता क्या है कि प्रमिला और ड्राईवर ...वह और नजदीक आया, ड्राईवर ने उसे देखा और अपनी पिस्तौल से उसका काम तमाम कर दिया। "अरे! यह क्या नीच! तूने मेरी इज्जत और सोहाग भी नष्ट कर दिया, यह कहकर प्रमिला ने उसके हाथ की पिस्तौल छुड़ा ली और बड़ी स्फूर्ति से ड्राईवर पर फाइरिंग कर दिया वह वहीं ढेर हो गया।

लोगों को पिस्तौल की दो बार आवाज सुनाई दी वह दौड़े दौड़े घटना स्थल पर आते। देखा प्रमिला ने पिस्तौल अपने ऊपर चलाली। वह भी वहीं खत्म हो गई। सारे शहर में सनसनी फैल गई। पुलिस ने मुजरिम का पता लगाने के लिए बड़े जोरों से खोज करना शुरू किया लेकिन पुलिस और लोगों को उन का पता कैसे लगता?

चित्रपट

'राज तरंगिणी' युग का महान चित्र होगा
अभिनय तथा निर्माण की अन्य तैयारियां प्रारंभ

(बंबई स्थित 'देशदूत' के विशेष सम्वाददाता द्वारा)

कल्हण कृत 'राजतरंगिणी' का सिनेमा रूपान्तर १९५० ईसवी का सर्वश्रेष्ठ चित्र होगा, यह अभी से कहा जा सकता है। यद्यपि अभी उसके निर्माण की तैयारियाँ पूरी नहीं हुई हैं, पर चित्र की जो रूप रेखा बनी है और इसके सम्बन्ध में अभी तक जो घोषणायें की गयी हैं, उनको देखकर उसके इस वर्ष के सबसे अच्छे चित्र होने के विश्वास में शंका नहीं की जा सकती है। उसके निर्माण सम्बन्धी सभी प्रारंभिक कार्य समाप्त हैं, और चित्र की नायिका कुमारी ऋता पंडित के भारत वापस आते ही शूटिंग का कार्य भी प्रारम्भ हो जायेगा। कुमारी पंडित इन दिनों जेनेवा के एक स्कूल में अभिनय कला की शिक्षा प्राप्त कर रही हैं।

'राज तरंगिणी' कश्मीर का सबसे प्राचीन, महत्वपूर्ण एवं प्रामाणिक इतिहास है। इसका निर्माण काल बारहवीं सदी बताया जाता है, कश्मीर के तत्कालीन लोकप्रिय कवि कल्हणने इसकी रचना की थी। सम्पूर्ण 'राजतरंगिणी' में आठ सहस्त्र के लगभग श्लोक हैं और वह आठ तरंगों में विभक्त है, पर चित्र का निर्माण मध्यकालीन काश्मीर की सुविख्यात राजकुमारी इला के जीवन को लेकर किया जा रहा है, जिसने मुगलों से अपने देश की रक्षा के लिये जिन्दगी भर कष्ट सहते सहते अन्त में अपने विवाह मण्डप में पहुँचकर आत्माहत्या कर ली थी। चित्र का नायक तिब्बत का राजकुमार रिंचन है, जो उन दिनों अपने देश से भाग कर काश्मीर में एक बौद्ध शरणार्थी के रूप में रहता था और अन्त में अपनी कूटनीति और इला के सहयोग द्वारा कश्मीर की राजगद्दी पर अधिकार करने में सफल हुआ था।

चित्र की नायिका का कार्य अमेरिका-स्थित भारतीय राजदूत श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित की सुपुत्री एवं प्रधान मन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की भांजी कुमारी ऋता कर रही हैं। कुमारी ऋता को प्रारम्भ से ही अभिनय का शौक रहा है। अपने कालेज के दिनों में वे अक्सर वहां अभिनीत नाटकों में भाग लिया करती थीं। मैसाचुसेट्स के वेल्जली कालेज की प्रिन्सिपल श्रीमती हार्टन ने सन् १९४७ ने कुमारी पंडित को स्वर्णपदक प्रदान करते हुए उन्हें इस वर्ष अपने कालेज की अभिनय कला में सर्वश्रेष्ठ छात्रा घोषित किया था। वास्तव में कुमारी ऋता का फिल्म में काम करने का शौक भी बहुत पुराना है। पिछले वर्ष उनका, बम्बई की सुप्रसिद्ध निर्माण संस्था रणजीत मूवीटोन से, उसके एक आगामी चित्र में काम करने का समझौता भी हो चुका था, पर चित्र के शूटिंग आरम्भ होने से कुछ ही दिनों पहिले उन्हें अपनी मां के साथ अमरीका चला जाना पड़ा और वह चित्र न बन सका। पर इस बार सुप्रसिद्ध निर्देशक चावला ने 'राजतरंगिणी' की मुख्य भूमिका में कुमारी ऋता पंडित का नाम घोषित कर सचमुच कमाल का काम किया है। श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डित ने भी ऋता को इस चित्र में काम करने की अनुमति दे दी है, क्योंकि चित्र का निर्माण कश्मीर के उस गौरवमय इतिहास को लेकर किया जा रहा है जिसका अनुवाद स्वयं ऋता के पिता स्वर्गीय रणजीत पंडित ने किया था। यही नहीं, श्रीमती पंडित ने स्वयं ही अपनी पुत्री को स्वीटजरलैंड की सुप्रसिद्ध जेनेवा युनिवर्सिटी में अभिनय कला की शिक्षा प्राप्त करने के लिये भेजा, जिससे 'राजतरंगिणी' में उसका सर्वश्रेष्ट अभिनय हो सके। हालीउड के लगभग सभी सुप्रसिद्ध अभिनेतागण इसी विश्वविद्यालय के भूतपूर्व छात्र हैं और कुमारी पंडित प्रथम भारतीय हैं जो वहां अभिनय कला की शिक्षा प्राप्त करने गयी हैं।

श्री चावला ने चित्र के नायक की भूमिका के लिये भी एक नये चेहरे को चुना है। श्री अन्हर्सिक अमर हिन्दी के एक तरुण पत्रकार हैं, जो इस चित्र में प्रधान नायक बन कर आ रहे हैं। कहा जाता है कि स्वयं कुमारी पंडित ने ही श्री अमर का परिचय निर्देशक चावला को दिया था, और इनका सुन्दर स्क्रीन फेस देख कर श्री चावला तत्क्षण ही उन्हें अपने चित्र का हीरो बनाने के लिये तैयार हो गये। श्री अमर युक्तप्रांत के निवासी हैं और अन्तर्राष्ट्रीय पी. ई. एन. के सदस्य हैं। इनकी कहानियाँ और लेख विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में निकला करती हैं। पिछले वर्ष वे पत्रकारिता की उच्च शिक्षा का अध्ययन करने अमरीका जाने वाले थे, पर कुछ कारणों से नहीं जा सके। आप एक जन्मजात कलाकार हैं और आपका चेहरा ही अभिनय के लिये बना है। हमें आशा है कि कुमारी ऋता पण्डित के साथ आप भारतीय चित्रकला को कई पग आगे बढ़ायेंगे।

चित्र के पात्रों में गीता वाली, निम्मी, सप्रू, रहमान, सुरैया चौधरी, नवाब और कुक्कू के नाम उल्लेखनीय हैं। गीता वाली और निम्मी के सम्बन्ध में तो कुछ कहना ही व्यर्थ है। इन दोनों के नाम से भारतीय सिने जगत का प्रत्येक

'राजतरंगिणी' फिल्म के प्रमुख अभिनेता अन्हर्सिक, जो आजकल बंबई में अभिनय की तैयारी कर रहे हैं।

प्रेमी परिचित है। जिस किसी ने गीता वाली की 'सुहागरात' और निम्मी की 'बरसात' देखी है, वह इन दोनों के उच्च कोटि के कलाकार होने में किंचित्मात्र भी संशय नहीं कर सकता। सप्रू और नवाब तो मंजे हुए अभिनेता हैं ही, रहमान और सुरैया चौधरी भी, जो चित्र की उप भूमिका में आ रहे है, सिने प्रेमियों से अपरिचित नहीं। रहमान के अभिनीत 'प्यार की जीत', 'बड़ी बहन' और 'पारस' आदि चित्र बहुत प्रशंसित हुए है, और सुरैया चौधरी सिने क्षेत्र में नई होते हुए भी काफी प्रतिभावान अभिनेत्री है, उसने 'जीत' में बहुत सफल अभिनय किया है।

निर्देशक चावला की इच्छा हैं कि 'राजतरंगिणी' युग का सर्वश्रेष्ठ चित्र बने। पहले उनका विचार था कि चित्र का निर्माण हालीउड के किसी स्टूडियो में टेक्निकल पद्धति से किया जाये और इसके लिये वहां के कई सुप्रसिद्ध निर्माताओं ने उन्हें पूरी सुविधाएं देने का वचन भी दिया था, पर अपने इस विचार को कार्यान्वित करने के लिये उनके सम्मुख बहुत सी बाधायें उपास्थित हुई जिससे उन्हें यह विचार त्यागना पड़ा पहिली कठिनाई तो डालर एक्सचेंज सम्बन्धी थी, जिसके लिये भारत सरकार उनको वे सुविधाएं नहीं दे रही थी जो वे चाहते थे। दूसरी कठिनाई चित्र के कलाकारो के सम्बन्ध में थी। कुमारी ऋता और श्री अन्हसिर्क अमर के अतिरिक्त जो अन्य अभिनेतागण चित्र में काम कर रहे हैं, उनके लिये यह कठिन था, कि वे अन्य निर्माताओं से हुए अपने समझौतों को तोड़कर पांच छ महीने के लिये भारत से बाहर जा सकें पर तो भी श्री चावला का विचार हिन्दूस्तान में ही सम्पूर्ण रङ्गीन चित्र बनने का है, इसके लिये उन्होंने कुछ विदेशी विशेषज्ञों को भी बुलाया है।

सिर कला के सर्व श्रेष्ठ प्रतीक बाम्बे टाकीज में 'राजतरंगिणी' के निर्माण की भव्य तैयारियां हो रही हैं सेटिंग्स में प्राचीन भारतीय कला का पूर्ण ध्यान रखने का काम सुप्रसिद्ध कलाकार श्री कनु देसाई को सौंपा गया है। सम्वाद बरसात' और 'जान पहचान' के कथाकार श्री रामानन्द सागर के हैं, और गीत मजरूह सुल्तानपुरी और शङ्कर शैलेन्द्र के हैं। 'अन्दाज' के सुप्रसिद्ध फोटोग्राफर फरदून ईरानी 'राजतरंगिणी' के कैमरे को संभाल रहे हैं और नौशाद एवं राम गांगुली उसके संगीत को और इन सबके साथ इस आशा पर विश्वास की मुहर लगा जातीं हैं कि 'राजतरंगिणी' युग का सर्वश्रेष्ठ चित्र होगा।

श्री चावला ने चित्र के गीतों को सर्वाधिक लोकप्रिय बनाने के लिये एक और प्रशंसात्मक कार्य किया है, और वह है कुमारी ऋता पडित को स्वर साम्राज्ञी सुरैया का गला देने का। सम्भवतः यह पहिला चित्र है जिसमें वह प्ले बैक दे रही है। सुरैया के अतिरिक्त सुप्रसिद्ध गायिका गीताराय एवं लता मंगेशकर भी चित्र के संगीत में भागले रही है वे क्रमशः गीतावली एवं निम्मी को प्ले बैक देंगी

ग्राहकों, एजेंटों और विज्ञापनदाताओं को समस्त पत्र व्यवहार मैनेजर, 'देशदूत' इलाहाबाद के नाम पर ही करना चाहिए।

गांधी संग्रहालय

पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी किधर ?

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

युग पुरुष बापू दुनिया के लिये कितने महान हैं, आज हिन्द महसूस करता जा रहा है। जैसे जैसे अधिक दिन बीतते जावेंगे, वैसे वैसे बापू के विषय में अधिक बातें जानने की उत्कंठा लोगों में बढ़ती जावेगी। बापू की छोटी छोटी चीजों का अधिक महत्व होगा। मनुष्यों के जीवन पर छोटी चीजों का असर अधिक होता है। उनके लेखों का स्थाई महत्व तो सदैव रहेगा। लेखों के साथ बापू जी के छोटे बड़े पत्रों का भी अपना स्थाई महत्व होगा। उनकी ऐतिहासिक यात्रों का भी संग्रह होना ही चाहिए। इस कार्य में अच्छे से अच्छे विद्वानों का सहयोग होना चाहिये। जिसको जिस काम में लगन हो उसको अपना लेना चाहिये। लेखों, पत्रों, और छोटी छोटी चीज का संग्रह कर लेना अभी आसान है। जैसे जैसे अधिक दिन बीतते जावेंगे वैसे वैसे मूल चीजों का मिलना दुष्कर हो जावेगा। बापू की हर चीजें राष्ट्र की सबसे बड़ी निधि है। राष्ट्र बदल जायेंगे। उलट जायेंगे। राज नेता बदलते रहेंगे। नये आते रहेंगे। लेकिन बापू की वाणी और उनके प्रयोग में लाई गई चीजें इतिहास की खोज होगी। संसार के संग्रहालय की शोभा होगी। आने वाली अगली पीढ़ी के लिये सन्देश होगा। खोज पूर्ण 'रिसर्च' की सामग्री होगी। बापू की चीजों के प्रति राष्ट्र बहुत असावधान रहा है। इन पक्तियों के लेखक को महात्मा जी के निकट रहने का अवसर काफी लम्बे अवसर तक मिला है। जानता हूँ बापू के अच्छे अच्छे भाषणों और मुलाकातों का नोट आज मिलना असंभव है। बापू के कितने ही मूल्यवान पत्रों का भी संग्रह कहीं एक जगह नहीं है।

आज से कई साल पहिले पण्डित बनारसीदास जी चतुर्वेदी का ध्यान इधर आकर्षित हुआ था। उन्होंने सत्याग्रह आश्रम साबरमती में बापू के महत्व के पत्रों का संग्रह कुछ किया था। लेकिन कम साधन होने के कारण इस महत्व पूर्ण कार्य को वे अधिक दिन नहीं चला सके। 'विशाल भारत' के सम्पादन करते समय भी उन्होंने अपने लेखों द्वारा कई बार सावधान किया। "बापू की चीजों का संग्रह सावधानी से प्रारंभ कर देना चाहिए।" बापू के निकट रहने वाले धनी मानी व्यक्तियों का भी ध्यान इधर नही गया। बापू जी अपने निकट लाल फीते के कार्य से हमेशा घृणा करते थे। सारा काम हाथ से होता था। पत्रों का जवाब हाथ से लिखे होते थे। सारे लेख बापू के हाथों से लिखे जाते थे। महादेव भाई और प्यारे लाल भाई को लिखते लिखते थक जाना पड़ता था। उन लोगों से संग्रह रखने की बात करना उनके साथ घोर अन्याय होता। बापू स्वयं अपनी चीजों के प्रति असावधान थे। ये सेवा के निमित्त सारी चीजों को करते थे। अपनी चीजों के संग्रह के प्रति वे उदासीनता थे। उनके निकट रहने वाले यदि कोशिश भी करते थे तो बापू को पता चल जाने पर कुछ कड़वी बातें सुनने को मिलती थीं। हां, पीछे कुछ सालों का सही रिकार्ड बापू के दफ़्र में संग्रह है। क्योंकि प्रांतों में जनता की सरकार होने के बाद बहुत से पत्रों का नकल रखना बापू के लिये आवश्यक हो गया था। बापू जी, महादेव भाई और प्यारे लाल स्वयं पत्रों का जवाब लिखते थे। और स्वयं ही महत्व के पत्रों का नकल भी कर लेते थे। बापू को हाथ से लिखा पत्र बहुत पसन्द था। उसमें वे हृदय की सचाई का पता लगा लेते थे। कला की परख करते थे। स्वयं सारे महत्व के पत्रों का उत्तर लिखते थे। मरते दम तक उनकी कलम चलती रही। टाइपराइटर की गुलामी बे पसन्द नहीं करते थे। एक दिन कहने लगे—"हाथ की लिखाई में कला है। सौंदर्य है। सेवा है। अपनापन है। हां, मैंने जिन्दग भर स्वालम्बन की बात की है। अपने हाथ को क्यों निकम्मा बनाऊँ। मैं तो अपने निकट के आदमियों से कहता हूँ अधिक से अधिक काम हाथ से लो।"

फैजपुर कांग्रेस के अवसर पर मैंने एक चिट्ठी और एक लेख पूज्य बापू को दिया। और कहा कि पंडित बनारसी दास जी चतुर्वेदी चाहते हैं—गांधी संग्रहालय का काम शुरू कर देना चाहिए। और अच्छा संग्रहालय हो। बापू जी ने हंस कर कहा— "हां मैं बनारसी दास को जानता हूँ। वह हिन्दी का अच्छा लेखक है। उसके लेख पढ़ भी लेता हूँ। कुछ पसन्द भी है। उसको लिख दो। बापू को पत्र और लेख मिल गया। मुझे फ़ुर्सत कहां गांधी संग्रहालय स्थापित करूं। मुझे तो गरीबों की सेवा से ही अवकाश नहीं मिलता। महादेव और प्यारे लाल मेरी मदद में लगे रहते हैं। उनको भी समय कहां? गुलामी में कौन सा संग्रहालय स्थापित करूं? आज तो दरिद्र नारायण की सेवा करनी है। मेरा कौन सा संग्रहालय होगा। मैं स्वयं भी नहीं जानता। हां, बनारसी दास को मेरा संग्रहालय पसन्द है तो वह अपनी शक्ति भर काम करे।

चतुर्वेदी जी बहुत प्रयत्नशील रहे हैं। गांधी संग्रहालय की उनकी योजना सुन्दर है। अर्थाभाव के कारण वे इस ओर कुछ अधिक काम नहीं कर सके। फिर भी अपने प्रयत्न में वे कभी असावधान नहीं थे। बापू जी और बापू जी के निकट रहने वालों से उनकी बात बराबर होती रही है। उनमें एक बड़ी कमी है, वे रूपये वालों की चाटुकारिता नहीं कर सकते। न वे किसी की झूठी प्रशंसा के ही पुल बांध सकते हैं। चाहे उनकी सारी योजनाओं पर पानी फिर जाये। उनके जीवन में स्वभावतः अराजकपन है। अपनी कमजोरियों को भी वे खुले आम स्वीकार करने में कभी हिचकते नहीं। विदेशी साहित्यकारों की रचना वे बड़े प्रेम से पढ़ते हैं। बापू, गुरुदेव, र मां रोला, टालस्टय, क्रोपाटकिन, लुई माईकेल, बाबूनिव पोरो और रसकिन के लेखों को बड़े चाव से पढ़ते हैं। इन महापुरुषों की लेखनी पर वे मुग्ध हैं। इनके निजी संग्रहालय में दुनियां के बड़े से बड़े महापुरुष की हाथ लिखी चिट्ठी पढ़ने को मिल सकती है। अभी मैं पिछले दिनों टीकमगढ़ गांधी संग्रहालय देखने गया था। आपके निजी संग्रह को देखकर मैं आश्चर्य चकित हो गया। बापू और दीनबन्धु सी० एफ० एण्ड्रूज के सैकड़ों पत्र आपके पास सुरक्षित हैं। आपने हँस कर कहा—मैंने जवानी में धन तो नहीं कमाया लेकिन दुनियां के महापुरुषों की अमृत वाणी संग्रह कर ली है। मैं इस जीवन से सुखी हूँ। रुपये पैसे के धन से अधिक महत्व मैं अपने संग्रहालय को देता हूँ। हमेशा अपनी नज़रों के सामने इन पत्रों को रखता हूँ। मैंने देखा, उसी कमरे में चतुर्वेदी जी अपने लिखने पढ़ने और शयन आदि का भी काम करते है। बापू की तरह एक कमरे में उनका भी काम चलता है। महापुरुषों की राह पर चल कर सादगी से जीवन व्यतीत कर रहे हैं। किसी तरह का भी आडम्बर नहीं है। खान-पान रहन-सहन उठने-बैठने का व्यवहार सब ग्रामीण वातावरण का है।

विन्ध प्रदेश सरकार ने आपको पिछले साल टीकमगढ़ में गाधी संग्रहालय खोलने की अनुमति दी। और हर तरह से सरकारी सहायता देने का वचन भी दिया। महाराज टीकमगढ़ ने अपना एक आलीशान भवन गांधी संग्रहालय में अच्छी से अच्छी पुस्तकों का संग्रह किया है। भवन में ही गांधी जी के रचनात्मक कामों की कई प्रवृतियां भी शुरू कर रहे थे। आपकी योजना बहुत ठोस थी। विन्ध प्रदेश की जनता को बहुत अधिक सांस्कृत लाभ पहुँ[चने की] आशा थी। इस पिछड़े हुए इलाके [में] गांधी भवन एक अपने ढंग का अ[नोखा] संग्रहालय होता। करोड़ों जनता को [लाभ] होता तुलनात्मक अध्ययन की [व्यवस्था] की जा रही थी। गाँधी क्या है? [लेनिन] ने क्या किया? मार्क्स क्या चाहते [थे?] पूंजीवाद से दुनिया को क्या लाभ [हुआ?] मशीन वाद से हिन्द को क्या नु[कसान] होगा। अराजक वाद सही है या [नहीं?] विद्यार्थियों का दिमाग साफ करने [वाला] विश्व विद्यालय होता। गांधी जी [का] जीता जागता स्मारक बनता। [शहरी] युवक निकल कर देहातों में [जाकर] शहरी वातावरण से दूर रह कर बहुत कुछ सीख सकते थे। [लेकिन] अपनी सहृदयता के कारण—[वे] अपने मित्रों, साथियों, साहित्यको [और] मुसीबत जुदा लोगों को छोड़ नहीं [सकते।] टीकमगढ़ में कुछ राजनैतिक झगड़े [हुए।] मुसीबत जुदा आपके पास आये। आ[पने] उन्हें ठहरा लिया। मुसीबत की [कहानी] सुनने लगे। और सलाह दिया। रा[ज्य से] बाहर चले जाओ। यहाँ उपद्रव [नहीं] होना चाहिये। लेकिन यहां की खुफ़ि[या] पुलिस कैसी है, यह बताने की आवश्यकता नहीं। हिन्दू सरकार को लि[खा] जाता है। गांधी भवन समाज वादि[यों] और कम्यूनिस्टों का अख[ाड़ा है।] यहीं से राजनैतिक कारवाइयां शुरू हो[ती] हैं।" फिर क्या था, एक रिपोर्ट पर [विन्ध] सरकार ने 'गांधी भवन' जैसी सुन्द[र] योजना को रोक दिया। जनता की ब[ड़ी] बड़ी आशाओं पर पानी फिर रहा है। भला चतुर्वेदी जी कब समाजवा[दी] और कम्यूनिस्ट रहे।

साहित्यिक होने के नाते उनका सभी से नाता है। यदि कोई भाग[ा] हुआ उनके पास किसी भी दल का आदमी पहुँच जाता है तो वे सहृदय[ता] से बातें कर लेते हैं। क्या यह अपराध है? यदि हम अपराध है तो पूज्य रा[ष्ट्र] पिता ने कितने ही भिन्न-भिन्न मताव[ल]म्बियों और राजनैतिक दलों की सहाय[ता] की है और उनसे मिलकर उनकी बातें सुनकर सही मार्ग बताया है। टीकमगढ़ का गांधी भवन टूटने का मा[नी] होगा वहाँ की जनता की अभिलाषा [पर] पानी फेरना।

स्वास्थ्य और व्यायाम

जीवेम् शरदः शतम्
स्वास्थ्य के लिये कुछ नुस्खे

ले०, श्री रामेश वेदी, संचालक
रसायनशाला हर्बल इंस्टिट्यूट, गुरुकुल
कांगड़ी

रात को घुटनो में सिमट कर, दिन में धूप सेक कर और दिन रात अग्निवेलाओं में आग ताप कर सर दियां बिताने वाले (रात्रि जानु दिवा भानु कृशानु सन्धयोंदियाः इत्थं शीतं, नीतं जानुमानुक्र शानुभिः) अभागे लिए तो मैं नहीं कहता परन्तु सर्व-साधारण के लिए शक्ति संचय करने के विचार से यह सर्व श्रेष्ठ ऋतु है। उपयुक्त आवास, पर्याप्त गरम वस्त्र और पौष्टिक भोजन यदि व्यक्ति जुटा सकता हो तो स्वास्थ्य बनाने के लिए यह सर्वोत्तम समय है। हमारे धर्मग्रन्थों में जीवेम शरदः शतम् यह वाक्य बार बार आता है। सौ साल की स्वस्थ आयु के लक्ष्य की पूर्ति में सरदियों का महत्व पूर्ण स्थान है। मेरा विश्वास है कि इस लक्ष्य की ओर पहुँचना चाहने वालों को इस लेख में दिये गये निर्देशों का पालन करने से लाभ हो सकेगा।

इस लेख के लेखक श्री रामेश वेदी आयुर्वेदालंकार।

शयनागार में ताजी हवा

सरदी से बचने के लिये मुंह ढक कर सोना अच्छा नहीं। सोने के कमरे में ताजी हवा आने के सब मार्ग को बन्द करना भी ठीक नहीं। सीधी तेज हवा से बच्चों को हानि पहुँचाने का भय होता है क्योंकि बच्चों के ऊपर से सोते समय बहुधा कपड़ा उतर जाया करता है। इसलिए झरोखे तो खुले रखिये कि खिड़कियों तथा दरवाजे को इस तरीके से पूरा या आधा खुला रखिये ही हवा का झोंका सीधा न लगे। सोते समय शरीर पर अधिक कपड़े नहीं पहनने चाहिए। पाजामा तथा कमीज सामान्य-तया काफी रहता है और उपयुक्त भी।

ब्राह्म मुहूर्त में जागना

सरदियों की लम्बी रातों में सोने के लिए समय पर्याप्त होता है। रात को यदि आप साढ़े आठ बजे भी सो जांय तो आठ घंटे की ताजगी देने वाली नींद के बाद सुबह साढ़े चार बजे भी जाग सकते हैं। शीतल बहुत तेज़ी से बह रही होती है। शयनकक्ष को छोड़ने से पहले स्वेटर या किसी दूसरे गरम कपड़े से शरीर ढक लीजिये और तब दाँतों की सफाई और मुख की शुद्धि के लिए बाहर निकलिये। शौच, दातुन, मालिश स्नान और व्यायाम आदि में एक घन्टा लग जाता है।

ठंडे पानी का स्वास्थ्यप्रद स्नान

प्रातः कालीन भ्रमण में गङ्गा के घाटों पर जब मैं वर्फीले नीले पानी में धीरे धीरे शान्त भाव से डूबकियां लगाते देखता हूँ तो मेरे साथी अक्सर कहा करते है कि उन्हें निमोनियां या सरदी न लगने में कौन सा डाक्टरी सिद्धान्त काम करता है? सरदी से हम जितना परे भागते हैं वह उतनी ही जोर से हमें चिपटती है और ये लोग तो जैसे सरदी को चिपट रहे हैं। इसी से सरदी इन्हें नहीं सताती? इस बात में बहुत सी सच्चाई है।

स्नान मैं सुबह का पसन्द करता हूँ और वह भी ताजे पानी से। इसका एक बड़ा लाभ मैंने यह देखा है कि स्नान के बाद सरदी इतना अधिक नहीं अनुभव होती है। स्नान कर चुकने पर ऐसा प्रतीत होता है कि त्वचा का खून वेग से गति करने लगा है। ताजगी काम, करने की इच्छा आलस्य का निराकरण, शीत का कम लगना, आदि लाभ गरम जल से स्नान करने की अपेक्षा ठंडे जल में अधिक प्राप्त होते हैं। रोगी और निर्बल व्यक्ति गरम पानी से स्नान कर सकते हैं। पानी का तापमान शरीर के तापमान से ऊँचा नहीं होना चाहिए।

दातुन करने के बाद बन्द कमरे में रोशनदान खुले रहें सारे शरीर पर तेल की मालिश कीजिये और नल के नीचे बैठकर अथवा पात्र से शरीर पर पानी उड़ेलने के साथ साथ हाथों से शरीर को अच्छी तरह मलते जा ये। एड़ियों को फर्श पर रगड़ कर या झावे से रगड़ कर प्रतिदिन साफ करते रहेंगे तो बिवाई नहीं फटेगी। अंगोछे से बदन को भली भाँति सुखा लीजिये। जांघिया पहनकर शरीर को कपड़े से लपेट लीजिये और व्यायाम वाले कमरे में आ जाइये।

व्यायाम

कमर से ऊपर तक के अवयवों की व्यायाम यहाँ करलें। दिन भर मस्तिष्क का कार्य करने वालों के लिए ४० ५० दंड काफी होते हैं। गले और मुख की माँसपेशियों के व्यायाम करने के बाद कपड़े पहन लें और सैर के लिए निकल जांय। गंगा नहर के साथ साथ या बस्ती से बाहर जाने वाली किसी एकांत धूलि-रहित सड़क पर डेढ़ दो मील तक तेजी से चले जाँय। लौटते हुए आध एक मील दौड़ लें। इस बात का ध्यान रखें कि जाते समय हवा का रुख आपके सम्मुख हो क्योंकि वापसी पर दौड़ते समय हवा का प्रवाह आप के अनुकूल होना आवश्यक है। इस प्रदेश में प्रातः काल ६ ढ़ेस ६ बजे तक एक प्रकार की तेज शीतल वायु पूर्वीय बर्फीले पहाड़ों से आया करती है, उसे ढाढू कहते हैं। सुबह की सैर में मैंने प्रायः देखा है कि चेहरे पर ढाढ़ू के लगने से आँख और नाक से पानी बहने लगता है। नाक में यह इस वेग से घुसती हैं कि कई बार गोते से आ जाते हैं सैर करते समय गहरे अन्तः श्वास लेने से फेफड़ो को तो स्वास्थ्य लाभ होता ही है सरदी कम लगती है। घूमने और दौड़ने में एक घन्टा लग जाता है। साढ़े चार बजे उठकर सढ़े छ बजे तक आप अब तक के सब नित्य कर्मों से निवृत हो चुके हैं।

प्रातराश

पौष्टिक और थोड़ा होना चाहिए। गरम दूध तो अवश्य हो। उनके साथ इन चीजों में से कुछ एक निज रुचि, आवश्यकता और पैकेट के अनुसार ले सकते हैं उड़द की दाल की पिन्नियाँ, परौठी, बिस्कुट, मक्खन, शहद, केला, सूखे मेवे। सात से नौ तक का समय स्वाध्याय के लिए उसके बाद आप अपने कमाने के धन्धे पर जा सकते हैं।

भोजन

दुपहर का भोजन बारह बजे और शाम का छह बजे करें इस ऋतु में बाहरी पृष्ठ की रक्तवाहिनियाँ शीत से सिकुड़ जाती हैं जिससे तत्वों को गरम रखने के लिए यहाँ रुधिर की कमी प्रतीत होती है परन्तु अन्दर के भागों में विशेषतः आमाशय और पाचन संस्थान में रुधिर संचरण भलीभांति हो रहा होता है जिससे इन दिनों भूख खूब चमक जाती है। भारतीय घरों में इस ऋतु में स्निग्ध, मधुर, भरी मिष्ठान तथा दूसरे पौष्टिक आहारों को अधिक सेवन करने की प्रथा युक्तिसंगत है। शरीर को आवश्यक ऊष्मा पहुँचाये जाने के उद्देश्य से बढ़ी हुई जठराग्नि को समुचित बलवर्द्धक आहार मिलते रहना चाहिये उपवास, अल्पाहार, चरपरे, तीखे कसैले हलके रुक्ष वात कारक भोजनों से बचना चाहिए।
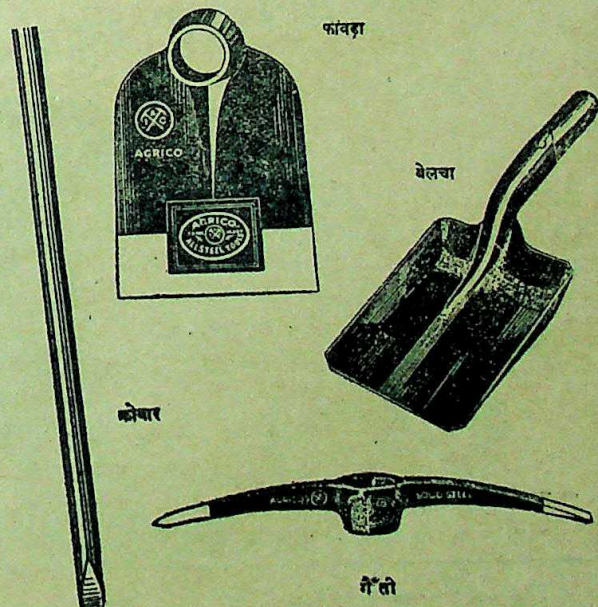
हमारी दिल्ली की डायरी

राष्ट्रपति का जलूस कैसा रहा ?

काश्मीर की सुरक्षा का प्रश्न—दिल्ली में सर्दी का प्रकोप—कौंसिल में लाल फीता।

(विशेष संवाददाता द्वारा)

भारत। प्रधान डा० राजेन्द्र प्रसाद का जलूस पूरानी दिल्ली में बड़ी धूम धाम से निकला। दिल्ली में बहुत से जलूस देखे हैं किन्तु इसके तीन सौ वर्ष के इतिहास में कोईभी ऐसा अवसर नहीं होगा जब जनता ने इतने समारोह का प्रमाण दिया हो। जलूस में २६ जनवरी के नई दिल्ली के जलूस की सादगी थी किन्तु उस से कहीं अधिक शान।

वर्तमान दिल्ली की नींव शाहजहां ने १६५० के रखी थी उस समय से लेकर इस नगर ने बहुत उतार चढ़ाव देखे हैं। कई बार इसके बाजारों में खून की नदियां बहीं किन्तु दिल्ली का सौभाग्य है कि वह अन्त में स्वतंत्र भारत की राजधानी बनी।

प्रधान ने अपने भाषण मे स्वामी श्रद्धानन्द की ओर संकेत किया और बताया कि वही महापुरुष जिसे एक समय हिन्दू मुसलमान दोनों ने अपना नेता स्वीकार किया था साम्प्रदायक झगड़ों में मारे जाए। दिल्ली की समस्त जनता का कर्त्तव्य है कि उनके बलिदान को स्मरण कर यहां शांति भ्रातृत्व का वातावरण उत्पन्न करे।

यह जलूस दिल्ली के इतिहास का एक स्वर्ण पृष्ठ बन गया है।

प्रधान के जलूस निकलते समय की वर्षा ने दिल्ली में काफी सर्दी कर दी थी किन्तु उस के पश्चात इस कड़ाके की सर्दी पड़ी कि गत पन्द्रह बर्ष में उसका उदाहरण नहीं मिलता। पालम ऐरोड्रोम पर तो थर्मा मीटर ३२ दर्जे से भी नीचे चला गया। वायु की तीव्रता थर्मा मीटर भी नहीं दरशा सका। सर्दी के कारण भारत पार्लियामेंट की बैठक भी स्थगित करनी पड़ी। यह अपनी किस्म की पहली मिसाल है। सर्दी की बहुतायत का दूसरा उदाहरण म्यूनिपल कमेटी के नलों पर मिलता था। नलों पर प्रायः बहुत भीड़ रहती है। यहां तक कि प्रातःकाल से ही पानी लेने वाले वहीं एकत्रित हो जाते हैं। किन्तु दो दिन इन नलों पर १० बज़े तक कोई भी दिखाई नहीं देता था ! नल स्वतन्त्रता से पानी बहा रहे थे।

❀ ❀ ❀

काश्मीर का प्रश्न फिर सिक्यूरिटी कौन्सिल के सामने आया। श्री बी. एन. राव ने जों भाषण दिया उस पर दिल्ली में टिप्पणियां हो रही हैं। श्री बी. एन. राव ने सर जफरूला के भाषण के बखिड़े उधेड़ दिये। सरजफरूल्ला ने यह स्वीकार किया की पाकिस्तान के ब्रिटिश कमान्डर इन चीफ ने आज्ञा दी थी कि काश्मीर पर आक्रमण किया जाय। इस से सिद्ध हो गया कि पाकिस्तान ने अत्याचार किया है।

और वह भारत पर आक्रमण करने का अपराधी है।

ज़फरूल्ला खान ने यह युक्तिदी थी कि पाकिस्तान को काश्मीर की आवश्यकता है किन्तु श्री रावो ने मीमने और भेड़िये की मिसाल देकर यह सिद्ध कर दिया कि पाकिस्तान भेड़िया है। पाकिस्तान को किसी और देश लेने की भी आवश्यकता हो सकती है। किन्तु युक्तिसे वह देश उनके सुपुर्द नहीं किया जा सकता। यह स्पष्ट दीख पड़ता है कि सिक्यूरिटी कौन्सिल पाकिस्तान को दोषी ठहरायेगी। अब देखना है कि भारत सरकार किस प्रकार पाकिस्तान से काश्मीर खाली करवाता है।

❀ ❀ ❀

भारत सरकार ने फैसला किया हैं कि सरकारी फाइलों के लिए सुर्ख की अपेक्षा सफेद फीता प्रयोग में लाया जाय। सुर्ख फ़ीता अर्थात रेड टेप का अर्थ दफ़तर की लम्बी कारवाई समझा जाता है जिससे कार्य योग्यता से नहीं हो पाता। रेड टेपिज़म की एक प्रसिद्ध मिसाल है कि कहीं आग लग गयी थी। इसके लिए फ़ायर ब्रीगेड म्यूनिसिपल कमेटी से मांगा गया था फ़ायर ब्रीगेड छः मास पश्चात उस स्थान पर पहुँचा जहां आग लगी थी। रैड टेपिज़म की दूसरी मिसाल वर्तमान काल से ली जा सकती है। जब राजेंन्द्र बाबू खाद्य मन्त्री थे तो उन्होंने किसी स्थान पर अनाज की गाड़ी भिजवा दी। गाड़ी पहुँचने के पन्द्रह दिन पश्चा[त] सेक्रेट्री उनके पास वह फाइ[ल] के लिए लाया जिसमें अनाज[...] का आर्डर था। राजें[द्र] सेक्रेट्री की अनभिज्ञता प[र] दिये और उन्हें वास्तविक [...] बोध कराया।

यह तो नहीं कराया [...] कि कांग्रेस के पद ग्रहण [...] रैडटेपिज़म बिलकुच समाप्त हो [...] किन्तु सुर्ख के बजाय सफ़ेद [...] प्रयोग से अफ़सरों को इस बात [...] ही ध्यान रहेगा कि अब भार[त] प्रजातन्त्र है और दफ़तरो में [...] और योग्यता आनी चाहिए। [...] है कि गुलाब का नाम बदल [...] उसकी खुशबू में अन्तर नहीं [...] किन्तु यह भी सत्य है कि [...] को चोर कहा जाय तो वह अवश्य [...] करने लगता है। फ़ीते का रंग [...] से कुछ प्रभाव तो अवश्य पड़े[गा] विशेषतः उस समय जब हमारे [...] वे लोग हैं जो इसके अर्थ को [...] रूप से समझते हैं।

पिछले अङ्को का सारांश

[मोहनलाल, उसका चचेरा भाई तोता और उसकी पत्नी रोनी, साधारण तथा गरीब किसान का जीवन। दो बैल, एक दुधारू भैंस और थोड़ी सी खेती। यही उनकी निधि थी। खेत पक गया था। मोहनलाल, तोता तथा रोनी ने खेत की कटाई की और खलियान लग गया। जिन्हें खाने का ठिकाना नहीं था, उन्हें आशा हुई कि मड़ाई होने के बाद ही उन्हें दोनों वक्त कम से कम रोटियाँ मिलने लगेंगी और बैलों तथा भैंस को चारा भी कुछ दिनों के लिये हो जायेगा। 'किन्तु उर्भगम का समय, खलियान में एकाएक जमींदार के सिपाही आ पहुँचे, और जोर-जबरदस्ती करके अनाज के ढेर का तीन हिस्सा बैलगाड़ी पर लाद ले गये। मोहनलाल और रोनी ने दया की प्रार्थना की किन्तु जमींदार के सिपाहियों ने एक न सुनी। खलियान में अनाज के ढेर का केवल चौथाई भाग वह छोड़ गये। मोहनलाल और रोनी का हृदय भावी चिंता से व्याकुल हो उठा। और फिर.........]

(गतांक के आगे)

अपने मृत घोड़े पर से मराठा सवार ने अविलम्ब कुछ सामान और हथियार खींचे और तुरन्त मृत मुग़ल सिपाही के घोड़े की ओर लपका।

'उसे नहीं' पैदल जाओ। वह हमारी सेना का घोड़ा है,' मोहन ने कहा।

मराठा सिपाही उस घोड़े के पास पहुँच गया और एक सपाटे में उस पर बैठ गया।

बोला, 'इसके सिवाय बाल बच्चों के पास पहुँचने का मेरी गांठ में और कोई सहारा नहीं।' उसने पानी में उतर पड़ने के लिये घोड़े को एड़ लगाई।

वह कहता गया, 'सलाम। खुदा आपको सुखी रक्खे। मेरा नाम शुबराती है। फिर कभी मिला तो इस ऋण के चुकाने की कोशिश करूँगा।'

वह घोड़े को तैराता हुआ चला गया ... हो रहा था। मोहन शीघ्रता के साथ अपने घोड़े पर सवार हो गया, और मृतक मुग़ल सैनिक के पास आया। इसके पहिले यह किसी युद्ध में नहीं ... था।

उसने सोचा क्या जीवन का अन्त इसी प्रकार होना चाहिये ?'

वह धीरे धीरे सीढ़ी पर चढ़ा। उसने मुड़कर देखा पानी में जाते हुए मराठा सवार का डील डौल हल्का सा दिखाई पड़ने लगा था। सामने सादत खाँ की विशाल सेना लगभग एक सहस्र मराठा सवारों को घेर कर ऐतमादपुर की ओर लिए आ रही थी।। मोहन भी उन्हीं में जा मिला।

उसने सूचना दी अपना एक सिपाही पानी के किनारे मरा पड़ा है। किसी मराठे ने उसको मारा है।'

लाश को उठा लाने का प्रबन्ध हो गया मुगल सेना विजय घोष करती हुई चली गई।

(८)

सादत खाँ और उसके सब सरदार उस विजय पर हर्षोन्मत्त थे। मराठी सेना के पास से कुछ लूट मार का सामान मिला! उसमें से थोड़ा सा वजीर के पास भेज दिया गया, बाकी सरदारों ने आपस में बाँट लिया। सिपाहियों को शाबाशी दी गई और भविष्य में पुरष्कार मिलने के वचन। लड़ाई में ज़ो सैनिक मारे गए थे उनके घर पाँच पाँच रुपये कुटुम्ब के भरण पोषण के लिये।

विजय के उपलक्ष में सादतखां ने एक बड़ा उत्सव किया। उसमें सब सरदार बुलाए गए। सिपाहियों ने अपने अपने जत्थे में अलग जशन मनाया।

सादतखां के बड़े भारी तम्बू में जो सुखमनाया गया उसमें नृत्य गानको सबसे अधिक स्थान मिला। जो पीते थे उनके लिये बढ़िया शराब का आयोजन ही था।

इस उत्सव में मोहनलाल वाले दस्ते का सरदार भी गया। मोहन को उसने अपने चुने हुए अङ्ग रक्षकों में रख लिया था। उसको अपने साथ उत्सव में ले गया। परन्तु सरदारों की उस महफिल में मोहन सरीखे साधारण सैनिक का पहुँच पाना एक समस्या थी। सरदार उसके कर्तव्य पालन से बहुत सन्तुष्ट था। मोहन के मन में...थी आखिर यह महफिल है क्या बहुत बिनती चिरौरी करने पर उसके सरदार ने किसी प्रकार मोहन को तम्बू के भीतर प्रविष्ठ करा लिया।

सरदार ने उसे सावधान कर दिया, 'एक तरफ चुपचाप बैठकर देखते सुनते रहना।' चुपचाप सब देखने सुनने का निश्चय मोहन पहिले ही कर चुका था।

एक पहर रात जा चुकी थी। तम्बू के भीतर अनेक मशालों का तेज प्रकाश हो रहा था। मशालों का धुवां ऊँचे तम्बू की छत में टकरा टकरा कर छितरा-छितरा कर इधर उधर भटक रहा था। कालीनों, मशनदों और तकियों के सहारे सरदार बैठे थे। एक ऊँचे आसन पर मीर बख्शी सादतखाँ। सरदारों के सामने चांदी के हुक्के थे और पीने वालों के सामने सुराहियां और कटोरे भी। एक ओर भड़कीले वस्त्रालङ्कारों से जगमगाती हुई गायिकाएँ और उनके साज़िन्दे। महफिल में खुसफुस के शब्दों से लेकर सादतखाँ के पास बैठे हुए सरदारों की धीमी, भीगी हुई बातें भी थी, परन्तु तम्बू के भीतर अदब की स्तब्धता अधिक थी।

साज़िन्दों के बाद्य मिलाए जा चुके थे। गायिकाएँ घुँघरू पहिने हुए बैठी ही थीं।

सबसे पहिले सबसे आगे बैठी हुई एक योवन मदमाती गायिका को मुजारा करने का अधिकार दिया गया। वह खड़ी हो गई।

सारंगी पर गज फिरा, तबले पर थाप पड़ी। गायिका ने फारसी की एक गजल गाई फिर जैसे जैसे लय तेज हुई गायिका ने नाच और हाव भाव के करिश्में दिखलाए। सिर हिले, गर्दनों ने झटके खाए और अनेक मुखो से बार बार निकला—वाह, नूरबाई! वाह नूरबाई!! सचमुच नूर बरसा दिया।'

मोहन ने भी देखा और सुना नूरबाई की फारसी गजल का एक अक्षर भी उसकी समझ में न आया, परन्तु उसका स्वर, तबले सारंगी का साथ, नृत्य के बद चालन उसको अच्छे लगे। उसके हाव भाव के मिठास पर उसके मन में एक प्रश्न उठा, क्या यह कभी किसी से लड़ती भी होगी ?

अपने घर का एक चित्र उसकी आंखों के सामने आया—गोबर उपले, खलिहान, भैंस और सुन्दर रोनी की भयानक क्रुद्ध रेखाएँ। तुरन्त ही जमादार द्वारा दिया हुआ बलात् अन्नसंग्रह और भेंट में थोड़े से भुने हुए चने बाँधे हुए उस मन्द चाँदनी में किसी अस्पष्ट अज्ञातटोह के पीछे लाठी लिए हुए निकल पड़ना। तबले पर थापे पड़ी, घुँघरूँ का रव तीव्र हुआ, हाव भाव और अधिक गहरे तथा भौंहों का नचाना घुमाना और भी अधिक मादक। तम्बू के भीतर के उस प्रमत्त वातावरण में मोहन ने उस कष्टदायक कल्पना को झटकार कर

डुबो दिया। वह भी समझदारों की तरह से सिर हिलाने लगा!

नूरबाई को महफिल की कारवाई प्रारंभ करने का सम्मान दिया गया था। अपनी बाकी कारीगरी को अन्त के लिये सुरक्षित रखकर वह बैठ गई। दूसरी गायिकाओं ने अपना अपना प्रदर्शन किया। सबों ने फारसी गज़लों में भरतीय रागों को या उनके बिगड़े रूप को प्रस्तुत किया। थोड़ी सी वाहवाहके बाद यह या वह सरदार हुक्का पीने लगा, कोई चुस्की लगाते लगाते मौके बे मौके 'ओहो! क्या कहना है!' कहने लगा परन्तु शब्दों में स्वर की सचाई का आभास न पाकर यह या वह नर्तकी गाने नाचने का हठ न करके बैठने लगी आँखें बार बार नूरबाई की ओर जाने लगीं। नूरबाई की भोली चितवन में एक अभिमान था और होंटों पर कभी कभी आजाने वाली रंगीले मुस्कान उसके साज़िन्दो की आँखों में अफ़ीम का नशा ज़रा और गहराई के साथ छाया और वे भी ऊँचे नीचे स्वरों में सरदारों की उस 'ओहो क्या कहना है?' का बेतुका समर्थन कर उठे। रात ढल गई। रात के सन्नाटे को महफिल का वह नाद और बाहर के झींगुरों पखेरुओं का ही शब्द हिला डुला रहा था। सब नर्तकियों का काम समाप्त हो जाने पर नूरबाई की ओर झुक्के गुड़ गुड़ाते हुए सरदारों की आँखें घूमी।

सादतखाँ ने भीगे हुए स्वर में कहा, 'अब सबेरा आपही कीजिये?'

नूरबाई ने खड़े होकर आदाब बजाया। मुँह से नहीं बोली, परन्तु उसकी घुँघरू की एक छम से और प्रमादक मुस्कान ने पूरा उत्तर दे दिया।

अबकी बार नूरबाई ने फारसी गजलों को बीच बीच में हिन्दी के भी कुछ गीत गाए। हिन्दी के गीतों पर महफिल और भी अधिक रोजी मोहन ने मानो रस के घूँट पिए।

प्रातः काल होने में अभी कुछ बिलम्ब था, भोर का तारा कुछ ऊपर चढ़ आया था परन्तु तम्बू के भीतर बैठे हुए लोगों में से किसी को भी न जान पड़ा नूरबाई ने अन्त में फारसी की एक गजल छोड़ी जिसका सारांश था— 'बुलबुल खिलते हुए गुलाब के पास बार बार चिहुँक चिहुँक पूछती है—क्या मैं और निकट आ सकती हूँ? गा गा कर कहती है, तुम्हारे कांटो का डर न होता तो बिना पूँछे ही डाल पर आ बैठती गुलाब, हवा के झोकों की गति के अनुसार कभी नाहीं का और कभी हामी का सिर हिलाहिला देता है। गातेगाते बुलबुल का गला बैठ गया परन्तु गुलाब के उस प्रकार सिर हिलाने का अर्थ बिचारी बुलबुल की समझ में न आया। तब उस लाचार ने अन्त में जबानी मेरे उस गुलाब से प्रश्न किया, क्या तुम्हारे कान हैं? और खुद चिहुँक कर उत्तर दे लिया होते तो क्या तुम इस प्रकार सिर हिला-हिला कर ही रह जाते?'

नूरबाई ने नृत्य के साथ गज़लसाहतखाँ के बिलकुल पास आकर गाई। हाव भाव दरशाते हुए वह बुलबुल बनी, गुलाब बनी सवाल किए और जवाब दिए। हावभाव पैरों के सूक्ष्म संचालन और उसकी बड़ी महीली आँखों की स्थूल और सूक्ष्म भाषा को सादत खाँ ने समझ लिया। उमंग में आकर वह बुलबुल के प्रश्नों का उत्तर वह गुलाब बन कर देना चाहता था। अन्य सरदार भी सहज ही समझ गए कि नूरबाई की कला की रीझ सादत खाँ पर बरस रही है। वह उनको सेना नायक और मुहम्मद शाह का स्थान पन्ना मीर बख्शी था। इसलिये उनकी उमंगे करवट खाकर ही रह गईं।

क्रमशः

शरीर में खून ही की कमी पान्डु रोग की जड़ है।

हमारी अनुभूत दवा शरीर का पीलापन, बदहजमी, खासी, बोखार को दूर कर शरीर में शुद्ध रक्त संचालन करता है। ३१ दिन के सेवन से जीवन से निराश रोगी भी सर्वदा के लिये निरोग्य हो ज़ाता है, एक बार परीक्षा कर देखें। कीमत पूरा खोराक ६) आधा ५) नमूना के लिये ३) पेशगी १) आने पर ही दवा भेजी जाती है, बिना १) पेशगी मिले दवा नहीं भेजी जायेगी--

श्री० विष्णु आयुर्वेद भवन
पो० बारसलीगंज (गया)

दाँत के रोगी निराश न हों

दांत शरीर का अमूल्य रत्न है। इसके नष्ट होने से मुँह की शोभा बिगड़ जाती है और शरीर रोगी हो जाता है। पर दंतमुक्ता हमेशा दाँतों की रक्षा करता है और जल्दी बुढ़ापा आने या पोपले होने से बचता है।

ठंडा पानी या हवा लगना दाँत का हिलना, खून या मवाद का बहना, मसूड़ों की सूजन इत्यादि से बचाता है। पायरिया का जानी दुश्मन है। हजारों लोग इससे लाभ उठा चुके हैं और उन स्वामी जी का गुण गान करते हैं, जिनकी कृपा से यह जंगली जड़ी बूटियों द्वारा बनाया गया है। एक बार लगाकर परीक्षा कीजिये और लाभ उठाइये।

दाम लागत फी डिब्बी ।=) ।॥) १) एक दर्जन से अधिक खरीदार को उचित कमीशन दिया जायगा। एजेंटों की सब जगह जरूरत है।

दन्त मुक्ता कार्यालय, १६२ 'कर्नलगंज' इलाहाबाद २

संवाददाताओं के पत्र

लखनऊ से अवध गुजारेदार संघ के मंत्री कुँवर सुरेश सिंह लिखते हैं

प्रान्त के समस्त गुजारेदारों को सूचित किया जाता है कि अवध गुजारेदार संघ के उद्योगसे माननीय प्रधान सचीव यू.पी. सरकार ने कृषि आय करके नियम ६५में नियम ३५-क बढ़ा कर प्रान्त के छोटे बड़े गुजारेदारों का उपकार किया है। इस उपनियम के द्वारा गुजारेदारों को उनके गुजारे पर उसी दर से टैक्स देना होगा जितनी कि उनकी सालाना आमदनी है और जिन ताल्लुकदारों ने उक्त एक्ट की धारा ४३ के अनुसार उनके गुज़ारे मे से अधिक दर से टैक्स काट लिया है वह जिले के कर निर्धारक अधिकारी के यहां मियाद के भीतर वापसी की दरखास्त देने से वापस हो जायेगा।

इसके लिये अधिक जानकारी के लिये गवर्नमेन्ट गज़ट दिनांक ६ दिसंबर १९४६ नोटीफिकेशन नं० ३७४ आई. सी. दिनांक १८ फरवरी १९४६ देखे या कुंवर सुरेश सिंह मंत्री, अवध गुज़ारेदार संघ १७ कैसरबाग लखनऊ से व्यवहार करे

कांगडी गुरुकुल कुल भूमि जयन्ती महोत्सव की तैयारियां जोर शोर से हो रही है। आने वाले पत्रों से विदित हो रहा है कि जयन्ती पर ज्ञानयात्री बड़ी भारी संख्या में पधारेंगे अधिकृत रूप से सूचित किया जाता है कि जयन्ती महोत्सव १ मार्च से ६ मार्च तक मनाया जायगा। लब्ध प्रतिष्ठ विद्वानों की अध्यक्षता में अनेक सभा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस बार का दीक्षान्त भाषण भारत संघ के राष्ट्रपति द्वारा दिया जाय इस बात की पूरी व्यावस्था हो रही है। माननोय श्री नरहरि विष्णु गाडगिल की अध्यक्षता में संस्कृत भारती सम्मेलन होगा इतिहास और पुरातत्व के माने हुए विद्वान श्री बसुदेव शरण अग्रवाल पुरातत्व संग्रहालय का उद्घटन करेंगे।

इसके सिवाय हमारे प्रान्त के प्रधान मंत्री श्री गोविन्दवल्लभ जी पन्त, आरोग्य मंत्री श्री चन्द्रभानु गुप्त, मध्य प्रदेश के स्पीकर श्री घनश्यामसिंह गुप्त, सभा सचिव श्री चरण सिंह जी आदि नेता, मनीषीगण और शिक्षा तत्वों पधार रहें हैं।

—संवाददाता

कांगडी गुरुकुल विश्वविद्यालय के कुलपति पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति ने ६ दिसम्बर १९४८ को बम्बई के प्रधान मंत्री के नाम जो पत्र लिखा था उस पर बम्बई सरकार ने गत १५ दिसम्बर १९४८ को विचार एक प्रस्ताव द्वारा गुरुकुल अलंकार उपाधियों को सरकारी नौकारियों के लिये बम्बई विश्वविद्यालय की बी० ए० उपाधि के समान लिया है।

संवाद

उदयपुर—में गांधी निर्वाण ... अवसर पर उदायपुर के पुराने कवि पं० ऊमाशंकर द्विवेदी की अध्यक्षता ... मोहता पार्क में एक विशाल कवि ... लव हुआ जिसमें उदयपुर के ... कवियों ने भाग लिया। इनमें स... कन्हैयालाल जी ओझा श्री ... आतुर; श्री श्यामराय भटनागर, ... अन्य नवजवान कवियों ने अपनी ... ताएँ पढी। कविता पाठ के पू... श्री शम्भूलाल जी शर्मा ने एक ... भी दिया। कवि सम्मेलन काफी ... और शानदार रहा

ता: ११ को किसान सम्मेलन ... जोरदार रहा। किसान सम्मेलन ... संयोजक श्री शंकर भारती उत्साह ... इस काम को किया। किसान स... में २० ३० हजार किसानो ने ... लिया।

—संवाददा...

उज्जैन मध्यभारत के राज प्र... मध्यभारत किसान पंचायत के ... पंडित बालेश्वरदयालु और लोक... बामनिया के सपादक केशवचन्द्र ... मध्यभारत जनसुरक्षा कानून ... १९४६ के अंतर्गत रतलाम, ... धार उज्जैन, हसोर तथा इन्दोर जि... निर्वासन का हुक्म दिया हैं।

निर्वासन आज्ञा में कहा गया ... मध्यभारत के अन्य स्थानो में ... भी रहे उन्हें पुलिस कों अपनी ... से प्रति सप्ताह सूचित करते रहना ... वहकिसी भी सर्वजानिक जलसे ... तो भाग ले सकेंगे और न भाषण ... सकेंगे।

—संवाद...

जोधपुर—म्यूनिस्पल बोर्ड ... अध्यक्ष श्री जयलाल शर्मा ने अ... से राजस्थान सरकार की निति के ... में अपना त्याग पत्र दे दिया है। ... पत्र को रखते हुए आपने षडयन्त्रों ... भंडा फोड़ किया है।

(पृष्ठ ५ के आगे)

इस पर से यही सिद्ध होता ... हिन्दुस्तान सरीखे गर्म देश में ज... खेती प्रधान रूप से बरसात ... निर्भर है, हमें सोच विचार कर ... प्राकृतिक हालत के अनुरूप, पैसे ... की मुनाफा कमाने की भावना को ... पर रख कर, उन्नति शील ... बनानी चाहिये। इस समय जो ... नाएँ बनायी गई हैं उन पर से ... जरूरतें पूरी करने का ऐसा कोई ... गामी विचार किया हुआ नहीं ... देता। इसलिये हम किसानों का ... इस ओर आकर्षित करते हैं ... शीघ्र-फलदायी योजनाओं के ... में न पड़े।

प्रधान संपादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल ... ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल द्वारा मुद्रित तथा 'देशदूत' कार्यालय प्रयाग, द्वारा प्रकाशित।

अनेक विषयों की बढ़िया पुस्तकें

हिन्दी भाषा का संक्षिप्त इतिहास

यह राय बहादुर डाक्टर श्यामसुन्दर दास के इसी नाम के ग्रन्थ का सारांश है। विषय नाम से ही प्रकट है। अपनी भाषा का इतिहास संक्षेप में पढ़ने के लिए इसे लीजिए। अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य १) एक रुपया।

आदर्श भूमि अथवा चित्तौर

चित्तौर राजपूतों के त्याग के कारण तीर्थ बन गया है। भारत के गौरव स्वरूप उसी चित्तौर का ओजपूर्ण भाषा में लिखा गया इतिहास पढ़कर अपनी जानकारी बढ़ाइए। मूल्य २) दो रुपये।

पंडित जी

नामी उपन्यास लेखक शरद बाबू के इस उपन्यास में कुलीनता, उच्च शिक्षा, द्विज और द्विजेतर, गाँव की भलाई और अपनी उन्नति, नई शिक्षा और मिथ्या अभिमान आदि के सम्बन्ध में बहुत ही विशद विवेचना की गई है। मूल्य २) दो रुपये।

मैक्सिम गोर्की

रूस के इस विश्रुत कलाकार के परिचय के लिए इस पुस्तक को पढ़िए। है तो यह जीवन चरित, पर इसे पढ़ने में कहानी का आनन्द मिलेगा। इसकी जीवनचर्या का वर्णन पढ़कर पाठक जान सकेंगे कि इस कलाकार को किन विकट कठिनाइयों में होकर गुजरना पड़ा था। छोटे टाइपों में छपी लगभग ढाई सौ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य ३) तीन रुपये।

युद्ध और शान्ति

यह संसार के श्रेष्ठ उपन्यास-लेखक और विचारक का उण्ट लियो टाल्सटाय के प्रसिद्ध रूसी उपन्यास 'वार एण्ड पीस' का हिन्दी रूपान्तर है। यह ऐतिहासिक उपन्यास तब लिखा गया था जब लेखक की शैली परिमार्जित हो गई थी और उन्हें अन्तर्द्वन्द्व से छुटकारा मिल कर शान्ति मिल गई थी। लेखक ने उसमें मानव-जीवन का सम्पूर्ण चित्र, अपने समय के रूस की तस्वीर और राष्ट्रों की खींचतान बड़ी खूबी से चित्रित की है—जीवन और मृत्यु के रहस्य का भी उद्घाटन किया है। लगभग पौने सात सौ पृष्ठों की सजिल्द प्रति का मूल्य ५।—) पाँच रुपये पाँच आने

कुलबोरन

श्री चन्द्रभूषण वैश्य ने इस उपन्यास को सत्य घटना के आधार पर लिखा है। समाज की अन्ध परम्पराओं से देश की जो हानि हो रही है उसका इसमें सजीव चित्र है। सुधार करनेवाले को रूढ़ियों के अन्ध भक्तों से जैसा लोहा लेना पड़ता है उसका नमूना उपन्यास का नायक, 'कुलबोरन' है। अच्छे कागज पर छपी सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥ दो रुपये आठ आने।

अल्पता की समस्या

'साम्प्रदायिक भेद पर विशेष अधिकार माँगना और ऊलजलूल दावे पेश करना तथा उन माँगों के पूरा न होने पर देशद्रोह के लिए कमर कस लेना किसी देश-भक्त का काम नहीं।' इसी पर दृष्टि रख कर पंडित वेंकटेश नरायण तिवारी एम० ए० ने तथ्यों और आँकड़ों के साथ पुस्तक में उलझन को समझाया है। पाकिस्तान बन जाने पर भी जिनके मन में ऊपर लिखी भावना है उनके समाधान के लिए इसमें सप्रमाण उत्तर है। मूल्य २) दो रुपये।

ईरान

महा पंडित राहुल सांकृत्यायन ने इस पुस्तक में अपनी ईरान-यात्रा का विशद वर्णन किया है। इसके पढ़ने से ईरान की बहुत-सी जानकारी पाठकों को हो जायगी। भ्रमण-वर्णन कहानी का सा आनन्द देगा। मूल्य १॥≡) एक रुपया ग्यारह आने।

मध्य प्रदेश और बरार का इतिहास

इस अत्यन्त प्रामाणिक इतिहास में उक्त प्रदेश से सम्बन्ध रखनेवाली सभी प्राचीन और अर्वाचीन महत्त्वपूर्ण बातें आ गई हैं। मूल्य २।—) दो रुपये पाँच आने।

सुन्दरी-सुबोध

इस पुस्तक में पति-पत्नी को सन्तुष्ट रखने के उपाय इस ढंग से बताये गये हैं कि कहानी का आनन्द देते हैं। इसके सिवा सास-पतोहू, देवरानी-जेठानी, ननद-भौजाई, माता-पुत्र आदि को के दूसरे सम्बन्धों को भी ठीक २ रखने के उपाय बताये गये हैं। पुरुषों के लिए भी बहुमूल्य अनुभूत बातें दी गई हैं। इनको उपयोग में लाने से गृहस्थी सुखमय हो सकती है। ३०० पृष्ठों से अधिक की सजिल्द प्रति का मूल्य २।) दो रुपये आठ आने।

आदर्श महिला

इस पुस्तक में सीता, सावित्री, दमयन्ती, शैव्या और चिन्ता आदि पाँच प्रसिद्ध देवियों की जीवन-घटनाओं का सजीव सचित्र वर्णन दिया गया है। इसको पढ़ने में कहानी का आनन्द मिलेगा और शिक्षा सहज ही। मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

कथा सरित्सागर

इस पुस्तक में आदि से ... तक एक से एक बढ़िया कहानि... जैसा इसका नाम है, यह ... का समुद्र है। प्रत्येक कथा के ... एक न एक दृष्टान्त है। ... सजिल्द प्रति का २॥≡) मू... रुपये ग्यारह आने।

देव दर्शन

इसमें व्रजभाषा के प्रख्या... देव की जीवनी और उनके ... काव्यों का आलोचनात्मक ... दिया गया है। व्रज काव्य के ... अतिरिक्त साहित्य के विद्या... लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त ... है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ... एक रुपया पाँच आने।

बन्दना

यह श्रीमती चन्द्रमुखी ओझा ... के ५२ मधुर गीतों का सं... आरम्भ में श्री सूर्यकान्त ... 'निराला' की लिखी प्र... अच्छे कागज पर छपी ... पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

तुलसी के चार दल

(प्रथम और द्वितीय ... गोस्वामी तुलसीदास जी के ... नहछू, बरवै रामायण, पार्वती ... और जानकी मंगल का ... नात्मक परिचय तथा इन चा... की अध्ययनपूर्ण टीका। इसे ... की कुंजी समझिए। मूल्य प्र... का ३) रुपये, द्वितीय भाग का ... दो रुपये ग्यारह आने।

ग्रह-नक्षत्र

इस पुस्तक में ग्रहों और ... आदि से सम्बन्ध रखने वाली ... सभी आवश्यक बातों का ... वर्णन सरल भाषा में है। ... तीन रुपये।

हार या जीत

इस उपन्यास में लेख... व्रजेश्वर वर्मा एम० ए०, डी... ने एक देहाती लुहार की ... बेटी को घटनाक्रम से, ... में, देहात से महराजगंज ... पृथाकुंवरि के आश्रय में पहुँ... है। वहाँ रानी की कृपा ... लड़की ने विद्या पढ़ी। फिर ... गुणों का विकास हुआ जिस... सभ्य होकर सम्मान पाता है ... असहयोग आन्दोलन में ... लिया और अन्त में कलक... नौकरी कर ली। कई पुस्त... विदेश-यात्रा के बाद रानी ... की प्रार्थना पर उससे विवा... उपन्यास की घटनावली, ... संघर्ष और चन्दा की ... दृढ़ता सराहने योग्य है। ... दो रुपये।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

[वर्ष १२, संख्या २६] रविवार, १२ मार्च १९५०

टेढ़ी, सीधी, खरी-मजेदार

हैदराबाद के भूतपूर्व प्रधान मंत्री [मी]र लायक अली जो, हैदराबाद में [न]जरबन्द थे, अपनी बीबी बच्चों के साथ [फ़रा]र हो गये। कहाँ भाग गये, अभी [तक] कुछ पता नहीं चला। अपने [रा]म की समझ में सिवा पाकिस्तान के [औ]र कहाँ भाग कर गये होंगे। चलिये [अ]च्छा हुआ, जान बची लाखों पाये। [मु]कदमें से भी बरी हो गये और प्राण भी [ब]च गया। लेकिन लायक अली ने [है]दराबाद के निजाम के साथ चलते चलाते [बे]वफ़ाई की जैसे वह अपनी बीबी को बुर्का [उ]ढ़ा कर ले गये वैसे ही निजाम साहब को भी यदि अपने साथ ले गये होते तो बेहतर होता। कम से कम कहने के लिये निजामशाही तो बनी रहती, न हिन्दुस्तान सही पाकिस्तान ही म सही।

❀ ❀ ❀

वीर लायक अली ने अपने प्राण बचालिये किन्तु अपने साथी मंत्रियों को जेलखाने भिजवाकर गये, यह बेवफ़ाई परलेसिरे की हुई। लेकिन जहां अपने प्राणों के लाले पड़े रहते हैं, वहां दूसरो के प्राणों की कौन परवाह करता है? मीर लायक अली अच्छे समय से पाकिस्तान भागे हैं। इस वक्त उन्हें वहाँ सिपहसालारी से कम जगह नहीं मिलेगी अपने राम की समझ में भारत में रहने वाले पंचमांगी मुसलमान यदि किसी तरह पाकिस्तान भाग जायें, और मीर लायक अली के कदमों पर चलें तो भारत का भला तो खैर होगा, सो होगा, पाकिस्तान में एक शक्ति शाली भगेड़ू पल्टन भी तैयार हो जायेगी। इस पल्टन की इस समय जरूरत भी है, पता नहीं बस पल्टन की कहाँ जररूत पड़ जाये?

* * *

पाकिस्तानी तांडव नृत्य अब प्रारंभ हो गया है। पूर्वी पाकिस्तान में उसने अपना नृत्य दिखाना प्रारंभ कर दिया है, हजारों हिन्दू पाकिस्तान से भगाये जा रहे हैं। अपने राम की समझ में यह आता है कि पाकिस्तात पहले हिन्दुओं को वहाँ से भगा ले तब अपनी लीला दिखाना प्रारंभ करे।

❀ ❀ ❀

राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद. पाकिस्तान की नीति क[illegible]

सम्पादक का पृष्ठ

पाकिस्तान क्या भारत पर आक्रमण करेगा?

पाकिस्तान की आज की आक्रमणकारी नीति तथा अल्पसंख्यकों के साथ दुर्व्यवहार की दयनीय परिस्थिति को देखकर यह अनुमान किया जा रहा है कि वह भारत पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहा है। पिछले पन्द्रह दिन में पूर्वी पाकिस्तान की हत्याकारी नीति से इसका प्रमाण स्पष्ट दिखाई दे रहा है भारत की ओर से यद्यपि अभी तक किसी प्रकार की संघर्षकारी नीति नहीं अपनाई जा रही है। प्रधान मंत्री पडित जवाहरलाल नेहरू ने इधर कई वक्तव्य ऐसे दिए हैं जिससे यह प्रगट हैं और पाकिस्तान को चेतावनी भी दी है कि वह अपनी नीति में परिवर्तन करे किंतु परिणाम उलटा ही दिखाई ते रहा है। प्रधान मत्री ने यह भी कहा है कि यदि पाकिस्तान ने अपनी आक्रमणकारी नीति में परिवर्तन न किया तो इसका अंतिम परिणाम भया वह होगा। यद्यपि भारत सरकार पाकिस्तान से युद्ध करने के पक्ष में नहीं है, वह शांति तथा पारस्परिक समझौते से ही आगे बढ़ना चाहती है। किन्तु पाकिस्तान यदि अपनी नीति में परिवर्तन नहीं करता हैं तो उसका उत्तर सिवा युद्ध के और क्या हो सकता है?

पाकिस्तान की ओर से आज जिस प्रकार आक्रमणकारी नीति अपनाई जा रही है, वह नई नहीं है। हमें स्मरण है कि विभाजन हो जाने पर स्वर्गीय मिस्टर जिन्ना ने एक गुप्त सभा मुसलिम लीग की बुलाई थी जिसमें उन्होंने कहा था कि हमने पाकिस्तान की स्थापना तो कर दी अब उसका भविष्य मुसलमानों के हाथ में है। यद्यपि मिस्टर जिन्ना अब नहीं हैं किन्तु उनके पाकिस्तानी मित्रगण मुसलिम साम्राज्य की स्थापना की ओर बढ़ने की ओर कदम बढ़ा रहे है। पाकिस्तान समझता है कि पंजाब की ओर कुछ भी करना टेढ़ी खीर है, केवल बंगाल ही ऐसी भूमि है जहाँ संघर्ष किया जा सकता है। सच पूछा जाय तो इस समय पाकिस्तान भारत तथा पाकिस्तान की समस्त सीमाओं की ओर आक्रमणकारी नीति अपना रहा है। उत्तर

पूर्वी पाकिस्तान में भारत के राजदूत
सर सीता राम

में गिलगिट की ओर भी उसने युद्ध की यतैारी प्रारम्भ कर दी है। मियां लियाकत अली ने स्वयं एक बार कहा था कि कम्यूनिष्टों के प्रभाव को रोकने के लिये हम गिलगिट की ओर मोर्चे बंदी कर रहे हैं किन्तु उसे पर्दे की ओट में शिकार करने की तैयारी ही समझना चाहिए। यह तो निश्चित है कि पाकिस्तान उत्तर की ओर अपनी आक्रमणकारी नीति में सफलीभूत नहीं हो सकता काश्मीर में शेख अब्दुला तथा पंजाब में सिक्ख तथा पंजाबी हिन्दुओं के सफल मोर्चे बन्दी के कारण उसकी दाल नहीं गल सकती। यही कारण है कि वह पूर्वी पाकिस्तान की ओर द्रुगति से अपना स्वरूप प्रकार कर रही है।

पाकिस्तान की नीति यह है कि वह पहले पूर्वी पाकिस्तान से हिन्दुओं को भगा ले तब आगे की कार्यवाही प्रारंभ हो। वह पूर्वी पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों को खतरे की स्थिति में देखता है। हम पूछते हैं कि ईरान के शाह के साथ पाकिस्तान के गवर्नर जनरल के निरीक्षण का क्या अर्थ है? क्या पाकिस्तानी रवैये को पश्चिमी मुस्लिम राष्ट्र भी प्रोत्साहित कर रहे हैं? क्या पाकिस्तान की गुटबन्दी में वह भी शामिल है? इस सम्बन्ध में अभी हम स्पष्ट कुछ भी नहीं कह सकते हैं?

जो कुछ भी हो अब समय आ गया है कि भारत सरकार सचेत हो जाये। शांति स्थापना तथा समझौते की सीमा का

महाकोशल की चिट्ठी

मध्यप्रांत का नया बजट

आगामी वर्ष बचत होगी—शिक्षा कमीशन क्या करेगा ? महिलाओं की गुंडों से रक्षा-मोटर से होने वाली दुर्घटनायें अखिल भारतीय आर्डिनेंस फेडरेशन की बैठक।

(विशेष संवाददाता द्वारा)

बम्बई, मद्रास, बिहार इत्यादि प्रान्तों के आय व्ययक घाटे में हैं, परन्तु मध्यप्रदेश का आय-व्ययक बचत में है। सन् १९५०-५१में प्रांतीय सरकार १ करोड़ ४१ लाख रुपयों की बचत होगी। आगामी वर्ष में कोई भी नये कर नहीं लगाये जायेंगे और शासन तथा पुलिस विभागों के व्यय में क्रमशः १२ लाख और ३ लाख रुपयों की कमी की गई है। पुनः संस्थापन के लिये १३ लाख रुपये खर्च किये जायगें। अर्थ मंत्री श्री गोखले ने कहा कि आय-व्ययक बजट को संतुलित रखने के हेतु प्रसार और पुनर्निर्माण सम्बन्धी कार्यों में भारी कटौती की गई है। इसका कारण बताते हुए आपने कहा कि केन्द्रीय सरकार ने सन् १९४९-५० में आर्थिक सहायता स्थगित कर दी है और नये-विधान की बिक्री कर सम्बन्धी-धारा के कार्यान्वित हो जाने से मध्य प्रदेश की आय में लगभग १ करोड़ रुपये की कमी आकी गई है। कटनी की अल्यूमिनियम तथा कामटी की कोयले की खानों की योजना स्थगित कर दी गई है। बैनगंगा शोध-योजना का कार्य भी बन्द कर दिया गया है। अर्थमंत्री ने बताया कि रियासतों के विलिनीकरण के कारण प्रादेशिक सरकार का आर्थिक खर्च बढ़ गया है। ६१०००) रुपये इन रियासतों में फैले हुए गुप्त शारीरिक रोगों के लिये अलग किये गये हैं और निकट भविष्य में अंतर्राष्ट्रीय-स्वास्थ-संगठन के विशेषज्ञ इन रियासतों का दौरा इन रोगों के कारणों की जांच के लिये करने वाले हैं।

प्रादेशिक सरकार ने १ करोड़ ४१ लाख की बचत बताई है तथा नये कर आगामी वर्ष में नहीं लगाये जायगें। प्रांतीय सरकार यदि चाहती तो इस बचत की सहायता से जनता का कर का बोझ हल्का कर सकती थी तथा महत्वपूर्ण विकास-योजनाओं को कार्यान्वित कर सकती थी। इससे मुद्रा स्फीति रोकी जा सकती थी परन्तु केन्द्रीय सरकार ने अपने आय-व्ययक में बचत बताते हुए भी कर कम कर दिये हैं। महिला शिक्षकों के वेतन में वृद्धि करने के लिये १ लाख ४८ हजार रुपये अलग किये गये हैं और २½ लाख टन अधिक अन्न उत्पन्न करने के लिये ६७८०००) रुपये खर्च किये जायंगे। नेपा मिल्स (अखबारी कागज का कारखाना) और बल्लारपुर पेपर मिल्स को क्रमशः २ करोड़ तथा ४५ लाख रुपये का कर्ज दिया जायगा।

शिक्षा कमीशन

प्रांतीय धारा-सभा में शिक्षा मन्त्री श्री देशमुख ने घोषणा की कि शिक्षण पद्धति में आमूल परिवर्तन और सुधार करने के लिये प्रांतीय-सरकार एक कमीशन नियुक्त करना चाहती है। इस समय प्रांत में दो विश्वविद्यालय शिक्षण कार्य कर रहे हैं तथा पिछले पांच वर्षों में प्राँत में कालेजों की संख्या दुगनी हो गई है। इसी प्रकार हाई स्कूल और प्राथमिक शालाओं की संख्या भी दोगुनी से कम नहीं है। यह प्रगति दूसरे महायुद्ध के उपरांत ही हुई है। इसके अतिरिक्त इस प्रांत में शिक्षा के माध्यम का प्रश्न भी अत्यंत जटिल है। नागपुर विश्व विद्यालय में प्रायः शिक्षा का माध्यम हिन्दी और मराठी, कर दिया गया है; परन्तु सागर विश्व विद्यालय का दृष्टिकोण बिलकुल इसके विपरीत है, जिससे सभी अवगत हैं। अतः शिक्षा कमीशन की नियुक्ति अत्यंत सामयिक होगी।

महिलाओं की गुडों से रक्षा

गृह-मन्त्री पंडित द्वारका प्रसाद जी मिश्र ने मध्यप्रांत क्रिमिनल प्रोसीजर कानून की धारा ५०९ में संशोधन उपस्थित किया। आपने अपने भाषण में बतलाया कि प्रांत में लड़के और गुंडे राहगीर महिलाओं के साथ छेड़-छाड़ करते हैं। उक्तधारा में इसप्रकार की गुन्डागिरी से बचाव की सुविधा नहीं है और प्रांतीय सरकार को इस सम्बन्ध में अनेक शिकायतें प्रांत हुई हैं। इस संशोधन के अनुसार उपरोक्त श्रेणी के लोगों (गुंडों इत्यादि) को बिना वारन्ट के गिरफ्तार किया जा सकेगा। इस प्रस्ताव पर जनता की राय ली जायगी सन्सद सचिव श्रीमती वि. लावां... पांडे ने इसका समर्थन करते हुए कहा कि महिलाओं को यद्यपि समानता ... अधिकार प्राप्त हो चुका है फि... संक्रमण काल में सरकार उनकी ... का आवश्यक प्रबन्ध करे। प्रतिद्व... नेता श्री रूइकर ने इसके व्याव... रूप के सम्बन्ध में शंका प्रगट की।

मोटर दुर्घटनाएं

कुछ समय से मोटर दुर्घटनाओं ... संख्या जबलपुर शहर में बढ़ रही ... पिछले सप्ताह महाकोशल महावि... के विद्यार्थी श्री शरत देवस्थल की ... मोटर से दबकर हो गई। पिछले ... को एक ७ वर्षीय बच्ची की मृत्यु ... ट्रक से दब कर हो गई और पिछले ... वार को शहर के बाहर २ व्यक्ति ... ट्रक से दब गये इन घटनाओं के ... कई छोटी मोटी घटनाएं हर रोज ... करती हैं। पुलिस अब तक इन्हें रो... समर्थ नहीं हो सकी है। प्रादेशिक ... ने नागपुर में मोटर-यातायात ... नियंत्रण लगा दिया है। अब ... पुलिस मोटर ट्रकों पर कड़ी नि... रखती है। अतः शीघ्रातिशीघ्र ... दुर्घटनाओं को रोकने के लिये ... कड़ा कदम आवश्यक है।

अखिल भारतीय आर्डिनेंस ... रेशन की बैठक

उक्त फेडरेशन की कौशिल की ... नागपुर में शास्त्रागारों के मजदूरों ... महगाई आदि प्रमुख समस्याओं ... करने के लिये हुई। बेतन, छुट्टियों ... कर्मचारियों को रहने की व्यवस्था ... के सम्बन्ध में विचार विमर्श ... इसकी जनरल सेक्रेटरी श्रीमती ... बोस ने एक वक्तव्य में कहा है कि ... भी देश की सरकार के लिये बेरो... केवल शर्म की ही बात है बल्कि ... पर एक महान उत्तरदायित्व है। ... पत्र पर सरकारी एवं गैरसरकारी ... में होने वाली छटनी का बुरा ... पड़ा है। अतः मैं अनुरोध करती ... भारत सरकार फिलहाल छटनी ... कर दे। शास्त्रागार के मजदूरों ... छटनी के कारण काफी असंतोष ...

आंतक्रमण यदि पाकिस्तान की ओर से किसी समय हो गया तो उसका परिणाम भयावह होगा। युद्ध का उत्तर युद्ध से ही दिया जा सकता है। हम भविष्य-वक्ता तो नहीं हैं किन्तु पाकिस्तानी नीति को देख कर यह प्रगट हो रहा है कि मुस्लिम लीग के बड़े नेताओं की बुद्धि कुंठित हो गई है। वह मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना का स्वप्न देख रहे हैं। वह हिन्दुओं तथा भारतीयो की शाँति तथा समझौते की नीति को उनकी कायरता समझते हैं यही कारण है कि पाकिस्तानी अधिकारी मदांध हो उठे हैं। हमारी समझ में नहीं आता कि पाकिस्तान इस प्रकार की आक्रमणकारी नीति क्यों ग्रहण कर रहा है ? यदि दुर्भाग्य से भारत तथा पाकिस्तान में युद्ध छिड़ गया तो क्या पाकिस्तान विजय प्राप्त कर लेगा ? यदि पाकिस्तानी नेता विजयी होने का स्वप्न देख रहे है तो यह उनका काल स्वरूप मात्र है। भारत किसी भी स्थिति वह अवसर नहीं आने देना चाहता कि जिसका युद्ध के सिवा कुछ हल ही न हो सके किन्तु यदि युद्ध की ही स्थिति उत्पन्न हुई तो परिणाम भयावह होगा। फिर उस स्थिति को संसार की कोई भी शक्ति संभाल न सकेगी।

इसलिये समय रहते हम पाकिस्तान को सचेत करना चाहते हैं कि वह अब भी अपनी नीति में परिवर्तन करे साथ ही भारत सरकार को भी हम चेतावनी देते हैं कि वह आक्रमण का लोहा लेने के लिये पूरी तरह से तैयार हो जाये।

कानूनी गुलामी आज भी क्यों !

क्या समय रहते हमारी राष्ट्रीय सरकार चेतेगी ?

लेखक, डाक्टर जे० सी० कुमारप्पा

> देश की आर्थिक स्थिति कैसी है ? गरीब मजदूर और किसान आर्थिक कष्ट से परेशान है । आवश्यकता है कानूनी बंधन को अधिक से अधिक सरल किया जाये और साधारण जन को कष्ट न हो । इस लेख में चीनी की एक समस्या को विचार शील लेखक ने सरकार के सामने प्रस्तुत किया है जो विचारणीय है ।

हम लोगों को शासन की बागडोर सम्हाले अब कोई २॥ साल हो गये । इस अवधि में नेताओं लोगों को गांधी जी के नाम की दुहाई देकर सबुर (सब्र) करने और सरकार पर किसी प्रकार की टीका टिप्पणी न करने की अपील की । लेकिन अब समय आ गया है कि हम इस तथा कथित राष्ट्रीय सरकार की देश की आर्थिक हालत की सारसम्हाल का लेखा-जोखा कर लें । नीचे हम मदुरा जिले के नीलकोटाई तालुके में गत माह हुए एक वाकये का जिक्र कर रहे हैं ।

उस तालुका के बाड़ी पट्टी ग्राम में मदुरा शुगर एण्ड अलाइड पौडक्टस लि० नाम की एक नई शक्कर की मिल खड़ी हुई है । मिलवालों को अपनी मिल से पर्याप्त गन्ना प्राप्त करना सम्भव नहीं हुआ । आम तौर से इस भाग के किसान अपनी जमीन के चौथाई हिस्से में नकद रुपये पाने के दृष्टि से गन्ना बोया करते हैं । शेष जमीन में खास कर धान और अन्य खुराक की फसलें बोई जाती हैं । सरकारी आफत से बचने के लिये कई किसान आग्रह पूर्वक इस गन्ने की खेती से चिपके रहे क्योंकि गन्ना बोनेवालों पर सरकारी दबाव नहीं रहता । यहाँ मिलवालों ने अपनी मील खड़ी कर दी पर गन्ना मिलते रहने की कोई व्यवस्था उन्होंने नहीं की । यहां के किसान अपना गन्ना चर्खियों में पिर[illegible] लेते थे और उसका गुड़ बना कर मदुरा के बाजार में थोक व्यापारियों को बेच दिया करते थे । शक्कर की मिलवालों की लोभी दृष्टि इस गुड़ बननेवाले गन्ने पर पड़ी और उन्होंने उसे मिल के लिये प्राप्त करने के लिये षड्यंत्र रचा । उन्होंने उस दृष्टि से मद्रास सरकार की मार्फत १४ दिसम्बर १९४९ को हिन्दुस्तान सरकार के गन्ना कानून के अनुसार एक हुक्म जारी करवाया । इस कानून द्वारा सूबों की सरकारों को आवश्यक तौर से अपने अपने विभाग या सूबों की शक्कर की मिलों को गन्ना प्राप्त करा देना पड़ता है । मद्रास सरकार के इस हुक्म में ऐसा कहा गया कि उक्त शक्कर की मिल के ईर्दगिर्द के २१ मील के क्षेत्र के करीब १२२ गांवों के किसानों को गुड़ बनाने के लिये लाइसेन्स निकालना चाहिये । इस प्रकार मिलवालों ने निज़ी फायदे के लिये सरकारी सत्ता का पूरा पूरा उपयोग कर लिया ।

इस हुक्म का असर यह हुआ कि जिन किसानों को लाइसेन्स मिलने में दिक्कत हुई उन्हें विवश होकर अपना [illegible]ना गन्ना मिल को देना पड़ा ; क्योंकि [illegible]कार ने एक दूसरा हुक्म भी ऐसा [illegible]री कर दिया कि जो किसान गुड़ नहीं [illegible]येंगे उन्हें अपना गन्ना मिल को देना [illegible]। चाहिये और वह भी सरकार द्वारा [illegible]श्चित भाव से, ४६-१२-० टन के [illegible] से ।

उक्त तालुका के किसानों ने यह महसूस किया कि इन हुक्मों की बदौलत उनका गुड़ बनाने का सहायक या पुश्तैनी व्यवसाय छीन लिया जायगा और वे केवल मिल के लिये कच्चा माल पैदा करने वाले बन जावेंगे । इन हुक्मों के कारण उनके आर्थिक ढांचे में भी काफी उथल पुथल मचना सम्भव था, क्योंकि गुड़ बनाने के व्यवसाय में लगने वाले हजारों मजदूर बेकार होने वाले थे ।

इन हुक्मों के जारी होने के पहले ही पास के कोइमदूर जिले से हजारों मजदूर यहां आगये थे और उन्होंने अपना गुड़ बनाने का काम शुरू कर दिया था । इन हुक्मों की तामीली सरकार ने शुरू की उसके पहले ही बहुत सा गन्ना गुड़ बनाने के लिये कट चुका था ।

चीनी की समस्या पर माननीय पंडित गोविन्दवल्लभपंत भाषण दे रहे हैं ।

गुड़ बना कर उन्हें जो रकम मिलती वह उसमें से गुड़ बनाने का खर्च घटा कर के भी उन्हें मिल को गन्ना बेचने से जो रकम मिलती उससे १२ लाख ज्यादा रहती । इसलिये इन प्रति-बंधों के जारी होते ही किसानों में काफी सनसनी फैल गई, क्योंकि उसके कारण उन्हें १२ लाख रूपये का घाटा होने वाला था । इसके अलावा खेतीपर मजदूरी करने वालों की ५ लाख रुपयों की मजदूरी भी जाती रहती ।

इन गम्भीर परिणामों और किसानों के संगठित सत्याग्रह करने की धमकी के बावजूद सरकार अपनी ताकद के बूते पर किसानों को अपनी गन्ने की कुल पैदावार की एक तिहाई, राजी खुशी से मिल को देने के लिये राजी कर सकी । किसानों ने इस अन्याय और जबर्दस्ती से लादी हुई माँग के सामने सर क्यों झुकाया यह हमारी समझ में नहीं आया । जिस देश में पहले से ही दारिद्र और भुखमरी का बोलबाला हो वहां की "राष्ट्रीय" कहलाने वाली सरकार को ऐसे कोई कायदे कानून जारी नहीं करने चाहियें जिनके कारण लोगों का ऐसा गहरा आर्थिक नुकसान हो और उनमें बेकारी फैले । क्या "राष्ट्रीय सरकार का" यही कर्तव्य है ? क्या उसे अपनी ताकत का ऐसी मिलों को बढ़ावा देने के लिये उपयोग करना चाहिए ?

सरकार का दावा है कि निर्धारित की हुई गन्ने की दर ऊँची हैं । पर जब किसानों के उपभोग की सभी चीजों के भाव और खेती की उसकी लागत उससे कहीं बढ़ी चढ़ी है तब गन्ने के थोड़े से ऊँचे भाव का उसे क्या फायदा ? लोगों की कर्जदारी बढ़ गई हैं । उनके रहन सहन का दर्जा कुछ ऊँचा उठ गया है यह सही है पर उसके कारण ही उनकी आर्थिक तंगी भी बढ़ी हुई है ऐसा नहीं कह सकते । सब तरफ से विचार हो तो आज की उनकी हालत पहले से भी बदतर है ।

जैसा कि हम जिक्र कर चुके हैं कि किसान की कमाई का प्रधान जरिया धान और गुड़ की बिक्री ही है । सरकारी हुक्म के कारण गुड़ की बिक्री की उन की कमाई किस प्रकार मारी जा रही है यह हमने देख ही लिया है ।

युद्ध के पूर्व से आज के धान के भाव ५ गुने बढ़े हुये हैं । पर किसान की बुनियादी जरूरत की चीजों के भाव नीचे दिये मुताबिक बढ़ गये हैं । पुरानी धान की दर यदि हम १०० मानें तो उसकी आज की दर ५०० होगी । इसी हिसाब से अन्य वस्तुओं के भाव कैसे बढ़ते है यह नीचे दिखाया गया है :—

कपड़ा	—८००	मवेशी	१०००
तेल	७५०	गाड़ी	७५०
इमली	४००	लोहे के हार	१०००
ईंधन	५००	बिनौले	७००
मिर्च	८००	लोहे के औजार	१०००
खाद	७००		

इस से यह स्पष्ट है कि यद्यपि किसान की आमदनी ५ गुनी बढ़ गई है, उसके खर्च की मदों की कीमतें उससे कहीं अधिक बढ़ी हुई हैं । इसलिये तुलनात्मक दृष्टि से उनकी हालत पहले से खराब ही है । (यहाँ जो आंकड़े दिये गये हैं वे जल्दी जल्दी में और बहुत छोटे क्षेत्र की जांच के ऊपर आधारित है इसलिये संभव है कि उसमें कुछ संशोधन करना पड़े । इतनी बात तो स्पष्ट है कि सरकार का यह दावा कि किसानों को उनकी फ़सलों के दाम पहले से बहुत अधिक मिलते हैं और इसलिए उनकी आर्थिक हालत पहले से अच्छी है, बिल कुल असत्य और गलतफहमी पैदा करने वाली है । किसानों के हाथ का गुड़ बनाने का व्यवसाय छीनकर उसे मिल वालों के हाथों में दे देना देश की आर्थिक दृष्टि से बुरा ही है ।

यहां और भी एक असली बात कह देना अनुचित न होगा । बाजार में धान का भाव ४ गुना बढ़ा हुआ होने पर भी सरकारी लेव्ही में सरकार २½ गुना ही दाम चुकाती है । उसपर से यह जाहिर है कि सरकारी खरीद का भाव किसानों नुकसान पहुँचाने वाला हैं ।

हमारे सरीखे देश में किसान राष्ट्र की रीढ है उनके पूरक व्यवसाय छीनना और अपनी फसल बोने के लिये जो थोड़ा बहुत प्रोत्साहन उन्हें मिल सकता है उससे उन्हें वंचित रखना याने देश का सर्वनाश करने जैसा है । इस समय हमारे देश में अन्न की कमी है और आशा तो यही की जावेगी कि सरकार अन्न उपजाने में किसानों की कुछ सहा-यता ही करेगी । पर हमारी "राष्ट्रीय" कहलाने वाली सरकार उनके रास्ते में रोड़े डाल रही है । इसका परिणाम यही होगा कि आज नहीं तो कल देश पर बहुत बड़ी मुसीबत आ पड़ेगी । वैसे तो अभी भी देश में काफी असंतोष फैला हुआ है । क्या हम आशा करें कि हमारी सरकार ठीक निदान कर समय रहते ही चेत जायगी ?

नेताओं की मनोरंजक पोशाक

राष्ट्र का कौन नेता कैसा पहनावा पसंद करता है ?

लेखक, श्री उमाशंकर शुक्ल (पत्रकार)

संसार के राष्ट्र नेताओं की पोशाकें भिन्न भिन्न हैं भारत नेताओं की पोशाकें भी विचित्र हैं। कोई भारतीय धजा में है, साहबी धजा में और कोई खिचड़ी। इस लेख में लेखक ने नेताओं की पोशाकों का मनोरंजक वर्णन किया है जो पठनीय है।

पश्चिमी बंगाल के गवर्नर डाक्टर कैलाश नाथ काटजू

नेताओं के सम्बन्ध में किसी भी किस्म की जानकारी क्यों न हो लोग बड़े चाव से पढ़ते हैं। उनके स्वभाव, इनकी रहन-सहन, उनके खान-पान का जिक्र न कर आज हम उनकी पोशाक का ही जिक्र करेंगे।

डा० राजेंद्र प्रसाद

जनतंत्र भारत के राष्ट्रपति भले ही हो गये हैं-तो इसका मतलब नहीं कि वे अपनी पोशाक छोड़ देंगे। सफेद टोपी, लंबा कुरता या कमीज और घुटनों से थोड़ी नीची धोती। कन्धे पर चादर डाल लेते हैं। चमरौधा चप्पलें या जूते पहनते हैं। सफेद खादी की टोपी भी लगाने लगे हैं। ठंड के दिनों में बन्द गले का लम्बा कोट भी पहनते हैं।

पं० जवाहर लाल नेहरू

आपकी जवाहर जाकट तो "नेहरू जाकट" के रूप में प्रसिद्ध हो गई है। लम्बा कुर्ता उसके ऊपर जाकट और सफेद टोपी यही आपकी पोशाक। ठंड के दिनों में ऊनी या खादी का लंबा कोट भी पहना करते हैं। जब बैरिस्टर थे तब का तो छोड़िये। अब भी जब विदेशों में जाते हैं तो विदेशी पोशाक पहन लेते हैं।

संत विनोबा

बहुत से लोग यह समझते रहे हैं कि विनोबा भावे सेवाग्राम में रहते हैं पर यह बात नहीं वे बहुत दिनों से वर्धा से पांच मील दूरी पर स्थित पौनार के परमधाम आश्रममें रहते हैं उक्त आश्रम धाम नदी के सुरम्य तट पर स्थित है और वर्धा के सेठ जमनालाल बजाज ने बनवा दिया था। ताज्जुब नहीं कि किसी दिन पौनार को भी सेवाग्राम के समान महत्व प्राप्त हो जाय। हां तो विनोबाजी लंगोटी पहनते हैं और उसके ऊपर थोड़ा सा कपड़ा लपेट लेते हैं। यों तो चप्पल पहनते हैं और कभी कभी खुले पैर भी रहते हैं। विनोबा जी रचनात्मक कार्यक्रम के महान आधार स्तंभ है। उनका जीवन सेवा के लिये ही मानी है। अक्सर वे खुले बदन ही रहते हैं। कमीज और कुरता पहने तो मैंने कभी उन्हे नहीं देखा।

मध्यप्रांत के गृहमंत्री माननीय पंडित द्वारका प्रसाद मिश्र।

सरदार पटेल

खादी का लंबा कुरता, उसके ऊपर कागजों का ढेर रखने के लिये बनियाइन, घुटनों से थोड़ी नीची धोती खुला सिर। यही पोशाक है हमारे सरदार की। सिल्क या ऊनकी एक चादर गले में डाले रहते हैं।

राजाजी

सफेद कुर्ता पहनते हैं किंतु वह बहुत ही लंबा न होकर छोटा होता है। एक बार कमलनयनजी बजाज ने कहा कि क्यों राजाजी आप छोटा कुरता क्यों पहनते हैं तो राजाजी ने कहा कि आज कल देश में कपड़े की तंगी है इसलिए मैं छोटे ही कुरते पहना करता हूँ। धोती ज्यादा लंबी नहीं पहनते। काला चश्मा तो प्रसिद्ध है ही। खुले सिर रहते हैं। दुपट्टा या ऊनी शाल हमेशा अपने पास रखते हैं।

सीमांत गांधी

खान अब्दुल गफ्फारखां भूरे रंग की कमीज और सफेद पाजामा पहनते हैं। पावों में पठानी छप्पल रहती है। अब खादी की चादर भी पास रखने लगे हैं। अहिंसा उनका मूलमंत्र है और इस मामले में गांधी जी उनके गुरू हैं। आजकल पाकिस्तान सरकार ने नजरबन्द कर रखा है।

आसफअली

सफेद चुस्त पाजामा, लम्बी शेरवानी व खुला सिर—बस यही उनकी पोशाक है। पास में सिगरेट-केस अवश्य रहता है।

आचार्य कृपलानी

राजेंद्र बाबू के समान इन्हें भी अपनी पोशाक का कोई विशेष ध्यान नहीं रहता। सफेद लम्बा कुरता पहना है पर ध्यान नहीं है कि उसमें बटन बराबर लगे हैं या नहीं। धोती बंगाली बाबुओं की तरह पहनते हैं। लंबे बालों को तेल कभी कभी मिल जाता है जब याद आयी तो नहीं तो कोई जरूरत नहीं।

पुरुषोत्तमदास टंडन

चेहरे के आधे भाग को आच्छादित किये हुए, लम्बी दाढ़ी चमकती हुई आंखें, प्रभावशाली व्यक्तित्व और समझौता-पसंद मस्तक पर गाँधी टोपी। खादी के कुरता और धोती में भी आपका व्यक्तित्व निखर उठता है।

रविशंकर शुक्ल

मध्यप्रांत के प्रधान मन्त्री रविशंकर शुक्ल की राजनीति गले में पड़े हुये दुपट्टे से मिलती-जुलती है। कुरता, धोती और गांधी टोपी में खादी की सादगी और हृदय की स्वच्छता का दर्शन होता है।

शंकरराव देव

दाढ़ी और सर के बालों के विशेष अन्तर नहीं है। प्रायः एक चादर से शरीर ढके रहते हैं कभी कभी उसे भी उतार फेंकते हैं। अहमदनगर जेल में लुंगी पहन कर बैडमिंटन खेलते थे।

गोविंदवल्लभ पंत

चेहरे पर दो चीजें ध्यान आकर्षित करती हैं—विशाल मस्तक को आधा ढका रखने वाली गांधी टोपी और सार्वजनिक जीवन के अनुभव में सफेद हुई शानदार मूँछें। खादी की कुरता धोती की साधारण पोशाक में ही प्रांत का एक महान व्यक्ति छुपा हुआ है। पैरों में पहाड़ों पर चढ़ने की शक्ति रखता है। विरोधी उनकी कद्र करते हैं।

आचार्य नरेंद्रदेव

आचार्य जी का शोषण पूंजीपतियों ने नहीं दमाने किया है। दुबला पतला शरीर एक विशाल मस्तिष्क का भार ग्रहण किये हुये हैं जिसके अंदर समाजवाद का भविष्य छिपा हुआ है। इसके ऊपर आचार्य जी गांधी टोपी पहनते हैं। पोशाक में कोई नवीनता नहीं। युक्तप्रांत की वही राष्टरीय पोशाक कुरता-धोती।
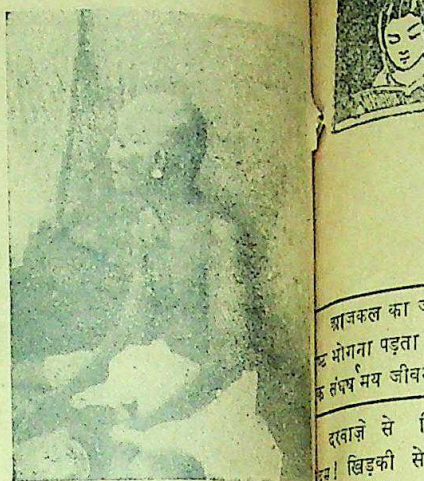
प्रसिद्ध गांधीवादी आचार्य विनोबा भावे।

प्यारेलाल

गांधीजी के प्राइवेट सेकेटरी को सिवा एक शर्ट या कुरते के और कुछ नहीं चाहिए। इसका मतलब यह नहीं कि वे लंगोटी लगाते हैं, वे धोती भी पहनते हैं। जब ठंड से सिकुड़ने की नौबत आती है तो उनकी बहन डाक्टर सुशीला नायर उन्हें ओढ़ने के लिये शाल दे दिया करती हैं।

पट्टाभि सीतारमैया

खादी का मोटा कुरता, कम से कम दस नम्बर के सूत का, कुरते से मोटी घुटनों के थोड़ी नीची धोती और गले में दुपट्टा यही है वेशभूषा डाक्टर पट्टाभि सीतारमैया की। चर्खा चलाते और सूत कातते हैं और अपने कते सूत के कपड़े पहिनना ज्यादा पसंद करते हैं।

जगजीवनराम

लम्बा कुरता, खादी की धोती जो जूतों को साफ करती है और सफेद टोपी बस यही है उनकी पोशाक। और जैसी ही पोशाक प्रायः सभी पहनते हैं। अब तो इसे राष्ट्रीय पोशाक कहा जाने लगा है।

(शेष पृष्ट १६ पर)

कामर्स कालेज वर्धा के प्रिंसिपल श्रीमन्नारायण अग्रवाल

अन्तिम-बार

लेखक, यशोविमलानन्द

आजकल का जीवन संघर्ष मय है। साधारण जीवन बितानेवाले को कितना ...भोगना पड़ता है, इसका अनुभव मुक्तभोगी ही कर सकता है। इस कहानी में ... संघर्ष मय जीवन का चित्रण बड़ी सुन्दरता से किया गया है, जो पठनीय है।

दरवाज़े से खिड़की तक पाँच ...! खिड़की से दरवाज़े तक पांच ...। 'वाहरे ज़िन्दगी ! कह उसने एक ... सांस ली और थककर बैठ ...। एक बार उसने चारों ओर दृष्टि ..., सीलन से भरी हुई अंधेरी कोठरी ...से सटा हुआ एक लकड़ी का ... और एक कोने में पुराने ...मोनियम का कटोरा और गिलास ! यही थी उसकी गृहस्थी, उस ओठे पर ...ने ही हत्यारे सो चुके थे, अब वह ... है और उसके बाद कितने ...! कितनों ने अपने जीवन की ...म नींद यहीं पूरी की, उसके बाद फांसी के तखते पर टांग दिए गये। ... पर सोने वाला अबतक कोई जीवित ...न सका। उसने फिर कभी मुक्त ...र जेल की चारदीवारी के बाहर ... की गर्मी और चांद सितारों की ...नता का अनुभव नहीं किया। यही ... जीवन का अंत था, यही उनके ... गाथा का अन्तिम अध्याय।

फिर उसने उस टूटे फूटे बर्तन की देखा। यह हत्यारों का बर्तन है। हत्यारे ही खा पी सकते हैं। इनमें ... ही हत्यारों ने अपने जीवन का ... ग्रास ग्रहण किया, अब वह कर ... और कितने ही करेंगे। उसने ...र उस छोटे से कमरे में चारों ओर और फिर एक भीषण अट्टहास से ...मरा गूंज उठा।

...यह हत्यारों की कोठरी है, इस में ... रहते हैं, मैं भी हत्यारा हूँ।

...र एक भीषण अट्टहास !

... लोहे के सिकचों से बने हुए ...के सामने गश्त लगाता हुआ ... सजग हो उठा। एक क्षण के ... ठिठक गया उसके कन्धे पर ...न्दूक सीधी हो गई।

...पाही को ठिठकते देख उसने फिर ...भीषण अट्टहास किया और सिपाही ...ा—'क्यों भाई सहम क्यों गये, ...सोचा होगा कहीं मैं भाग न जाऊँ। ...क भीषण अट्टहास।

...रे भाग कर कहां जाऊगा। फिर ...भीषण अट्टहास। उसके बाद वह ...गा, सन्तरी पुनः गश्त लगाने ... जा..., ...ला सुन्दर स्वस्थ शरीर ...पहरदाल के... ... भारत नारी के

जैसे थक सा गया था, घुँघराले बाल अस्तव्यस्त हो बिखरे पड़े थे, कई दिनों से तेल पानी का सहवास न होने से वे बहुत ही कड़े और भद्दे मालूम हो रहे थे। बड़ी बड़ी आँखें अन्दर धँस गई थीं, गोरा शरीर मैल की मोटी तह से अच्छी तरह छिप गया था। गरदन बुरी तरह काली पड़ गई थी। उसके आगे वह दृश्य नाच उठा जब उसने अपनी खूबसूरत बीवी के हृदय में तेज चाकू भोंक दिया था। एक हलकी सी चीख के साथ वह लम्बा रक्त में रंगा चाकू बाहर आ गया। समस्त कमरा उस लाश के गिरते ही रक्त से नहा गया, वह बेजान शरीर जमीन पर गिर पड़ा, फिर भी ऐसा मालूम हो रहा था जैसे रक्त की बूंदें टेसू के फूल के समान उस सुन्दर गौरवर्ण के शरीर को सुशोभित कर रही थी।

वह युवक जो संघर्ष का मारा था।

उसने अपने ही हाथों उस सुन्दरी के शरीर को लाल रक्त से रंग दिया, जिसके आज से पाँच वर्ष पूर्व उसने लाल सिन्दूर से माँग को भरा था। कितना परिवर्तन हो गया था उसमें ? जिसके बिना उसे कुछ भी अच्छा न लगता था उसे उसने एक क्षण में तहसनहस कर डाला।

कुछ देर के लिए आँखों में पानी की मोटी बूंदें आ गई किन्तु तुरन्त ही उसने अपने को सम्हाल लिया। ऐसा उसने क्यों किया ?

अपने कर्तव्य के लिए। अपने धर्म के लिए। अपने देश के लिए। किन्तु स्त्री की हत्या करना कर्तव्य नहीं। उससे वह देश की क्या सेवा कर सका ? नारी की हत्या देश की सेवा नहीं। किन्तु उसकी स्त्री को उसकी राजनीति में दखल देने का क्या हक था। क्योंकि वह समझती थी जो वह करने जारहा है उससे देश की हानि है।

उसने और उसकी पार्टी ने प्रोग्राम बनाया था। हिन्द के प्रधान मन्त्री की हत्या करेंगे, कांग्रेसी सरकार का नाश करेंगे, देश में चारों तरफ हड़ताल करेंगे, समस्त मिलें बन्द हो जावेंगी, साम्यवाद का प्रचार होगा, साम्यवादी सरकार होगी, आदि ! आदि।

वह अपनी पार्टी का नेता था, समस्त प्रोग्राम बना उसने सब कागजात अपने घरमें छिपाकर रख लिया, उसकी स्त्री बहुत समझाती अपनी पार्टी को छोड़ दो यह पार्टी देश का हित नहीं सत्यानास करती है। क्यों देश के प्रति विद्रोही बन रहे हो ? अपनी सरकार को सहयोग दो, जिन्हों ने कितने त्याग बलिदान और परिश्रम के पश्चात् अपने देश को आजादी दिलवाई उन्हीं के प्रति विद्रोह करना कहां तक सही है ? तुम्हारी पार्टी ने देश की आजादी के लिए कुछ भी नहीं किया। जब बलिदान का समय आया वह दूर खड़े तमाशा देखते रहे और आज इस आई हुई स्वतंत्रता को मिटाने का प्रयास कर रहे हैं। रेल की पटरी उखाड़ना, देश में अशान्ति फैलाना, देश की स्थित बिगाड़ना, तोड़ फोड़ मचाना ही तुम्हारी पार्टी का मूलमन्त्र है। इस पार्टी को छोड़ दो।

किन्तु उस पर इनमें से किसी की बात का प्रभाव न पड़ा और वह अपनी पार्टी के काम में आगे ही बढ़ता गया। धीरे धीरे उसकी पार्टी ने स्वतंत्र भारत में एक अपूर्व हलचल मचाने का निश्चय किया देश में साम्यवादी सरकार की स्थापना के नाम पर कितने ही अमानुषिक स्कीम बनी। वह उन सबका नेता चुना गया, सर्व सम्मति से उसे पार्टी ने अपना नेता स्वीकार किया। वह छिपे तौर से अपने घर में रात रात भर उन कागजात को तैयार करने में लगा रहता।

उसकी पत्नी को उस पर सन्देह हुआ वह समझ गई कोई बहुत बड़ी बात खड़ी होने को है और उस दिन से वह बहुत सतर्क रहने लगी। पहले तो उसने बहुत प्रयास किया कि वह अपने पति की अन्दरूनी बात को जान सके। किन्तु वह असफल रही।

अन्त में धीरे धीरे एक दिन जब उसका पति कहीं बाहर गया था उसने उनका पता लगा ही लिया। पति के टेबुल के नीचे उसने देखा कोई पटरा रखा है। उसने उसको उठाने का प्रयास किया किन्तु वह न उठा। उसने ध्यान से देखा वह जमीन से अच्छी तरह चिपटा था, उसने कठिन प्रयास के बाद उसे तोड़कर निकाल ही डाला। देखा उसके नीचे एक गहरा गढ़ा है उसमें बहुत से कागजात भी हैं, उन्हें निकालकर देखा तो सन्न रह गयी।

जवाहर को मारने की स्कीम, भारत में क्रान्ति मचाने की स्कीम। उसका जी धक से रह गया। क्या यही है उनकी देश सेवा ? क्या यही है उनकी पार्टी का मूलमंत्र ? देश की महान विभूतियों की हत्या करना, देश में अशान्ति फैलाना, चारों तरफ खून खराबी करना ही क्या साम्यवादी पार्टी की नीति है ? यदि यही साम्यवादी पार्टी की नीति है तो थू है ऐसी पार्टी को।

उसने और कागज देखे, विचित्र विचित्र कागजात थे, उन पर अजीब नकशे बने थे। वह उन सबको किस प्रकार नष्ट करे ? उसे और कोई युक्ति न सूझी तो वह झट अन्दर गई। एक दियासलाई ले आई और कमरा बन्दकर उस

...ढ़े में उन सब कागजात को रख उनमें आग लगा दी। धधक के साथ सब कागज जलने लगे। तब तक उसके पति आ गये उन्होंने दरवाजे को थपथपाया किन्तु उसने उसे न खोला। कमरे से धुँवा बाहर निकलते देख पति का हृदय अनेक प्रकार की आशंका से भरगया। उसने जोर से दरवाजा थपथपाना आरम्भ किया तबतक सब कागज जल चुके थे, उसने दरवाजा खोल दिया। पति तेजी से अन्द घुसे उन्होंने देखा उनके मेज के नीचे सेर उड़ उड़ कर जले हुए कागज के राख आ रहे हैं। उसने झांक कर देखा समस्त कागज जलकर राख हो चुके थे। वह शीघ्र ही सब परिस्थति को समझ गया, वह क्रोध से लाल हो उठा और दौड़कर अपने मेज की दराज में पड़े लम्बे छुरे को निकाल लिया और फिर उसके बाद···

उसके बाद वही हुआ जो अभी उसकी आँखों के आगे नाच रहा था।

क्षण भर में उसके पत्नी की लाश रक्तरंजित हो जमीन पर सो गई। किन्तु उसके चेहरे से अब भी गौरव टपक रहा था।

उसने यह क्या कर डाला?

पुलिस आई और उसे ले गई, उसे फाँसी का हुकम हुआ, वह अब अपने फांसी के दिन की प्रतिक्षा कर रहा था।

सहसा उसे दिखलाई पड़ा बापू उसकी स्त्री को अपने गोद में लिये हुए उसके सामने मुस्करा रहें हैं और उसकी पत्नी उससे कह रही थी, 'अब भी चेत जाओ देश के प्रति विद्रोह न करो।' वह काँप रहा था, उसकी आत्मा कह रही थी सचमुच तू देश द्रोही है।

वह तेजी से चीखपड़ा उसकी आंखों से पानी की बूंदे ढुलक पड़ीं जैसे उसे अपनी भूल पर पश्चाताप हो रहा हो।

रंगमंच

'पारस' और 'नमूना' कैसा है?

क्या यह दोनों फिल्म कला के स्तर को ऊँचा उठाते हैं?

लेखक, श्री वेद प्रकाश शर्मा एम० एस-सी०

'पारस' आल इंडिया पिक्चर्स की नवीन कृति है, भूमिका में कामिनी कौशल, मधुबाला, सुलोचना चटर्जी, गोप, रहमान, सपरू और कुकु हैं। कहानी कोई विशेष नहीं है और इसके विषय में 'कहीं की ईंट, कहीं का रोड़ा और भानमती ने कुनबा जोड़ा' वाली कहावत देखने को मिलती है। इसी कारणवश कहानी में कहीं कहीं ढीलापन आ जाता है और कुछ पात्रों की भूमिका बिलकुल अनुपयुक्त मालूम होती है।

आरम्भ में जुए के दुष्परिणाम के विषय पर जोर दिया जाता है, जिसके कारण एक कुटुम्ब की दुर्गति होती है और 'पारस' नाम के एक आलीशान महल के मालिक को आत्महत्या करनी पड़ती है। मालिक की मृत्यु के उपरान्त, जुआड़ी एक बेरहम जमीन्दार के रूप में आता है। इसकी लड़ाई पहले वाले जमीन्दार के लड़के से चलती है और इसकी लड़की का प्रेम इस लड़के के साथ चलता है।

वास्तव में तीन भिन्न भिन्न कहानियां साथ साथ चलती हैं, जो बाद में जाकर खलनायक के कारण मिल जाती हैं। कामिनीकौशल रहमान से प्रेम करती है। कामिनी का पिता सपरू उनके मिलन में रोड़े अटकाता है। इधर सुलोचना चटर्जी बीच में आ टपकती है, रहमान इसको बचाता है और यह रहमान से प्रेम करने लगती है, परन्तु बाद में वह सपरू से शादी कर लेती है जिससे कामिनी और रहमान की शादी में कोई बाधा न पड़े, मधुबाला सपरू से पीछा छुड़ाने पर जीने से गिर पड़ती है, वह पागल और बहरी हो जाती है और बाद में सपरू को मार डालती है, परन्तु इसका दोष सुलोचना के सिर मढ़ा जाता है।

आरम्भ में कहानी बहुत धीमी गति से बढ़ती है, परन्तु इन्टवल के उपरान्त जब भिन्न भिन्न कहानियों का जोड़ होता है तो इसमें जान आ जाती है और हृदय-ग्राही हो जाती है, इन्टवल से पहले कुकु का नदी किनारे नृत्य अच्छा है। चित्र में कुछ दृश्य अच्छे फोटोग्राफ किये गये हैं जैसे कुकु का नृत्य, साइकिल और मोटर की भिड़न्त और मधुबाला और सपरू का जीने से गिरना, इन दृश्यों की ... नहीं तब तक ... नि[...]लिये हम दिवेचा ... जा सकता। ... ना नहीं रह ... बहरहाल जो कुछ भी ... कि भारत नारी के रार

सकते। अनन्त ठाकुर का निर्देशन अच्छा है।

चित्र की सबसे बड़ी कमजोरी इसका संगीत है, गुलाम मुहम्मद का संगीत निर्देशन प्रशंसा के लायक नहीं है, सब से अच्छा अभिनय मधुबाला का रहा है जिसने एक गूंगी और बहरी लड़की की भूमिका बहुत अच्छी निभाई है। सुलोचना चटर्जी का अभिनय पहले से बहुत अच्छा है, परन्तु कामिनी अपनी भूमिका में नहीं जमी, सपरू चन्द्रमोहन के अभिनय की नकल करता है, परन्तु गोप की भूमिका बिलकुल बेबुनियाद प्रतीत होती है, रहमान का नायक के रूप में उतना हमको पसन्द नहीं मालूम हुआ, मालूम नहीं कि इनको नायक की भूमिका क्यों दी जाती है, जबकि यह चित्र के अन्त तक एक रूखा रूप धारण किये रहते हैं। नरगिस ने अपने एक लेख 'मेरे रजतपट के प्रेमी' जो नवम्बर ४९ की सरगम में प्रकाशित हुआ था, कुछ इसी प्रकार के विचार प्रगट किये थे।
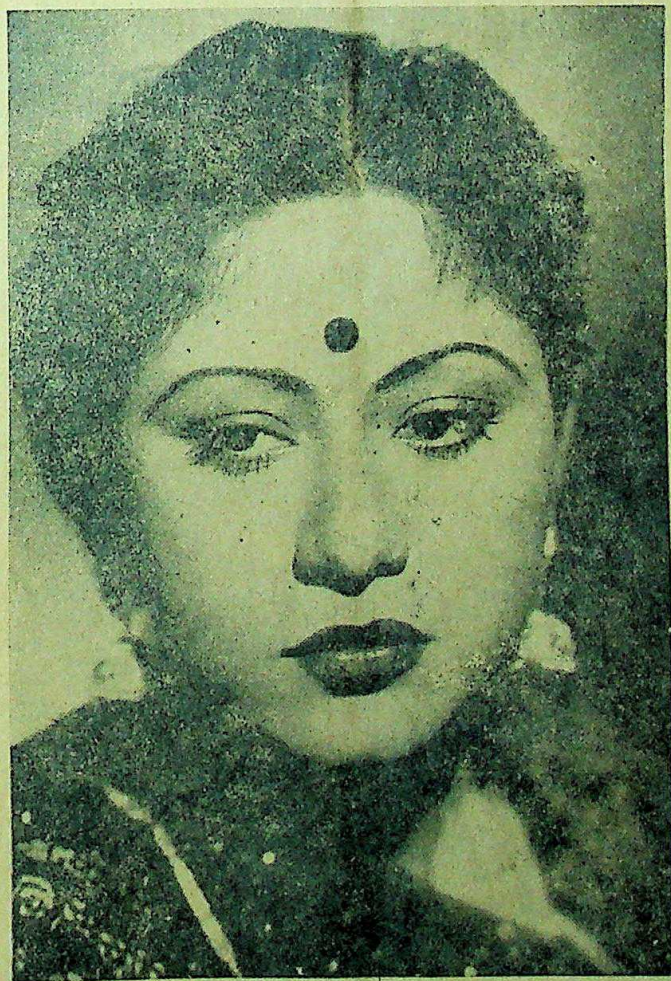
सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री सुलोचना चटर्जी

'नमूना'

'नमूना' एम० ऐन० टी० की प्रथम भेंट है। यह पहला अवसर है कि रजतपट पर कुछ अच्छे कलाकार जैसे कामिनी कौशल, लीला चिटनिस, किशोर शाहू और देव आनन्द एक साथ आये हों, चित्र में एक अच्छी कहानी ही जान डालती है और यह बात हमको 'नमूना' में मिलती है। डाक्टर जैन की लिखित इस कहानी में एक ऐसी माता की कहानी है जो अपनी नाजायज पुत्री को सामाजिक फटकार और द्वेष से बचाने के लिये सब कुछ करती है। हिन्दी चित्रपटों में ऐसी सामाजिक कहानियां बहुत कम देखने में आती हैं, इसलिये इस चित्र के प्रोड्यूसर हमारी बधाई के पात्र है।

कहानी एक कालिज से आरम्भ होती है जहाँ पर, देव एक शरणार्थी के रूप में कालिज में भारती होने आता है, यहां पर प्रिंसपिल के द्वारा इसकी भेंट कामिनी से होती है। किशोर साहू एक विद्वान बैरिस्टर और प्रेस के मालिक के रूप में आता है और कामिनी से शादी करने की इच्छा रखता है, परन्तु कामिनी और देव में इधर प्रेम हो जाता है, इस चित्र में यह प्रेम लीला मुख्य चीज नहीं है, क्योंकि मां मुशकिल और दुख भरी कहानी की यह शुरुआत है। कामिनी के प्रेम और शादी को तोड़ने की धमकी देकर एक बनारस का पंडा, जो वास्तव में गुंडा, है कामिनी के संरक्षक से रुपया वसूल करता है, उसकी यह ज्यादातियां दिन पर दिन बढ़ती जाती है, और एक दिन वह कामिनी की मां के साथ उस शहर में जहां कामिनी रहती है आ धमकता है। मां इस उलझन में पड़ जाती है कि इसकी बीस साल की मेहनत पर पानी पड़ने जा रहा है, परन्तु गुंडे को मां के बचपन का एक प्रेमी मार डालता है। इस खून के लिये मां और कामिनी के संरक्षक को हिरासत में ले लिया जाता है।

सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेता देवानंद और सुरैया।

मां जब अपनी दुख भरी कहानी इजलास में सुनाती है तो चित्र चरमकोटि पर पहुँच जाता है। जब वह अपनी जवानी की एक भूल और अपनी कन्या के लिये नाच और गाकर रुपया एकत्र करने के विषय में कथा सुनाती है तब दर्शकों के दिलों में टीस उठे हुए बिना नहीं रह सकती है। यद्यपि कहानी को मुकद्द में के बाद खत्म कर देना चाहिये था परन्तु कहानी आगे बढ़ती है। कामिनी और देव की शादी हो जाती है क्योंकि यह पता लगता है कि कामिनी और किशोर में बहिन भाई का संमबन्ध था।

यद्यपि चित्र की कहानी सुन्दर है परन्तु कहीं कहीं इसमें कमजोरियां हैं। देव को कामिनी की माता का भेद मुकद्दमें होने के बहुत पहले मालूम हो जाता है, परन्तु उसकी सहायता के लिये कुछ नहीं करता। कामिनी भी अपनी माता की, जो इसी के कारण दुनिया की शर्म सह रही थी, कुछ मदद नहीं करती।

चित्र के संवाद और गानों में जान नहीं है। यद्यपि संवाद श्री मोहनलाल बाजपेयी ने लिखे हैं, परन्तु उनमें वह ओज नहीं है, जो स्वयंसिद्धा के संवादों में था। गाने कहीं कहीं बहुत अश्लील हैं, जैसे 'खिड़की से झांको मत रानी जी, तांगे से तांगे लड़ जायेगें', इस गाने के साथ जो नृत्य है वह भी निहायत बेहूदा है। मालूम नहीं कि क्यों संसार की निगाह इस दृश्य पर नहीं पड़ी,

हीरा सिंह जो डायरेक्शन के क्षेत्र में नए हैं, बधाई के पात्र हैं। कलाकारों में

स्वास्थ्य और व्यायाम

आयुर्वेद-चिकित्सा

भारतीय आदर्श की रक्षा कीजिए

लेखक, श्री सभाकांत झा वैद्य

प्राचीन काल में हिमालय के पाद देश में आरण्यक गण समवेत होकर जनता के रोग मुक्ति की बातें एवं स्वास्थ्य रक्षा की बातें सोचते थे। निरोग के उपायों का अनुसंधान करते थे इस भावना में उनकी जन कल्याण वृति ही मुख्य थी। जन कल्याणार्थ प्राचीन आर्यों ने जिन उपायों का अनुसंधान किया उसी का नाम आयुर्वेद हैं। जन कल्याण में सामूहिक भाव से आयुर्वेद का लगाया जाय तो राष्ट्र का कल्याण तो होगा ही साथ ही उसपर किसी प्रकार का दायित्व नहीं पड़ेगा। उन्हीं तत्वों का आर्यों ने विश्लेषण किया था। यानी आयुर्वेद का जन्म मुख्यत: जन कल्याण के लिये हुआ गौणत: राष्ट्र का प्रयोजन था। केवल आयुर्वेद का जन्म नहीं उसका सर्वांगीण विकास उसी एक नीति पर प्रतिष्ठित था। केवल वृति भोगी आयुर्वेद से ही पैदा करना उनका उद्देश्य नहीं था। वे लोग आयुर्वेदिक धार्मिक थे।

आयुर्वेद विज्ञान के रूप में ग्रहण करने पर आयुर्वेद कृत्रिम न होकर उसे आयुर्वेद धार्मिक बनना पड़ेगा। जो लोग आयुर्वेद धार्मिक होने की वास्तविक मनोवृति दिखायें उनकी अग्नि परीक्षा कर राष्ट्र को उनका पोषण करना पड़ेगा। राष्ट्र को यही उत्तरदायित्व लेना पड़ेगा। जिस दिन से राष्ट्र ने इस उत्तरदायित्व से नाता तोड़ा यानी भारत में परराष्ट्र की स्थापना हुई। उसी दिन से आयुर्वेद धार्मिकों का अभाव हो गया और आयुर्वेद वृत्तिकों की वृद्धि होने लगी एवं उसका अवश्यम्भावी फल गत सैकड़ों वर्षों से जो होना था वह हुआ है। आज आयुर्वेद धार्मिकलोग नहीं है सभी आयुर्वेद वृत्तिक बन गये है। यही है आयुर्वेद का अतीत और वर्तमान। केवल वृत्तियोगी द्वारा विज्ञान विकसित होने पर भी वह जनता के अनुरूप नहीं होगा। नवविज्ञान सम्मत चिकित्सा का इतिहास पूर्ण रूपेण स्वतंत्र है। अन्यतम प्रत्यक्ष विज्ञान रूप में आज समाज में उसने शोभनीय स्थानअधिकार कर रखा है किन्तु जन कल्याण के प्रयोजन के लिये उसका जन्म व विकास नहीं हुआ है।

राष्ट्ररक्षा के प्रयोजन से उसका जन्म और सृष्टि हुई है। विदेशी राष्ट्र ने अपनी धनलिप्सा और ज्ञानलिप्सा को चरितार्थ करने के लिये एवं विक्रेता के रूप में आधिपत्य विस्तार के लिए इस विज्ञान का प्रयोजन अनुभव किया था। विज्ञान भी इसी आदर्श पर विकसित हुआ। इसलिए आज सौ वर्षों के नव चिकित्सा विज्ञान ने मात्र कतिपय धनिकों के घर में प्रवेश किया है एवं कतिपय दरिद्रों के प्रति अनुकम्पा दिखाई है। सरकार इस विज्ञान की सृष्टि के प्रयोजन के लिये विद्वानों के एक दल का भरण पोषण कर उसका उपादान संग्रह करा रही है एवं धनिकों का एक दल उसका उपभोग कर रहा है। दरिद्र सम्प्रदाय अनुकम्पा का प्रार्थी हैं एवं मध्यवित्त सम्प्रदाय मोहग्रस्त होकर उसके पीछे दौड़ रहा है। इस प्रकार एक विज्ञान—उसमें वैज्ञानिकता कितनी भी क्यों न हो कभी भी—सर्व जनग्राही नहीं हो सकता है। भारतवर्ष का रूप में विकास करने पर इस विज्ञान से मुक्त होना ही पड़ेगा। नव विज्ञान के साथ आयुर्वेद का योजना द्वारा चिकित्सा विज्ञान का मेल कराने की बातें पाश्चात्य भावन के मानने वाले करते हैं, यह बिलकुल असंभव हैं। जो सैकड़ों वर्षों के क्रम विकास से प्राप्त हुआ है एवं समाज के देह में अति सूक्ष्मरूप में घुलमिल गया है उसको एक दूसरी नयी धारा के साथ मिलाने की योजना कृत्रिम है। अब स्वतंत्र भारतको यदि सही सही वास्तविक रूप में जीवित रहना है तो उसे अपने चिकित्सा विज्ञान की अंगप्राप्ति के लिये उपर विज्ञान की कुछ अंशों को लेकर हजम कर लेना पड़ेगा। हां! इस बात का पूरा ध्यान रखना पड़ेगा कि यह सब समयानुकूल और राष्ट के अनुकुल होना चाहिए। इस कार्य को सुन्दर रूप में सम्पन्न करने के लिये स्वतंत्र भारत को आरण्यकों का दल गठित करना पड़ेगा केवल कतिपय वृत्तियोगियों का आहरण कर उनके ऊपर आयुर्वेद के उद्धार का उत्तरदायित्व प्रदान करने पर भारत के आदर्श की रक्षा न हो सकेगी। सरकार यदि ईमानदारी से काम नहीं करेगी तो आयुर्वेद का पुनरुद्धार संभव नहीं है। आज आयुर्वेद के जो लोग कर्णधार हैं, हो सकता है वे आयुर्वेद वृत्तिक न हों लेकिन पाश्चात्य भावना से पुष्ट पोषक तो है ही। इन दो श्रेणियों के बीच से आयुर्वेद के आरण्यक पैदा नहीं किये जा सकते। इसलिए जनता के लिये जो आयुर्वेद प्रयोजनीय है वह राष्ट्र के प्रयोजनीय आयुर्वेद से भिन्न है। आयुर्वेद का मुख्यतः जनता के हित एवं गौणतः राष्ट्र के हित के लिये विकसित करना ही भारतीय चिकित्सा विज्ञान की एक मात्र विशेषता है। इसी तत्व की उपलब्धि कर आयुर्वेद उद्धारके कार्य में कटिबद्ध होना पड़ेगा।

(पृष्ठ ६ के आगे)

सब से श्रेष्ठ अभिनय लीला चिटनिस का है जो अभागिन माँ के रूप दर्शकों के हृदय में अपना एक स्थान बना लेती है। किशोर शाहू ने बेरिस्टर के रूप में अच्छा अभिनय किया है। कामिनी कौशल का अभिनय मध्यम है, परन्तु देव आनन्द अपनी भूमिका में ठीक नहीं अभिनय कर पाता है। चित्र में शान्ती मधोक और कुक्कों के दो नृत्य हैं, यद्यपि चित्र में कमजोरियां है, परन्तु कहानी के कारण एक बार देखा जा सकता है।

मातृमंदिर

जनतंत्र और स्त्रियाँ

महिलाओं का क्या कर्तव्य है ?

लेखक, श्रीमती रामेश्वरी नेहरू

२६ जनवरी एक मुबारिक दिन है। वर्ष हुए जब हमारे देश ने इस को पहली बार, गांधी जी के पथ र्शन में आज़ादी दिवस मान कर ...ा था। उस समय देश में गुलामी विदेशी राज था, अत्याचार और ...ा था, देश के वीर नर नारियों ने, ...के दिन की आशा बड़े बड़े त्याग ...ेल गये, लाठिया खाई, और ...ी रही और बहुतों ने जाने भी खोई ...में से बहुतों को यह आशा नहीं थी हमारे जीवन काल में ही यह शुभ ...देखना हमको नसीब होगा। परन्तु ...जी के तप और त्याग ने हमारे ...प्रयत्नों को इतनी सफलता दी, कि ...वैधानिक रूप से भारत एक प्रजा-तन्त्र राज्य घोषित किया गया है। इसमें ...धर्म जाति, और लिंग का कोई ...द नहीं रक्खा गया है। हमारे नये ...विधान में देश के सब रहने वालों को ...न अधिकार दिये गये हैं। स्त्रियों को पुरुषों के बराबर ही पूरे नागरिक हक ...हैं। जीवन के हर पहलू में वे ...के समान आजाद हैं। हर बालिग ...वोट दे सकती है। विधान सभाओं ...प्रतिनिधि बन सकती हैं। देश की ...और गैर सरकारी संस्थाओं में हर ...का काम भी कर सकती हैं, और ...भी पा सकती हैं। धनोपार्जन कर ...हैं। उसकी पूरी मालिक भी हो ...हैं। व्यापार कारखाने चला सकती ...के समान ही ठेके ले सकती है ...यह कि, नये विधान के मुताबिक ...उनके रास्ते में कोई रुकावट नहीं ...है, यहाँ तक की मैं ऐसा समझती ...जो पुराने कानून ऐसे प्रचलित ...में स्त्री पुरुष में भेद किया गया ...कि जायदाद की मिलकियत के ...हिन्दु लॉ है, उन पुराने कानूनों ...इस नये विधान को रद करना ...। यदि ऐसा न हो तो, जिस मूल ...को लेकर यह विधान बनाया ...है, वही पूरा नहीं होता, परन्तु ...के दाव पेचों को तो, कानूनी ...ही पूरा समझ पाते हैं। और ...फेडरेल कोर्ट से इस प्रश्न का ...नहीं तब तक निश्चय कुछ नहीं ...जा सकता।

...हाल जो कुछ भी हो, यह स्पष्ट ...भारत नारी के रास्ते में, अब

श्रीमती रामेश्वरी नेहरू

कोई कानूनी रुकावट नहीं रह गई है। नये विधान के बनने से पहिले भी स्थिती कुछ ऐसी ही थी, कानूनी रुकावटे पहले भी बहुत कम थीं। परन्तु अब इस सिद्धांत को वैधानिक अथवा कानूनी रुप देकर भारत की ३० करोड़ जनता के नाम पर, नर नारी की समानता के सिद्धान्त को माना गया है। इसलिए भारत की नारी अपने हकों की प्राप्ति में, एक कदम और आगे अवश्य बढ़ी है।

परन्तु हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिये, कि कानून ही सब कुछ नहीं है। कानूनों के बन जाने पर भी यदि हम में उनसे फायदा उठाने की शक्ति नहीं, और जनमत कानून के खिलाफ हैं, तो कानून का मूल्य कुछ भी नहीं। हम अपनी आंखो से देखते है, कि जनमत विपरीत होने से कानून केवल निर्जीव पुस्तकों में लिखा रह जाता है, जिस पर कोई अमल नहीं करता। इस लिए जो कानून बनाया गया है। उस को सजीव बनाने और उससे पूरा लाभ उठाने के लिए दो बातों की जरूरत है। (क) पहिले यह की स्त्रियां अपने अन्दर ऐसी शक्ति पैदा करें कि कानून से जो हक उन्हें मिले हैं, उसका वे पूरा उपयोग कर सकें—(ख) दूसरा यह कि, जनमत स्त्रियों के अनुकूल हो।

सब जानते हैं, कि हमारे देश में, शक्ति को स्त्री के रूप में देखा गया है। साथ ही यह भी किसी से छिपा नहीं है, कि आज वह शक्ति स्त्री में नहीं है। मैं ऐसा मानती हूँ, कि स्त्री ने अपनी अकर्मण्यता से ही अपनी शक्ति को खोया है। क्योंकि, हर स्त्री और पुरुष अपने को आप बनाता है, या बिगाड़ता है। त्याग, तपस्या और परिश्रम, और धर्म्म पालन से ही यह शक्ति पैदा होती है, जिससे व्यक्ति को हक मिलते हैं। हकों को मांगने के लिए, कहीं जाना नहीं पड़ता। उत्तरदायित्व के साथ धर्म पालन से वह स्वयं हासिल हो जाते हैं। इतिहास इस सचाई को दिखाता है, और हमने अपने देश में अपने आप आंख से भी इसे देखा है।

इङ्गलिस्तान में स्त्रियों ने बहुत वर्षों तक कड़ा आन्दोलन वोटाधिकार प्राप्त करने के लिए किया, जिसका विरोध होता रहा, परन्तु जब उन्होंने १९१४ १८ की पहिली बड़ी लड़ाई में, त्याग और शान्ति के साथ देश की सेवा की, तो लड़ाई खतम होने पर, बिना विरोध के सर्व सम्मति से अंग्रेजी जनता ने, पुरुषों के समान ही, बिना किसी शर्त के हर एक बालिग स्त्री को वोट का अधिकार दे दिया। ऐसे ही हमारे देश में गांधी जी की पुकार पर उनके साथ सत्याग्रह आन्दोलन में, जब स्त्रियों ने भाग लिया, तो बिना माँगे या किसी बड़े आन्दोलन को चलाए ही, उन्हें वोट का अधिकार मिल गया, और जैसा कि मैंने पहले कहा है, नए विधान में स्त्री, पुरुष का कानूनी दर्जा बिलकुल बराबर का दिया गया है। अब यदि हम स्त्रियां नये भारत में, अपने उत्तरदायित्व को पूरी तौर से समझ कर पूरा करेंगी तब ही हम अपने दर्जे को प्राप्त कर सकेंगी। तब ही जनमत हमारे पक्ष में बनेगा। परन्तु यदि हम स्वार्थ, विलासिता और भोगी जीवन के प्रलोभन में पड़ जावेंगी तो हमारी स्थिति वैसी की वैसी बनी रहेगी और विधान में कानूनी अधिकार मिलने के बावजूद भी, व्यवहारिक रूप से हमारी दशा में कोई अन्तर नहीं पड़ेगा।

इसलिए हमारा फर्ज है, कि हम में से हरएक बहिन, समाज की कुरीतियां दूर करने में संलग्न हो। दूसरे की ओर न देखकर अपना फर्ज पूरा करें। अज्ञानता, पर्दा, बहु विवाह, जहेज लेने-देने की कुरीति, स्त्रियों का आर्थिक संकट, जिन कारणों से स्त्रियाँ दुःख उठा रही हैं, उनको यदि हम चाहें तो आप ही दूर कर सकती हैं। बिना इन कुरीतियों को दूर किये, जो राजनैतिक हक हमें मिले हैं, वे सब निष्फल हो जावेंगे।

सम्पादक के नाम चिट्ठियां

गुरुकुल कांगड़ी और राष्ट्रीय सरकार

लेखक, इन्द्र विद्यावाचस्पति

लगभग ४० वर्ष पहले की बात है कि अंग्रेजी सरकार के बड़े बड़े सफसरों ने गुरुकुल कांगड़ी में काम जारी किया था। उस से पहले गुरुकुल सरकार की दृष्टि से दो युगों में से गुजर चुका था। प्रारम्भ के कुछ वर्षों तक सरकार ने यह समझ कर गुरुकुल की उपेक्षा की कि वह एक छोटी पाठशाला है, जैसे देश में और बहुत सी अन्य पाठशालायें हैं थोड़े से वर्षों में ही सरकार का और सर्वसाधारण को भी अनुभव होने लगा कि वह केवल एक नई पाठशाला नहीं है, प्रत्युत शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति उत्पन्न करने वाली एक अनूठी संस्था है, जो आग की चिनगारी की तरह सारे बन में फैल जाने की शक्ति रखती है। विदेशी सरकार क्रांति से बहुत डरती थी। जब उसने अनुभव किया कि गुरुकुल कांगड़ी शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति पैदा करने वाली संस्था है, तो वह घबरा उठी और गुरुकुल के दमन का यत्न करने लगी।

कुछ वर्षों तक सरकार ने गुरुकुल को दबाने का यत्न जारी रखा, परन्तु उस से कोई लाभ न हुआ। दबने की जगह गुरुकुल की लोकप्रियता बढ़ती ही गई। यह देखकर सरकार के ऊंचे अधिकारियों ने अपना रुख बदला और दमन के मार्ग को छोड़ कर गुरुकुल के प्रति साम और दाम की नीति का आश्रय लिया। यू० पी० के उस समय के लेफिटनेन्ट गवर्नर सरजेम्स मेंस्टन एक से अधिक बार गुरुकुल में आये, और उन्हीं की प्रेरणा से उस समय के वायसराय लार्ड चेम्सफोर्ड ने भी गुरुकुल में यात्रा की। उस यात्रा के प्रसंग में ही बात चीत के सिलसिले में वायसराय की ओर से उस समय के आचार्य तथा मुख्याधिष्ठाता महात्मा श्री मुंशीराम जी को यह इशारा दिया गया कि यदि गुरुकुल के संचालक चाहें तो उन्हें सरकार की ओर से एक लाख रुपये की वार्षिक ग्रांट के अतिरिक्त अंजनी का जंगल भी दिया जा सकता है। महात्मा जी ने उस उदारता भरे संदेश को मछली पकड़ने का एक जाल समझा और उस में फंसने से इन्कार कर दिया उसके पश्चात् अंग्रेजी सरकार की ओर से गुरुकुल के साथ उपेक्षा का व्यवहार होता रहा जब राष्ट्रीय आन्दोलन अधिक उग्र हो गया, और गुरुकुल के ब्रह्मचारी और अध्यापक उस में भाग लेकर जेलों में जाने लगे, तब नौकरशाही सरकार का रुख फिर बदला और गुरुकुल पर तरह तरह की कठोरतायें होने लगी। गुरुकुल के संचालकों ने प्रारम्भ काल की उपेक्षा और मध्यकाल की कृपा की भांति आन्दोलन काल के दमन और अत्याचारों का भी शान्तिपूर्वक सहन किया।

प्रत्येक रात्रि के पश्चात् प्रभात आता है और अन्त में भारत के अन्तरिक्ष में दासता के अन्धकार को छिन्न-भिन्न करके स्वाधीनता के सूर्य का उदय हुआ। गत ५० वर्षों में गुरुकुल कांगड़ी के अतिरिक्त अन्य भी अनेक संस्थायें विशुद्ध राष्ट्रीय दृष्टिकोण से शिक्षा देने के लिये बनाई गई परन्तु उन में से बहुत ही कम जीवित रह सकी जो जीवित रह सकीं, वह भी नौकरशाही सरकार से थोड़ा बहुत सहयोग प्राप्त करके। गुरुकुल एक ऐसी संस्था थी जिस ने नौकरशाही सरकार से कोई सहयोग प्राप्त नहीं किया और जीवित बच गई।

१९४७ के शुभ वर्ष में भारत में स्वाधीनता शासन का अवतरण हुआ। स्वाधीनता के इस नये युग में गुरुकुल का दृष्टिकोण भी नया हो गया। अब इस की दृष्टि में सरकार से सहायता प्राप्त करना कोई अपराध नहीं रहा, जब सरकार अपनी है, तो उस से सहयोग और सहायता लेना न केवल इतना ही कि बुरा नहीं, वह तो आवश्यक है। कोई भी साँस्कृतिक संस्था राजासाहब के बिना यथेष्ट उन्नति नहीं कर सकतीं। गुरुकुल को यदि भारत की प्राचीन तक्षशिला और नालिन्दा के विद्यालयों की भांति एक महती संस्था बनाना है तो उसके लिए राष्ट्रीय सरकार से सहायता प्राप्त करना अनिवार्य है इस विचार से गुरुकुल के संचालकों ने राष्ट्रीय सरकार से सहायता की मांग की और मैं सन्तोष पूर्वक कह सकता हूँ कि वह प्राप्त हुई। उत्तर प्रदेश की सरकार ने न कोई विलम्ब किया और न शंकोच। जैसे किसान अपनी खेती को सीचने के लिए समय पर पानी देता है, उत्तर प्रदेश की सरकार ने उसी तरह गुरुकुल की ओर सहायता का हाथ बढ़ा कर अपनी सहृदयता का परिचय दिया है और निरन्तर दे रही है देश के पंजाब, बिहार, मध्यप्रदेश, बम्बई आदि प्रांतों की सरकारों ने भी गुरुकुल की विद्यालंकार उपाधि को अन्य विश्वविद्यालयों की बी० ए० उपाधि के समान अंगीकार करके गुरुकुल के प्रति आत्मीयता दिखाई है।

जहां स्वराज्य की स्थापना के प्रारंभ से ही प्रांतों की सरकारों की ओर से गुरुकुल के प्रति नैसर्गिक आत्मीयता का प्रदर्शन किया जाता रहा है। वहाँ अब तक इस बात पर थोड़ी बहुत मानसिक बेचैनी रही है कि केन्द्रीय सरकार ने गुरुकुल के प्रति आत्मीयता की भावना को स्थूल रूप से प्रकाशित नहीं किया। स्वभावतः सरकार की मशीन भारी होती है। वह किसी काम के लिये आसानी से नहीं चलती। संभव है। इसी कारण अब तक केन्द्रीय सरकार का ध्यान गुरुकुल की ओर आकृष्ट नहीं हो सका था। अब इस शुभ समाचार ने देश के राष्ट्रीय शिक्षा प्रेमी हृदयों में उत्साह की नेक लहर सी उत्पन्न कर दी है कि गुरुकुल कांगड़ी की स्वर्णजयन्ती के अवसर पर भारत के लोकप्रिय राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद जी पधारेंगे और दीक्षान्त भाषण देंगे यह गुरुकुल की जीवन यात्रा में एक नये युग का प्रारम्भ है। गुरुकुल कांगड़ी के संचालकों ने ५० वर्षों तक स्वाधीनता के आश्रय में घोर तपस्या की है। उसका फल वह सिवाय उसके कुछ नहीं चाहते कि राष्ट्र और राष्ट्र की सरकार मिलकर उन्हें गुरुकुल कांगड़ी को भारत की प्राचीन और अर्वाचीन संस्कृति का सर्वोत्कृष्ट शिक्षण केन्द्र बनाने में सहायता दें। मुझे आशा है कि राष्ट्रपति के गुरुकुल में पधारने से राष्ट्र और राष्ट्रीय सरकार का ध्यान इस ओर आकृष्ट होगा और गुरु कुल के सेवक की लम्बी तपस्या सफल होगी।

इधर उधर की

मछलियों को फँसाने का सिगनल

ऐसा पता चला है कि एक ऐसे सिगनल का अविष्कार किया गया है जो मछलियों को जाल में फाँसने का संकेत करता है। यह सिगनल जाल में लगा रहता है और मछलियों के न फंसने तक रोशनीं होती रहती है। ज्यों-ज्यों मछलियां फंसने जाती हैं, त्यो-त्यों उसका प्रकाश धीमा होने लगता है।

❀ ❀ ❀

सोने के दाँत उखाड़ कर भोजन का मूल्य चुकाया

दक्षिणी फ्रांस से सोना देकर भोजन खरीदने का एक मनोरंज़क समाचार मिला है। यहाँ शत्रु से सहयोग करने वाला एक धनी हंगेरियन बेरन यूजेन डे वेलिटनी रहता था। इसे गोली से उड़ा देने की सजा दी गई थी।

मरने से पूर्व बेरन ने भर पेट सुन्दर स्वादिस्ट भोजन करने की इच्छा प्रकट की। जेल के वारडरों ने इसका प्रबन्ध कर दिया परन्तु जब भोजन के दाम देने का समय आया तो पता चला कि बेरन के पास एक पैसा भी नहीं है। वारडर चक्कर में पड़े इस पर बेरन ने कहा कि किसी दाँत के डाक्टर को बुला कर उनके सोने के दाँत उखड़वा कर भोजन का दाम चुका दो।

ग्राहकों, एजेंटों और वि... पनदाताओं को समस्त पत्र ... व्यवहार मैनेजर, 'देशदूत' इलाहाबाद के नाम पर ही करना चाहिए

पिछले अङ्कों का सारांश

[मोहनलाल, उसका चचेरा भाई तोता और उसकी पत्नी रोनी, साधारण तथा गरीब किसान का जीवन। दो बैल, एक दुधारू भैंस और थोड़ी सी खेती। यही उनकी निधि थी। खेत पक गया था। मोहनलाल, तोता तथा रोनी ने खेत की कटाई की और खलियान लग गया। जिन्हें ...ने का ठिकाना नहीं था, उन्हें आशा हुई कि मड़ाई होने के बाद ही उन्हें दोनों वक्त कम से कम रोटियाँ मिलने लगेंगी और बैलों तथा भैंस को चारा ...कुछ दिनों के लिये हो जायेगा। किन्तु उर्भगम का समय, खलियान में एकाएक जमींदार के सिपाही आ पहुँचे, और जोर-जबरदस्ती करके ...अनाज के ढेर का तीन हिस्सा बैलगाड़ी पर लाद ले गये। मोहनलाल और रोनी ने दया की प्रार्थना की किन्तु जमींदार के सिपाहियों ने एक न ...नी। खलियान में अनाज के ढेर का केवल चौथाई भाग वह छोड़ गये। मोहनलाल और रोनी का हृदय भावी चिंता से व्याकुल हो उठा। ...फिर.........]

...के आगे

(१०)

...दत खां के मथुरा पहुँचने के ...बाजीराव ने चम्बल की घाटियों ...कर दिया था। इधर सादत खाँ ...समुद्दौला दावतों और नृत्यों की ...में मग्न थे। इधर बाजीराव ...मील रोज़ की यात्रा करके दिल्ली ...में जा धमका। तब उनको ...चार मिला। उन दोनों ने आतुरता ...साथ अपने तम्बू उखाड़े और दिल्ली ...आगे प्रस्थान किया।

...परन्तु साथ में भारी भरकम सामान ...था। नाचने गानेवालियों डेरे, ..., बोझिल तोपखाने, बेहिसाब ...और तकिए, हुक्के, मशालें, ...यां, गहने, कपड़े, पैर ...वाले हुक्के, भरने वाले, नौकर, ..., बांदियां, हरम। बितनी भी ...करते ये सब तेज़ी के साथ कैसे ...सकते थे? साथ में पचास हजार से ...सवार भी थे जोर सरपट मार कर ...पर दिल्ली पहुँच सकते थे, परन्तु ...चले जाने पर बाकी सामान की ...कौन करता? कहीं बाजीराव ...साथ तोपें हुई तो निरे सवार मराठा ...का क्या कर लेंगे? और ...बाजीराव दिल्ली को छोड़ कर ...अरक्षित सामान पर टूट पड़ा तब ...होगा?

...सिर पर पांव रखकर चलें तो परि-...क्या होगा? मीर बख्शी और ...ने सोचा। वे जितनी व्यग्रता ...थे की। रात को ठहरना ही ...था लड़ाई के साथ तो खाना, ..., सोना, इत्यादि भी तो लगा हुवा ...लड़ाई हो सकती है वह तो चलता ...चाहिये। उन दोनों के मन में ...दिल्ली के किले में बहुत सी तोपें हैं, बीस पच्चीस हजार सिपाही हैं, खाने पीने के लिये अटूट सामग्री है और और न अन्तर्गत के किसी कोने से आवाज उठी नदी में गावें भी तो बहुत हैं जिनके सहारे बादशाह दिल्ली छोड़कर कहीं जा सकते हैं परन्तु अपने भविष्य की ध्यान में आते ही यह बात वहीं की वहीं समागई और दिल्ली पहुँचने की ओर भी जल्दी की। एक दिन कूच करने के पहिले रसद का बहुत सा सामान पीछे रह गया; उसमें अफीन, शराब और खाने पीने का भी सामान था। झल्लाहट का पार न रहा। कुछ सवार पीछे को दौड़ाए गए। समाचार मिला कि कुछ जाटों नें फेर लिया था अब रसद की गाड़ियर आ रही हैं। इसमें एक दिन की देर लग गई।

सादत खां ने वज़ीरुद्दौला के कहा, 'नंदनसिंह जाट किस मर्ज़ की दवा है? जब से महाराज जयसिंह ने उसकी ब्रजराज का खिताब दे दिया है, तबसे तो जाटों की और भी शैतानी बढ़ गई है।

वज़ीर बोला', वह महाराज जयसिंह के सिवाय किसी को कुछ समझता हीं नहीं। और कितना घिघियाता हैं जैसे कोई किसान से मजदूर हो देखूँगा ज़रा मराठों से निबटलें।'

जब अफीम इत्यादि रसद की गाड़िया आ गई तब कहीं आगे बढ़ने की सूझी। सादत खां को गाड़ीवानों पर बहुत ताव आया। जाटों को गालिय दे देकर उसने गाड़ीवानों को दण्ड देने का विधान किया,—'यदि वे तेजी के साथ बढ़े होते तो क्यों इतनी देर लगती? लगाओं इनको कोड़े।'

'हमने तो देर नहीं लगाई दो बार खाना बनाते खाते थे, सो एक ही बार बनाया खाया। सवार आगे निकल आये, लुटेरों ने घेर लिया। हमने कुट पिटकर सामान की रक्षा की, और ज्यादा क्या करते?' गाड़ी वानों का उत्तर था।

परन्तु उनकी एक न सुनी गई, और उनको पिटवाया गया। गड़ीवान मन ही मन कह रहे थे, मिट जाँये ये वज़ीर और बादशाह! हमारा पेट मारते हैं और पीठ को भी नहीं छोड़ते।

(११)

बाजीराव ने दिल्ली को भस्मीभूत करने का निश्चय कर लिया था। दिल्ली के सिर पर पहुँचने के पहिले एक रात दिल्ली से कुछ ही मील दूर उसने विश्राम किया। सोने से पहिले उसने तात्कालिक भारतीय राजनीति और आगे के कार्य क्रम की बहुत सी बातें सोचीं। सोचते सोचते उसको वर्षों पहिले का एक वार्तालाप स्मरण हो आया। जो सतारा नरेश साहू के सामने साहू के प्रतिनिधि' मंत्री—मंत्री श्रीपतिराव के साथ हुआ था।

श्रीपतिराव ने बाजीराव से कहा था,—'मालवा और उसके उत्तर प्रदेशों पर आक्रमण करना मूर्खता और दुस्साहस है। ऐसा करते ही दिल्ली की सारी शक्ति अपने ऊपर चढ़ बैठेगी। छत्रपति शिवाजी के राज्य के खोए हुए भागों को ही तो पहिले अधिकारों में करके संगठित करलो। महाराष्ट्र में ही कितने, सामन्त और जागीरदार उपद्रव मचा हुए हैं।'

बाजीराव ने सोचा मैंने श्रीपतिराव को उस समय जो उत्तर दिया था वह समय हो गया। बाजीराव को अपने मान काभी स्मरण हो आया,'--शिवाजी महान ने जो कुछ किया था उसी का तो अनुसरण करना है, उसी परम्परा को तो आगे बढ़ाना है। यदि छत्रपति की यही मति होती तो गोलकुंडा और बीजापुर का दमन पीछे करते और कर्नाटक में पीछे पैर रखते। अपने यहां सामन्तों सिलेदारों और साधारण जन को बाहर निकल पड़ने पर ही निकास और विकास मिल सकेगा। अब समय आ गया है जब हिन्दुओं की भूमि से विदेशियो के शासन को समाप्त कर दे। अपने प्रयत्न को हिन्दुस्तान की दिशा में निर्दिष्ट करने से अपने ही जीवन काल में मराठी का भगवां झण्डा कृष्णा नदी से अटक नदी तक फहराने लगेगा।

सातू ने उत्साह के साथ समर्थन,—तुम उस झण्डे को हिमालय के ऊपर गपाड़ोगे। तुम सचमुच योग्य पिताके बड़े बेटे हो।'

अब बाजीराव ने जो कुछ किया था उस पर उसे सन्तोष था और अभिमान भी। परन्तु उसने यह भी सोचा,' होलकर ने उदयपुर को लूटा, अन्य सरगैंदा ने राजस्थान के दूसरे भागों को गैंदा, यह हितकर नहीं हुआ।

क्रमशः

हमारी दिल्ली की डायरी

पूर्वी बंगाल के हिन्दुओं की रक्षा

दिल्ली में स्त्रियाँ फैशन की सीमा पार कर रही हैं

(विशेष संवाददाता द्वारा)

प्रधान मन्त्री प० जवाहरलाल के भाषण ने दिल्ली की जनता के मन में यह विश्वास उत्पन्न कर दिया है कि भारत सरकार पूर्वी बंगाल के हिन्दुओं की रक्षा के लिये शिघ्र ही कोई कदम उठायेगी। यह कदम क्या होगा ? यह कहना तो अभी संभव नहीं किन्तु पाकिस्तान ने जो कुछ अब तक किया है उसके पश्चात शन्तिप्रद उपायों से यह गुत्थी सुलझती नहीं दिखती। पूर्वी बंगाल से जो समाचार आयें हैं उन से ज्ञात होता है कि पुलिस, फौज और गुंडों ने हिन्दुओं को भयभीत किया है। पाकिस्तान के अखबारों और रेडियो ने हिन्दुओं को पाकिस्तान से चले जाने के सुझाव दिये और उन्हें हर प्रकार की धमकियां दीं। यह धमकियां अभी तक दी जा रही हैं। पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री ने प० जवाहरलाल के सब प्रस्तावों को ठुकरा कर यह सिद्ध कर दिया है कि पाकिस्तान युद्ध करने का निश्चय कर चुका है। भारत युद्ध नहीं चाहता किन्तु स्थिति जब युद्ध से भी अधिक खराब हो जाए तो भारत के पास क्या चारा है। पाकिस्तान से आने वाले हिन्दू पाकिस्तानी हैं और उन्हें पाकिस्तान में ही बसना है। भारत सरकार माननीय सिद्धान्तों को सामने रखकर उन्हें पूर्वी बंगाल में ही बसाने का प्रयत्न करने में हक रखती है और ऐसा करने के लिए यदि उसे शक्ति का प्रयोग करना पड़े तो कोई अनुचित बात नहीं। पाकिस्तान सरकार क्या करेगी यह जानने की तो आवश्यकता नहीं किन्तु यह सब जानते हैं कि भारतीय शस्त्रों का मुकाबिला करने की उसमें हिम्मत नहीं ! पश्चिमी सीमा पर भी पाकिस्तान युद्ध प्रस्ताव करने की सामर्थ नहीं रखता और फिर पाकिस्तान में जो नाइत्तफाकी है वह उसे युद्ध में कूदने नहीं देगी। पाकिस्तान में ऐसे व्यक्ति हैं जो यह समझते हैं कि भारत से मित्रता रखने में उस की भलाई है। ये लोग लियाकत अली खाँ के रवैये से खुश नहीं हो सकते। वास्तव में लियाकत अली खाँ हीदंभ के भाव से पीड़ित हैं और अपनी हीन भावना को छुपाने के लिए ही भारत का विरोध कर रहा है। लियाकत अली खां पाकिस्तानी नहीं और पाकिस्तान की जनता को सन्तुष्ट करने का कोई व्यावहारिक उपाय उसने अभी तक नहीं किया। यह आश्चर्य की बात होगी कि यदि पाकिस्तान भारत से युद्ध आरम्भ कर दे तो ऐसी पार्टी खड़ी हो जाए जो लियाकत अलीखां का खुल्लम-खुला विरोध करे। किन्तु भारत सरकार इस भावना को सामने रखे हुए नहीं। भारत सरकार पाकिस्तान के आक्रमण को रोकने के लिए पूर्णतः तैयार है। भारत ने पूर्वी बंगाल के हिन्दुओं की रक्षा का बीड़ा उठाया है और आशा है वह अपने इस उच्च कार्य में सफल रहेगा

❀ ❀ ❀

दिल्ली में फैशन की बला बढ़ती जा रही है। जहाँ पश्चिमी स्त्रियाँ सादगी की ओर बढ़ रही हैं आधुनिक भारतीय स्त्रियाँ फैशन की भक्त बनती जा रही हैं। दिल्ली में शृंगार सामग्री की खपत युद्ध काल से तिगुनी होगयी है। भारत सरकार ने यह सामग्री विदेशों से मंगानी बंदकर दी है और इस का मूल्य भी तिगुना और चौगुना हो गया है। फिर भी फैशन की दीवानी स्त्रियाँ लिपस्टिक, पाऊडर और क्रीम पर पैसा पानी की तरह बहा रहीं हैं। कई साधारण और सस्ती वस्तुएं हैं जिन से सौन्दर्य की रक्षा हो सकती है किन्तु इनके तैयार करने के लिए थोड़ा कष्ट उठाना होता है। इसलिए आराम पसंद स्त्रियाँ इन का सेवन नहीं करती आवश्यकता है कि दिल्ली की फैशनेबल स्त्रियाँ अपने स्वास्थ्य का ध्यान रख अपने वास्तविक सौन्दर्य को बढ़ाना सीखें। होंठों और कपोलों पर स्थाई और प्राकृतिक लालिमा लाने का प्रयत्न करें बनावटी नहीं।

शेष पृष्ठ ६ के आगे

ब्रिजलाल बियाणी

महाराष्ट्रियन फैशन की दो लांग की धोती, खादी का कुरता व नुकीली सफेद टोपी। दिनभर में दो बार दाढ़ी बनाने के पक्षपाती हैं।

सेठ गोविंददास

कभी हरे रंग का ऊनी या खादी का लंबा कोट या फिर कभी खादी का शुभ्र कुरता, सफेद टोपी, चाटा का जूता पहनते हैं।

द्वारका प्रसाद मिश्र

खादी के बजाय आप सिल्क अधिक पसंद करते हैं। लम्बा कोट व उत्तर भारत के समान धोती कभी कुर्ता पहनते हैं। पान का डिब्बा साथ ही रखते हैं।

दादा धर्माधिकारी

खादी की सफेद कमीज अधिक पसन्द करते हैं। कुरता तो कभी पहनते ही नहीं। हाथ में झोला रखना उनकी विशेषता है। ठंड में कभी कभी नेहरू ऊनी जाकिट पहनते हैं। सरौता उनका अभिन्न मित्र है और सुपारी की थैली वे कभी पास रखना नहीं भूलते।

श्रीमन्नारायण अग्रवाल

सफेद खादी का कुरता और बंगाली ढंग की धोती पहनते हैं। जाड़े में गरम-कोट और चूड़ीदार पायजामा उन्हें अच्छा लगता है। ऊनी शाल भी भूले-भटके पास रख लेते हैं।

श्रीगोपीनाथ बारदोलोई

सफेद खादी का कुरता उसपर खादी का गमछा और सफेद टोपी। हाथ मे छड़ी भी रखते हैं।

डा० प्रफुल्लचंद्र घोष

खुला सिर, खादी का कुरता, उस पर नेहरू जाकिट। ऊनी या रेशमी शाल मौसम के अनुसार रखते हैं।

भारतेंदु हिन्दी सिंडीकेट, वर्धा

नये आटम बम

संयुक्तराष्ट्र अमेरिका के केमिस्ट डा० लिनस पावलिंग ने बताया है कि ४० हाइड्रोजन बमों से १ अरब व्यक्ति मारे जा सकते हैं। इस बम के अर्थ मृत्यु, बरबादी तथा सभ्यता का विनाश है।

सूर्य के कुछ धब्बों के चित्र

श्री लिनस पावलिंग कैलीफोर्निया टेकनालाजी इन्स्टीट्यूट के डाइरेक्टर हैं। ब्रिटेन की एक वेधशाला, द्वारा सूर्य के कुछ बड़े बड़े धब्बों का चित्र लिया गया। १९४७ में इससे भी बड़ा एक चित्र लिया गया था। जिसमें ज्ञात हुआ था कि रेडियो के सार्ट वेनमें इससे गड़बड़ी पैदा हो जाती है।

विविध विषयों के हमारे बढ़िया ग्रन्थ

इस पुस्तकमाला की ४ प्रसिद्ध पुस्तकें हैं—(१) 'योगायोग' कवित्वमय श्रेष्ठ उपन्यास। मूल्य ४) (२) 'विश्व परिचय' विज्ञान-विषय अनन्य ग्रन्थ। मूल्य २), (३) 'रूस की चिट्ठी। रूस का आँखों देखा वर्णन, मूल्य २) (४) 'चार अध्याय' ऐसा उपन्यास जिसमें राजनीति, समाज और स्त्री-पुरुष-समस्या आदि पर विचार है मूल्य १।)

इसमें प्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव के नये गीतों का संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अन्तर्द्वन्द्व से पूर्ण है। छपाई सफाई नयन मोहक। सचित्र सजिल्द प्रति का मूल्य २) दो रुपये।

लेखक भू० पू० काकोरी केस के कैदी श्री मन्मथनाथ गुप्त और राजेन्द्र वर्मा। समाजवाद के अध्ययन के लिये पढ़ना आवश्यक है। मार्क्सवाद के दर्शनों में यह सबसे गहन है। एक दर्जन अध्यायों में विषय का प्रतिपादन हुआ है। मूल्य ६) छः रुपये।

यह श्री श्यामनारायण पाण्डेय की प्रसिद्ध रचना है। इसमें महाराणा प्रताप के हल्दीघाटी वाले संग्राम का वीरता पूर्ण वर्णन बढ़िया छन्दों में है। सजिल्द सचित्र पुस्तक का मूल्य २॥) दो रुपये बारह आने।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, ३६ पन्नालाल रोड, इलाहाबाद

प्रधान संपादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल ... मिश्र निर्मल द्वारा मुद्रित तथा 'देशदूत' कार्यालय प्रयाग, द्वारा प्रकाशित

देशदूत

DESHDOOT
HINDI WEEKLY
Annual Price Rs. 7-8-0
Per Copy Annas Two.
वार्षिक मूल्य ७॥)
एक प्रति का ≈)

इस बार हरिद्वार में कुंभ का महापर्व हो रहा है। लाखों जनता, हजारों साधु-सन्यासी इस समय हरिद्वार के कुंभ-क्षेत्र में विद्यमान हैं। यह चित्र भी कुंभ के अवसर पर आने वाले एक साधु की है। इस प्रकार के हजारों साधु धूनी रमाते हुए कुंभ मेले में दिखाई देते हैं।

रविवार, १९ मार्च, १९५०
Sunday 19th March, 1950

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

सामयिक लेख, कहानी, रंगमंच, आलोचना आदि इस अंक में पढ़िये

अनेक विषयों की बढ़िया पुस्तकें

हिन्दी भाषा का संक्षिप्त इतिहास

यह राय बहादुर डाक्टर श्यामसुन्दर दास के इसी नाम के ग्रन्थ का सारांश है। विषय नाम से ही प्रकट है। अपनी भाषा का इतिहास संक्षेप में पढ़ने के लिए इसे लीजिए। अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य १) एक रुपया।

आदर्श भूमि अथवा चित्तौर

चित्तौर राजपूतों के त्याग के कारण तीर्थ बन गया है। भारत के गौरव स्वरूप उसी चित्तौर का ओजपूर्ण भाषा में लिखा गया इतिहास पढ़कर अपनी जानकारी बढ़ाइए। मूल्य २) दो रुपये।

पंडित जी

नामी उपन्यास लेखक शरद बाबू के इस उपन्यास में कुलीनता, उच्च शिक्षा, द्विज और द्विजेतर, गाँव की भलाई और अपनी उन्नति, नई शिक्षा और मिथ्या अभिमान आदि के सम्बन्ध में बहुत ही विशद विवेचना की गई है। मूल्य २) दो रुपये।

मैक्सिम गोर्की

रूस के इस विश्रुत कलाकार के परिचय के लिए इस पुस्तक को पढ़िए। है तो यह जीवन चरित, पर इसे पढ़ने में कहानी का आनन्द मिलेगा। इसकी जीवनचर्या का वर्णन पढ़कर पाठक जान सकेंगे कि इस कलाकार को किन विकट कठिनाइयों में होकर गुजरना पड़ा था। छोटे टाइपों में छपी लगभग ढाई सौ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य ३) तीन रुपये।

युद्ध और शान्ति

यह संसार के श्रेष्ठ उपन्यास-लेखक और विचारक का उच्ट लियो टाल्स्टाय के प्रसिद्ध रूसी उपन्यास 'वार एण्ड पीस' का हिन्दी रूपान्तर है। यह ऐतिहासिक उपन्यास तब लिखा गया था जब लेखक की शैली परिमार्जित हो गई थी और उन्हें अन्तर्द्वन्द्व से छुटकारा मिल कर शान्ति मिल गई थी। लेखक ने उसमें मानव-जीवन का सम्पूर्ण चित्र, अपने समय के रूस की तस्वीर और राष्ट्रों की खींचतान बड़ी खूबी से चित्रित की है—जीवन और मृत्यु के रहस्य का भी उद्घाटन किया है। लगभग पौने सात सौ पृष्ठों की सजिल्द प्रति का मूल्य ५।-) पाँच रुपये पाँच आने

कुलबोरन

श्री चन्द्रभूषण वैश्य ने इस उपन्यास को सत्य घटना के आधार पर लिखा है। समाज की अन्ध परम्पराओं से देश की जो हानि हो रही है उसका इसमें सजीव चित्र है। सुधार करनेवाले को रूढ़ियों के अन्ध भक्तों से जैसा लोहा लेना पड़ता है उसका नमूना उपन्यास का नायक, 'कुलबोरन' है। अच्छे कागज पर छपी सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥) दो रुपये आठ आने।

अल्पता की समस्या

'साम्प्रदायिक भेद पर विशेष अधिकार माँगना और ऊलजलूल दावे पेश करना तथा उन माँगों के पूरा न होने पर देशद्रोह के लिए कमर कस लेना किसी देश-भक्त का काम नहीं।' इसी पर दृष्टि रख कर पंडित वेंकटेश नरायण तिवारी एम० ए० ने तथ्यों और आँकड़ों के साथ पुस्तक में उलझन को समझाया है। पाकिस्तान बन जाने पर भी जिनके मन में ऊपर लिखी भावना है उनके समाधान के लिए इसमें सप्रमाण उत्तर है। मूल्य २) दो रुपये।

ईरान

महा पंडित राहुल सांकृत्यायन ने इस पुस्तक में अपनी ईरान-यात्रा का विशद वर्णन किया है। इसके पढ़ने से ईरान की बहुत-सी जानकारी पाठकों को हो जायगी। भ्रमण-वर्णन कहानी का सा आनन्द देगा। मूल्य १॥=) एक रुपया ग्यारह आने।

मध्य प्रदेश और बरार का इतिहास

इस अत्यन्त प्रामाणिक इतिहास में उक्त प्रदेश से सम्बन्ध रखनेवाली सभी प्राचीन और अर्वाचीन महत्त्वपूर्ण बातें आ गई हैं। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

सुन्दरी-सुबोध

इस पुस्तक में पति-पत्नी को सन्तुष्ट रखने के उपाय इस ढंग से बताये गये हैं कि कहानी का आनन्द देते हैं। इसके सिवा सास-पतोहू, देवरानी-जेठानी, ननद-भौजाई, माता-पुत्र आदि स्त्री के दूसरे सम्बन्धों को भी ठीक २ रखने के उपाय बताये गये हैं। पुरुषों के लिए भी बहुमूल्य अनुभूत बातें दी गई हैं। इनको उपयोग में लाने से गृहस्थी सुखमय हो सकती है। ३०० पृष्ठों से अधिक की सजिल्द प्रति का मूल्य २॥) दो रुपये आठ आने।

आदर्श महिला

इस पुस्तक में सीता, सावित्री, दमयन्ती, शैव्या और चिन्ता आदि पाँच प्रसिद्ध देवियों की जीवन-घटनाओं का सजीव सचित्र वर्णन दिया गया है। इसको पढ़ने में कहानी का आनन्द मिलेगा और शिक्षा सहज ही। मूल्य २॥=) दो रुपये ग्यारह आने।

कथा सरित्सागर

इस पुस्तक में आदि से
तक एक से एक बढ़िया कहानि
जैसा इसका नाम है, यह कथ
का समुद्र है। प्रत्येक कथा के
एक न एक दृष्टान्त है।
सजिल्द प्रति का २॥=) मूल्
रुपये ग्यारह आने।

देव दर्शन

इसमें ब्रजभाषा के प्रख्यात
देव की जीवनी और उनके
काव्यों का आलोचनात्मक प
दिया गया है। ब्रज काव्य के प्रे
अतिरिक्त साहित्य के विद्यार्थि
लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उ
है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य
एक रुपया पाँच आने।

बन्दना

यह श्रीमती चन्द्रमुखी ओझा
के ५२ मधुर गीतों का संग्र
आरम्भ में श्री सूर्यकान्त
'निराला' की लिखी प्रशं
अच्छे कागज पर छपी स
पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

तुलसी के चार दल

(प्रथम और द्वितीय
गोस्वामी तुलसीदास जी के रा
नहछू, बरवै रामायण, पार्वती
और जानकी मंगल का
नात्मक परिचय तथा इन चारों
की अध्ययनपूर्ण टीका। इसे इ
की कुंजी समझिए। मूल्य प्रथम
का ३) रुपये, द्वितीय भाग का
दो रुपये ग्यारह आने।

ग्रह-नक्षत्र

इस पुस्तक में ग्रहों और
आदि से सम्बन्ध रखने वाली
सभी आवश्यक बातों का स
वर्णन सरल भाषा में है।
तीन रुपये।

हार या जीत

इस उपन्यास में लेखक
ब्रजेश्वर वर्मा एम० ए०, डी०
ने एक देहाती लुहार की अल्प
बेटी को घटनाक्रम से, अनाथ
में, देहात से महराजगंज की
पृथाकुंवरि के आश्रय में पहुँचा
है। वहाँ रानी की कृपा से
लड़की ने विद्या पढ़ी। फिर इस
गुणों का विकास हुआ जिससे
सभ्य होकर सम्मान पाता है।
असहयोग आन्दोलन में सक्रिय
लिया और अन्त में कलकत्ता
नौकरी कर ली। कई पुस्तकें लि
विदेश यात्रा के बाद रानी के
की प्रार्थना पर उससे विवाह
उपन्यास की घटनावली, विचारों
संघर्ष और चन्दा की नम्र
दृढ़ता सराहने योग्य है। मूल्
दो रुपये।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

देशदूत

वर्ष १२, संख्या २७] रविवार, १९ मार्च १९५०

ब्रिटिश मज़दूर दल के नेता बजट पर विचार विमर्श कर रहे हैं।

टेढ़ी, सीधी, खरी-मजेदार

हैदराबाद भूतपूर्व प्रधान मंत्री मीर लायक अली ने हैदराबाद में डुबकी लगाई और निकल पड़े करांची में। निकल तो पड़े कहीं न कहीं गनीमत है बीच ही में नहीं रह गये।

❀ ❀ ❀

सुना जाता है कि मीर लायक अली करांची में नई हैदराबाद सरकार स्थापित करेंगे। अपने राम की समझ में करांची में क्या नहीं हो सकता ? नया घर बसे, लीडर बने, नेता बनें और घर बैठाने में हैदराबाद सरकार कायम कर प्रधान मत्री बन जायें। धंधा अच्छा है, बीरबल की खिचड़ी भी इसी तरह पकती थी।

उत्तर प्रदेश की विधान सभा में जनकार्य विभाग के मंत्री हाफ़िज़ मोहम्मद इब्राहीम ने बतलाया कि अगले वर्ष सड़कों के बनाने सुधारने का काम सरकार की ओर से न होगा। इस काम में २१ करोड़ रुपये के खर्च का अनुमान लगाया गया था लेकिन फंड ही नहीं है, सड़कें कैसे बनें ? अपने राम की समझ में स्वयं कांग्रेस के लिये इससे हानि होने की आशा है, बड़े चुनाव के पहले सड़कें बन जातीं तो आसानी होती। नहीं तो लोगों को धूल फ़ांकते हुए वोटिंग करने आना पड़ेगा। दुख है कि फंड ने मामला अंड वंड और ठेकेदारों का मन खंड खंड कर दिया।

❀ ❀ ❀

सरदार पटेल और ब्रिटेन में भारत के राजदूत श्री कृष्णामेनन।

कहा ज़ाता है किआगामी १ अप्रैल से रेल की ट्रेनों की चाल तेज होगी। बात यह है कि अप्रैल से एक तो यों ही गर्मी पड़ने लगेगी, खून में गर्मी अपने आप आ जाती है, दूसरे भारत और पाकिस्तान की गर्मी भी जोर मार रही है इसलिये इंजन में भी गर्मी जोर मारने लगे तो क्या आश्चर्य। भय है केवल एक्सिडेंटका। बिना गर्मी के तो रेलवे में योंही एक्सिडेंट आये दिन होते ही रहते हैं और अगर चाल में गर्मी आ गई तो खुदा ही खैर करे। किसी ने कहा भी है—

जमाना हो गया टेढ़ा,
तेरी सीधी निगा निगाहों से।
खुदानाखास्ता तिरछी
नजर होती तो क्या होती ?

दिल्ली के एक पत्र में छपा है कि हैदराबाद के भूतपूर्व मंत्री मीर लायक अली की एक पुत्री मध्यप्रदेश में सागर के आसपास पकड़ी गई हैं। खबर में कुछ आर्य समाजी पुट ज़रूर दी गई है। नहीं तो मीर लायक अली बीबी के साथ पहुँच जायें करांची और लड़की रह जाये हिन्दुस्तान में ही, यह खूब रही।

भारतीय पार्लमेंट में श्री कामठ ने कहा कि जब कि राष्ट्र की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है, ऐसी दशा में बीजापुर के 'गोल गुम्मद' की मरम्मत में सरकार को २ लाख १८ हजार रुपये खर्च करने की क्या ज़रूरत थी ? मौलाना अबुलकलाम आजाद ने उत्तर दिया कि खर्च इसलिये किया गया कि 'गोल गुम्मद' संसार की सबसे बड़ी गुम्मदों में है। उत्तर तोमाकूल रहा किन्तु जब रुपया गुम्मद, मकबरे और मीनारें ही खाती जा रही हैं तो यह पाकिस्तान से भगाये गये शरणार्थी क्या खायेंगे ? इस समय आवश्यकता है जिंदों को जिलाने की मुर्दों को नहीं।

गीत

लेखक, प्रोफेसर 'अंचल' एम०ए०

काले काले मेघ तुम्हारे
बिजली की ज्वाला मेरी,
यह मादक बरसात तुम्हारी
लपटों की माला मेरी,
तुम सतरंगी चूनर ओढ़ो
पहन लहरिया लहराओ,
तुम मेंहदी रंजित हाथों का रूप निहारो—सुख पाओ,
यौवन का उल्लास तुम्हारा—स्वाती की तड़पन मेरो
इन्द्र धनुष का चीर तुम्हारा, झंझा भरी जलन मेरी।

(२)

व्यक्त करे शब्दों में तुमको मेरे पास नहीं भाषा,
प्यार करूं कितना भी तुमको पा न सकेगी अभिलाषा,
जितना जान गया हूँ उससे और अधिक क्या जानूँगा,
जब जब मानव जन्म मिलेगा मैं तुमको पहचानूँगा,
कजली के संगीत तुम्हारे—जुगनू की ममता मेरी,
मन के सारे स्वप्न तुम्हारे—मन की परवशता मेरी।

(३)

पावस की श्यामल पुलकों में तुमको पवन पुकार रहा,
दोनों व्याकुल बाँह बढ़ाकर हो जैसे साकार रहा,
भीगे वनफूलों के चंचल प्राण तुम्हें ढूँढ़ करते,
नभ पर खींच हृदय की आशा विरही मन क्रन्दन करते,
झूले का शृंगार तुम्हारा सूनी विरह निशा मेरी,
काले काले मेघ तुम्हरे जहलन भरी तृष्णा मेरी।

राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद

विश्वविद्यालय कहाँ स्थापित हो?

मध्यभारतीय संघ की शिक्षित जनता की एक प्रमुख समस्या

लेखक, श्री श्यामलाल गौड़ बी०ए०, एल० एल-बी० (उज्जैन)

मध्यभारत-संघ की शिक्षित जनता को एक प्रमुख समस्या है विश्वविद्यालय की ग्वालियर तथा इन्दौर में इस समस्या को लेकर एक संघर्ष उत्पन्न हो गया है। लेखक ने इसी समस्या पर विचार करते हुए तथा प्रांतीयता तथा वाद-विवाद का विरोध करते हुए यह बतलाया है कि विश्वविद्यालय की स्थापना कहाँ हो। लेख समायिक तथा पाठनीय है।

मध्यभारत शासन ने इस मास के प्रारंभ में अपने उस निर्णय की घोषणा कर दी जिसकी प्रतीक्षा मध्य भारत की जनता गत महीनों से कर रही थी। मध्य भारत की ७५ लाख जनता अपना एक विश्व विद्यालय चाहती थी। मध्य भारत के निर्माण के पूर्व गवालियर शासन द्वारा "विक्रम हिन्दी विश्व विद्यालय" स्थापित किये जाने की घोषणा की गई और उसके लिये एक करोड़ की निधि भी गवालियर शासन द्वारा स्वीकृत की गई थी परन्तु इस प्रकार के आदर्श विश्व विद्यालय के निर्माण के पूर्व देश राजनैतिक परिवर्तन हुए। राज्यों का अन्त हो कर प्रजा-राज्य की स्थापना हुई और उसके परिणाम स्वरूप नवीन मध्य भारत राज्य का जन्म हुआ।

अन्य समस्याओं के साथ ही मध्य भारत के शासन के समक्ष विश्व विद्यालय की समस्या भी थी। प्रदेशिक भावनाएँ इतनी बलवती थीं कि मध्य भारत शासन इस गुत्थी को भी सुलझाने में असमर्थ था। मध्य भारत में इन्दौर राज्य विलीन होने वाला था। विलीन होने के पूर्व इन्दौर नरेश ने अपने विशेष अधिकार से एक विधान स्वीकृत किया जो विश्व विद्यालय से संबंधित था व इस विधान के आधार पर एक ऐसे विश्व विद्यालय को जन्म दिया गया जिसने आज तक कोई कार्य सम्पादित नहीं किया। यह विधान मध्य भारत शासन के मार्ग के रोड़े अटकाता रहा। आज भी इन्दौर के समाचार-पत्र इसकी आड़ मे शासन के न्यायोचित निर्णय के विरुद्ध गंदा व भ्रमात्मक ही नहीं वरन् विषैला और संकीर्ण प्रदेशिक भावना को उभारने वाला प्रचार कर रहे हैं और इस प्रकार पत्रकारिता जैसे ऊचकोटि की सेवा को जनता की नजरों से गिरने के प्रयत्न में हैं।

विश्व विद्यालय के लिये स्थान, शासन ने मध्य भारत के उस नगर में चुना जिसके खंडहरों के पीछे सहास्त्रों युगों का इतिहास है, जिसने आज की दिल्ली के समान, अपने अच्छे दिनों में कई राजमुकुटों को बदलते देखा। जिसके आज भी भारतीय संस्कृत विद्यामान से जिसके विश्व विद्यालय ने ग्रीती यायक योगिराज्य जैसे स्नात को की जन्म दिया कलिदास को "अमर कवि" बनाया। ऊज्यैन के पीछे इतिहास है शिक्षा की परम्परा है— संस्कृतिक महत्व है। यह निर्बल शासम ने वस्तु के गुण दोषों का परिर्णय करने के पश्चात् किया है। भारतीय गणतन्त्र में जब सोमानाथ के इतिहास प्रसिद्ध मन्दिर का पुनरोद्धार किया जा रहा है तो क्या मध्यभारत भारतीय संस्कृत एवं शिक्षा के प्रचीनतम् केन्द्र को भी पुनः जीवित न करे?

इन्दौर विश्व विद्यालय के पक्षपातियों का यह तर्क है कि इन्दौर में शिक्षण वातावरण है, स्कूल व कालिजों की संख्या अधिक है, बड़ा नगर है, यहाँ मध्य भारत के पूर्व ही विश्वविद्यालय की स्थापना हो चुकी थी, पांच लाख रुपया इन्दौर के शासन ने दिया है, पांच सौ एकड़ भूमि है। इस कारण विश्व विद्यालय की स्थापना इन्दौर में ही की जाना चाहिये। "नई दुनिया" नामक पत्र जिनमें उज्जैन में विश्व विद्यालय की स्थापना की घोषणा पर काफी -शिक भावना का प्रचार किया, अपने पत्र में एक वक्तव्य प्रकाशित किया है किसी जमीदार सा का जिसमें यहां तक कहा गया है कि इन्दौर के तथाकथित विश्व विद्यलय के अधिकारियों को न्यायालय से इस प्रश्न का निर्णय कराना चाहिये। एक मोहम्मद अमीन नायक व्यक्ति इस पत्र द्वारा यह प्रकट करते हैं कि इन्दौर में विश्व विद्यालय की स्थापना न करना इन्दौर की पंद्रहलाख जनता का अपमान है!

इन तर्कों में तत्व क्या है? इन्दौर मध्य भारत का सर्व प्रथम औद्योगिक केन्द्र है। मध्यभारत के निर्माण के पश्चात् आसपास के कई नगरों का उद्योग समाप्त किया जाकर इस नगर के उद्योग को प्रोत्साहित दिया गया। परिमाण यह हुआ कि उज्जैन, रतलाम, जावरा आदि की मंडिया या तो समाप्त हो गई या मंदी। दस कपड़ की मिलें इस नगर व अन्य कई कारखाने हैं। इन मिलों और कारखानों में काम करने वाले श्रमकों एवं अन्य कर्मचारियों की संख्या लगभग २ लाख होगी। कुल इन्दौर नगर की जनसंख्या का यह ⅓ भाग है। ऐसे नगर में जहां दिन भर कारखानों व मिलों में चलने वाली मशिनों की गड़ गड़ाहट व्याप्त हो, जिस नगर का वाता वरण मिलों एवं कारखानों से उठने वाले प्रत्येक प्रकार के धुएँ से कलुशित हो, श्रम और पूंजी के झगड़ों का जहाँ केन्द्र-स्थल हो क्या ऐसा स्थान ज्ञानोपार्जन एवं शिक्षा के लिये उपयुक्त है? क्या इस प्रकार के कोलाहल मय जीवन में कोई भी व्यक्ति यदि वह योगी नहीं है शिक्षा ग्रहणकर सकता है, क्या इसे हीशैक्षाणिक वातावरण कहा जावेगा? स्कूल व कालिजों की संख्या यदि उज्जैन की अपेक्षा इन्दौर में अधिक है तो यह तर्क ही इन्दौर के विरुद्ध है पक्ष में नहीं नीति का नियम भी यही है। जिसके पास कुछ नहीं है उसे पहले दो! राजा महराजाओं के संरक्षण में ग्वालियर व इन्दौर ने बहुत कुछ पाया। उज्जैन उस समय उपेक्षित रहा। आज युग बदला है। आज के इस परिवर्तित युग में आदि वर्तमान शासन केवल गवालियर और इन्दौर को ही सब कुछ देता रहा तो फिर सामन्तवाद एवं जनतन्त्रवाद में अन्तर क्या होगा?

इन्दौर विश्व विद्यालय का विधान अपनी अंतिम सांसें उसी दिन ले चुका जब मध्य भारत का निर्माण हुआ। तथा कथित विश्व विद्यालय ने अपने पैर फैलाकर कुछ महाविद्यालयों को संबंधित करने का प्रयत्न किया। परन्तु मध्यभारत शासन ने उसे स्वीकृत नहीं दी। इस प्रकार उक्त विधान की अन्त्येष्ठि क्रिया हो जाने के पश्चात् उसके लिये आंख समवेदना के रूप में आंसू अवश्य बहाये जा सकते हैं परन्तु पुनर्जीवित नहीं दिया जा सकता है। ५ लाख की धनराशि में जब आज के युग में एक सधारण विद्यालय का चलना कठिन है को फिर विश्व विद्यालय चलाने की कल्पना करना स्वप्न हो सकता है, वास्तविक नहीं।

पांच सौ एकड़ भूमि का तर्क भी आज के युग में युक्तिसंगत नहीं। यदि इन्दौर के वे भाई इस भूमि को अधिक अन्न उपजाओ आयोजन के लिए दे दें तो वास्ताव में इससे राष्ट्र को कुछ लाभ ही पहुँचेगा। पाँच सौ एकड़ भूमि में ५ लाख की लागत लगाना व्यर्थ ही सिद्ध होगा।

१५ लाख जांनता के अपमान का प्रश्न उठाना भी युक्ति सगत नहीं। ग्वालियर शासन में रहने वाले लोग इसका उत्तर इस प्रकार भी दे सकते हैं कि हमारी संख्या चालीस लाख है। और मध्यभारत की आधी जन संख्यासे अधिक ग्वालियर के राजकीय कोष में हमारा ही रुपया था, ग्वालियर नरेश का नहीं। हमारा रुपया हमारी उन्नति में व्यय किया जावे। क्या परिस्थिति होगी उस समय? परन्तु हम प्राहोरिक भावना का उत्तर उस प्रकार देने के आदी नहीं हैं। हम इन्दौर की उन्नति की कामना करते हैं यही कारण है कि उज्जैन रतलाम आदि नगरों की औद्योगिक प्रगति रुक जाने पर भी जनता शान्त रही। सब कुछ इन्दौर में हो और मध्यभारत के किसी भी स्थान पर कुछ न हो, इस भावना को अधिक प्रोत्साहन देना किसी भी शासन के लिये चाहे वह मध्य भारत का हो अथवा केन्द्रीय, उचित नहीं था। यही कारण है कि शासन ने अत्यधिक कटु विरोधी प्रचार के होते हुए भी अपना निर्णय वस्तु के गुणदोष का निर्णय करके किया है।

भारतीय संघ और पाकिस्तान

भारत सरकार पाकिस्तान से निपटने के लिये आखिर क्या कर रही है ?

लेखक, स्वामी सत्यभक्त

हिंदुस्तान तथा पाकिस्तान का संबंध विकृत हो जाता है। भारत अपने आदर्श ओर जा रहा है और पाकिस्तान अनर्थ की ओर। इस लेख में संघर्ष विज्ञान लेखक ने वर्तमान स्थिति का वर्णन करते हुए भारत के लिये कहा गया है पाकिस्तान का प्रतिरोध करे। लेख सामाजिक और पठनीय है।

भारत और पकिस्तान का सम्बन्ध ...तिक आर्थिक और सांस्कृति दृष्टि से ...दिन बिगडता जा रहा है। अभी २ ...हरू जी ने काश्मीर के बारे में जो ...न दिया वह कई तरहसे विचारणीय ...उनके कहने का सार यह है विदेशी ...ने काश्मीर के मामलों में भारत की ...की जाती है। उसे दबाया जाता ...हमारे अभियोग का सुरक्षा कौंसिल ...ने उत्तर अभी तक नहीं दिया। ...हम सुरक्षा कौन्सिल में न जाते तो ...अनिवार्य था। पाकिस्तान में युद्ध ...वातावरण गर्म है पर हम किसी भी ...के आक्रमण नहीं करेंगे। काश्मीर ...की घटना का दुनिया के सामने ...कर दिया जाएगा।

...रू जी के वक्तव्य से तथा दूसरे ...से मिले समाचार से यह साफ ...होता है कि पाकिस्तान नीति-...का ख्याल किये बिना हर एक ...की ज्यादती करने पर उतरू है और ...सरकार बहुत धैर्य से और नीति ...से ले रही है। पर इसका इसका ...भारत के पक्ष में अच्छा नही हो ...है। और भारत के बाहर के भले ...भी भारत के इस अच्छेपन पर मुग्ध ...कर भारत की दाद भी नहीं देते। ...कारण क्या है। इसके ऊपर न ...चेष्टा की जा सकती है न घर के ...बैठ कर उलहना देने से काम चल ...है। हमें निम्नलिखित बातों पर ...ता से विचार करना चाहिए।

...या बात है कि हम इतने निष्पक्ष ...परायण और इमानदार होनेपर भी ...परिषद हमारा साथ नहीं देती ...जिस पाकिस्तान ने काश्मीर में ...पैठे और सुरक्षा परिषद ने इस ...साफ इनकार कर दिया, उनको ...झूठ पकड़ा गया तब भी सुरक्षा ...पाकिस्तान का ही पक्ष लेरही है। ...ऐसा लगता है कि हमारी विदेशी ...में कुछ त्रुटि है। हम कामन वेल्थ ...शामिल रहे हैं, अमेरिका के साथ ...व्यापार यातायात के विषय में हर ...का प्रयत्न कर रहे हैं फिर भी ...और इगलैंड आदि न्यायोचित बात ...समर्थक नहीं करते तब इनके साथ ...हमारी मध्यस्थता का क्या मूल्य ...इन्हें अपने साथी तो बना ही लेना चाहिए जो अन्याय में नहीं तो न्याय में हमारे सामर्थक रहें

काश्मीर की एक एक घटना का पर्दाफाश किया जायगा इसका क्या अर्थ है। जब फैसला हो जायगा तब हम दलीलें देगे तब उसका क्या मतलब हो गा। आज ही क्यों नही पर्दाफाश किया जाता कि संसार हमादा समर्थक हो जाय ?

पाकिस्तान ने आधा काश्मीर लेलिया है और नेहरू जी के कथनानुसार अब भारत आंकमण न करेगा। आज जहाँ है वहीं बैठा बैठा बचाव करेगां। इसका यह मतलब तो साफ है कि आधा काश्मीर तो चला ही गया। बाकी आधे से जो बच जाय वही गनीमत। इसकी अपेक्षा यो यही अच्छा था कि हम पूर्वी बंगाल की प्राप्त करते और काश्मीर का कुछ हिस्सा देने के आधार पर पहिले ही कुछ सौदा करने कि कोशिश करते। इतना धन जन नाश करव कर भी काश्मीर के बटवारे का इनकार करने पर भी हमें उसे माने बैठे हैं।

हम सुरक्षा परिषत में न तो पाकिस्तान युद्ध करता। नेहरू जी के उस वक्तव्य से पता चलता है कि पाकिस्तान को हमसे कोई लड़ाई का डर नहीं है, हमें ही पाकिस्तान से लड़ाई का डर है। हमारी ये बातें निर्बलता की सूचना देती है शायद यही कारण है कि पाकिस्तान सीमा पर मनचाहे उपद्रव करता है। और हम विरोध करके रह जाते हैं। ऐसी हालत में हम पाकिस्तान को न्याय के लिए नहीं झुका सकते। पाकिस्तान से हम जन में धन में क्षेत्र में तिगुने हैं पर हमें डर है कि पाकिस्तान कहीं हमसे लड़ न बैठे। यह डर हमारेहि रक्षातथा गौरव लि खतरनाक है।

इस प्रकार नेहरू जी का वक्तव्य हमें चिन्ता में डाल देता है।

इधर पूर्वी बंगाल में जो खबरें आई रही है उससे भी बड़ी चिन्ता हो रही है। वहां नवाखली कांड दुहराए जा रहे हैं और पूर्वी बंगाल से जबरदस्ती भगाया जा रहा है—उधर पाकिस्तान आसाम में मुसलमानी को घुसेड रहा है जिससे आसाम के कुछ जिलो में मुसलमानों का बहुमत हो जाय और हम बहाने से उन जिलों को हथियाने का अवसर मिले।

अचरज की बात यह है कि पाकिस्तान में तो सदा से बसे हुए हिन्दुओं को रहना मुश्किल हो रहा है इधर हिन्दुस्तात में यहां के मुसमान भी सुरक्षिता से बसे जाते है। हिन्दुस्तान यों ही अन्न का भूखा है इधर पाकिस्तान से करोड आदमी और आए हैं और आ रहे हैं। पाकिस्तान में सरकार पर्दे के पीछे रहती है और वहां की जन्ता ही हिन्दुओं को लुट पाट कर मार पीट कर भगा देती है

पूर्वी बगाल के शरणार्थियों की समस्या से परेशान पंडित नेहरू।
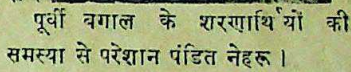
जब कि भारत के लोग बापू का नाम जपते रहते है। परिणाम इसका यह होंगा कि पाकिस्तान में एक भी हिन्दु न रह पाएगा इस प्रकार खाने वालों की संख्या का बोझ भी घटा कर अन्न आदि की दृष्टि से आत्म निर्भर ही नहीं धनी हो जायगा और होजायगा पूरी तरह से एकात्म राष्ट्र जब कि भारत खाने वालो की बहुत संख्या के कारण कंगाल बन जायगा और मंहगाई का शिकार बना रहेंगा। उधर उन करोडो आदमियों का बोझा भी उठाए रहेंगा जिनका मुह पाकिस्तान की तरफ है जो सदा और खासकर किसी संकट अवसर पर कहर बरसा सकें।

हमें सब धर्मो। कासमन्वय करना है इसलाम भी एक पवित्र धर्म है इसलिए हम उसका भी समन्वय करेंगे जो सच्चे मुसलमान है कुरान के अनुसार चलते हैं उदार और ईमान्दार है उन्हें अपना भाई समझेंगे और हर हालत में उनकी रक्षा करेगा। किन्तु जो देशद्रोही है जो हिन्द का नहींपाकिस्तान का भला चाहता है एक तरह का गुप्तचर है पाकिस्तान का बनवाने में जिनका हाथ है उनका बोझ तो उतारना ही पड़ेगा। इसलिए हम और कुछ न कर सके तो इतना ही चाहिए कि जितने हिन्दू जिस ढंग से भारत में आए उतने मुसलमान उसी ढंग से भारत से पाकिस्तान में भेज दिये जायें। सौ के बदले एक सौ दस भले ही हो जायें पर नब्बे न पाकिस्तान में न्याय पाने का दूर कोई रास्ता नही है

यह ठीक है कि भारत असाम्प्रदाइक राष्ट्र हैं और सचमुच यह है कि उसके लिए गौरव की बात है। पर यह भूलना चाहिये कि भारत और पाकिस्तान के टुकड़े सम्प्रदाय के आधार पर ही हुए है। इसलिए जहां तक हिन्दु मुसलिम सवाल है वहां तक भारत पाकिस्तान से अधिक उदार बन कर जिन्दा नहीं रह

(शेष पृष्ठ १२ पर)

प्रधान मंत्री पंडित नेहरू पाकिस्तान के अनर्थों को चुनौती दे रहे हैं।

भारत में खाद्य-अन्न की समस्या

क्या भारत सन् १९५१ में अपने पैरो पर खड़ा हो जायगा

लेखक, श्री पूर्णचन्द्र गुप्त,
(अर्थशास्त्र-विभाग प्रयाग विश्व विद्यालय)

भारत की खाद्यान्न समस्या जटिल होती जा रही है। हमारे नेता राष्ट्र को स्वावलम्बी बनाने की ओर प्रयत्न शील हैं किन्तु क्या राष्ट्र सन् १९५१ तक स्वाव लंबी हो जायेगा इसी समस्या पर लेखक ने वर्तमान वस्तु स्थिति पर विचार विनिमय करते हुए प्रकाश डाला है। लेख पठनीय तथा विचारनीय है।

जहां तक भारतवर्ष की ,अनेक और जटिल राजनैतिक समस्याएँ हैं, हम यह निन्सन्देह कह सकते हैं कि उन्हें स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात हमारे देश के पूज्य तथा अनुभवी नेताओंने अपना स्वार्थ बलिदान कर, परिश्रम द्वारा एक बड़ी सीमा तक हल कर दिया है। इस समय राजनैतिक क्षेत्र में, काश्मीर के प्रश्न को छोड़ कर अन्य कोइ गम्भीर और कठिन समस्या नहीं है सरदार पटेल के नेतृत्व में, विभिन्न छोटी छोटी रियासतों का ऐकीकरण और विलयन जिस भांति हुआ है वह केवल प्रशंसनीय है। हम क्यों न अपनी सफलता पर गर्व करें ?

आर्थिक दृष्टि से, हम वहीं हैं जहां थे अथवा और भी नीचे गिर गये हैं। जितने भी कार्य अब तक हमने किये है, असफल रहे हैं। चारों ओर निराशा छाई हुई है और समाज के सभी अंग दुख और दर्द से कराह रहे हैं। क्षोभ की यह लहर घटने के स्थान पर बढ़ती ही जाती है और यह नहीं कहा जा सकता कि उसका अन्त कब और कहाँ होगा।

एक ओर जमीदार चिल्ला रहे हैं कि सरकार जमींदारी प्रथा का अन्त कर उनका अन्त कर रही है। जिन किसानों के हित में यह किया जा रहा है, वे भी अपना भविष्य नहीं जानते और सुधार की योजनाओं में सहर्ष सहयोग नहीं दे रहे हैं। एक प्रकार से वे भी सन्तुष्ट नहीं हैं। उन्हें अपना गल्ला नियत मूल्य पर सरकार को देना पड़ता है और बदले में उन्हें, इच्छानुसार, मिट्टी का तेल, चीनी कपड़ा,सीमेंट, लोहा इत्यादि नहीं मिलता बड़े व्यवसायी मिल और कारखाने वालों को शिकायत है कि उनके उद्योग धन्धे का राष्ट्रीयकरण हो रहा है तो फिर वे उत्पादन बढ़ाने के लिये सब प्रयत्न क्यों करें ? वे सभी उन्नति की योजनाओं का विरोध कर रहे हैं। मजदूर बढ़े हुए मूल्यों और कम मजदूरी की दरों से क्षुब्ध होकर युद्ध करने को प्रस्तुत हैं। निम्न उद्यम श्रेणी की जो दुर्दशा है वह हम सबको भली भांति विदित है। वह अपने ऊपर निर्भर रहने में असमर्थ है और उसमें सरकार के प्रति अविश्वास और विद्रोह की भावना बढ़ती जा रहीं है।

भारतवर्ष की सर्व प्रमुख और महत्वपूर्ण आवश्यकताएँ इस समय भीजन, कपड़े और निवासस्थान की हैं। मनुष्य मात्र के लिये यह सभी चाहिये परन्तु भोजन का स्थान प्रथम है।

यद्यपि भारत एक खेतिहर देश है परन्तु वह बहुत वर्षों से आवश्यकता से कम अन्न उत्पन्न करने वाला देश रहा है। लड़ाई के पूर्व भारत में बर्मा से भी चावल आता था तथा कभी कभी कनाडा और आस्ट्रेलियासे गेहूँ भी आ जाता था। १९४२ मे भोजन की समस्या ने जो विकराल रूप धारण किया है, हमें चिन्तित कर देने के लिये पर्याप्त है इस वर्ष उसने राष्ट्रीय युद्ध की स्थिति का रूप धारण कर लिया है।

यहाँ खाद्यान्नों की कमी प्रायः ४० लाख टन प्रति वर्ष है जिसका मूल्य १५० करोड़ रुपया होता है। यह आंकड़े स्थूल रूप से दिये जा रहे हैं और बहुधा वह कमी ६० लाख टन की होती है जिसका मूल्य, उसी अनुपात में, बढ़ जाता है। हम ४ करोड़ टन गल्ला उत्पन्न करते हैं। हमें ४ करोड़ ४० लाख टन की आवश्यकता है। अतएव हमें १० प्रतिशत उत्पादन बढ़ाना है। यह कार्य हमें १९५१ तक करना है।

जब से प्रधान मन्त्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने घोषणा की है कि १९५१ के पश्चात भारत में खाद्यान्नों का कोई आयात न होगा, देश की आंखे, खाद्य के मोर्चे पर लगी हुई हैं और यहीं आर्थिक स्वावलम्बन की लड़ाई लड़ी अथवा हारी जायगी। अभी हाल ही में पं० जवाहरलाल नेहरू ने इस सम्बन्ध में अपने निर्णय को बड़े स्पष्ट शब्दों में दुहराया है और यह कहा है कि चाहे भूचाल आवे एवं ज्वालामुखी फट पड़े, हम १९५१ के पश्चात एक भी दाना बाहर से न मंगावेंगे। इस लेख में हमें इस बात पर विचार करना है कि इस छोटे समय में हम किस सीमा तक खाद्यान्नों के विषय में स्वावलम्बी हो सकते हैं।

खेती का विस्तारः— भारत के खाद्य कमिश्नर श्री. आर. के. पाटिल ने ६ अगस्त १९४९ को एक पत्र प्रतिनिधियों की सभा में, १९५१ के अन्त तक, ४५ लाख टन अधिक अन्न उपजाने की योजना रखी। यह आशा की जाती है कि जो भूमि अभी उपलब्ध है उसी पर ठीक प्रकार से खेती करके ३६ लाख टन उपज बढ़ाई जा सकती हैं। यह हो सके तो बहुत अच्छा है परन्तु विचारणीय यह है कि हम अपनी भूमि से इतने वर्षों से अन्न उपजा रहे हैं और उस भूमि से अब कितनी आशा की जा सकती है।

श्री. पाटिल की योजना में खाली भूमि को उपमोग में लाने पर भी जोर दिया गया है। भारत में बहुत सी भूमि जोतने योग्य और बहुत सी बंजर पड़ी हुई है।वह किसी प्रकार १५०० लाख एकड़ से कम नहीं है। इस भूमि को उपयोग में लाने के लिए हमें बड़े बड़े ट्रैक्टरों की आवश्यकता है और अभाग्यवश यही हमारे पास नहीं है। जो थोड़े बहुत ट्रैक्टर हमारे पास हैं, उनसे काम नहीं चल सकता। वे बहुत छोटे हैं और बहुत कम हैं। बेकार पड़ी हुई भूमि को काम में लाने और बंजर भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए एक बड़ी धन राशि की आवश्यकता है। सरकार की नीति ऐसी रही है कि पूंजी खेती के कार्यों के लिये अलग नहीं रही है। अतएव हम रुपये की कमी के कारण अधिक ट्रैक्टर्स नहीं मगां सकते। अब पाउन्ड का मूल्य घटने के कारण, और परिणाम स्वरूप भारत में भी रुपये का मूल्य घटने के कारण, अमरींका से माल मगांना,और अधिक कठिन हो गया है। समस्या का दूसरा दृष्टिकोण यह है कि जिस भूमि को हम काम में लाना चाहते हैं उसका क्षय हो रहा है। संयुक्तप्रांत को ३० लाख एकड़ भूमि, राष्ट्र के ६० लाख एकड़ लक्ष्य में देनी है किन्तु यह भूमि नष्ट हुई जा रही है कारण कि उसमें घुन लग गया है।

सिचाईः — खेती द्वारा और अधिक अन्न उत्पन्नकरने में हमें सिचाई से बड़ी सहायता मिल सकती है। कुल मिला कर इस समय विचार में, खोज में और चालू अवस्था में १६० सिचाई की योजनाएँ हैं। इनमें से बहुत सी योजनाएँ निर्माण काल में हैं; ५३ इस अवस्था में पहुँच गई है कि उनमें बहुत सी खोज हो चुकी है और ६१ योजनाओं के विषय हैं हाल ही में खोज प्रारम्भ हुई है। इन सब योजनाओं पर प्रायः, १२८० करोड़ रुपया व्यय होगा।

जिन ४६ योजनाओं का निर्माण हो रहा है, उनमें से १७ पर, हर एक पर १ करोड़ रुपया व्यय होगा और१४ योजनाओं पर ५ से १० करोड़ रुपया प्रति योजना व्यय होगा इन ३७ योजनाओं पर व्यय औसतन १३ करोड़ आता है। यह ४६ योजनाएँ क्या कर सकेगी और कितनी जल्दी, अभी हमें देखना बाकी है। हमें तो यह दीखना है कि कि[illegible] गति से कार्य हो रहा है यदि लोहा [illegible] सीमेंट मिल जायें तो छोटी छोटी [illegible] योजनाओं को २ वर्ष से कम न लगे[illegible]

सिचाई का प्रबन्ध नदियों में [illegible] बांध कर भी बड़ी बड़ी योजनाओं [illegible] किया जा रहा है। अवश्य इस [illegible] सिचाई के प्रबन्ध से २५० लाख ए[illegible] भूमि की सिचाई संभव हो जायगी [illegible] अधिक अन्न उत्पादन की आशा [illegible] जा सकती है परन्तु प्रथम प्रश्न तो [illegible] है कि देश में,इन योजनाओं पर, इत[illegible] रुपया व्यय करने को मिल पायेगा।

कहाँ केन्द्रीय सरकार को इस [illegible] लाभ हो रहा था और कहां ४० क[illegible] का घाटा होने जा रहा है। वेतनों [illegible] कटौती और आवश्यक रूप से [illegible] करने की आशायें निकभ चुकी [illegible] कम काम करने के सब उ[illegible] किये जा रहे हैं और अनेक बड़ी [illegible] योजनाएँ इस समय बीच से ही [illegible] दी गयी हैं।

अतएव वस्तुस्थिति यह है कि [illegible] हमारे पास १५० या २०० करोड़ रुप[illegible] विदेशों से अनाज खरीदने के लिए [illegible] और न ७ वर्षों में ३७० करोड़ रुपया सिचाई की योजनाओं पर खर्च करने के लिए है जिससे कि हमें अन्न उत्पाद[illegible] से सहायता मिल सके और हम दो व[illegible] पश्चात खाद्यान्नों के सम्बन्ध में अप[illegible] पर निर्भर हो सकें।

यदि हम तालाब और कुऐं बनाक[illegible] अपना कार्य चलावे तो कठिनाई [illegible] है कि समय इतना कम है कि उनक[illegible] बनाना और उपयोग के लाना सम्भ[illegible] नहीं है। ५०,००० कुंओं है भी केव[illegible] १ लाख २५ हजार टन गल्ला उत्प[illegible] हो सकेगा। यदि इस दिशा में का[illegible] करना है तो वह तत्काल प्रारम्भ [illegible] जाना चाहिए। विलम्ब करने से [illegible] कवल कागज तक ही सींमित रह जा[illegible] है।

बीजः— अच्छी उपज के लि[illegible] हमें अच्छे बीज की आवस्यकता पड़[illegible] है। बीज को ठीक मौसम और फसल [illegible] उत्पन्न करना, अच्छी तरह रखना और प्रति वर्ष इसी प्रकार करना चाहिए।

खादः— खाद के ठीक और अधि[illegible] प्रयोग से १० प्रतिशत अधिक उप[illegible] अवश्य सम्भव है। हमारा खाद्य मुख्[illegible] तथा गोबर है।

दूसरी खादें नहीं के बराबर हैं। ९[illegible] लाख से लेकर १ करोड़ टन तक खाद हमारे पास हैं और उसका हम प्रयोग करते हैं। गोबर का एक बड़ा अंश जानवरों का मूत्र है। एकत्रित करनें की खुविधा न होने के कारण बहुत सा मूत्र खो जाता है और खाद का मूल्य घट जाता है। बहुत सा जानवारों का गोबर कंड़े बना कर जला दिया जाता है। भूमि [illegible]

(शेष पृष्ठ १२ पर)

विजयशंकर !

लेखक, श्री अन्हसिर्क अमर

आज की राजनीति किधर जा रही है। पहले के त्याग की प्रतिक्रिया ...रूप में परिणित हो रही है। इस कहानी में कलाकार लेखक ने आज ...राजनीति तथा राज़नीतिज्ञों की मनोवृत्तियों तथा जीवन के वास्तविक तथ्यों ...बड़ा ही सुन्दर तथा सजीव चित्रण किया है। श्री अन्हसिर्क अमर आज ...पीढ़ी के कलाकार और कहानीकार हैं, यह इस कहानी से स्पस्ट हो ...है। कहानी पठनीय है।

प्रांतीय कांग्रेस के अध्यक्ष श्रीविजय...कर के सम्बन्ध में यह लोकप्रसिद्ध था ...उनका सम्पूर्ण परिवार ही नेता जाति ...था। प्रांत के आधे से अधिक नेता ...तो उनके सम्बन्धी थे, या शिष्य। ...घर में, बड़ा लड़का अजय देश के ...बहुत बड़े नेता का निजी सचिव ...छोटा पुत्र अविनाश प्रांतीय मजदूर ...संचालक; दामाद चन्द्रशेखर ...क्षेत्र का एक सर्वमान्य नेता ...पुत्री अणिमा, जो अभी तक ...थी। प्रांत के छात्र आन्दोलन ...प्रमुख कार्यकर्त्री थी और कई ...भी हो आयी थी स्वयं प्रांतीय ...के अध्यक्ष थे ही, पत्नी भी ...महिला मण्डल की नेताओं में ..., यहां तक कि सात वर्ष का पोता ...भी हाथ में तिरंगा झण्डा लिये ...घर के आस पास के लड़कों की ...का नेतृत्व करता हुआ जब निक...था तो किसी नेता से कम नहीं ...पड़ता था। लोग कहते थे कि ...शंकर ने नेतृत्व पर अपना जैसे ...अधिकार ही समझ लिया है। ...की राजनीति पर उन्ही का एक ...साम्राज्य बन गया था। कहीं कोई ...हुई विजयशंकर जी से प्रार्थना ...कि आप सभापतित्व कर दीजिये। ...प्रदर्शनी का उद्घाटन कराना ...श्रीमती शंकर के हाथ पांव ...थे। हड़ताल और जलूसों का भार ...पुत्र ने अपने जिम्में ले ही लिया ...पुत्र भी जब कभी घर आता ...के कार्यकर्तागण उससे वैसे ...आते, जैसे बड़े लाट से मिलने ...जमींदार जाते हैं! सभी ...की चापलूसी में लगे रहते, ...कर जी के घर में पूरा दरबार ...। कोई कहता नेताजी को ...हमारे नगर में बुलाइये, कोई ...मेरी मुलाकात करा दीजिये। ...की राजनीति संचालन में ...का बहुत बड़ा हाथ था ही; ...प्रांतीय छात्र संघ की सभा ...जाने वाली थी।

वर्षों के अथक परिश्रम के बाद सन् १९४६ में जब भारत अपने लक्ष्य की सीमा-रेखा पर पहुँच गया और निष्ठुर ब्रिटिश सत्ता भी कांगरेस के प्रताप का लोहा मान कर हमारे नेताओं से समझौते की बातचीत चलाने पर विवश हुई, तो युगों से सोये हुए निष्प्राण भारतवासियों में भी एक नयी शक्ति का संचार हुआ। सरकार ने प्रांतों में गवर्नरी शासन के अन्त की घोषणा की, नये निर्वाचनों की जोरदार तैयारियाँ होने लगीं, कांग्रेस का मंत्र घर घर फूँका जाने लगा। विजयशंकर जी जहां जेल जाने और पुलिस की लाठियाँ खाने में सदा अग्रसर रहते थे, यहाँ भी पीछे न रहे। मुँह अँधेरे ही मोटर पर आस पास के गांवों में कांगरेस प्रचार के लिये निकल जाते, दिन भर बीसियों सभाओं में व्याख्यान देते और रात होते घर वापस लौटते। खाने पीने तक की चिन्ता न रहती, अक्सर तो ऐसा होता कि रास्ते में ही फूल फुल जो कुछ भी मिल जाता, खा लेते। महीना समाप्त होते होते वे ग्रामीण जनवर्ग के मध्य भी उसी प्रकार प्रसिद्ध हो गये जिस प्रकार नगर की राजनीति में थे। विजयशंकर जी का नाम घर घर लिया जाने लगा, उनकी जय के नारों से आकाश गूँजने लगा।

परन्तु लोकप्रियता के साथ साथ शत्रु भी बढ़ते हैं, और वे सदा अपने प्रतिद्वन्द्वी को हार दिखाने के प्रयत्न में ही लगे रहते हैं, यह मानी हुई बात है।

प्रांत की आन्तरिक राजनीति का भी यही हाल हुआ। पहिले भी विजयशंकर जी की बढ़ती हुई जनप्रियता को देखकर उनके प्रतिद्वन्द्वी कसक उठते थे, और अब यो उन्हें विजयशंकर जी से मोर्चा लेने का अच्छा अवसर मिला। कहने को तो राजनीतिक संस्थाएँ अपना संगठन दृढ़ कर रही थीं, पर अन्दर ही अन्दर उनमें नये नये दल तैयार हो रहे थे। इधर जब सरकार ने कांगरेस के अन्दर से प्रतिबन्ध उडा लिया, तो वे व्यक्ति भी, जो सदा गाँधी जी और कांगरेस को गालियाँ दिया करते थे, कागरेस में जा मिले। इस प्रकार के प्रतिक्रियावादी व्यक्तियों को प्रारम्भ से ही विजयशंकर जी से चिढ़ थी, अतः वे भी आकर उनके विरोधी दल में सम्मिलित हो गये, और उनके खिलाफ प्रचार शुरू कर दिया।

विजयशंकर सीधे सादे राज़नीतिज्ञ थे, अत: इन चालों को समझते हुए भी वे चुप रहे। उनका विरोधी दल अपनी लोकप्रियता बढ़ाने में पूर्ण रूप से संल-

कलाकार श्री अन्हसिर्क अमर।

ग्न था, अतः प्रांतीय धारासभाओं के लिये उम्मीदवार चुनने को कांगरेस ने जब अपना एक चुनाव बोर्ड बनाया, तो उसमें विरोधी दल के ही व्यक्ति अधिक संख्या में आये। विजव शंकरऔर उनके दोनों पुत्र-तो पहिले से ही धारा सभा के सदस्य के और उनके विरुद्ध

विजय शंकर अपनी विजय पर सोचने लगे।

कोई आरोप भी नहीं लगाये गये थे, अतः उन्हें तो चुनाव बोर्ड को कांगरेस उम्मीदवार बनाना ही पड़ता, परन्तु उसमें विजयशंकर जी के विरोधी सदस्यों ने यह भी निश्चय कर लिया कि चाहे कुछ हो जाये, इस बार विजयशंकर के किसी अन्य सम्बन्धी को धारासभा में नहीं आने देंगे।

इधर विजय शंकरजी को यह आशा थी कि इस बार चन्द्रशेखर धारा सभा की सदस्यता के लिये चुन लिया जायेगा, क्योंकि उसने १९४२ के आंदोलन में बहुत अधिक काम किया था। चन्द्रशेखर एवं उसके अन्य सहयोगियों को भी यही आशा थी; परन्तु जब पता चला कि चुनाव बोर्ड ने उसे नही चुना है, तो स्वयं विजयशंकर जी ने भी एक बार खुद बोर्ड के सदस्यों से मिलकर इस सम्बन्ध में प्रयत्न करने का निश्चय किया। उसके अधिकांश सदस्य विरोधी पक्ष के ही थे, अतः उन्हें कोई आशा नहीं थी; तब भी उनके मित्रों ने उन्हें एक बार चुनाव बोर्ड के सदस्यों से मिलने को बाध्य कर दिया।

बोर्ड के अध्यक्ष महाशय ओमप्रकाश जी विजय शंकर जी के पुरानी मुलाकाती थे, पर इधर कुछ दिनों से दोनों में कुछ अनबन हो गयी थी। तब भी विजय शंकर जी के पहुँचने पर महाशय ओमप्रकाश ने उठकर उनका स्वागत किया। वे यह तो समझ ही गये थे कि विजयशंकर जी किस काम से आये हैं, पर चुप ही रहे। कुछ देर तक इधर उधर की बात चीत चलती रही, अन्त में विजय शंकर जी ने ही काम की बात छेड़ी। बोले—कहिये ओमप्रकाश जी, आपके चुनाव का काम अभी पूरा हुआ या नहीं?

ओमप्रकाश जी ने कहा—'अभी तो नहीं विजय शंकर जी; पर आप लोग तो चुन ही लिये जाएंगे, इसका आप विश्वास रक्खें।'

'प्रताप नगर निर्वाचन क्षेत्र से आपने किसे खड़ा करने को सोचा है?' विजय शंकर जी ने बात बढ़ायी।

'अभी तो मामला विचाराधीन है, कुछ तय नहीं हुआ कि वहां से किसे खड़ा किया जाये। क्यों, आपकी क्या राय है?' अध्यक्ष महोदय ने पूँछा।

विजय शंकर जी बोले—'चन्द्रशेखर को क्यों नहीं खड़ा कर देदे?'

जानते हुए भी अध्यक्ष महोदय अनजान बने—'कौन चन्द्रशेखर जी?'

'अरे चन्द्रशेखर जी,—प्रताप नगर की जिला काँगरेस के प्रधान! सन् '४२ में तो प्रान्तीय डिक्टेटर भी रह चुके हैं। आश्चर्य है आप नहीं जानते?'—विजयशंकर जी ने जवाब दिया।

'वह तो शायद आपके कोई सम्बन्धी भी हैं न?'—महाशय ओमप्रकाश ने पूँछा।

विजय शंकर जी ने जवाब दिया—'हाँ, मेरी बड़ी पुत्री नीरजा के पति हैं। बड़े ही कार्यकुशल और कार्यकर्ता हैं। असेम्बली में उनके रहने से आपको बहुत सहायता मिलेगी।'

ओमप्रकाश ने अब साफ बात करना अधिक ठीक समझा। बोले—'सच बात विजय जी यह है, कि एक परिवार के इतने अधिक व्यक्तियों को ले लेने में कांगरेस की प्रतिष्ठा खो जाने का भय है। चन्द्रशेखर जी से मैं अच्छी तरह परिचित हूँ, और यह मैं मानता हूँ कि वे असेम्बली की सदस्यता के लिये एक बहुत योग्य व्यक्ति हैं, परन्तु जनता का मुँह भी तो नहीं बन्द किया जा सकता। लोग तो यही कहेंगे कि चन्द्रशेखर विजय शंकर जी के दामाद थे, इसी से ले लिये गये।'

'खैर, जैसी आप लोगों की मर्जी। पर तब भी, आपने उस निर्वाचन क्षेत्र, से किसे खड़ा करना निश्चित किया है, —विजय शंकर ने प्रश्न किया।

'मैंने बताया न, अभी तो कुछ निश्चित नहीं है, पर लोगों का ऐसा विचार है कि रजनीकान्त को खड़ा किया जाये।'—उत्तर मिला।

'कौन रजनीकान्त? वही प्रजा पार्टी वाला न?'

'जी हाँ, वही रजनीकान्त। बड़ा मेधावी कार्यकर्ता है।'

'पर उसकी उम्र तो अभी कुछ अधिक नहीं। चौबीस पच्चीस वर्ष का होगा। आपको इस जगह के लिये किसी अनुभवी आदमी को खड़ा करना चाहिए था।'—विजय शंकर जी ने कहा।

'उम्र से क्या होता है विजय शंकर जी'—महाशय ओमप्रकाश बोले—'वहां के गाँवों पर उसका बहुत अधिक प्रभाव है। एक वोट भी अलग नहीं जायेगा!'

'तो ठीक है, कोई हर्ज नहीं। हमें तो आजकल नवयुवक कार्यकर्ताओं की ही बहुत आवश्यकता है। आपके चुनाव पर मैं कांगरेस को बधाई देता हूँ, —कुर्सी से उठते हुए विजयशंकर जी ने कहा।

ओमप्रकाश जी भी अपनी जगह से उठकर हँसने की कोशिश करते हुए बोले—हसमें मैं बधाई का पात्र नहीं विजय शंकर जी, यह सब आप ही लोगों की कृपा है।' फिर मुँह गम्भीर बनाते हुए उन्हों ने कहा—'क्या बताऊँ विजय शंकर जी चन्द्रशेखर जी आजाते तो मुझे बड़ी खुशी होती, पर कहने वालों को क्या कहूँ। मुझे स्वयं बड़ा दुःख है।'

विजयशंकर जी ने कहा—'खैर, कोई बात नही ओमप्रकाश जी। अभी तो कौंसिल का चुनाव भी बाकी है।'

'हाँ हाँ'—ओमप्रकाश जी बोले—'वह तो और भी अअच्छा है। मैं अपनी ओर से पूरी कोशिश करूँगा कि उसके चनाव में चन्द्रशेखर जी आ जाएँ।' और गर्व से मुस्करा उठे।

तभी विजय शंकर ने कहा—जी हाँ, प्रयत्न कीजिएगा। और यह भी अच्छा ही हुआ कि आपने रजनीकान्त को प्रताप नगर से खड़ा करने को चुना। अब तो वह भी अपने ही परिवार में आने वाला है। उसने और, आणिमा ने अकल ही मुझे अपने प्रेम की सूचना दी है, और शीघ्र ही उनका विवाह होजायगा। आपको भी निमन्त्रण देता हूँ; देखिये, आना भूलिएगा मत।'— और चल दिये।

महाशय ओम प्रकाश सोच रहे थे—'विजय किसकी हुई—मेरी या विजय शंकर की?'

रंगमंच

'आरज़ू' और 'पतंगा' कैसा है ?

क्या यह दोनों फिल्म जनता के स्तर को ऊँचा उठाते हैं

लेखक, श्री वेदप्रकाश शर्मा एम० एस० सी०

प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता श्री दिलीप कुमार।

भारतीय सिने कहानीकारों पर जितना प्रभाव सुविख्यात लेखिका एमिली ब्रोंटे के प्रसिद्ध उपन्यास 'वदरिंग हाइट्स' का पड़ा है, उतना प्रभाव शायद ही किसी विदेशी चित्र या उपन्यास का पड़ा। इस प्रभाव का उदाहरण कुछ प्रसिद्ध चित्र जैसे रतन, जानपहचान, दिल्लगी और मेला देखने पर मिल सकता है। आरज़ू भी इसी उपन्यास पर आधारिक कहानी मानी जा सकती है।

आरज़ू 'इन्डियन नेशनल पिक्चर्स लिमिटेड' की नवीन भेंट है और शायद यह दिलीप और कामिनी का अन्तिम चित्र है, क्योंकि यह सुना गया है कि कामिनी कुछ घरेलू झगड़ों के कारण अब किसी आगामी चित्र में काम नहीं करेगी। कहानी उर्दू की प्रसिद्ध कहानी लेखिका इस्मत चुगताई की है। निर्देशन इनके पति शाहिद लतीफ़ ने किया है। हमको बड़े दुख के साथ कहना पड़ता है कि कहानी में कई कमजोरियाँ हैं जिनके कारण स्थिरता आ जाती है और दर्शकों पर इसका अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता।

गांव के एक लड़के और लड़की की कहानी है। यह दोनों बचपन से ही एक दूसरे से प्रेम करते हैं, परन्तु दोनों की शादी में इसलिये अड़चन पड़ती है क्योंकि लड़का अपने पेट के लिये कुछ काम नहीं करता है। जब वह काम की तलाश में जाता है तो वहां आग लग जाती है और यह समझा जाता है कि वह आग में जल कर मर गया है। इधर लड़के का और लड़की के नाम पत्र लड़की के द्वारा नष्ट कर दिये जाते हैं और वह अपकी लड़की की शादी एक बूढ़े जमींदार से कर देता है, परन्तु लड़का फौज में लेफ़्टिनेन्ट हो जाता है और गाँव आने पर अपनी प्रेमिका को शादी शुदा देखता है। अपनी बेइज्जती का बदला लेने का वह लड़की की ननद को फाँसता है और एक ड्रामा रचता है जिसमें वह अपनी प्रेमिका को जैसा समझता है चित्रण करता है इस ड्रामा को देख कर लड़की के हृदय पर चोट लगती है और वह मर जाती है।

कहानी कोई विशेष नहीं है। परन्तु हमारी समझ में गोपे की भूमिका का कोई महत्व नहीं आया। यह हजरत कामिनी के प्रेम जीतने के लिये जी-तोड़ कोशिश करते हैं, परन्तु इसमें सफल न होने पर सीता बोस से शादी कर लेते हैं और ऐसी कहानी के मध्य से गायब होते हैं कि इनका कुछ पता बाद में नहीं मिलता है। गोप साहब बिलकुल थियेटर के जोकर की तरह मालूम होते हैं। यदि इनकी भूमिका चित्र में न होती तो कहानी पर इसका प्रभाव कुछ नहीं पड़ता मालूम होता है कि गोप के एक लोकप्रिय मजाकिया होने के कारण ही उनको इस चित्र में भूमिका दी गई है। दूसरी भूमिकाओ और जिन कलाकारों ने कार्य किया है उनका अभिनय वास्तव में बिलकुल नहीं जमता।

यदि इस चित्र में दिलीप और कामिनी न होते तो इसमें कुछ न रह जाता। यह कमिनी का ही अभिनय है जो चित्र में कुछ जान डालता है। कामिनी दिलीप कुमार से जब प्रेम करती है तो वह दृश्य बिलकुल वास्तविक मालूम पड़ते हैं अनिल विस्वास का संगीत और श्रीवास्तव की फोटोग्राफी अच्छी है चित्र कामिनी और दिलीप के अभिनय के कारण एक बार अवश्य देखा जा सकता है।

'साजन' फिल्म में अभिनेत्री रेहाना अभिनय के समय।

पतंगा

पतंगा वर्मा फिल्म्स, की नवीन कृति है। भूमिको में श्याम, याकूब, गोप, निगार सुलताना पूर्णिमा और मोहन है। पतंगा में एक अनोखी चीज यह है कि अधिकतर इसमें कार्य करने वालों के नाम ज्यों का त्यों है जैसे श्याम का नाम श्याम, पूर्णिमा का नाम पूर्णिमा, परन्तु याकूब का नाम राजा, निगार सुल्ताना का नाम रानी और मोहना का नाम जलवा रक्खा गया है।

कहानी कुछ ऊलजलूल ढंग की है। कभी इसमें कथा का प्रवाह एक तरफ जाता है परन्तु फिर तोड़ मरोड़ कर दूसरी तरफ कर दिया जाता है इसके कारण कहानी में कई अस्वाभिकताएं हैं। गांव के चौधरी के यहां छः लडकियों के उपरान्त पुत्र पैदा होता है। एक ज्योतिषी लड़के के बारे में बतलाता है कि बड़े होने पर उसके इर्दगिर्द मोटर हीमोटरें घूमेंगी। लड़के के माता पिता यह सुन कर बहुत प्रसंन्न होते हैं और सोचते हैं कि बड़ा होने पर बहुत धनवान होगा। राजा (लड़के का नाम) बड़े होने पर एक सिपाही ही केवल बनता है और मोटरों को चौराहे पर खड़ा हो कर हाथ दिखलाता है एक दिन जब राजा चौराहे पर ड्यूटी दे रहा था कि उसने रानी को देखा जो अपने बूढ़े बाप के गा गाकर दवाइयाँ बेच रही थी। इधर राजा के चौराहे से हट जाने पर दो मोटरें आपस में लड़ जाती हैं और इसके कारण उसको नौकरी से एक साल के लिये हटा लिया जाता है। राजा की जब भेंट रानी से फिर होती है तो वह रानी के सामने वह प्रस्ताव रखता है कि वप दोनों गोप थियेटर में नौकरी करलें। गोप सेठ उन दोनों को नौकरी दे देता है और रहने के लिये एक होटल में प्रबन्ध कर देना है। इस होटल में रानी की भेंट श्याम से होती है जो पहली ही नजर में प्रेम का स्वांग रचता है परन्तु रानी उसकी तरफ से बिलकुल उदासीन रहती है। इधर राजा की दशा रानी के प्रेम में बेहाल थी।

प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री तथा गायिका लीला चिटनिस

श्याम गोप थियेटर के मालिक गोप सेठ को अपने बंगले पर थियेठर करने के लिये बुलाता है और वह एक जागीरदार का भेष बनता है। थियेटर के उपरान्त श्याम रानी से अपने प्रेम का इजहार करता है। इधर श्याम के पिता श्याम की शादी अपने एक मित्र पूर्णिमा से करने की ठान लेते हैं। पूर्णिमा इस चित्र में केवल आँसू बहाने के सिवाय और कोई कार्य नहीं करती है रानी को जब इस बात का पता लगता है तो वह श्याम और पूर्णिमा की शादी करा देती है और खुद राजा के साथ चली जाती है।

निर्देशन श्री एच० एस० खायैल का है जो अभी इस क्षेत्र बिलकुल नये मालूम पड़ते हैं। चित्र में संवाद निहायत अश्लील और बेहूदा हैं। खास तौर पर वह संवाद जो रानी और गोप थियेडर के दरबान का है पता नहीं सेंसर की निगाह यहाँ क्यों नही पड़ी। याकूब की भूमिका उपयक्तन होने के के कारण जो किसी किसी समय तो प्रसिद्ध विदेशी अभिनेता हार्डी के भी काम करता है। श्याम तो मजबूर के बाद छिस चित्र में आया उसका अभि-अत्यन्त रूखा रहा है इस चित्र में फोटोग्राफी सब स्टूडियो के अन्दर की हैं। यहाँ तक कि याकूब जब चौराहे पर दिखाया जाता है तो केवल उसकी शकल दिखाल देती है। मालूम नही इस पर्देबाजी के पास अभिनय करते हुये कलाकारों की हंसी क्यों नही आती। पर्देबाजी अगर किसी हद तक हो तो ठीक रसती है परन्तु सम्पूर्ण चित्र में इसका रहना अत्यन्त अखरता है पतंगा इन सब बुराइयों के कारण देखने लायक चित्र नहीं है।

ग्राहकों, एजेंटों और विज्ञापनदाताओं को समस्त पत्र व्यवहार मैनेजर, 'देशदूत' इलाहाबाद के नाम पर ही करना चाहिए।

स्वास्थ्य और व्यायाम

नेत्र-चिकित्सा

आँखों की ज्योति बढ़ाने का उपचार

ले०, डाक्टर आर० एस० अग्रवाल

सूर्यकी किरणों में नेत्र-रोग दूर करने की शक्ति होती है। अनेक रोगों में सूर्य-व्यायाम से जादू का-सा असर होता है। नेत्रपीड़ा, चौंध लगाना एक बार के व्यायाम से ही कम हो जाते हैं। रोहे बहुत ही जल्दी अच्छे हो जाती हैं। विशेषता तो यह है कि हानि तो किसी-को होती ही नहीं। यदि आप किसी से चिकित्सा कराते हैं तो भी सूर्यव्यायाम अधिक लाभदायक होता है। नेत्रों में एक प्रकार की शक्ति उत्पन्न हो जाती है जो नेत्रों में तेजी पैदा करती और उन्हें स्वस्थ रखती है।

सूर्यव्यायाम की विधि

सुख से कुर्सी पर या पृथ्वी पर सूर्य की ओर मुख करके, नेत्र बंद करके ५ से १० मिनट तक बैठो। प्रातः सायं या किसी भी समय जब कि सूर्य में प्रचंडता न हो, बैठ सकते हो। यदि चाहो तो सिर को एक रूमाल से ढक लो। यदि सूर्य न चमकता हो तो २०० से ५०० की बिजली की बत्ती के सामने बैठ जाओ। ६ इंच की दूरी पर या जलती आग के सामने बैठ जाओ। सूर्य, बिजली या आग के सामने बैठकर अपने शरीर को इस प्रकार हिलाते रहो जैसे कि घड़ी का पेंडुलम हिलता है या सांप बीन के सामने अपने फन को हिलाता है।

आखें धोना

पहला तरीका—हाथ में पानी ले-लेकर आंखों पर छपके देना।

दूसरा तारीका—आंख धोने के प्याले में पानी भर लो और प्याले को आंख पर इस प्रकार लगाओ कि प्याले का नीचे का किनारा नीचे की पलक को छुए और ऊपर का किनारा ऊपर की पलक से अलग रहे। फिर प्याले में पलक झपककर आंखें करीब २ मिनट तक धोओ। दूसरी आंख धोने के लिये फिर प्याले को पानी से भर लो। इस तरह प्याले में आँख धोने में गलती यह होती है कि प्याले को आंख पर ज़ोर से गाड़ लेते हैं और सिर को ऊपर उठा लेते हैं।

तीसरा तरीका—बाल्टी या एक तामचीनी के बड़े प्याले में पानी भर लो और अपने मुख को पानी में डुबोओ और पानी के अंदर पलक झपकाते रहो। जब साँस लेने की जरूरत हो तो चेहरे को बाहर निकाल लो और फिर पानी में डुबोओ, इस तरह करीब १० बार करना चाहिए।

इस तरह आंख धोने के प्रयोग को और भी लाभदायक बनाया जा सकता है। बाल्टी में आंख धोते समय इस प्रकार खड़े होओ कि मुंह सूरज की तरफ हो। जब पानी से बाहर मुंह निकालों सूर्य की ओर कुछ सेकंड तक देखो और पलक झपको। फिर पानी में मुंह डुबोओ। इस तरह करीब १० बार करना चाहिये।

इस प्रयोग से आंखों में तेज पैदा होती है। आंख धोने के बाद पामिंग करना चाहिये।

ध्यान और पामिंग

शास्त्रों में ध्यान की बड़ी महिमा गायी है। मस्तिष्क को शांति देने वाले साधनों में ध्याम ही प्रधान है। बड़े-बड़े महात्माओं के बारे में कहा जाता है कि उनके नेत्रों से ज्योति निकलती है, उनसे तेज टहकता है। यह सब ध्यान की महिमा है।

डाक्टर बेट्स ध्यान को पामिंग कहते हैं और नेत्रों के लिये इसकी प्रशंसा करते नहीं अघाते।

पामिंग करने की विधि

आंखें बंद कर लो और दोनों हथेलियों से बन्द आंखों को धीरे से ढक लो। आंखें सरलता से बन्द कर दोनों हथेलियों से ढकने के बाद किसी काली वस्तु या किसी प्रिय वस्तु का ध्यान करो। जैसे क्लर्क अपनी लेखनी का, बच्चे अपनी गेंद का, मातायें नन्हें शिशुओं का, लड़कियां अपनी गुड़ियों का, चित्रकार अपनी तूलिका का ध्यान कर सकता है। यदि ध्यान में चित्रकार अपनी तूलिका को घुमावें, ध्यान सरलता से कर बच्चे अपनी गेंद को उछालें, मातायें बच्चों को हंसता-लोटता, कभी उसके दाड़िम से शुभ्र दांतोंको लाल-लाल मसूड़ों से निकलते हिलते होंटों के बची देखें तो दृष्टि में अभूतपूर्व परिवर्तन होता है। पमिंग ३ से १० मिनिट तक करना चाहिये। कोहनी के नीचे तकिया रख लो या कोहनी मेज पर रख लो।

पामिंग करते समय नेत्रों में प्रकाश नहीं जाने पाता, इसलिये ऐसा प्रतीत होता है मानो किसी अंधेरे कमरे में बैठे काले अंधकार देख रहे हों। यदि नेत्र स्वस्थ हों और आँखों व मन पर किसी प्रकार का जोर न हो तो पमिंग करते समय गहरा कालापन प्रतीत हुआ करता है। परन्तु जब नेत्र दुर्बल होते है या किसी प्रकार आँखों व मनपर जोर पड़ता है तो गहरा कालापन प्रतीत नहीं होता, अनेक प्रकार के रंग या हलका कालापन प्रतीत होता है।

मन तो कुछ-न-कुछ विचार करता ही रहता है। यदि पामिंग करते समय किसी प्रिय, मनोरंजक, परिचित वस्तुका विचार मन में हो तो ध्यान अच्छा होता है। या, यदि अनेक काली वस्तुएँ एक के बाद एक ध्यान में लायी जायें, जैसे काला छाता, जूता, पालिश टोपी, बाल कपड़ा इत्यादि या खाली काले या सफेद रंग का ही ध्यान किया जाये, बच्चों को कहानी या गाना सुनाया जाये तो भी लाभ होता है। यदि ध्यान सरलता से होने लगे और किसी वस्तु को ध्यान में लाने के लिये किसी प्रकार की कोशिश न करनी पड़े तो फिर आँखों के सामने कालापन बढ़ जाता है। आँखों व मस्तिष्क में शांति, ठंडक, आराम-सा मालूग होता है, नसों का तनाव जाता रहता है, सर और आँखें हलकी हो जाती है। पामिंग के पश्चात् जब आखें धीरे से खोली जावें तब र दृष्टि चार्ट पर प्रेक्टिस करनी चाहिये।

यदि पढ़ने की दृष्टि कमजोर हो तो बारीक अक्षर वाले चार्ट-को पढ़ना चाहिये।

त्राटक किसे कहते हैं ?

जब स्वस्थ आंखें किसी वस्तु को देखती हैं तो उन्हें उसका वही हिस्सा ज्यादा साफ दिखायी देता है जिस पर दृष्टि जमी होती है। दूसरे हिस्से उतने साफ नहीं दिखाये देते। आँख- की इस स्वाभाविक शक्ति के विशेष प्रयोग को त्राटक अथवा सेण्ट्रल फिक्सेशन (Central Fixaton) कहते हैं। दृष्टिचार्ट पर ऊपर के अक्षर के ऊपरी हिस्से की ओर देखें तो ऊपर का हिस्सा ज्यादा साफ दिखायी देगा। स्वस्थ नेत्रों में यह विशेषता क्यों होती है ? कारण यह कि अक्स ग्रहण करनेवाले परदे में अथवा छायापट में एक बिन्दु होता है, जिसे केन्द्रबिन्दु कहते हैं, इसीसे किसी वस्तु का जो हिस्सा देखा जाता है वही ज्यादा साफ दीखता है।

कमजोर दृष्टि में यह केन्द्रबिन्दु अपना कार्य पूरी तरह करने में असमर्थ होता है। यदि कमजोर दृष्टिवाले त्राटक सिद्ध कर सकें तो नेत्र का स्वास्थ्य सुधर जायगा, दृष्टि सतेज हो जायगी।

किसी वस्तु को टकटकी बांधकर देखने से त्राटक-प्रैक्टिस फौरन गलत हो जाती हैं। प्रैक्टिस करते समय हलके-हलके पलक झपकने का ख्याल रहना चाहिये।

दृष्टिचार्ट पर त्राटक प्रैक्टिस

चार्ट अपने हाथ में लो। अक्षर में ऊपर का और नीचे- का भाग होता है। नीचे के भाग की तरफ हलके से देखो तो नीचे का भाग ऊपर के भाग से अधिक साफ दिखायीदेगा। फिर ऊपर के भाग की तरफ दृष्टि ले जाओ तो ऊपरका भाग ज्यादासाफ दिखायी देगा। इस तरह तीन बार ऊपर-नीचे अक्षर पर दृष्टि फेरो। एक अक्षर पर अभ्यास करने में कुछ सेकन्ड लगते हैं। इसी प्रकार चार्ट के छोटे अक्षरों पर प्रेक्टिस करो, यदि वह ठीक [illegible] पर प्रैक्टिस ठीक न होती हो तो उन पर प्रैक्टिस करो।

अक्षर के बीच में सफेद [illegible] भी होती है। अपनी दृष्टि इस [illegible] जगह पर रखो, कालेपन पर नहीं। [illegible] 'प' में सफेद भाग है, इसपर दृष्टि रखो [illegible] यह सफेद भाग कागज के दूसरे भाग [illegible] अधिक सफेद दिखायी देता है, [illegible] का काला भाग अधिक काला प्रतीत होने लगता है। ऐसा करने में एक दो सेकन्ड ही लगते हैं। यदि अक्षर में सफेद भाग ज्यादा सफेद न मालूम होता हो तो [illegible] आँखें बाद कर लो और फिर देखो। [illegible] प्रकार छोटे अक्षरों पर अभ्यास [illegible] चार्ट का फासला धीरे-धीरे बढ़ाते जाओ।

अक्षरों के दांये बांयें दृष्टि फेरो [illegible] अक्षर देखने की कोशिश न करो। [illegible] दांयें बायें विपरीत फिरता मालूम [illegible] और तीन-चार बार प्रेक्टिस करने [illegible] बाद अक्षर ज्यादा साफ दिखायी [illegible] लगेगा।

नोटः—दूर दृष्टि चार्ट, मूल्य [illegible] डा० अग्रवाल आईइन्सटी-टयूट देहली से मगाया जा सकता है। त्राटक की अनेक क्रियाएं 'नेत्र सुधार' पुस्तक, मूल्य ४), मंगा कर पढ़िये।
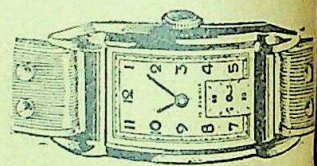
महाकोशल की चिट्ठी

पाकिस्तानियों के पैंतरे देखते जाइये

मध्यप्रदेश उसके प्रभाव से मुक्त नहीं है—राष्ट्रीय बचत सप्ताह—आर्डिनेंस के मजदूरों में दलबन्दी—प्रांत में प्लेग का प्रकोप—मिश्र-वियाणी के मतभेद का अंत कब होगा ?

(विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

पूर्वी बंगाल के अत्याचारों के प्रभाव से मध्यप्रदेश वंचित नहीं है। पिछले कुछ दिनों से प्रांत में साम्प्रदायिकता भी भड़क रही है। पाकिस्तान के गुप्त एजेंट भी आपस में मारकाट करने की लगातार कोशिश कर रहे हैं। होली के अवसर पर कटनी में दंगा हो गया और फलस्वरूप २१ व्यक्ति मारे गये। दंगे के कारण बताया जाता है कि दो मेहतर एक दूसरे पर रङ्ग फेंककर होली मना रहे थे। रंग के छीटे एक मुसलमान पर पड़े और यहीं से झगड़े की शुरूआत हुई। इसी प्रकार कामठी में भी तनाव बढ़ गई। कामठी में जनतंत्र दिवस, २६ जनवरी को भी इसी प्रकार सनसनी फैली थी। ५ मार्च को कामठी में एक व्यक्ति अपने मकान से एक मुस्लिम प्राइमरी पाठशाला हटाने का आदेश अदालत से लेकर आया और वह उसे कार्यान्वित करना चाहता था। किसी ने उस पर हमला कर दिया और वह बुरी तरह घायल हो गया। सिवनी में भी ५ मार्च को झगड़ा होते होते बचा। एक मुसलमान फकीर और एक हिन्दू लड़के में कई दिनों से वैमस्य चला आ रहा था। फकीर ने लड़के को बहुत मारा और उस प्रकार झगड़े की शुरूआत हो गई।

मध्यप्रदेश के गृहमन्त्री पंडित द्वारकाप्रसाद जी मिश्र ने गुंडों को चेतावनी दी है और आपने प्रांतीय धारा सभा में बतलाया कि यह साम्प्रदायिक आग पाकिस्तान के हिमायतियों द्वारा भड़काई जा रही है। आपने स्वीकार किया कि पूर्वी बंगाल की करुण कहानी का व्यापक प्रभाव जानता पर पड़ा है। सरकार को ज्ञात हुआ है कि मस्जिदों में भी मजहबी आग भड़कायी जाती है क्योंकि प्रांत में जहां जहां झगड़े हुये उनका आधार कुछ भी नहीं था। सरकार साम्प्रदायिक दङ्गों को रोकने के लिये हर प्रकार से कोशिश कर रही है और कड़ा से कड़ा कदम उठाने से पीछे नहीं हटेगी।

राष्ट्रीय बचत सप्ताह

प्रांतीय सरकार की ओर से राष्ट्रीय बचत सप्ताह मनाया जा रहा है। इसका उद्देश्य है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी आमदनी में से कुछ बचाने की आदत डाले। महगाई को समाप्त किया जाय और एकत्रित पूंजी को सहायता से राष्ट्र निर्माण किया जाय। प्रांत के प्रमुख मन्त्री पंडित रविशंकर शुक्ल अपने एक वक्तव्य में कहते हैं कि सभी उन्नतिशील देशों में बचत और कम खर्च घरेलू जीवन के प्रमुख आश्रय हैं और वास्तव में ये ही उनकी उन्नति के प्रमुख कारण भी हैं। सचमुच में बचत एक प्रकार की आदत और अभ्यास है। यह एक गुण है जो कि हमारे राष्ट्रीय साधन के एक आवश्यक अंग के समान होगा जिससे हमारे शहरों की उन्नति, उद्योग धन्धों का विकास, व्यापार की वृद्धि, सामाजिक प्रगति और रहन सहन का स्तर ऊँचा उठ सकेगा। यह साधन अत्यंत सुरक्षित है। अतः अल्प बचत से ही हमें अपने प्रांत को आगे बढ़ाने में सहायता मिल सकेगी। समस्त प्रांत में अल्प बचत योजना को सफल बनाने के हर संभव प्रयत्न किये जा रहे हैं।

आर्डिनेन्स डिपो के मजदूरों में दलबन्दी

गत सप्ताह अखिल भारतीय आर्डिनेंस फेडरेशन की बैठक जबलपुर में हुई थी। उसी समय से राष्ट्रीय-ट्रेड-यूनियन कांग्रेस और समाजवादी मजदूर नेताओं के मतभेदों ने उग्ररूप धारण कर लिया है। कहा जाता है कि इस संगठन में राष्ट्रीय-ट्रेड-यूनियन कांग्रेस के कार्यकर्ताओं का बहुमत है। समाजवादी मजदूर नेता मजदूरों को अपनी ओर मिलाने की कोशिश कर रहे हैं। दूसरी ओर समाजवादी कार्यकर्त्ताओं का कहना है कि राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस कांग्रेसी नेताओं के हाथ में खेल रही है और वे अगामी चुनाव के लिये भूमिका तैयार कर रहे हैं।

महाकोशल में प्लेग का प्रकोप

पिछले दो वर्षों से इस बीमारी ने जोर पकड़ लिया है। गत आठ माह से नरसिंहपुर डिविजन में प्लेग से तबाही मच गई है। गांव के गांव खाली हो गये हैं और जनता झोपड़ों में रह रही है। नरसिंहपुर गोरेगाँव में अब भी प्लेग जोरों से फैला हुआ है। जबलपुर शहर में भी प्लेग खूब फैल चुका है। लोगों को भी
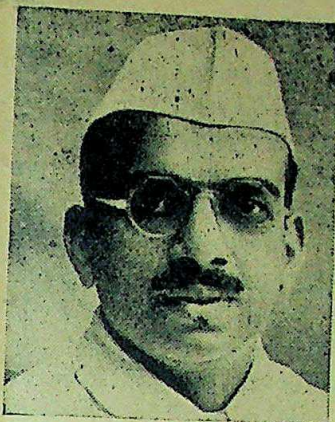
महाकोशल प्रांतीय कांग्रेस के सभापति सेठ गोविन्ददास।

अनिवार्य रूप से टीके लगाये गये हैं और एक शहर के बाहर कैम्प अस्पताल भी शुरू किया गया है। अब इसका जोर जबलपुर शहर के आस पास के गाँवों पर भी बढ़ रहा है। मंडला जिले का नारायणगंज इलाका भी इससे पीड़ित है। पिछले वर्ष भी वहाँ प्लेग का जोर था और इस वर्ष भी लोग घरबार छोड़ कर मैदानों में पड़े हुए हैं।

मिश्र-वियाणी गतिरोध

गृहमंत्री पंडित द्वारकाप्रसादजी मिश्र और विदर्भ प्रांत के नेता श्री बृजलाल वियाणी में मतभेद बढता ही जा रहा है। वियाणी जी का कहना है कि मंत्रिमंडल को बरार के मामले में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है। बरार के वयोवृद्ध नेता वीर वामनराव जोशी को कुछ कारणों से कांग्रेस से अलग करने की बात चल रही है। पंडित मिश्र इसके पक्ष में नहीं हैं। कुछ दिनों पूर्व मिश्रजी अकोला गये थे और उन्होंने आम सभा में उपस्थित समूह से कहा उनके आकोला आने से क्या उन्हें कोई एतराज है ? सभी लोगों ने हाथ उठाकर उनके बरार आने का स्वागत किया। वियाणी जी अकोला के रहने वाले हैं और इस चुनौती का जवाब एक वक्तव्य देकर दिया।

विदित हुआ है कि सरदार पटेल ने इन दोनों नेताओं से कहा है कि वे अपने आपसी झगड़े समाप्त कर दें। इस हेतु वियणी मिश्रजी से मिलने नागपुर गये हुये थे। जब वे मिश्रजी के बँगले पर पहुँचे तो वीर वामनराव जोशी को भी वहाँ बैठे हुए देखा। श्री वियाणी यह कह कर वहाँ से चले आये कि वे मिश्र जी से मिलने आये थे, न कि वीर वामनराव जोशी से। समाचार ज्ञात हुआ है कि श्री वियाणी दिल्ली गये हैं। बहुत संभव है कि सरदार पटेल ने उन्हें इसी सम्बन्ध में बुलाया हो।
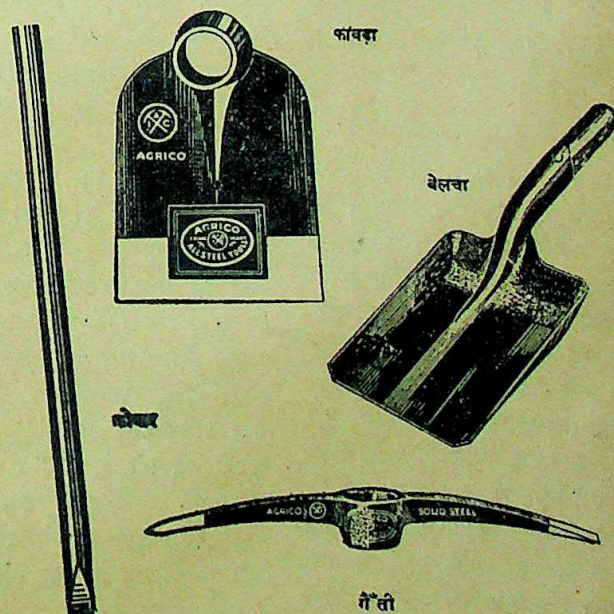
(पृष्ठ १२ के आगे)

आवश्यकता के लिये बची हुई खाद पर्याप्त नहीं,होता, अतएव भूमि की उर्वरा शक्ति पर जोर दिया जाता है और फसलें उसी के सहारे उगती हैं। यदि हम मनुष्य के शौच और जानवरों के गोबर को उचित रूप से काम में ला सकें तो हमें बहुत सी खाद मिल सकती है और हमारी उपज बढ़ सकती है।

रसायनिक खाद भारत में बड़ी मात्रा में उपलब्ध नहीं है। भारत प्रतिवर्ष, अमरीका, ब्रिटेन, बेलजियम और इटली से ३ लाख टन खाद खरीदता है, परन्तु वह हमारी आवश्यकताओं के लिये पूर्ण नहीं होती। अन्तर्राष्ट्रीय खाद्य परिषद ने हमें केवल हमारी खाद की आधी आवश्यता प्रदान की जिसमें हमारे देश में उत्पन्न खाद की मात्रा भी आ जाती है। फल हुआ है कि हमें केवल हमारी मांग का तिहाई मिला है।

अभी हमने अपनी पुरानी आदतों को नहीं छोड़ा है। हमें अपनी पुरानी चाल खूब पसन्द है। अनुमान यह है कि हमारी फसल के पाँचवे हिस्से को कीड़े मकोड़े और बीमारियां नष्ट कर देती है। ८० लाख टन गल्ला प्रतिवर्ष जल और सड़ जाता तथा गोदामों में चूहे इत्यादि खा जाते हैं। अब तक इस पर कुछ नहीं किया गया है।

१५ अगस्त १९४९ को प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू, गवर्नर जनरल श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारी संयुक्त प्रांत के गवर्नर श्री होमी मोदी इत्यादि अपने बंगलों को खेतो और बागों में परिणत करने से सलंग्न थे। एक वर्ष के अनुभव के आधार पर ही हम यह जान सकेंगे कि सरकारी बागों और हमारे मकानों को खेतों में परिणत करने से क्या लाभ होगा।

फल और तरकारी उत्पादन

सरकार केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सभी आलू तथा तरकारियों के उत्पादन को अत्यधिक महत्व दे रही हैं। इन वस्तुओं का उत्पादन दो वर्षों में अवश्य दुगना किया जा सकता है। वस्तविक कठिनाई इनके उत्पन्न करने में नहीं वरन् इनके खाने में होगी। क्या सरकार सचमुच यह समझती है कि तरकारी और आलू जनता के भोजन हो सकते है?

कभी-कभी यह कहा जाता है कि भूमि को अन्न के अतिरिक्त वस्तु पैदा करने के काम से हटा कर अन्न तथा खाने की वस्तुएँ उत्पन्न करने के लिये प्राप्त करना चाहिये। इस समय हमें सभी वस्तुओं की कमी है। हम नहीं जानते कि हम रूई, तिलहन और पाट इत्यादि में से किस वस्तु का उत्पादन कम करके, भूमि को भोजन सामग्री उत्पादन करने के लिये ले सकते हैं? वरजीनिया तमाकू के उत्पादन को ही लिजिये। हम उसे भी कम नहीं कर सकते क्योंकि वह हमारी आवश्यकता है और वह हमें बाहर से पूर्णमात्रा में नहीं मिल सकती। ईख की खेता को कैसे भी कम नहीं किया जा सकता और इसी प्रकार अन्य अनेक फसलें हैं।

ईख की फसल भूमि को अपार हानि पहुँचती है और ईख की खेती के परिणाम स्वरूप हमारी बहुत सी भूमि इतनी खराब हो गयी है कि उसको ठीक होने में वर्षों लगेंगे। रसायनिक खादों से भी वर्षों का काम मिनटों में नहीं हो सकता।

इस प्रकार जहाँ तक हम समझते हैं, भारत में खाद्यान्नों की कमी २ वर्ष की छोटी अवधि में पूर्ण नहीं हो सकती। हम योजना बनाकर स्वावलम्बी नहीं हो सकते। सैकड़ों सिफारिशों; बहुत से कमीशन और कान्फ्रेंस, कई एक केन्द्रीय कमेटियाँ, प्रान्तीय योजनएँ और वैज्ञानिकों की बैठकें जो समय पर होती है, समस्या को हल नहीं कर सकती। कोरी योजना बनाने और उसे कार्यान्वित करने में अन्तर है। यदि हम अपनी योजनाओ की प्रत्येक छोटी और बड़ी बात को कार्यान्वित करेंगे तभी हमारे खद्यान्नों की कमी पूर्ण हो सकेगी, अन्यथा नहीं और कभी नहीं।

उत्पादन की योजना में, उत्पादन के लिये आयश्यक सभी वस्तुओं का समान योगदान होना चाहिये। यदि किसी एक का भी पूर्ण योगदान न होगा तो हमारी कार्य सिद्धि न होगी। हम सिंचाई खाद, बीज इत्यादि पर तो जोर देते हैं हैं परन्तु किसान के हितों की ओर तनिक भी ध्यान नहीं देते। हमारी योजनओं का विकास किसान के चारों ओर से न होकर किसान से ही होना चाहिये। वही हमारी योजनओं का केन्द्र होना चाहिये इसके लिये हमें किसान को किसी न किसी प्रकार अकर्षित करना पड़ेगा। बिना ऐसा किये हमें किसान का सहयोग न मिलेगा।

यह हमारी योजना की समस्या एक दुःख पूर्ण कहानी है। हमारा देश बड़ा है और उसके साधन बड़े विशाल हैं। परन्तु इस समय स्थिति नया वह यह है कि हम अपने साधनों से लाभ उठाकर संसार के एक महान् राष्ट्र बन सकते हैं और हमारा राष्ट्र व्यावसायिक, राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से संसार के किसी राष्ट्र से पीछे नहीं रह सकता। हमें इस प्रकार ठोस कार्य करना चाहिये और हमारी १० प्रतिशत की कमी तो क्या २० और ३० प्रतिशत की कमी बड़ी सरलता से पूर्ण हो सकती है।

(पृष्ठ ५ के आगे)

सकता। यह बात यहां की सरकार को भी समझना है और यहां की जनता को भी समझाना है।

भारत और पाकिस्ताम का लेनदेन भी बड़ी गड़बड़ी में है। पाकिस्तान कभी काबुल से आता हुआ हमारा सूखा मेवा रोक लेता है कभी आसाम से आता हुआ माल हजम कर लेता है। शरणार्थियों की जायजाद हजम किए बैठा है वहां से हिन्दुओं को भगाकर उनके शरीर पर नए कपड़े भी नहीं रहने देता स्त्रियों की सड़ी तथा सौभाग्य चिन्ह तक उतार देता है यह तो सब उसकी डकैती है। पर व्यापारिक मामले में एक मूल भारत सरकार से भी हुई है औ र वह है अवमूल्य न की। भारत सरकार ने अपने सिक्के का मूल्य गिराया है और पाकिस्तान ने महीं गिराया इसमें हम पाकिस्तान को दीष नहीं देते। यह तो सरकारी अर्थशास्त्रियों को पहले ही सोच लेना था कि पाकिस्तान मूल्य न गिराय तो हमें उसकीं सब चीजों की का दाम देना पड़ेगा। ज्यूट महंगा मिलेगा। हम अवमूल्यन के अनुसार दाम नही देना चाहते और पाकिस्तान को अपनी चिजों का भाव गिराने का आग्रह करते हैं। नहीं तो व्यापार बन्द किए बैठे हैं। यह सब हमारी व्यापारिक बुद्धि का दिवालियन है। गुडापन मे दे सों दे पर व्यापारिक बुद्धि में भीपाकिस्तान हमें मात दे यह हमारे लिए शर्म की बात है।

इस तरह हम देखते हैं कि पाकिस्तान के साथ निबटते में हमारी सरकार तरह तरह की भूलें कर रही है, न वह अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर रही है कि उसका समर्थन दल बन जाए न वह युद्ध के मोर्चे पर प्रभाव पैदा करवा रही है और तो और वह चर्चिल सरीखी निर्भीकता का परिचय भी नहीं दे पा रही है, नेहरू जी में उनके बापू की आत्मा इतने जोर से घुसी है कि उवकी आवाज से पाकिस्तान में उत्साह लहरा जाता है और भारत में निराशा आ जाती है। हमारे व्यापार के मामले में हम अवश्य मात खाए बैठे हैं इन सब बातों को अब बहुत देर तक बर्दाश्त गुजरे नहीं किया जा सकता। भारत और पाकिस्तान को न्याय के आधार पर मिल जुलकर रहना पड़ेगा। भारत सरकार को इसके लिए ठीक राह पर चलना चाहिए और हर सम्भव उपाय से पाकिस्तान को भी चलाना चाहिए।

पिछले अङ्कों का सारांश

[मोहनलाल, उसका चचेरा भाई तोता और उसकी पत्नी रोनी, साधारण तथा गरीब किसान का जीवन। दो बैल, एक दुधारू भैंस और ...सी खेती। यही उनकी निधि थी। खेत पक गया था। मोहनलाल, तोता तथा रोनी ने खेत की कटाई की और खलियान लग गया। जिन्हें ...का ठिकाना नहीं था, उन्हें आशा हुई कि मड़ाई होने के बाद ही उन्हें दोनों वक्त कम से कम रोटियाँ मिलने लगेंगी और बैलों तथा भैंस को चारा ...कुछ दिनों के लिये हो जायेगा। किन्तु उभ्रगम का समय, खलियान में एकाएक जमींदार के सिपाही आ पहुँचे, और जोर-जबरदस्ती करके ...अनाज के ढेर का तीन हिस्सा बैलगाड़ी पर लाद ले गये। मोहनलाल और रोनी ने दया की प्रार्थना की किन्तु जमींदार के सिपाहियों ने एक न ...। खलियान में अनाज के ढेर का केवल चौथाई भाग वह छोड़ गये। मोहनलाल और रोनी का हृदय भावी चिंता से व्याकुल हो उठा। ...फिर.........]

गताङ्क के आगे

...दिल्ली को भस्मी भूत करने ...फिर ? फिर जो ज्वाला प्रज्व- ...उसका नियन्त्रण कैसे हो ...उसके मन में प्रश्न उठे। ...राज्य और उसके बाहरक ...सीमाएं परदेस, 'जिस पर ...की क्रिया का नाम 'मुल्कगोरी' ...जाने लगा और जो 'परदेश' ...अर्थों का वाचक होने ...था।

...दिल्ली के बड़े बड़े सूबेदार और ...कारी अपने अपने राज्य बनाने ...सी लगा रहे थे। हिन्दुस्थान के ...खैबर दर्रे द्वारा अर्थ लोलुप ...सवार, घोड़े और बहुत निरंतार आ ...तथा समुद्री मार्ग से फ्रांसीसी, ...अंग्रेज़, इत्यादि विदेशी ...चले आ रहे थे, और भारत का ...अपने को असमर्थ पा रहा ...इस पर भी दिल्ली को भस्मी भूत ...का निश्चय। जिस बादशाह की ...सूबेदारों और अन्य पदाधि- ...का दमन करके स्वराज्य या ...की स्थापना करनी थी उसी ...राजधानी को अंगारों के हवाले ...यह कौन से विवेक का काम ...!

...की नींद उचट गई। ...अपने निश्चय को पलट दिया। ...किया जाय ? उसने अपने मन ...किया। दिल्ली के अधिकारियों ...कैसे ठीक किया जाय ? ...एक दूसरा निश्चय किया ...होने के पहिले ही सारी छावनी ...कर दिया। साथ में तोपें ...हलकी थीं। भारी सामान ...कुछ न था।

(६)

फतेहपुर सीकरी के एक खण्डहल में से ईंटे और पत्थर खोद खोद कर निकाले जा रहे थे। और उसी की मिट्टी के गारे से मकान बनाया जा रहा था। मकान सीधा साधा भोंड़ा सा बन रहा था, उन्हीं महलों की छाया में जिनको अकबर ने, बड़ी लगन के साथ बनवाया था, और उतनी ही उपेक्षा के साथ छोड़ भी दिया था।

इसी मकान के बनाने में तोता मज़दूरी पर था, मकान लगभग उठ चुका था, केवल दीवारों की मुड़ेरों का काम रह गया था।

दोपहर पीछे मज़दूरों को खाने की छुट्टी मिली, रोनी रोटी ले आई थी। तोता हाथ पाँव धोकर खाने के लिये बैठ गया। मज़दूरों में कुछ स्त्रियाँ भी थीं। रोनी उनके पास जा बैठी। स्त्रियाँ रोटी खा रहीं थीं रोनी उनसे बात करने लगी।

'धूप तो बहुत तीखी हो गई है काम करते करते सारी देह दुखने और जलने लगती होगी।'

'पेट कैसे भरें ?'

'हां सो तो ठीक है। कब निबटेगा यह आग लगा काम ? दुपहरी में आते आते मेरे तो पैर जलने लगते हैं।'

'तो क्यों आती हो ? सबेरे खाना बनाकर बाँध दिया करो तोता की फेंट में रोटियाँ'

'सबेरे और काम भी तो लगे हैं।'

'उनको पीछे कर लिया करो।'

'गोबर कूड़ा है, भैंस है। तुम्हारे क्या जानवर नहीं हैं ?'

'जानवर होते तो इस लखलखी धूप में मजूरी करने आती ?

'घर यहाँ से दूर है क्या ?'

'दूर पास से क्या, जहाँ काम हो वहीं जाना पड़ता।'

रोनी और भी प्रश्न करना चाहती थी, परन्तु वे स्त्रियाँ उत्तर देने की अपेक्षा पेट भर रोटी खाना और उसके उपरान्त थोड़ा विश्राम करना अधिक लाभदायक समझती थीं

भोजन करने के उपरान्त एक पेड़ की छाया में पुरुष मज़दूर लेट गए और दूसरे की छाया में स्त्रियाँ जा लेटीं। रोनी ने भी दुपहरी को पेड़ की छाया में विलमा लेना उपयुक्त समझा। उन स्त्रियों के पास जा बैठी। वह बात करना चाहती थी, परन्तु वे स्त्रियाँ चुप रहना चाहती थीं। परन्तु नींद तुरन्त नहीं आ रही थी, इसलिये उन्होंने एक रसिया गाते गाते नींद का आवाहन किया। रोनी भी इस गायन में शामिल हो गई। रोनी का कंठ मधुर था उन स्त्रियों का उतना नहीं।

रोनी का सहयोग उन स्त्रियों को नहीं रुचा। उन्होंने चुपकी साध कर सोने का मिस किया। रोनी एक क्षण अकेली गाती रही। जब देखा उसके प्रयत्न का कोई प्रभाव नहीं पड़ा तब उसने टोका, 'अरी, थोड़ा सा और गालो' फिर सो जाना। उसके बाद —— "उसके बाद तुम अपने घर लम्बी हो जाओगी और हमको गारा ढोना पड़ेगा। तुम कर दोगी हमारा काम ? सो लेने दो।"

'ओ हो, बड़ा काम है न वह !!'

'घर से यहाँ तक आते तुम्हारे पैरों में छाले पड़ जाते हैं तुम क्या करोगी गारे का काम। जाओ हल्ला मत करो।'

'अरी, है कैसी ? कैसी बोलती है ?'

मज़दूरनी उठ बैठीं। उनकी आखें लाल थीं। एक बोली, 'जैसी हैं सो एक सपाटे में बतला सकती हैं। बड़ी आई चौधरिन कहीं की।'

'चौधरिन तो हैं ही, तुम सरीखी डोम चमारिन हैं क्या !'

रोनी की लड़ने भिड़ने की वान्छा बहुत दिन से एक बाँध में बंधी हुई रुकी हुई सी थी। वह फूट पड़ी और रोनी को उसके प्रवाह में आनन्द सा आने लगा। मज़दूर स्त्रियाँ तो वाग्युद्ध और हाथा पाई का भी अभ्यास रखती थीं, उन्होंने ताल सा ठोका।

'तू है कहीं की धन्ना सेठिन ! बड़ी बाम्हनी !! क्यों नहीं घर में बैठी रहती ? क्यों अपने उस मुन्स को या कौन हैं वह लौंडा तेरा, घर में सिंहासन पर बिठ-लाए रहती है ? भूखों मरती है सो मज़दूरी करवाती है। आ गई बातें मारने, भाग यहाँ से।'

पर रोनी इस तरह मैदान छोड़कर भागना नहीं जानती थी।

'निपूती जीभ खींच लूँगी बक कब की तो।

'आ, आ, देखें कैसे जीभ खींचती है।'

मज़दूरनी उठ खड़ी हुई। रोनी भी। पेड़ की छाया में पड़े हुए मज़दूरों ने भी इस शोर को सुना और वे भी उठ खड़े हुए। तोता दौड़ता हुआ आया। अन्य मज़दूर भी आ गए।

'क्या है ? क्या है ? अनेक कंठों से निकला। एक मज़दूरनी ने बतलाया 'देखो इसको। कहती थी हमारे साथ फूहड़ गीत गाओ, जब हमने मना किया तो गालियाँ देने लगी। कहती थी जीभ उखाड़ लूँगी। आ अब इधर। हम

फाड़ डालेंगी तेरी इस हिड्डी छाती को।'

मज़दूरों ने बीच बचाव किया। समझाया बुझाया। तोता ने रोनी के हाथ पाँव जोड़े।

रोनी रोटियों का कपड़ा लेकर फफकते हुए कंठ से कहती चली गई; अब नहीं आऊँगी इस हत्यारे ठौर पर कभी। कभी आई तो लाठी कुल्हाड़ी बाँधकर आऊँगी, और दारियों को कतर कुचल कर ही लौटूँगी।'

मज़दूरनियाँ चिल्लाईं, दारी तू, तेरी सात पीढ़ियाँ।

मज़दूरनियाँ झपटने को हुईं, परन्तु मज़दूरों ने रोक थाम करली, तोता रोनी की चिरौरी कर ही रहा था। वह चली गई।

मज़दूर कुछ समय उपरान्त काम पर लग गए। जो मज़दूर तोता के पास काम कर रहा था काम करते करते बात करने लगा?

'तभी इसका आदमी घर छोड़ कर चला गया। बड़ी लड़ाकू है।'

'उसने किया क्या था। उन स्त्रियों ने जरूर कुछ कहा सुनी की होगी, तभी वह लड़ पड़ी।

'वह फूहड़ गाना क्यों गवाना चाहती थी? गाते गाते वे सब रुक गईं थी। अकेली वह गाती रही, भगवान जाने क्या? इसके बाद तुरन्त ही झगड़ा हो पड़ा।'

'मैंने घर पर कभी उसके मुँह से फूहड़ गीत नहीं सुना।'

'इसीलिये हम लोगों को सुनाने आई थी।'

तोता दाँत पीस कर रह गया।

क्रमशः

ग्राहकों, एजेंटों और विज्ञापनदाताओं को समस्त पत्र व्यवहार मैनेजर, 'देशदूत' इलाहाबाद के नाम पर ही करना चाहिए।

हमारी दिल्ली की डायरी

पाकिस्तान युद्ध की ओर अग्रसर

सरकार अपनी प्रेमालाप की नीति कब तक चालू रखेगी?—पाकिस्तान का सामूहिक षट्यंत्र धीरे धीरे प्रगट हो रहा है—सरकारी दफ्तर जो बाहर जाने वाले थे दिल्ली में ही रहेंगे।

(विशेष संवाददाता द्वारा)

पाकिस्तान भारत से युद्ध करने का निश्चय कर चुका है। पूर्वी बंगाल से हिन्दुओं के निकालने का अभिप्राय: पाकिस्तान को ऐसे व्यक्तियों से पाक करना है जो भारत से सहानुभूति रखते हैं। पाकिस्तानी प्रापेगन्डा युद्धकी ओर संकेत कर रहा है। लियाकत अली खां प्रत्येक वक्तव्य में युद्ध का निमन्त्रण दे रहा है। भारत सरकार इस विषय में क्या करेगी इस प्रश्न के कई उत्तर दिल्ली के सरकारी हलकों में दिये जा रहे हैं। प्रधान मन्त्री युद्ध करना नहीं चाहते किन्तु वे कायर नहीं। वे युद्ध से घबराते नहीं। उनकी शक्ति प्रिपता पाकिस्तान अधिक समय तक कायम नहीं रहने देगा।

भारत सरकार ने बहुत सहनशीलता का प्रमाण दिया है जिसे पाकिस्तान सरकार ने कायरता समझ लिया है। बात सीमा से गुजर चुकी है और मंत्रि मंडल इस बात पर गौर कर रहा है कि किस प्रकार पाकिस्तान की धींगा पुश्ती का उत्तर दिया जाए।

पूर्वी पाकिस्तान से आए हिन्दुओं को बसाना और उन्हें सहायता देना तो भारत सरकार का नैतिक कर्तव्य है, किन्तु भारत को अपने आदर्श की भी तो रक्षा करनी है। दिल्ली की जनता उस क्षण की प्रतीक्षा कर रही है जब भारत सरकार पाकिस्तान को पाठ पढ़ाने के लिये व्यावहारिक कदम उठाए गी। दिल्ली में प्रत्येक व्यक्ति की जबान पर यही है कि पाकिस्तान में मुस्लिमलीगी राज्य समाप्त किया जाए। यह गुन्डों का राज्य है। अन्तर राष्ट्रीय स्थिति इस बात की आज्ञा नहीं देती कि भारत की दोनों सीमाओं पर इस प्रकार का राज्य रहे। भारत सरकार यदि साहस पूर्वक कोई ऐसा कदम उठाए जो परिणाम पर पहुँचने वाला हो तो अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भारत का विरोध न होगा। और यदि हो भी तब भी भारत को इसकी परवाह न करके सत्य का मार्ग लेना चाहिए।

पं० जवाहर लाल नेहरू दुबारा कलकत्ता गये थे। पूर्वी बंगाल के हिन्दुओं की 'कहानियां' सुनने वे वहां नहीं गये थे। यह 'कहानियाँ' वास्तविक घटनाएँ सिद्ध हो चुकी हैं। पं० जवाहर लाल के कलकत्ते जाने का उद्देश्य से शरणार्थियों के ढांरस तो तभी बंधेगी जब वे फिर से अपने घरों में बस सकेंगे।

पं० जवाहर लाल के होली वाले भाषण ने पश्चिमी पाकिस्तान से आए हुए हिन्दुओं को अपने 'वतन' की याद दिला दी और वे लोग उस दिन निकट आने के लिए प्रार्थना कर रहे हैं जब फिर वे पश्चिमी पंजाब की हवा खा सकेंगे। सीमा प्रांत से आये हुए शरणार्थी तो विशेष रूप से आशावादी दिखाई देते हैं। वे कहते हैं कि पाकिस्तान ने भारत के साथ युद्ध तो चिरकाल से आरम्भ कर रखा है और अब तो उसने भारत को विवश कर दिया है कि वह कोई सख्त कदम उठाए। भारत सरकार के नीति बदलते ही उन्हें विश्वास है कि उनका पाकिस्तान जाना संभव हो जाएगा।

पाकिस्तान के विरुद्ध कोई सख्त कदम भारत की वर्तमान स्थिति को सुधारने में भी सहायक होगी। इस समय लोगों को भविष्य पर भरोसा नहीं। उन्हें यह सोच कर घबराहट होती है कि यदि हमारी सरकार पाकिस्तान के विरुद्ध कोई कारवाई नहीं कर सकती तो वह देश की स्थिति को भी नहीं सम्भाल सकती। पाकिस्तान के होश में लाने से जनता में भारत सरकार के प्रति बहुत विश्वास उत्पन्न हो जायेगा। हैदराबाद के विरुद्ध कारवाई ने अपनी सरकार के प्रति भारतीयों के रुख को बहुत बदल दिया था। पाकिस्तान के विरुद्ध कारवाई उन्हें सरकार के लिए बड़े से बड़ा त्याग करने के लिये प्रोत्साहन देगी।

दिल्ली में यह विश्वस्त रूप से कहा जा रहा है कि भारत सरकार इस अवसर पर बहादुरी का प्रमाण देगी।

❀ ❀ ❀

भारत सरकार की ढिलमिल नीति के भी कई उदाहरण पेश किये जाते हैं। किन्तु दिल्ली से दफ्तरों का बाहर जाना तो एक हास्य का ही विषय बन गया है हमने इसी स्तम्भ में कुछ सप्ताह पूर्व लिखा था कि यदि कुछ दफ्तर दिल्ली से बाहर चले गए तो इससे सरकारी कार्य में बहुत बाधा पड़ेगी और जिस अयोग्यता के लिए सरकारी दफ्तर पहले ही बहुत बदनाम हो चुके हैं, वह और भी बढ़ जायेगी। वास्तव में केन्द्रीय सरकार के दफ्तरों का व्यावहारिक उपयोगिता के विचार से बाहर जाना सम्भव नहीं और न वे जा ही पायेंगे।

जिन दफ्तरों को बाहर जाने का हुकम हुआ था वे बहुत बेदिली से तैयारियां कर रहे थे। उन्हें विश्वास था कि कोई बात ऐसी निकल आयेगी जिससे भारत सरकार अपने फैसले को बदल दे। अब इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न हो गई प्रतीत होती है। जहां इन दफ्तरों ने जाना था वहीं इन दफ्तरों और उनमें काम करने वालों के लिए स्थान मिलना सम्भव नहीं। यह बात तो एक साधारण व्यक्ति भी अनुमान में ला सकता था कि भारत के किसी भी नगर में फालतू स्थान नहीं। भारत सरकार को इसका बोध छानबीन करने के पश्चात हुआ है। भारत सरकार को अपना यह निश्चय भी बदलना पड़ेगा। दफ्तर दिल्ली में ही रहेंगे। कुछ समय पूर्व यह कहा जा सकता था कि भारत सरकार इस निश्चय को बदल कर यह सिद्ध करेगी कि इसकी नीति ढिलमिल नहीं। किन्तु अब यह सिद्ध करने के लिए भारत सरकार को कोई और अवसर ढूंढ़ना पड़ेगा। जब तक ऐसा अवसर नहीं मिलता भारत सरकार पर ढिलमिल होने का आरोप लगा रहेगा।

सचत्र
साप्ताहक 'देशदूत'
संवाददाताओं से निवेदन

संयुक्तप्रांत, मध्यप्रांत, मध्य भारत तथा राजपूताने के संवाद भेजनेवालों से निवेदन है कि वे अपने संवाद संक्षिप्तरूप में ही भेजने का कष्ट करें।

संपादक 'देशदूत'

श्री सोहनलाल द्विवेदी लिखित

काव्य कृतियों के नवीन संस्करण

भैरवी

गांधी युग का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। महामना मालवीयजी के शब्दों में 'ऐसी कविता का प्रचार देश के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक होना चाहिए।' मूल्य २॥=)

वासवदत्ता

बाबू मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं 'इस रचना से मैं बहुत प्रभावित हुआ।' स्वच्छन्दतापूर्वक जिस प्रौढ़ता की ओर द्विवेदीजी अग्रसर हो रहे हैं, जान पड़ता है, स्वयं वह भी उन्हें वरण करने के लिए आतुर हो रही है। 'वासवदत्ता' के प्रकाशन ने हिन्दी-साहित्य में एक नई क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। स्वयं पढ़कर निर्णय कीजिए। मूल्य १॥)

कुणाल

महापंडित राहुल सांकृत्यायन की सम्मति में—अशोक, तिष्यरक्षिता और कुणाल खास तौर से—'कुणाल' के चरित्र-चित्रण में कवि ने कमाल किया है। शब्द-सौकुमार्य और भावोत्कर्ष के साथ ही नपे तुले शब्दों के प्रयोग ने काव्य को बहुत ऊँचा उठाया है। विशेष संस्करण मूल्य २॥)

पूजागीत

राष्ट्रीय चेतना को काव्य का सच्चा स्वरूप देने के लिए द्विवेदी जी को प्रचुर सम्मान तथा लोकप्रियता प्राप्त हुई है। ये पूजा-गीत कवि के गौरव के अनुरूप ही हैं। मूल्य २)

विषपान

सुप्रसिद्ध पौराणिक कथा का सरल तथा सबल खंड-काव्य है। भाषा का प्रवाह, प्रसन्न शैली तथा कथा के मार्मिक घटना-क्रम की वर्णना ने इसे बड़ा ही हृदयग्राही बना दिया है। मूल्य १)

झरना शिशुभारती बाँसुरी

द्विवेदी जी पहले बालकों के कवि हैं पीछे राष्ट्र के। पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा माननीय सम्पूर्णानन्दजी ने इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा की है। 'अमृत बाज़ार पत्रिका' की सम्मति में—जिस प्रकार की शिक्षा बालकों को देने के लिए हमारे नेता वर्षों से प्रयत्न कर रहे हैं, इन पुस्तकों में उसी प्रकार का साहित्य है। प्रत्येक पुस्तक में कई रङ्गीन तथा अनेक सादे चित्र हैं। प्रत्येक पुस्तक का मूल्य १)

तीनों सेट का मूल्य १२ रु०

पता—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

ESTD 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेंट रिकगनाइजड AIDED

सिन्हा होमियो मेडिकल कौलेज

—पो० लहेरियासराय, बिहार—

आज हिन्दी उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़ कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्सन सहित फीस H.L.M.S. १०), H.M.B.S १५) H.M.D.S. २५) पुस्तके—अ० परिवारिक १॥) बायोकेमिक १॥) मेटेरिया मेडिका १॥) मेडिकल डिक्सनरी २) आर्गेनन १॥) फार्मा कोपिया १॥) रेड लाइन सीम्पटम्स १॥) (१) बृ० इंजेक्सन चिकित्सा ३) बृ० अ० पारिवारिक चिकित्सा ६॥) बृ० अ० मेटेरिया मेडीका ६॥) ऐनाटोमी १॥) परिक्षाविधान १॥) रिलेशन शिप, १॥) कुल कितावें २५) में एक साथ दी जायँगी डा० ख० माफ। अमेरिकन दवाइयाँ ३०—=)॥ २००—≡) ड्राम, फी औंस ॥), घरेलू बक्स पुस्तक सहित ३६ शीशी का ८) सुगर और गोली २॥) फी पाउण्ड। चौथाई Advance भेज दें। थोक खरीदार को २५ प्रतिशत कमीशन देते हैं।

नोटः—बृहत् सूची मुफ्त—सचित्र मेडिकल मैगजीन मासिक ॥) सालाना—५)

संरक्षक—राय सा० डा० यदुवीरसिंह एम० डी० यस० (U.S.A.)

Registered No. A—295

विविध विषयों के हमारे बढ़िया ग्रन्थ

इस पुस्तकमाला की ४ प्रसिद्ध पुस्तकें हैं—(१) 'योगायोग' कवित्वमय श्रेष्ठ उपन्यास। मूल्य ४) (२) 'विश्व परिचय' विज्ञान-विषय अनन्य ग्रन्थ। मूल्य २), (३) 'रूस की चिट्ठी। रूस का आँखों देखा वर्णन, मूल्य २) (४) 'चार अध्याय' ऐसा उपन्यास जिसमें राजनीति, समाज और स्त्री-पुरुष-समस्या आदि पर विचार है मूल्य १॥)

इसमें प्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव के नये गीतों का संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अन्तर्द्वन्द्व से पूर्ण है। छपाई सफाई नयन मोहक। सचित्र सजिल्द प्रति का मूल्य २) दो रूपये।

लेखक भू० पू० काकोरी सके के कैदी श्री मन्मथनाथ गुप्त और राजेन्द्र वर्मा। समाजवाद के अध्ययन के लिये पढ़ना आवश्यक है। मार्क्सवाद के दर्शनों में यह सबसे गहन है। एक दजन अध्यायों में विषय का प्रतिपादन हुआ है। मूल्य ६) छः रुपये।

यह श्री श्यामनारायण पाण्डेय की प्रसिद्ध रचना है। इसमें महाराणा प्रताप के हल्दीघाटी वाले संग्राम का वीरता पूर्ण वर्णन बढ़िया छन्दों में है। सजिल्द सचित्र पुस्तक का मूल्य २॥) दो रुपये बारह आने।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, ३६ पन्नालाल रोड, इलाहाबाद

। प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल ... प्रेस, प्रयाग में ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल द्वारा मुद्रित तथा 'देशदूत' कार्यालय प्रयाग, द्वारा प्रकाशित।

देशदूत

DESHDOOT
HINDI WEEKLY
Annual Price Rs. 7-8-0
Per Copy Annas Two.
वार्षिक मूल्य ७॥)
एक प्रति का ≈)

२६ मार्च, १९५०
26th March. 1950

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

सामयिक लेख, कहानी, रंगमंच,
आलोचना आदि इस अंक में पढ़िये

अनेक विषयों की बढ़िया पुस्तकें

हिन्दी भाषा का संक्षिप्त इतिहास

यह राय बहादुर डाक्टर श्यामसुन्दर दास के इसी नाम के ग्रन्थ का सारांश है। विषय नाम से ही प्रकट है। अपनी भाषा का इतिहास संक्षेप में पढ़ने के लिए इसे लीजिए। अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य १) एक रुपया।

आदर्श भूमि अथवा चित्तौर

चित्तौर राजपूतों के त्याग के कारण तीर्थ बन गया है। भारत के गौरव स्वरूप उसी चित्तौर का ओजपूर्ण भाषा में लिखा गया इतिहास पढ़कर अपनी जानकारी बढ़ाइए। मूल्य २) दो रुपये।

पंडित जी

नामी उपन्यास लेखक शरद बाबू के इस उपन्यास में कुलीनता, उच्च शिक्षा, द्विज और द्विजेतर, गाँव की भलाई और अपनी उन्नति, नई शिक्षा और मिथ्या अभिमान आदि के सम्बन्ध में बहुत ही विशद विवेचना की गई है। मूल्य २) दो रुपये।

मैक्सिम गोर्की

रूस के इस विश्रुत कलाकार के परिचय के लिए इस पुस्तक को पढ़िए। है तो यह जीवन चरित, पर इसे पढ़ने में कहानी का आनन्द मिलेगा। इसकी जीवनचर्या का वर्णन पढ़कर पाठक जान सकेंगे कि इस कलाकार को किन विकट कठिनाइयों में होकर गुजरना पड़ा था। छोटे टाइपों में छपी लगभग ढाई सौ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य ३) तीन रुपये।

युद्ध और शान्ति

यह संसार के श्रेष्ठ उपन्यास-लेखक और विचारक काउण्ट लियो टाल्स्टाय के प्रसिद्ध रूसी उपन्यास 'वार एण्ड पीस' का हिन्दी रूपान्तर है। यह ऐतिहासिक उपन्यास तब लिखा गया था जब लेखक की शैली परिमार्जित हो गई थी और उन्हें अन्तर्द्वन्द्व से छुटकारा मिल कर शान्ति मिल गई थी। लेखक ने उसमें मानव-जीवन का सम्पूर्ण चित्र, अपने समय के रूस की तस्वीर और राष्ट्रों की खींचतान बड़ी खूबी से चित्रित की है—जीवन और मृत्यु के रहस्य का भी उद्घाटन किया है। लगभग पौने सात सौ पृष्ठों की सजिल्द प्रति का मूल्य ५।-) पाँच रुपये पाँच आने

कुलबोरन

श्री चन्द्रभूषण वैश्य ने इस उपन्यास को सत्य घटना के आधार पर लिखा है। समाज की अन्ध परम्पराओं से देश की जो हानि हो रही है उसका इसमें सजीव चित्र है। सुधार करनेवाले को रूढ़ियों के अन्ध भक्तों से जैसा लोहा लेना पड़ता है उसका नमूना उपन्यास का नायक, 'कुलबोरन' है। अच्छे कागज पर छपी सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥) दो रुपये आठ आने।

अल्पता की समस्या

'साम्प्रदायिक भेद पर विशेष अधिकार माँगना और ऊलजलूल दावे पेश करना तथा उन माँगों के पूरा न होने पर देशद्रोह के लिए कमर कस लेना किसी देश-भक्त का काम नहीं।' इसी पर दृष्टि रख कर पंडित वेंकटेश नरायण तिवारी एम० ए० ने तथ्यों और आँकड़ों के साथ पुस्तक में उलझन को समझाया है। पाकिस्तान बन जाने पर भी जिनके मन में ऊपर लिखी भावना है उनके समाधान के लिए इसमें सप्रमाण उत्तर है। मूल्य २) दो रुपये।

ईरान

महा पंडित राहुल सांकृत्यायन ने इस पुस्तक में अपनी ईरान-यात्रा का विशद वर्णन किया है। इसके पढ़ने से ईरान की बहुत-सी जानकारी पाठकों को हो जायगी। भ्रमण-वर्णन कहानी का सा आनन्द देगा। मूल्य १॥≡) एक रुपया ग्यारह आने।

मध्य प्रदेश और बरार का इतिहास

इस अत्यन्त प्रामाणिक इतिहास में उक्त प्रदेश से सम्बन्ध रखनेवाली सभी प्राचीन और अर्वाचीन महत्त्वपूर्ण बातें आ गई हैं। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

सुन्दरी-सुबोध

इस पुस्तक में पति-पत्नी को सन्तुष्ट रखने के उपाय इस ढंग से बताये गये हैं कि कहानी का आनन्द देते हैं। इसके सिवा सास-पतोहू, देवरानी-जेठानी, ननद-भौजाई, माता-पुत्र आदि स्त्री के दूसरे सम्बन्धों को भी ठीक २ रखने के उपाय बताये गये हैं। पुरुषों के लिए भी बहुमूल्य अनुभूत बातें दी गई हैं। इनको उपयोग में लाने से गृहस्थी सुखमय हो सकती है। ३०० पृष्ठों से अधिक की सजिल्द प्रति का मूल्य २॥) दो रुपये आठ आने।

आदर्श महिला

इस पुस्तक में सीता, सावित्री, दमयन्ती, शैव्या और चिन्ता आदि पाँच प्रसिद्ध देवियों की जीवन-घटनाओं का सजीव सचित्र वर्णन दिया गया है। इसको पढ़ने में कहानी का आनन्द मिलेगा और शिक्षा सहज ही। मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

कथा सरित्सागर

इस पुस्तक में आदि से [illegible] तक एक से एक बढ़िया कहानि[illegible] जैसा इसका नाम है, यह क[illegible] का समुद्र है। प्रत्येक कथा के [illegible] एक न एक दृष्टान्त है। [illegible] सजिल्द प्रति का २॥≡) मू[illegible] रुपये ग्यारह आने।

देव दर्शन

इसमें ब्रजभाषा के प्रख्या[illegible] देव की जीवनी और उनके [illegible] काव्यों का आलोचनात्मक [illegible] दिया गया है। ब्रज काव्य के [illegible] अतिरिक्त साहित्य के विद्यार्थि[illegible] लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त [illegible] है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य [illegible] एक रुपया पाँच आने।

बन्दना

यह श्रीमती चन्द्रमुखी ओझा [illegible] के ५२ मधुर गीतों का संग्र[illegible] आरम्भ में श्री सूर्यकान्त [illegible] 'निराला' की लिखी प्रश[illegible] अच्छे कागज पर छपी [illegible] पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

तुलसी के चार दल

(प्रथम और द्वितीय [illegible] गोस्वामी तुलसीदास जी के रा[illegible] नहछू, बरवै रामायण, पार्वती [illegible] और जानकी मंगल का [illegible] नात्मक परिचय तथा इन चारों [illegible] की अध्ययनपूर्ण टीका। इसे इ[illegible] की कुंजी समझिए। मूल्य प्रथ[illegible] का ३) रुपये, द्वितीय भाग का [illegible] दो रुपये ग्यारह आने।

ग्रह-नक्षत्र

इस पुस्तक में ग्रहों और [illegible] आदि से सम्बन्ध रखने वाले [illegible] सभी आवश्यक बातों का [illegible] वर्णन सरल भाषा में है। [illegible] तीन रुपये।

हार या जीत

इस उपन्यास में लेख[illegible] ब्रजेश्वर वर्मा एम० ए०, डी० [illegible] ने एक देहाती लुहार की [illegible] बेटी को घटनाक्रम से, अना[illegible] में, देहात से महराजगंज [illegible] पृथाकुंवरि के आश्रय में पहुँच[illegible] है। वहाँ रानी की कृपा [illegible] लड़की ने विद्या पढ़ी। फिर [illegible] गुणों का विकास हुआ जिससे [illegible] सभ्य होकर सम्मान पाता है [illegible] असहयोग आन्दोलन में सम्मि[illegible] लिया और अन्त में कलकत्ता [illegible] नौकरी कर ली। कई पुस्तकें [illegible] विदेश-यात्रा के बाद रानी [illegible] की प्रार्थना पर उससे विवाह [illegible] उपन्यास की घटनावली, वि[illegible] संघर्ष और चन्दा की [illegible] दृढ़ता सराहने योग्य है। [illegible] दो रुपये।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

देशदूत

वर्ष १२, संख्या २८] [रविवार, २६ मार्च १९५०

टेढ़ी, सीधी, खरी-मजेदार

महात्मा गाँधी की कांसे की बनी मूर्ति करांची में पाकिस्तान के सचिवालय के पास स्थापित थी। किंतु वह टूटी हुई पाई गई। पाकिस्तान सरकार का कहना है कि हवा के एक प्रबल झोंके ने मूर्ति को नीचे गिरा दिया। अपने राम की समझ में आश्चर्य है कि मूर्ति हवा के झोंके से कैसे गिर पड़ेगी ? पाकिस्तानी हुकूमत का यह भी एक नमूना है जैसा कि पूर्वी बंगाल में हो रहा है।

❀ ❀ ❀

भारतीय संसद में मांग की गई है कि व्यापारियों तथा आयकर हड़पने वालों को मृत्युदंड या आजीवन कैद की सजा देने के लिये कानून बनाना चाहिए। अपने राम की समझ में यदि चोर बाजारी न होगी तो भारत का व्यापार कैसे चलेगा ? कहा जाता है कि कलियुग का यह चतुर्थ चरण है किंतु जान पड़ता है कि स्वतंत्रता प्राप्त होने का यह चतुर्थ चरण है।

❀ ❀ ❀

पूर्व पश्चिम के झगड़ों के निबटने का काम सुरक्षा परिषद करेगी। अवश्य करना चाहिये क्योंकि भारत पाकिस्तान के निबटारे का फैसला सुरक्षा परिषद कर रही है, अब उसे लंबा हाथ फैलाना चाहिये। तभी तो संसार में शांति की स्थापना होगी।

ब्रिटिश उपप्रधान मन्त्री श्री मोरीसन कहते हैं कि साम्यवादियों को मजदूर संघों से निकाले बिना जनतंत्र सुरक्षित नहीं है। अपने राम की समझ में यह काम ब्रिटेन से ही शुरू होना चाहिए अपने घर में चिराग जलाकर तब दूसरों को प्रकाश पहुँचाना ठीक है।

जनरल च्यांग काई शेक प्रजातंत्र चीन के पुनः राष्ट्रपति चुने गये हैं। बधाई है। अमरीकन यदि इसी तरह कृपा बनाये रहे तो फिलीपाइन के बाद वाशिंगटन में प्रजातंत्र चीन की राजधानी बनाने में सफल होंगे। जनरल च्यांग अवश्य वहकता पड़ने पर वहां पहुँच जायेंगे।

⊙ ⊙ ⊙

पूर्वी पाकिस्तान में अनाचार बढ़ता जा रहा है किन्तु उसका भारत सरकार पर क्या प्रभाव पड़ रहा है ? असर पड़ना भी धीरे २ चाहिए शेर की निद्रा देर में भंग होती है। पाकिस्तानी अपनी खिचड़ी पकालें। पकाते पकाते कहीं स्वयं भी अपने को न पकाने लगें। लक्षण तो कुछ ऐसे ही जान पड़ते है।

⊙ ⊙ ⊙

उत्तर प्रदेश में पुनः म्यूनिसिपैलिटियों का चुनाव होने वाला है। शाहरी भाइयो को जो चुनाव में भाग लेना है अभी से खद्दर की धोती कुर्ता और टोपी का प्रबन्ध करने में लग जाना चाहिये। करनी करतूत चाहे जैसी हो, लिबास का असर जनता पर पहले पड़ता है। चोर बाजारी खद्दर पहिन कर बड़ी सुविधा से हो सकती है चुनाव में भी यही पंथ अपनाना चाहिए।

पंडित नेहरू पूर्वी पाकिस्तान के मामले में सोच रहे हैं।

⊙ ⊙ ⊙

जब से पाकिस्तान अपने नये रंग से मैदान में आने लगा है तब से भारत में निवास करने वाले मुसलमानों की एक जमात कौंसिलों, म्यूनिसिपैलिटियों में अल्पसंख्यों को लिये पुनः सीटें सुरक्षित कराने की ओर पिल रही है। अपने राम की समझ में धर्म-विहीन राष्ट्र में ऐसा ही होना चाहिए नहीं तो एकता के के काम में फर्क न आ जाये।

⊙ ⊙ ⊙

काश्मीर की समस्या सुलझाने की ओर सुरक्षा परिषद अपना कदम फिर उठ रही हैं। मध्यस्थ की नियुक्ति की बात तो भारत ने मान ली लेकिन देखना है कि ऐसा कौन सा भाग्यवान है जो मध्यस्थ नियुक्त होता है और भारत भी उसकी मान्यता स्वीकृत करता है। पश्चिमी राष्ट्रों का नाटक तो अभी प्रारम्भ हुआ है। एक ओर काश्मीर को लटकाये हुए हैं और दूसरी ओर पाकिस्तान को पुचाड़ा देकर पूर्वी बंगाल में नाटक करवा रहे हैं। देखना है भारतीय विभाजन अभी क्या क्या गुल खिलाता है।

⊙ ⊙ ⊙

गीत

लेखिका, श्रीमती प्रियंवदा पाण्डेय

जमाना रंग बदलता जा रहा है।
तीर तरकश से चले थे जो
काम अपना कर चले थे जो
चुभ कर निकला लहू जो
आज जमता चला जा रहा है।
मौत का भी सामना करता था जो,
दुश्मनों को भी गर्द करता था जो,
साथी पुराना था अपना जो,
गर्दिश में बदलता चला जा रहा है।
घटाओं को न छाने देता था
चढ़ी आ भी जाती जो—
सतरंगी आभा में बदल देता था।
वह पवन भी आज, तूफान बनता चला जा रहा है।
दिशाओं के भ्रम में फँसा था
मुसीबत के कांटों में उलझा था
थक हारा पथिक का सहारा
वह तारा भी आज, छुपता चला जा रहा है।

राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद अपने परिवार के साथ

पूर्वी बंगाल के शरणार्थियों की सहायता कीजिए

भारत में खाद्यान्नों का आयात

क्या भारत स्वयं अपने पैरों पर खड़ा हो जायेगा ?

लेखक, श्री पूर्णचन्द्र गुप्त

भारत में खाद्यान्नों का आयात कितना और कहाँ होता है ? क्या भारत स्वावलंबी स्वयं बन सकता है ? यदि बाहर से अन्न न मंगाया जाये तो हमें स्वावलंबी होने के लिये क्या करना चाहिये, इन्हीं सब समस्याओं पर लेखक ने इस लेख में प्रकाश डाला है। स्वावलंबी होने का मार्ग एकही है कि बाहर से अन्न न मंगाया जाये। लेख पठनीय तथा विचारणीय है।

आज हमारी सबसे बड़ी समस्या भोजन की है। हमें देश में उतने खाद्यान्नो के उत्पन्नकरने की आवश्यकता है जितने से हमारा काम चल जाय और हमें दूसरे देशो का मुँह ताकना न पड़े। भोजन निस्सन्देह हमारी पहली मांग है अन्य मांगे उसके पश्चात आती हैं। बिना भोजन के न जीवन सम्भव है और न स्वतन्त्रता का कोई मूल्य है। यह चरम सत्य है कि भोजन के चारों ओर हमारा जीवन केन्द्रित है। १५० वर्ष के अंग्रेजी राज्य के पश्चात्, हमें आज भली भांति विदित हो गया है कि भारत न केवल खाद्यान्नों के विषय में स्वावलम्बी नहीं है वरन वह इतना भी अन्न उत्पन्न नहीं करता कि उसमें रहने वाली अपार जन संख्या की किसी प्रकार उदर पूर्ति हो सके।

केन्द्रीय सरकार ने घोषणा की है कि भारत १९५१ के अन्त तक खाद्यान्नों में स्वावलम्बी हो जायगा और उसके पश्चात् बाहर से किसी प्रकार का अन्न न मंगाया जायगा। यह घोषणा अवश्य सारगर्भित है।

हम एक तिथि नियत कर ने के और यह कह कर कि बाहर से अन्नन मगांवेगे, स्वावलन्बी नहीं हो सकते। आत्म निर्भर होने का कार्य १, २ या ३,५ वर्षों में नहीं हो सकता। जब हम एक बहुत बड़ी मात्रा में बाहर से अन्न मगां रहे हैं, तो हम स्वावलन्बन का स्वप्न सरलता पूर्वक नहीं देख सकते। १९४४,४५, ४६ और ४७ में हमने ७,६,२१ और २३ लाख टन गल्ला मंगाया है। गतवर्ष हमारे देश ने ३० लाख टन गल्ला १५० करोड़ के मूल्य का मंगाया। दो वर्ष पूर्व अथवा १९४७ में बाहर से आये हुए गल्ले का मूल्य १०० करोड़ रुपया था। इस प्रकार स्पष्ट है कि एक वर्ष में ही गल्ले के आयात में ५० की प्रतिशत वृद्धिहुई है। इस वर्ष ४० लाख टन गल्ला बाहर से आया है। प्रायः ३५ लाख टन आ चुका है। इसमें मुख्यतया गेहूँ है। हमारी खाद्यन्नसस्या ऐसी है कि हमें आयात पर अंकुश की तत्काल आवश्यकता है। यदि हम आयात को बन्द न करेंगे तो ऐसी अवस्था आ जायगी जिसमें से हमें निकलना असम्भव हो जायगा। इस वर्ष प्रायः ५० प्रतिशत आयात और बढ़ता दिखलाई देता है जिसका अर्थ यह हुआ कि हमें ४५ करोड़ रुपये की हानि अवश्यम्भावी है।

तो यदि भारत सैकड़ों करोड़ रुपये का गल्ला प्रति वर्ष विदेशों से न खरीदे और सरकार द्वारा बताई गई विधि से कार्य करे और अपने कोअन्नसे सम्बन्धित युद्ध की स्थिति में समझे और हम उत्साह और लगन से काम में जुट जांय तो इतना रुपया बचा सकते हैं कि उससे अन्य दूसरी अधिक आवश्यक वस्तुएँ खरीद सकते हैं, अपने देशवासियों का पेट देश में अन्न उपजा कर भर सकते हैं और शायद कुछ अन्न तथा आवश्यक सामग्री दूसरे देशों को भी भेज सकते हैं।

भारत एक खेतिहर प्रदेश है और यहाँ के ७० प्रतिशत से अधिक निवासी खेती के उद्यम में लगे हैं। फिर उन्हें बाहर से अन्न मंगाने की क्या आवश्यकता है।

खेती पर निर्भर पुरुषों की संख्या निम्न प्रकार से रही है—

सन	प्रतिशत
१८९१	६१
१९०१	६६
१९११	७१
१९२१	७३
१९३१	७३

बाहर से एक बड़ी मात्रा में अन्न मंगा कर हम अपने देश की आर्थिक स्थिति के साथ अन्याय कर रहे हैं। बाहर से अन्न मंगाने से हम अन्य आवश्यक वस्तुएँ नहीं मंगा पाते। १९४८-४९ में हमने २०० करोड़ रुपये का माल विदेशों से, अपने यहां से भेजने की अपेक्षा अधिक मंगाया था। हमने डालर और स्टर्लिंग दोनों क्षेत्रों से खींच की है। यदि हमें स्थिति सुधारनी है तो हमें अपने यहां खाद्य के आयात को कम करना चाहिये।

२०० करोड़ रुपये की रकम एक बहुत बड़ी रकम है। खाद्यान्न मंगाने के के समय न हमें किस्म का ज्ञान होता है और न वजनों का। फल यह होता है कि वजन के मामले में हम ठगे जाते हैं और जिस प्रकार का अन्न हमें मिल जाय उनसे ही सन्तुष्ठ होना पड़ता है। कौन नहीं जानता कि कितनी बार विदेशों से भीगा हुआ और सत निकाला हुआ गेहूँ आया है जिसे हमने पसन्द नहीं किया है।

यह सब बुराइयाँ कम से कम अन्न मंगाकर दूर की जा सकती हैं। इस समय तो यह चाहिये कि हम केवल अकाल के लिये और गुजरात, सौराष्ट्र, कच्छ और जोधपुर इत्यादि के लिये ही अन्न मंगावे जहाँ कैसे भी पूरा नहीं पड़ता।

इस दृष्टि से खाद्य योजना में, अन्न के अतिरिक्त अन्य सब वस्तुएँ सम्मिलित करना, बुद्धिमानी की बात है। सही है कि आलू, सकरकन्दी और तरकारियों की खेती पर जोर दिया जा रहा है। सरकार को इन वस्तुओं की खेती के लिये समुचित प्रोत्साहन देना चाहिये। भारत यूरोप के उन देशों का उदाहरण, जिसने भोजन में आधी सामग्री अन्न की वस्तुओं कीनहीं होती, चरितार्थ कर सकता है सभी बड़ी जन संख्या वाले देशों में ऐसा होना चाहिये।

स्वावलम्बन की योजना हमारे सन्मुख अवश्य है पर यह निश्चयात्मक रूप से नहीं कहा जा सकता कि सरकार अपने उद्देश्य में थोड़े से समय में सफल होगी अथवा नहीं। फिलहाल यह हमारे हित में है कि हम अपने पैसे को बचावें, बाहर से केवल उन चीजों को मंगावे जो यहां सम्भव नहीं और देश में भोजन के साथ अन्न के स्थान पर अन्य वस्तुओं की मात्रा बढ़ावें। फल, आलू और तरकारियों के विषय में यह विशेषता है कि वे बहुत शीघ्र और बड़ी मात्रा में पैदा होने वाली वस्तुएँ हैं। उनके लिये किसी विशेष प्रकार की भूमि की आवश्यकता नहीं है, न कोई खास खाद ही चाहिये। हजारों एकड़ भूमि तरकारियों की खेती के लिये तत्काल काम में लाई जा सकती है।

गुरुकुल कांगड़ी स्वर्ण जयन्ती

वहाँ जाने पर मैंने क्या देखा और क्या सुना ?

लेखक, श्री शिवकुमार विद्यालंकार

राष्ट्रीय शिक्षण संस्थाओं में गुरुकुल कांगड़ी का महत्वपूर्ण स्थान है। पिछले दिनों गुरुकुल की स्वर्ण जयंती बड़ी धूम-धाम से मनाई गई थी। इस लेख में गुरुकुल के पुराने स्नातक श्री शिवकुमार विद्यालंकार ने इसी जयंती के सम्बन्ध में अपने संस्मरण लिखे हैं। संस्मरण पठनीय तथा जयंती के सम्बन्ध में जानकारी से पूर्ण है।

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी आर्यसमाज का आदर्श विद्यापीठ है। आर्य जनता ने इसे जन्म दिया, इसे पाल कर बड़ा किया और आज यह संस्था में ५० वर्ष की हो चली है। इन दीर्घ पचास वर्षों में गुरुकुल ने अनेक उतार-चढ़ाव देखे। १९२४-२५ की गंगा की भयंकर बाढ़ गुरुकुल पर प्रकृति का प्रकोप था। मगर आर्य जनता के सहारे उसने उसका सामना किया। आर्य जनता ने बाढ़ से विध्वस्त गुरुकुल के पुनर्निमाण में तन, मन और धन से योग दिया। परिणाम यह हुआ कि बात की बात में गंगा इस पार ज्वालपुर के निकट और गंगा की नहर के तट पर गुरुकुल कांगड़ी बस गया। यह स्थान यद्यपि रमणीक न था, किंतु उसे वृक्षों, फूलों व क्यारियों और आधुनिक स्थापत्य कला के प्रतीक भवनों से सुरम्य बना ही लिया गया है। पिछले दिनों इसी में गुरुकुल की स्वर्ण-जयन्ती समारोह से मनाई गई।

समारोह में फीकापन

आज से करीब २५ वर्ष पूर्व गंगा के उस पार पुरानी भूमि में गुरुकुल की रजत जयन्ती मनाई गई थी। तब की रजत जयन्ती के मुकाबिले आजकी जयन्ती कुछ फीकी दिखाई दी। स्वर्ण की चमक रजत की चमक से कुछ कम प्रतीत हुई। यह क्यों ? इस समय गुरुकुल का पालन-पोषण करने वाले पंजाब और पश्चिमी सीमाप्रान्त, बिलोचिस्तान और सिन्ध के आर्यसमाजी थे लेकिन इस बार की जयन्ती में साफ दिखाई दे रहा था कि देश के विभाजन से गुरुकुल कांगड़ी को जबर्दस्त क्षति पहुँची है। जिस आर्य जनता ने अपने दान से इस पौधे का बीजारोपण किया था, वही आज शरणार्थी बन कर दर-दर की ठोकरें खा रही है। महीनों पहिले आर्य जनता के जलसे में शामिल होने का प्रोग्राम तैयार किया करती थी। वह बड़ी बड़ी भावनाओं में प्रेरित होकर और गुरुकुल विद्यापीठ में अपना बौद्धिक विकास करने के लिये जलसों में शामिल हुआ करती थी। गुरुकुल पहुँच कर उसका सारा समय व्यस्त रहता था। प्रातः प्रभातफेरियां निकलती थीं तो दिन में बड़े बड़े विद्वानों के भाषण सुने जाते थे। उन दिनों के आर्य नेताओं का जीवन अमली था और उसका सर्व साधारण जनता पर आश्चर्य जनक असर पड़ता था। इसलिए गुरुकुल से जाने के बाद आर्य नर-नारी समझते थे कि इस वर्ष वें कुछ प्राप्त करके ही लौटे हैं। मगर अबकी जयन्ती में आर्य जनता में वह जोश और वह उत्साह नहीं था, जो पहिले दिखाई देता था। गुरुकुल को अपने खून पसीने की कमाई से सींचने वाली पंजाब, सिन्ध, बिलोचिस्तान और उत्तर पश्चिमी सीमाप्रान्त की आर्य जनता उत्सव में शामिल नहीं हो सकी। गुरुकुल का समूचा वातावरण अपने शरणार्थी भाइयों के साथ शोकाकुल थी। इसीलिए जयन्ती कुछ फीकी रही।

नेताओं में एकता

इस निराशापूर्ण वातावरण में भी गुरुगुल के संचालक अपने उद्देश्य की ओर सोत्साह बढ़ते हुए दिखाई दिये। उनसे प्रभावित होकर ही शायद इसबार आर्य समाज के विभिन्न दलों के कार्यकर्ता गुरुकुल के मँच पर एकता के सूत्र में पिरोये हुए प्रतीत हुए पार्टीबन्दी से ऊपर उठ कर गुरुकुल पार्टी; प्रकाश पार्टी और महात्मा पार्टी तथा श्रद्धानन्द व अखिलानन्द पार्टी के अनुयायी सब जयन्ती में शामिल हुई, सब ने मुक्त-कंठ से गुरुकुल कांगड़ी और गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की उन्नति के लिए मंगल कामनाएं की। जंगल में आग लगने पर शेर और बकरी एकही घाट पर पानी पीने लगते हैं। देश के विभाजन से जहाँ और बहुत से नुकसान हुए हैं, वहां एक लाभ यह हुआ कि आर्य समाज की फूट और दलबन्दी भी दूर होने लगी है। विभाजन के बाद ही आर्य समाज के कर्णधार यह समझने लगे हैं कि आपस की फूट से दयानन्द के मिशन को कितनी क्षति पहुँच रही है। और आर्य समाज की शक्ति किस तरह नष्ट हो रही है। इस तत्व को समझने के बाद विभिन्न दलों के आर्य नेता गुरुकुल के मँच पर एकत्रित हुए उनकी यह एकता स्थायी रहती है या नहीं यह तो भविष्य बताएगा। मगर गुरुकुल की जयन्ती के साथ उस एकता का श्रीगणेश अवश्य हुआ है।

शेष भारत ने भार सम्हाला

विभाजन के बाद निस्सन्देह पंजाब की आर्य जनता आर्थिक दृष्टि से गुरुकुल की सहायता करने में असमर्थ हो चुकी है। मगर खुशी की बात यह है कि अब शेष भारत की आर्य जनता ने इस गुरुकुल को अपनाना शुरू कर दिया है। विभाजन के बाद से गुरुकुल का समूचा खर्चा संयुक्तप्रांत, बिहार, पश्चिमी बंगाल, दिल्ली और गुरुकुल की आर्य जनता ने अपने कन्धों पर ले लिया है। सबसे अधिक उत्तरदायित्व पश्चिमी बंगाल के आर्यसमाजियों ने सम्हाला है। इसका अन्दाज इस चीज से किया जा सकता है कि अकेले पश्चिमी बंगाल के दानियों ने इस वर्ष गुरुकुल के लिए ५० हजार का दान दिया है। गुरुकुल के वार्षिक बजट को पूरा करने के लिए भारत के धनी मानियों तथा श्रद्धालु लोगों ने इस वर्ष २½ लाख का दान दिया है।

अधिकारियों के सामने चार कार्य

आर्य जनता जहां गुरकुल के स्थायित्व को बनाए रखने के लिये प्रयत्नशील है वही गुरकुल के अधिकारी उसकी आत्मा को स्वस्थ और शक्तिशाली बनाने के लिये विविध उपाय कर रहे हैं। आर्य जनता वेदों का भाष्य चाहती है, भारतीय दृष्टिकोण के अनुसार अपने देश का इतिहास पढ़ना चाहती है, आर्य युवकों को शिल्प की शिक्षा देना पसन्द करती है और आयुर्वेद का पुनरूद्धार चाहती है। इन कार्यों के लिये की गई उनकी अपील यद्यपि पूरी नहीं हो सकी, फिर भी गुरुकुल के अधिकारियों ने इन सब कार्यों को करने का दृढ़संकल्प कर लिया है। आगामी कुछ ही वर्षों में वेदों को सम्बल में सरस साहित्य आर्यों के सामने अवश्य प्रस्तुत होगा। भारत सरकार ने जिस इतिहास परिषद् को सहायता देंना बन्द कर दिया है, उसी के कार्य को अब गुरुकुल में जारी करने का प्रयत्न किया जायगा। शिल्प महाविदालय खोलने में यदपि विदेशी मुद्रा विदेशी मशीनों की कठिनाइयां मौजूद हैं, फिर भी धन के आते ही गुरुकुल के संचालक इस कार्य को शीघ्र हीं प्रारम्भ कर देंगे। आज के युग में गुरुकुल के अधिकारी शिल्प कला की बहुत देर तक उपेक्षा नहीं कर सकेंगे। आयुर्वेद का पुनरूद्धार करने में गुरकुल पहिले भी काफी कुछ कर चुका है और इस कार्य को वह उत्तर प्रदेश की सरकार की सहायता से और आगे बढ़ाएगा।

सरकार व जनता के बीच होड़

गुरुकुल शिक्षा प्रपाली की उपयोगिता उत्तरोत्तर बढ़ रही है। पंजाब,

शेष पृष्ठ १२ पर
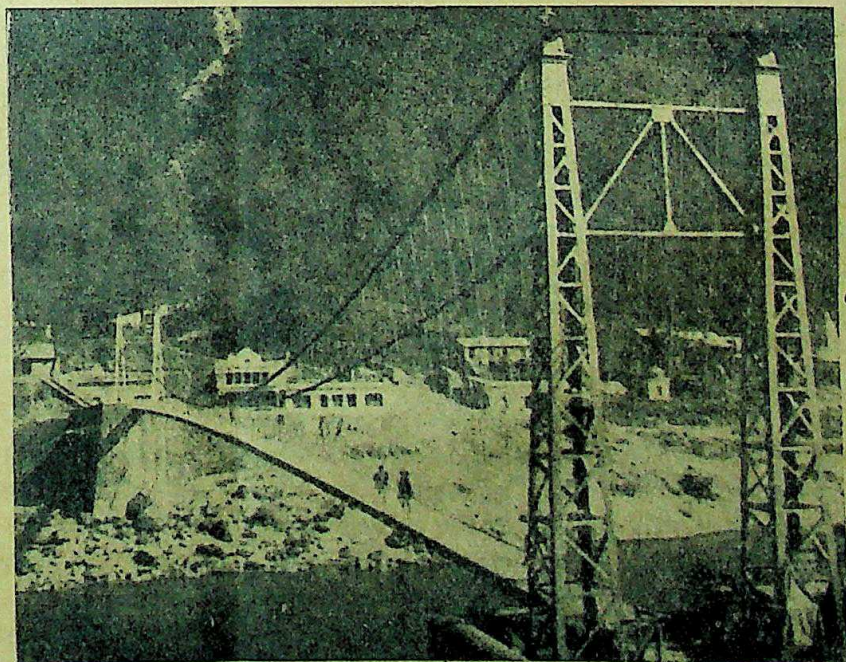
हरद्वार के प्रसिद्ध लछिमन झूले का एक दृश्य।

प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा

उत्तर प्रदेश में शिक्षा के संबंध में अब तक क्या हुआ और क्या होगा ?

लेखक, माननीय श्री संपूर्णानन्द

सरकारी स्कूलों की संख्या जहां सन् १९४६ में केवल १३०० थी इस समय ११,१२७ है और उस समय जहाँ विद्यार्थियों की संख्या १,४५४ थी वहाँ इस समय ७,६५,६४० है। एतद् सम्बन्धी व्यय में भी अत्यधिक वृद्धि हुई है। वह १६,५६१ से बढ़कर १,१५,८४,२१० तक पहुँच गया है। प्रान्त में स्कूल जाने योग्य अवस्था के बच्चों की कुल संख्या अनुमानतः ६८,७७,५७७ है। इनमें से ३६,७५,०३७ लड़के हैं और ३२,७०,०५० लड़कियाँ हैं। १९४६में नगर व ग्राम्य स्कूलों में पढ़नेवाले बच्चों की कुल संख्या १३,७६,६६४ अर्थात् स्कूल जाने योग्य बच्चों की कुल संख्या २० प्रतिशत थी। सन् १९४९ में यह संख्या २४,४२,१९१ अर्थात् कुल का ३५ प्रतिशत थी। यदि हम केवल लड़कों की ही संख्या का हिसाब लगावें तो जहां सन् १९४६ में स्कूलों में भर्ती होनेवाले लड़कों की संख्या १२,८७,३५७ अर्थात् कुल का ३६ प्रतिशत थी। सन् १९४९ में यही संख्या २३,१७,०३८ अर्थात् कुल का ६४ प्रतिशत हो गई। इस सम्बन्ध में मैं यह भी बतला देना चाहता हूँ कि देहरादून, मुजफ्फर नगर, बदायूँ मथुरा, पीलीभीत, नैनीताल फतेहपुर, झांसी, जालौन, हमीरपुर, बांदा, बस्ती, जौनपुर, गाजीपुर, बलिया, लखनऊ, फैजाबाद और बहराइच के जिलों में इस प्रकार के लड़कों के लिये आवश्यक पाठशालाओं की संख्या अब पूरी हो गई है। यह दुर्भाग्य की बात है कि जो सरलता हमें लड़कों की शिक्षा के विषय में प्राप्त हुई है वह लड़कियों की शिक्षा के विषय में नहीं प्राप्त हो सकी है। इस राज्य के सभी नागर क्षेत्रों में लड़कों के लिये प्राथमिक शिक्षा अब अनिवार्य कर दी गई है और इस संबन्ध में हमें जो सफलता मिली है वह ऐसी है जिस पर हम उचित रूप से गर्व भी कर सकते हैं। ऐसी दशा में वह आशा है कि हम लड़कियों की शिक्षा पर आगे और अधिक ध्यान दे सकेंगे। बजट पर साधारण वाद-विवाद के समय श्री प्रयाग नारायणजी ने कुछ ऐसी बातें कह दी थीं जिन्हें सुन कर मुझे आश्चर्य हुआ। यद्यपि वह निश्चित रूप से यह भी नहीं जानते थे कि उन स्कूलों की संख्या जिन्होंने हमने खोला है ११ सहस्र है अथवा ११ लाख फिर भी उन्होंने हमसे यह जानना। चाहा कि यह स्कूल ठीक में चल रहे हैं या इनका अस्तविक केवल कागज पर ही है।

अब प्रत्येक जिले में एक प्रशिक्षण विद्यालयों (नार्मल स्कूल) होगा। इन विद्यालय से जो अध्यापकगण प्रशिक्षित होकर निकलेंगे वह पहले के अध्यापकों से अधिक योग्य होंगे। हिन्दुस्तानी तथा ऐंग्लो हिन्दुतानी मिडिल स्कूल में पूर्व-स्थिति अन्तर को दूर करने के फलस्वरूप आवश्यक ढंग के अध्यापकों की मांग के भी इनकी सहायता से पूरा किया जा सकेगा। लेकिन यह नार्मल स्कूल जिनकी संख्या अब ८ से बढ़ कर ४९ तक पहुँच चुकी है। हम लोगों को प्राथमिक स्कूलों में अध्यापन का कार्य करने के लिए जितने शिक्षकों की आवश्यकता है उतने शिक्षक दे सकने में समर्थ नहीं हो सकते। अतएव इस कार्य के लिए सचल शिक्षण योजना का सहारा लेना पड़ेगा। अपनी क्षमता के अनुसार सचल शिक्षक दल ने बहुत अच्छा काम किया है। सचल शिक्षक दल ने अब तक १८,०६२ अध्यापक प्रशिक्षित किये हैं जिनमें से २,३४० ने अपना पूरा पाठ्यक्रम समाप्त कर लिया है। आय-व्यय के अनुमान पर सामान्य विचार के समय बाबा राघवदास ने यह सुझाव दिया कि नार्मल स्कूलों की संख्या बढ़ाने की अपेक्षा हम लोगों को सचल शिक्षक दल की योजना पर अधिक ध्यान देना चाहिये क्योंकि यह योजना नामल स्कूल की अपेक्षा अधिक रहती है और साथ ही समान फल देनेवाली है। मैं स्वयं शिक्षक दल द्वारा हुए कार्य की अच्छाइयों से परिचित हूँ। लेकिन जो कुछ भी हो उनका कार्य तो अल्पकालिक ही होगा। हमारी सचल शिक्षक योजना तो युद्धोत्तर काल में इङ्गलैंड की एजूकेशन मिनिस्ट्री द्वारा चलाई गई शिक्षक-योजना के समान है और इससे यह आशा नहीं की जा सकती कि यह प्रशिक्षण विद्यालयों में विधिवत् दिये जाने वाले प्रशिक्षण के समान ही फल देगी। हमारे लिये यह अत्यन्त दुःख की बात है कि आगामी वर्ष में हम लोग केवल ५५० प्राथमिक पाठशालायें खोल सकेंगे। फिर भी हमें आशा करनी चाहिए कि हम लोग उस प्रकार के संघटन, सुव्यवस्था और उन्नति में इस वर्ष का पूरा समय लगा सकेंगे जिसकी आवश्यकता की ओर गतवर्ष श्री विष्णु शरण दुबलिश ने हम लोगों का ध्यान आकर्षित किया था।
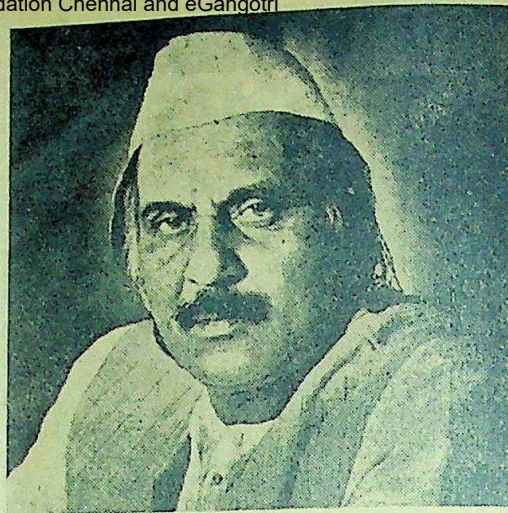
उत्तर प्रदेश के शिक्षा मंत्री माननीय श्री संपूर्णानन्द।

माध्यमिक शिक्षा

यह वर्ष हम लोगों ने माध्यमिक शिक्षा के पुनः संगठम की योजना को और भी आगे बढ़ाने में बिताया है। २२५ माध्यमिक विद्यालयों में जिन्हें पहले हिन्दी मिडिल स्कूलों के नाम से पुकारा जाता था, सामान्य विज्ञान पढ़ाने का प्रबंध किया गया। तथा कथित ऐंग्लो-हिन्दुस्तानी मिडिल स्कूल और आज के माध्यमिक विद्यालयों में भेद मिटाने की दिशा में यह प्रयास किया गया। उच्च माध्यमिक विद्यालयों की संख्या तिगुनी हो गई है। सन १९४६ के प्रारम्भ में इनकी संख्या ६२५ थी। इस तेजी के साथ संख्या वृद्धि होने के कारण उपकरण, उपस्कर यंत्र और भवन आदि सम्बन्धी कठिनाइयाँ स्वभावतः बढ़ गईं। लेकिन हम इस परिवर्तन का स्वागत करते हैं। क्योंकि बिना शहरों के जीवन के अपेक्षातर अधिक व्यय का बोझ उठाये ही ग्राम्य बालकों के लिए माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करना पहले की अपेक्षा सुलभ हो गया है। लेकिन यह भी स्वीकार किया जाना चाहिये कि इन नये विद्यालयों में से कुछ ऐसे भी हैं जो उपकरण हीन होने के कारण किसी भी प्रकार ऐसे विद्यालयों के उपयुक्त शिक्षा देने में समर्थ नहीं माने जा सकते। यह आशा की जाती है कि नये स्कूलों को खोलने के बदले अब हम लोग इनकी सुव्यवस्था की ओर अधिक ध्यान देंगे।

हम लोगों ने अपनी इस पुनः संगठन योजना में, जिन बातों पर विशेष ध्यान दिया है उनमें से रचनात्मक शिक्षा भी है। यह संतोष की बात है कि हमारे माध्यमिक विद्यालयों में से ३४५ ने किसी न किसी वर्ग के रचनात्मक विषय का अध्यापन प्रारम्भ कर दिया है। एक पुस्तिका कुछ ही दिन पूर्व वितरित की गयी थी। उससे आपका इलाहाबाद के रचनात्मक प्रशिक्षण महाविद्यालय के कार्यों का परिचय मिल गया होगा जहाँ रचनात्मक विषय को पढ़ाने के लिए अध्यापकों की प्रशिक्षा होती है। मुझे बताया गया है कि माननीय सदस्यों ने इस पुस्तिका को बहुत आकर्षक पाया है। मुझे आशा है कि आप लोग विद्यार्थियों के लिए इस नये प्रसंग को आकर्षक बनाने में हमारी सहायता करेंगे।

माध्यमिक शिक्षा के ऊपर १९४६ में होनेवाला ८२,०६,७०० रुपयों का व्यय बढ़कर १९५० में १,६७,५५,६०० रुपयों तक पहुँच गया है। इस वृद्धि का अधिकांश तो बढ़े हुये सहायता के अनुदानों के कारण है जो दो वर्ष पूर्व नैदेशिक (मैंडेटरी) वेतन-क्रम के लागू कर देने के फलस्वरूप दिया जा रहा है। इस वेतन-क्रम से किन्हीं श्रेणियों के शिक्षकों का वेतन दुगना भी हो गया है, फिर भी मैं जानता हूँ कि यह बहुत अधिक नहीं है। सहायता प्राप्त माध्यमिक संस्था का अध्यापक वैसा ही और उतना ही कार्य कर रहा है जितना कि राजकीय संस्थाओं का अध्यापक। रुपये की कमी के अतिरिक्त और दूसरा कोई कारण नहीं है कि उसे उतना ही वेतन न मिल सके। मैंने एकाधिक बार इस श्रेणी के अध्यापकों के प्रति, जिनमें से स्वयं मैं भी एक हूँ, सहानुभूति प्रकट की है। मैंने यह भी कहा है कि शासन सिद्धान्ततः अध्यापकों की अधिक वेतन और भावी उन्नति की मांग को न्यायोचित मानता है। किन्तु मैं आशा करता हूँ कि माननीय सदस्य जो बारम्बार इस समस्या को सुलझाने में सरकार की असफलता की धाराप्रवाह आलोचना करते हैं इस बात का स्मरण रखेंगे कि अध्यापकों की इन इच्छाओं का जिनसे हम पूर्ण रूपेण सहमत हैं पूरा करने के लिये रुपया कहाँ से लाया जाय, इसको भी बताने का उत्तरदायित्व उनका है। बैटर मैनेजमेंट कमेटी की रिपोर्ट को स्वीकृत करके शिक्षकों के सेवानुबन्ध और उनकी अवस्था को अधिक अच्छा करने का अवधेय प्रयत्न किया गया है। यह आशा की जाती है कि इस कमेटी के अभिस्ताव निकट भविष्य में लागू कर दिये जायेंगे।

ग्राहकों, एजेंटों और विज्ञापनदाताओं को समस्त पत्र व्यवहार मैनेजर, 'देशदूत' इलाहाबाद के नाम पर ही करना चाहिए।

गणेश देवता !

लेखिका, सुश्री प्रेमलता जयकर

मानव जीवन बड़ा विचित्र होता है। वह जिससे प्रेम करता है, उसका मोह नहीं छोड़ सकता। रामा था तो साधारण नौकर किन्तु वह गणेश देवता का मोह नहीं छोड़ सका। उसने उनके विसर्जन के अवसर पर अपने को भी विसर्जित कर दिया। इस कहानी में रामा तथा उसके आसपास के वातावरण का सुन्दर चित्रण किया गया है जो पठनीय तथा मर्मस्पर्शी है।

रामा मधुगुनू का लड़का था। जन्म से ही वह ऐसा चेहरा लेकर आया था जैसा कि बूढ़े लोगों का होता है। जब उसकी माता ने अपने बच्चे के चेहरे के झुर्रियों को देखा था तभी वह बोल पड़ी थी, "मैंने एक छोटे बूढ़े आदमी को जन्म दिया है।" जब वह बड़ा हुआ, उसके मुँह की झुरियां और भी गहरी होती गईं। कुछ समय बाद वे ऐसी दिखने लगी जैसे तीक्ष्ण सूर्य की गरमी झुलसने के कारण मराठों की भूमि पर दरारें।

बम्बई में चौपाटी पर एक फ्लेट में वह उसका नौकर था। उस फ्लेट में दो कमरे और एक रसोई घर था। दोनों कमरों के दीवारों पर पान के थूक दिखलाई पड़ते थे। इसके अतिरिक्त गीले कपड़ों की बदबू हमेशा बनी रहती थी। इसमें गोदाम घर जैसी बास रहती थी। चूंकि इन दीवारों पर सूर्य की रोशनी कभी नहीं पड़ती थी इसलिये एक तरह की घुटन थी वहां पर।

रामा के लिये रहने का कोई स्थान नहीं था। हाथ मुँह धोने और पाखाना पेशाब करने के लिये जो छोटा कमरा था वहाँ तक जाने वाले रास्ते में वह सोया करता था। वह रास्ता तीन फिट चौड़ा था। उस तंग रास्ते पर सोने वाले आदमी के लिये एक तरफ से दूसरी तरफ करवट बदालना भी मुश्किल था।

रामा अक्सर बीमार रहा करता था। जब उसका शरीर बुखार से पीड़ित होता और उसकी खांसी बन्द न होती तब वह उसी रास्ते पर लेटा रहता और लड़के उसके ऊपर से होकर पाखाना पेशाब कर जाने के लिये उसके ऊपर पैर चलाते।

रामा की मालकिन एक दलाल की पत्नी और प्रौढ़ स्त्री थी। मालिक बहुत अच्छा आदमी नहीं था। जब ठण्ड के कारण रामा पीला पड़ जाता था और उसका बदन कांपने लगता था और वह अपनी पतली दुलाई को ओढ़े रहता था तब उसकी मालकिन उसके नजदीक आकर चिल्ला पड़ती, "तुम काहिल हो, किसी काम लायक नहीं हो। हमेशा बीमार रहने का बहाना लगाये रहते हो मैं अगर इतनी रहमदिल न होती तो दुनियां में कोई भी मालिक तुम्हारी काहिली को सहन नहीं कर सकता था मेरी जगह पर और कोई मालकिन होतीं तो वह तुम्हें घर से बाहर निकाल देती और तुम सड़कों पर भटकते नजर आते।"

फिर उसकी आँखों में आंसू आ जाते अपने किये पर। "तारा, तारा" दूसरे कमरे से उसके पति की आवाज सुनाई पड़ती। जब वह अन्दर जाती तो वह कहता, "रामा के ऊपर बिगड़ो मत तुम नहीं जानती कि ऐसा करने से वह हमारे यहाँ की नौकरी छोड़ देगा और तब हमें इतनी छोटी तनख्वाह पर दूसरा नहीं मिलेगा।"

"अभी, जाने भी दो, मेरी बातों काटा न करो. तुम। वह इतना ज्यादा काहिल है कि उसे और कोई अपने घर में नौकर नहीं रख सकता, मेरे जैसे बेवकूफ के सिवाय।"

हुन्डी बेंचने या खरीदने के स्थान पर जब वस्तुओं के भाव गिरते और ऊपर उठते थे तभी घर का बनता बिगड़ता था। जब वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि होती, तब घर का खाना भी अच्छा बनता, लड़के समुद्र के किनारे जाते और वहां चाट खाते, मालिक और मालकिन हैंगिंग गार्डेन को जाते, या स्थानीय सिनेमाहाल चाले जाते चित्र देखने के लिये। जब मूल्य गिरते घर पर एक प्रकार का अंधेरा छा जाता, मालिक का मिजाज गरम रहता, ताराबेन रोती रहती और लड़के आपस में एक दूसरे से काना फूसी करते।

रामा सूरज निकलने से पहले ही उठ जाता और अपने काम धाम में लग जाता। वह आग, जलाता पानी खौलाता और कमरों में झाड़ू देता। तब तक ताराबेन की नींद खुल जाती और फिर बड़ी देर तक एक हुक्म के बाद दूसरा हुक्म देती वह इसे ले आओ उसे ले आओ, इसे साफ करो, उसे साफ करो तरकारियां काटो, कपड़े पछाड़ो खाना परसो, बर्तन मांजों आदि आदि तारा का विचार था कि एक नौकर को कभी भी बेकार समय बरबाद करने का मौका न दिया जाना चाहिये। जब कभी उसकी कोई पड़ोसिन या रिश्तेदार घर पर आते और उसकी तरीफ करते कि कैसा अच्छा नौकर हैं तब वह झट कह देती, "मैंने रामा को ऐसी ट्रेनिग दी रखी है शुरू से ही।

तब इसी बीच में रामा को जुकाम हो जाता और खांसी के मारे तो नाक में दम हो जाता। वह उसी तंग रास्ते पर जाकर लेट रहता, अपनी पतली दुलाई से अपने को ढंक लेता और सो रहता, बिना "रामा रामा" की अवाजों की परवाह किये बगैर जो कि उसके बुखार से गरम कानों पर हथौड़े की चोटों के समान लगती थीं।

रामा ने बहुत पहले फ्लेट छोड़ दिया होता बाहर जाकर सैर करने के लिये, लेकिन बुखार के कारण उसका दिमाग ठीक काम न करता उसके दिमाग में मानों फूहड़ पने से काम करने की आदत पड़ गई हो और न तो उसे किसी प्रकार की शिकायत होती न पीड़ा और उसे गुस्सा ही आता। वह चुपचाप वहीं लेट रहता।

रात के समय जब घर का सब काम काज खतम हो जाता, प्याले धुल जाते रसोंई घर साफ हो जाता, रामा बाहर निकल जाता सड़क पर दूसरे साथियों के साथ मिलने के लिये। वह महादेव भैय्या के साथ समय व्यतीत करता, वे सब लोग जिसमें रामा भी साथ में होता आपस में बातें करते, गप सड़ाका लगाते और रामकृष्ण गणेश आदि की कहानियाँ सुनते सुनाते। रामा को गणेश देवता की कहानियां सुनने में बहुत दिलचस्पी होती।

रामा को गणेश देवता से जो प्रेम था उसमें कोई रहस्य अथवा भय की भावना नहीं थी। वह तो गणेश जी को अपना पिता समझता था और एक बच्चे की तरह उनसे प्रेम करता था। वह महादेव भय्या से कहता, "महादेव भैय्या, आप हमें वह कहानी सुनाइये कि गणेश जी ने कैसे अपने दोनों दांतों को हाथ से गंवाया ?"

❀ ❀ ❀

"बहुत पुराने समय की बात है। उस समय इस पृथ्वी पर देवताओं का निवास था। शिव और पार्वती के एक लड़का था जिसे वे बहुत प्यार करते थे उसका नाम गणेश था। गणेश को लड्डू खाने का बड़ा शौक था। एक दिन पार्वती ने घी और केशर से भरे हुए भारी लड्डू बनाये। गणेश लड्डू खाने लगे, और खाते खाते उनकी तोंद, फूल आई रबड़ के गेंदे के समान। मानों पेट फटने ही वाला हो। इसके बाद उन्होंने वह चूहा बुलवाया जिसके ऊपर वह चढ़ कर सैर करते हैं। चूहे पर सवार होकर चांदनी रात में वे घूमने के लिये बाहर निकले।

"लड्डू इतना अधिक खा लेने के कारण गणेश जी के शरीर का भार बहुत अधिक हो गया था। चूहा राम मस्ती की चाल से धीरे धीरे चल रहे थे और गणेश जी देवताओं के बारे में सोच रहे थे।"

तारा मालकिन इन बच्चों की देखभाल रामा पर छोड़ना नहीं चाहती थी।

"इसी समय एक सांप सामने दिखाई दिया। सांप को देखकर चूहा डर के मारे पीछे भागने लगा। गणेश जी उसकी पीठ से गिर पड़े। धक्का पहुँचने के कारण गणेश जी की तौंद फट गई और अन्दर से सब लड्डू गिर पड़े। और वे पहाड़ की ढालू पर लुढ़कने लगे। जब गणेश जी ने देखा कि सारे के सारे लड्डू दूर लुढ़के जा रहे हैं तब उनसे न रहा गया वे कूदे आगे की ओर अपने पेट के दो किनारों को अपने हाथों से पकड़े हुए, और सांप को उठाकर और उसकी पेटी बना कर अपने पेट को बांधकर लड्डुओं के लिये पहाड़ी के नीचे दौड़ने लगे।"

"हो हो-देखो लड्डू भागे जाते हैं उनके पीछे गणेशजी भी भागे जाते हैं।

"गणेश जी दौड़ते जाते लेकिन लड्डू तेजी से भागते जाते,उनको चन्द्रमा ऊपर से देख रहा था। चूहा डर के मारे कांप रहा था, गणेश जी सांप लपेटे लड्डुओं को पकड़ने भागे जा रहे थे और लड्डू आगे आगे तेजी से भागे जा रहे थे चन्द्रमा को हंसी छूटी। चन्द्रमा हंसता गया और गणेश जी को उसकी हंसी सुन कर बड़ा क्रोध आया। उन्होंने दौड़ना बन्द कर दिया और लड्डुओं का पीछा करना भी भूल गये। उन्होंने अपने नुकीले दांतों को निकाला और चन्द्रमा की तरफ जोर से फेंका जिससे कि वह मर गया।

"देवताओं को जब पता चला कि चन्द्रमा की मृत्यु हो गई तब उन्हें गणेश जी के ऊपर बड़ी गुस्सा आई। वे गणेश जी के पास गये कार्य और उनके कार्य का कारण पूछने लगे। गणेश जी का हृदय बड़ा कोमल था। पर उन्होंने जो शाप दिया था उसे वे लौटा नहीं सकते थे। इसलिये उन्होंने कहा कि चन्द्रमा पन्द्रह दिनों तक दिखलाई पड़ेगे औप पन्द्रह दिनों तक अंधेरा रहा करेगा।

❀ ❀ ❀

रामा की शादी तभी हो चुकी थी जब वह छोटी उम्र का था। लेकिन उसकी स्त्री भाग गई थी और तब से उसने दूसरी शादी नहीं की थी। रामा की जिन्दगी बहुत ही दुखपूर्ण थी। जब गणेश पूजा का त्यौहार साल में एक बार आता, तभी वह सब कुछ भूल जाता। वह अपने मालकिन से छुट्टी लेकर उस भीड़ के साथ हो जाता जो गणेशमूर्ति को नदी में डुबाने के लिये जाती।

सभी लोग गाते बजाते भीड़ में नदी की ओर जाते, दो कदम आगे बढ़ाते, तो एक कदम पीछे आते।

"गणपति बापा मोरिया"—

फिर दो कदम आगे और एक कदम पीछे—

"गणपति बापा मोरिया"

रामा मजीरा बाजा बजाकर नाचता और नाचते नाचते अपनी सुध बुध खो बैठता। नाचते समय उसके रूखे लम्बे बाल हवा में उड़ने लगते।

फिर उये खांसी पकड़ लेती और इसके साथ ही पैर से धप धप करने और मजीरा बजाने के कार्य में ताल का क्रम भी चालू रहता।

जुलूस बहुत बड़े और लम्बे कतार में होकर समुद्र के किनारे जाता। गणेश जी की कई मूर्तियां उनके सिर पर होतीं कोई मूर्ति छोटी, कोई बड़ी, कोई नन्हीं, कोई चमकीली लाल रंग की, कोई सफेद रंग से पोती हुई, कोई सोने की मुलम्मा की हुई, और कोई चमेली के फूलों की माला पहने। रामा गणेश कीमूर्तियों की ओर टकटकी लगाकर ललचाई आंखों से देखता और उसकी प्रबलइच्छा होती कि किसी एक मूर्ति को वह अपने सिर पर ले चले। वह इच्छा करता कि अपने देवता को औरों की तरह अपने सिर पर रखकर वह समुद्र की ओर ले जाय। लेकिन इसके लिये उसे एक गणेश की मूर्ति खरीदना आवश्यक था पर उसके पास इतने पैसे कहां थे कि वह एक मूर्ति खरीद सकता?

इसलिये रामा अपनी इच्छा को भूल जाता वह केवल जुलूस में शामिल हो जाता और सभी लोगों के साथ अपना सिर नचाता जिन लोगों के घर पर गणेश की मूर्तियां होतीं, वे सवधानी से उन्हें सर पर रखते। कभी कभी रामा को भी अपने सिर पर मूर्ति रखने का मौका मिल जाता।

इस तरह अपनी मालकिन के यहां करते करते रामा को बहुत दिन बीत गये। रामा का शरीर दुर्बल हो गया और उसे खांसी और भी अधिक सताने लगी। अबकी बार जब गणेश पूजा का त्यौहार आया, उसके एक दिन पहले, रामा की तबियत बहुत ज्यादा खराब हो गई। ठण्ड उसकी हड्डियों के भीतर प्रवेश कर गई। वह कांप रहा था जाड़े के मारे और बुखार ने उसे बड़े जोर से जकड़ लिया था। तारा की तबियत भी खराब थी और पड़ोस का एक डाक्टर देखने आया था। उसने जब उसके लिये दवा आदि की हिदायत करदी तब मालिक ने सोचा कि इसी डाक्टर से रामा का इलाज भी करवा देना चाहिये उसने डाक्टर से कहा कि रामा को देखिये और बतलाइये कि उसे कौन सा रोग है?

❀ ❀ ❀

"डाक्टर साहेब, यह मेरा नौकर बहुत ही आज्ञाकारी है, और हमारे यहां बहुत दिनों से है। पर यह अधिकतर बीमार ही रहता है।"

"मेरा विचार है कि यह बीमारी का बहाना किया करता है" तारा ने कहा, "मैंने तो इसके लिये बहुत कुछ किया लेकिन आजकल के नौकर अपने मालिक का जरा भी एहसान नहीं मानते।" डाक्टर साहब, मालकिन के पीछे पीछे उस तंग रास्ते में गये जहाँ रामा पड़ा पड़ा चुपचाप अपने पीड़ा को सहन कर रहा था। वे रामा के पास झुककर बैठे, उसकी नाड़ी देखी और उसकी छाती पर अपना स्टेथस्कोप रखा। कानों में में उन्हें एक तरह के शून्य का अनुभव हुआ। रामा का सांस फूल रहा था।

उनका चेहरा गम्भीर हो गया। वे तारा और उसके पति की ओर देखने लगे।

"इसे तीसरे 'स्टेज' का टी० बी० हो गया है। यह सालभर से अधिक नहीं जीवित रह उकता!"

"टी० बी०!" तारा ने चिल्लाया।

"टी० बी०!" उसके पति ने आश्चर्य से स्वर में स्वर मिलाया

"आह! तारा रोने लगी," मेरे बच्चे, लीला और मधू! कहीं इन्हें भी इस नौकर के बजह से टी० बी० न हो जाय। मुझे डर है कि इस नौकर को मैंने पहले क्यों नहीं निकाल बाहर कर दिया।" तारा ने अपने पति की ओर देखा।

"यह सब तुम्हारा ही कसूर है। उसे कम तनख्वाह देना, उसे पेटभर भोजन भी न मिलते देना, और अपना सब कुछ शेयर बाज़ार में गवां आना।"

"तारा बेन, तुम उत्तेजित न हो, नौकर फौरन गांव भेजा दो। वहां जाकर उसके घरवाले उसकी देखभाल करेंगे।"

"बस, आज ही रात को इसे निकाल देना ठोक होगा। तुम इसे आज तक की तनख्वाह दे दो और कह दो कि अब नौकर की कोई जरूरत नहीं है, इस घर में।"

"लेकिन, तारा, इस समय तो रात है और पानी बरस रहा है। आज यह कहां सोयेगा।"

"मैं कुछ नहीं जानती। मैं इसे घर में अब एक घंटे के लिये भी ठहरने नहीं देना चाहती। आह, मैं अब दूसरा नौकर कहाँ से लाऊ? घर का काम अब कौन करेगा? मेरा तो दिल धकधक कर रहा है।"

❀ ❀ ❀

उस रात को रामा एक दुकान के दरवाज़े के पास सिमट कर सोया। पानी बरस रहा था और सड़क पर बरसते हुए पानी की बौछारें रामा के ऊपर आ रही थीं। ये पानी के छींटें उसकी पतली दुलाई के अन्दर प्रवेश कर उसके बदन, पर लग रहे थे। लेकिन उसे अपने भीगते हुए कपड़ों की सुधबुध न थी और न सर्दी की। उसके शरीर में तीव्रज्वर हो आया था और वह ज्वर के कारण होश में नहीं था। दूसरे दिन वह सड़कों पर इधर उधर घूमता रहा, गोया उसे दुनियां में कोई काम नहीं है। घूमते घूमते वह एक दुकान पर पहुँचा जहां गणेश की मूर्तियां बिकती थीं।

वह गणेश की मूर्तियों की ओर अपनी बुखार से गरम आँखों से देखता रहा। यकायक उसे ध्यान में आया कि उसके धोती के एक छोर में उसकी तनख्वाह बंधी है। उसने एक छोटा 'गणेश देवता' खरीदा जो कि सोने की गद्दी पर बैठे हुए थे और अपने देवता को अपने सिर के ऊपर रखकर वह उस सड़क पर चलने लगा जो समुद्र की ओर जाती थी। लेकिन जब वह, चौपाटी के नजदीक आया तो शक्ति ने जवाब दे दिया। वह थककर बिल्कुल शक्ति विहीन हो चुका था। अपने गणेश देवता को छाती से चिपटाये वह वहीं सड़क पर लेट रहा और उसे फिर गहरी नींद आ गई

जब वह सोकर उठा तो चारों ओर अंधेरा था। वे भीड़ जो अपनी अपनी गणेश की मूर्तियां समुद्र में डुबाने के लिये आयी थीं, अपना काम करके लौट रहीं थीं। सब लोग हंसी खुशी के साथ और गाते हुए लौट रहे थे। आखिरी जुलूस जो कि लौट रही थी, गा रही थी।

"गणपति बापा मोरिया" रामा ने दूर से सुना। वह उठा और अपने गणेश देवता को सिर पर रखकर नाचने लगा।

"गणपति बापा मोरिया"

दो कदम आगे, एक कदम पीछे।

"लाड्डू खातो चोरिया"

दो कदम आगे, एक कदम पीछे।

मानसून का अन्तिम समय था। समुद्र की लहरें उससे मिलने के लिये आगे दौड़ीं।

जब वह पानी में अपनी छाती तक डूब गया, गणेश देवता को डुबाने का और उसे, लौटने का समय आ गया। लेकिन उसके हृदय में अपने देवता के लिये असीम प्रेम था! उसके लिये अपने देवता को अकेले छोड़कर जाना सम्भव न था। वह अपने देवता को लेकर असीम प्रसन्नता के साथ समुद्र के अन्दर चला गया।

"गणपति बापा मोरिया"

---

* एक मराठी कहानी—अनुवादक, श्रीस्वामीनाथ श्रीवास्तव 'स्वतंत्र'

रंगमंच

'शायर' और 'महल' कैसे हैं ?

इन दोनों फिल्मों से क्या दर्शकों का लाभ है ?

लेखक, श्री वेदप्रकाश शर्मा एम० एस-सी०

सुप्रसिद्ध हास्य अभिनेता स्वर्गीय दीक्षित।

"महल" बम्बई टाकीज की नवीन कृति ...भूमिका में अशोक कुमार, मधुबाला, ...लक्ष्मी, कुमार और कनु राय हैं। ...'महल' के विषय में न जाने क्या ...सुना था परन्तु इस चित्र को देखने ...'नाम बड़े दर्शन थोड़े' वाली कहा- ...चरितार्थ हुई। कहानी कमाल अम- ...ने लिखी है तथा निर्देशन भी ...का है। हमारे देश के सिने क्षेत्र ...बहुत बड़ा खोट यह है कि जहाँ ...व्यक्ति ऐक्टर या कहानीकार के ...सफल हुआ वह निर्देशक या ...बनने के स्वप्न देखने लग ...यह बात ध्यान रखने योग्य है ...न वह चीज है जिसके कारण ..., चाहे कहानी कितनी ही अच्छी ...निहायत रद्दी और बेहूदा बन ...है और कहानी कुछ विशेष नहोने ...चित्र उच्चकोटि का बन जाये— ...कुछ बात हमको 'महल' में देखने ...ती है।

...साल पहले जब इलाहाबाद में ...नयी चली थी शंकर ने एक ...में संगम-भवन नाम का एक ...बड़ा महल खरीदा और एक रात ...ने के लिये आया। महल के ...में यह प्रसिद्ध था कि एक स्त्री की ...भटकती-फिरती थी और वह ...दर्दीले स्वरों में गाया करती थी ...जिस मनुष्य ने बनाया था इसकी ...शंकर से बहुत कुछ मिलती थी, ...प्रेमिका रोज रात को उससे मिलने ...रती थी। एक दिन वह मनुष्य ...डूब कर मर गया और उसकी ...भी उसकी याद में घुट घुट कर ...। माली से यह किस्सा सुनकर ...बहुत परेशान हुआ। उसने माली ...रात जार्ज टाउन से श्रीनाथ ...बैरिस्टर को बुलाने के लिये भेजा ...क रात के दो बजे शंकर को ...आवाज सुनाई थी। शंकर ...हुआ। पीछा करने पर ...लड़की दिखाई दी जो कुछ ...कर गायब हो गई। इसी तरह ...दूसरी रातों को भी यह आवाज ...और वह परेशान रहने लगा ...शंकर की यह परेशानी

बहुत बुरी मालूम हुई और वह शंकर को एक वैश्या के यहां लेगया परन्तु शंकर का हृदय वहां पर भी न लगा।

एक दिन शंकर उस लड़की को फिर पीछा करने पर पकड़ लेता है। लड़की अपने को महल के बनाने वाले की प्रेमिका, कामिनी की रूह बतलाती है और कहती है कि शंकर को उससे मिलने के लिये माली की लड़की का खून करना चाहिये जिससे उसकी भटकती हुई रूह उसकी देह में समा जावे। परन्तु इसी बीच में शंकर के पिता शंकर को कानपुर ले जाते हैं और वहां समझा-बुझा कर उसकी शादी रंजना से करा देते हैं।

सुहाग-रात के दिन जब शंकर रंजना का घूंघट खोलने की चेष्टा कर रहा था कि दो बजे, शंकर का हाथ रुक गया और उसको कामिनी की आवाज सुनाई दी। वह उठ कर भागा परन्तु तोते के पिंजरे से टकराने के कारण उसकी चेतना वापिस लोटी, उसने रंजना से प्रस्ताव किया कि कुछ दिनों पहाड़ों पर चले जायें जिसके कारण वह अपने दुखों को भूल जाये। परन्तु पहाड़ों पर भी शंकर को कामिनी की याद बार बार आती है। रंजना बहुत परेशान हो जाती है और आत्महत्या कर लेती है पुलिस स्टेशन इलाहाबाद में जाकर वह बयान देती है कि शंकर ने उससे छुटकारा पाने के लिये उसको जहर दे दिया है। शंकर को फांसी की सजा दी जाती हैं। शंकर माली की लड़की को जो कामिनी का ढोंग रचती रही थी, श्रीनाथ से शादी करने को मना लेता है। परन्तु इधर रंजना की अपनी मां को लिखी हुई चिट्ठी मिलने से मालूम होता है कि रंजना ने खुद आत्महत्या की थी। शंकर बरी कर दिया जाता है। और माली की लड़की आशा के सामने जाकर जान दे देता है। आशा भी महल के झरोखे से नदी में कूद कर जान दे देती है।

कहानी नवीन होने पर भी चित्र में कुछ जान न डाल सकी। इसका मुख्य कारण हमारी समझ में अमरोही साहब का निर्देशन-क्षेत्र में पहली बार हाथ डालना। अच्छे निर्देशन न होने के कारण ही चित्र की गति कहीं कहीं अत्यंत धीमी हो गई है और बिल्कुल चित्र अस्वाभाविक मालूम पड़ता है। चित्र में कहीं कहीं अत्यन्त बेहूदी भूलें हैं। शंकर जब इलाहाबाद से कानपुर जाता है तो पहला स्टेशन नैनी दिखलाया जाता है शायद निर्देशक महोदय ने यह सोचा कि कानपुर इलाहाबाद से पूर्व की ओर है। शंकर जब पहाड़ों पर जाता है तो एक नृत्य दिखलाया जाता है। हमारे ख्याल में ऐसा नृत्य शायद ही भारत के किसी कोने में होता हो। हमको ऐसा नृत्य अंगरेजी चित्रों में अवश्य देखने को मिला था। पता नहीं इस तरह से नकल कर के भारत चित्रपट व्यवसाय कहां पहुँचेगा। कोर्ट-रूम के दृश्य देख कर यह पता लगता है कि शायद कोई सभा हो रही है। जज साहब मिट्टी के पुतले मालूम होते हैं, वकील जब बहस करते हैं तो मालूम होता है कि कोई की इज्जत का उनको कोई ध्यान नहीं है। बहस के दृश्यों पर एक हँसी सी आती है, पश्चिमी देशों में शूटिंग पर बहुत अधिक ध्यान दिया जाता है। बम्बई से इलाहाबाद कोई बहुत दूर नहीं है, परन्तु फिर भी चित्र बम्बई के स्टूडियो में शूट किया गया है यदि यह चित्र कहीं इलाहाबाद में शूट हुआ होता तो इसमें एक जान सी पड़ जाती।

अशोक कुमार एक बहुत अरसे के बाद इस चित्र में फिर हमारे सामने आये हैं, उनका अभिनय बहुत संतुलित रहा है परन्तु उनकी वेशभूषा हमेशा एकसी रहती है। हमेशा ओवरकोट पहने दिखलाई देते हैं। मधुबाला का अभिनय माध्यम है। कुमार ने अपनी भूमिका थोड़ी होनेपर भी अच्छी निभाई है। कनु राय अपने अभिनय में असफल रहे हैं। विजयलक्ष्मी के अभिनय में भी कोई अच्छे सगुन नहीं नजर आते। हमारी राय में "महल" बम्बई टाकीज कीर्ति में चार चांद और लगाने में सफल नहीं हो सकता है। चित्र देखने योग्य है।

शायर

'शायर' सेठ जगतनरायण की 'सुनहरे दिन' के बाद दूसरी भेंट है। इस चित्र में एक अनोखी बात यह है कि यह कामिनी-कौशल और सुरैया का पहला और शायद अन्तिम चित्र होगा जिसमें इन दो प्रख्यात अभिनेत्रियों ने साथ साथ कार्य किया है। मुख्य भूमिका में कामिनीकौशल, सुरैया, कुक्कु, देवानन्द और आगा हैं। कहानी में कोई विशेषता नहीं है। वही पुराने ढर्रे के प्रेम की उड़ाने हैं। नवीनता केवल यही है कि इसमें कुछ बालरूम डान्स दिखाये गये हैं। लेकिन भारत संस्कृत में ऐसे दृश्यों को सम्मिलित करना कहाँ तक उपयुक्त

सुप्रसिद्ध अभिनेत्री जमुना आज कल कहाँ है ?

है यह दर्शकगण ही ठीक ठीक निर्णय कर सकते हैं।

रानी (सुरैया) का भाई प्रकाश (आगा) चार पाँच साल पहले घर छोड़ कर भाग खड़ा होता है। रानी अकेली रहजाने के कारण दीपक (देवानन्द) के घर पर रहने के लिये चली आती हैं और जैसा कि होना चाहिये इन दोनों की प्रेम की पेंगें बढ़नी लगती हैं। परन्तु दीपक कुछ इस मामले में उदासीन रहता है। दीपक साहब एक शायर हैं और उनके लिखे हुये गाने वीना (कामनी कौशल) रेडियो स्टेशन से गाती है। बस, दीपक साहब को बीना से प्रेम करने का रास्ता मिला। दीपक वीना से मिलने की इच्छा प्रकट करता है और इसका पता मालूम होने पर गाड़ी से उसके घर मिलने जाता है। रास्ते में इनको एक वैश्या मिलती है जो किसी सेठ जी से मिलने जा रही थी, दीपक को सेठ समझकर वैश्या इसको अपने घर ले जाती है।

इधर प्रकाश बम्बई आकर अपना नाम पारकर रख लेता है और ईसाई और एंगलो-इन्डियन समाज में जाकर लुत्फ उड़ाता है। वहाँ उसका फ्लोरा नामक लड़की (कुक्कु) से प्रेम हो जाता है। फ्लोरा की मां मैडम ग्रेसी वीना के पिता की दूसरी पत्नी थी। वीना की मां मर चुकी थी। बीना के पिता मैडम ग्रेसी के वीना से द्वेष रखने के कारण बहुत दुखी रहते थे। इधर पारकर साहब की भेंट एक दिन दीपक से हो जाती है और वह इसको वैश्या के यहाँ से ले आता है। पारकर अपनी बहिन रानी को भी बुला लेता है। दीपक का हाल वीना के

प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री मुमताज़ शान्ति।

प्रेम में बुरा था और वह पारकर की सहायता से वीना के पिता से भेंट करता है। भेंट करने पर मालूम होता है कि कि वीना और दीपक दोनों के पिता गहरे मित्र हैं। बस फिर क्या है वीना और दीपक को मुहब्बत करने का अच्छा मौका मिला। इसी बीच में वीना के पिता मर जाते हैं और वसीयत में एक-चौथाई जायदाद फ्लोरा और मेडम ग्रेसी को देते हैं और बाकी वीना को।

एक दिन वीना दीपक से मिलने जाती है तो रानी और दीपक को प्रेम वार्तालाप में गुन्था हुआ पाती है। वीना के लौटने पर रानी को जब यह मालूम होता है तो वह वीना को मनाने उसके घर जाती है। वहां मैडम ग्रेसी रानी दवा के बहाने वीना को जहर पिलवा देती है। रानी गिरफ़ार की जाती है परन्तु मेडम साहिबा का भेद खुलने पर रिहा कर दी जाती है और शादी दीपक से हो जाती है इधर पारकर और फ्लोरा की शादी हो जाती है।

श्रेष्ठ अभिनय कामिनी कौशल का है। उसका अभिनय कहानी कमजोर होते हुये भी काफी प्राकृतिक है परन्तु सुरैया का तो चेहरा बारबार स्क्रीन पर देखते हुए हम तो तंग आ गये हैं, पता नहीं अब इसके अभिनय में कोई जान क्यों नहीं मालूम होती। देवानन्द ज्यों के त्यों हैं। आगा साहब पूरे सर्कस के जोकर प्रतीत होते हैं। कुक्को की भूमिका इस चित्र में काफी है और उसने अपनी भूमिका को ठीक भी निभाया है। चित्र बिलकुल चलताऊ है।

...की चिट्ठी

...पुलिस बजट पर मनोरंजक बहस

...र्ट्स कालेज संस्थाओं को सौंप दिया जाये— ...र्वी बंगाल में होने वाली दुर्घटनाओं की प्रति... ...या—प्रांत में तपेदिक की बीमारी का जोर— ...पैंतीस वर्षों से सिक्कों का उपयोग नहीं— श्री खुर्शेदलाल का आश्वासना—

(विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

...प्रांतीय धारा सभा में पुलिस विभाग ...के सवा दो करोड़ रुपयों की मांग ...। उस पर श्री एन० बी० पाटिल ...कटौती का प्रस्ताव रक्खा। उस ...पर धारा सभा के प्रायः सभी ...सदस्यों ने भाग लिया। इनमें से ...नारायन दास गुप्ता, श्री कथाड़े; ...सुधाकुमारी राय श्री रूईकर, डा० ..., श्री सत्यनारायण बजाज, श्री सोन ...मुख वक्ता थे और प्रांतीय सरकार ...ने माननीय मिश्रजी माननीय ... और माननीय महेता थे। ...बहस में इतना आनन्द आ ...वे यह भूल गये कि कटौती ...एक गैर कांग्रेसी का था, जब ...में भाग लेने वाले सभी सदस्य ...दल के थे। धारा-सभा के प्रमुख ...श्री नारायणदास गुप्ता ने पुलिस ...की कटु आलोचना की आपने ...कि पुलिस हमेशा सीमा का उल्ल...घन कर जाती है तथा इसे रोकना ...आवश्यक है। आपने शिका...यत की कि छोटे छोटे से कारणों के ...पुलिस लोगों को गिरफ्तार करने की ... देती है। आपने एक उदाहरण ...कि जब नागपुर में प्रधान सेनापति ...का ... हो रहा था तब पुलिस के एक ...ने एक प्रतिष्ठित नागरीक को ...कार पास के रास्ते से हटाने का ...दिया जब कि किसी भी प्रकार ...का उलंघन नहीं किया गया

...सम्बन्धित मिनिस्टर से इसकी ...त भी की गई थी परन्तु प्रांतीय ...ने इस पर विशेष दिलचस्पी नही ...। गृह मंत्री मानगीय मिश्र जी ने ...कि एक पुलिस के सिपाही को ...र करने पर चेतावनी दी गई। ...में सब से महत्व पूर्ण भाषण ...सुधा कुमारी राय ने दिया। ...मध्य प्रदेश धारा सभा की सबसे ...सदस्या है तथा स्वर्गीय सुभद्रा-...चौहान की सुपुत्री हैं और ...प्रेमचन्दजी हिन्दी के उपन्यास ...) की वधू एवं हंस के सम्पादक ...की पत्नी है। उनका यह

मध्यप्रदेश के प्रधान मंत्री पंडित रविशंकर शुक्ल।

धारा सभा में सबसे पहला भाषण था। यहाँ तक कहा जाता है कि श्रीमती राय का भाषण सदस्यों को इतना पसंद आया कि कई सदस्यों ने उन्हें धारा सभा की पहली कतार में बैठने की सलाह दी। आपके भाषण का प्रभाव सदस्यों पर बहुत अच्छा पड़ा और बीच बीच में कई बार तालियां बजाई गई। आपने भाषण में बतलया कि पुलिस ने अब तक अपनी मनोशक्ति में परिवर्तन नहीं किया है आपने एक उदाहरण देते हुए कहा कि एक राजनैतिक बंदी को नागपुर जेल में कुछ पुस्तकें भेजी गईं, जिनमें स्वर्गीय प्रेमचंद द्वारा लिखी गई 'मंगल सूत्र, पुस्तक भी थी। पुलिस ने कहा कि यह पुस्तक राजनैतिक बंदियों के पढ़ने लायक नहीं है और वह पुस्तक वापिस भेज दी गई।

प्रसिद्ध मजदूर नेता श्री रूइकर ने भी बहस में लिया आपने कहा कि प्रजातांत्रिक राज्य में जब सरकार कोई गल्ती करती है तब जनता के प्रतिनिधि उसमें हस्तक्षेप करते हैं। आपने पुलिस के व्यवहार की कटु आलोचना की। आपने बताया कि पुलिस के सिपाहियों का व्यवहार मेरे समक्ष में नहीं आता है, क्योंकि वे अशिक्षित होते हैं, परन्तु पुलिस के उच्च अधिकारियों का दुर्व्यवहार बुरी तरह से खटकता है।

गृहमंत्री माननीय मिश्रजी ने बतलाया कि बहुत से आरोपों की जांच करने पर ज्ञात हुआ कि या तो वे निराधार हैं अथवा उन्हें बढ़ा कर बताया गया है। आपने सदस्यों को आश्वासन दिया कि भविष्य में पुलिस विभाग में शिक्षित व्यक्ति ही अधिक रखे जायंगे फिर पुलिस विभाग में जो २५,००० कर्मचारी हैं उन सबका उत्तरदायित्व लेना भी साधारण बात नहीं है। यह मेरा कर्तव्य है कि मैं पुलिस को सद्व्यवहार करने की शिक्षा दूं। इस कार्य में भी कुछ समय लग सकता है। अतः में कटौती प्रस्ताव वापिस ले लिया गया और बजट की मांग स्वीकृत हो गई।

आर्टस कालेज संस्थाओं को सौंप दिया जाये

मध्यप्रदेश में कुछ दिनों से इस बात की चर्चा है कि साइन्स मेडिकल इंजिनियरिंग आदि कालिज की व्यवस्था सरकार पर और प्रांत के समस्त आर्टस कालेज के संस्थाओं को सौंप दिये जायें। प्रांतीय सरकार ने प्रायः इस सम्बन्ध में निर्णय कर भी लिया है और निकट भविष्य में उसे कार्य रूप में परिणत करना चाहती है। नागपुर विश्वविद्यालय के उप-कुलपति कुंजीलालजी दुबे इसके पक्ष में नहीं हैं। आपने कहा है कि इस समय प्रांतीय सरकार जिन आर्टस कालिजों को चला रही है, वे अन्य संस्थाओं के लिये आदर्श के रूप में हैं। यदि इन्हें इन संस्थाओं को दे दिया जाता है तो इनका स्तर कम हो जायगा और कुछ दिनों में कला साहित्य, इत्यादि की पढ़ाई का कुछ भी महत्व नहीं रह जायगा। विदित हुआ है कि प्रांतीय सरकार अपने इस नियम से पीछे नहीं हटने वाली है।

पूर्वी बंगाल में होने वाले दंगे की प्रतिक्रिया

प्रांत की जनता पूर्वी बंगाल में होने वाले अत्याचारों से बेचैन हो उठी है। जबलपुर शहर में भी पूर्वी बङ्गाल की सहायतार्थ। भिन्न२ संस्थाएँ अलग अलग से जनता के नाम अपील निकाल रही हैं। अगर कांग्रेस कमेटी ने अपने एक प्रस्ताव द्वारा पूर्वी बङ्गाल में अल्प संख्यकों पर होने वाले अमानुषिक अत्याचारों पर दुख प्रकट किया है और पाकिस्तान सरकार की नीति को निकम्मी ठहरते हुए उसके प्रति सहानुभूति प्रकट की है। साथ ही साथ जनता से अनुरोध किया गया है कि उत्तेजना-वश लोग ऐसा कोई कार्य न करें कि जिससे भारत सरकार के प्रयत्नों में कोई बाधा उपस्थित हो। हिन्दू महासभा द्वारा आयोजित बंगाल सहायता समिति ने भी सहायता की अपील की है और अलग से एक कोष स्थापित किया है। जबलपुर के नागरिकों की सभा डा० एस० सी० बराट को अध्यक्षता में जबलपुर क्लब में की गई जिसमें शहर के प्रायः सभी प्रमुख व्यक्ति उपस्थित थे। कोष एकत्रित करने के लिये एक समिति का संगठन किया गया जिसके अध्यक्ष डा० बराट चुने गये। इस प्रकार एक ही कार्य के लिये जबलपुर जैसे शहर में भिन्न २संस्था अपने स्वतंत्र आयोजन कर रही है। अच्छा होता यदि पूर्वी बङ्गाल के सहायतार्थ एक प्रतिनिधि समिति का संगठन किया जाता जिसमें शहर के सभी हितों का प्रतिनिधित्व होता। इससे काम में सरलता और सुगमता हो जाती क्योंकि हर एक व्यक्ति पूर्वी बंगाल के असहायों से सहानुभुति रखता है और इन्हें सहायता देना अपना कर्तव्य समझता हैं।

३५ वर्षों से सिक्कों का उपयोग नहीं

मध्य प्रदेश के अर्थमंत्री गांधीजी के कथानुसार सिक्कों का उपयोग नहीं करते हैं बल्कि अपनी समस्त आय अपने गृह प्रबन्धक को सौंप देते हैं। उन्हें यह भी नहीं मालूम है की पिछले ३४ वर्षों से सिक्कों में कैसे परिवर्तन हुए हैं। आपका कहना है, कि जब मुझे वेतन मिलता है तो मैं उसे अपने सेक्रेटरी को सौंपदेता हूँ जो उसे गृह प्रबंधक को दे देता है मुझे अपना भोजन आराम से मिल जाता है तब फिर परेशानी किस बात की!"

श्री खुर्शीदलाल का आश्वासन

पिछले सप्ताह केन्द्रीय यातायात विभाग के उपसचिव श्री खुर्शीदलाल का आगमन जबलपुर में हुआ था। आपने टेलिग्राफ वर्क शाप का निरीक्षण किया और कर्मचारियों की एक सभा में भाषण दिया जिसमें प्रायः २००० कर्मचारी उपस्थित थे। आपने बताया कि वर्कशाप में कभी काम की कमी नहीं हो पायगी और घटनी उपस्थित ही नहीं होगा। कर्मचारियों को चाहिये कि वे अधिक से अधिक कार्य करके उत्पादन बढ़ाने में सहायता दें। आपने यह भी कहा कि कर्मचारियों को रहने के लिये मकान दिये जायें और उन्हें हर संभव सुविधा दी जाय ताकि वे अपने कार्यों को कुशलता पूर्वक कर सकें।

पृष्ठ ५ का शेष

विहार, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, और बम्बई आदि प्रांतों की सरकारों ने गुरुकुल की विद्यालंकार उपाधि को बी० ए० के समान अंगीकार कर लिया है। इसलिए भारत सरकार और आर्य जनता के बीच गुरुकुल को अपने अधिकार में रखने के लिए एक स्वस्थ होड़ चल पड़ी है। इस होड़ का दृश्य हमें अबकी जयन्ती में स्पष्ट दिखायी दिया। अब तक गुरुकुल भारतीय जनता और खास तौर के आर्यसमाजियों के चन्दे पर चलाती थी। मगर युद्ध के बाद देश की आर्थिक अवस्था बदल गई है। दानियों में दान देने की हिमात नहीं रही। इस अवस्था में गुरुकुल में निश्शुल्क शिक्षा दी जाय तो कैसे दी जाय। इसके दो ही तरीके हैं। एक तो यह कि अनेक कष्ट सहन करके भी जनता गुरुकुल के समूचे खर्च का वहन करे। और या फिर सरकार ही इस संस्था को सम्भाल ले। आर्य जनता को इस संस्था से मोह है। वह इसे छोड़ने के लिए तैयार नहीं। मगर आर्थिक दृष्ट से उसमें इस संस्था को सम्हालने रखने का सामर्थ्य नहीं रहा तो फिर क्या इसे सरकार को समार्पित कर दिया जाय? अबकी जयन्ती में राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू ने असमंजस में पड़े गुरुकुल के अधिकारियों का पथ प्रदर्शन किया।

राष्ट्रपति ने गुरुकुल के संचालकों को निमंत्रित किया कि यदि वे चाहें तो अपनी संस्था को भारत सरकार के शिक्षा-विभाग का अंग बना सकते हैं। आजादी से पहले कांग्रेस की तरह गुरुकुल ने भी कांग्रेसी सरकार के साथ असहयोग कर रखा था। मगर अब सरकार गुरुकुल को अपना समझती है। इसी तरह गुरुकुल भी सरकार को अपना मानता है। ऐसी अवस्था में अब दोनों में सहयोग स्थापित्त हो जाना चाहिए। लेकिन गुरुकुल के अपने आदर्श हैं, अपनी आश्रम। व्यवस्था है और अपनी ही स्वतंत्र पाठविधि है। अतएव इस विद्यापीठ के द्वार सिर्फ आर्यसमाजी बच्चों के लिए खुले हैं। लेकिन यदि गुरुकुल को सच्चे अर्थों में विश्वविद्यालय बनना है, यदि उसे नालान्दा और तक्षशिला की भांति एशिया का सांस्कृतिक केन्द्र होने की अभिलाषा है तो उसे अपने विधि-विधान में परिवर्त्तन करना होगा। उसे समय के प्रवाह को बदलने का अधिकार तो है ही, मगर समय की आवश्यकता को भी पूरा करना होगा। समय की आवश्यकता को तो दूसरी शिक्षण संस्थाएं भी पूरी करती है। मगर शिक्षा क्षेत्र में क्रान्ति करना सभी संस्थाओं के बस का रोग नहीं। इस कार्य को यदि गुरुकुल अपने हाथ में रखने को तैयार है तो राष्ट्रपति को इसमें कोई आपत्ति नहीं। सरकार की मशीन सुस्त है। उसकी रफ्तार सदैव धीमी रहती है। मगर सजग शिक्षण संस्थाएं दौड़ में सदैव आगे रहा करती है। गुरुकुल चाहे तो अपने क्रान्तिकारी स्वरूप को बनाए रख सकता है। सरकार उसे इस कार्य के लिए सब सुविधाएँ प्रदान करती रहेगी। गुरुकुल चाहेगा तो सरकार उसे आर्थिक सहायता देने में भी गुरेज़ न करेगी। सरकार यह आश्वासन मौकिक रूप में ही न देगी इसे मूर्त रूप देने के लिए वह १९५०-५१ के लिए गुरुकुल को एक लाख रुपए का दान देगी। इस तरह भारत सरकार गुरुकुल की हर तरह सहायता करने को तैयार है। गुरुकुल के अधिकारी चाहे तो उसे सरकार के हवाले कर दें और चाहें तो गुरुकुल का स्वतंत्र अस्तित्व कायम रखते हुए सरकार से यथायोग्य सहायता प्राप्त करते रहे।

गुरुकुल के अधिकारियों को चुनौती

राष्ट्रपति के वक्तव्य को गुरुकुल के संचालकों को एक चुनौती मिली है। उन्हें अब यह सोचना होगा कि वे सरकार से लाभ उठायें या नहीं? सरकारी शिक्षा-विभाग का अंग बन कर अथवा सरकार से स्वतंत्र रह कर 'दोनों अवस्थाओं में ही उसे सरकारी पैसे की आवश्यकता रहेगी। लेकिन सरकार धर्महीन अथवा ग़ैरमज़हवी है। गुरुकुल के अधिकारियों को अपनी संस्था की धर्म-निरपेक्षता सिद्ध करनी है। उन्हें अपनी गतिविधि से और अपने आचरण से यह सिद्ध करना होगा कि गुरुकुल एक विशुद्ध राष्ट्रीय शिक्षण संस्था है। उसमें अब मतावलम्वी छात्र शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान, पारसी, जैन, बौद्ध आदि सभी धर्मों के विद्यार्थियों के लिए गुरुकुल का द्वार खुला रहेगा। आर्य जनता इसका विचार करेगी। वह यह कभी भी पसन्द न करेगी कि गुरुकुल की भूमि में सिक्ख छात्र गुरुद्वारे में, मुस्लिम छात्र मस्जिद में और बौद्ध व जैन छात्र अपने अपने मन्दिरों में ईश्वर की प्रार्थना करें। अगर गुरुकुल की लोकप्रियता को तथा उसके विश्वविद्यालय के रूप को सार्थक बनाने के लिये आर्यसमाजी नेताओं को अपनी जनता का पक्ष प्रदर्शन करना होगा। उन्हें समझाना होगा कि अब स्वाधीन भारत में हमें सब धर्मों का समत्वय करना होगा। खण्डन-मंडन से अब काम न चलेगा। यदि इतने से भी आर्य जनता न माने तो फिर आर्यसमाजी नेताओं को अपने ही विचारों में क्रान्ति पैदा करनी होगी। अब तक भारत में अनेक धर्म पैदा हुए सब के अपने ही नाम हैं। भारत का अपना कोई राष्ट्रीय धर्म नहीं। गुरुकुल के संचालक चाहें तो अपने यहां इस राष्ट्रीय धर्म का विकास कर सकते हैं। बहरहाल अब गुरुकुल शिक्षा प्रणाली सिर्फ आर्यसमाजी बच्चों के लिए नहीं, अपितु समस्त भारतीय बच्चों के लिए उपयोगी होना चाहिए। तभी धर्म निरपेक्ष सरकार उसकी आर्थिक सहायता कर सकेगी, वैसे नहीं।

उत्तर प्रदेश की सरकार का सहयोग

गुरुकुल कांगड़ी की स्वर्ण जयन्ती में सब को अधिक सुन्दर चीज यह प्रतीत हुई है कि उत्तर प्रदेश के अधिकारियों ने गुरुकुल को अपना लिया है। मुख्य मंत्री पं० गोविन्दवल्लभ पन्त और शिक्षा-मंत्री श्री सम्पूर्णानन्द जी आने वाले थे। किन्तु ठीक अन्तिम समय में अपने प्रान्त की कुछ आवश्यक समस्याओं को सुलझाने में उलझजाने से वे आ न सके। फिर भी सभा सचिव श्री गोविन्द सहाय को गुरुकुल का प्रेम हठात् जयन्ती में खींच लाया। वे भाषण करने के लिए ही नहीं वरन् दर्शन करने और मिलाने जुलाने के लिये भी आए थे। उन्हें ठीक मालूम है कि शुरू शुरू में गुरुकुल की नींव उन्हीं के जिले अर्थात् बिजनौर में डाली गई और इस लिए उन्हें गुरुकुल के साथ मोह होना स्वाभाविक था। वे गुरुकुल में पधारे और उनका भाषण भी हुआ। उनके विचरा सर्वविदित हैं। वे सम्प्रदायिकता के घोर निंदक हैं। अपने भाषण में उन्होंने साम्प्रदायिकता और सान्प्रदायिक मनोवृत्ति की तीव्र आलोचना की, कुछ आर्यसमाजियों ने आर्यसिद्धान्त और दयानन्द की वाणी की दुहाई देकर उन्हें चुप कराना चाहा। मगर श्री गोविन्द सहाय दयानन्द की स्प्रिट को अच्छी तरह समझते हैं। इसलिये उन्हें जो कुछ कहना था वह कहा। अधिकांश श्रोताओं ने उनके भाषण का स्वागत किया। वे भी यही असर लेकर गए कि जयन्ती में उपस्थित आर्य जनता साम्प्रदायिक नहीं हैं। उसने अभी तक गाँधीजी की गैर मज़हवी विचारधारा का परित्याग नहीं किया है।

आयुर्वेद महाविद्यालय का भविष्य

उत्तर प्रदेश की सरकार का वास्तविक प्रतिनिधित्व तो किया स्वस्थ्य मंत्री श्री चन्द्रभानु गुप्ता ने। आप आए और गुरुकुल को अपना समझ कर आए आपने गुरुकुल की आयुर्वेद प्रयोगशाला का उदघाटग किया और अपनी सरकार की ओर से इस कार्य के लिए ३७००० रु० दान देने की कृपा की। उनका आना सार्थक हुआ। उन्होंने अपने भाषण में जो भाव व्यक्त किए, उनसे सचमुच गुरुकुल के संचालकों की आंखें खुल गईं। उन्होंने प्रस्ताव किया कि उत्तर प्रदेश की सरकार इसी प्रदेश में एक आदर्श आयुर्वेद महाविद्यालय स्थापित करना चाहती है। इस में ५०० छात्र प्रविष्ट किए जायंगे और प्रान्तीय सरकार इस पर हर साल ७ लाख रु० व्यय करना चाहती [...] आयुर्वेद के छात्रों के लिए स्[...] अवसर उपस्थित है। गुरुकु[...] संचालकों को सोचना है कि क्य[...] अपने आयुर्वेद महाविद्यालय को प्रां[...] सरकार को सौंपने के लिये तैयार [...] वैसा करने में उनके सामने सब से [...] कठिनाई यह पैदा हो सकती है कि [...] अवस्था में गुरुकुल के आदर्शों [...] आश्रम-नियमों का परिपालन कैसे हो[...] इस कठिनाई को दूर करने के [...] स्वास्थ्य मंत्री ने स्पष्ट भाव से यह [...] दिया था कि यदि गुरुकुल के संचा[...] हमारी योजना को कर्यान्वित करदें [...] हम उनके आंतरिक प्रबन्ध में [...] किस्म का हस्तक्षेप न करेंगे। प्र[...] बहुता सुन्दर हैं। गुरुकुल के आयु[...] लंकार बन्धु इसका हार्दिक स[...] कर रहे हैं। उनके सहयोग से आ[...] कि गुरुकुल की स्वामिनी सभा [...] सम्बन्ध में कोई बुद्धिमत्तापूर्ण [...] उठायेगी।

इसके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश [...] सरकार ने इस वर्ष गुरुकुल की [...] सड़क को पक्का कर दिया है। ज[...] के अवसर पर उसने अपनी ओर [...] २०,००० रु० का दान भी किया [...] गुरुकुल के संचालक उत्तर प्रदेश [...] कार की सहानुभूति के प्रसि आभ[...] हैं। उन्हें विश्वाम हो गया है कि [...] सरकार ने गुरुकुल को अपना लिया [...]

पंजाब सरकार की उपेक्षा क्यों!

केन्द्रीय सरकार गुरुकुल को अ[...] समझती है। इसीलिए राष्ट्रपति इ[...] जयन्ती में पधारे। उत्तर प्रदेश [...] सरकार गुरुकुल से बहुत सी आ[...] लगाए बैठी हैं इसलिए उसने तन, [...] और धन से जयन्ती समरोह में संचा[...] को सहयोग प्रदान किया। मगर [...] कि पंजाब सरकार ने जयन्ती में [...] दिलचस्पी नहीं दिखाई। न [...] का कोई मन्त्री शामिल हुआ, न [...] सचिव और न कोई एम० एल० [...] पंजाब को गुरुकुल पर नाज़ रहा [...] यह पौधा उसीका लगाया हुआ [...] आज जब वह लहलहाने व पल्ल[...] होने लगा है, तब पंजाब का उत्त[...] प्रसि इतना अधिक उदासीन हो [...] सचमुच चिन्तनीय है। आर्य प्रति[...] सभा पंजाब के अधिकारी अब तक [...] की रकम को गुरुकुल में ठीक [...] खर्च करने की व्यवस्था कर रहे [...] मगर जब चन्दा ही न होगा तो वे [...] तक गुरुकुल का संचालन करते [...] सकेंगे। पाकिस्तान बसने के बाद [...] जनता दान देने की अवस्था में [...] रही। तो क्या पंजाब सरकार का [...] फ़र्ज न था कि वह इस समरोह में [...] ओर से पत्र-पुष्प भेंट करती? जयन्ती [...] पंजाब सरकार का यह अवह[...] सचमुच खलने वाली चीज थी।

[सं]वाददाताओं के पत्र

[ज]यपुर में—राजस्थान लोक शिक्षण [...] की पहली बैठक राजस्थान के गृह [...] श्री प्रेमनारायण माथुर की अध्यक्षता [...] दोपहर में राजस्थान सचिवालय [...] समिति के कक्ष में हुई। बैठक का काम [...] करते हुए अध्यक्ष ने कहा कि [...] मंडल का काम शुरू करने में [...] देर हो गई है फिर भी हमें आशा [...] इस महीने में हम काम आरम्भ [...] के लिये आवश्यक साधन जुटा [...] और अगले महीने में व्यवस्थित [...] से कार्य शुरू हो जायगा।

आपने कहा कि मंडल का मुख्य [...] सार्वजनिक समस्याओं के बारे में [...] में वैज्ञानिक और रचनात्मक दृष्टि- [...] को प्रोत्साहित करने का होना [...]। इस काम में जिनको विचारक [...] जाता है उनको आगे आना होगा [...] समाज के समझदार तत्वों का [...] संकलित करना होगा। आपने [...] कि सभी लोग अपनी अपनी [...] से बन्धे रहते हैं परन्तु प्रयत्न इस [...] यह होना चाहिए कि बिना [...] आवश्यकता का ध्यान किये [...] में तथ्यपूर्ण एवं वैज्ञानिक [...] प्रसारित की जासके।

[ह]रद्वार महा कुम्भ के अवसर पर [...] काली कमली वाला की भूमि [...]) में सम्मेलन का तृतीय [...], वैशाख कृष्ण चतुर्थी [...] ता० ६ अप्रैल, ५०। से प्रारम्भ [...] सम्मेलन की तैयारियाँ प्रारम्भ [...] है। समागत अतिथियों के लिये [...] स्थान, भोजन आदि का प्रबन्ध [...] समिति के ओर से रहेगा। [...] समिति के अध्यक्ष पं० श्रीदत्त [...] (रायबहादुर) और मंत्री [...]नन्द डोमाल हैं। इस अवसर [...] के सुप्रसिद्ध आचार्य, नेता [...] सम्मिलित हो रहे हैं। भार- [...], उसके प्रचार एवं प्रसार [...] भाषण एवं विचार विमर्श [...] के जगद्गुरु शंकराचार्य भारती [...] जी महाराज, माननीय [...] डा० पुरुषोत्तमदास टंडन, [...] गणेशदत्त जी एवं अन्यान्य [...] रहे हैं। श्रीदत्त कुटी कन- [...]) के पते पर स्वागत मन्त्री [...] व्यवहार करना चाहिये।

—केदारनाथ शर्मा सारस्वत

[अज]मेर के मुसलमानों की एक सभा [...] की सलाह कार समिति के [...] अब्बास अली साहब के [...] में हुई। जमीयल उलेया के [...] मौलाना शकूर ने अपने भाषण [...] बंगाल में मुसलमानों द्वारा [...] किये गये अत्याचारों की [...] की गई।

६ मार्च को रेलवे के एक उच्च पदाधिकारी श्री जयकिशन दास जी मेहरा की सुपुत्री कुमारी रानी का शुभ विवाह दिल्ली के प्रमुख व्यवसायी श्री ब्रह्मा कक्कड़ के साथ बड़ी धूम धाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर नगर के समस्त प्रतिष्ठित नर नारी उपस्थित थे।

गत अक्टूबर मास में केन्द्रीय स्वास्थ्य विभाग के आदेश पर स्थानीय पुलिस ने श्री राजन पाल नामक एक व्यक्ति को जो कि अपने को डिप्टी डाइरेक्टर आफ मेडिकल बताता था। ईसाइयों के एक समारोह में गिरफ़्तार कर लियां गया। यह सज्जन मिथ्या प्रयोजन देकर अजमेर के कुछ सरकारी डाक्टरों से एक अच्छी रकम रिश्वत के रूप में प्राप्त करने की चेष्टा कर रहा था। गिरफ़ारी के समय इनके पास से कुछ सुन्दरियों के चित्र और कुछ अन्य कागज बरामद हुए थे। न्यायाधीश ने इनको धोखा देने के अपराध में एक वर्ष का कठिन कारावास की सज़ा सुनाई है।

—संवाददाता

कांगड़ी गुरुकुल आयुर्वेद कालिज में नये छात्रों का प्रवेश प्रारम्भ हो गया है। प्रार्थना पत्र १० अप्रैल तक निम्न पते पर आ जाने चाहिये योग्यता साइन्स तथा संस्कृत साहित मैट्रिक तक की होनी चाहिये। होने वाली मैट्रिक के उम्मीदवार भी प्रार्थना पत्र दे सकते हैं।

विद्यार्थी डे स्कालर्स के तौर पर भी प्रविष्ट हो सकते हैं।

गुरुकुल आयुर्वेद कालिज के स्नातक "ए" श्रेणी में रजिस्टर्ड हो सकते हैं तथा गवर्नमेंट सर्विस में लिये जाते हैं। इस कालिज में चरकादि आयुर्वेद शास्त्रों के साथ साथ एलोपैथी के सब विषयों की पढ़ाई ऊंचे स्टेन्डर्ड पर कराई जाती है। क्रियात्मक शिक्षण के लिये कालिज में ४६ बेड्स का प्रबन्ध है। सर्जिकल थियेटर, क्लिनिकिल लैबोरेटरी एक्सरे, शवच्छेदन तथा प्रदर्शनी आधुनिक यन्त्रों से सुसज्जित होने से पूर्ण तथा क्रियात्मक शिक्षण दिया जाता है। प्रार्थना पत्र आचार्य गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी जिला सेहारनपुर के पते पर आने चाहिये।

—आचार्य

उदयपुर महिला मंडल में श्रीमोहन लाल जी सुखाडिया की अध्यक्षता में कस्तूरबा गाँधी स्मृति दिवस मनाने के लिये सार्वजनिक सभा की गई। बापू के प्रिय भजन वैष्णवजन तो लेने कहिये से दिवस की कार्यवाही आरम्भ हुई। आचार्या श्री रामबहिन ने बा को श्रद्धांजलि अर्पण करते हुए उनके जीवन पर प्रकाश डाला। मंडल के प्रधान मन्त्री श्रीदयाशंकर श्रोत्रिय ने कहा कि मंडल के तत्वावधान में श्री कस्तूरबा ट्रेनिंग विद्यालय और छात्रावास आरंभ किया तब से हम बा स्मृति दिवस मनाते आ रहे हैं। यह एक आदर्श भारतीय महिला रत्न थीं। देश की सेवा में इनका जीवन व्यतीत हुआ। इनके जीवन की अच्छाइयां हम ग्रहण करें। उन्हें रोगी सेवा विशेष प्रिय थी। अतः शहर में नेताओं और शिशुओं के चिकित्सा का अभाव है अस्तु बा के स्मृति दिवस पर 'महिला मंडल विद्यालय' शुरू करने की घोषणा की वैद्य पं० भवानी शंकर जी ने अवैतनिक रूप से सेवा मन्डल के तत्वधान में करने का निश्चयकिया।

—प्रचारमन्त्री

बस्ती—मेंवासी तहसील मौजा उदयपुर योगियों में गांधी जी के आदर्शों के अनुकूल मोतीलाल और सोभाग्यवती कल्याणी का विवाह बड़ी सादगी से सम्पन्न हुआ। वर और बधू पक्षों के अभिभावकों ने किसी तरह का आडम्बर नहीं किया। विवाह मंडप केलो और आमकी पत्तियों से सजाया गया था। विवाह की पुरानी और कुरीती पूर्व बातों को छोड़ दिया गया था। गांधी जी और काइस्ट की मूर्तियां सभा मंडप में रक्खी गई थीं। जहाँ वर-बधू ने विवाह की शपथ-ग्रहण किया और दोनों महापुरुषों की अमर आत्मा से आशीर्वाद मांगा। विवाह की कार्यवाई आश्रम प्रार्थना के बाद प्रारम्भ हुई जिले में यह अपने ढंग का एक अनोखा विवाह था। ग्रामीणों पर बहुत अच्छा असर पड़ा है।

जिले के प्रसिद्ध कांग्रेसी श्री डनिया पति शुक्ल की मृत्यु हृदय की गति रुक जाने से हो गई। आप कटु सत्यवादी अपने ध्येय के अकेले थे। आपकी मृत्यु से तहसील का एक कोना ही सून हो गया।

होली का त्योहार जिले में बड़ी शान्ति से बीता। ग्राम सभाओं में नये ढग से होली का त्योहार मनाया।

—संवाददाता

हरिजन भाइयों के सामाजिक तथा आर्थिक स्तर को ऊँचा उठाने और उनमें स्वालम्बन, शिक्षा, देश-प्रेम लाने के उपायों और साधनों

बस्ती में—आगामी ९, १० अप्रैल १९५० ई० को उरका बाजार जो हरिजनों का एक बड़ा केन्द्रीय स्थान है, जिला हरिजन सम्मेल का आयोजन किया गया है। माननीय चौधरी गिरधारी लाल सचिव आबकारी तथा जेल श्रीगोविन्द सहाय सभा सचिव, श्री बाबा राघवदास, श्री बाबू मथुरियादीन जी एम० एज० ए० तथा भूतपूर्व सदस्य भारतीय पार्लियामेंट, तथा श्री चेतराम जी एम० एल० ए० आदि नेता पधार रहे है।

—संवाददाता

कानपुर—से कुमार साहित्यिक परिचय ग्रंथ निकल रहा है। अभी तक कुमार साहित्यिकों को हिन्दी जगत में कोई स्थान नहीं दिया गया है और न पत्रकार ही कुमारों की इस प्रवृत्ति में प्रोत्साहन दे रहे हैं, अतएव इन कोमल कलियों के विकास और गणना का ध्यान रखते हुये हम अखिल भारतीय कुमार साहित्य मंडल के अंतर्गत कुमार तथा बहनों की रचनाओं का एक संग्रह उनके सूक्ष्म परिचय सहित प्रकाशित कर रहे हैं। अतः साहित्यिक कुमार तथा बहनों को शीघ्र ही अपनी सुन्दर कृतियाँ निम्न पते पर भेज देना चाहिए। श्रीगमःद्विवेदी "मधुकर" प्रधान मंत्री, अ० भा० कु० हिन्दी साहित्य मंडल पुखरायां (कानपुर)

सम्पादक के नाम चिट्ठियां

हिन्दी साहित्य सम्मेलन

राजधानी में गत बारह महीनों से अखिल भारतीय हिन्दी सम्मेलन का जो कार्यालय चल रहा था अब उसे ३. फेनिंग लेन । नई दिल्ली में स्थापित कर दिया गया है । इसका प्रबन्ध करने के लिये प्रमुख व्यक्तियों की एक समिति बनाई गई है जिसके सदस्य सेठ गोविन्ददास, श्री वियोगी हरि, श्री मौलिचन्द्र शर्मा, श्री बालकृष्ण शर्मा नवीन, श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति श्री आनन्द कौसल्यायन श्री वासुदेव शरण अग्रवाल, श्रीयुक्त श्री नरायण चतुर्वेदी श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी, श्री राहुल सांकृत्यायन और श्री बलभद्र प्रसाद मिश्र हैं । भदन्त आनन्द कौसल्यायन को नई दिल्ली कार्यालय के संचालन का भार सौंपा गया है ।

कार्यालय की ओर से राजधानी में हिन्दी के अनुकूल वातावरण बनाने संसद और सरकार के सदस्यों को हिन्दी सम्बन्धी बातों की जानकारी कराने विद्यार्थियों तथा नवयुवकों में हिन्दी प्रेम उत्पन्न करने और हिन्दी पत्रों को हिन्दी सम्बन्ध समाचार देने का प्रयत्न किया जायगा यह कार्यालय हिन्दी के सम्बन्ध में विविध प्रकार की सूचना का केन्द्र भी होगा जिससे हिन्दी जिज्ञासुओं को हिन्दी सम्बन्ध सभी आवश्यक सूचना मिल सके । यह हिन्दी प्रेमियों और हिन्दी सेवियों की राजधानी में केन्द्र का काम करेगा और उसके साथ सामायिक पत्रों का वाचनालय और सम्मेलन तथा अन्य प्रकाशकों के प्रकाशनों का एक संग्रह भी रहेगा जिससे जनता तथा राजधानी में आने वाले विदेशी यात्री लाभ उठा सकेंगे ।

श्री हनुमानजी संकटमोचन की जयन्ती

श्रीरामचरित मानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदासजी को दर्शन देने के लिए श्रीरामचन्द्र-चरणानुरक्त श्री हनुमानजी संकटमोचन का जो आविर्भाव हुआ था उसे चैत्र पूर्णमासी को चार सौ वर्ष पूरे हो जायेंगे, अतएव उस अवसर पर श्रीहनुमानजी संकटमोचन कीचतुर्थ शताब्दि जयन्ती के साथ ही सार्व भौम श्रीरामायण सम्मेलन की रजत जयन्ती का भी महोत्सव करने का आयोजन किया गया है ।

चैत्र पूर्णिमा को चंद्रग्रहण का भी योग है जिसमें काशी में गंगास्नान का अवर्णनीय माहात्म्य है । संपूर्ण महोत्सव के सभापति का आसन श्री अनन्त कोटि ब्रह्मांड नायक श्रीरामजी सुशोभित करेंगे और सम्मेलन का उद्‌घाटन श्रीमान् पं० दिनेशदत्तझा जी महराज करेंगे ।

सचित्र साप्ताहिक 'देशदूत'

संवाददाताओं से निवेदन

संयुक्तप्रांत, मध्यप्रांत, मध्य भारत तथा राजपूताने के संवाद भेजनेवालों से निवेदन है कि वह अपने संवाद संक्षिप्तरूप में ही भेजने का कष्ट करें ।

संपादक 'देशदूत'

क्या आप जानती हैं कि सुन्दरी अलोका देवी अपनी त्वचा को मनोहर रखने के लिये लक्स टॉयलेट साबुन को ही क्यों पसंद करती है?
आप यह कहती हैं:—"मेरी त्वचा को मुलायम और मनोहर रखने का एक सहज साधन लक्स टॉयलेट साबुन का दैनिक उपयोग है। और यह मेरी त्वचा को सुन्दर और कोमल रखता है," यह सुन्दर चित्र तारिका कहती है "लक्स टॉयलेट साबुन की मोहक सुगन्ध मुझे बहुत पसन्द है।"
LUX
यह सफ़ेद और विशुद्ध साबुन, जिस की सुगन्ध मनोहर है, आप की त्वचा को भी मनोहर बना रखेगा!
LTS. 239-173 HI
चित्र तारिकाओं का सौन्दर्य साबुन

Registered No. A—295

प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल। इण्डियन प्रेस, प्रयाग में ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल द्वारा मुद्रित तथा 'देशदूत' कार्यालय प्रयाग, द्वारा प्रकाशित।

देशदूत

DESHDOOT
HINDI WEEKLY
Annual Price Rs 7-8-0
Per Copy Annas Two.
वार्षिक मूल्य ७॥)
एक प्रति का =)

...र, २ अप्रैल, १९५०
...day 2nd April, 1950

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

सामयिक लेख, कहानी, रंगमंच, आलोचना आदि इस अंक में पढ़िये

अनेक विषयों की बढ़िया पुस्तकें

हिन्दी भाषा का संक्षिप्त इतिहास

यह राय बहादुर डाक्टर श्यामसुन्दर दास के इसी नाम के ग्रन्थ का सारांश है। विषय नाम से ही प्रकट है। अपनी भाषा का इतिहास संक्षेप में पढ़ने के लिए इसे लीजिए। अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य १) एक रुपया।

आदर्श भूमि अथवा चित्तौर

चित्तौर राजपूतों के त्याग के कारण तीर्थ बन गया है। भारत के गौरव स्वरूप उसी चित्तौर का ओजपूर्ण भाषा में लिखा गया इतिहास पढ़कर अपनी जानकारी बढ़ाइए। मूल्य २) दो रुपये।

पंडित जी

नामी उपन्यास लेखक शरद बाबू के इस उपन्यास में कुलीनता, उच्च शिक्षा, द्विज और द्विजेतर, गाँव की भलाई और अपनी उन्नति, नई शिक्षा और मिथ्या अभिमान आदि के सम्बन्ध में बहुत ही विशद विवेचना की गई है। मूल्य २) दो रुपये।

मैक्सिम गोर्की

रूस के इस विश्रुत कलाकार के परिचय के लिए इस पुस्तक को पढ़िए। है तो यह जीवन चरित, पर इसे पढ़ने में कहानी का आनन्द मिलेगा। इसकी जीवनचर्या का वर्णन पढ़कर पाठक जान सकेंगे कि इस कलाकार को किन विकट कठिनाइयों में होकर गुजरना पड़ा था। छोटे टाइपों में छपी लगभग ढाई सौ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य ३) तीन रुपये।

वसन्त

युद्ध और शान्ति

यह संसार के श्रेष्ठ उपन्यास लेखक और विचारक काउण्ट लियो टाल्सटाय के प्रसिद्ध रूसी उपन्यास 'वार एण्ड पीस' का हिन्दी रूपान्तर है। यह ऐतिहासिक उपन्यास तब लिखा गया था जब लेखक की शैली परिमार्जित हो गई थी और उन्हें अन्तर्द्वन्द्व से छुटकारा मिल कर शान्ति मिल गई थी। लेखक ने उसमें मानव-जीवन का सम्पूर्ण चित्र, अपने समय के रूस की तस्वीर और राष्ट्रों की खींचतान बड़ी खूबी से चित्रित की है — जीवन और मृत्यु के रहस्य का भी उद्घाटन किया है। लगभग पौने सात सौ पृष्ठों की सजिल्द प्रति का मूल्य ५।–) पाँच रुपये पाँच आने

कुलबोरन

श्री चन्द्रभूषण वैश्य ने इस उपन्यास को सत्य घटना के आधार पर लिखा है। समाज की अन्ध परम्पराओं से देश की जो हानि हो रही है उसका इसमें सजीव चित्र है। सुधार करनेवाले को रूढ़ियों के अन्ध भक्तों से जैसा लोहा लेना पड़ता है उसका नमूना उपन्यास का नायक, 'कुलबोरन' है। अच्छे कागज पर छपी सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥ दो रुपये आठ आने।

अल्पता की समस्या

'साम्प्रदायिक भेद पर विशेष अधिकार माँगना और ऊलजलूल दावे पेश करना तथा उन माँगों के पूरा न होने पर देशद्रोह के लिए कमर कस लेना किसी देश-भक्त का काम नहीं।' इसी पर दृष्टि रख कर पंडित वेंकटेश नरायण तिवारी एम० ए० ने तथ्यों और आँकड़ों के साथ पुस्तक में उलझन को समझाया है। पाकिस्तान बन जाने पर भी जिनके मन में ऊपर लिखी भावना है उनके समाधान के लिए इसमें सप्रमाण उत्तर है। मूल्य २) दो रुपये।

ईरान

महा पंडित राहुल सांकृत्यायन ने इस पुस्तक में अपनी ईरान-यात्रा का विशद वर्णन किया है। इसके पढ़ने से ईरान की बहुत-सी जानकारी पाठकों को हो जायगी। भ्रमण-वर्णन कहानी का सा आनन्द देगा। मूल्य १॥≡) एक रुपया ग्यारह आने।

मध्य प्रदेश और बरार का इतिहास

इस अत्यन्त प्रामाणिक इतिहास में उक्त प्रदेश से सम्बन्ध रखनेवाली सभी प्राचीन और अर्वाचीन महत्त्वपूर्ण बातें आ गई हैं। मूल्य २।–) दो रुपये पाँच आने।

सुन्दरी-सुबोध

इस पुस्तक में पति-पत्नी को सन्तुष्ट रखने के उपाय इस ढंग से बताये गये हैं कि कहानी का आनन्द देते हैं। इसके सिवा सास-पतोहू, देवरानी-जेठानी, ननद-भौजाई, माता-पुत्र आदि स्त्री के दूसरे सम्बन्धों को भी ठीक रखने के उपाय बताये गये हैं। पुरुषों के लिए भी बहुमूल्य अनुभूत बातें दी गई हैं। इनको उपयोग में लाने से गृहस्थी सुखमय हो सकती है। ३०० पृष्ठों से अधिक की सजिल्द प्रति का मूल्य २।) दो रुपये आठ आने।

आदर्श महिला

इस पुस्तक में सीता, सावित्री, दमयन्ती, शैव्या और चिन्ता आदि पाँच प्रसिद्ध देवियों की जीवन-घटनाओं का सजीव सचित्र वर्णन दिया गया है। इसको पढ़ने में कहानी का आनन्द मिलेगा और शिक्षा सहज ही। मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

कथा सरित्सागर

इस पुस्तक में आदि से [illegible] तक एक से एक बढ़िया कहानियाँ [illegible] जैसा इसका नाम है, यह क[illegible] का समुद्र है। प्रत्येक कथा के [illegible] एक न एक दृष्टान्त है। [illegible] सजिल्द प्रति का २॥≡) मू[illegible] रुपये ग्यारह आने।

देव दर्शन

इसमें व्रजभाषा के प्रख्या[illegible] देव की जीवनी और उनके [illegible] काव्यों का आलोचनात्मक [illegible] दिया गया है। व्रज काव्य के [illegible] अतिरिक्त साहित्य के विद्यार्थि[illegible] लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त [illegible] है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य [illegible] एक रुपया पाँच आने।

बन्दना

यह श्रीमती चन्द्रमुखी ओझा [illegible] के ५२ मधुर गीतों का सं[illegible] आरम्भ में श्री सूर्यकान्त [illegible] 'निराला' की लिखी प्रश[illegible] अच्छे कागज पर छपी [illegible] पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

तुलसी के चार दल

(प्रथम और द्वितीय [illegible] गोस्वामी तुलसीदास जी के [illegible] नहछू, बरवै रामायण, पार्वती [illegible] और जानकी मंगल का [illegible] नात्मक परिचय तथा इन चारों [illegible] की अध्ययनपूर्ण टीका। इसे [illegible] की कुंजी समझिए। मूल्य प्र[illegible] का ३) रुपये, द्वितीय भाग का [illegible] दो रुपये ग्यारह आने।

ग्रह-नक्षत्र

इस पुस्तक में ग्रहों और [illegible] आदि से सम्बन्ध रखने वाली [illegible] सभी आवश्यक बातों का [illegible] वर्णन सरल भाषा में है। [illegible] तीन रुपये।

हार या जीत

इस उपन्यास में लेख[illegible] ब्रजेश्वर वर्मा एम० ए०, डी[illegible] ने एक देहाती लुहार की [illegible] बेटी को घटनाक्रम से, अन्त[illegible] में, देहात से महराजगंज [illegible] पृथाकुंवरि के आश्रय में पहुँ[illegible] है। वहाँ रानी की कृपा [illegible] लड़की ने विद्या पढ़ी। फिर [illegible] गुणों का विकास हुआ जिस[illegible] सभ्य होकर सम्मान पाता है [illegible] असहयोग आन्दोलन में स[illegible] लिया और अन्त में कलक[illegible] नौकरी कर ली। कई पुस्तकें [illegible] विदेश-यात्रा के बाद रानी [illegible] की प्रार्थना पर उससे विवाह [illegible] उपन्यास की घटनावली, [illegible] संघर्ष और चन्दा की [illegible] दृढ़ता सराहने योग्य है। [illegible] दो रुपये।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

र्ष १२, संख्या २८] [रविवार, २ अप्रैल १९५०

ढ़ी, सीधी, खरी-मजेदार

प्रजातंत्र चीन के नये प्रेसिडट जनरल च्यांगकाई शेक और मैडम च्यांगकाई शेक अमरीका को डालरों की सहायता से संयुक्त मोर्चा बना रहे हैं।

काश्मीर के प्रधान मन्त्री शेख ...ल्ला कहते हैं कि काश्मीर में साम्प्र... उन्माद का जहर हर्गिज न फैलने ...जायगा। राष्ट्रीय दृष्टि से बात तो ...है लेकिन आजाद काश्मीर की ...और पड़ोसी पाकिस्तान तो अपना ...जारी ही रखेंगे। न सौ गोती और ...पड़ोसी।

❀ ❀ ❀

...साहब कहते हैं कि महात्मा ...ने भाईचारे के दीप को ...किया था, वह काश्मीर में ...जायेगा। बात यह भी सही है ...रांची में महात्मा गांधी की ...मूर्ति पाकिस्तानियों ने जमीन ...दी थी। देखना है, पाकिस्तानी ...में कितना भाईचारा बनाये ...है।

❀ ❀ ❀

पूर्वी बंगाल के गवर्नर सर फिरोज ...बनाये गये हैं। आगाह इसी से ...हो रहा है। पूर्वी बंगाल की ...आये दिन जो दिखाई पड़ती है, ...ता है शीघ्र ही उसकी दशा ...की तरह न दिखाई देने लगे। ...का आगमन भविष्य का ...है।

❀ ❀

कांग्रेस-प्रेसिडेंट डाक्टर पट्टाभि सीतारमैया आंध्र के विभाजन के पक्षपाती है।

मिस्टर चर्चिल तीसरा महायुद्ध अनिवार्य नहीं समझते। बात तो ठीक है। यदि चर्चिल साहब इस बार ब्रिटिश चुनाव में जीत जाते तो कुछ होता भी लेकिन जीत हुई मजदूर सरकार की। तीसरा महायुद्ध हो तो कैसे हो।

❀ ❀ ❀

१ अप्रैल १९५० से बंबई में पूर्ण मद्य निषेध का कानून लागू होगा। आश्चर्य है कि बम्बई ऐसे शहर में जहाँ ९० प्रतिशत लोग बिना पान के रह ही नहीं सकते मद्य-निषेध का काम कैसे सफल होगा? अपने राम की राय में लोगों को नीरा पीना प्रारम्भ कर देना चाहिये क्योंकि बम्बई में ताड़ के वृक्षों की अधिकता है। फिलहाल यह रास्ता आसान है।

❀ ❀ ❀

अमरीका साम्यवाद का सामना करने के लिये १७ करोड़ डालर की सहायता सदूर पूर्व को देने के लिये कटिबद्ध हो गया है। प्रस्ताव बहुत सुंदर है, अपने राभ की समझ में मार्शल च्यांग काई शेक को कोषाध्यक्ष नियुक्त कर देना चाहिये। चीन तो हाथ से चला ही गया, लाखों डालरों पर पानी फिर गया, १७ करोड़ डालर की नौबत भी कुछ इसी तरह की होने वाली है।

* * *

लन्दन के पत्र में छपा है कि भारत की अपेक्षा पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों का जीवन अधिक खतरे में है। बात तो ठीक है लेकिन भारत के नेता इस कटुसत्य को मानने को खुल्लमखुल्ला तैयार नहीं हैं। राष्ट्रीय दृष्टि से इस सत्य को स्वीकार करना अनुचित है। देखना है कब तक यह चुप्पी से गाड़ी चलती रहती है।

❀ ❀ ❀

अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के अधिवेशन में बड़े जोरों से तकरीर की गई कि व्यापारी सत्य का आचरण करें और पुराने आदर्शों को अपनायें। उचित तो यही है किन्तु यह सतयुग नहीं कलियुग है। कलियुग में यदि सत्य का आचरण किया जाये तो मानो घोर कलियुग का अपमान किया जायेगा। जब सतयुग आयेगा तो सत्य का आचरण अपने आप उत्पन्न हो जायेगा। आज के चोर बाजार में कुछ कमा लिया जाये तो अच्छा ही है, क्योंकि ऐसा समय बार बार नहीं आता। आदर्श और सत्य की परंपरा तो प्राचीन है ही लेकिन चोर बाजारी तो बहतीगंगा है, इसलिये इस वक्त पेटभर कर पुण्य कमा लेना ही श्रेयस्कर है।

❀ ❀ ❀

पूर्वी बंगाल के ६००० शरणार्थी विहार और उड़ीसा भेजे गये हैं आखिर बेचारे शरणार्थी कहाँ जायें? पूर्वी बंगाल से निकाले जायेंगे तो विहार उड़ीसा में आयेंगे, सीमाप्रांत से हटाये जायेंगे तो पंजाब आयेंगे। पाकिस्तान अपना काम करे और भारत अपना।

❀ ❀ ❀

मध्य प्रांत में तपेदिक की बीमारी भीषण रूप धरण करती जा रही है। हर वर्ष प्रायः समस्त प्रांत में २ लाख आदमी इस बीमारी से ग्रसित होते हैं। केवल नागपुर शहर में ही हर वर्ष ६००० व्यक्ति इससे बीमार पड़ते हैं और प्रायः १००० व्यक्ति मर जाते हैं। नागपुर के प्रसिद्ध तपेदिक विशेषज्ञ डा० डेविड का अनुमान है कि भारतवर्ष में हर मिनिट में एक आदमी तापेदिक से मर जाता है। नागपुर के करीब ८०० मिल-मजदूर भी इस रोग से पीड़ित हैं। प्रांतीय सरकार की ओर से नागपुर में इसके इलाज के लिये केवल २० बिस्तों का प्रबन्ध किया गया है आपका अंदाज है कि भारतवर्ष में हर वर्ष प्रायः ३० लाख आदमी तपेदिक से बीमार है आपके मतानुसार तापेदिक सबसे भयानक बीमारी है जिसका कि ज्ञान मरीज को जल्द नहीं हो पाता लेकिन यदि, इसका इलाज शीघ्र शुरू कर दिया जाय तो शीघ्र आरम भी हो जाता है।

...धानमंत्री पंडित जवाहर नेहरु स्वयंसेवकों को कसरत करा रहे हैं।

आत्मचिंतन : एक अध्ययन

तत्वज्ञान की चर्चा करने पर भारत के साथ रोम का नाम भी हमारे सामने आजाता है। इन दोनों ही देशों ने संसार को अपने स्वर्णसूत्रों का महान् आशीर्वाद प्रदान किया है। यह सच है कि भारत ने रोम की अपेक्षा ज्ञानदान की परिपाटी प्राचीनकाल से थी और उसकी अध्यात्मक चिन्तन की परम्परा और प्रणाली इतनी पुरानी है कि जिसकी इतिहासकार आज तक सीमा ही नहीं निर्धारित कर सके हैं; किन्तु रोम की अध्यात्मपरम्परा और प्रणाली भी नई है और उस पर बहु अंशों तक भारतीयता की छाप है।

भारत की तरह रोम के दार्शनिकों में भी अमीर और फकीर सभी हुए हैं। भारत में तो विदेह जनक ने राजा हो कर भी अध्यात्मिक परम्परा का पूर्ण निर्वाह किया था और कलिंग विजय के पश्चात् सम्राट अशोक भी उस पथ के पथिक बने थे दोनों ही विभूतियाँ संसार को यह दिखा चुकी है कि आत्म-साधन के मार्ग का अनुगामी बनाना होता है। रोम-सम्राट ऑरलियस ने नये दार्शनिक तत्वों का अवगाहन न करते हुए भी आत्मचिन्तन और आचरण द्वारा यह सिद्ध कर दिया था कि सारा संसार एक ही आध्यात्मिक धागे में बाँधा हुआ है और उसकी एकात्मक निर्विवाद है। सम्राट ऑरेलियस ने अपने आत्मचिन्तन के जो सूत्र जीवन पर घटित किये थे उन्हें उन्होंने टिप्पणियों के रूप में लिपिबद्ध कर लिया था; किन्तु यह आध्यात्मिक निधि बहुत काल तक मानव दृष्टि से ओझल हो रही। ऑरेलियस के देहांत के कई शताब्दियां बाद उनके आत्म-चिन्तन के स्वर्णसूत्र उनकी हस्तलिखित प्रति के रूप में प्राप्त किये जा सके और तब जाकर संसार ने उनका प्रकाश देखा। मार्कस ऑरेलियस को रोम का आदर्श सम्राट बनाने वाले आत्मचिन्तन के सूत्र अंग्रेजी भाषा में तो बहुत पहले छप गये थे, पर भारतवासियों को सर्व-प्रथम उनका प्रकाश दिखाया। श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य ने, जबकि १९४६ ई० में उन्होंने उसका तमिल-अनुवाद करके प्रकाशित कराया। अब उसी तमिल पुस्तक का अनुवाद राजा जी की सुपुत्री श्रीमती लक्ष्मी देवदास गांधी ने किया है और उसे हिन्दुस्तान टाइम्स, नई दिल्ली, ने 'आत्मचिन्तन के नाम से सुन्दर रूप में प्रकाशित किया है। इस प्रकार पुत्री ने विख्यात पिता के धवल यश को और भी विमलतर बनाने की भारतीय परम्परा का निर्वाह किया है।

पुस्तक के समुद्रण की प्रशंसा करने के बदले हम आत्मचिन्तन की इस पिटारी से स्वर्णसूत्रों की कुछ बानगी दिखाते हैं:—

"...अगर मेरे साथ कोई दुर्व्यवहार करे तो भी मै मानता हूँ कि वह आदमी मेरा कोई आत्मजन है। शायद शारीरिक सम्बन्ध किसी प्रकार का न हो तो भी आध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाय तो वह-मेरा भाई-बन्धु है। परमात्मा का ही अंश हम दोनों के अन्तर में विद्यमान है।"

इन पंक्तियों से ऐसा मालूम होता है कि स्वयं गांधी जी दो हजार वर्ष से भी पूर्व रोम-सम्राट ऑरेलियस के रूप में बोल गये हों।

जिस देश, जाति और वर्ग-भेद के विरुद्ध आज

आवाजें ऊंची की जारही हैं उनको दूर कर संसार की एकता का अनुभव करानेवाला रूप भी रोम-सम्राट् के शब्दों में सुनिए :—

"तुम्हें सदा इस बात का स्मरण रहे कि बहुरूपी होने पर भी वास्तव में ससार एक ही है। व्यक्ति और समष्टि के लक्षण तथा दोनों के बीच जो सम्बन्ध है उसे जानने और समझने का प्रयत्न करों। उस सम्बन्ध को बिगाड़ना नहीं चाहिए।"

इसी प्रकार उपनिषद् और गीता में भरा हुआ ज्ञान भी जाने अथवा अनजाने रूप में आरेलियस की लेखनी से निःसृत हुआ है :—

"नाना प्रकार के विषयों में, जिनसे सच्चा सुख कदापि मिलनेवाला नहीं, मन न लगाओ। दूसरों के मन में क्या है इसे जानने को उलझन में न पड़ों। तुम तो अपनी ही अन्तरात्मा को देखो।..."

वास्तव में इस छोटी-सी-९३पृष्ठकी—पुस्तिका में जो १७८ स्वर्णसूत्र भरे गयें हैं वे गागर में सागर के समान है। कितने ही छोटे-छोटे वाक्य इतने संक्षिप्त और ज्ञान से पूर्ण हैं कि उनकी व्याख्या करने बैठें तो चिन्तन और मनन की प्रचुर सामग्री तैयार होजाय। उनमें से कुछ इस प्रकार है :—

"बुराई का बदला इसीमें है कि हम वैसा न करें जैसा कि बुराई करने-वाले ने किया।

"...कुछ लोग दूसरे प्रदेशों के मनुष्यों पर अपना अधिकार जमा कर अपने को महान् पराक्रमी मानते हैं। सच्चे ज्ञानी की दृष्टि में ये सब एकसमान पाप हैं।

स्मरण रहे साम्राज्यवाद विरोधी ये बातें कोई आजकल के राजनीतिज्ञ ने नहीं, रोम के महान् साम्राज्य के दार्श-सम्राट ऑरेलियस ने दो हजार वर्ष पूर्व कही थी।

"रे मन, तू पूर्ण आनन्द कब पायेगा? मुझे स्थित-प्रज्ञता कब प्राप्त होगी। सर्वव्यापक प्रेम का अनुभव मुझे कब होगा? तू तृष्णारहित कब बनेगा? तेरी बन्धु-बान्धवों और धन-दौलत की चाह कब मिटेगी? परमेश्वर की शक्ति को तू कब पहचानेगा?"

"कार्य और कारण की जांच करो। न्याय और सत्य से न डिगों।

पुस्तक उपनिषद् और गीता के समान ही नित्य पाठोपयोगी है। इसमें मन को शान्त सुस्थिर और आनन्दपूर्ण बनाने के सुगम उपाय बताये गये है, और वह मार्ग दिखाया गया है जिसपर चलकर एक सम्राट भी जनसामान्य की कोटि म आकर आत्मविकास का एक विद्यार्थी बनने को बाध्य होता है।

रोम सम्राट की यह छोटी-सी सारगर्भ कृति, जिसका अनुवाद एक भारतीय महिला की लेखनी से हुआ है, मानो रत्नों की लड़ी है, जिसमें हीरा, मोती, माणिक और प्रवाल सभी कुछ हैं। किन्तु इन सूत्रों की परख तो वे जौहरी ही कर सकेंगे जो रत्नपारखी है—जो आत्मतत्त्व को पहचानते और उनकी कद्र करते हैं। ऐसे लोग केवल एक रुपये में हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस का सुन्दर प्रकाशन पाकर अवश्य ही लाभ में रहेंगे, क्योंकि इन स्वर्णसूत्रों का तो संसार में कोई मूल्य नहीं लगा सकता।

सम्मेलन की परीक्षा नीति

इधर कई वर्षों से देखने में आ रहा है कि हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन परीक्षाओं के पीछे जी तोड़कर पड़ा हुआ है। अनेक केन्द्र खोले जाते हैं और अधिक विषयों की परीक्षाएँ प्रतिवर्ष सम्मेलन-द्वारा बृद्धि पाती जाती हैं। शुल्क-संग्रह करने की मनोवृत्ति तो इतनी बढ़ी-चढ़ी है कि जिसका कुछ कहना ही नहीं है। प्रश्नपत्रों में प्रतिवर्ष छपाई संबंधी अनेक त्रुटियाँ रह जाती हैं जिनका प्रश्नपत्रों के छप जाने पर भी शुद्धीकरण नहीं किया जाता। उत्तर-पुस्तिकाओं की पुनर्निरीक्षण प्रणाली अब अंकानुसंधान में परिवर्तित हो गई है परन्तु कहा नहीं जा सकता कि इस नाटकाभिनयन में क्या रहस्य है, अंकानुसंधान का प्रलोभन देने से सैकड़ों परीक्षार्थियों को भ्रम में पड़ना पड़ता है पर लाभ कितनों का किया जाता है इसे सम्मेलन के सेवक भी जानते हैं। विवरण-पत्रिका में इस विषय का कोई स्पष्टीकरण नहीं किया गया है कि ५। अङ्क की पूर्ति करने की क्या व्यवस्था है। उत्तरों को भी देखा जाता है या कोरी कापियाँ ही उलट कर रख दी जाती हैं!

परीक्षार्थियों के परीक्षा संबंधी पत्र व्यवहार का उत्तर तो भाग्य से ही दो-चार मास में प्राप्त हो जाय तो गनीमत है। मनिआर्डर की रसीदें दो दो मास तक वापस होकर रुपये प्रेषित-कर्ताओं पास नहीं लौटती। प्रशंसा पत्र या उ पत्र भी दो दो वर्षों तक प्रतीक्षा अनन्तर प्राप्त होते हैं। प्रमाणपत्रों लिए भेजे गए डाक-व्यय की सूचना अन्य संतोषप्रद कार्यवाही का प्रथम तो प्राप्त ही नहीं होता, यदि कृपा हुई तो अधूरा उत्तर मिलता और आगे लिखा-पढी करना हो तो, दिनों, पत्र-क्रमांक इतनी असावधानी लिखा जाता है कि स्पष्ट समझ सहसा असंभव है।

पाठ्य-ग्रन्थों की भी शोचनीय होती है। प्राचीन और नवीन ले की पुस्तकें तो ग्रन्थ सूची में रहतीं परन्तु कई स्थानों पर पत्र-व्यवहार लेने के पश्चात् भी पुस्तकें प्राप्त होतीं। कभी कभी पुस्तकें प्राप्त न पर उनके स्थान पर दूसरी पुस्तकें को बाध्य होना पड़ता है ये पु अंग्रेजी छात्रों के लाभ को दृष्टिको रखकर लिखी जाती हैं जिससे दे छात्रों को जो केवल हिन्दी राष्ट्र भाषा ही प्रेमी होते हैं उन्हें समुचित लाभ नहीं होता। सम्मेलन कोर्स तो ब जाता है परन्तु पाठ्य पुस्तकों की व्यवस्था नहीं करता, यह परीक्षार्थियों के लिए दुस्सहनीय है।

परीक्षाफल प्रकट करने में ४५ लग जाते हैं। तिस पर भी पहिले को परीक्षाफल न मिलकर शायद प्रलोभन से पत्र-सम्पादकों को बांटा हैं। सम्पादक भी भले जमाने के कहां, जो उचित समय, शैली और स्था से यह कार्य सुलभ कर दें। हफ्तों तक परीक्षार्थियों को रिजल्ट देने की उदारता दिखा पाते हैं।

परीक्षा-केन्द्रों पर भी समयोचित वस्था नहीं होने पाती। मौखिक के लिये परीक्षार्थियों को परीक्षक के नखरे और अप्रिय शब्द, देखने के अवसर आते रहते हैं। कभी-कभी ऐसी दशा में मनमानी और घर का प्रभाव भी खूब हो जाता पुस्तकावलोकन-कर्ताओं का निर्ण ब्रह्म-विधान ही रहता है। योग्य अयोग्य बना देना और वह भी कुछ अंकों की न्यूनता में—इनके बाएं का खेल रहता है।

परीक्षा सम्बन्धी कतिपय उपयु कठिनाइयों का वर्णन करने का ध्येय संस्था को न तो निरुपयोगी का है और न दोष दर्शन कराने की ही इच्छा है। हम यह करते हैं कि परीक्षा कार्य अनुदिन पाता जा रहा है ऐसी दशा में आलोचना का उद्देश्य सम्मेलन राष्ट्र-भाषा हिन्दी प्रचार नीति की करना तो कदापि हो ही नहीं हमारा निवेदन इतना ही है कि

(शेष पृष्ठ १३ पर)

वर्णमाला मनुष्य के इतिहास की कुंजी है

आज की पीढ़ी को, जिसने भारत की आधुनिक सीमा स्वीकार की, भावी संतति के सामने गम्भीर लांछना मिलेगी

लेखक, डाक्टर रघुवीर एम० ए०, डी० लिट्

मनुष्य और पशु में कई प्रकार से भेद किया जा सकता है। इनमें सब से [illegible] मनुष्य की भाषा है, जिसके द्वारा [illegible] अपने अनुभव का ज्ञान दूसरों को करा सकता है। गाय अपने बच्चे को किसी [illegible] से सावधान नहीं कर सकती [illegible] मनुष्य समाज में माता अपने शिशु [illegible] सावधान कर सकती है। इतना ही [illegible] मनुष्य अपने अनुभवों को लिपि [illegible] कर सकता है और इस प्रकार उन्हें [illegible] गुणा कर आनेवाली अनेक पीढ़ियों [illegible] लिए सुरक्षित रख सकता है। मनुष्य [illegible] आविष्कृत लिपि अथवा लेखन [illegible] के द्वारा ही यह सब सम्भव हो [illegible] है। पशु के लिये यह असंभव है। [illegible] लिपि का इतिहास बड़ा मनोरंजक [illegible] आकर्षक है। अमरीका में तो [illegible] के अध्ययन की इतनी उन्नति [illegible] यह विज्ञान का एक विषय बन [illegible] उसे अल्फाबेटालोजी (वर्णमाला [illegible]) की संज्ञा दी गई है।

[illegible]री गोलार्ध की प्रमुख नदियों [illegible] में लेखन का पोषण हुआ। [illegible] नदी की घाटी में स्फानाकार [illegible] अथवा स्फान लिपि का प्रचलन [illegible] मिश्र में चित्र-लिपि प्रचलित थी जो [illegible] चलकर शनैः-शनै सुबोध-चित्र- [illegible] में परिणत होगई। रोसेटा शिला- [illegible] (ज्वालामुखी से निकला हुआ [illegible] या गहरे हरे रंग का प्रसिद्ध शिला [illegible] जो नील नदी के ऐसेटा मुहाने पर [illegible] ई० में मिला था और जिस पर [illegible] चित्र और लोकलिपि तथा [illegible] लिपि तीनों लिपियों में लेख अंकित था) की सहायता से इस लिपि का पढ़ा जाना एक अद्वितीय सफलता है। यवन और लैटिन लिपियां सेमेतिक यहूदी और अरामिक लिपियों से निकली हैं। पूर्व में चीनियों की प्रतिभावचिह्ना लिपि है जिसमें आधारभूत अक्षर २१४ हैं।

मेक्सिको और मध्य अमेरिका में भी प्राचीन लिपियाँ प्रचलित थी जिनमें ऐजेटक और माया नाम की लिपियां विशेष उल्लेखनीय है। प्राचीन काल में भारतीयों की ब्रहमी से आरंभ होने वाली लिपियों ने सभ्यता-प्रसार के कार्य में बहुत बड़ा भाग लिया है। इनमें सबसे प्राचीन उपलब्ध लेख ईसापूर्व चौथी शती का है। बुद्ध कालीन लेख तो प्रसिद्ध ही हैं।

लिपी धर्म की सहचारिणी है। जहां धर्म जाता है वहां उसके साथ उसकी लिपि भी पहुंचती है। शैव और बौद्ध धर्म का प्रचार जहां-जहां हुआ भारतीय लिपि भी इन धर्मों के साथ उन देशों में पहुंच गई। मध्यजंबुमहाद्वीप (मध्य एशिया) में टेढ़ी गुप्त-लिपि पाई जाती है। आग्ने, कूचा और खोतान आदि लिपियां भारतीय लिपियों से ही ली गई हैं। मध्यजंबुद्वीप में चीनी भाषा भी टेढ़े गुप्त अक्षरों में ही लिखी जाती थी।

सातवीं शती में तिब्बत वासियों ने भारतीय लिपि से ही अपनी लिपि का निर्माण किया और उसे मंगोलिया की सीमा तक पहुँचाया। तिब्बती लिपि के इन अक्षरों को अनाम आदि भाषाओं ने भी अपनाया यहां तक कि चीनी भाषा भी इन्हीं अक्षरों में लिखी जाती रही है।

यह तो सब मानते हैं कि राजा के मन्त्री सम्मोट ने ही, जो तिब्बत राज्य का संस्थापक और उसकी राजधानी ल्हासा का निर्माता था, ६३९ ई० में तिब्बत लिपि का आविष्कार किया था। तिब्बत वासियों ने भारत से लिपि ही नहीं ली अपितु समस्त साहित्य भी भारत से ही प्राप्त किया था और इस साहित्य का अनुवाद करने के लिए वहां एक सर्वथा नवीन भाषा का आविष्कार किया गया था।

ईसा की पांचवीं शती का भारतीय लिपि का एक रूप जिसका नाम 'सिद्ध मात्रिका' है समस्त तिब्बत, मंगोलिया, कोरिया और जापान में प्रचलित है।

आज कल की प्रसिद्ध लिपियों के अतिरिक्त भारत में मनीपुरी, कैथी, महाजनी, मोड़, टाकरी, डोग्री और सिन्धी आदि अनेक अन्य लिपियां भी हैं। भारत से बाहर लंका में आज भी भारतीय लिपि का ही व्यवहार होता है। माल दीव द्वीपों में दिवेसाकुर नाम की मालदीवी लिपि प्रचलित है।

भारतीय चीन में भी कई लिपियों का प्रचलन रहा है। अकेले कम्बोज (कम्बोडिया) में ही १५ से अधिक लिपियां प्रचलित थीं। चामख्मेर, लाओ लू और आहोम के अक्षर इनके अतिरिक्त हैं।

आजकल सबसे अधिक प्रसिद्ध अक्षर श्यामी अथवा थाई अक्षर हैं।

सुमात्रा में पल्लव, देव नागरी, कवि और बातक से चार भारतीय लिपियाँ प्रचलित थीं। बातक के अतिरिक्त लाभपोंग और रेदजांग का भी कुछ प्रचलन था। सेलेवेस द्वीप में जिस लिपि का व्यवहार होता था वह भारतीय कवि लिपि से ली गई थी।

भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू

फिलिपाइन द्वीपों में तागालोग और मंगान नामक जातियों में प्रचलित प्राचीन लिपियों को स्पेन वासियों ने उसी प्रकार सर्वथा नष्ट कर दिया जैसा कि उन्होंने मैक्सिको और मध्य अमेरिका में किया था।

कोरिया में 'ओन मुन नाम की लिपि प्रचलित थी जिसका उद्भव स्थान भी भारत ही है।

भारत के बाहर प्रचलित भारतीय लिपियों की संख्या सौ से अधिक है। किन्तु उनके सम्बन्ध में अनुसन्धान-कार्य अभि तक ठीक ठीक नहीं हुआ। इसलिए आज भी वास्तव में यह एक अन्वेष्य भूल भुलैयां ही है।

लिपियों को एक देश से दूसरे देश में ले जाने का कार्य धर्म-प्रचार कों और व्यापारियों ने विशेष रूप से किया है।

१५५१ ई० में मागेलान ने फिलिपाइन द्वीपों का, जिनकी संख्या सात सहस्र से भी अधिक है, पता लगाया। उस समय इन द्वीपों के निवासियों की अपनी लिपि थी। स्पेन वासियों की विजय के १०० वर्ष पश्चात् देखा गया तो वहां की लिपि पर लैटिन अक्षर अपना अधिकार जमा चुके थे। इस संबन्ध में श्री एफ. गार्डनर की "फिलिपाइन इण्डिया स्टडीज़" नामक पुस्तक जो १९४३ में प्रकाशित हुई थी, पढ़नी चाहिए।

भारतीय वर्णमाला जिस-जिस वर्णमाला के सम्पर्क में आई प्रत्येक को इसने प्रभावित किया। इसके आधार पर चीन में भी ध्वनिव्यंजक वर्ण बनाए गए और उनका एक विशेष नाम रक्खा गया। जापान के "काना" अक्षरों का

(शेष पृष्ठ १२ पर)

हावड़ा (कलकत्ता) के पुल का दृश्य

यह विडम्बना !

इसमें श्वानवृत्ति काम कराती है या सिंहवृत्ति

लेखक, प्रोफेसर सुशील कुमार दिवाकर

यदि 'जाति' 'वर्ग या 'वर्ण' का कृतिम अथवा वाह्य लेविल क्रिया और बुद्धि द्वारा हटा दिया जावे तो मानव-मानव में ही क्या मनुष्य और अमनुष्य का भेद-परिहार होता है है। ठीक तरह से न समझा गया यह 'चिन्ह' हमारी अधोगति का निमित्त बन गया है। सुधार के स्थाम में असंस्कृत स्थान का सवेग प्रवेश हो रहा है। इसी भेद प्रणाली में आद्योपांत निमग्न व्यक्ति समाज का स्थायी हित नहीं देख पाता। और स्वार्थ शैतान से सहाय पा बलवान होता जाता है। समाज-स्वास्थ्य की जगह मिथ्या, क्षणिक संतोष के लिये मनुष्य कुछ भी करने को उतारू हो जाता है।

(२)

जब सुरक्षा परिषद में दक्षिणी अफ्रीका में भारतीयों की कष्ट कथाएँ पर विवेचित हुए, तब पाकिस्तानी और भारतीय प्रतिनिधि एक स्वर से न्याय की मांग मानवता के नाम पर करने लगे। स्मट्स और मलान की नीति बौखला उठी परन्तु सुरक्षा परिषद को इस अभियाचन की पृष्ट भूमि से अज्ञान न छा। यह संयुक्त मार्ग उस विभाजित देश था, जसा वर्ग या जाति की आड़ लेकर मानवता को किनारे रख क्षणिक उत्कर्ष की संभावना (१) से लाखों निर्रा हो और अबलों का हवन हो रहा है।

तब रोगी बरेल्का ने कहा "डाक्ट पहिले अपनी आँखे तो ठीक करो"

विद्यार्थी बोल उठ, "गुरु जी तो फिर आप क्यों सिगरेट और सुरापान करते है।"

पृकित इस विरोध पर अट्टहास करने लगी। और ऐसा लगने लगा है, मानों मानों युद्ध-मेघ-गर्जन अब सफल हुआ ही चाहती है। "देखो बापू की आत्मा बेचैन हो रामराज्य के स्वप्न की मिट्टी पलति देख रही है।"

(३)

हमने इतिहास में पड़ा था कि उस मदांध मुगल शासक ने इसलाम और कुरान के नाम पर निर्दोष हिन्दुओं का हत्याकांड मचाकर मनों जनेऊ तौला था और सनोष को एक विषैली सांस ली थी। वहीं हमने यह भी पढ़ा कि किसी पाशविक कल्पना से प्रेरित हो नलंदा का वह विश्व विख्यात पुस्तकालय अग्निसार किया गया जो २४ दिन तक निरंतर प्रज्वलित रहा आया। आत्मोत्थान करने वाली वैज्ञानिक कला का प्रतिमाओं और प्रस्तर प्रतिमालयों का नाश किया गया।

तो हम डरने लगे कि कहीं ऐसा न हो कि इतिहास की पुनरावृत्ति हो। और जिसमें डरते थे-सशंक थे, वह होकर ही रहा जब विश्व व्यापी युद्ध पुनः पुनः हो सकते हैं, तो फिर यह तो उस व्यापक घटना चक्र का एक अंधेरा-कोटा मात्र है।

(४)

जब श्रीमिक शासन ने एक स्वर्णिम प्रभात में दो दीर्घ शताब्दियों से परतत्र इस पुन्य भूमि की स्वतंत्रता के अधिकार की मान्यता देते हुए, ब्रिटिस संसद में ६ जुलाई १९४७ को सम्राट द्वारा भारत स्वतंत्रय की घोषणा की तो महानुभाव (१) चर्चिल ने उसे श्रीमिक शाषण की 'महान मूर्खता' की उपाधि से विभूषित किया। और बोल उठे "ब्रिटेन द्वारा अत्यत श्रम से निर्माणित पूर्व की दृढ़ प्राचीरि का नाश होगया···भारत में जो विनाश, हत्याकांड और वेदना की घड़ी आ उपस्थित हुई है वह इसी का परिमाण है।

चर्चिल आज अपनी सफलता पर विजय पा रहे हैं। उन्हें बधाई है। हम कैसे न कहैं कि उन्ही श्रीमनों द्वारा बोये हुए बीज हैं जो अब विष वृक्ष के रूप में तदनुकूल पुष्प और फलों से लदे लहरा रहे हैं।

मानो हमारी स्वतंत्रता का दूसरा अर्थ कष्ट तंत्र है। शायद यह स्वतंत्रता की देवी इतनी बलि से संतुष्ट नहीं हो पायी है। न जाने उस अघोरन की और कितनी हवस अवशेष है।

पवित्र ध्येय में यहां कांटा कैसा ?

प्रकृति का नियाम ही जो है ऐसा सुदरतम गुलाब अत्यंत नुकीले कांटेदार पौधे में खिलता है ही।

नेहरूजी ने इन्द्रप्रस्थ में एक ऐशियाई परिषद बुलवाई थी। तब सरोजिनी जीवित थी और राष्ट्र पिता भी।

बड़ी शान से भारत कोकिल कूंज़ उठी।

"हम चन्द्रमा को भी पकड़कर यहां लावेंगे और सर्व सुख सचार करेंगे' शक्ति पूर्ण भाषा में दार्शनिक राधाकृष्णन बोल उठे "भारत विश्व में फिर शान्ति और समता का अग्रदूत बनेगा।"

अभी अभी शान्ति निकेतन और सेवाग्राम में शांति वदियों के सम्मेलन हुए। कितनी आशा मैं विश्व को मिलीं। और जब हम स्वतत्र हुए थे तब विश्व कितना आनंद बिभोर हुआ था।

पर कौन जानता था कि हम संदिग्ध ज्वालामुखी के क्रेटर पर ही बैठकर चर्चा कर रहे थे। जिसका लक्ष के विष अतिरिक्त कुछ नहीं जानता।

मूंड़ मुड़ाये ओले गिरे कवि कि यह कविता सार्थक हुईः—

"सोमर सुआना सेइया, दुई टेढ़ीकी आस टेढ़ी फूट चटाक दे, सुअना चला निराश"

(५)

क्या क्या वायु-प्रसाद थे, मनसूबे थे। कैसे कैसे स्वप्न थे।

सोचा था 'अंग्रेजों के चंगुल से त्राण पाते ही आर्थिक विकास करेंगे, समाज सुधार करेंगे, शोषित श्रमिक और कृषिक का पतित ग्राम्य जीवन का उद्धार करेंगे। विश्वशांति की पिपासा शांत करेंगे।

सभी सदिच्छायों और महात्वकाक्षाओं का सहज ही शलिकारोहण हो गया। खिल भी न पाया कि विनाश की स्थिति में आ पड़ा कृष्ण सघन मेघाच्छादित पूर्णिमा का चांद स्वयं विवश है। हमारे विचार अपने आप ही में घुट गये।

एक नारकीय वेदना वाली स्थिति में हम पटक दिये गये।

(६)

जैन शास्त्र बोलते हैं, "यह दुस्वमा काल है।"

वेदों ने बतलाया "यह कलयुग है" अंतिम चरण है।

कयामत बोली, "कयामत नजदीक है"

किसी अन्य ने कहा, "प्रयत्न होता ही है।"

अरे ओ ! शास्त्रों और किताबों पर अविश्वास करने वालो, जरा आंख खोल कर देखो तो कि वे सच कहते है या झूठ

(७)

अंग्रेजी में कहा जाता है, "Man is an animal" मनुष्य एक पशु है।

विकासवादी डारविन ने कहा है, मनुष्य बन्दर की औलाद है" अंतर केवल मस्तिस्क का है। परन्तु जहाँ दिमाग का भी अनुपयोग अथवा द रुपयोग हो वहाँ तो वास्तव में वह पशु है। पशु में भी कुत्ता जो स्वबन्धु पर ही गुर्राता है और प्रहार करता है अकारण ही केवल स्वभाव वश !

कैसा स्वाभाव ?

जिसमें दुर्भाव हो है।

कुत्ते को यदि लकड़ी या पत्थर मारो तो वह मारक पर न गुर्राकर उस लकड़ी या पत्थर की ओर काटने दौड़ता है। मानो अपराधो वे ही हैं।

(८)

कभी कभी वह किसी रक्त-ह न शुष्क हड्डी के टुकड़े को ही समोद उठाकर दाढ़ी और दातों से सवेग चबाने लगता हैं। चबाते चबाते उसके नुकीले कण उसके मसूड़ों, जीभ आदि में भिद कर रक्त निकालते हैं, तब कुत्ते भी सोचते हैं कि यह रक्त उनकी अ टूट श्रम के परिणाम स्वारूप हड्डी से निकल रहा है भविष्यक कष्ट की कल्पना इस क्षणिक सुख में है वह यह नहीं कर पाता।

(९)

एक लम्बा सर्प था जो अपने को वर्गाकार कर संकुचित हो रहा था। अचानक सहज ही उसे अपनी ही पूंछ मुंह के पास आती दिखी तो झट अपनी ही पूँछ को काट लिया। ठीक उस शराबी की तरह जिसने मक्खी को बैठने के स्थान अपनी ही नाक का काट लिया था।

(१०)

इसी को कूकर वृत्ति कहते हैं। कार्य कारण के अनान में ठीक ठीक न समझने देती और कुछ के कुछ अनर्थ हास्यास्य हानिप्रद, हीन आचरण की ओर बहकाती है।

(११)

परन्तु क्या किसी ने सुना है सिंह गोली या भाले को चबाने दौड़ा। तुरन्त ही वह वस्तु स्थिति को समझ शिकारी पर ही प्रहार करता। इसे सिंह वृत्ति कहते हैं।

(१२)

हमें देखना है कि आज इस विडम्बना में स्वान वृत्ति कार्य कर रही है अथवा सिंहवृत्ति।

कहानी

यज्ञ भङ्ग

लेखक, श्री प्रभात कुमार मुखोपाध्याय

यज्ञ—भंग कैसे हुआ ? यह भी एक रहस्य—पूर्ण घटना है। कहानी में लेखक ने बड़ी सुन्दरता से यज्ञ—भंग की घटना का बड़ा ही रोचक और मनोरंजक चित्रण किया है। बंगाल के प्रसिद्ध कथा कार प्रभात बाबू एतिहसिक कहानियाँ लिखने में ख्याति प्राप्त हैं। कहानी पठनीय है।

इस वर्ष मेरा स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया था डाक्टरों ने सम्मति दी कि जब तक तुम जलवायु परिवार्तन के लिए किसी स्वास्थ्य कर स्थान में जाकर कुछ दिनों निवास न करोगे, यह व्याधि दूर नहीं हो सकती। अतएव मैंने विंध्याचल जाना निश्चय किया और वहाँ जाकर हिन्दू स्वास्थ्य निवास में ठहरा। विंध्याचल के उत्तम जलवायु के प्रभाव से मेरा स्वास्थ्य कुछ सुधरने लगा। स्वास्थ्य-निवास में पड़े पड़े मेरा चित्त नहीं लगता था, इसलिए प्रतिदिन इधर उधर सैर करने के लिए निकलने लगा। एक दिन अष्ट भुजा देवी के दर्शन करने भी गया। पर्वत पर से उतरते हुए ज्ञात हुआ कि उसके नीचे ...नन्द नामक तांत्रिक सन्यासी रहते हैं। वे एक सिद्ध पुरुष हैं चाहे कैसा रोग हो, दो दिन में अच्छा कर देते हैं। यह सुनकर मुझे बड़ा कौतूहल और हर्ष हुआ बाबाजी के दर्शन के लिए मैं उनके आश्रम में गया, देखा कि अनेकों स्त्री पुरुष बाबाजी को घेरे हुए बैठे हैं। मैंने भी दण्डवत करके अपना रोग दूर करने की प्रार्थना की।

बाबाजी बोले—यदि रोग हुआ है, तो डाक्टर के पास जाओ मैं तो डाक्टर नहीं हूँ।

मैं निरुपाय होकर लौट आया। स्वास्थ्य निवास में आकर इस सम्बन्ध में बातें करने पर ज्ञात हुआ कि बाबाजी ...प्रायः सभी को उत्तर देते हैं केवल जिस पर उनकी विशेष कृपा होती है, उसे अपनी हवन कुड में से एक मुट्ठी ...दे देते हैं। और उसी से असाध्य रोग तक अच्छे हो जाते हैं। यह सुनकर मैंने फिर बाबाजी के पास जाने और उन्हें अपने ऊपर कृपालु करने का निश्चय किया।

⊙ ⊙ ⊙

कीफ का युग-ब्लैडी मीर के ईसाई बनने से आरम्भ होता है! ब्लैडीमीर ने ... में ईसाई धर्म स्वीकार किया और सर्व साधारण को ईसाई बनाने पर विवश किया। उनके देवताओं की मूर्तियों को डनेपर नदी में फिकवा दिया गया। ब्लैडीमीर ने यूनान की राज कुमारी से विवाह किया और बहुत से यूनानी कलाकारों को अपने साथ ले आया।

सैन्ट सूफिया का गिरजाघर इन कलाकारों की प्रसिद्ध कृति है।

तेरहवीं शताब्दी में मुगलों का आक्रमण हुआ और कला का केन्द्र कीफ से हटकर नवोग्रोट चला गया। नवोग्रोड के जाने पर उसमें एक परिवार्तन आ गया। रूसी कला से प्रभावित हो यूनानी कलाकारों ने ईसा मसीह के जीवन के चित्र और मूर्तियाँ बनानी आरम्भ की इन्हें आईकन का नाम दिया जाता हैं। आईकन बहुत सुन्दर रंगों में बनाए जाते थे। इस युग का सबसे बड़ा कलाकर ऐन्ड्री रूबलेव (Andrie Rubler) है। उसकी सबसे बड़ीकृति ओल्ड टैस्टेमैन्ट ट्रीनटी (Old testamenttrinty है।

ब्लैडी मीर का युग पन्द्रहवीं शताब्दी में कला का केन्द्र मास्को चला गया। रूसी बादशाहों की शक्ति बहुत बढ़ गई और मास्को में कला को कई धनाढ्य सरपरस्त मिल गये। आईकन बहुत कीमती बनने लगे।

इसके पश्चात् ईसाई धर्म पर विपत्ति काल का आया ईवान चतुर्थ ने इस धर्म का बहिष्कार किया। जनता ने तो कभी ईसाई धर्म को अपनाया ही न था। गिरजा घरों को अपवित्र किया गया और उन्हें लूटा गया है सतारहवीं शताब्दी में पीटर महान ने फिर ईसाई धर्म को ऊँचा उठाया और उसके साथ कला को भी उस युग को दो हिस्सों में विभक्त किया जा सकता है।

ब्लैडीमीर का काल और सैन्ट पीटर का काल पहले काल में रूसी कला का प्रभाव अधिक दिखता है। दूसरे में विदेशी कलाकार का। पीटर अपने साथ और कुछ मंत्र पढ़ कर पूरियों और माँस पर छिड़कने लगे। अन्त में सब वस्तु को दो भागों में बाँटा गया। एक भाग उन्होंने अपने सामने रखा और दूसरा उस मनुष्य के सामने रखकर बोले—

"चन्द्र नाथ ! तुम भी प्रसाद लो !,

चन्द्रनाथ का नाम सुनकर मेरे आश्चर्य की सीमा न रही। इस मनुष्य की सूरत देखकर पहिले ही से सन्देह हो रहा था कि हो न हो, यह मेरा परिचित है। परन्तु भीतर की धुन्धली रोशनी के कारण मैं उसे पहिचान नहीं सकता था। अब बाबाजी के मुख से नाम सुनकर मालूम हुआ कि यह व्यक्ति मेरे भगिनीपति रामनाथ के बड़े भाई के अतिरिक्त कोई नहीं मैं सोचने लगा कि इस प्रकार गुप्तरीति से तान्त्रिक क्रिया कर वाने से इसका मतलब क्या है ? पर कोई विशेष बात समझ में न आई इतने में देखा कि एक लोहे की तख्ती पर कोयले से बाबाजी कुछ लिख रहे हैं। लिखना समाप्त करके उन्होंने चन्द्रनाथ से पूछा—

"देख तो, तेरे भाई के चेहरे के साथ मिलता है या नहीं ?"

इसके पश्चात् हवन कुण्ड के पास बैठकर वे नाना प्रकार की प्रक्रियाएँ करने लगे। चन्द्रनाथ से कहा गया कि देवी का ध्यान करो। मानों माँ काली, दीर्घाकार, कृष्णवर्ण, नग्न रूप में मेरे सामने खड़ी हैं। उसके दोनों हाथों में दो नरमुंड हैं, और वह उन्हें चबा रही हैं।

चन्द्रनाथ बाबू के इस प्रकार ध्यान कर लेने के पश्चात हवन कार्य आरंभ हुआ और नाना प्रकार के मन्त्र उच्चारण किये जाने लगे। वे सब तो मेरी समझ में न आए, पर एकमन्त्र जो बीच बीच में बार बार कहा जाता था, मेरी समझ में आया, वह यह था—

"ओं शत्रु नाश कार्ये: नमः। राम नाथस्य शोणितं पिब पिब। माँस खादय खादय। ह्री नमः।"

अब जाकर सब मामला मेरी समझ में आया। कल जो बालक सन्यासी ने कहा था कि ये लोग योगिनी साधन करते हैं, सो सब झूठ है। उस बेचारे ने रूपये के लोभ से झूठी सच्ची बातें बनाकर सुना दी थी। असल में चन्द्रनाथ अपने भाई रामनाथ को मारने के लिये मारण-यज्ञ करा रहे हैं। यद्यपि चन्द्रनाथ और रामनाथ एक ही पिता की सन्तान हैं, पर सहोदर नहीं हैं। पिता की मृत्यु के पश्चात जिमींदारी का सब अधिकार चन्द्रनाथ के हाथ में आया, क्योंकि रामनाथ उस समय कालिज में पढ़ते थे पर बी० ए० पास करने पर जब रामनाथ घर पर आगए और जिमींदारी का अधिकार उन्होंने अपने हाथ में लिया, तो चन्द्रनाथ को बड़ा बुरा मालूम हुआ, उन्होंने रामनाथ को अपदस्थ करने की बहुत चेष्टा की पर सफलता न हुई। अन्त में एक आसामी को सिखाकर उन्होंने झूठा मुकदमा चलवाया, पर उस में भी उन्हीं को नीचा देखना पड़ा। अब तो वे बड़े लज्जित हुए और उसी दिन घर छोड़कर कहीं चल दिए। उसी वैर-भाव और मनो-मालिन्य के कारण अब वे इस प्रकार मारण-यज्ञ द्वारा अपने भाई के सर्वनाश का उद्योग कर रहे हैं।

ये बातें सोचते सोचते मेरे सिर में चक्कर आगया, आखों में आंसू भर आए हाय ! रामनाथ जैसा सज्जन पुरुष अब अधिक दिनों तक जीवित न रह सकेगा। मारण यज्ञ के समाप्त होने के इक्कीस दिन के भीतर ही उसकी मृत्यु होजायेगी और साथ में मेरी बालिका सरीखी, सरल प्रकृति, संसार सुख से अनभिज्ञ बहिन कमला को चिरकाल तक वैधव्य का घोर दुख सहन करना पड़ेगा और इस

रामनाथ बड़ी तेजी के साथ घर में घुसा।

पिशाच चन्द्रनाथ को भी देखो, जो इस प्रकार अपने खास भाई के खून का प्यासा हो रहा है। भाइयों में लड़ाई झगड़ा भी होता है, वादविवाद भी होता है, पर क्या इसके कारण इस प्रकार का नीच कार्य करना योग्य है?

इन बातों पर विचार करते करते मेरी चेतना शक्ति लोप होने लगी। कुछ समय पीछे जब चित्त कुछ ठिकाने हुआ, तो मैंने फिर खिड़की में से झांक कर भीतर का हाल देखा, उस समय भी वही पैशाचिक काण्ड चल रहा था, अब मैं वहाँ पर खड़ा न रह सका। धीरे धीरे चल कर अपने निवासस्थान को लौट आया। पर निवास स्थान में आने पर भी मुझे चैन न मिला। मैं केवल यही सोचने लगा कि अब रामनाथ का उद्धार कैसे हो? प्राचीन शास्त्रों और विशेषकर तन्त्र विद्या पर मेरा पूर्ण विश्वास है। मुझे निश्चय है कि यह मारण यज्ञ ग्यारह रात्रि तक, जैसा कि नियम है निर्विघ्न होता चला गया, तो रामनाथ की मृत्यु अनिवार्य है। अन्त में बहुत कुछ सोच विचार कर मैंने निश्चय किया कि कल ही प्रयाग जाकर रामनाथ को इसका समाचार सुनाना चाहिए और तब मिल कर इसके प्रतिकार का उपाय निश्चय किया जायेगा।

\+ + +

दूसरे दिन दस बजे मैं प्रयाग पहुँचा भोजन के पश्चात् मैं रामनाथ को एक निर्जन कमरे में लेगया और आदि से अन्त तक सब बात उन्हें सुनाई। सुन कर उन्हें बड़ा दुख हुआ और वह शोक सागर में निमग्न होगए।

मैंने कहा—रामनाथ, इसका कुछ न कुछ प्रतिकार करना आवश्यक है। यदि मारण यज्ञ की समाप्ति से पूर्व कोई प्रबन्ध न किया गया, तो फिर कुशल नहीं है। अतः कुछ उद्योग करो।

रामनाथ कहने लगा—भाई! मुझे इस मारण यज्ञ का तनिक भी सोच नहीं, मैं इन बातों को बिल्कुल पाखण्ड समझता हूँ। मुझे सोच केवल अपने बड़े भाई के लिये है। एक पिता की सन्तान होने पर भी वह मेरे रक्त का प्यासा है, इस प्रकार मेरे प्राण नाश के लिये उद्यत है, यही सोचकर मुझे बड़ा भारी दुःख हो रहा है।

मैंने उत्तर दिया—चाहे तुम्हें इन बातों पर विश्वास हो या न हो, पर मुझे बड़ा भय लग रहा है। अतएव तुम्हें आज ही मेरे साथ चलकर अपनी रक्षा की कुछ चेष्टा करनी चाहिये।

रामनाथ बोला—हां, विंध्याचल तो चलूँगा। दस, पन्द्रह दिन पूर्व रुपये भेजने के लिये भाई साहब का पत्र आया था, उससे जान पड़ा कि आजकल वे विंध्याचल में ठहरे हैं, भाभी जी मुझसे बराबर अनुरोध कर रही हैं कि वहां जाकर उन्हें लौटा लाऊँ। इसलिए चलना ही ठीक रहेगा। वहाँ पहुँचने पर जैसा उचित होगा, किया जायगा।

⊙ ⊙ ⊙

विंध्याचल में पता लगाने पर ज्ञात हुआ कि चन्द्रनाथ वहां एक अलग मकान लेकर रहते हैं। पर रामनाथ ने तुरन्त वहां जाना उचित न समझा। पहिले वह स्वामी कोकिलानन्द के आश्रम में गए और दन्डवत करके एक गिन्नी भेंट की।

चमकती हुई गिन्नी का दर्शन करके बाबाजी अत्यन्त प्रसन्न हुए, और बोले—"जय हो, मा अष्टभुजा तुम्हारा कल्याण करें।"

स्वामी जी के पूछने पर रामनाथ ने अपना असली परिचय न देकर कहा कि वह कलकत्ता का एक व्यापारी है। इधर तीर्थ यात्रा के लिये आया था, कितने ही लोगों से स्वामी जी की बड़ी प्रशंसा सुनी कि बाबा वाक्य सिद्ध हैं और हाथ देख कर जो कुछ बतलाते हैं, वह ज्यों का त्यों ठीक उतरता है। इसलिए दर्शनों की इच्छा और हाथ दिखाने के लिये उपस्थित हुआ है।

बाबा जी प्रसन्नता के साथ रामनाथ का हाथ देखने लगे। बोले कि वाह! तुम तो बड़े भाग्य शाली पुरुष हो। धन स्थान, पुण्य स्थान, सब अतीव शुभ हैं।

रामनाथ ने पूछा—महाराज! मेरी आयु कितनी है?

बाबाजी ध्यान पूर्वक हाथ देख कर बोले—तुम ठीक ७४॥ वर्ष की आयु तक जीवित रहोगे।

फिर सोच कर कहने लगे—पर बीच में एक समय मृत्यु भय है।

आश्चर्य-पूर्वक रामनाथ ने पूछा—महाराज, वह कब?

स्वामी जी ने उत्तर दिया—आगामी भाद्रपद मास में जल भय है। शायद नाव डूबने से मृत्यु हो जाए।

अत्यन्त भयभीत होने का बहाना करके रामनाथ ने कहा—स्वामीजी, यह होगी?

कैसी बात? अब किस प्रकार रक्षा

स्वामीजी ने कहा—डरो मत, मैं होम कर दूँगा। फिर कोई भय नहीं रहेगा।

अन्त में निश्चय हुआ कि बाबा जी अपने आश्रम में स्वयं ही होम कर देंगे। उसमें सब मिलाकर कोई तीन सौ रुपये व्यय होंगे।

रामनाथ ने कहा—महाराज, मैं घर पहुँचते ही रुपया भेज दूँगा, इस समय आप ही मेरा उद्धार करने में समर्थ हैं। जिस प्रकार भी हो आप मेरी रक्षा करें। यह कह कर रामनाथ ने बाबा जी के चरण पकड़ लिए।

बाबा जी स्नेह के साथ कहने लगे—बच्चा, किसी प्रकार की शंका मत करो। मेरे होम के प्रभाव से तुम्हारी समस्त बाधाएँ दूर हो जाएँगी, और तुम निस्सन्देह अपनी ७४॥ वर्ष की आयु तक जीवित रहोगे।

चलते समय रामनाथ ने कहा—बाबा जी, जो कुछ आपने बतलाया है, उसे यदि लिख दो, तो बड़ी कृपा होगी। क्योंकि मैं मूर्ख आदमी हूँ, शीघ्र ही भूल जाऊँगा। साथ में अपना पता भी लिख दीजिए, जिस पर कि मनीआर्डर भेजा जाये।

इस पर बाबा जी ने सब बातें लिख कर रामनाथ के हवाले कर दीं।

वहाँ से लौट कर रामनाथ सीधा चन्द्रनाथ के निवास स्थान पर गया, पर उस समय चन्द्रनाथ कहीं बाहर गया था। उसकी प्रतीक्षा में वह वहीं बैठ गया।

कोई दो तीन घंटे पश्चात् चन्द्रनाथ लौटा, पहले तो वह रामनाथ को देख कर बड़ा अचकचाया, और संकुचित हुआ। पर फिर घर के कुशल समाचार पूँछ कर इधर उधर की बातें करने लगा। रामनाथ ने मारणयज्ञ वाली बात बिलकुल छिपा ली, और इस प्रकार बातें करने लगा, जैसे वह इस सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानता। रामनाथ ने कहा—भाई साहब! इस प्रकार घर छोड़ कर भटकते फिरना क्या अच्छी बात है? भाभी जी आपके कारण बड़ी दुखी रहती है। उन्ही के आग्रह से मैं यहाँ आया हूँ। अब आपको बिना विलम्ब घर चल कर सब को सन्तोष देना चाहिए।

बातें करते करते अष्ट भुजा देवी के दर्शनों का जिक्र आया। रामनाथ बोला—मै आज वहाँ गया था, लौटते समय पर्वत के नीचे रहने वाले कोकिलानन्द सन्यासी के पास गया, उन्होंने मुझे इधर उधर सैकड़ो बातें बताईं। मेरा हाथ देख कर कहा—कि आगामी भाद्रपद मास में जल द्वारा मृत्युभय है जिससे रक्षा पाने के लिये हवन कराना चाहिए। कोई तीन सौ रुपये का खर्च बतलाया है और यह सब बातें एक काग़ज पर लिख दी है। भाई साहब! क्या आप उसे जानते हैं? वह कैसा आदमी है? मुझे तो कुछ पाखंडी सा मालूम होता है।

कोकिलानन्द नाम सुनकर चन्द्रनाथ का मुँह उतर गया और नेत्र पृथ्वी की ओर झुक गए। रामनाथ की बातें सुन कर चित्त और भी व्याकुल होने लगा। रामनाथ के पुनः पूछने पर वह बोला—

"नहीं, मैंने उस सन्यासी को नहीं देखा। हाँ! कितने ही आदमियों से उसके विषय में सुना है। दिखाओ तो, उसने क्या लिखा है?

रामनाथ ने काग़ज़ उसके हाथ में देते हुए कहा—यह देखो, मुझे तो इसकी बातों पर विश्वास नहीं होता।

उसे पढ़ कर चन्द्रनाथ बोला—वास्तव में यह कोई धूर्त सन्यासी है। इसकी बातों पर विश्वास करना व्यर्थ है। चलो, कलही घर चलेंगे।

❀ ❀ ❀

दूसरे दिन दोनों भाई प्रयाग को लौट गए। चन्द्रनाथ का मारन यज्ञ अधूरा रह गया। पूरा करके करता भी क्या? रामनाथ ने साथ चलने के लिये मुझसे भी बहुत आग्रह किया। पर मुझे चन्द्रनाथ की सूरत से बहुत घृणा हो गई थी, इसलिए मैं किसी तरह भी उनके साथ जाने को राजी न हुआ*।

* प्रभात बाबू की एक बंगला गल्प के आधार पर।
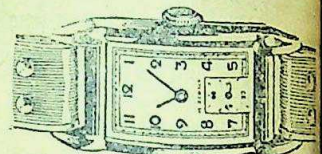
हर हर महादेव'-'शादी की रात'

दोनों फिल्म क्या आपने देखे हैं, तो कैसे हैं?

लेखक, श्री वेदप्रकाश शर्मा एम० एससी० (कृषि)

हर हर महादेव श्री जयन्त देसाई की नवीन कृति है। यह भी धार्मिक चित्रों में से एक है। हमारे देश में अपदों और अन्ध विश्वासियों की संख्या बहुत है, इसी कारण धार्मिक चित्र हमारे देश में सफलता पाते हैं। हर हर महादेव भी इसी श्रेणी का एक सफल सिने चित्र है। भूमिका में त्रिलोक कपूर, जीवन, निरंजन शर्मा, निरूपा राय और दुर्गा खोटे हैं।

बहुत दिनों तक श्री देसाई ने सिने संसार से सन्यासता धारण करने के बाद यह चित्र पेश किया है, धार्मिक चित्रों की अपूर्व सफलता का रहस्य यह है कि इन चित्रों का धर्म के नाम पर अन्ध विश्वास वाले या पुराने विचारों वाले व्यक्तियों द्वारा स्वागत किया जाता है। हमको इस चित्र में एक नयी बात देखने को मिली कि जहाँ भी कहानी में स्थूलता आती है, तुरन्त एक नृत्य या चमत्कार दिखाया जाता है, जिसके कारण दर्शकों की हमेशा सलंग्नता बनी रहती है। कहीं कहीं तो नृत्य चमत्कार बेमौके दिखाया जाता है। इसी कारण कहानी नृत्यों व चमत्कारों में खो गई है। फिर फोटोग्राफी द्वारा इन चमत्कारों में जान सी पड़ जाती है और वे प्राकृतिक प्रतीत होते हैं।

चित्र की कहानी पुरानी किंदवंतिओं पर आधारित है। राजा हिमालय की पुत्री पार्वती का शिव जी के प्रेम के लिए तपस्या करना और ताड़कासुर दानव का शिवजी और पार्वती की शादी में रोड़े अटकाना और अन्त में शिव पार्वती के पुत्र कार्तिकेय का उसे मार डालना, यही कुछ इस चित्र की कहानी के अंश हैं।

अभिनेत्री सुरैया, बहुत ... जाती है।

जैसा कि हम वर्णन कर चुके हैं कहानी में चमत्कारों की कोई कमी नहीं है।

शिवजी के रूप में त्रिलोक कपूर और पार्वती की भूमिका में निरूपा राय का अभिनय बिलकुल नहीं जमता और यह चित्र योंही कुछ ऊलझलूल और ऊटपटांट घटनाओं का समिश्रण प्रतीत होता हैं। दुर्गा खोटे, जीवन और निरंजन शर्मा का अभिनय अच्छा है। चित्र में नृत्यों और गानों की अगर भरमार कही जाये तो अनुपयुक्त न होगा। हमको दुख के साथ कहना पड़ता है कि इस अपूर्व दंत-कथा के साथ एक प्रकार से घोर अन्याय हुआ है जोकि किसी पढ़े लिखे दर्शक को बिलकुल नहीं भा सकता।

'शादी की रात'

शादी की रात प्रकाश पिक्चर्स की नवीन भेंट है भूमिका में रहमान, अरुण, जानकी दास, गीता बाली और विजय लक्ष्मी हैं। कहानी बाल गोविन्द श्रीवास्तव की लिखी हुई है। शादी की रात एक हसोड़ सुखान्त सिने चित्र है, परन्तु इसमें कहीं कहीं अत्यन्त स्थूलता आगई है, जिसके कारण चित्र अधिक सफल नहीं हो सकता है।

प्रभाकर एक कालिज का छात्र है, परन्तु बहुत गरीब है, उसका मित्र मनोहर एक अमीर घराने का है। मनोहर की होने वाली सास व बहू जब मनोहर को शादी से पहले देखने आती हैं तो भूल से प्रभाकर को मनोहर समझ बैठती हैं। प्रभाकर को मनोहर के जिद करने पर स्वांग रचना पड़ता है और सब उसको मनोहर ही समझते हैं। प्रभाकर को दुलहन के फोटोग्राफ को देख कर ही उससे प्रेम हो जाता है और इधर मनोहर को दुल्हन की एक गरीब सम्बन्धी कमला से प्रेम हो जाता है।

कहानी इन भूल-भूल्लियों पर आगे बढ़ती है और दर्शकों के मनोरंजन का कारण बनती है, परन्तु मनोहर के पिता के आने के कारण सब मामला गड़बड़ हो जाता है और दोनों मित्र इस घटना को छिपाने का भरसक प्रयत्न करते हैं। इन दोनों की पोल खुल जाती है और फिर कहानी एक लड़के और लड़की के प्रेम का साधारण रूप ग्रहण कर लेती है, जैसा कि सम्भव है इन प्रेमियों के मिलन में माता पिता रोड़े अटकाते हैं। अन्त में प्रभाकर की शादी उसकी प्रेमिका और मनोहर की शादी कमला से हो जाती है और इन प्रेमियों के मिलन में बहरे दीवान जी का बहुत बड़ा हाथ रहता है।

'शादी की रात' फिल्म का एक दृश्य

कहानी के संवाद अच्छे हैं और दर्शकों को हंसने की अच्छी सामग्री प्रस्तुत करते हैं। संगीत कव्वालिओं से भरपूर है, परन्तु उच्च कोटि का नहीं कहा जा सकता। पेठकर महाशय का निर्देशन माध्यम है, गीताबाली का अभिनय उच्च कोटि का है। उसका अन्तर-प्रांतीय सम्मिलत नृत्य व गाना अत्यन्त प्रशंसनीय है। लीला मिश्रा का अभिनय अच्छा है। विजय लक्ष्मी स्क्रीन पर काफी सुन्दर दिखाई देती हैं, परन्तु इनके अभिनय में पता नहीं, क्यों जान सी मालूम नहीं पड़ती। शायद यह कमजोरी इनके इस क्षेत्र में हाल ही में आने के कारण हो।

हमको इस बात की बहुत खुशी हुई कि रहमान साहब भी अभिनय करना जानते हैं। अभी तक इनका अभिनय अत्यन्त रूखा रहता था। परन्तु इस चित्र में तो इनके अभिनय ने चार चांद लगा दिये हैं। आशा है, यह कलाकार भविष्य में अपनी कला का अच्छा परिचय देगा। अरुण साहब का तो क्या कहना। वही पुराना ढर्रा है। मालूम नहीं कि उन्होंने अपनी पुरानी अभिनय की लीकों को पीटना क्यों नहीं छोड़ा है, परन्तु सबसे अच्छा अभिनय बहरे दीवान जी के रूप में जानकी दास का हैं। यह अभिनेता ऐसा है कि चाहे जो भी इसको भूमिका दी जाये, उसी में यह अपने अभिनय के कारण चित्र की सफलता को बढ़ाता है। आशा है कि इसकी गिनती किसी दिन देश के महान अभिनेताओं में होगी। चित्र देखने योग्य है।

रूसी कला

व्यावहारिक जीवन में वह कैसे सफल हो सकती है ?

लेखिका, कुमारी लाजवरमानी एम० ए०

रूसी कला का उद्देश्य क्या है? रूस का कलाकार कला को किस दृष्टि से देखता है? वह चाहता है कि व्यावहारिक जीवन में उसकी कला लाभदायक तथा उपयोगी है। लेखिका ने इस लेख में इसी संबन्ध में प्रकाश डाला है जो पठनीय तथा विचारणीय है।

रूसी कला का उद्देश्य भारतीय कला के उद्देश्य से भिन्न है। भारतीय कला आध्यात्मिक है। भारतीय कलाकार सदैव ही किसी इष्ट देव को सामने रखता है और कला द्वारा उसे प्रसन्न करने की चेष्टा करता है। रूसी कलाकार अपने सामने यह लक्ष रखता है कि उसकी कला व्यवहारिक जीवन में उपयोगी हो। रूसी कला का यह उद्देश्य पाश्चात कला के उद्देश्य से भी भिन्न है। पाश्चात् कलाकार के लिए 'कला, कला के लिए' है।

रूस की क्रान्ति ने रूसी जीवन में बहुत परिवर्तन ला दिया है। किन्तु रूसी कला पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा यदि पड़ा ही है तो, यह कि सोवियत कला में उपयोगिता पर अधिक जोर दिया जाता है। रूसी कला में यह गुण तो सदैव ही रहा है किन्तु और कई प्रकार से उसके रूप में परिवर्तन आता रहा है। ईसा पूर्व से लेकर सोवियत काल तक वह सात मंजिलों से गुजरा है। वे सात मंजिलें ये हैं।

(१) ईसा पूर्व का युग।
(२) कीफ का युग।
(३) नवोग्रोड का युग।
(४) ब्लैडीमीर सुजदाल का युग।
(५) सैन्ट पीटर वर्ग का युग।
(६) अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी।
(७) सोवियत युग।

ईसा पूर्व का काल—प्राचीन रूसियों को कला के प्रति इतना प्रेम था कि वे मृत के साथ कला के बहुमूल्य नमूने कबर में दबाते थे। यदि रूसियों में यह प्रथा न होती तो सम्भवतः वहाँ की कला का इतिहास अधूरा रह जाता। सोलहवीं शताब्दी में कोष खोजने वालों ने कबरों को खोदा और बहुत अद्भुत नमूने प्राप्त हुए इन नमूनों में सुन्दर सुन्दर भूषण सोने के ताज और विभिन्न प्रकार के सोने और चांदी के बर्तन मिले। बर्तनों में टेरा कोटा की बेस विशेषतः उल्लेखनीय है। यह स्फींक्स की शकल की बनी हुई है इसकी निर्माण तिथि पांचवी शताब्दी ईसा पूर्व बताई जाती है।

अगले दिन प्रातःकाल ही मैं ताँगे में बैठकर अष्टभुजा के पर्वत की ओर चला। बाबाजी के आश्रम में जाकर देखा तो एक बालक सन्यासी के अतिरिक्त किसी को न पाया। मैंने दण्डवत करके उससे पूछा महाराज स्वामी जी कहाँ है!

ज्ञात हुआ कि वे अभी निद्रा में हैं, और दस ग्यारह बजे से पूर्व नहीं उठेंगें मैंने आश्चर्य के साथ इसका कारण पूछा—तो छोटे बाबाजी ने कहा—स्वामी जी समस्त रात्रि एक बाबू के साथ हवन करते रहे अभी ५ बजे सोए हैं।"

मैंने पूछा—कैसा हवन!

बालक ने प्रथम तो कहा कि बात बतलाने की नहीं है। परन्तु जब मैंने उसके हाथ पर एक रुपया रखा तो उसने कहा—

"स्वामी जी और बाबूजी एक मन सामग्री लेकर हवन करने बैठते हैं हवन करते करते कुण्ड में से एक स्त्री निकलती है और बाबू को बहुत साधन, मुक्ता माणिक देकर पुनः कुण्ड में लोप हो जाती है।"

मैं तो यह बात सुनकर स्तम्भित रह गया। क्या यही योगिनी साधन है जिसका वर्णन तन्त्रशस्त्रों में किया गया है? कुछ भी निश्चय न कर सकने के कारण मैंने सोचा कि अबकी बार मैं स्वय सब हाल देखूँगा। बालक सन्यासी से हवन का स्थान और आगामी दिन पूछकर मैं चला आया।

रविवार के दिन रात्रि को नौ बजे मैं अकेला पहाड़ की ओर चला। जब कोकिलानन्द के आश्रम में पहुँचा तो कोई साढ़े ग्यारह बजे होंगें, हवन की कोठरी के पास एक टूटी हुई खिड़की से झांक कर देखा, कि भीतर कोकिलानन्द और एक दूसरा मनुष्य बैठा है। उनके सामने कुछ पूरियाँ, मांस, शराब की एक बोतल आदि वस्तुएँ रखी हुई हैं। बाबाजी ने थोड़ी सी शराब निकाली देश विदेश से कलाकार लाया था। उनका प्रभाव रूसी कला पर स्पष्टतः दिखाई देने लगा। पीटर की बेटी एलिजबैथ ने मास्को में आर्ट एकडमी की नीव डाली। इस काल में सुन्दर सुन्दर महल बने। उन्नीसवीं शताब्दी में फ्रांस का प्रभाव सभी देशों पर पड़ा। रूस भी इससे न बच सका।

सोवियतकाल—सोवियतकाल में रूसी कला ने एक बहुत बड़ा पलटा खाया, महल या गिरजा घर बनाने और उन्हें सजाने की अपेक्षा जनता के फायदे की चीजें बनाने पर जोर दिया जाने लगा। दरयाओं पर बन्द लगाए गए और पुल बनाए गए।

सब युगों में रूसी कला में दो धाराएँ स्पष्टतः दिखाई देती है। एक राज्य कला पर विदेशी प्रभाव अधिक है और शान और दिखावा भी। लोक कला सादा, किन्तु कला की दृष्टि से बहुत उन्नत है। राज्य कला में बहुत मूल्यवान अनेमल के करोस, सोने के ताज और भूषण, कीमती आईकन और लिबास मिलता है। बादशाहों के चित्रों की गणना भी इसी कला में है। इसमें धार्मिक कला अर्थात् आईकन और पद्देलनीसाटन मखमल या कमाहक की बनी होती है। इस पर सोने का काम किया होता है और मोती टके होते हैं और कहीं कहीं हीरे जवाहरात भी। इस पर 'मेरी' और दूसरे सन्तों की तसवीरें बनी होती हैं। लोक कला में कृषक कला प्रसिद्ध है। कृषक लोग लकड़ी की बहुत सुन्दर बर्फ गाड़ियाँ और बर्तन और खिलौने बनाते हैं। वे अपने वस्त्रों पर भी सुन्दर नमूने बनाते हैं।

रूसी क्रान्ति ने लोक कला को बहुत प्रोत्साहन दिया है। यद्यपि रूस की लोक कला पश्चिम में अधिक पसन्द नहीं की जाती किन्तु यह बहुत व्यापक है और रूस के सामाजिक जीवन के अध्ययन का एक अमूल्य साधन।

पुस्तक परिचय

भाषण-सम्भाषण—देवनाथ [illegible]ध्याय एम० ए०, भूमिका लेखक [illegible] अमरनाथ झा प्राप्तिस्थान कि[illegible] महल, पृष्ठ संख्या १५३, मूल्य २॥)

भाषण देना एक कला है जो [illegible] कम लोग जानते हैं। वार्तालाप [illegible] चाहे वह किसी कोटि का हो काफी [illegible] काम है।

हमारी सफलता बहुत कुछ [illegible] वार्तालाप के तौर तरीके पर निर्भर [illegible] मनुष्य समाजिक प्राणी है! उसे [illegible] में उतरना ही पड़ता है। वह [illegible] कार्यक्षेत्र बढ़ाता है, जन संपर्क स्था[illegible] करता है और एक विकसित [illegible] समाज का अंग कहलाने का दावा [illegible] निस्सन्देह इन परिस्थितियों में [illegible] बहुधा संभाषण में भाग लेना [illegible] है और कभी कभी किसी विशेष [illegible] स्थिति में उसे एक जन समूह के [illegible] अपने विचार व्यक्त करने का [illegible] मिलता है।

प्रस्तुत पुस्तक में अनुभवी ले[illegible] ने भाषण कला के विविध पहलुओं [illegible] यथार्थ प्रकाश डाला है। साथ [illegible] संभाषण को किस प्रकार रोचक [illegible] और अपने संभाषण से किस [illegible] दूसरों को प्रभावित करें, इस पर [illegible] पूरा प्रकाश डाला गया है।

संभाषण की उपयोगिता इन[illegible] में विशेष रूप से देखने को मिलती [illegible] इन्टरव्यू बोर्ड के सामने किस [illegible] बातें को इस चक्कर में नौकरी का [illegible] प्रत्येक उम्मेदवार रहता है। [illegible] लेखक ने इन्टरव्यू बोर्ड के [illegible] उपस्थित होने वाले प्रतियोगि[illegible] लाभार्थ बहुत सी उपयोगी बातें [illegible] हैं।

भाषण देनां और वार्तालाप [illegible] मानव मात्र का गुण है। भाषण [illegible] संभाषण कला सीखने की हर ए[illegible] को आवश्यकता है। अतएव यह [illegible] हर एक के लिये उपयोगी है।

स्वास्थ्य और व्यायाम

बीमारी क्यों ?

कारण तथा उससे मुक्त होने का तरीका

१—स्वस्थ रहना ही शरीर की स्वाभाविक अवस्था है। मौसम, कीटाणु आदि कभी कभी कमजोरी की हालत में बीमारी के सबब हो सकते हैं, लेकिन इसका वास्तविक कारण उन प्राकृतिक नियमों का उल्लघंन करना है, जो स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक है और इसके जिम्मेदार हम स्वयं हैं।

२—मनुष्य शरीर सदा ही अपने को स्वच्छ और स्वस्थ रखना चाहता है इसके लिए प्रकृति सांस, पसीना, पाखाना तथा पिशाब—इन चार तरीकों द्वारा हमेशा शरीर की सफाई करती रहती है। जब गलत आहार-विहार से शरीर में इतना विकार इकट्ठा हो जाता है कि वह साधारण तरीकों से बह नहीं पाता, तब प्रकृति की तरफ से उस गन्दगी को बाहर फेकने के लिये असाधारण ढंग काम में लाये जाते हैं जिन्हें हम 'रोग' कहते हैं। इस समय शरीर की शक्तियां तेजी के साथ अपना काम शुरू कर देती हैं। या अन्दर की गर्मी ज्वर के रूप में बढ़कर शरीर की गन्दगी को जला देती है या दस्त, जुकाम, फोड़ा, फुन्सी आदि हो जाते हैं।

३—इस प्रकार रोग शरीर के विकारों को बाहर फेकने के लिये प्रकृति के प्रयत्न हैं। हमारा हित इसी प्रकार के (चिकित्सा के) तरीके अपनाने में है जिससे गन्दगी को बाहर फेकने में प्रकृति की सहायता हो सके। रोग बाहरी लक्षण हैं और इस बात के सबूत हैं कि अन्दर खराबी पैदा हो गई है। हमें चिकित्सा लक्षणों की न करके उनके असल कारणों की करना चाहिये। अर्थात् बाहरी रूप कुछ भी हो रोग असल में एक है और वह है शरीर के अन्दर विकार पैदा हो जाना—अतः तरीके कुछ भी हों इलाज भी असल में एक ही हो सकता है और वह है, उस विकार को शरीर से बाहर फेक देना।

४—हम अपनी समस्त जीवन-शक्ति भूमि से पैदा हुये वनस्पति-अन्नादि से, स्वच्छ जल से, सूर्य की धूप से तथा हवा से प्राप्त करते हैं। अतः जीवन में जितनी सादगी तथा स्वाभाविकता होगी, उतना ही हम उपरोक्त तत्वों से पूरा लाभ उठा सकेंगे और स्वस्थ तथा शक्तिशाली बन सकेंगे। इसका मतलब यह है कि तली हुई चीजों तथा मिठाइयों की अपेक्षा हाथ के पिसे मोटे आटे की रोटी, मक्खन, हरे साग तथा फलादि अधिक जीवन दायक हैं। लैमोनेड आदि की अपेक्षा स्वच्छ जल फायदेमन्द है, चाय की अपेक्षा दूध शक्तिवर्धक है, और शरीर को धूप, हवा, सर्दी, गर्मी से बचा बचा कर रखने की अपेक्षा निर्भयता-पूर्वक इनके सेवन करने से अधिक जीवन और स्फूर्ति प्राप्त होती है।

५—बीमार होने पर सबसे पहले हमें अपना भोजन आवश्यकतानुसार कतई बन्द, कम अथवा व्यवस्थित करना चाहिए ताकि शरीर की सारी ताकत पैदा हुए विकार को अन्दर से बाहर फेकने में लग सके। इस कार्य में एनीमा से सहायता ली जा सकती है। यदि थोड़ा विश्वास और धैर्य हो तथा साथ में जानकारी भी हो, तो 'प्राकृतिक-चिकित्सा पद्धति' के अन्तर्गत मिट्टी, पानी, धूप आदि के प्रयोगों द्वारा बीमारी के हटाने में काफी मदद मिल सकती है। परन्तु किसी भी हालत में हमें अपने आहार-विहार को नियंत्रित तथा व्यवस्थित करना होगा। और उपवास तथा एनीमा की सहायता से अन्दर की गन्दगी को दूर करना होगा।

६—अन्दर की खराबी निकलने के बाद औषधि की सहायता ली जायगी तो लाभ जल्दी तथा स्थायी होगा। जहां तक संभव हो औषधि तीव्र न होकर सादी रहे (यानी रसादिक न होकर बनस्पति काष्ठादि हों) तो अन्ततोगत्वा शरीर के लिये अधिक हितकर होगी। जब भी आवश्यकता समझी जाय, डा० वैद्य की मदद जरूर ली जानी चाहिये तथा उनके अनुभव से लाभ उठाना चाहिये। लेकिन हमें चिकित्सा के आधारभूत सिद्धान्तों को समझना चाहिये और तदनुसार सोच समझ कर अपना निर्णय करना चाहिये।

७—जिन्हें शारीरिक के बजाय मानसिक श्रम अधिक करना पड़ता है, ऐसे लोगों को स्वस्थ रहने के लिये व्यायाम बहुत जरूरी है। इसे सही पद्धति से किया जाय तो कुछ बीमारियों सेमुक्त होने मेंभी सहायता मिल सकती है

८—शारीरिक सामर्थ्य को कायम रखने के लिए संयम तथा ब्रह्मचर्य अत्यन्त आवश्यक है, विशेषतः उन लोगों के लिये जिन्हें अपने जीवन में महान कार्य करने हैं।

६—अन्त में,—स्वस्थ रहने तथा बीमारियों से मुक्त होने के लिये प्रसन्नता भी अनिवार्य है। यदि हमारा लक्ष्य महान है, अपने प्रयत्न में हमें श्रद्धा है और हम सही सिद्धान्त पर चलने वाले हैं तो हमें प्रसन्न रहने में बड़ी सहायता मिलेगी। ※

※ बनस्थली विद्यापीठ, जयपुर, द्वारा प्रकाशित 'गृह चिकित्सक' से।

सम्पादक के नाम चिट्ठियां

साहित्यिक पुस्तकों का निर्माण

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने पिछले कुछ दिनों के विचार-विमर्श के बाद महापंडित राहुल सांकृत्यायन के सुझाव के अनुसार अपने लिये राष्ट्रोपयोगी साहित्य-निर्माणकी एक विनम्र योजना स्वीकार की है। हमें आशा है कि हम हिन्दी-संसार की शुभ कामना और सहायता के भरोसे न केवल उसे आरम्भ कर सकेंगे किन्तु यथाशीघ्र समाप्त भी कर सकेंगे। समिति ने छः प्रकार के ग्रन्थ प्रकाशित करने का विचार किया है—(१) कोश ग्रन्थ, (२) स्वयं-शिक्षक ग्रन्थ, (३) व्याकरण ग्रन्थ, (४) साहित्य इतिहास ग्रन्थ, (५) कविता-संग्रह, (६)पंचरत्न ग्रन्थ।

(१) कोश-ग्रन्थ-यदि हम मराठी, गुजराती, बंगला आदि अपने देश की तेरह प्रांतीय भाषाओं को लें और सिंहल, मलायु आदि ऐशियायी भाषाओं को लें तथा अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन और रूस चार विदेशी भाषाओं को लें तो हम सभी भाषाओं में कोई उन्नीस ऐसे कोश-ग्रन्थ प्रकाशित करना चाहते हैं जिनमें से प्रत्येक शब्द कोश में कम से-कम साठ हजार शब्द हों और पृष्ठ-संख्या हो कोई ६०० । प्रत्येक कोश का अल्पतम संस्करण दो हजार का रहे।

ये उन्नीस कोश-ग्रन्थ परस्पर एकसे दूसरी भाषा में होंगे, तो जिनकी ग्रन्थ-संख्या सहज में ही ३८ हो जायगी। जिस प्रकार हमारी योजना के अन्तर्गत ३८ कोश ग्रन्थ हैं।

(२)स्वयं-शिक्षक—हमें उक्त सभी भाषाओं में हिन्दी के स्वयं शिक्षक ग्रन्थों की और हिन्दी में उक्त सभी भाषाओं के स्वयं-शिक्षक-ग्रन्थों की आवश्यकता है। ये स्वयं-शिक्षक ग्रन्थ भी ३८ हो सकेंगे।

(३)व्याकरण-ग्रन्थ-भाषा सीखने में कोश और व्याकरण दो ही मुख्य हैं। हम चाहते हैं कि हमारी हिन्दी में उक्त सभी भाषाओं के व्याकरण ग्रन्थ हों और उक्त सभी भाषाओं में हिन्दी के व्याकरण ग्रन्थ हों।

भाषा ज्ञान के बाद ही साहित्य से परिचय हो सकता है, और यदि साहित्य से परिचय न हो तो हाथ आया भाषा-ज्ञान भी हाथ से निकल जाता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये हमने तीन तरह के साहित्य-ग्रन्थों के प्रकाशन की भी कल्पना की है—

(क) साहित्य इतिहास ग्रन्थ—आज भारतीय भाषाओं के हिन्दी प्रेमी हिन्दी-भाषा और उसके साहित्य के प्रामाणिक इतिहास में दिलचस्पी लेने लगे हैं। राष्ट्र की ठोस एकता के हित में यह आवश्यक है कि सभी राष्ट्र-भाषा प्रेमी हिन्दी के साहित्य-इतिहास के साथ-साथ प्रांतीय भाषाओं के साहित्य-इतिहास की भी जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न करें। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिये भी कम-से कम अड़तीस प्रामाणिक ग्रन्थों का निर्माण और प्रकाशन आवश्यक है।

(ख) कविता—संग्रह ग्रन्थ—अन्य विषयों का महत्व बढ़ने पर भी आज भी काव्य का महत्व घटा नहीं है। काव्य-साहित्य में ही किसी भी जाति का हृदय छिपा रहता है। इस लिये हिन्दी के काव्य की जानकारी उन सभी भाषाओं के ज्ञाताओं को और युक्त सभी भाषाओं के काव्य में से चुने हुए अंशों की जानकारी हिन्दी के ज्ञाताओं को कराने का प्रयत्न किया जाना ही चाहिये। इस उद्देश्य को पूर्ति के लिये कम-से-कम ३८ कविता संग्रह ग्रन्थों को प्रकाशित करने की योजना बनाई गई है।

(ग) पंच-रत्न-ग्रन्थ—सोचा गया है कि आज भारत की सभी प्रांतीय भाषाओं और देश के बाहर की भी कुछ भाषाओं से एक निश्चित योजना के अनुसार विशेष महत्व के ग्रन्थों के हिन्दी अनुवाद कराकर प्रकाशित किये जायँ। साधनों की अल्पता के कारण अभी प्रत्येक भाषा से पाँच-पाँच प्रतिनिधि ग्रन्थों की कल्पना की गई है। यदि १६ भाषाओं से हम प्रत्येक के पाँच-पाँच प्रतिनिधि ग्रन्थ प्रकाशित कर सकें तो उनकी संख्या १९×२+५=१६० ग्रन्थ हो सकता है।

इस प्रकार कुल मिलाकर हमरी योजना अभी केवल ३८० ग्रन्थ प्रकाशित करने की है।

इस योजना को प्रकाशित करने का मात्र उद्देश्य इतना ही है कि यदि किन्हीं भाई के पास कोई ऐसा ग्रन्थ हो जो हमारी इस योजना के अन्तर्गत आता हो और उसे प्रकाशित कराना चाहते हों तो हम नयी पुस्तक लिखवा कर उसे प्रकाशित करने से पूर्व उस लिखे ग्रन्थ को ही प्रकाशित करने पर विचार करेंगे।

तीसरे, यदि इस योजना के अन्तर्गत आ सकने वाली कोई अच्छी पुस्तक पहले से प्रकाशित हो और हमें उसकी जानकारी हो जाय तो हम उसे पहले न प्रकाशित करें।

हमें भरोसा है कि हमारी इस योजना को हिन्दी संसार का समर्थन और सहयोग प्राप्त होगा। समिति इस कार्य को अपने सहयोगियों और हित-चिन्तकों की सहायता से ही पूरा करनेकी आशा रखती है।

वर्धा—आनन्द कौसल्यायन

वीरा का पुल (कलकत्ता) का एक दृश्य।

(पृष्ठ ५ के आगे)

आधार भी भारतीय ध्वनिव्यंजक प्रणाली ही है। उसकी वर्णमाला का, कि, कु, के, को इत्यादि है।

संस्कृत और उसको प्रतिशाख्य तथा पाणिनीय शिक्षा आदि ध्वनिशास्त्र की पुस्तकों के अध्ययन ने हरि वर्ष (यूरोप) को नया ध्वन्यक्षर-विज्ञान प्रदान किया।

व्यजनों से स्वरों का पृथक् करण और स्वरों तथा व्यजनों का क्रम भारतीय आविष्कार हैं। ध्वनिशास्त्र के समस्त विद्वानों ने इसी को वर्ण क्रम-निर्धारण के लिए आधार माना है।

श्यामी भाषा के सम्बन्ध में पहले पहल १२८३ ई० में कुछ सामग्री मिली थी। यह सुकोथई का एक शिलालेख है जिसमें श्यामी अक्षरों का आविष्कर्ता "रामकाहेंगा" को बताया गया है। श्यामी लिपि में ४४ व्यंजन हैं। तान पांच है जिन्हें वहां क्रमशः माई-एक-माई सी, माई-ने, माई- चतवा और माई-ताइकू कहते हैं। संस्कृत के समान वचन भी तीन हैं, एक द्वि और बहु बौद्ध संवत् २४७० में प्रकाशित सरकारी श्यामी कोश का नाम "प्रथानुकरोमा" है। उसके २०÷ शब्द शुद्ध संस्कृत शब्द हैं। भले ही उनका उच्चारण कुछ भिन्न है किन्तु वर्ण विन्यास सर्वथा संस्कृत के अनुसार ही है। इस कोश के कुछ शब्द यहां उद्धृत किए जाते हैं—

कपोल—गाल

कपोल-पत्र—गाल पर चित्रित रेखाएं।

कपोल-पालि—एक गाल

कपोल-राग—गाल का रंग

कपि—वानर, बन्दर

कपि-पति—रामचन्द्र, वानर पति

कमला—लक्ष्मी

कमण्डलू—कमण्डल

कुमुद—श्वेत कमल

कर—हाथ

कर्कट-आगम—यह आधुनिक राजकीय वर्ष के चौथे मास का नाम है। श्याम में आजकल बौद्ध संवत् जिसे "बुत शक" कहते हैं, प्रचलित हैं। वर्ष पहली अप्रैल से आरंभ होता है।

करज—नख

करणि—वर्गमूल और घनमूल निकालने की रीति

कर्णधार—नाविक, मल्लाह

कर्णपूर—कानों का पुष्पाभरण

कर्णवेध—कान बीन्धने का संस्कार

कर्मयुग और कलियुग दोनों शब्द समानार्थक हैं।

कर्मवाच—व्याकरण का कर्मवाच्य

कर्मविपाक—विपत्ति

कर्मशाला—शिल्पिशाला (कारखाना)

कर्म-सारथि—सहायक

कर्म-हस्त—प्रवीण, सिद्धहस्त

इस प्रकार जो व्यक्ति भारतीय संस्कृति और उसके विभिन्न रूपों का अध्ययन करता है वह भारत की अद्यतन राजनैतिक सीमा को स्वीकार नहं कर सकता। आज की पीढ़ी को जिसने भारत की आधुनिक सीमा स्वीकार की और जिसने इस सीमा को भी काट काट कर और भी संकुचित बनाया, भावी सन्तति के सन्मुख गम्भीर लानछना मिलेगी। वास्तविक शांति-प्रेम और यह दमनीय विश्वास की शन्ति की आधारशिला एक मात्र प्रेम ही हो सकता है, बौद्धिक शक्ति का प्रत्यक्ष अभाव, वास्तविकता के विरुद्ध सर्वथा भावकुता के वश में होना इत्यादि उद्देश्यही न मूर्खता और दुर्बलता के लक्षण हैं। भले ही ऐसे लोगों में छलछन्द न हो किन्तु निरपराध नहीं है। माना उन में धूर्तता नहीं है, किन्तु भारत के पूर्वी और पश्चिमी प्रान्तों को काट कर अलग करने और इस देश पर आई अतुल विपत्ति और भयंकर विनाश के कारण वे अवश्य हैं।

संसद-नियंत्रण इतना प्रभावशाली है और सदस्य इतने निद्रालु और अन्धविश्वासी है कि देशवासियों के प्रबोधनों का उनपर कोई प्रभाव नहीं होता। न वे समय की गति को पहचानते हैं और न गुप्तचर-विभाग की सूचनाओं का कोई प्रभाव ही उनपर होता है। हमारे नेया अपनी सच्चाई और पवित्रता का ढोल पीट रहे हैं जब कि हमारे सत्रु अस्त्र शस्त्र बनाने और अपने आपको सबल करने में जुटे हैं।

पोलैंड वासियों में एक कहावत प्रचलित है जिसका अभिप्राय है—

कीचड़ में चलने की अपेक्षा कांटो और भालों की नोकों पर चलना कहीं अधिक मधुर और प्रिय है। क्योंकि कीचड़ आंसुओं से बनता है और आहों से कोहरा।

उपनिषद बताते है—विदधि आत्मान आत्माभिज्ञान का अर्थ है अपने को पहिचानना। आत्मदर्शन, आत्मप्रकाश, आत्मलाभ, आत्मयोग, आत्मरक्षण, आत्मसखित्व और आत्मैश्वर्य हमारी आधुनिक आवश्यकताएं हैं। किन्तु हम आज आत्मवंचना, आत्मविक्रय और आत्मापहारिता को गुण समझ बैठे है जिसका अन्तिमपरिणाम आत्मघात के अतिरिक्त क्या हो सकता है। हमें झूठी शान्ति के नाम पर अपने ही मांस को खाकर आत्मामिष नहीं बनना चाहिए।

हमें एक नवीन प्रकाश की आवश्यकता है जो बता सके कि हम कहां है और हमें आगे बढ़ा सके। अग्रसर करने वाला यह प्रकाश हमें अपने भीतर से ही प्राप्त होगा। हमें संकुचित, शक्तिहीन और निर्जीव नहीं बनना चाहिए। जीवित रहने के लिए शक्ति और पुरुषार्थ की आवश्यकता है। तथ्यों पर आश्रित आत्माभिमान की भावना जनता में उत्पन्न करनी चाहिए। सच्चे आत्माभिमान की शक्ति से हम अभियान के योग्य होंगे और शत्रुओं की दुरभिसन्धियों को नष्ट कर सकेंगे। इसीसे उनका अधःपतन और धरापतन सम्भव ही सकेगा।

हमें भारत के नाम का ऐसा प्राण गीत बनाना है जिसके संगीत से हृदय उमड़ पड़े और बिजलियां कौंध उठें।

[लख]नऊ की चिट्ठी

ग्रामों का उत्थान

खाद्योत्पादन योजना

[ए]क ऐसी बृहत् योजना के सम्बन्ध [में] विचार किया जा रहा है जिससे उत्तर [प्रदेश] के ग्रामीण क्षेत्रों में उद्योगों की [इस] प्रकार व्यवस्था की जा सके जिससे [वे] कुटीरोद्योग के ही रूप में चालू [रहें और उन]के साथ ही अच्छी अच्छी चीजों [को] तैयार करना भी सम्भव हो सके और [कारी]गर को अपना गाँव छोड़ने की [आव]श्यकता न हो और गांव में ही उसे [अच्छी] आय हो जाया करे।

इस योजना द्वारा सर्वप्रथम छोटे [छोटे] कस्बों में जहाँ सरकारी टेकनीकल [स्कूल] या शकर मिलें नहीं है, ग्रामीण [क्षेत्रों] के लिए कारीगरों की ट्रेनिंग के [लिए] आधा दर्जन कारखाने खोले [जाएँगे]। ये कारीगर या तो स्वयं अपने [कार]खाने खोल लेंगे अथवा उस छोटे [छोटे] कारखानों में कार्य कर सकेंगे [जो] बाद में खुलते रहेंगे। इन कार[खानों] में स्थानीय आवश्यकताओं के [अनुसार] ढलाई, गढ़ाई, निर्माण तथा [मरम्मत] के कार्यों के लिए आवश्यक [सामान] उपलब्ध रहेंगे। ऐसी बहुत [सी] छोटी मशीनें भी हैं जो हाथ [या पैर] से चलाई जा सकती हैं और [...]ने के तथा घरेलू उद्योगों को [...] शुरू करने के लिए बहुत उप[योगी] हैं। जापान को भेजे गए केन्द्रीय [सरकार] के शिष्टमंडल ने कुटीरोद्योगों [के लिए] बहुत सी उपयोगी मशीनों के [लिए] सिफारशें की हैं। यंत्रों द्वारा [...]की जो व्यापक व्यवस्था हो रही है [उन] मशीनों की मरम्मत के लिए भी [...] साधनों एवं सुविधाओं की [आव]श्यकता है।

ट्रेनिंग तथा उत्पादन कार्यों के लिए [का]रीगरों तथा व्यक्तियों का निर्वा[चन] किया जायगा जो उद्योगों में अभि[रुचि] रखते हैं। उन्हें या तो न्यूनतम [मजदू]री दी जायगी अथवा उत्पादन के [अनुपा]त में पारिश्रमिक मिलेगा। ट्रेनिंग [समाप्]त होने पर इन लोगों को अपने [अपने] कारखाने खोलने के लिये प्रोत्साहित [किया] जायगा। कालान्तर में इन कार[खानों] को सहकारी कारखानों का रूप दे [दिया] जायगा और उचित शर्तों पर [स]हकारी समितियों के अधिकार में [दे दि]या जायगा।

[बा]द में ऐसे कार्यों के लिये जिन्हें [...] अलग अलग या छोटे २ वर्गों में नहीं [कर सक]ते, पावर मशीने लगाना तथा [बड़े] छोटे कारखाने स्थापित करना [आवश्य]क होगा, क्योंकि कार्य क्षमता [और अ]च्छे प्रकार की वस्तुओं के निर्माण [के लिये] ऐसा करना अनिवार्य हो जायगा। [शीशे] की गोलियाँ बनाने का उद्योग

शीशे की गोलियां बनाना अब उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख उद्योग है और राज भर में इसके लगभग ८० कुटीर कारखाने काम कर रहे हैं। जिनमें लगभग ढ़ाई लाख रुपये का सामान तैयार किया जाता है।

नये प्रकार की चीजें तैयार करने के लिये ग्लास टेकनालाजिस्ट की प्रयोग शाला में अनुसन्धान कार्य किये जा रहे हैं। इस प्रयोगशाला में कृत्रिम मोती तैयार करने के प्रयोग के सफल हो जाने फलस्वरूप अब शीशे की गोलियों कुछ कारखानों में कृत्रिम मोती बनाने का उद्योग चालू कर दिया गया है। विगत २ वर्षों में लैंपों की चिमनियों के लिये छः नये रंग निकाले गये हैं और अब इनके लिये रङ्गों की संख्या ३१ तक पहूँच गई है। धातु के हिस्से बनाने तथा उनकी कलई करने के लिये आवश्यक सामान की व्यवस्था करके तैयार की गई वस्तुओं की किस तरह उन्नति की जा रही है।

दो ट्रेनिंग केन्द्र भी हैं जिसमें से एक खुरजा में दूसरा बनारस में है। इन केन्द्रों में शीशे की गोलियाँ (बीड)बनाने की ट्रेनिंग निःशुल्क दी जाती है। ट्रेनिंग की कुल अवधि साढ़े दस मास की है।

खाद्योत्पदन योजना

देश में अन्न की संकटापन्न, स्थिति को देखते हुये उत्तर प्रदेशीय सरकार सभी ऐसी जोतों पर जो किसानों के अधिकार में होते हुये भी खेती के काम में नहीं आतीं, अपना अधिकार करना आवश्यक समझती है। यू० पी० लैंड यूटिलिजेशन ऐक्ट १९४७ के अधीन सरकार जमींदारों की सभी ऐसी कृषि योग्य भूमि को अपने अधिकार में ले सकती है जिसे जमींदार न तो स्वयं जोतता बोता है और न उसे लगान पर उठाता है किन्तु किसानों की ऐसी कृषि योग्य भूमि के सम्बन्ध में सरकार को यह अधिकार नहीं प्राप्त है।

तदनुसार यू० पी० लैंड उटिलिजेशन ऐक्ट, १९४७ में संशोधन करने का प्रश्न राज्य की विधान सभा के विचाराधीन है।

दुग्धशाला

जिला सहारनपुर में ग्राम स्थल में दुग्धशाला स्थापित करने के निमित्त दूध देने वाले मवेशियों, दुग्धशाला संबंधी मंत्र तथा उपकरण की खरीद के लिये उत्तर प्रदेशीय सरकार ने श्री० एन० के श्री शाहनवाज खां को बिना सूद १०,००० रु० का ऋण देने की स्वीकृति दी है। इस ऋण को १००० रु० की अर्द्ध-वार्षिक किस्तों में वसूल किया जायगा।

(पृष्ठ ४ के आगे)

हिन्दी को राष्ट्र-भाषा का पद प्राप्त हो गया है। उसका हित, राष्ट्र का हित है तथा उसकी उपेक्षा, राष्ट्र की उपेक्षा है। अतः **सम्मेलन के कर्णधारों** से प्रार्थना है कि वे इस संस्था के लिए राष्ट्रीय सरकार का अधिकाधिक सहयोग प्राप्त करें। अब वोट-प्रेमो स्वेच्छा-सेवक देश-भक्तों के आश्रय पर ही अवलंबित न रहकर इतना महत् कार्य ठोस व्यवस्थापकों और उपयुक्त कार्य-कर्त्ताओं की मदद से ही करना होगा।

परीक्षार्थियों का जीवन-निर्माण-कार्य परीक्षा-नीति पर ही निर्भर रहता है। अतः सम्पूर्ण कार्य सोच-समझकर ही होना चाहिए। युग-प्रवाह से परीक्षा का विषय प्रतिदिन व्यवसायिक विषय-सा बनता जाता है। प्रत्येक वर्ष सरकारी स्कूल और कालेजों की परीक्षा में विभिन्न स्थानों पर 'पेपर आउट' हों जाने की समस्याएं आए दिन समाचार-पत्रों में पढ़ने के लिए मिलती रहती हैं। यों तो वर्तमान शिक्षा-प्रणाली ही सम्पूर्णतया दोषी है, तिस पर भी कार्य-कर्त्ताओं के उत्तरदायित्व में अनिश्चित त्रुटियों के समावेश से सम्मेलन के परीक्षार्थियों की हानि न हो और संस्था का कार्य सुचारु-रूपेण संचालित होता रहे। इसके लिए सम्मेलन को परीक्षा के समस्त आरोपित दोषों पर नियंत्रण रखकर योग्य **परीक्षार्थियों** का हित-साधन करना होगा, तभी सम्मेलन-परीक्षाओं से हिन्दी के कोहनूर प्रकट हो सकेंगे।

—भगवानसिंह चन्देल,
'साहित्य-रत्न'

ऋण संबंधी कानूनों का प्रभाव

यद्यपि खाद्यान्नों के भावों के तेज हो जाने के कारण कृषकों की आर्थिक दशा में सुधार हो गया है, फिर भी वह अपनी स्थिति को सुदृढ़ बनाये रखने के विचार से विभिन्न ऐक्टों द्वारा की गई। व्यवस्था से लाभ उठाना चाहते हैं। इसका आभास इस बात से मिलता है कि ऐग्रीकल्चर रिलीफ ऐक्ट और डेट रेडेम्पशन ऐक्ट के अधीन बन्धक सम्पत्ति को छुड़ाने के अधिकार का उपयोग किसान कर रहे हैं १९४८ ई० में ऐग्रीकल्चार रिलिफ ऐक्ट के अधीन चलाए गए मुकदमें तथा आवेदनपात्रों की संख्या घट कर ६६२९ रह गई और इन मुकदमों में ४६ ८४ लाख रुपये के ऋण के मामले थे। १९४८ ई० में डेट रिडेम्पशन ऐक्ट के लागू होने के पूरे सात साल हो चुके थे और इसके अधीन चलाए गए मुकदमों की संख्या ५९०८ से घटकर ४,५८२ ही रह गई और इनमें ४४'२६ लाख के ऋण के मामले थे। रेगूलेशन आफ एग्रीकल्चरल क्रेडिट ऐक्ट के भी १९४८ तक ७ साल पूरे हो चुके थे और विचाराधीन वर्ष में इसके अधीन चलाए गए मुकदमों की संख्या १६,३३५ से घटकर केवल १५,७८६ रह गई और इनमें से केवल १५४६७ मुकदमों के सम्बन्ध में ही कोई निर्णय हुआ। धारा २४ के अधीन संरक्षित भूमि को स्थायी रूप से अलग कर देने के लिए अनुमति प्राप्त करने के उद्देश्य से १५,३३२ आवेदनपत्र प्रस्तुत किए गए।

संवाददाताओं के पत्र

आगरा—में अखिल भारतीय पशु-रक्षा सम्मेलन का द्वितीय अधिवेशन ता० २४,२५, २६, मार्च को आगरा के रामलीला मैदान में सेठ गोविन्ददासजी एम० पी० सभापति महाकौशल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। सभापति श्री बाबूलालजी मीतल द्वारा झन्डा अभिवादन तथा पं० कृष्ण प्रसादजी भार्गव द्वारा प्रदर्शनी का उद्घाटन हुआ। शाम को पं० ऋषीकेश चतुर्वेदी का अध्यक्षता में कवि सम्मेलन हुआ तारीख २५ मार्च को श्री कृष्ण गोपाल दत्त जी चौधरी ऐडवोकेट इटावा, के कर कमलों द्वारा सम्मेलन का उद्घाटन हुआ। कार्यवाहक सभापति सेठ अचलसिंहजी ने प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए सम्मेलन की उपयोगिता पर प्रकाश डाला इसके उपरांत सम्मेलन के चार वर्षों के कार्य का विवरण पढ़कर सुनाया गया तारीख २६ मार्च को माननीय सभापति श्री सेठ गोविन्ददासजी का राजामन्डी स्टेशन पर बैन्ड वाले के साथ स्वागत किया गया। दुपहर को पशु-प्रदर्शनी का उद्घाटन हुआ। इसके बाद सभापति महोदय का सारगभित भाषण हुआ जिसमें उन्होंने केन्द्रीय पशुपालन नीति की विवेचना, गोवध के कानून द्वारा निषेध की आवश्यकता और इस सम्बन्ध में स्वयं द्वारा किये गये प्रयत्नों का उल्लेख, वनस्पति घी से हानि निर्धा कमेटी को इस शिफारस की आलोचना की गोवध निषेध द्वारा भारत के व्यापार को धक्का पहुंचेगा। नस्ल सुधार, गाय का धार्मिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक महत्व, देशी खाद का महत्व रेलवे डेरियों की स्थापना आदि अनेकों समस्याओं पर प्रकाश डाला।

हरिद्वार-श्री स्वामी टेकराम जी महाराज मंडलाचार्य के प्रेम प्रकाशी आश्रम भूपत वाला के वृहत मन्दिर के प्रांगण में श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के सभापतित्व में गौ रक्षा सम्मेलन पर बड़ा जोरदार भाषण हुआ। सर्व प्रथम श्री उदय लाल जी महाराज ने गौ रक्षा पर अपना ओजस्वी भाषण देते हुये बतलाया कि आज जो कुछ सम्मेलन हो रहा है खासकर यह गऊमाता की रक्षा के लिये हैं। क्योंकि भारतवर्ष के अन्दर गऊ माता का पद सबसे उच्च माना गया है। सभापति महोदय ने अपने भाषण में कहा कि आप लोगों ने गऊ के विषय में यह प्रस्ताव पास किया कि गऊ-वध न होना चाहिये।

प्रह्लादपुरी के महन्त नारायण दास जी मुलतान नगर (पाकिस्तान) के प्रसिद्ध मन्दिर प्रह्लाद पुरी की श्री नरसिंह देव जी की मूर्तियाँ हरिद्वार ले आये हैं और उनके मन्दिर निर्माण के लिये श्रवणनाथ नगर हिमालय डिपो के पीछे दो प्लाट भूमि २४ओं फीट लेने के लिये बयाना देकर महन्त जी ने मन्दिर निर्माण के लिये दानी महानुभावों से अपील की है। महन्त जी इस समय सुदर्शन आश्रम, रेलवे रोड, हरिद्वार में ठहरे हुये हैं।

—संवाददाता

ज्ञात हुआ है कि अखिल भारतीय गौ सेवक समाज द्वारा आयोजित अखिल भारतीय गौ रक्षा सम्मेलन काली कमली वाला कैम्प हरद्वार में आने वाले उन प्रतिनिधियों को कम किराये में रिटर्न टिकिट मिलेंगे जिन्होंने कार्यालय से प्रतिनिधि होने का प्रमाण-पत्र मंगा लिया है।

—संवाददाता

जोधपुर में—अखिल भारतीय २० वें आध्यात्मिक साधन समारम्भ का कार्य-क्रम समाप्त हो गया। देश के अनेक भागों से साधक औ आध्यात्म प्रेमी लोग पवित्र क्षिप्रा नदी के तट पर गंगा-घाट पर सांदीपन ऋषि के आश्रम के तट के पास जहाँ भगवान कृष्ण ने शिक्षण प्राप्त किया था, उस स्थान पर चार दिन तक प्रातः प्रार्थना,संयम, आसन, व्यायाम प्राणायाम, मंत्र, जप, हवन, उपासना, सामूहिक प्रार्थना और मनोविज्ञान तथा आत्मसाक्षात्कार, सूर्य करण चिकित्सा एवं अन्य आध्यात्मिक विषयों पर प्रसिद्ध विद्वान् राज्यवासियों और अध्यात्म प्रेमियों के भाषण आदि हुए। आसाम के हिमालय हरिगुप्त जी, बम्बई पोर्ट ट्रस्ट इंजीनियर एस० वी० दलाल ,हैदराबाद के इंस्पेक्टर जनरल पुलिस बी० बी० एस० जेतली, उदयपुर के कमिश्नर श्री लालसिंह जी आदि ने भी भाग लिया।

—संवाददाता

जोधपुर में—राजस्थान की स्थिति सिरोही के बारे में क्या है इसे समझते हुए राजस्थान प्रान्तीय कांग्रेस के सभापति श्री जयनारायण व्यास ने यहाँ बताया कि अभी तक इस राज्य की एक इंच जमीन भी राजस्थान में विलीन नहीं की गई है। उन्होंने कहा कि सिरोही का प्रश्न दो विज्ञप्तियों द्वारा जिसमें एक रियासत सचिवालय के डिप्यूटी मंत्री द्वारा २४ जनवरी को और दूसरी भारत के गवर्नर जनरल के हस्ताक्षर से २५ जनवरी को निकाली गई है इनके द्वारा निपटा दिया गया है।

रियासत सचिवालय की जो विज्ञप्ति है वह तो राजस्थान सरकार की विशेष प्रान्तीय अधिकार क्षेत्र के साथ उस सीमा के प्रभाव शाली उपयोग के लिए आज्ञा देने के अधिकार प्रदान करती है। क्योंकि गवर्नर जनरल के हस्ताक्षर से जो विज्ञप्ति जारी हुई है वह घोषित करती है कि ८६ गाँव और तीन गाँवों का कुछ भाग बम्बई इलाके में विलीन किया जाता है। रियासती सचिवालय की एक दिन पूर्व की विज्ञप्ति में सिरोही के शेष भाग को राजस्थान सरकार के अधीन विशेष प्रान्तीय अधिकार क्षेत्र में एक्ट नं० ४७ सन् १९४७ के अंतर्गत सौंपती है जिसमें कि विलीन होने की व्यवस्था नहीं है। इस प्रकार श्री व्यास जी ने कहा कि सिरोही का एक भाग बम्बई में विलीन हो गया है और दूसरा भाग राजस्थान प्रान्त सरकार द्वारा प्रान्त के बाहर की सीमाह के रूप में उसी प्रकार शासित किया जा रहा है जिस प्रकार पूरा सिरोही राज्य बम्बई प्रान्त द्वारा शासित हो रहा है।

बीकानेर (डाक से)—२४ मार्च को विगा में श्री गंगाराम मिस्त्री के सभापतित्व में हुए कांग्रेस किसान सम्मेलन ने सरकार से पुरजोर माँग की कि जिला बीकानेर तथा सब डिविजन रपनगढ आदि से जहां कि इस साल फसल बिल कुल साधारण हुई है लेवी वसूली फौरन बन्द किया जाय। किसानों की तत्काल हल चाहने वाली समस्याओं के प्रति राजस्थान के खाद्य मंत्री द्वारा दिखलाई गई उदासीनता पर भी इस सम्मेलन में क्षोभ प्रकट किया गया।

—संवाददाता

जयपुर में भारत सरकार के मिलावटी खाद्य के विकास करने वाले अधिकारी डाक्टर सी. एन. आचार्य ने, जिन्होंने गत पखवाड़े में राजस्थान का दौरा किया, सरकार द्वारा संचालित विशेष लारियों से १९५०-५१ में म्युनिसिपैलिटी के कूड़े-कर्कट से १००,००० टन खाद के वितरण के लिये राजस्थान सरकार के सामने प्रस्ताव प्रेषित किये हैं इसके अतिरिक्त सभी म्युनिसिपैलिटियों पर दबाव डाला जायगा कि वे अपने अपने कूड़े कर्कट से मिलावटी खाद तैयार करें। राजस्थान संघ में १५० म्युनिसिपैलिटियाँ हैं और वे कुल मिला कर ३,००,०००, टन खाद तैयार कर सकेंगी। जो आलू, शाक, फल आदि की उपज लगभग ५,००,००० मन प्रति वर्ष बढ़ाने में लाभकारी सिद्ध होगी।

—संवाददाता

ग्राहकों, एजेंटों और विज्ञापनदाताओं को समस्त पत्र व्यवहार मैनेजर, 'देशदूत' इलाहाबाद के नाम पर ही करना चाहिए।

Registered No. A—295

विविध विषयों के हमारे बढ़िया ग्रन्थ

इस पुस्तकमाला की ४ प्रसिद्ध पुस्तकें हैं—(१) 'योगायोग' कवित्वमय श्रेष्ठ उपन्यास। मूल्य ४) (२) 'विश्वपरिचय' विज्ञान-विषय अनन्य ग्रन्थ। मूल्य २), (३) 'रूस की चिट्ठी। रूस का आँखों देखा वर्णन, मूल्य २) (४) 'चार अध्याय' ऐसा उपन्यास जिसमें राजनीति, समाज और स्त्री-पुरुष-समस्या आदि पर विचार है मूल्य १।)

इसमें प्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव के नये गीतों का संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अन्तर्द्वन्द्व से पूर्ण है। छपाई सफाई नयन मोहक। सचित्र सजिल्द प्रति का मूल्य २) दो रुपये।

लेखक भू० पू० काकोरी सके के कैदी श्री मन्मथनाथ गुप्त और राजेन्द्र वर्मा। समाजवाद के अध्ययन के लिये पढ़ना आवश्यक है। मार्क्सवाद के दर्शनों में यह सबसे गहन है। एक दर्जन अध्यायों में विषय का प्रतिपादन हुआ है। मूल्य ६) छः रुपये।

यह श्री श्यामनारायण पाण्डेय की प्रसिद्ध रचना है। इसमें महाराणा प्रताप के हल्दीघाटी वाले संग्राम का वीरता पूर्ण वर्णन बढ़िया छन्दों में है। सजिल्द सचित्र पुस्तक का मूल्य २॥) दो रुपये बारह आने।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, ३६ पन्नालाल रोड, इलाहाबाद

।। प्रधान संपाद ... तिप्रसाद मिश्र निर्मल ... कृष्ण प्रेस, प्रयाग में ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल द्वारा मुद्रित तथा 'देशदूत' कार्यालय प्रयाग, द्वारा प्रकाशित।

अनेक विषयों की बढ़िया पुस्तकें

हिन्दी भाषा का संक्षिप्त इतिहास

यह राय बहादुर डाक्टर श्यामसुन्दर दास के इसी नाम के ग्रन्थ का सारांश है। विषय नाम से ही प्रकट है। अपनी भाषा का इतिहास संक्षेप में पढ़ने के लिए इसे लीजिए। अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य १) एक रुपया।

आदर्श भूमि अथवा चित्तौर

चित्तौर राजपूतों के त्याग के कारण तीर्थ बन गया है। भारत के गौरव स्वरूप उसी चित्तौर का ओजपूर्ण भाषा में लिखा गया इतिहास पढ़कर अपनी जानकारी बढ़ाइए। मूल्य २) दो रुपये।

पंडित जी

नामी उपन्यास लेखक शरद बाबू के इस उपन्यास में कुलीनता, उच्च शिक्षा, द्विज और द्विजेतर, गाँव की भलाई और अपनी उन्नति, नई शिक्षा और मिथ्या अभिमान आदि के सम्बन्ध में बहुत ही विशद विवेचना की गई है। मूल्य २) दो रुपये।

मैक्सिम गोर्की

रूस के इस विश्रुत कलाकार के परिचय के लिए इस पुस्तक को पढ़िए। है तो यह जीवन चरित, पर इसे पढ़ने में कहानी का आनन्द मिलेगा। इसकी जीवनचर्या का ...त पढ़कर पाठक जान सकेंगे कि इस कलाकार को ...विकट कठिनाइयों में होकर गुजरना पड़ा था। छोटे ... में छपी लगभग ढाई सौ पृष्ठों की पुस्तक का ...तीन रुपये।

लेखक भू० पू... वर्मा। समा... वाद के दर्शन... का प्रतिपादन हु...

।।प्रधान संपाद

युद्ध और शान्ति

यह संसार के श्रेष्ठ उपन्यास-लेखक और विचारक काउण्ट लियो टालस्टाय के प्रसिद्ध रूसी उपन्यास 'वार एण्ड पीस' का हिन्दी रूपान्तर है। यह ऐतिहासिक उपन्यास तब लिखा गया था जब लेखक की शैली परिमार्जित हो गई थी और उन्हें अन्तर्द्वन्द्व से छुटकारा मिल कर शान्ति मिल गई थी। लेखक ने उसमें मानव-जीवन का सम्पूर्ण चित्र, अपने समय के रूस की तस्वीर और राष्ट्रों की खींचतान बड़ी खूबी से चित्रित की है—जीवन और मृत्यु के रहस्य का भी उद्घाटन किया है। लगभग पौने सात सौ पृष्ठों की सजिल्द प्रति का मूल्य ५।—) पाँच रुपये पाँच आने

कुलबोरन

श्री चन्द्रभूषण वैश्य ने इस उपन्यास को सत्य घटना के आधार पर लिखा है। समाज की अन्ध परम्पराओं से देश की जो हानि हो रही है उसका इसमें सजीव चित्र है। सुधार करनेवाले को रूढ़ियों के अन्ध भक्तों से जैसा लोहा लेना पड़ता है उसका नमूना उपन्यास का नायक, 'कुलबोरन' है। अच्छे कागज पर छपी सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥) दो रुपये आठ आने।

अल्पता की समस्या

'साम्प्रदायिक भेद पर विशेष अधिकार माँगना और ऊलजलूल दावे पेश करना तथा उन माँगों के पूरा न होने पर देशद्रोह के लिए कमर कस लेना किसी देश-भक्त का काम नहीं।' इसी पर दृष्टि रख कर पंडित वेंकटेश नरायण तिवारी एम० ए० ने तथ्यों और आँकड़ों के साथ पुस्तक में उलझन को समझाया है। पाकिस्तान बन जाने पर भी जिनके मन में ऊपर लिखी भावना है उनके समाधान के लिए इसमें सप्रमाण उत्तर है। मूल्य २) दो रुपये।

ईरान

महा पंडित राहुल सांकृत्यायन ने इस पुस्तक में अपनी ईरान-यात्रा का विशद वर्णन किया है। इसके पढ़ने से ईरान की बहुत-सी जानकारी पाठकों को हो जायगी। भ्रमण-वर्णन कहानी का सा आनन्द देगा। मूल्य १।।=) एक रुपया ग्यारह आने।

मध्य प्रदेश और बरार का इतिहास

इस अत्यन्त प्रामाणिक इतिहास में उक्त प्रदेश से सम्बन्ध रखनेवाली सभी प्राचीन और अर्वाचीन महत्त्वपूर्ण बातें आ गई हैं। मूल्य २।—) दो रुपये पाँच आने।

सुन्दरी-सुबोध

इस पुस्तक में पति-पत्नी को सन्तुष्ट रखने के उपाय इस ढंग से बताये गये हैं कि कहानी का आनन्द देते हैं। इसके सिवा सास-पतोहू, देवरानी-जेठानी, ननद-भौजाई, माता-पुत्र आदि की के दूसरे सम्बन्धों को भी ठीक २ रखने के उपाय बताये गये हैं। पुरुषों के लिए भी बहुमूल्य अनुभूत बातें दी गई हैं। इनको उपयोग में लाने से गृहस्थी सुखमय हो सकती है। ३०० पृष्ठों से अधिक की सजिल्द प्रति का मूल्य २॥) दो रुपये आठ आने।

आदर्श महिला

इस पुस्तक में सीता, सावित्री, दमयन्ती, शैव्या और चिन्ता आदि पाँच प्रसिद्ध देवियों की जीवन-घटनाओं का सजीव सचित्र वर्णन दिया गया है। इसको पढ़ने में कहानी का आनन्द मिलेगा और शिक्षा सहज ही। मूल्य २।।=) दो रुपये ग्यारह आने।

कथा सरित्सागर

इस पुस्तक में आदि से ... तक एक से एक बढ़िया कहानि... जैसा इसका नाम है, यह ... का समुद्र है। प्रत्येक कथा के ... एक न एक दृष्टान्त है। ... सजिल्द प्रति का २॥=) ... रुपये ग्यारह आने।

देव दर्शन

इसमें व्रजभाषा के प्रख्या... देव की जीवनी और उनके ... काव्यों का आलोचनात्मक ... दिया गया है। व्रज काव्य के ... अतिरिक्त साहित्य के विद्या... लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त ... है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ... एक रुपया पाँच आने।

बन्दना

यह श्रीमती चन्द्रमुखी ओझा ... के ५२ मधुर गीतों का सं... आरम्भ में श्री सूर्यकान्त ... 'निराला' की लिखी प्रस... अच्छे कागज पर छपी ... पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

तुलसी के चार दल

(प्रथम और द्वितीय ...) गोस्वामी तुलसीदास जी के ... नहछू, बरवै रामायण, पार्वती ... और जानकी मंगल का ...नात्मक परिचय तथा इन चारों ... की अध्ययनपूर्ण टीका। इसे ... की कुंजी समझिए। मूल्य प्रथम ... का ३) रुपये, द्वितीय भाग का ... दो रुपये ग्यारह आने।

ग्रह-नक्षत्र

इस पुस्तक में ग्रहों और ... आदि से सम्बन्ध रखने वाली ... सभी आवश्यक बातों का ... वर्णन सरल भाषा में है। ... तीन रुपये।

हार या जीत

इस उपन्यास में लेखक ... व्रजेश्वर वर्मा एम० ए०, डी० ... ने एक देहाती लुहार की ... बेटी को घटनाक्रम से, अनाथ ... में, देहात से महराजगंज की ... पृथाकुंवरि के आश्रय में पहुँचा ... है। वहाँ रानी की कृपा ... लड़की ने विद्या पढ़ी। फिर ... गुणों का विकास हुआ जिससे ... सभ्य होकर सम्मान पाता है। ... असहयोग आन्दोलन में ... लिया और अन्त में कलकत्ता ... नौकरी कर ली। कई पुस्तकें ... विदेश यात्रा के बाद रानी के ... की प्रार्थना पर उससे विवाह ... उपन्यास की घटनावली, विचार ... संघर्ष और चन्दा की ... दृढ़ता सराहने योग्य है। ... दो रुपये।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

देशदूत

...र्ष १२, संख्या ३०] [रविवार, ९ अप्रैल १९५०

टेढ़ी, सीधी, खरी-मजेदार

नेहरू- लियाकत अली समझौता ...समाप्त हो चुका है! पाकिस्तान ...के बाद भारत तथा पाकिस्तान ...इतिहास में यह प्रथम राजनीतिक ...हुई है, जिसका संबंध दोनों राज्य ...निवास करने वाले अल्पसंख्यकों से ...लेकिन क्या इससे अल्पसंख्यकों ...समस्या सचमुच हल हो जायेगी? ...परिणाम तो भविष्य में मालूम ...

❀ ❀ ❀

...पूर्वी बंगाल में अनाचार अत्याचार ...हुआ कि हजारों शरणार्थी पूर्वी ...विहार तथा उड़ीसा में बसाये ...हैं॥ इसके बाद लियाकत अली ...मंत्री से दिल्ली की यात्रा हुई, किस ...लिये, अल्पसंख्यकों की समस्या हल ...करने के लिये। अल्पसंख्यकों की ...समस्या पहले भी हल की जा सकती थी ...जब तक कुछ ऊधमबाजी न हो ...तब तक कोई प्रमुख समस्या हल ...होसकती है?

❀ ❀ ❀

प्रश्न यह होता है कि क्या सचमुच ...स्तान भारत के बीच राजनीतिक ...अल्पसंख्यकों के प्रमुख प्रश्नों को ...कोई समझौता हो सकता है? यदि ...सकता है तो इससे सुन्दर दूसरी बात ...क्या सकती है लेकिन अपने राम ...हृदय में भलीभांति यह बात जमती ...है। क्योंकि जब तक पाकिस्तान ...पीछे साम्राज्य वादी शक्तियों की ...सहायता तथा सहानुभूति जारी रहेगी ...तक अंततोगत्वा विशेष लाभ की ...आशा नहीं। बात कुछ ऐसी ही है।

❀ ❀ ❀

कहा जाता है कि पूर्वी बंगाल में ...अनाचार का नग्ननृत्य देख- सुन कर ...भारत की ओर से पाकिस्तानी नीति ...विरोध प्रारंभ हुआ, मामला गरमाने ...अवसर दिखाई देने लगा तो ब्रिटेन ...प्रधान मंत्री मिस्टर एटली को बीच ...बचाव करना पड़ा और लियाकत-अली साहब कृपा पूर्वक दिल्ली पधारे! यदि नेहरू-लियाकत मिलन पाकिस्तान तथा भारत के प्रधान मंत्री की इच्छा के अनुसार हुआ है तब तो आशा की झलक अवश्य मिलती है और यदि मिलन के बीच एटली साहब घुसे हुए हैं तब तो ईश्वर ही मालिक है।

❀ ❀ ❀

पाकिस्तान तथा हिन्दुस्तान के बीच अनेक राजनैतिक समस्यायें हैं जिनका हल होना आवश्यक है। अल्पसंख्यकों का प्रश्न तो सबसे प्रमुख है इसके साथ ही काश्मीर का प्रश्न अत्यन्त महत्वपूर्ण है। किन्तु विदेशी साम्राज्यवादियों के मारे कोई हल निकलने पायेगा या नहीं, यह टेढ़ी खीर है।

❀ ⊙ ❀

काश्मीर के प्रश्न के निबटारे के लिये सुरक्षा परिषद्‌ने एक मध्यस्थ की नियुक्ति करदी है। पाकिस्तान तो उसकी मध्यस्थता मान लेगी लेकिन भारत स्वीकार करेगा या नहीं, यह भी जल्दी ही मालूम होजायेगा। अपने राम की समझ में भारत भी विदेशी मध्यस्थ की मध्यता स्वीकार करलेगा क्योंकि इस वक्त उसे पाकिस्तान को, ब्रिटेन को, अमरीका को तथा सुरक्षा परिषद तीनों को एक साथ प्रसन्न करना है। क्योंकि ऐसा न हो कहीं फिर कोई झमेला उत्पन्न होजाये। मामला कुछ ऐसा ही है।

❀ ❀ ❀

बात यह है कि इस वक्त सुरक्षा परिषद में पाकिस्तान के पक्षपातियों का बहुमत है। भारत को, विशेष भारतीय प्रधान मन्त्री को सुरक्षा परिषद का इसलिये अधिक ध्यान है। अपने राम की समझ में ध्यान रखना भी चाहिए क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय निर्णय तो सुरक्षा परिषद के ही हाथ में है। ब्रिटेन और अमरीका को प्रसन्न रखना हिदायत जरूरी है।

❀ ● ❀

पूर्वी बंगाल के मामले को लेकर केन्द्रीय मंत्रिमंडल में थोड़ा-बहुत मतभेद उत्पन्न होगया है। डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकरजी मंत्रिमंडल से अलग होगये हैं और अब श्री नियोगी भी अलग हो रहे हैं। यह बात सच मुच चिंतनीय है। देखना है डाक्टर विधानचन्द्र राय के शासन का ऊँट किस करवट बैठता है?

पाकिस्तान के मंत्री तो दिल्ली आगये इसलिये अब भारत के प्रधान मंत्री को भी करांची जाना चाहिए। अपने राम की समझ में आवागमन भारत की प्राचीन संस्कृति है। जिस प्रकार आवागमन से जीवों को मुक्तिधाम प्राप्त होता है उसी प्रकार करांची दिल्ली के आवागमन से पाकिस्तान तथा हिन्दुस्तान के बीच उत्पन्न होनेवाली अनेक समस्यायें भी हल होंगी।
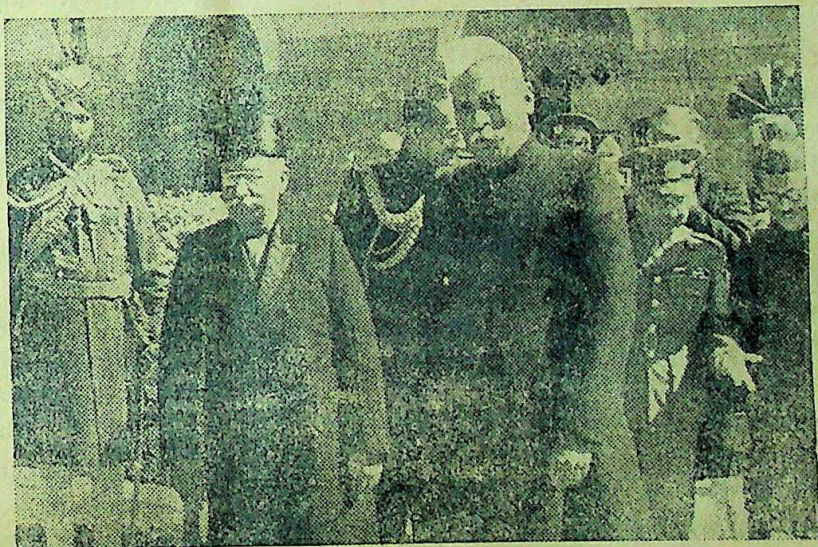
राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद दिल्ली में महाराणा नेपाल के साथ।

कांग्रेस वर्किंग कमेटी की मीटिंग से निकलते हुए सरदार पटेल तथा श्रीमती मनीबेन पटेल।

दिल्ली की चिट्ठी
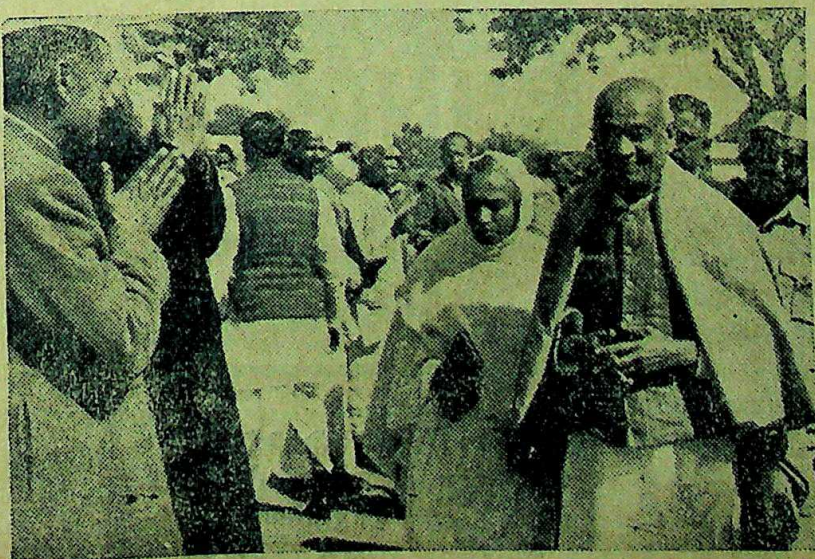
क्या नेहरू-लियाकत मिलन से लाभ होगा ?

प्रजातंत्र भारत का प्रथम प्रजातंत्रीय बजट

(विशेष सम्वाददाता द्वारा)

पाकिस्तान भारत के साथ धूपनौंव का खेल खेल रहा है। पाकिस्तान कोरी शरारत आरम्भ करता है। जब तक भारत सरकार चुप रहती है तो वह शरारत जारी रखता है। जब भारत भारत सरकार कोई कारवाई करने की धमकी देता है तो पाकिस्तान घुटाने टेक देता है।

वही लियाकत अली जो कुछ दिन हुआ पं० जवाहरलाल की सभी याचनाओं को ठुकरा रहा था दिल्ली में भारत के प्रधान मंत्री की सेवा में उपस्थित है। किस लिये ?

क्या पाकिस्तान सरकार अब पाकिस्तान स्थित हिन्दुओं की रक्षा करेगी ? क्या वह पश्चिमी पाकिस्तान से आए हुए हिन्दुओं की जायदाद का मुआवजा देगी ? क्या काश्मीर से पाकिस्तानी फौजें हट जायगी ? क्या भारत को पाकिस्तान का पार्टिसन मिल जायगा। इन सब प्रश्नों का उत्तर लियाकत अली साहब करांची जाकर देंगें। ये उत्तर क्या होंगें इसका अनुमान लगाया जा सकता है।

यह तो सच है कि पाकिस्तान में भारत से युद्ध करने की सामर्थ नहीं किन्तु भारत को तंग करने के उपाय उसे आते हैं। दाँत दिखाना और भिस्कीन बन जाना यह खेल कब तक चलेगा।

पाकिस्तान की कारवाहियों से भारत की शान्ति भंग होती है। भारत सरकार देश समाज की किसी योजना पर निश्चिन्त होकर अमल नहीं कर सकती इस लिये भारत सरकार को पाकिस्तान का घाटा निकालना पड़ेगा पाकिस्तान या तो साम्प्रदायिकता छोड़ कर एक प्रजातन्त्र राज्य बन जाए करना उसका अस्तित्व समाप्त कर दिया जाए। तीसरा उपाय इस समस्या का हल करने का कोई नहीं। जब तक तुर्की योरोप का रोगी बना रहा योरोपीय देशों को उसने चैन से नहीं बैठने दिया। इसी प्रकार पाकिस्तान एशिया का रोगी बना हुआ है। या तो इसे स्वस्थ किया जाए या समाप्त कर दिया जाए। यदि पाकिस्तान तुर्की का अनुसरण नहीं करसकता तो उसे जीवित रहने का कोई अधिकार नहीं। इस प्रकार की चर्चा दिल्ली में होरही है। देखना है भारत सरकार क्या करती हैं।

× × +

भारत सरकार ने यह तो अनुभव कर लिया है कि मध्य श्रेणी के लोगों को टैक्सों के भार से मुक्त करना है किन्तु वह दिन अभी दूर है मध्य श्रेणी सके लोग वास्तव में चैन की सांस ले सकेंगे।

बेकारो और मंहगाई उन्हें बेचैन किये जारही हैं। निकट भविष्य में कोई ऐसी आशा दिखाई नहीं देती कि देश की आर्थिक स्थिति सुधरेगी। असुरक्षिता के जोभाव जनता के मन में बैठ गए हैं वे तब तक नहीं जा सकते जब तक कि भारत सरकार इस बात का वास्तविक प्रमाण न दे कि उसने लोगों की आय बढ़ाने और खान पान की वास्तुओं के मूल्य घटाने का प्रबंध कर दिया है।

बजट तो अवश्य संतोषजनक है किन्तु इस से यह सिद्ध नहीं होता कि भारत की आर्थिक स्थिति क्या होगई है।

जनता तो तभी संतुष्ट होगी जब अनाज, दूध, घी और कपड़े की कीमत घटेगी। दिल्ली के व्यापारियों का हाल तो दिन प्रतिदिन बिगड़ता जारहा है। समय आगया है कि भारत सरकार सावधान हो। टैक्स कम करने की अपेक्षा लोगों में टैक्स देनेकी समता उत्पन्न करने की आवश्यकता है।

उचित ! अथवा अनुचित है !!

विश्व के महान कलाकारों तथा साहित्यकारों के जीवन का हंसता हुआ सत्य !

लेखक, श्री विनोदशङ्कर व्यास

[१]

विश्व के महान कलाकारों की प्रेम सम्बन्धी घटनाओं की छान-बीन करने की मेरी हार्दिक इच्छा थी। मैं कई वर्षों तक पुस्तकें पढ़ता और अपना नोट तैयार करता रहा। 'जागरण' में मैंने विक्टर ह्यूगो और डोस्टाबेस्की की प्रेम कहानियाँ लिखी थीं। हिन्दी में वह नवीन वस्तु थी; इसलिए सभी को वह पसन्द आई।

मेरा यह कार्य केवल अध्ययनशील पुरुषों के लिए ही उपयोगी होता। साधारण पाठक उससे लाभ न उठा सकते थे। क्योंकि हिन्दी में अभी विदेशी लेखकों की रचनाओं से साधारण पाठक न तो परिचित हैं और न उनके जीवन के सम्बन्ध में कुछ उत्सुकता ही रखते हैं। अतएव मेरा वह प्रयास केवल कुछ इने-गिने लोगों के मनोरंजन में ही सहायक होता, उससे जनता को कोई विशेष लाभ न होता। इसी तर्क के कारण मेरा उत्साह विश्राम करने लगा।

अपनी पिछली उसी 'नोट-बुक' के सहारे यहाँ पर मैंने कुछ चुने हुए विदेशी लेखकों के चरित्र का संक्षेप में वर्णन किया है। जो केवल टिप्पणी के रूप में ही हैं। उनका विस्तार करने पर सैकड़ों पृष्ठों की आवश्यकता है। इन विदेशी लेखकों के जीवन पर प्रकाश डालने का मेरा प्रयत्न इसीलिए है कि पाश्चात देशों में इस दिशा में विशेष ध्यान दिया जाता है। वहाँ एक लेखक को लेकर एक विद्वान के जीवन के दिन ही पूरे हो जाते हैं। लेखक और जीवनीकार दोनों का सम्मान और महत्व समझा जाता है। हिन्दी में यह मेरा प्रथम प्रयास है।

इस प्रयास में साप्ताहिक 'कर्मवीर' की वह सम्मति भी बहुत सहायक हुई जो उस समय प्रकाशित हुई थी—'अच्छा होता, व्यास जी हिन्दी-संसार के साहित्यिक महारथियों के जीवन-वृतान्त को पहले लिखते। हमें पहले अपने घर का हाल जान लेना जरूरी है—इसके पहिले कि हम योरप और अमेरिका का हाल जानें।'

उस बात को १५ वर्ष बीत गये। हिन्दी के महारथी उतने स्पष्ट और उदार नहीं हैं, जितने योरप और अमेरिका के लेखक पाये जाते हैं। वहाँ के लेखक अपने सम्बन्ध में स्पष्ट विचार सुनना पसन्द करते हैं, वे कड़ी से कड़ी आलोचना पर विचलित नहीं होते। दूसरी ओर हिन्दी में जीवनी लिखने का अर्थ ही प्रशंसा करना होता है। न तो लेखक अपनी दुर्बल घटनाओं का वर्णन प्रकाशित कराना चाहता है और न किसी तरह की टीका सहन करने का अभ्यस्त होता है। ऐसी अवस्था में यह कार्य कितना कठिन प्रतीत होता है।

निराला और उग्र की भाँति हिन्दी में कितने और है ? जो खुले मैदान अपने कार्यों को स्वीकार करें !

हिन्दी के कुछ महान कलाकारों के वास्तविक जीवन की घटनाओं का वर्णन (अपनी 'दिन-रात' पुस्तक में) कर मैंने कोई अपराध अथवा अन्याय नहीं किया है। विश्व साहित्य के अमर नक्षत्रों का कुछ परिचय यहाँ देकर निर्णय में हिन्दी-संसार के सम्मुख ही छोड़ता हूँ।

यूरी पीडेस—ईसा से ४८० वर्ष पहले हुआ था। सुकरात उसका अभिन्न मित्र था। उस युग का महान नाटककार माना जाता है। अपनी प्रथक पत्नी मेलिटो के दुश्चरित्र होने के कारण उसने तलाक दे दिया। दूसरी पत्नी से भी वह असन्तुष्ट रहा और अनेक कारणों से उसे भी उसने छोड़ दिया। इन घटनाओं का प्रभाव उसकी रचनाओं पर पड़ा। यूरिपीडेस पाश्चात देश का प्रथम नाटककार है, जिसने स्त्री की भावना, उसका चरित्र और स्त्री पुरुष के सम्बन्ध का विशेष विवरण उपस्थित किया था। उसका दाम्पत्य जीवन दुख से भरा हुआ था।

वरजिल—के सम्बन्ध में प्रमाण दिया गया है कि २६ वर्ष की अवस्था में वह उस अस्वाभाविक पाशविकता का अपराधी पाया गया, जिस पर रोम का साम्राज्य स्थापित किया गया था।

दान्ते—के लिए ऐतिहासिक प्रमाण मिलता है। बेट्राइस के देहान्त के बाद बहुत दिनों तक वह दुखी रहा। कुछ समय पश्चात अपने जीवन का निश्चित क्रम बनाने के लिए जेमा नाम की एक स्त्री से उसने विवाह किया। उससे उसे दो पुत्र और दो पुत्रियाँ उत्पन्न हुईं, किन्तु उसके स्वभाव से वह घृणा करता था। प्रत्येक बात में वह उससे प्रश्न करती थी। उठने-बैठने, हंसने-बोलने, बाहर जाने आदि छोटी छोटी बातों का उसे विवरण देना पड़ता था।

(शेष पृष्ठ १४ पर)

भारतवासियो बर्बर मत बनो

साम्प्रदायिकता से राष्ट्र का उद्धार न होगा

लेखक, श्री भगवतीचरण वर्मा

पूर्वी बंगाल की बर्बरता तथा साम्प्रदायिक उद्दंडता से भारत में अशांति तथा प्रतिक्रिया की भावनाओं का उत्पन्न होना अनिवार्य है। ऐसे समय में सहिष्णुता तथा धैर्य की आवश्यकता है। प्रतिक्रिया की भावना से राष्ट्रीयता की हानि होगी। इस लेख में श्री वर्मा जी ने भारत तथा पाकिस्तान के बीच उत्पन्न होने वाली स्थिति का वर्णन करते हुये राष्ट्रीय सरकार की सहायत के लिए सलाह दी है। लेख सामयिक तथा सुन्दर है।

सरदार वल्लभ भाई पटेल।

...पुरानी कथा है, और अपने ... देश की ही कथा है। एक ... किनारे एक महात्मा खड़े थे ... पानी में डूबते हुए एक विच्छू ... बचाने के लिए उसे तालाब से ... निकाल रहे थे। जैसे ही वह उस ... को हाथ में पकड़ कर जल से ... थे वैसे ही वह बिच्छू उनके हाथ ... मार देता था और उनके हाथ ... छूटकर पानी में गिर पड़ता था। वे ... उस बिच्छू को फिर पकड़ कर ... निकालते थे, वह बिच्छू फिर डंक ... था और फिर पानी में गिर ... था।

... पास में एक आदमी खड़ा ... से यह देख रहा था। अन्त में ... उसने पांच छै दफे यह होता देखा ... उससे न रहा गया। उसने बढ़कर ... महात्मा से पूछा "महात्मन्! एक ... कि इस पापी जीव की रक्षा करना ... है और एक यह कि यह लगातार

शिक्षामंत्री मौलाना आज़ाद

उन महात्मा ने हँस कर उत्तर दिया—वत्स! इस बिच्छू का धर्म-गुण है डंक मारना, और मैं मनुष्य हूँ। इसलिए मेरा धर्म है क्षमा करना तथा परोपकार करना। जब इतना निकृष्ट प्राणी होकर यह बिच्छू अपने धर्म को मरते हुए भी नहीं छोड़ रहा है तो तुम समझते हो कि मैं मनुष्य ऐसा विकसित प्राणी होकर अपने धर्म को छोड़ दूंगा।

इस कथा में त्याग, बलिदान और अहिंसा का वह मूल है जिसके आधार पर हमारे समाज का विकास हुआ है। इसी संस्कृति को विश्व में हिन्दू संस्कृति कहा जाता है और इसी संस्कृति पर हमें गर्व है। जहां मिस्र, चीन आदि की आपके डंक मारता है। मुझे आश्चर्य हो रहा है कि फिर भी आप इस निकृष्ट कीट की रक्षा करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

आदिम संस्कृतियां मिट गईं वहां हमारी प्राचीन संस्कृति आज भी जीवित है, और दुनिया हमारी संस्कृति की ओर बड़ी आशा के साथ आंखें लगाए है। हरेक प्रकार के प्रहार हमारी संस्कृति पर हुए। बर्बर लोगों ने हमारे देश पर आक्रमण किया, उन्होंने तरह तरह की ज़्यादतियां कीं, हमें हज़ार वर्ष तक गुलामी भी करनी पड़ी। लेकिन हमारी संस्कृति वैसी की वैसी अटल और अडिग रही है।

आज हमारी अग्नि परीक्षा का समय है। आज जब हम स्वतंत्र और समर्थ हैं तब हमें देखना है कि हम अपनी उस संस्कृति की रक्षा कर सकेंगे जो हमारी निजी है, या फिर हम उसे खोकर अन्य देशों की संस्कृति को अपना लेंगे तथा उन अन्य देशों की सांस्कृतिक और नैतिक गुलामी करेंगे?

अहिंसा सबल और समर्थ का धर्म है, निर्बल और असमर्थ की अहिंसा के कोई अर्थ नहीं होते। विश्व इतिहास में हमारे देश के अहिंसा युद्ध का जो सुनहरे अक्षरों से लिखा हुआ परिच्छेद है उस परिच्छेद की अभी समाप्ति नहीं हुई है। हम अभी गर्व के साथ यह दावा नहीं कर सकते कि हमारी अहिंसा की संस्कृति ने विश्व की अन्य ... संस्कृतियों पर विजय प्राप्त कर ली है। सबसे पहले हमारी इस उच्चतम और आदर्श संस्कृति को हम लोगों की पशुता पर ही विजय पानी है। आज हमारे अन्दरवाले मानव का हमारे अन्दरवाले पशु में युद्ध छिड़ गया है, उस युद्ध में हमारे अन्दर वाले मानव को विजयी होना है।

[२]

शोक, क्रोध और ग्लानि की एक लहर ने हमारे समस्त देश को डुबो दिया है। पूर्वीय पाकिस्तान के मुसलमानों ने वहां के हिन्दुओं के साथ जो अत्याचार किये हैं या कर रहे हैं उनकी खबरों से हम सब मर्माहत हैं। जिस प्रकार लोगों की निर्मम हत्याएं की गई हैं जिस प्रकार उनकी बहू बेटियों की इज्जत लूटी गई, जिस प्रकार लोगों के मकान जलाए गए इन समाचारों से अखबारों के पन्ने रंगे हैं कुछ ऐसा लगता है मानो पूर्वीय पाकिस्तान के हिन्दुओं का वहां रहना असम्भव सा हो गया है, अपनी दुःख कथाएं लेकर लुटे हुए, ये घरबार लाखों शरणार्थी वहां से आ चुके हैं और लाखों आ रहे हैं।

पूर्वीय पाकिस्तान में जो कुछ हो रहा हैं या हुआ है उसकी प्रतिक्रया हमारे देश में होना, हमारे देशवासियों पर उसका गहरा असर पड़ना स्वाभाविक है। लोगों में पाकिस्तान के विरुद्ध ग्लानि है, क्रोध है। अकसर रास्ता चलते हुए लोग यह कहते सुने जाते हैं कि इस सबके लिए पूर्वीय पाकिस्तान को दड मिलना चाहिये। कुछ लोगों ने तो पत्रों में यह सलाह भी दी है कि भारत को पूर्वीय बंगाल पर हमला करके अवस्था को सुधारना चाहिये।

पाकिस्तान के साथ क्या युद्ध आवश्यक है या फिर बिना युद्ध यह मामला सम्हाला जा सकता हैं, इसका निर्णय करने की जिम्मेदारी देश के व्यक्ति की नहीं है, देश की सरकार की है। हमारे देश की सरकार इस ओर अधिक से अधिक प्रयत्नशील है और वह अपने कर्तव्य को तथा अपनी सीमाओं को भली भांति समझती है। युद्ध बच्चों का खिलवाड़ नहीं हैं, और हमें यह न भूल जाना चाहिये कि पाकिस्तान के खिलाफ़ युद्ध एक अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध का रूप धारण कर सकता है। इसके अलावा युद्ध द्वारा हम स्थिति सम्हाल लेंगे यही कब निश्चित है? युद्ध के अर्थ हैं भयानक नर संहार और अविकसित तथा अभावग्रस्त देश को एक लम्बे अरसे के लिए बुरी तरह तोड़ देना।

हमें अपनी सरकार पर पूर्ण विश्वास होना चाहिये। सत्य और न्याय के लिए अगर वह आवश्यक समझेगी तो युद्ध भी करेगी। लेकिन हमारी वर्तमान सरकार किसी भी हालत में कोई गैर ज़िम्मेदारी से भरा क़दम न उठावेगी, व्यक्तिगत रोष अथवा क्रोध का गुरु गंभीर राजनीति में कोई स्थान नहीं।

पाकिस्तान के अत्याचारों का एक दूसरा पहलू भी है जो इस समय कहीं कहीं प्रदर्शित हो रहा है और जिसके सम्बन्ध में हमारे देशवासियों को सावधान रहना आवश्यक है। वह पहलू हैं हमारे देश के हिन्दुओं का पाकिस्तान पर नहीं बल्कि मुसलमानों पर क्रोध और हमारे देश के मुसलमानों से पाकिस्तान के हिन्दुओं पर अत्याचार का बदला लेने की भावना! इस भावना को भड़काने का काम भी अन्दर ही अन्दर चल रहा है गैरज़िम्मेदार और स्वार्थी लोगों द्वारा।

कभी कभी कुछ स्थानों से यह खबरें आ जाया करती है कि वहाँ के मुसलमानों के ऊपर वहाँ के हिन्दुओं ने हमला किया यद्यपि हमारे देश की सरकार की सतर्कता के कारण ये हमले वहीं के वहीं दबा दिये जाते हैं। पर इन खबरों को पाकिस्तान के पत्रों में बहुत अधिक बढ़ाकर छापा जाता है तथा दुनिया के आगे पाकिस्तान में जो कुछ हो रहा है इसका औचित्य प्रदर्शित किया जाता है।

इस सम्बन्ध में हमें अपने कर्तव्य को अच्छी तरह समझ लेना चाहिये।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

प्रधान मंत्री पंडित नेहरु पाकिस्ता से समझौता कर रहे हैं।

उत्तर प्रान्त में सहकारी खेती

कृषि सुधार के लिए योजानायें क्या सफल होंगी ?

लेखक, श्री वेदप्रकाश शर्मा एम०एस० सी०

उत्तर प्रांत में भारत के अन्य प्रांतों की भांति मुख्य पेशा कृषि है। कृषि को सुधारने के लिये सरकार तथा जनता द्वारा सुझाव व योजनायें पेश की गई हैं। इन सुझावों में सहकारी खेती का सुझाव भी एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस सुझाव के विषय में विचार प्रकट करने से पहले हमको अपने किसानों की समस्याओं पर सोच विचार करना चाहिये।

हमारे प्रांत में किसानों के सामने सबसे पहला सवाल जोत का है। प्रांत में जोत का आकार केवल ४ एकड़ के लगभग है। ८० फीसदी कृषकों की जोत ५ एकड़ से छोटी है। इस छोटी जोत से किसान का पेट पूरी तौर से नहीं भर पाता। बैलों से साल भर काम नहीं लिया जा सकता। कृषक, आधुनिक और उन्नतिशील यन्त्रों का भी प्रयोग नहीं कर सकता। इसके अलावा फसलों के हेर-फेर तथा सरकार द्वारा सुझाये हुये उन्नति के साधनों को हमारा किसान भली भांति उपयोग नहीं कर सकता। यहां पर आर्थिक दृष्टि से ठीक जोत का आकार नहीं बताया जा सकता। फिर वही जोत आर्थिक दृष्टि से ठीक कही जा भी सकती है। जिस पर एक किसान अपने छोटे मोटे साधनों व एक हल व एक जोड़ी बैल का भलीभांति प्रयोग कर सके। इसके अनुसार ऐसी जोत का आकार करीब १० एकड़ के आता है। इस प्रकार की जोत का बनाना मौजूदा हालत में असम्भव मालूम पड़ता है।

यदि ऐसा किया जाये तो सैकड़ों किसानों को अपनी जोत को छोड़ना पड़ेगा और इन मनुष्यों के लिये कोई और साधन जिससे उनकी रोजी चले, नहीं खोजा जा सकता। घरेलू उद्योग धन्धों के चरम विकास द्वारा भी इस समस्या का सुचारु रूप से कोई हल नहीं हो सकता। चकबन्दी द्वारा भी समस्या नहीं सुलझायी जा सकती, क्योंकि प्रायः इन छोटी जोतों को चकबन्दी द्वारा कोई विशेष लाभ न होगा तथा द्वितीय हिन्दू कानून इस बात की आज्ञा देता है कि किसी किसान के मरने पर उसकी जोत बराबर बराबर उसके लड़कों में बांट दी जाय। इन सब समस्याओं के कारण हमारे सम्मुख केवल एक तरीका रह जाता है, और वह है—सहकारी खेती।

यह नया तरीका कृषि उत्पादन के साधनों का सहकारी उपयोग करने पर निर्भर रह सकता है। इसका अर्थ यह है कि सहकारी कृषि समिति समस्त बैलों व यन्त्रों का अपने मेम्बरों को उनका कार्य प्रदान करे या सरकारी सिंचाई के साधनों का उपयोग अपने सदस्यों के करने की सहूलियत दे। इन सहूलियतों में वृद्धि के अर्थ होंगे अधिक उत्पादन और कृषकों की आर्थिक दशा में सुधार। इन सहकारी कृषि समितियों के लिये जमीन का इकट्ठा करना आवश्यक है। इसका यह अर्थ नहीं होता कि जिन किसानों की जमीन एक समूह में आगई है उनके अधिकार खत्म हो जावें परन्तु यह अर्थ है कि जमीन के एक समूह में आजाने के उपरान्त सहकारी समिति उसका संचालन करे।

यद्यपि जमीन का इकट्ठा करना आवश्यक है, परन्तु दूसरे साधनों का जैसे बैल इत्यादि का इकट्ठा करना आवश्यक नहीं है। परन्तु सदस्यों के इन साधनों की खोज तथा आवश्यकता से अधिक वस्तुओं को हटाना और अच्छी नस्ल के सांड, दुधारू गाय व उन्नतिशील यन्त्रों का प्रयोग कराना इन समितियों का एक मुख्य कार्य है।

भारत के किसी प्रांत में जमीन का इकट्ठा करके सहकारी कृषि का प्रयोग नहीं किया गया है। निम्नलिखित तरीके के अनुसार एक सहकारी कृषि समिति का कार्य चलाया जा सकता है। यही तरीका झांसी जिले के दो गांवों में जहां सहकारी कृषि आरम्भ की गई है, उपयोग किया जा रहा है।

(१) सहकारी कृषि समिति का क्षेत्र एक गांव माना जाता है।

(२) समिति इस बात का विचार करती है कि सदस्यों की समस्त भूमि इकट्ठा की जावे या हर सदस्य को थोड़ी भूमि अलग भी दी जावे।

(३) भूमि जो इकट्ठा की गई है उसका मूल्य आंका जावे जिससे हर सदस्य का भूमि में भाग मालूम हो जाये।

(४) यन्त्रों और बैलों की जोड़ी का इकट्ठा करने का प्रयत्न करना। आवश्यकता से अधिक बैलों और यन्त्रों को हटाया जाएगा।

(५) कार्य रूपी खर्चों के लिये समिति को रुपये की जरूरत पड़ेगा। झांसी के गांव में जहां सहकारी खेती का प्रयोग हुआ है, उसके अनुसार प्रत्येक समिति को १०,००० रुपया कार्य वाहक खर्चों के लिये और १५००० से २०००० रुपये तक सुधार करने व सदस्यों को अच्छे बैल और दूध वाले जानवरों के लिये कर्जा देने के लिये आवश्यकता होगी।

(६) समिति को इकट्ठा की हुई भूमि के लिये एक खेती की योजना तैयार करनी होगी।

(७) समिति को परिश्रम का मूल्य नियुक्त करना होगा।

(८) समिति को अपने सदस्यों की कार्य संस्थायें बनानी होगी। इन संस्थाओं के जिम्मे भिन्न भिन्न कार्य होंगे और यह सदस्यों के लिये कार्य निर्धारित करेगी।

(९) रिजर्व फंड तथा दूसरे फंडों के लिये रुपया निकाल कर और साल भर का समस्त खर्चा निकाल कर जो लाभ होता है उसको जमीन के अनुपात के अनुसार बांटना।

सहकारी कृषि समिति के लाभ

(१) सरकार द्वारा दी गई सहूलियतों का ठीक ठीक प्रयोग तथा सुझावों या योजनायों का शीघ्र व ठीक ठीक प्रयोग।

(२) छोटी जोतों के किसानों को बड़ी जोत के किसानों के समान लाभ।

(३) खेती के उत्पादन के खर्चे में बैल व मनुष्य के परिश्रम का ठीक उपयोग होने के कारण, कमी।

(४) फसलों का आवश्यकता अनुसार उत्पादन। इस कारण से गांव के पशु और मनुष्यों को खाना ठीक मिलेगा।

(५) फी एकड़ उत्पादन बढ़ेगा। क्योंकि सिंचाई व खाद का उपयुक्तमात्रा में प्रयोग होगा।

(६) हमारे छोटे किसानों का गांव के साहूकारों और महाजनों से छुटकारा मिलेगा।

इन लाभों के उपरान्त भी सहकारी कृषि को सफल बनाने के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि कृषकों को सहकारिता के नियम व लाभ बतलाये जाये। इसके सिवाय कृषक को सहकारी कृषि सामितियों के लाभ बताये जायें जिससे कृषक अपने आप इन समितियों को स्थापित करने की इच्छा प्रकट करे। सरकार को इस सम्बन्ध में कदम बहुत फूंक फूंक रखना चाहिये।

१९४८ में संयुक्त प्रांत में दो सहकारी कृषि समितियां नैनवाड़ा और डारौना नामक गांवों में जो झांसी जिले में हैं स्थापित की गई। पहले साल में उनकी प्रगति काफी अच्छी रही।

साहित्य चर्चा

चरवाहे

सुन्दर एकांकी नाटकों का संग्रह

लेखक, श्री सत्येन्द्र शरत

चरवाहे, श्री उपेन्द्रनाथ अश्क के एकांकी- नाटकों का तीसरा संग्रह है। इससे पहले अश्क जी के दो एकांकी संग्रह, देवताओं की छाया में, और तूफान से पहले, प्रकाशित हो चुके हैं और जैसा कि' चरवाहे, के आमुख में कौशल्या जी ने कहा है पहले के संग्रहों के नाटक अपने समस्त [illegible] कौशल, हास्य- व्यंग्य, दुःख- [illegible] यथार्थ अथवा आदर्श की अभि[illegible] के बावजूद सीधे, सरल और बोध[illegible] परन्तु, चरवाहे, के नाटक प्रतीका[illegible] हैं। यह नाटक प्रतीकों और स[illegible] की सहायता से आगे बढ़ते हैं। [illegible] कुछ नाटकों में तो नाटकीय पात्र, [illegible] न रह कर स्वयं ही प्रतीक बन गये हैं। 'चुम्बक' और 'सूखी डाली' इसी प्र[illegible] के नाटक है। चुम्बक का प्रमुख [illegible] गौतम है जिसका व्यक्तित्व स्त्रियों के लिए चुम्बक का काम करता है [illegible] इसी प्रकार ' सूखी डाली, की छोटी [illegible] बेला, पेड़ से लगी वह डाली है [illegible] लगी- लगी सूख कर नहीं मुरझा[illegible] चाहती। ' और इन प्रतीकों को पू[illegible] पूरी तरह व सफलतापूर्वक निबाह[illegible] जाने में ही अश्क जी का नाटकी[illegible] कौशल प्रकट होता हैं!

चरवाहे के इन सात नाटकों [illegible] तीन नाटकों ' चरवाहे ' ' चुम्ब[illegible] और ' चिलमन ' के प्रमुख पात्र [illegible] हैं। कान्त, गौतम और हरि—यह ती[illegible] ही कवि हैं, लेकिन एक दूसरे से कि[illegible] भिन्न।

नाटक के यह तीनों कवि- [illegible] अपना अलग अलग व्यक्तित्व र[illegible] हैं; और इतना अलग कि लगता है [illegible] एक नाटककार की कृति नहीं हैं, [illegible] भिन्न नाटककारों की रचना हैं। इन [illegible] पात्रों का चरित्र - चित्रण अध्याधि[illegible] स्पष्टता और अलगाव रखते हुए कि[illegible] गया है जो की अश्क जी के 'चरवाहे' के सभी नाटकों की एक अपनी नि[illegible] खूबी है। 'चरवाहे' के सभी नाटकों [illegible] पात्रों का चरित्र अंकन करने में अश्क जी को बेहद सफलता मिली है।

इसी प्रकार, एक और विशेषता [illegible] इन नाटकों की है वह है चुभते हुए और काव्यात्मक संवाद। संवाद लिखने में तो अश्क जी को कमाल हासिल है। इतने पैने, रोचक और अनूठे संवाद हिन्दी के बहुत ही कम नाटकों में मिलते हैं। अपनी बात की पुष्टि के लिए

(शेष पृष्ठ ११ पर)

कहानी

विजय

लेखक, श्री आनन्दीप्रसाद मिश्र

युद्ध सदा राष्ट्र तथा जनता के लिये अहितकर है। इस एतिहासिक कहानी में युद्ध की विभीषिका का तिरस्कार किया गया है और यह चित्रित किया गया है, कि शांति, त्याग तथा धैर्य से ही राष्ट्र का कल्याण हो सकता है और जनता सुखी रह सकती है। कहानी पठनीय तथा रोचक है।

"अमरसिंह, क्या समाचार हैं?"

"सरकार, प्रत्येक स्थान के यही समाचार है कि देहली राज्य प्रासाद की दीवारें डगमगा रहीं हैं। उनका 'दिया' टिमटिमा रहा है, केवल बुझने की देर है। उस डगमगाते राज्य-भवन को आवश्यकता है केवल एक शक्तिशाली हाथ की, जो उसे धराशायी करदे। मेवाड़ के राज्य कुमार! वह शक्तिशाली हाथ आपका ही होना चाहिये। याद कीजिए देहली के बादशाहों द्वारा आपके पूर्वजों की कैसी कैसी दुर्गति हुई है। इतनी सी स्मृति ही आपके हृदय में अग्नि भड़काने और उसने बदला लेने के लिये काफी है।"

कुमार रजत सिंह मुस्कराये;—बोले "मैं अपने राज्य में विद्वेषाग्नि भड़काना आवश्यक नहीं समझता।"

"परन्तु तनिक अपने पूर्व पुरुषाओं की ओर तो देखिए, अपनी शक्ती की ओर तो निहारिये।"

"इससे पूर्व मुझे यह सोचने दो कि प्रजा की भलाई किसमें है? अभी अभी हमने होल्कर की फौजों को हटाया है। मेवाड़ थका हुआ है और युद्ध के घाव अभी इतनी शीघ्र भरे भी नहीं हैं। क्या केवल इसीलिए कि रजत सिंह का नाम इतिहास-प्रसिद्ध होजाये, हम मृत्यु की गर्म बाज़ारी करें? मेरेलिए यह छोटा सा पैतृक राज्य ही काफ़ी है। मेरे लिए स्वर्ग-सुख यही है कि मेरी प्रजा प्रसन्नता पूर्वक जीवन यापन करे।"

"जैसी अन्नदाता की मर्जी! परन्तु याद रखियेगा, कि इस खींचा तानी के युग में जो आगे बढ़कर वार नहीं करता; वही बेमौत मारा जाता है। अहिंसा का नियम राजाओं और सिपाहियों के लिए नहीं बनाया गया। न सिपाहियों व राजाओं को उसका पालन करना चाहिए। आजकल तो वही राजा राज्य करता है, जो मौके पर नहीं चूकता। उसी का राज्य फूलता फलता है, जो वीरता के साथ मरने के लिए सबसे आगे निकल

"बस अमरसिंह! बहुत हुआ। इस समय इस प्रसंग को जाने दो। कल दरबार बुलाओ, उसी में इसका निर्णय करेंगे। बहुसम्मति से जो काम किया जाता है, वही काम ठीक उतरता है। उसीमें विजय-श्री हाथ लगती है।"

"बहुत अच्छा। परन्तु प्रायः इस प्रकार देर भी होती है। दीन-हितरक्षक, मेरी सम्मति में आपके राज्य की भलाई इसी में है कि युद्ध पताका तुरन्त फहरा दी जाय। या तो इसका निर्णय तुरन्त ही कर लीज़िए, अन्यथा इसका ध्यान छोड़ दीजिये। डरते डरते कमजोर हाथ छोड़ने में क्या रखा है?"

"घबराओ नहीं, जब हम हाथ छोड़गें, पूरे बल से।"

(२)

आवाजें खामोशी में विलीन हो गई थी; द्वितीया का चन्द्रमा निकल आया था, परन्तु उसकी ज्योति सुन्दर दृश्यों पर कहाँ पड़ रही थी? मेवाड़ के राज्य-प्रासाद की वाटिका दूर दूर तक अपने अद्वितीय होने के कारण प्रसिद्ध थी, मेवाड़ के अधिपतियों ने कभी इसके नाम पर धब्बा भी न आने दिया था। ईरानी गुलाब, चमेली और स्वर्णमयी चम्पा के पुष्पों ने उसे संसार में प्रसिद्ध कर दिया था। इसी वाटिका के बीच में एक ताल था, चन्द्रमा की मन्द मन्द ज्योति में वह ऐसा मालूम होता था कि किसी ने श्वेत चादर बिछा दी हो। चारों ओर निस्तब्धता छाई हुई थी, ऐसे समय में कुछ असम्भव न था कि राजकुमार के विचार युद्ध के दृश्यों से बहुत दूर फिर रहे हों।

"सरकार, आप तो बिलकुल चुप हो गए?"

"मैं अपने विचारों को नहीं रोक सकता। न जाने कितनी बार पिता जी ने इसी आकाश के नीचे बैठकर युद्ध के मन्सूबे बांधे होंगे और विजय के सुख-स्वप्न देखे होंगें। यही चन्द्रमा उस समय भी था, और यही अब मेरे मस्तक पर भी चमक रहा है। ओ शङ्कर के मस्तक के तिलक! तू मेवाड़ के भावी राजाओं को क्या क्या कहानियां न सुनाएगा।"

यह शब्द उसके मुख से स्वयं निकल गए थे। दुख के कारण राजा का सिर झुक गया। कुछ सोचकर उसने अपना सिर उठाया, मस्तक पर पसीने की बूंदे चमक रही थीं। उसने पूछा—"भीतर किसे भेजा गया था?"

"मेरा पुत्र विजय सिंह।"

"उसे यहां भेजो। मैं पहिले सुनना चाहता हूँ कि वह क्या कहता है?"

मंत्री चला गया। रजतसिंह ताल में विकसित कमल पुष्पों को निहारता रहा। ऐसा ज्ञात होता था कि जैसे कमल पुष्पों की छोटी छोटी पत्तियाँ वायु वेग से झुक झुककर चन्द्रमा के प्रति नत मस्तक हो रही हों।

(३)

"अन्नदाता, सेवक उपस्थित है।"

रजत सिंह न जाने किन विचारों में लीन थे, इस आवाज से चौंक पड़े।

"अच्छा, विजय! तुम हो, आओ बैठो।"

राजकुमार ने अपने निकट ही उसे बैठने को स्थान दिया। विजयसिंह को कुछ संकोच हुआ, राजकुमार ने तनिक सख्ती से कहा—"यह समय आदर भाव प्रकट करने का नहीं है। मैं तुम से बहुत बातें मालूम करना चाहता हूँ। अतएव तुरन्त बैठ जाओ, देर न करो।"

"जो आज्ञा कह कर विजयसिंह अपने मालिक राजकुमार के पास ही बैठ गया।

"मरहठा राज्य और हमारे बीच क्या ताल्लुक है? क्या युद्ध के विना काम नहीं चल सकता? सच सच बताओ?"

"सरकार! इस आज्ञा की आवश्यकता नहीं; जो कुछ कहूँगा, सत्य ही कहूँगा। इस सेवक ने झूठ बोलकर आप को कब धोका दिया है? ऐसी दशा में जब कि देश सर्वत्र दुखी है, मैं ऐसी बात कर ही नहीं सकता।"

"तब तो जो अन्देशा था वही हुआ क्या तुम्हारे विचार से अब युद्ध के विना काम नहीं चल सकता? आह! मेरे देश का भाग्य!"

विजयसिंह कुछ देर चुप रहा, फिर बोला,—उसकी आवाज बहुत धीमी थी, उसने कहा—"सरकार! ऐसी घबराहट क्यों है? क्या मेवाड़ में वीरों की इतनी कमी हो गई है कि उसके अधिपति युद्ध के जिक्र से कांपने लगें।"

"प्रिय विजय! मुझे तुम जैसे वीरों की ओर से कोई भय नहीं है। मैं तो उन लोगों के दुख की याद करके कांपने लगाआ हूँ, जो चुपचाप यह आफत झेलने के लिये तैयार होंगे। गरीब कृषकों की खेतियां उजड़ जायेंगी, सैंकड़ों अनाथ और बेचारी विधवाएं उन वीरों की प्रतीक्षा करेंगी, जो मृत्यु की गोदी में सो चुके होंगे। आह! वह वीर, जीत की आशा से जान देंगे, परन्तु जीत ने का उत्सव नहीं देख सकेंगे। वे बाजे नहीं सुन सकेंगे, जो शत्रु को परास्त करके जीत की खुशी में बाजे बजाये जायेंगे। युद्ध का क्या अर्थ है? मृत्यु, अकाल, लुट, शत्रु की तलवार! ऐ परमात्मा! तू युद्ध क्यों कराता है? क्यों इतने मनुष्यों को धराशायी कर मृत्यु-मुख में धकेलता है?

"सरकार मैं छोटा हूँ, बुद्धि विहीन

(शेष पृष्ठ १२ पर)
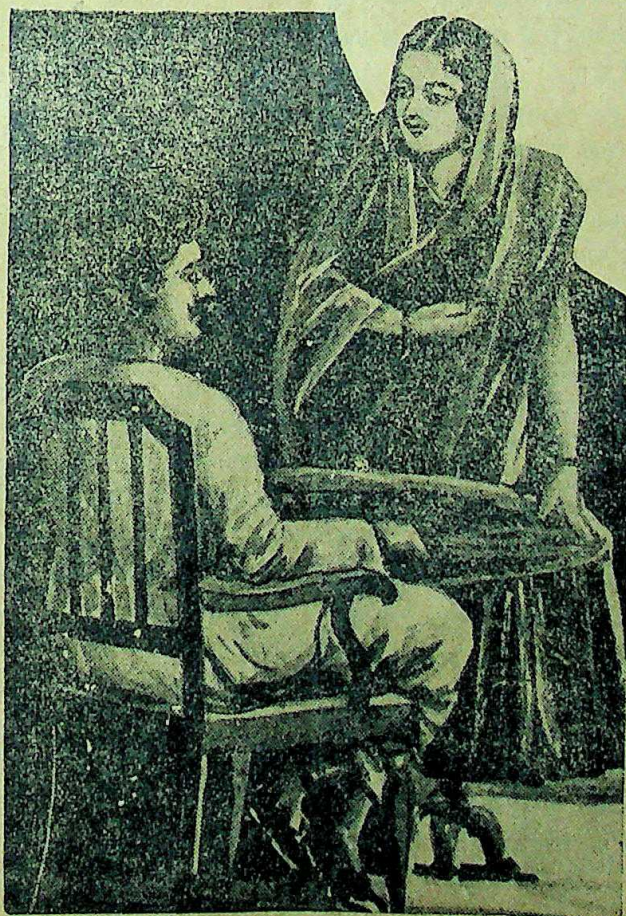
उसने कहा—जनता का हित ही हमारा धर्म है।

(शेष पृष्ठ ५ के आगे)

[३]

पाकिस्तान एक मजहबी राज्य है। मज़हबी अंध विश्वास, कट्टरता, असहिष्णुता एवं हिंसा पर स्थापित और इसका परिणाम यह है कि पाकिस्तान में न्याय नहीं है, सद्भावना नहीं है, पाकिस्तान की सरकार वहाँ की स्थिति सम्भालने में असमर्थ है। पाकिस्तान में जो कुछ हो रहा है या हुआ है उसको तह में लूटमार की भावना प्रमुख है। और इतना तै है कि जो इस लूटमार पर पनपना चाहता है वह कायर है उसे अपने पौरुष पर विश्वास नहीं, भरोसा नहीं।

हमारा देश राष्ट्रीयता का आधार मजहब को नहीं मानता। प्रत्येक व्यक्ति जो हमारे देश पैदा हुआ, यहाँ की मिट्टी से बना, यहाँ के अन्न जल पर पला वह इस देश का नागरिक है। हमारे देश की संस्कृति हमेशा से सद्भाव और सहिष्णुता की संस्कृति रही है। विभिन्न मतों के लोग शैव, शाक्त, वैष्णव, नाग पूजक, बौद्ध, जैन थे सब के सब इस देश में एक साथ रहते आए हैं, भाइयों की तरह।

हमारे देश में धर्म का बड़ा व्यापक अर्थ माना जाता है धर्म से हमारा मतलब जीवन के तात्विक सत्य से रहा है।

इस समय आम तौर से देश के मुसलमानों के विरुद्ध एक गौण प्रचार हो रहा है। अक्सर लोग कहते सुने जाते हैं कि यदि पाकिस्तान से हिन्दुओं को निकाला जा रहा है तो हमारे देश से मुसलमानों को निकाल दिया जाना चाहिये। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि मुसलमान कभी भी भारत के वफ़ादार नहीं हो सकते, जब कभी भी पाकिस्तान और भारत में युद्ध होगा, हमारे देश के मुसलमान अन्दरूनी विग्रह उत्पन्न कर देंगे।

इस तरह का प्रचार विषैला प्रचार है, मनुष्य भावना का प्राणी है और इस प्रकार के प्रचार का हमारी जनता पर भयानक असर पड़ता है।

हम यह देखते हैं कि हमारे देश में इस समय फिर एक साम्प्रदायिक प्रश्न उठाया जा रहा है जो देश के हित में, हमारी संस्कृति के हित में तथा मानव समाज के हित में घातक है। उस प्रश्न के इस समय तीन स्पष्ट पहलू हैं।

(१) एक पाशविक और अमानुषिक छिपा हुआ प्रचार कि पाकिस्तान में हिन्दुओं के साथ जो अत्याचार हुए हैं या हो रहे है उनका बदला देश के मुसलमानों से लिया जाना चाहिये।

(२) पाकिस्तान वहाँ के हिन्दुओं को देश से निकलने को मजबूर कर रहा है ऐसी हालत में हमें अपने देश के मुसलमानों को देश से बाहर निकाल देना चाहिये।

(३) भारतवर्ष का मुसलमान भारत के लिए खतरा है क्योंकि जब कभी भी पाकिस्तान और भारत में युद्ध होगा, भारत का मुसलमान युद्ध प्रयत्नो में बाधा डालेगा तथा पाकिस्तान के गुप्तचर का काम करेगा।

देश को एक भयानक अधः पतन से बचाने के लिए इस विपत्तिकाल में अपनी संस्कृति की रक्षा करने के लिए अपने कर्तव्याकर्तव्य को निर्धारित करने के लिए हमें अच्छी तरह इन पहलुओं पर विचार करना अवश्यक हो जाता है।

[४]

जो लोग यह कहते हैं कि पाकिस्तान में हिन्दुओं के साथ जो अत्याचार हुए हैं उनका बदला देश के मुसलमानों से लिया जाना चाहिये वे हमारे देश के, हमारे समाज के, हमारे धर्म के, हमारी संस्कृति के और यही नहीं मानवता के सबसे बड़े शत्रु हैं।

पूर्वीय बंगाल के हत्याकाडों की जिम्मेदारी अपने देश के मुसलमानों पर लादना तो न्याय और नैतिकता का गला घोंट देना है। जो कुछ पूर्वीय बंगाल में होरहा है वह हमारे देश के मुसलमानों के हितों के निश्चय ही विरुद्ध है क्योंकि पाकिस्तान के निवासी अपनी पशुता से हमारे देशवासियों की पशुता को भड़का रहे हैं जिसका कुपरिणाम हमारे देशके मुसलमानों को भुगतना पड़ सकता है। पता नहीं हमारे देश के मुसलमान इस बात को समझते हैं या नहीं, पर इतना तै है कि पूर्वीय बंगाल के कृत्यों पर हमारे देश के मुसलमानों ने शोक और रोष प्रकट किया है।

इस प्रकार की बात उठाने वाले कुछ पागल धर्मान्ध पर अधिकांश में वे गुंडे हैं जो चाहते है कि देश भर में लूट और हत्या शुरू हो और वे इस सबसे लाभ उठा सकें।

हमारा जनसमुदाय हत्यारों का समुदाय नहीं है, हमारे देश की संस्कृति लूट मार और हत्या की संस्कृति नहीं है। हम मानव विकास के प्रतीक है। और इसीलिये इस तरह की बातें खुलकर नहीं कही जातीं, केवल यह सब करने के लिये लोगों को भड़काया जा रहा है।

इस सम्बन्ध में देश की सरकारें सतर्क हैं यह संतोष की बात है। अभी तक हमारे देश में इस प्रकार के कोई भी प्रयत्न नहीं सफल हो सके। सरकार ने हर जगह कड़ाई से काम लिया और इन प्रयत्नों को पूरी तौर से दबा दिया। इसके लिये सरकार के विरुद्ध एक प्रकार का प्रचार भी किया जा रहा है, पर सरकार यदि देश को भयानक विग्रह और अशान्ति से बचना चाहती है, यदि वह अपने देश के निवासियों को पतित और हत्यारा बनने से बचाना चाहती है तो वह किसी भी हालत में अपने कर्तव्य से नहीं डिग सकती।

पर सवाल यह है कि जनता से अलग सरकार का अस्तित्व ही कहां है? सरकार तो जनता की प्रतिनिधि हुआ करती है। यदि सरकार को जनता का बल नहीं प्राप्त है तो वह कुछ भी नहीं कर सकती।

हमें यह अच्छी तरह समझ लेना चहिये कि देश के मुसलमानों से पकिस्तान के अत्याचारों का बदला लेने के अर्थ होंगे घोर अमानुषिक हत्या के पाप का भागी बनना। देश के कुछ इने गिने थोड़े से मुसलमान वास्तव में बहुसंख्यक हिन्दुओं के आश्रित हैं। यदि यहां हत्याकांड आरम्भ होता है तो हमे यह जान लेना चाहिये कि हमारा सारा देश हत्यारों का देश बन जायगा।

हत्यारों का देश इस कल्पना से ही हृदय कांप उठता है। दुनियां के पापों में जघन्यतम पाप नरहत्या है। जिस देश में पूरा का पूरा जन समुदाय असमर्थों, असहायों तथा अपने आश्रितों की हत्या कर डाले उस देश का विनाश अवश्यम्भावी हैं, उस विनाश को कोई नहीं रोक सकता। एक बार जिसने नर हत्या करदी, दूसरी बार नर हत्या करने में वह कभी भी न हिचकेगा। धर्म के नाम पर लोग हत्यारे बन जाय यह बात ही नहीं समझ में आती। जो आज अपने पड़ोसी विधर्मी की बिना किसी संकोच के हत्या करता है वह कल अपने भाई बन्दों की भी निःसंकोच हत्या करेगा।

पाकिस्तान की पशुता यदि हम लोगों ने अपना ली तो मैं कहता हूँ कि भारत में और पाकिस्तान में अन्तर ही क्या रह जायगा? जिस दया, प्रेम और त्याग की संस्कृति पर हमारे हिन्दू धर्म को गर्व है, हम मुसलमान भाइयों की हत्या करने के पहले आप उस तलवार से अपनी उस संस्कृति की हत्या कर देगें। और दुनिया यह पुकार कर कहेगी कि भारतीय सत्य अहिंसा दया, प्रेम की संस्कृति पूरा ढोंग है। इतिहास इस बात का निर्णय देगा कि पाकिस्तान और भारत दोनों ही हत्यारों और लुटेरों के देश हैं।

और इसलिये मैं कहता हूँ कि हरेक धर्म पर आस्था रखने वाले, न्यायप्रिय हिन्दू का यह कर्तव्य है कि वह इस प्रकार दूषित प्रचार को सक्रिय रूप में रोके। वे समझ लें कि जो लोग इस प्रकार का प्रचार करते हैं वे देश और समाज के दंडनीय शत्रु हैं।

[५]

हमारे देश के कुछ लोगों का मत है कि पाकिस्तान की भांति हिन्दुस्तान को भी एक मजहबी राज्य घोषित कर देना चाहिये, और वे लोग विश्वास के साथ इस बात का ऐलान करते रहे हैं कि भारत में बसे हुए मुसलमानों को यहाँ से निकाल देना चाहिये। इधर पिछले दिनों से इन लोगों की बात में कुछ शिथिलता आ गई थी, पर इन दिनों फिर से यह बात उठाई जा रही है।

इस बात को उठाने वाले यह भूल जाते हैं कि हमारे देश में प्रायः चार करोड़ मुसलमान हैं जो इसी देश में जनमें हैं, इन्ही देश की मिट्टी से जो बने हैं, यहां के जल और अन्न पर पले हैं, जो भारतीय पहले हैं, मुसलमान बाद में हैं। इन चार करोड़ मुसलमानों को उनकी इच्छा के विरुद्ध कैसे निकाला जा सकता है और इन्हें निकाल कर कहाँ भेजा जा सकता है?

इनको निकालने की बात उठाना अपने विकास के स्वर्णित इतिहास पर कालिख पोतना हैं। जैसा मैं पहले कह चुका हूँ, हमारी संस्कृति में धर्म का अर्थ वह नहीं है, जो विश्व में मजहब या रिलिजन का लगाया जाता है, हमारे यहाँ धर्म का बहुत व्यापक अर्थ है। हमारे समाज में आस्तिक, नास्तिक बौद्ध, जैन शैव, शाक्त और वैष्णव सम भाव से रहे हैं तथा अपने अपने मतों के अनुसार पूजा पाठ करते रहे हैं।

में कहता हूँ कि हमें अपने देश के मुसलमान को इस बात का मौका देना चाहिये कि वह अपने को मुसलमान न समझ कर भारतीय समझे।

हिन्दुस्तान के विभाजन के पहले से कुछ लोगों द्वारा विष बेलि बोई गई उसे सूखने में कुछ समय तो लगेगा और उसे नष्ट करने के लिये हमें प्राण पण से प्रयत्न भी करना होगा। हृदय परिवर्तन एक ओर से नहीं होता, वह दोनों ओर से ही सम्भव है। और यह नियम है कि दया अहिंसा ये सबल और समर्थ के अस्त्र हैं।

हम देश के मुसलमानों को देश से बाहर नहीं निकाल सकते यह ध्रुव सत्य है। वे देश से बाहर जाने को तैयार भी न होंगे, यहीं मर जाना पसन्द करेंगे। कुछ लोग देश में हत्याकांड इसलिये आरम्भ करना चाहते हैं कि देश के मुसलमान खुदबखुद भाग खड़े होंगे। पर यह उनका भ्रम है और मैं कहता हूँ कि जो लोग चार करोड़ आदमियों को बेघरबार शरणार्थी बनाना चाहते हैं वे अपने मानसिक पाप की भयंकरता का अनुभव नहीं करते।

समस्त भारत के मुसलमानों को निकाल बाहर करने पर तो अभी अधिक नहीं कहा जा रहा है, पर यह आवाज जोर पकड़ रही है कि पूर्वीय और पश्चिमी बंगाल की जनसंख्या का अदल बदल कर दिया जाय।

आबादियों की अदला बदली कर देना आसना है, पर उसकी कल्पना से

(शेष पृष्ठ १० पर)

हमारा रंग-मंच

'राखी' कैसा है ?

निर्जीव कहानी और अभिनय

वेदप्रकाश शर्मा एम० एस-सी०

प्रकाश निर्मित चित्र 'राखी' में ...नी कोशल, यशोधरा काटजू कुल... करण दीवान, प्राण, उल्हास और ...ई। कहानी हसरत लखनवी की है। एक माना हुआ सत्य है कि कहानी ...क के विचारों का कहानी पर अत्यन्त ...पड़ता है और फिर एक सिने ...कार, वह तो कहानी के पात्रों को ...मरोड़कर जहां भी चाहे, वहां पटक ...ता है। जैसे उसकी समझ में आया ...हीं उसने अपने पात्रों को बनाया। ...ऐसी कहानी में अस्वाभिकता क्यों ...आजाये, पब्लिक तो चित्र मनोरजन ...देखेगी ही, फिर क्यों एक विद्व... और स्वाभाविक कहानी लिखने ...के दिमाग पर जोर डाला जाये। ...हमको इस चित्र की कहानी में ...मिलती है।

...मिनी और उल्हास भाई बहिन ...पर्दे पर सामने आते हैं। दोनों ...प्रेम है। यहां तक कि बहिन ...भाई का झूठा दूध पीने में भी नहीं ...ती, कहानी लेखक महोदय ने ...शायद इससे अच्छा दृष्टान्त ...भाई बहिन के प्रेम को दिखलाने ...नहीं मिलेगा। गोप जो एक नाई ...में आता है, उल्हास से कहता है ...कामिनी बड़ी हो गई है, इसलिये ...शादी का प्रबन्ध उसको शीघ्र ही ...चाहिये, इधर प्राण और ...दीवान दोनों गाँव में शिकार ...आते हैं और पनघट पर ...छोकरियों को प्राण छेड़ने जाता, ...कामिनी उल्हास से आकर शिकायत ...है। वह प्राण की खूब मरम्मत ...है और उसकी बन्दूक छीन ...है। करण दीवान अपनी बन्दूक ...मांगने कामिनी के घर आता है ...दोनों एक दूसरे के प्रेम में गुथ ...है। गोप के द्वारा करण दीवान ...नी से अपनी सगाई का प्रस्ताव ...ता है। कामिनी और करण दीवान ...की शादी हो जाती है।

...दोनों में अत्याधिक प्रेम है। दीवाली ...कामिनी को बुलाने के लिये उल्हास ...को भेजता है परन्तु कामिनी बीच ...ही से वापिस लौट आती है, इधर ...उल्हास से जाकर झूठी सच्ची ...है और कहता है कि कामिनी ...उसके ससुराल वाले अच्छा ...नहीं करते। उल्हास क्रोध में भर- ...कामिनी की ससुराल जाता है और

प्रसिद्ध अभिनेत्री जयश्री

वहां काफी झगड़ा मचाता है, इसी बात पर करण दीवान का पारा कामिनी पर गर्म हो जाता हैं। कहां तो इतना प्रेम था और कहां करण दीवान कामिनी पर इतना गुस्सा हो गया कि उसने कामिनी से बोलना चालना भी छोड़ दिया। बस फिर क्या था कहानीकार महाशय के दिमाग में आया कि कामिनी को तपेदिक का रोगी बना दे। बस साहब कामिनी की आंखों के नीचे तवे की कालोंच लगाकर उसको पर्दे पर टी० बी० का मरीज दिखलाया जाता है। अब क्या हो कहानी किस प्रकार बढ़े। कहानी लेखक के दिमाग में एक विचार आया और उसके परिणाम स्वरूप करण दीवान को प्राण एक वेश्या (कुलदीप कौर) के यहां ले जाता है। कामिनी को करण दीवान की तरफ से एक झूठा पत्र लिखाकर उसको उसके भाई के पास भेज दिया जाता है।

कुलदीप जब यह सुनती है कि करण दीवान शादी शुदा है तो वह उसको कामिनी के पास लौट जाने की सलाह देती हैं। इधर प्राण कुलदीप से शादी का प्रस्ताव करता है परन्तु उसके इन्कार करने पर उसको करण दीवान की बन्दूकासे गोली मार देता है। परन्तु कुलदीप अपने मारने वाले का नाम अपने खून से एक किताब के वर्क पर लिख जाती है। करण दीवान सन्देह में गिरफ़्तार कर लिया जाता है। कामिनी जब यह सुनती है तो उल्हास से करण

अभिनेता श्री किशोर साहू।

अभिनेत्री नसीम गायिका भी हैं।

की जान बचाने को कहती है। चौधरी साहब को जब कुछ नहीं सूझता तो कोर्ट रूम में जाकर कहते हैं कि मैने ही कुलदीप का खून किया है। करण दीवान छोड़ दिया जाता हैं और उल्हास को गिरफ़्तार कर लिया जाता है। (बस फिर क्या था असंख्य दर्शकों की तालियों से हाल गूँज उठा।)

जिस रोज चौधरी साहब को फांसी होने वाली थी, कामिनी उसको अपनी धोती से एक टुकड़ा फाड़ कर राखी के नाम पर बांधती है। बस फिर क्या चाहिये। राखी का चमत्कार अवश्य दिखलाना चाहिये नहीं तो दर्शक कैसे कहेंगे कि खेल कुछ जमा नहीं, बस फौरन लेखक साहब के दिमाग में एक लहर उठो और फल स्वरूप एक आश्चर्यजनक बात हुई कि जिस किताब में कुलदीप ने अपने मारने वाले का नाम लिखा था वह पुलिस को मिल गई। और चौथरी साहब को जैसे ही फाँसी लगने वाली थी कि वह रोक दी गई और उल्हास को छोड़ दिया गया। बस फिर क्या था हाल अपढ़ दर्शकों की तालियों से गूंज उठा। पर किसी कोने में आलोचक बैठा अपना सिर धुन रहा था कि क्या यही भारतीय चित्रों का स्तर है ?

प्रकाश चित्रों में एक बात थी कि उसके सेट भव्य होते थे। परन्तु इस चित्र में तो वह भी नहीं। यहाँ तक कि पनघट पर जो शूटिंग हुई तो कुएँ के पार्श्व मे परदा पड़ा था। हमारी समझ में यह नहीं आता कि भारतीय सिने कम्पनी फटोग्राफी में क्यों दिलचस्पी नहीं लेती ? विदेशी चित्रों की सफलता का एक मुख्य कारण उनकी अच्छी फोटोग्राफी होना भी है। परन्तु यहाँ तो पीछे परदा पड़ा है और आगे गांव भी बना है। शहर बना है। क्या दर्शकों को यह अधिकार नहीं है कि वह अपने पैसों का पूरा मूल्य चुकावें। परन्तु वह तो जानते ही हैं कि पब्लिक तो आयेगी ही तो क्यों न पर्देबाजी की जाय। कहानी अत्यन्त अस्वाभाविक है। कामिनी का अभिनय चित्र में अत्यन्त कमजोरियां होते हुए भी अच्छा है।
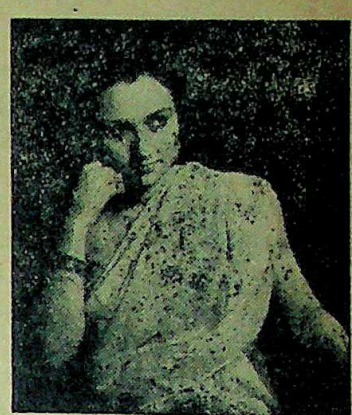
अभिनेत्री रेणुका कहाँ हैं।

उल्हास दिन पर दिन मोटा जरूर होता जा रहा है। परन्तु उसकी अभिनयकला में कोई उन्नति नजर नहीं आती। करण दीवान के विषय में जो न लिखा जाय, वही बहुत है। यशोधरा काटजू के अभिनय को छोड़कर अन्य भूमिकाओं में दूसरों का कार्य बस चलताऊ है। यदि कोई सर दर्द मोल लेना चाहे तो वह इस चित्र को अवश्य देख सकता है।

सचित्र साप्ताहिक 'देशदूत'

संवाददाताओं से निवेदन

संयुक्तप्रांत, मध्यप्रांत, मध्य भारत तथा राजपूताने के संवाद भेजनेवालों से निवेदन है कि वह अपने संवाद संक्षिप्तरूप में ही भेजने का कष्ट करें।

संपादक 'देशदूत'

(शेष पृष्ठ ८ के आगे)

ही हृदय कांप उठता है। पंजाब की आजादी की जो अदला बदली हुई है, आज तक हम उस समस्या को नहीं सुलझा पाये हैं। आज तीन वर्ष बाद भी लाखों आदमी शरणार्थी शिविरों में लुटे हुये और निराश पड़े हैं। और हमें यह याद रखना पड़ेगा कि पंजाब में चालीस लाख आबादी की अदला बदली का सवाल था।

पूर्वीय बंगाल में करीब सवा करोड़ हिन्दू हैं। उन सवा करोड़ हिन्दुओं का वहां से लाना और स॰। करोड़ मुसलमानों को यहां से भेजना यह बच्चों का खेल नहीं है, यह एक भयानक समस्या है। आबादी की अदला बदली के अर्थ होंगे आज देश में ऐसी समस्या खड़ी कर लेना जिसके सुलझाने में काफी समय लगेगा और जिसके कारण देश के अन्य काम रुक जायेंगे। इसके अलावा हम उन ढाई करोड़ हिन्दू और सवा करोड़ मुसलमान को शरणार्थी बनाकर उनका बहुत बड़ा अपकार करेंगे।

पूर्वीय बंगाल की घटनाओं से जो समस्या उत्पन्न हो गई है, वह साधारण नहीं है। जल्दबाजी और गैरजिम्मेदारी से यह और भी जटिल रूप धारण कर लेगी। यह समय ठंडे दिमाग से काम करने का और सोंचने समझने का है। और हमें इस सब की जिम्मेदारी अपनी सरकार के हाथ में छोड़ देनी चाहिये। हमें यह याद रखना चाहिये कि शक्तिशाली राष्ट्र वह है जिसमें लोगों में नियंत्रण हो, धैर्य हो, साहस हो, भला बुरा समझने की क्षमता हो तथा जनता को अपनी सरकार पर पूराविश्वास हो। जिस राष्ट्र में जनता सरकार की आज्ञा का उल्लंघन करती है, अपने मन से भयानककांड करती है वहां अराजकता और अनियंत्रण का साम्राज्य होता है, वह राष्ट्र कभी भी समृद्ध और शक्ति शाली नहीं बन सकता।

[६]

हमारे देश के हिन्दुओं में देश के मुसलमानों के सम्बन्ध में यह आम धारणा है कि ये मुसलमान भारत के प्रति वफादार नहीं है और समय पड़ने यह लोग देश के साथ दगाबाजी करेंगे। इसके प्रमाण में प्रायः नित्य ही पकड़े जाने वाले पाकिस्तान के जासूसों के उदाहरण पेश किये जाते हैं। यह नहीं समय समय पर कुछ गैरजिम्मेदार मुसलमानों के वक्तव्यों, भाषणों एवं उनकी हरकातों से भी यह बात साबित करने की कोशिश की जाती है।

हमें यह न भूल जाना चाहिये कि यदि हम किसी पर अविश्वास करने लग जांय तो उस पर भी हमारे अविश्वास का असर अवश्य पड़ेगा। पाकिस्तान की गुप्तचरी करने वाला अथवा पाकिस्तान पर आस्था रखने वाला दल यद्यपि हमारे देश भर में फैला है, पर वह बहुत ही छोटा है, अधिकांश मुसलमान न पाकिस्ताम के गुप्तचर है और न उन्हें पाकिस्तान में कोई दिलचस्पी है। हां, अगर हिन्दुओं के अविश्वास के कारण उनमें भय और आशंका पैदा हो जाय तो यह स्वाभाविक ही ह। अकसर यहां के मुसलमान समझते हैं कि उस अविश्वास के वातावरण में उनके जान माल की सुरक्षा का कोई निश्चय नहीं, अपनी इच्छा के प्रतिकूल भी उन्हें न जाने कब बहुसंख्यकों की पशुता और बर्बरता का शिकार बनना पड़े। और इसलिये उनके अन्दर देश की वफादारी डांवा डाल हो सकती है।

अगर आज हमारे देश के मुसलमान को यह विश्वास हो जाय कि उन्हे हमारे देश में विदेशी न समझा जायगा, उन्हें इस देश में वे सभी अधिकार तथा सुविधाएं प्राप्त हैं जो यहाँ के हिन्दुओं को प्राप्त हैं तो उन्हें देश के वफादार नागरिक बनने में आपत्ति ही क्या हो सकती है? हरेक भारतीय मुसलमान की यह आन्तरिक इच्छा है कि वह मुसलमान न समझा जाकर भारतीय समझा जाये। हमारे देश का मुसलमान स्वतंत्र देश का नागरिक है। उसे इस देशपर गर्व होने में भला क्या आपत्ति हो सकती है। रूस के मुसलमान कब अपने को गैर रूसी मानते हैं? चींन के मुसलमान ने कब धर्म की दुहाई दी है? हमारे देश में हिन्दू मुसलमान समस्या तो हमारी गुलामी की अवधि बढ़ाने के लिये खड़ी कर दी गई थी, आज जब हमारा देश स्वतंत्र है तब हम इस समस्या को आमूल मिटा सकते हैं।

जहाँ तक इन जासूसों और देश के गद्दारों का सवाल है वे मुसलमानों में ही नहीं हिन्दुओं में भी मौजूद हैं। जासूसों और गद्दारों का प्रश्न साम्प्रदायिक नहीं है, और नैतिकस्तर पर आकर हमें अपने सब प्रश्नोंको सुलझाना पड़ेग।

यहां मुझे अपने मुसलमान भाइयों से भी यह कहना है कि वे झूठे और गन्दे पाकिस्तानी प्रचार के चक्कर में न पड़ें, पाकिस्तान के जासूसों को एक वफ़ादार भारतीय की हैसियत से वे गिरफ्तार करा दें और पाकिस्तान को आपसी कलह का बीज न बोने दें। पाकिस्तान ने उनके साथ जो उपकार किये वे उसे देख ही रहे हैं।

(७)

लोग पूछेंगे कि फिर आखिर इस सब का निदान क्या है?

और मैं कहूंगा कि, निदान, ढूँढ़ निकालना इतना आसान नहीं है, जितना लोगों ने समझ रक्खा है। हम अपना कर्तव्य निर्धारित कर सकते हैं उस पर अटल रह सकते हैं दूसरों के मामलों में हस्तक्षेप करना व्यक्तिका काम नहीं वह हमारे राज्य का काम है। हम भारतीय तो केवल अपने मार्ग पर दृढ़ रहें।

मुझे आश्चर्य इस बात पर हो रहा है कि हम पाकिस्तान की बर्बरता पर तो क्रोधित हो रहे है, लेकिन अपने पीड़ित भाइयों की ओर नहीं देख रहे हैं उनके दुःख दूर करने का, उनकी सहायत करने का हम कोई प्रयत्न नहीं कर रहे हैं। आज आवश्यकता इस बातकीथी किपूर्वीय बंगाल से आने वालों की सहायता करने के लिये देश भर में सैकड़ों सहयता केन्द्र खुल जाते, हज़ारों स्वयंसेवक उन पीड़ितों और निराश्रितों की सेवा के लिये निकल पड़ते।

यह समय दया और सहानुभूति का है, निर्बलों और असहायों की पकार जिनके कान में नहीं जाती वे अपने कर्तव्य से गिर गये। उनकी सद्भावनाएं नष्ट हो चुकीं।

हिंसा, प्रतिशोध पशुता मुझे ताज्जुब है राम, कृष्ण, बुद्ध के वंशज इन घृणित और पतित मनोवृत्तियों की धारा में क्यों बहे जा रहे हैं? क्या उनके अन्दर वाला मानव मर गया? क्या हजारों वर्ष की साधना और तयस्या इस ज़रा से प्रहार से नष्ट हो जायगी? मुझे तो ऐसा विश्वास नहीं होता। हिंसा पशुता, वर्बरता ये स्वयम् नष्ट हो जाते हैं। इतिहास इस बात का साक्षी है। कोई भी हिंसात्मक संस्कृति जीवित नहीं रह सकती, लुटेरों और हत्यारों का समुदाय आपस में लड़कर ही नष्ट हो जाता है।

इधर पिछले कुछ समय से देश जिस नैतिक पतन की ओर तेज़ी के साथ बढ़ता जा रह है उसे रोकनेका यह स्वर्ण अवसर है। विपत्ति यां मनुष्य की जीवन धारा बदल देती हैं, विपत्ति यां मनुष्य में नए साहस, नई चेतना का संचार करती हैं।

राजनीतिक दांव पेंच छोड़कर, अपने अन्दर वाली पशुता और हिंसा को त्याग कर, आज हमारा यह कर्तव्य है कि हम सक्रिय रूपमें अपनी मावनता अपने दया, प्रेम, परोपकार को प्रदर्शित करें। आज हरेक भारतीय का यह कर्तव्य है कि दृढ़ संकल्प करे और इस बात पर कमर कस ले कि वह अन्याय, अत्याचार, उत्पीड़न के विरुद्ध उठ कर खड़ा होगा, वह पीड़ित की सहायता करेगा, वह दूसरों अधिकारों की रक्षा करेगा तो हमारी नैतिक समस्या का हमें बहुत बड़ा हल मिल जायगा।

(८)

यह हमारी अग्नि परीक्षा का समयहैं। हमें दुनियाँ पर साबित करना है कि हमारे पास धैर्य है, साहस है। हमारा देश तपस्वियां और बलिदान करने वालों का देश रहा है हम अपने देश में अनाचार और अत्याचार न होने देंगे। हमारी संस्कृति मानवता की उत्... संस्कृतिहै हमारा भारतीय धर्म मानवता का धर्म है। हम मज़हब की संकी... के ऊपर हैं।

इस देश का प्रत्येक नागरिक भारतीय हैं, वह न हिन्दू है, न मुसलमान है न सिख है ईसाई है।

इस समय प्रत्येक हिन्दू का धर्म है कि वह देश के मुसलमानों को अपना भाई समझे, उसके अन्दर वाले भय और शंका को दूर करे।

इस समय प्रत्येक मूसंलमान का कर्तव्य है कि वह अपने को भारतीय समझे और भारत का वफ़ादार बने। कुछ धर्मान्ध... की बात से बिचलित न हो, वह अपने हिन्दू भाइयों तथा अपनी सरकार पर पूरा भरोसा रक्खे।

और देश का प्रत्येक नागरिक ... विपति काल के समय एक नई ... एक नए संकल्प के साथ सत्य, अहिंसा और मानवता के मार्ग पर अपना कदम उठावे।

हमारा भविष्य उज्जवल है, हिंसा ... पीड़ित मानवता का निदान केवल हमारे पास है हमें अपने दया और प्रेम वाले धर्म की तथा अहिंसा की संस्कृति की रक्षा करनी है।

मैं फिर कहता हूं कि यह हमारी अग्नि परीक्षा का समय है।

(शेष पृष्ठ ६ के आगे)

...'बरवाई' के दो तीन नाटकों का उल्लेख करूँगा। मैमूना' 'चुम्बक', और 'विलमन'—इन नाटकों को जरा ...की ही दृष्टि से पढ़िए—एक नया आनन्द आप को प्राप्त होगा। 'मैमूना' और 'सूखी डाली' के संवाद अत्यंत स्वाभाविक हैं; 'चुम्बक' के व्यंगपूर्ण और चुटीले—कस कर चुटकी लेते हुए और विलमन के मर्म-स्पर्शी और हृदय में एक सिहरन सी उत्पन्न करने वाले। 'विलमन' में अन्त में शशि की मृत्यु ...तो आंखों में आँसू आ जाते हैं। इसी ...र संवादों की दृष्टि से भी ये नाटक ...जोड़ हैं।

संग्रह के अन्य नाटक भी अपने ...र सौंदर्य छिपाये एक भोली-भाली ...उपेक्षिता बालिका—की जिसे माता-... किसी का प्यार नहीं मिल पाया है; ...की अपनी सगी माँ, माँ न रही है ...हुत दर्द भरी झाँकी है। 'मैमुना' ...पढ़कर मेरे सामने सदैव ही बर्ड-...की 'लूसी ग्रे' आ खड़ी हुई है ...लगता है कि यदि वर्डस्वर्थ वह ...न लिख नाटक लिखता तो ...अपनी लूसी ग्रे को वैसे ही चित्रित ...जैसी अश्क जी ने मैमुना को ...किया है अश्क जी ने अपनी ...से मैमुना के चरित्र के अंदर ...भर दिया है, जो नाटक पढ़ते ...हमारे अपने घरों में मातृ या पितृ-...बालकों की करुण दशा की याद ...देता है।

...रह रहे हैं तीन नाटक—चमत्कार' ...और 'सूखी डाली'। 'पारि-... दृष्टि से अत्यंत स्वाभाविक और ...है—सफल इस दृष्टि से कि वह ...जन है और अंत में एक प्रभा-... 'केंद्रीय असर' छोड़ जाता ...कोई पढ़ी-लिखी, नई रोशनी वाली ...शायद 'सूखी डाली' बनना पसंद ...करेगी। 'चमत्कार' चमत्कार ही ...ज्यादा दिलचस्प, यों देखने से तो ...कुछ नहीं लगता। और मेरा तो ...है कि अन्य कोई नाटककार ...उतनी कहानी को लेकर ...उस प्रकार का नाटक नहीं ...—वहां सब सोचते हुए कि ...ऐसा है ही क्या?...परंतु जो ...अश्क जी के नज़दीकी व्यक्तित्व ...चित हैं, वे अवश्य जानते होंगे ...अश्क जी दैनिक जीवन के इतने ...(लेकिन दिलचस्प) वाक़यों ...अपना अधिकरस लेते हैं—ऐसे ...वाक़यों हम देखते हुए भी नहीं ...हैं।

...'लड़की' भी एक स्पर्शी नाटक ...में सब से अधिक कातर चीज ...के अंत के दो वाक्य हैं, जो ...अपना से कहे हैं—"तुमने अपनी

(शेष पृष्ठ १४ पर)

(शेष पृष्ठ ७ के आगे)

हूँ, अनुभव शून्य हूँ। परन्तु आपकी क्षमा की आशा पर इतना निवेदन अवश्य करना चाहता हूँ कि वह युद्ध सदैव से होते चले आए हैं, सदैव ये वीरगण वीर गति को प्राप्त होते आये हैं। जब से संसार है, तब से ऐसा ही होता है।"

"हाँ! ठीक है, मुझे मालूम है, ऐसा ही होता है, परन्तु यदि मुसीबत कई बार झेल ली जाये तो क्या वह मुसीबत नहीं रहती? क्या दुख कई बार उठाकर वह दुख नहीं रहता? खैर, क्या होल्कर पिछली सन्धियों को नहीं मानता?"

"हाँ! वह कहता है, अंग्रेज अफसरों के सधाए हुए दस हजार सैनिक उस तनिक से कागज के टुकड़े को रण-क्षेत्र में चीर चीर कर डालेंगे।"

"ओह! ऐसा?"

"मरहठों पर क्रोधाग्नि बरसाने से क्या लाभ? सरकार! वह शुभ दिन आने दीजिये, आप देखेंगे मेवाड़ भी तैयार है। हम अपने स्वत्वों की रक्षा के लिये वैसे ही—बिल्कुल वैसे ही—तैयार हैं, जैसे आप के पूर्व पुरुष दिल्ली के बादशाह के विरुद्ध रहते थे।"

"मैं अपनी जरा सी—रत्ती भर भी परवाह नहीं करता। राजा तो युद्ध के संकटों से प्रायः सुरक्षित ही रहता है और नाम में वह—गरीबों के रक्तद्वारा प्राप्त होता है—सबसे आगे बढ़ जाता है। क्या ही अच्छा होता, यदि युद्ध-क्षेत्र में मैं एक छोटा सा सैनिक होता, और शत्रुओं के अस्त्र-शस्त्र मुझपर आसानी से पड़ सकते।"

"ईश्वर न करे, ऐसा हो। यदि ऐसा हो गया, तो मेवाड़ संभालने वाला कोई न रहेगा, राज्य सिंहासन खाली रह जायेगा, आप चिन्ता न करें! मेवाड़ का जीवन भी एक अद्भुत जीवन है, समय समय पर इसका सूर्य अस्त होते होते पुनः चमक दमक उठा है। ऐसा ही अब भी होगा। मेवाड़ का इस समय भी बाल बांका न होगा।",

राजकुमार ने विजयसिंह का हाथ अपने ठंडे हाथों में थाम लिये। वह बड़ी देर तक विजयसिंह की मुख-श्री को देखता रहा। इसके पश्चात् उसके नेत्र भी जोश से चमक उठे।

"ऐसा ज्ञात होता है कि मुझ मन्द भागी के पश्चात् कोई दूसरे ही इस मेवाड़ के अधिपति होंगे। विजय! जब मैं तुम्हें देखता हूँ, हृदय में विचार उत्पन्न होता है कि क्या ही अच्छा होता यदि तुम मेरे कुटुम्ब में से होते और मेवाड़ का छत्र तुम्हारे सिर पर रख जाता। यद्यपि यह छत्र कांटों का है, और है दुख और शोक से भरा हुआ, परन्तु जिसके सिर पर भी रख गया है वह प्रसिद्ध और नेकनाम ही रहा है।

"ईश्वर करे, मैं आपके दुख में कुछ सहायक होकर हाथ बटा सकूँ। मेरा जीवन आप ही का है, जहाँ इसकी आवश्यकता हो, आप इसे उपयोग में ला सकते हैं।"

"मेवाड़ की सेवा जीवित रहकर करो मरकर नहीं। इसे तुम जैसे वीरों ही की आवश्यकता है। प्रिय विजय! इस समय जाओ, मैं अब अकेला बैठना चाहता हूँ।"

"बहुत अच्छा जो आज्ञा। कल दरबार में उपस्थित हूँगा।"

(४)

युद्ध क्षेत्र मे रणभेरी बज चुकी। जर्रा-बकतर पहिने सैनिक, अस्त्र शस्त्रों की झनकार में, इधर उधर दौड़ रहे थे। स्थानस्थान पर मृतक व आहत सैनिकों के ढ़ेर पड़े हुए थे और सैनिकों के घोड़े उन्हें रौंदते हुए इधर उधर दौड़ रहे थे, वीरों के एक थोड़े से जत्थे ने लाखों का सामना करके वहाँ दम तोड़ा था। शवों के बीच में एक वीर बड़ा सुन्दर मालुम हो रहा था—यह विजय सिंह था—एक मिट्टी के ढ़ेर का सहारा लिये हुए मृत्यु को बाट जोह रहा था। उसके शरीर से पसीना छूट-रह था, नेत्र बन्द हुए जा रहे थे, मुखमण्डल की आभा पीली पड़गई थी, दर्द के कारण धीरे धीरे सांस ले रहा और सांस भी शनै शनै कम होती जारही थी। इतने में एक सवार तेज़ीसे घोड़ा दौड़ाता हुआ उसके पास आकर ठहर गया।

"ईश्वर को धन्यवाद है मेरे बेटे? आखिर तू मिलगया। तनिक सिपाहियोंकी सहायता से एक घोड़े पर सवार हो जा और अपने जीवन से मेरे बुढ़ापे को सुखी कर।

पिताजी! मेरा तो काम तमाम हो गया। आप राजाजी से इतना कह दीजिएगा कि विजय ने उस रातको वाटिका में जो वाफायदा किया था उसे पूरा कर दिया है। विजय मेवाड़ की रक्षा के लिए वीर गति पागया है।

वृद्धमन्त्री के नेत्रों में आंसू आगए। विजय ने धीरे से पूछा—आज का दिन कैसा रहा?

हमारी जीत हुई। धन्यवाद है परमात्मा को। मैं ने अपना कर्त्तव्य पूरा कर दिया। मैं अब प्रसन्नता पूर्वक इस शरीर को छोड़ता हूं।

प्रसन्नता की एक कंपी कंपी उसके समस्त शरीर में दौड़ गयी। लम्बा चौड़ा शरीर पिता की गोदी में जा पड़ा। उसने एक अद्भुत साँसली और कहा—विजय विजयी हुआ।

इसके पश्चात् न कोई साँस आई और न कोई शब्द ही उसके मुख से निकला।

ग्राहकों, एजेंटों और विज्ञापनदाताओं को समस्त पत्र व्यवहार मैनेजर, 'देशदूत' इलाहाबाद के नाम पर ही करना चाहिए।

सम्पादक के नाम चिट्ठियां

सूर जयन्ती मनाइए

इस बार सूर जयंती २२ अप्रेल को पड़ रही है। इस अवसर पर प्रत्येक हिन्दी भाषी का यह परम कर्तव्य है कि वह अपनी भाषा के रससिद्ध महाकवि को अपनी विनीत श्रद्धांजलि अर्पित करे। हिन्दी की सभी संस्थाओं को इस अवसर पर सार्वजनिक रूप से साहित्यिक समारोहों का विशेष अयोजन करना चाहिए। इस अवसर पर सूरदास के संबंध में खोज पूर्ण लेख पढ़ाये जांय, उनके पदों का सुललित गायन हों और सूर की जीवन दृष्टि को व्यापक रूप से जनता के प्रकाश में लाया जाय।

ब्रज साहित्य मंडल इस अवसर पर मथुरा में विशेष कार्य क्रम का आयोजन कर रहा है। इसमें सूर कुटी पर अर्पित की जाने वाली श्रद्धांजलि का विशेष महत्व है। जहां महाकवि ने अपनी जीवन लीला समाप्त की थी और जहां उन्होंने अपना अंतिम पद

खंजन नैन रुप रस माते
चल चल जात निकट
श्रवणन के उलट पलट
ताटंक फंदाते।।

गाया था। वहां जाकर कमंडल अपनी विनम्र श्रद्धांजलि महाकवि को अर्पित करेगा।

मंडल के प्रधान मंत्री और हिन्दी के एक सेवक के नाते मेरा समस्त हिन्दी प्रेमियों से, साहित्यानुरागियों से, ब्रजवासिमों से, वैष्णों से सानुरोध से नेवेदन है कि वे अपने अपने स्थान पर सूर जयंती का आयोजन करें और सूर कुटी की यात्रा के लिए २३ अप्रैल को तैयार रहें।

सूर कुटी मथुरा से १४ मील गोवर्द्धन के पास है। गोवर्द्धन तक पक्की सड़क जाती है। वहां से एक मील कच्ची सड़क है। इस स्थान को आजकल चन्द्र सरोवर (मुहम्मद पुर) कहते हैं।

— गोपालप्रसाद व्यास

श्री सपूर्णानन्द अभिनन्दन ग्रंथ

माननीय श्री संपूर्णानन्दन जी केवल कर्मठ राजनीतिक ही नहीं हैं। वे बहुत बड़े देश प्रेमी, सामाजिक कार्यकर्ता, विद्वान हिन्दी भक्त तथा साहित्यकार भी हैं। उनकी ६० वीं वर्षगांठ के उपलक्ष में काशी नागरी-प्रचारिणी सभा ने आगाकी ३० अप्रैल के आस पास उन्हें एक अभीनन्दन ग्रंथ समर्पित करने का निश्चय किया है। ग्रंथ डबल क्राउन आठ पेज़ी आकार के ६०० पृष्ठों का होगा जिसमें हिन्दी और संस्कृत के धुरंधर विद्वानों के लेख एवं अनेक रंगीन तथा सादे कलापूर्ण चित्रादि रहेंगे। ग्रंथ का मूल्य १५ रु० होगा किन्तु १५ अप्रैल तक रुपया भेजनेवालों को १० रु० में यह ग्रंथ दिया जायगा।

—कृष्णदेवप्रसाद गौड़,
प्रधान मंत्री

हृदय-स्मृति-दिवस

उज्जैन के नागरिकों को प्रातः स्मरणीय स्व० रमाशंकर शुक्ल 'हृदय' का नाम अभी तक भूला न होगा। यह निर्विवाद सत्य है कि आधुनिक काल में मालव - प्रदेश की साहित्यिक और सांस्कृतिक चेतना को जाग्रत करने का सबसे बड़ा श्रेय उन्हीं को है। मालवा के उदीयमान कलाकारों की नवीन पीढ़ी उसी शिल्पी के हाथों गढ़ी गई है। मालवा के जागरण-युग की सांस्कृतिक चेतना उस व्यक्तित्व की सदा ऋणी रहेगी। उसे इस भूमि का कण-कण प्यारा था। इसकी सजीव मूतियों को सँवारने में ही उस अप्रतिम कलाकार ने अपने को तिल-तिल करके गला दिया। प्रत्येक सहृदय मालवी का यह कर्तव्य है कि वह उनकी मधुर स्मृति को विस्मृत न होने दे और उनके के योग्य किसी अन्य स्मारक का निर्माण कर अपनी चिर-कृतज्ञता को व्यक्त करे। अभी तक हमने उनके लिए कुछ नहीं किया। यह हमारी अकृतज्ञता का द्योतक है, इसका हमें प्रायश्चित करना है। जो अथक प्रेरणा हमें इनसे प्राप्त हुई है, हमें उसे गतिशील बनाए रखना है। अपने आलस्य और प्रमाद को छोड़कर अपने कलाकार साधक की परम्परा को आगे बढ़ाना है।

गत २४ मार्च को उनकी दसवीं निर्वाण-तिथि थी। आज उज्जैन में नव-जागरण की चेतना का स्फुरण हो रहा है, उस समय हमारा यह पुनीत कर्तव्य था कि हम अपने कलाकारों, साधकों और संस्कृति के अग्रदूतों की पावन परम्परा को अमर बनावें। यह मालवा के सांस्कृतिक जागरण का प्रथम चरण था।

महाकोशल की चिट्ठी

बहुविवाह और श्रीमती गोयनका

कागज का उद्योग-धन्धा, पचमढ़ी विद्युत-योजना, समाज शिक्षा की प्रगति, पंडित माखनलाल चतुर्वेदी की ६१वीं वर्ष गांठ, सरकारी अधिकारी परीक्षा में नकल करते पकड़े गये

(विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

प्रांतीय धारा सभा में माननीय अग्नि... ने कहा कि किसी भी व्यक्ति को ... होकर ही एक पत्नी के रहते हुये ... शादी करना पड़ता है। इसमें ... पत्नी का ही दोष रहता है। इसी ... इस कार्य के लिये महिलाऐं अधिक ... हैं, पुरुष नहीं। इस संबन्ध में धारा ... की महिला सदस्य श्रीमती राधादेवी ... ने एक प्रस्ताव रखा जिसके ... पति एक पत्नी के रहते हुये दूसरी ... कर सके और महिलाओं को तलाक ... वैधानिक सुविधा दी जाय। कुछ ... को छोड़कर अधिकांश वक्ताओं ने ... का विरोध किया। श्रीमती राधा ... गोयनका ने सुझाव रखा कि इस बिल ... की राय जानने के लिये इसे ... सिलेक्ट कमेटी को सौंप दिया ...। आपने अपने भाषण में कहा कि ... अनुभव करते हैं, पति और ... एक दूसरे के पूरक हैं। इसीलिये ... के वैवाहिक जीवन को सम्पन्न बनाये ... के उद्देश्य से ही इस बिल को उप... किया जा रहा है। यह अत्यन्त ... है कि समाज में महिलाओं के ... को बढ़ाया जाये तथा उन्हें अधिक ... दिये जायें। आपने इस सम... को सती की समस्या के समान ही ... बताया। इस बिल को तीन ... में बांट दिया गया है; पत्नी के ... हुये पति दूसरी शादी न करे, महि... को तलाक देने का अधिकार रहे ... इस विधेयक (एक्ट) को कैसे कार्य ... में परिणित किया जावे? श्रीमती ... के प्रस्ताव का समर्थन करते ... कुम्भारे ने कहा कि, दो शादियों ... उचित नहीं है, यद्यपि उनकी ... शादियां हुई हैं और दोनों पत्नियां अब ... हैं। पंडित कुंजीलाल जी दुबे ... आपत्ति उठाते हुए कहा कि ... बिल पर भारती संसद में विचार ... है और उसमें उपरोक्त बातों पर ... किया जा रहा है, अतः कुछ समय ... इस बिल पर विचार करना स्था... कर दिया जावे। आपने बताया कि ... प्रायः समीग्रार एशोशियेशन इस ... अपना विरोध प्रगट कर चुके ... शास्त्री ने कहा कि इस ... कम से कम दस वर्ष तक ... किया जायें।

कागज का उद्योग-धन्धा—

प्रांत में कागज के दो कारखानों की योजना चल रही है। नये पेपर मिल्स प्रायः प्रतिवर्ष ३०,००० टन सरकारी कागज उत्पन्न कर सकेगा। सरकार ने इसकी व्यवस्था अपने हाथों में ले ली है। इस प्रकार बल्लार पूर पेपर मिल्स का स्वमित्व प्रांतीय सरकार ले रही हैं। सन् १९५०—५१ म प्रांतीय सरकार इन्हें सब मिलाकर करीब १ करोड़ ८ लाख रुपया कर्ज या अग्रिम के रूप में देने का निश्चय कर चुकी है। प्रांतीय सरकार की नीति पंडित द्वारिका प्रसाद जी मिश्र के शब्दों से इस प्रकार स्पष्ट हो जाती है, "हमारे पड़ोसी प्रांत औद्योगिक प्रगित की ओर अग्रसर हो रहें हैं। जबकि कच्चा माल होते हुए भी हमारा प्रांत पीछे है। अतएव सरकार के लिये आवश्यक था कि इस दिशा में जल्दी कुछ प्रगति करे। पहले जब उपरोक्त कारखाने चलाने की बात चलीथी, तब असख्य आवेदन पत्र उद्योग पतियों के प्राप्त हुए थे, परन्तु कुछ समय उपरांत सम्पूर्ण देश भर में उद्योग पतियों ने अपनी पूँजी का विनियोग (सवेस्ट मेंट) उद्योग धन्धों में करने से अनिच्छा प्रगट करना प्रारंभ कर दिया। इसका प्रभाव उक्त उद्योग धन्धों पर भी पड़ा।" प्रान्त के उद्योग विभाग के मन्त्री माननीय दुर्गाशंकर मेहता का भी कथन है कि उक्त कारखाने हर एक दृष्टि से हमें लाभ दायक सिद्ध होंगे। अपने इस संबंध में जाँच समिति भी नियुक्त की है, जिस के अध्यक्ष प्रसिद्ध उद्योग पति श्री ए०डी० सराफ रहेंगे। समिति की रिपोर्ट प्रकाशित होने में कुछ समय लग सकता है, अतः प्रान्तीय सरकार ने विदेशों से जो यन्त्रादि इस सम्बन्ध में खरीदे हैं, उनका उपयोग प्रारंभ कर देगी। अर्थात् सरकार हर प्रकार से प्रान्त के कागज के कारखानों को सफलता पूर्वक चलाने के लिये कटिबद्ध है।

चमढ़ी विद्यु त योजना

पचमड़ी प्रान्त का अत्याधिक ठंडा स्थान हैं। प्रान्तीय सरकार की ग्रीष्म कालीन राजधानी यहीं पर रहती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व यहाँ पर केवल प्रांतीय सरकार के भवन निर्माण कर सकती थी। देशी नरेशों ने विशेष प्रयत्न किये कि वे पचमड़ी में अपने निवास के लिये भवन निर्माण करा सकें, परन्तु तत्कालीन गवर्नर इसका विरोध करते रहे। अब प्रान्तीय सरकार इस एकाधिकार को हटाकर जनता को पंचमढ़ी में भवन निर्माण का पूरा अवसर देना चाहती है। इसके अतिरिक्त देश के अन्य ठंडे स्थानों के सदृश्य प्रान्त के बाहर से यात्रियों को आकर्षित करना चाहती है। इस उद्देश्य से यह खर्च रुपयों की लागत से पचमढ़ी में बिजली की व्यवस्था की जा रही है तथा इस पर कार्य प्रारंभ हो भी चुका हैं। यद्यपि जनता और धारा सभा के सदस्य सरकार की इस नीति से असंतुष्ट प्रतीत होते हैं।

समाज-शिक्षा

गत दो वर्षों से प्रान्तीय सरकार की ओर से समाज शिक्षा का कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। पिछले वर्ष लगभग १०००० शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने समाज शिक्षा विभाग के अन्तर्गत वयस्कों को पढ़ाया था जिनमें करीब ३००० महिलायें भी थीं। प्रान्त भर में ५३१ शिक्षा शिवर खोले गये। प्रायः २८३०० कक्षाएँ चलाई गई उनमें से करीब २५% कक्षाएँ महिलाओं के लिए भी थीं। प्रायः २ लाख वयस्कों कों शिक्षा दी गई। ग्रीष्म कालीन शिक्षा शिवरों में आरम्भ होने वाला शिक्षा क्रम नियमित रूप से पाँच माह के शिक्षा क्रम में जिसे कि एक वर्ष-कालीन सिक्षा क्रम कहा गया है, और भी आगे बढ़ाया गया। परिक्षा में उत्तीर्णा होने वाले प्रान्तों के लिये अनुसार कार्य भी शुरू किया गया ताकि वे साक्षरता से लाभ उठा सकें। अभी भी प्रान्त में ७३ लाख ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें कि शिक्षित करना है। प्रान्तीय सरकार इस वर्ष जहाँ कहीं भी उचित और आवश्यक समझेगी वहाँ पर शिक्षा शिघर खोले जावेंगे। समाज शिक्षा का मुख्य उद्देश्य जनता में जाग्रति करने का है तथा सहकारिता के आधार पर आर्थिक और समाजिक जीवन सुसंगठित करना हैं।

माखनलाल चतुर्वेदी की वर्ष गाँठ

हिन्दी साहित्य सम्मेलनके भूतपूर्व अध्यक्ष और प्रवर्तक कवि अपने जीवन के ६० वर्ष सम्पूर्ण कर चुके हैं। प्रान्त में उनकी ६१ वी वर्ष गाँठ जगह जगह मनाई गई। जबलपुर में श्रीमती उषा-देवी मिश्रा की अध्यक्षता में उनका जन्म दिवस समारोह मनाया गया। उसमें भवानी प्रसाद जी तिवारी रामानुज लालजी श्रीवास्तव एवँ कालिका प्रसादजी दीक्षित ने माखन लालजी के साहित्य जीवन पर विचार प्रगट किए। इस संबध में शहर के प्रायः सभो साहित्यिक और कवि उपस्थित थे तथा सर्व सम्मति से "परिमल" नामक साहित्यक संस्था की स्थापना की गई जिसके संयोजक प्रो० इन्द्रबहादुर खरे चुने गये।

सरकारी पदाधिकारी नकल करते पकड़े गये

प्रांत में हर वर्ष प्रांतीय सरकार सम्बन्धित विभागों के लिये हर वर्ष विभागीय परीक्षा का आयोजन करती है। इस वर्ष भी इन परिक्षाओं की व्यवस्था की गई। बताया जाता है कि दो एक्स्ट्रा असिस्टेंट कमिश्नर (डिप्टी कलक्टर) परीक्षा भवन में नकल करते पकड़े गये। यदि यह समाचार सच है तो सरकार को इस पर उचित कार्यवाही करना चाहिये। प्रान्त के प्रसिद्ध अंग्रेजी दैनिक 'हितवाद' ने लिखा है कि इस समाचार से हमारा मनोरंजन तो हुआ है परन्तु इस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करना आवश्यक हैं। प्रान्तीय सरकार को चाहिये कि वह इस पर एक वक्तव्य दे और यह बताये कि उस ने अब तक उक्त अधिकारियों के ऊपर क्या कार्यवाही की है।

❀　❀　❀

एक ओर नेहरू-लियाकत मिलन होरहा था दूसरी ओर हिन्दू महासभा के नेता या तो गिरफ़्तार हों रहे थे या नजरबंद किये जा रहे थे। राह चलने वाले एक हिन्दू भाई बोले—यह अच्छा जनतंत्र स्थापित हुआ। हिन्दू नेता क्या भारत में रहने न पायेंगे? दूसरी ओर जाते हुए एक मुसलिम भाई बोले—और क्या गिरफ्तारी अच्छे वक्त से हुई, नहीं तो पीस भंग होने का अंदेशा था। यह हिन्दुस्तान है, पाकिस्तान नहीं।

❀　❀　❀

बस्ती—जिला पंचायत इन्स्पेक्टर सर्किल उस्का बाजार के श्री नरेन्द्र बहादुर सिंह जी आज कल गांव सभाओं में दौरा करके ग्रामवासियों को बराबर समझा रहे हैं। पंचायत राज से किसान को क्या लाभ है और वह अदालती पंचायतों से क्या आशा करता है? गांववालों से अपने खेतों से कम्पोस्ट खाद तैयार करने के लिये बहुत प्रयत्न कर रहे हैं। साथ ही साथ आप हर गांव सभाओं में प्रयत्न कर रहे हैं। गांव सभा का अपना निजी भवन हो। जहां गांव के छोटे बड़े लोग बैठकर गांव की तरक्की की बातें सोच समझ सकें और समाचार पत्रों को सभा भवन में बैठकर कुछ पढ़े, चर्चा करे।

सम्वाददाता

(शेष पृष्ठ ४ के आगे)

अन्त में उसकी अरुचि इतनी बढ़ गई कि साथ रहते हुए भी कई दिनों तक वह उससे भाषण नहीं करता था। अपने पति को दुखित करने के ध्यान से उसने एक दूसरे पुरुष से अपना प्रेम सम्बन्ध स्थापित कर लिया था।

बोकोशियो—एक दिन गिर्जाघर में प्रार्थना के लिए गया। वहां एक १७ वर्ष की युवती पर उसकी दृष्टि पड़ी। उसका नाम मेरिया डीएक्यूनो था। एक धनी काउन्ट से उसका विवाह हो चुका था। विवाहित जीवन होने पर भी वह स्वतंत्रता पूर्वक अपने नवीन प्रेमियों का स्वागत करती रहती थी। एक वर्ष तक बोकोशियो से भी उसका सम्बन्ध रहा। इसके बाद उसे ज्ञात हुआ कि किसी अन्य प्रेमी ने उसका स्थान ले लिया। अन्त में वह निराश और घृणा से उसे छोड़ कर अलग हो गया। दस वर्ष के बाद प्लेग में मेरिया की मृत्यु हो गई। बोकोशियो उस अवस्था में बराबर उसकी सेवा में तत्पर था और उसे दफन कर उसने अपना कर्त्तव्य पालन किया। उस का प्रभाव उसके ऊपर इतना पड़ा कि जीवन भर फिर किसी स्त्री से उसने प्रेम नहीं किया। वह हृदय से स्त्री के प्रति घृणा करता था।

फ्रांकोइस विलियन—फ्रांस का यह अमर कवि हत्या, चोरी आदि के अपराध में मृत्यु दण्ड तक पा चुका था। वेश्याओं के अड्डे में ही उसे आश्रय मिलता था। अपनी कविता के कारण उसे जेल से छुटकारा मिला। फिर भी जीवन भर वह निराश्रय होकर भटकता रहा।

सर्वेन्टिस—डन क्वेजेटो का लेखक जीवन भर आर्थिक संकट में रहा। कर्ज के कारण बहुत समय उसका जेल में ही बीता। अपनी वीरता में एक बार लड़ते लड़ते एक आदमी को मार डाला था। पाँच वर्ष तक डाकुओं के गिरोह में वह कैद था। उसकी पत्नी से उसे अनेक सन्तान हुई, सब दरिद्रता में पलीं। १५८४ ई० में उसे एक एक्ट्रेस एना फ्रांसिसका से इसाबेल नामकी लड़की उत्पन्न हुई। संसार के उपन्यास साहित्य में सर्वेन्टिस कितना महान स्थान है ? यह किसी अध्ययन करने वाले से नहीं छिपा है। पं० नेहरू स्वयं 'डन क्वेजेटों' पर मुग्ध हैं।

चाउसर—अंग्रेजी कविता का पितामह समझा जाता है। एडवर्ड तीसरे के राज्य-काल में चाउसर वेस्टमिनिस्टर महल में अन्य स्त्रियों के साथ उनका वेश धारण कर वहां जाता था और रात में उन्हीं के साथ सोता था। लन्दन के बन्दरगाह के चुंगी विभाग से उसे काफी शराब प्रतिदिन मिलती थी। चाउसर उतनी शराब पी नहीं पाता था, अन्त में उसकी प्रार्थना पर लगभग चार हजार रुपया वार्षिक पेन्शन मिलने लगी। उसी परिपाटी के अनुसार इंगलैन्ड के 'पोयेट लारिएट' को अब तक वाइन एलावेन्स मिलता है।

४१ वर्ष की अवस्था में चाउसर को एक अविवाहित युवती सेसिलिया चाउम्पेन से एक जारज सन्तान उत्पन्न हुई, जिसे अन्त में अपने पुत्र के रूप में उसे स्वीकार करना पड़ा था।

एडगर एलान पो—१५ वर्ष की अवस्था में अपने स्कूल के एक सहपाठी की मां से उस सम्बन्ध हो गया। उसका मिसेज जेन स्टिथ स्टानार्ड था। वह उसके ऊपर इतना मुग्ध हो गया था कि वह सब कुछ भूल गया था। उसके प्रथम मिलन के कई वर्ष बाद उस स्त्री का देहान्त हो गया। पो उसकी कब्र पर रात्रि में जाकर अश्रुपात करता था।

पो का गुप्त संबंध अनेक स्त्रियों से था। उनमें प्रमुख फ्रांसिस सार्ज़ेन्ट, ओसगुड और मिसेज एना कोरा सोवाट का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

पो सदैव दरिद्रता से द्वन्द्व करता रहा। एक बार अर्थाभाव और रुग्णवस्था के कारण वह कुछ कार्य न कर सकता था। उस समय उसकी पत्नी भी रोगशय्या पर पड़ी थी। कई दिनों तक उपवास ही चलता रहा। असहाय अवस्था में उसकी सास ने पड़ोसवालों से भोजन मांग कर खिलाया। जाड़े के कारण उसकी पत्नी भयानक कष्ट पा रही थी। उसके पास ओढ़ने के लिये कम्बल तक नहीं था और इसी कारण शीत से उसकी मृत्यु हुई।

एडगर एलन पो अपने जीवन के अन्तिम दिनों में शराब बहुत पीने लगा था। वह जीवन से ऊब गया था। वाशिङ्गटन अस्पताल में हुए उसने डाक्टरों से कहा—मेरे जीवन का शीघ्र अन्त कर दो।

अमेरिका का यह विख्यात कहानीकार ४० वर्ष की अवस्था में उसी अस्पताल में मरा।

ओलिवर गोल्डस्मिथ—इंगलैंड का प्रसिद्ध कवि और उपन्यास कार एक दिन मकान मालकिन से झगड़ा कर रहा था। उसने कई महीने का किराया नहीं दिया था। झगड़ा का रूप भीषण देखकर गोल्डस्मिथ ने अपने मित्र डा० जानसन को इसकी सूचना दी। जानसन ने एक गिन्नी उसके पास भेजते हुए कहला दिया—मैं शीघ्र ही आता हूँ।

डाक्टर जानसन जिस समय वहाँ पहुँचे, उस समय गोल्डस्मिथ शराब के नशे में चूर होकर मकान मालकिन से लड़ रहा था। जानसन को मालूम हुआ कि उसकी गिन्नी किराये में न देकर शराब में खर्च की गई।

बोतल में कार्क लगाते हुए जानसन झगड़ा शांत करने लगे। गोल्डस्मिथ से 'वीकर आफ वेकफील्ड' उपन्यास की हस्त लिखित प्रति लेकर जानसन प्रकाशक के यहां गये। उसे बेच कर ६० पौंड जानसन ने लाकर दिया, तब गो[illegible] चुकता किया।

(शेष पृष्ठ ११ के आगे)

खिड़की बंद कर दी। अब मेरे कमरे की खिड़की खुली रहेगी किंतु वहाँ मेरे आकुल प्राणों के सिवा कोई मेरी बाट न देखेगा।"—उफ़! कितने दर्द से कहे गये हैं यह वाक्य! केवल पीड़ित ही उसका अंदाज़ कर सकते हैं। मेरा विश्वास है कि अश्क जी यदि इस कथानक पर एकाँकी न लिख कहानी लिखते; या नाटक के लिए यह आवश्यक न होता कि पात्र जो कुछ भी कहें वह दर्शकों और श्रोताओं को अवश्य सुनाई पड़े; तो कदाचित् अश्क जी ये वाक्य कुदन से मन ही मन में कहलाते। प्रकट रूप में, और फिर नयना के सामने ही कहलाने से इन वाक्यों की कातरता थोड़ी कम हो गई है, परंतु ऐसा करने के लिए मज़बूरी थी।

संग्रह का सर्वश्रेष्ठ नाटक, जिसे मैं आसानी से हिंदी के गिने-चुने सर्वश्रेष्ठ एकांकियों में से एक कह सकता हूँ। 'चुम्बक' है। इतना अधिक उत्तमता से तराशा हुआ और सुन्दर आकार वाला कोई दूसरा नाटक शायद ही मिले। इसमें कथानक का विचित्र गुम्फन; नाटक की क्षिप्त गति, उत्तम चरित्राँकन, चुभते हुए, व्यंग्यात्मक ऊँचे सँवाद और अति-नाटकीय समाप्ति आदि गुण हैं, जिन्होंने मिल कर इसे एक अभूतपूर्व नाटक बना दिया है। इस नाटक के समाप्त होते न होते ही हम अश्क की कला पर मुग्ध हो जाते हैं।

यहाँ पर यदि कौशल्या जी के 'एक अध्ययन' की ओर भी संकेत न किया जाय, तो कदाचित् बात अधूरी रह जायगी। कौशल्या जी का 'एक अध्ययन' अत्यँव विशद, सुन्दर और रोचक है। इतने 'फ़र्स्ट रेट एप्रिसियेशन' (First Rate Appreciation) के लिये, और साथ ही जिस होशियारी से उन्होंने अपने को अश्क जी की प्रशंसा की कमजोरी से मुक्त कर लिया है—इन दोनों चीज़ो के लिए वे बधाई की पात्री हैं। इतना सुन्दर 'एक अध्ययन' देख कर तो मेरे जैसे नये नाटककार के मन में भी कुछ उसी प्रकार के विचार आये, जैसे उस विदेशी महिला के मन में आये थे, जिसने ताजमहल देख, मुग्ध होकर यह इच्छा प्रकट की थी कि वह तत्काल ही मरने को तैयार है, बशर्त्ते कि उसका पति भी उसका इतना ही सुन्दर स्मारक बनवा दे।

पुस्तक सुन्दर रूप में छपी है। डेस्ट कवर आकर्षक है। प्रूफ़ की कुछ मामूली भूलें अवश्य हैं, परंतु उनसे पुस्तक के रसास्वादन में बाधा नहीं पड़ती। पुस्तक को अपने पास रखने की इच्छा होती है। कुल मिला कर 'चरवाहे' के नाटकों के लिए अश्क जी को बधाइयाँ देने की इच्छा होती है।

'चरवाहे—[सात एकांकी नाटक]—लेखक श्री उपेन्द्रानाथ अश्क; प्रकाशक—भारती भंडार, प्रयाग; पृष्ठ संख्या—२०४; मूल्य २॥).

श्री सोहनलाल द्विवेदी लिखित

काव्य कृतियों के नवीन संस्करण

भैरवी

गांधी युग का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। महामना मालवीयजी के शब्दों में 'ऐसी कविता का प्रचार देश के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक होना चाहिए।' मूल्य २॥=)

वासवदत्ता

बाबू मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं 'इस रचना से मैं बहुत प्रभावित हुआ।' स्वच्छन्दतापूर्वक जिस प्रौढ़ता की ओर द्विवेदीजी अग्रसर हो रहे हैं, जान पड़ता है, स्वयं वह भी उन्हें वरण करने के लिए आतुर हो रही है। 'वासवदत्ता' के प्रकाशन ने हिन्दी-साहित्य में एक नई क्रान्ति उत्पन्न कर दी है स्वयं पढ़कर निर्णय कीजिए। मूल्य१॥)

कुणाल

महापंडित राहुल सांकृत्यायन की सम्मति में—अशोक, तिष्यरक्षिता और कुणाल खास तौर से—'कुणाल' के चरित्र-चित्रण में कवि ने कमाल किया है। शब्द-सौकुमार्य और भावोत्कर्ष के साथ ही नपे तुले शब्दों के प्रयोग ने काव्य को बहुत उँचा उठाया है। विशेषसंस्करण मूल्य २॥)

पूजागीत

राष्ट्रीय चेतना को काव्य का सच्चा स्वरूप देने के लिए द्विवेदी जी को प्रचुर सम्मान तथा लोकप्रियता प्राप्त हुई है। ये पूजा-गीत कवि के गौरव के अनुरूप ही हैं। मूल्य २)

विषपान

सुप्रसिद्ध पौराणिक कथा का सरल तथा सबल खंड-काव्य है। भाषा का प्रवाह, प्रसन्न शैली तथा कथा के मार्मिक घटना-क्रम की वर्णना ने इसे बड़ा ही हृदयग्राही बना दिया है। मूल्य १)

झरना शिशुभारती बाँसुरी

द्विवेदी जी पहले बालकों के कवि हैं पीछे राष्ट्र के। पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा माननीय सम्पूर्णानन्दजी ने इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा की है। 'अमृत बाज़ार पत्रिका' की सम्मति में—जिस प्रकार की शिक्षा बालकों को देने के लिए हमारे नेता वर्षों से प्रयत्न कर रहे हैं, इन पुस्तकों में उसी प्रकार का साहित्य है। प्रत्येक पुस्तक में कई रंगीन तथा अनेक सादे चित्र हैं। प्रत्येक पुस्तक का मूल्य १)

पूरे सेट का मूल्य १२ रु०

—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

ESTD 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेंट रिकगनाइजड AIDED

सिन्हा होमियो मेडिकल कौलेज

—पो० लहेरियासराय, बिहार—

आज हिन्दी उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़ कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्सन सहित फीस H.L.M.S. १०), H.M.B.S १५) H.M.D.S. २५) पुस्तके—अ० परिवारिक १॥) बायोकेमिक १॥) मेटेरिया मेडिका १॥) मेडिकल डिक्सनरी २) आर्गेनन १॥) फार्मा कोपिया १॥) रेड लाइन सीम्पटम्स १॥) (१) बृ० इंजेक्सन चिकित्सा ३) बृ० अ० पारिवारिक चिकित्सा ६॥) बृ० अ० मेटेरियां मेडीका ६॥) ऐनाटोमो १॥) परिक्षाविधान १॥) रिलेशन शिप, १॥) कुल किताबें २५) में एक साथ दी जायँगी डा० ख० माफ। अमेरिकन दवाइयाँ ३०—=)॥ २००—≡) ड्राम, फी औंस ॥), घरेलू बक्स पुस्तक सहित ३६ शीशी का ८) सुगर और गोली २॥) फी पाउण्ड। चौथाई Advance भेज दें। थोक खरीदार को २५ प्रतिशत कमीशन देते हैं।

नोटः—बृहत् सूची मुफ़्त—सचित्र मेडिकल मैगजीन मासिक ॥) सालाना—५)

संरक्षक—राय सा० डा० यदुबीरसिंह एम० डी० यस० (U.S.A.)

सचित्र साप्ताहिक 'देशदूत' का विशेषांक

काश्मीर अंक

इस अंक का संपादन करेंगे

पंडित शिवनाथ काटजू एम० ए०, एल-एल० बी०

'देशदूत' के काश्मीर अंक विशेषांक के प्रकाशन की तैयारी जोरों से प्रारंभ हो गई है। काश्मीर की समस्या स्वतंत्र भारत की आज की एक प्रमुख समस्या है। काश्मीर भारत का अंग है। उसकी रक्षा तथा स्वतन्त्रता भारतीय सरकार का कर्तव्य है! इस विशेषांक में काश्मीर की वर्तमान समस्याओं पर राष्ट्र के बड़े बड़े नेताओं के गंभीर तथा जानकारी पूर्ण लेख रहेंगे। काश्मीर की भौगोलिक, ऐतिहासिक तथा राष्ट्रीयता का सचित्र विवरण दिया जायेगा। काश्मीर के प्रति पाकिस्तानी नीति पर भी नेताओं द्वारा सुन्दर प्रकाश डाला जायेगा। काश्मीर के संबंध में सुन्दर चित्र तथा नेशनल कान्फ्रेंस के नेताओं के संदेश आदि भी आकर्षक रूप में होंगे।

विज्ञापनदाताओं तथा एजेंटों क

अभी से अपना स्थान तथा बिक्री के लिये कापियाँ रिजर्व करा लेना चाहिये। नये ग्राहकों को यह अंक मुफ़्त मिलेगा। यह अंक काश्मीर का एक अलबम होगा।

दर्जनों चित्रों तथा कार्टूनों से सुसज्जित

इस अंक का मूल्य होगा केवल ।=)

व्यवस्थापक 'देशदूत' इलाहाबाद

भारत के कोने-कोने में हजारों जनता द्वारा पढ़ा

जानेवाला तथा ११ वर्षों से लगातार प्रकाशित होनेवाला

प्रमुख राष्ट्रीय साप्ताहिक पत्र

सचित्र देशदूत में

विज्ञापन देकर अपने व्यापार को बढ़ाइये

Registered No. A—295

लारियट का अन्त तक वाइन एल... निर्मल।
कृष्ण प्रेस, प्रयाग में ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल द्वारा मुद्रित तथा 'देशदूत' कार्यालय प्रयाग, द्वारा प्रकाशित।

देशदूत

DESHDOOT
HINDI WEEKLY
Annual Price Rs. 7-8-0
Per Copy Annas Two.
वार्षिक मूल्य ७।।)
एक प्रति का ≈)

...न पाकिस्तान का समझौता दोनोंराष्ट्रों के प्रधान मंत्रियों द्वारा हुआ है। प्रधान मंत्री पंडित नेहरू तथा भारत सरकार ने राष्ट्र में सद्भावना तथा शांति को बनाये रखने की अपील की है। श्री लियाक़त अली ने भी अल्प संख्यकों की सुरक्षा का वचन दिया है। समझौता उपयुक्त समय पर हुआ है। उस की सफलता से भारत तथा पाकिस्तान दोनों का लाभ होगा।

रविवार, १६ अप्रैल, १९५०
Sunday, 16th April, 1950

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

सामयिक लेख, कहानी, रंगमंच, आलोचना आदि इस अंक में पढ़िये

अनेक विषयों की बढ़िया पुस्तकें

हिन्दी भाषा का संक्षिप्त इतिहास

यह राय बहादुर डाक्टर श्यामसुन्दर दास के इसी नाम के ग्रन्थ का सारांश है। विषय नाम से ही प्रकट है। अपनी भाषा का इतिहास संक्षेप में पढ़ने के लिए इसे लीजिए। अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य १) एक रुपया।

आदर्श भूमि अथवा चित्तौर

चित्तौर राजपूतों के त्याग के कारण तीर्थ बन गया है। भारत के गौरव स्वरूप उसी चित्तौर का ओजपूर्ण भाषा में लिखा गया इतिहास पढ़कर अपनी जानकारी बढ़ाइए। मूल्य २) दो रुपये।

पंडित जी

नामी उपन्यास लेखक शरद बाबू के इस उपन्यास में कुलीनता, उच्च शिक्षा, द्विज और द्विजेतर, गाँव की भलाई और अपनी उन्नति, नई शिक्षा और मिथ्या अभिमान आदि के सम्बन्ध में बहुत ही विशद विवेचना की गई है। मूल्य २) दो रुपये।

मैक्सिम गोर्की

रूस के इस विश्रुत कलाकार के परिचय के लिए इस पुस्तक को पढ़िए। है तो यह जीवन चरित, पर इसे पढ़ने में कहानी का आनन्द मिलेगा। इसकी जीवनचर्या का वर्णन पढ़कर पाठक जान सकेंगे कि इस कलाकार को किन विकट कठिनाइयों में होकर गुजरना पड़ा था। छोटे टाइपों में छपी लगभग ढाई सौ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य ३) तीन रुपये।

युद्ध और शान्ति

यह संसार के श्रेष्ठ उपन्यास-लेखक और विचारक काउण्ट लियो टाल्स्टाय के प्रसिद्ध रूसी उपन्यास 'वार एण्ड पीस' का हिन्दी रूपान्तर है। यह ऐतिहासिक उपन्यास तब लिखा गया था जब लेखक की शैली परिमार्जित हो गई थी और उन्हें अन्तर्द्वन्द्व से छुटकारा मिल कर शान्ति मिल गई थी। लेखक ने उसमें मानव-जीवन का सम्पूर्ण चित्र, अपने समय के रूस की तस्वीर और राष्ट्रों की खींचतान बड़ी खूबी से चित्रित की है—जीवन और मृत्यु के रहस्य का भी उद्घाटन किया है। लगभग पौने सात सौ पृष्ठों की सजिल्द प्रति का मूल्य ५।-) पाँच रुपये पाँच आने

कुलबोरन

श्री चन्द्रभूषण वैश्य ने इस उपन्यास को सत्य घटना के आधार पर लिखा है। समाज की अन्ध परम्पराओं से देश की जो हानि हो रही है उसका इसमें सजीव चित्र है। सुधार करनेवाले को रूढ़ियों के अन्ध भक्तों से जैसा लोहा लेना पड़ता है उसका नमूना उपन्यास का नायक, 'कुलबोरन' है। अच्छे कागज पर छपी सजिल्द पुस्तक का मूल्य २।।) दो रुपये आठ आने।

अल्पता की समस्या

'साम्प्रदायिक भेद पर विशेष अधिकार माँगना और ऊलजलूल दावे पेश करना तथा उन माँगों के पूरा न होने पर देशद्रोह के लिए कमर कस लेना किसी देश-भक्त का काम नहीं।' इसी पर दृष्टि रख कर पंडित वेंकटेश नरायण तिवारी एम० ए० ने तथ्यों और आँकड़ों के साथ पुस्तक में उलझन को समझाया है। पाकिस्तान बन जाने पर भी जिनके मन में ऊपर लिखी भावना है उनके समाधान के लिए इसमें सप्रमाण उत्तर है। मूल्य २) दो रुपये।

ईरान

महा पंडित राहुल सांकृत्यायन ने इस पुस्तक में अपनी ईरान-यात्रा का विशद वर्णन किया है। इसके पढ़ने से ईरान की बहुत-सी जानकारी पाठकों को हो जायगी। भ्रमण-वर्णन कहानी का सा आनन्द देगा। मूल्य १।।≡) एक रुपया ग्यारह आने।

मध्य प्रदेश और बरार का इतिहास

इस अत्यन्त प्रामाणिक इतिहास में उक्त प्रदेश से सम्बन्ध रखनेवाली सभी प्राचीन और अर्वाचीन महत्त्वपूर्ण बातें आ गई हैं। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

सुन्दरी-सुबोध

इस पुस्तक में पति-पत्नी को सन्तुष्ट रखने के उपाय इस ढंग से बताये गये हैं कि कहानी का आनन्द देते हैं। इसके सिवा सास-पतोहू, देवरानी-जेठानी, ननद-भौजाई, माता-पुत्र आदि स्त्री के दूसरे सम्बन्धों को भी ठीक २ रखने के उपाय बताये गये हैं। पुरुषों के लिए भी बहुमूल्य अनुभूत बातें दी गई हैं। इनको उपयोग में लाने से गृहस्थी सुखमय हो सकती है। ३०० पृष्ठों से अधिक की सजिल्द प्रति का मूल्य २।।) दो रुपये आठ आने।

आदर्श महिला

इस पुस्तक में सीता, सावित्री, दमयन्ती, शैव्या और चिन्ता आदि पाँच प्रसिद्ध देवियों की जीवन-घटनाओं का सजीव सचित्र वर्णन दिया गया है। इसको पढ़ने में कहानी का आनन्द मिलेगा और शिक्षा सहज ही। मूल्य २।।≡) दो रुपये ग्यारह आने।

कथा सरित्सागर

इस पुस्तक में आदि से ... तक एक से एक बढ़िया कहानि... जैसा इसका नाम है, यह ... का समुद्र है। प्रत्येक कथा के ... एक न एक दृष्टान्त है। ... सजिल्द प्रति का २।।≡) मू... रुपये ग्यारह आने।

देव दर्शन

इसमें ब्रजभाषा के प्रख्या... देव की जीवनी और उनके ... काव्यों का आलोचनात्मक ... दिया गया है। ब्रज काव्य के ... अतिरिक्त साहित्य के विद्यार्थि... लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त ... है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ... एक रुपया पाँच आने।

बन्दना

यह श्रीमती चन्द्रमुखी ओझा ... के ५२ मधुर गीतों का संग्र... आरम्भ में श्री सूर्यकान्त ... 'निराला' की लिखी प्रश... अच्छे कागज पर छपी ... पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

तुलसी के चार दल

(प्रथम और द्वितीय ... गोस्वामी तुलसीदास जी के रा... नहछू, बरवै रामायण, पार्वती ... और जानकी मंगल का ... नात्मक परिचय तथा इन चारों ... की अध्ययनपूर्ण टीका। इसे इन ... की कुंजी समझिए। मूल्य प्रथम ... का ३) रुपये, द्वितीय भाग का ... दो रुपये ग्यारह आने।

ग्रह-नक्षत्र

इस पुस्तक में ग्रहों और ... आदि से सम्बन्ध रखने वाली ... सभी आवश्यक बातों का ... वर्णन सरल भाषा में है। ... तीन रुपये।

हार या जीत

इस उपन्यास में लेखक ... ब्रजेश्वर वर्मा एम० ए०, डी० ... ने एक देहाती लुहार की अल्प... बेटी को घटनाक्रम से, अनाथ ... में, देहात से महराजगंज की ... पृथाकुंवरि के आश्रय में पहुँचा ... है। वहाँ रानी की कृपा से ... लड़की ने विद्या पढ़ी। फिर इस... गुणों का विकास हुआ जिससे ... सभ्य होकर सम्मान पाता है। ... असहयोग आन्दोलन में सक्रिय ... लिया और अन्त में कलकत्ता ... नौकरी कर ली। कई पुस्तकें ... विदेश-यात्रा के बाद रानी के ... की प्रार्थना पर उससे विवाह ... उपन्यास की घटनावली, विचारों ... संघर्ष और चन्दा की ... दृढ़ता सराहने योग्य है। मूल्य ... दो रुपये।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

वर्ष १२, संख्या ३१] [रविवार, १६ अप्रैल १९५०

उचित ! अथवा अनुचित है !!

विश्व के महान कलाकारों तथा साहित्यकारों के जीवन का हंसता हुआ सत्य !

लेखक, श्री विनोदशङ्कर व्यास

[२]

जर्मन महाकवि गेटे— का प्रथम प्रेम सम्बन्ध लिली नाम की स्त्री से हुआ था। थोड़े समय में ही दोनो अलग हो गये। इसके बाद फाइवोन स्टेइनि पर गेटे की दिष्टि पड़ी। यह अयस्था में उससे सात वर्ष बड़ी थी और यह सम्बन्ध भी केवल सात वष तक चला। फिर वे क्रिस्टाईन वलपूस की ओर आकर्षित हुए। इसी कारण झगड़ा हुआ और फाइवोन को गेटे ने छोड़ दिया था।

क्रिस्टाइन को लेकर गेटे के विरुद्ध एक बड़ा आन्दोलन खड़ा हुआ था। लोग उससे घृणा करने लगे। एक अविवाहित नवयुवती को अपने साथ रखने का विरोध हुआ। वाध्य होकर गेटे ने उससे विवाह किया।

गेटे का जीवनी लेखक लिखता है—गेटे से सम्बेन्ध रखने वाली स्त्रियाँ की नामावली में हि एक पुस्तक के कई भाग समाप्त हो जाँयगे। वह ऐसा व्यक्ति था, जिसके अगणित प्रेम सम्बन्ध भिन्न-भिन्न हुए।

बेरन—इंगलैन्ड के विख्यात कवि के नाम से सभी परिचित हैं। उसके प्रेम कि कहानियाँ उसकी कविताओं से अधिक प्रचलित हैं। एक शताब्दी के पश्चात अब यह रहस्य खुला है कि स्वयं अपनी वहिन अगुस्ता लेघ के प्रति उसकी वासना प्रबल हो उठी थी और उससे एक लड़की भी उत्पन्न हुई थी।

बेरन के जीवन में अगणित प्रेम सम्बन्ध की की कथाएं सुनी जाति हैं। उसमें दुश्चारित्रता की कहानो पढ़ कर भी हजारों स्त्रियाँ उसके इधर अपना सर्वस्व निछावर करने के लिए प्रस्तुत थीं। केवल ३६ वर्ष की अवस्था में उसका देहान्त हुआ था।

बालज़ाक—फ्रांस का विलक्षण उपन्यासकार था। १८ महीने पत्र-व्यवहार के बाद काउटेन्स हन्सका से उसका साक्षात हुआ। वह उसकी रचनाओं पर मुग्ध थी। अपने पति के मृत्यु के बाद उसने बालज़ाक से विवाह किया। उस स्त्री का चरित्र भ्रष्ट था किन्तु बालज़ाक दिन रात पढ़ने-लिखने में लगा रहता था। अतएव उस ओर उसने कभी ध्यान नहीं दिया। जीवन की अन्तिम घड़ियों में विक्टर ह्यूगो उसे देखने आया। उसने काउन्टेस से कहा—अब बालज़ाक के जीवन का शीघ्र ही अन्त होने वाला है।

लौटते समय ह्यूगो ने देखा, काउन्टेस बगल के कमरे में अपने प्रेमी के साथ पलंग पर पड़ी थी।

गुस्तेव फुलावर—फ्रांस के साहित्य का महारथी और यथार्थवादियों का पथ प्रदर्शक था। मपासां जैसे अमर कहानी लेखक उसके शिष्य थे।

वह एक विचित्र पुरुप था। वह अपने डेस्क पर मनुष्य की 'खोपड़ी' रखे रहता था। बैरन के चरित्र का प्रभाव उस पर पड़ा था। अपने पत्र-व्यवहार में एक मित्र को उसने लिखा था—'मैं कोचीन चाइना का शाहंशाह होने के लिए उत्पन्न हुआ हूँ। जो एक सौ छानवे फुट लम्बी नली द्वारा तम्बाखू पीता है। ६ हजार पत्नियां और १४ सौ रखेलियों का जो उपभोग करता है।'

फ्लावर जीवन भर अविवाहित रहा। तेरह वर्ष की अवस्था में वह एक सोलह वर्ष की इंगलिश युवती गर्टयड कालियर पर मोहित हुआ था। दूसरी बार पन्द्रह वर्ष की अवस्था में माहूरीस शेपले सिंगर २६ वर्ष की अवस्था वाली विवाहित स्त्री पर आशक्त हुआ था। १३ वर्ष की अवस्था में घर में काम करने वाली एक दासी से उसका सम्बन्ध हुआ था। जिसके कारण उसे बहुत लज्जित होना पड़ा था।

उसकी वासना उसे ब्राथल से सदैव हतोत्साहित होकर वापस लाती थी। इसके बाद लूईस कोलियट से उसका सम्बन्ध हुआ। यह स्त्री बड़ी विचित्र थी। आरम्भ से ही ख्याति की ओर उसकी लालसा थी। अपने सौन्दर्य्य और कुशलता के कारण उस युग के महान फ्रेंच कलाकारों से उसने अपना सम्बन्ध स्थापित कर लिया था।

इस महिला की एक बड़ी मनोरंजक कहानी है। एक बार फ्रेंच एकाडमी से सब से सुन्दर कविता के लिए ५ हजार फ्रेंक पुरस्कार घोषित किया गया। कोलियट उसके लिए बड़ी उत्सुक हुई। उसने अनेक प्रयत्न किया। उसने फ्लावर को एक कमरे में बन्द करते हुए कहा—जब तक कविता पूरी नहीं कर लोगे, बाहर नहीं निकलने दूंगी। क्योंकि कल भेजने की आखरी दिन है।

फ्लावर शराब पीकर मस्त रहा। बहुत प्रयत्न करने पर भी वह कुछ लिख नहीं सका, अन्त में दो बजे रात में फ्रांस के विख्यात कवि विलियन की एक पुस्तक से कुछ पंक्तियां निकाल कर नकल कर दीं।

कोलियट के आने पर उसने वह कविता बड़ी प्रसन्नता से दे दी। दूसरे दिन वह भेज दी गई। एकेडमी के सभी सदस्यों पर केलियट का प्रभाव था। अतएव निर्णय होने पर सर्व सम्मति से उसकी कविता स्वीकृत हुई। उसे सर्व प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

बहुत दिनों के बाद अनातोले फ्रांस ने उस रहस्य का उद्घाटन किया तब लोगों को विदित हुआ कि चोरी की कविता पर एकेडमी द्वारा पुरस्कार दिया गया था।

गवर्नमेंट हाउस दिल्ली की [illegible] तथा सरदार पटेल आदि।

फ्लायर से कोलियट का सम्बन्ध बहुत समय तक था। एक विद्वान आलोचक ने लिखा है—'स्त्रियों के सम्बन्ध के प्रति फ्लावर निश्चय एक गदहे के समान था।'

लियो टाल्सटाय—को महात्मा गांधी अपना गुरु मानते थे और उन्हीं के अहिंसा के सिद्धान्तों का प्रयोग उन्होंने अपने जीवन में सफल कर दिखला दिया था। टाल्सटाय रूस का अमर कलाकार था। उसका आरंभिक जीवन जुआ, शराब और स्त्रियों के संसर्ग में पीता। केवल ५-६ वर्ष की अवस्था में वह एक अपने से बड़ी उम्र वाली लड़की से प्रेम करने लगा था। बाद में उसी स्त्री की पुत्री से टाल्सटाय का विवाह हुआ था।

टाल्सटाय को एक किसान औरत से एक जारदज पुत्र उत्पन्न हुआ था। वह नौकर के रूप में उनके परिवार में था।

टाल्सटाय की पत्नी बड़ी शिक्षित थी। साहित्यिक कार्य में वह बराबर अपने पति को सहयोग देती रहीं। किन्तु दोनों का दाम्पत्य जीवन अत्यन्त भयानक और कोलाहल पूर्ण व्यतीत हुआ था।

आदर्श और सिद्धान्तों के बल पर समस्त विश्व में टाल्सटाय की कीर्ति फैली थी; किन्तु उसका अपना घरेलू जीवन कितना कारुणिक था, यह उसकी पत्नी, लड़की और उसकी अपनी लिखी हुई डायरी पढ़ने पर ही ज्ञात होता है।

ठीक वही बात आज हमारे देश में भी दिखाई पड़ती है। जिस त्याग, अहिंसा और सत्य का आदर्श सामने रख कर जो लोग राजनीतिक क्षेत्र में आये थे, उनमें से कितने अब स्वतन्त्रता के बाद ऊंची कुर्सी पर बैठकर मदान्ध हो गये हैं! इसका प्रमाण प्रतिदिन समाचार पत्रों द्वारा विदित होता है। उस महान सत्य और अहिंसा के झंडे के नीचे जनता की अवस्था कितनी कारुणिक है। यह किसी से छिपा नहीं है।

अनातोले फ्रास—बड़ा दार्शनिक उपन्यास लेखक माना जाता है। फ्रेंच साहित्य में उसका अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। इतने बड़े विद्वान और दार्शनिक के जीवन में एक साधारण सी घटना कैसा रंग दिखलाती है, यह विचार करने की बात है।

एक दिन मैडम-डी-कोलियावेट ने अनातोले और उसकी पत्नी को अपने यहां आमंत्रित किता। चलते समय मैडम ने मखमल का एक पर्दा अनातोले फ्रांस को दिया। उसका अनुरोध था कि इसे वह अपने अध्ययन के स्थान पर लगा दें। यही पर्दा पति पत्नी में झगड़े का मूल कारण हुआ। गुप्त रूप से मैडम और अनातोले का प्रेम चल रहा था। अनातोले की पत्नी उस पर्दे को टंगा नहीं देखना चाहती थी। क्रोध में एक दिन अनातोले ने उसे फाड़ कर सड़क पर फेंक दिया। इस घटना का वर्णन उसके उपन्यास 'दी-वीकर-वर्क-बोमेन' में मिलता है। कटुता बढ़ गई थी। कुछ दिनों के बाद अनातोले ने अपनी पत्नी से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया और कोलियावेट के यहां जाकर रहने लगा।

कोलियावेट बहुत ही शिक्षित और कुशल रमणी थी। अना तोले की जीवन पढ़ने पर उसके प्रभाव का रहस्य स्पष्ट हो जाता है। उसने हर तरह से उसे सन्तुष्ट रखने का प्रयत्न किया और इसमें वह पूर्ण सफल रही।

अनातोले के वृद्धवस्था में एक विचित्र घटना हुई। एक बार ब्यूनो एरिस में साहित्यिक भाषण के लिये अनातोले फ्रांस गया। मार्ग में ही एक अर्जन्टाइन एक्ट्रेस पर वह मोहित हो गया। यह युवती एक्ट्रेस देखने में उसकी पौत्री के समान थी। एक पार्टी में सब के सम्मुख फ्रांस ने उसे अपनी पत्नी के रुप घोषित किया।

समाचार पत्रों द्वारा इसकी सूचना मैडम कोलियावेट को मिली। उसके ऊपर इसका भीषण प्रभाव पड़ा। वह अपने जीवन से निराश हो गई। उसे स्वप्न में ही ऐसी आशा नहीं थी। उस घटना के बाद वह बीमार पड़ी। दिन पर दिन उसकी अवस्था खराब होती गई। फिर वह जीवित नहीं रह सकी। उसकी मृत्यु के बाद अनातोले ने अपने एक मित्र को पत्र में लिखा था— मैडम के चले जाने से मेरे अपने जीवन का अन्त हो गया है।

कोलियावेट के देहान्त के बाद १५ वर्ष तक अनातोले फ्रांस में जीवित रहा। ८० वर्ष की अवस्था में वह इस संसार से बिदा हुआ था।

महाकोशल की चिट्ठी

जमींदारी उन्मूलन विधेयक, होमियेपेथिक कांफ्रेंस, रेलवे स्टेशनों का पुनर्निर्माण; अधिक अन्न उपजाओ आंदोलन की प्रगति, और सी० पी० ट्रांसपोर्ट

(विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

उत्तर प्रदेश एव बिहार प्रांत के समान ही मध्यप्रदेश धारा सभा ने मालगुजारी उन्मूलन विधेयक पर अपनी स्वीकृति दे दी। यद्यपि अन्य प्रान्तों की तुलना में मध्य प्रदेश इस कार्य में पिछड़ गई है, परन्तु विश्वास किया जाता है कि हर एक प्रान्त के जमींदारी उन्मूलन विधेयक की प्राय: अच्छी बातों का समावेश इसमें किया गया है, जिससे किसानों और मालगुजारों का भला हो सके। इस पर धारा सभा में लगातार चार दिनों तक बहस चलती रही। इसका उत्तर देते हुये गृह मन्त्री पंडित द्वारका प्रसाद जी मिश्र ने कहा, "इस विधेयक को सफल बनाने में मुआवजा के रूप में चाहे जितना भी खर्च पड़े, उसे हम प्रसन्नता पूर्वक उठायेंगे तथा शीघ्रताशीघ्र इसे व्यवहार रूप दिया जायेगा। यह विधेयक कांग्रेस की प्रतिज्ञा के अनुकूल है। हमारा प्रांत हर एक बातों में अग्रणी रहा है, परन्तु इसमें हम पीछे रह गये हैं केवल इसलिये कि अन्य प्रांतों के अनुभव का लाभ हम उठा सकें। आपने प्रांतीय सरकार की नीति का स्पष्टीकरण करते हुये कहा कि सरकार ने बीच का रास्ता अपनाया है। सरकार की इच्छा है कि किसानों को हर प्रकार से अधिक सङ्कट और मालगुजारों के चङ्गुल से बचाया जाए तथा मालगुजारों को संतोषजनक मुआवजा दिया जाये।

प्रांतीय धारा सभा में मालगुजारों को मुआवजा देने के संबन्ध में गरमागरम बहस हुई। मालगुजारों के प्रतिनिधियों का विरोध था कि उन्हें इस विधेयक से कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन मुआवजे की रकम कम दी गई है तथा उसे किस्तों के बजाय एक साथ ही दे दिया जाये, ताकि वे उसका सदुपयोग कर सकें और अपने जीविकोपार्जन का कोई नया साधन ढूंढ सकें। समाजवादी विचार धारा के सदस्यों का मत था कि सरकार मालगुजारों को मुआवजा देकर जनता को कर के बोझ से लाद देगी। यहां तक की इस कार्य के लिये एक-एक पाई जनता से ही वसूल की जायेगी। पंडित मिश्र ने इसका उत्तर देते हुए कहा कि सरकार हरएक वर्ग के साथ न्याय करना चाहती है तथा संपूर्ण खर्च का ब्यौरा उसी समय तैयार किया जा सकता है जब तक कि इस विधेयक की समस्त धाराओं पर संपूर्ण विचार नहीं हो जाता। इस प्रकार मालगुजारी उन्मूलन विधेयक का स्वागत धारा सभा के प्राय: सभी सदस्यों ने किया, परन्तु प्रांत के प्रतिष्ठित जमींदार एवं कांग्रेसी एम० एल० ए० श्री ब्यौहार राजेन्द्र सिंह ने मुआवजे के संबन्ध में अपनी शंकाए प्रकट की।

होमियो पैथिक कान्फरेन्स

अखिल भारतीय होमियो पेथिक परिषद का उद्घाटन मध्यप्रदेश के पुनर्वास विभाग के मंत्री श्री रामेश्वर अग्निभोज ने किया। इसका सभापतित्व मद्रास के प्रसिद्ध होमियोपैथ डाक्टर एम० वी० एस राव ने किया। श्री रामेश्वर अग्निभोज ने अपने भाषण में बताया कि होमियोपैथिक का भविष्य उज्ज्वल है और होमियोपैथिक डाक्टरों को बिना किसी विघ्न-बाधा के होमियोपैथी के पुनरुत्थान का प्रयत्न सतत करते रहना चाहिये। इस चिकित्सा पद्धति ने जनता का ध्यान आकर्षित कर लिया है। इसकी दवाएं सस्ती और गुणकारी होती हैं। किन्तु होमियोपैथिक डाक्टरों को बिना इसकी विघ्न बाधाओं की चिन्ता किये आगे बढ़ना चाहिये।

परिषद् के स्वागताध्यक्ष डा० के० एल० दुबे ने अपने भाषण में कहा कि उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पश्चिमी बंगाल की प्रांतीय विधान सभाओं ने होमियोपैथी और कैमिक चिकित्सा-पद्धति के उत्थान और चिकित्सकों की उन्नति के लिये कानून बना दिये हैं तथा भारतीय सरकार ने इनके नैतिक स्तर को ऊँचा करने के लिये एक जांच समिति का निर्माण किया है परन्तु इसकी रिपोर्ट होमियोपैथिक डाक्टरों के प्रतिकूल है।

परिषद ने भारत सरकार द्वारा नियुक्त जांच समिति की रिपोर्ट पर भारत सरकार के समक्ष प्रतिनिधित्व करने के लिये एक समिति के सङ्गठन का निश्चय किया। इनके अतिरिक्त भारत सरकार से होमियोपैथिक दवाओं और साहित्य की विदेशों से सुविधा दिये जाने, प्रयोगशालाओं की स्थापना करने, सरकारी स्वास्थ्य - समितियों में होमियोपैथिक बिल पर लगाये गए प्रतिबन्धों को उठाने आदि की मांग की गई। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, होमियोपैथी के जन्मदाता डाक्टर हनोमैन तथा शरतचन्द्र बोस के प्रति श्रद्धाञ्जली अर्पित की।

रेलवे-स्टेशनों का पुनर्निर्माण

कई वर्षों से जनता की मांग थी कि जबलपुर, कटनी, सुहागपूर, गाड़रवारा, नरसिंहपूर इत्यादि जी० आई० पी० रेलवे के स्टेशनों में सुधार अत्यन्त आवश्यक है। कटनी जी० आई० पी० रेलवे का महाकोशल में महत्वपूर्ण जंक्शन है। वस्तुओं के यातायात और यात्रियों के ठहरने आदि की सुविधा का अत्यन्त अभाव है। इसी प्रकार जबलपूर रेलवे स्टेशन भी यातायात और आवागमन की दृष्टि से बहुत छोटा प्रतीत होता है। एक ही प्लेटफार्न पर सभी गाड़ियाँ खड़ी होती हैं इस उद्देश्य से भारत सरकार के रेलवे मिनिस्टर ने १६ लाल रु० जबलपूर स्टेशन के विकास के लिये स्वीकार किए हैं। स्टेशन को दोमंजला होना और एक ही प्लेटफार्म पर दो गाड़ियाँ खड़ी करने की व्यवस्था की जायगी। मानिकपूर, सोहागपूर, गाड़रवारा और नरसिंहपूर के स्टेशनों के विकास के लिये ६ लाख रु० स्वीकार किये गये हैं। भारत सरकार कटनी, सतना और सागर के स्टेशनों के विकास का योजना पर विचार कर रही है।

अधिक अन्न उपजाओ आंदोलन में प्रगति

गत मार्च में प्रांतीय सरकार ने कुएं खोदने, पड़ती जमीन को खेती के लिये तोड़ने और अन्न समितियों के निर्माण में दिलचस्पी ली। प्रांतीय कृषि-विभाग ने किसानों को ऋण भी दिये। पिपरिया, खुटई, कापसी, यवदा और बोरिया में प्राय: १०,००० एकड़ पड़ती जमीन तोड़ी गई। नागपूर, छिन्दवाड़ा, वर्धा, बैतूल,

भारतीय साहित्य संगम की झांकी

हिन्दी पर साम्राज्यवादी होने का आरोप लगाने वालों को उत्तर

लेखक, श्री शिवकुमार विद्यालंकार

[१]

पिछले दिनों दिल्ली में विभिन्न भाषाभाषी, मनीषियों, विद्वानों, कवियों तथा साहित्यकारों का एक बृहद् सम्मेलन कन्स्टीट्यूशन क्लब दिल्ली में हुआ था। इस अवसर पर प्रांतीय भाषाओं के अनेक विद्वानों ने अपनी भाषाओं के सम्बन्ध में सुन्दर प्रकाश डाला था। इस लेख में लेखक ने इसी सम्मेलन के संबन्ध में सुन्दर प्रकाश डाला है। संस्मरण मनोरंजक और पठनीय है। इस लेख का प्रथम अंश नीचे दिया जा रहा है। शेष अंश अगले अंक में छपेगा।

...तीय संसद के प्रेसिडेंट माननीय श्री मावलंकर

...दी आन्दोलन की प्रगति को देख ...लिए भारत से आवाज उठी थी ...त्तर भारत के लोग स्वाधीनता के ...न्दी साम्राज्यवाद का झण्डा फहरा ...यह भ्रम था। हिन्दी का साम्रा... ...से कोई सम्बन्ध नहीं। वह तो ...जीवित रहो और दूसरों को भी ...रहने दो' की हामी है। हिन्दी ...सम्मेलन इस भ्रम को दूर करने ...अनेक आयोजन कर चुका है। ...एक आयोजन गत सप्ताह ...क्लब नई दिल्ली में किया ...रतीय साहित्य संगम' में गुज-...ती, तैलगू, मलयालम, तमिल, ...पंजाबी भाषा के साहित्यिकों ...लन हुआ। सब ने अपनी भाषा ...का परिचय दिया। महिलाओं ...ओं सभी भाषाओं के गीत ...। सिर्फ पंजाबी गीत सुनाने के ...ी महिला को आमंत्रित न किया ...।

...भाषा भाषियों ने अपने साहि-...परिचय अपनी भाषा अथवा हिंदी ...अंग्रेजी में दिया। इस पर ...पर्याप्त असंतोष रहा। फिर भी ...साहित्य सेवियों ने उन्हे सुना और ...का पालन करते हुये अपनी ...का परिचय दिया। इससे अन्य ...के प्रतिनिधि अच्छी तरह से ...गये कि सचमुच अन्तर्प्रांतीय ...के लिये हिन्दी का माध्यम ...है।

...के सभापति भारतीय संसद के ...श्री मावलंकर थे।

...में संगम के उद्देश्य पर ...डालते हुये सेठ गोविन्द दास ने ...कि विभिन्नता में एकता का दर्शन ...संस्कृति की सब से बड़ी विशे-...। यहां विविध भाषाओं के प्रति-...विद्वान् उपस्थित हैं। इनका यह ...भारतीय संस्कृति को और अधिक ...।

सभापति का भाषण

...सभापति श्री मावलंकर ने अपने ...में कहा—"एकता सुनिश्चित ...जो अनेक मार्ग हैं उनमें भाषा ...बड़ा ऊँचा है। जब हम अपने भाषा-भाषियों से दूर होते हैं और उस समय अपनी मातृभाषा बोलने वाले के साथ मिलने का प्रसंग आता है, तब स्वाभाविक हर्ष और एक प्रकार का हृदय मिलन होता है। भाषा का ऐसा गहरा प्रभाव है। अतएव भाषा का प्रश्न भारत की एकता के लिये अत्यन्त महत्व-पूर्ण प्रश्न है, यही समझ कर सब प्रांतीय भाषाओं की नींव पर अधिष्ठित हुई हिंदी और लिपि देवनागरी को विधान सभा ने भारतीय संघ की राजभाषा और राष्ट्रलिपि निश्चित किया। इस राजभाषा का समस्त भारत के अनुरूप होना अत्यंत वांछनीय है इस लिए प्रादेशिक भाषाओं और हिन्दी भाषा का परस्पर सम्पर्क आवश्यक है।

सभी भाषाओं का मूल संस्कृत बताते हुये श्री मावलङ्कर ने कहा—"हिन्दी की नींव संस्कृत में है और दूसरी भारतीय प्रादेशिक भाषाओं का मूल भी प्रायः संस्कृत में ही है। दक्षिण भारत की द्रविड़ भाषाओं का मूल संस्कृत में न होते हुए भी इन सब भाषाओं में संस्कृत के शब्द अधिकतर प्रयुक्त होते हैं।

आपने कहा—"भारतवासियों की संस्कृति एक ही है। जो भगवद्गीता उत्तर भारत के लोगों को स्फूर्ति देती है, वही दक्षिण में कन्या कुमारी, पश्चिम में द्वारिका और पूर्व में जगन्नाथ पुरी में भी स्फूर्ति प्रदान करती है। इस कारण भारत में हिन्दी भाषा की जानकारी थोड़ी बहुत होना सब के लिये आवश्यक है।

दो आवश्यक सुझाव उपस्थित करते हुये श्री मावलङ्कर ने कहा—"हर एक भाषा में जो भी पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं, उनके हर अंक में भारतीय प्रांतीय भाषाओं में जो साहित्य है उसका परिचय देने की प्रथा प्रचलित करनी चाहिये। इससे एक प्रांतवासी को दूसरे प्रान्तों के साहित्य का ठीक-ठीक परिचय होगा। दूसरे भारतीय भाषाओं के संबंध में जो लिपि की एक बड़ी कठिनाई आती है, उसे दूर करने के लिये यदि हम सब भाषाओं के वास्ते एक लिपि स्वीकार कर लें तो मैं समझता हूँ कि भाषाओं में 'संस्कृत शब्दों' की बहुलता होने के कारण एक प्रान्तवासियों को दूसरे प्रांतों की भाषा पढ़ने की सहूलियत मिल सकेगी और वे उस भाषा को अधिकतर समझ सकेंगे।

गुजराती भाषा के प्रकांड साहित्यकार श्री के० एम० मुन्शी

भारतीय भाषाओं के संगम के संयोजक सेठ गोविन्ददास

तेलगू भाषा

सभापति के भाषण के बाद विभिन्न भाषाओं के प्रतिनिधियों ने अपनी भाषाओं के गौरव पर प्रकाश डाला। सबसे पहिले भारतीय संवाद के उपाध्यक्ष श्री अनन्तश यनम आयंगर ने तेलगू भाषा और साहित्य पर बड़े रोचक ढंग से प्रकाश डाला। आपने कहा—"देश में सांस्कृतिक एकता का होना परम आवश्यक है। इस संगम का आयोजन इसी उद्देश्य से किया गया है। मेरी भाषा तेलगू पूर्व की इटालियन है। यह भाषा मधुर और ललित है। सन्त त्यागराज ने इस भाषा को सम्पन्न बनाने में बहुत बड़ा काम किया है। वे दक्षिण भारत के दार्शनिक थे उन्होंने कर्नाटिक संगीन शास्त्र के लिए ३००-५०० गीत बना कर दिया इन गीतों अथवा कीर्तनों का दक्षिण भारत में काफी प्रचार है!

आपने कहा—"तेलगू में ८० स्वर व ३५ व्यंजन हैं। इस अवस्था से यदि तेलगू भी देवनागरी में लिखी जाय तो मुझे इस में कोई आपत्ति न होगी। तब हमारे बच्चों को बहुत अधिक लिपियां सीखने की जरूरत न रहेगी।

"तेलगू का व्याकरण संस्कृत व्याकरण से मिलता जुलता है। अलंकार भी संस्कृत जैसे हैं। सग्धरा व शार्दूल विक्री दितभ आदि का यद्यपि चलन है। २-३ छन्द तेलगू के अपने भी हैं।

आपने कहा—"तेलगू साहित्य ईस्वी सन् के अनुसार १००० वर्ष पुराना किसी युग में इस का प्रचार मगध से कन्या कुमारी और गुर्जर व महाराष्ट्र तक का। प्राचीन साहित्य महा भारत

(शेष पृष्ठ ११ पर)

गोधन की रक्षा करना भारतीयों का कर्तव्य है

गोवध वर्जित है, क्योंकि इससे राष्ट्रीय शक्ति का ह्रास होता है।

लेखक, सेठ गोविन्ददास एम० एल० ए०

> पिछले दिनों हरिद्वार में अखिल भारतीय गो सेवक समाज का अधिवेशन हुआ था। सभापति पद से सेठ गोविन्द दास ने सामाजिक उपयोगी, तथा विचारणीय भाषण दिया था। इस लेख में इसी भाषण का उपयोगी अंश दिया जाता है, जो प्रत्येक भारतीय के लिये पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

अखिल भारतीय गो सेवक समाज पुण्य भूमि भारतवर्ष में गोवध सर्वथा बन्द हो, इस महान उद्देश्य को लेकर खड़ा हुआ है और इस महायज्ञ में पुण्य-व्रत एवं दीक्षा लेने के लिये हम प्रत्येक गो भक्त को सादर आमंत्रित करते हैं।

फ्रान्स देश में पशुओं की खेती होती है जहाँ प्रतिवर्ष ४८% गोधन माँस एवं चर्म के लिये मार डाला जाता है—इंगलैंड, अमेरिका, जरमनी और कनाडा आदि देशों में भी लाखों की संख्या में प्रतिवर्ष गोवध होता है। वहाँ ८ वर्ष से अधिक आयु की गाय ढूँढ़ने पर भी न मिलेगी और बछड़े तो बिचारे ५-६ वर्ष के भी मिलना दुर्लभ हैं उन को तो बहुत कम आयु में ही माँसके लिये मार डाला जाता है। उन की सभ्यता और संस्कृति में गाय का महत्व एक दूध देने वाली मशीन के रूप में है। मैं आप से पूछता हूँ कि क्या आप भी ज्वार, बाजरा, गेहूँ, जौ, चने सरसों की भांति गाय की खेती करना चाहते हैं कि आये वर्ष लाखों करोड़ों गायों-गोधन के सच्चे धन को नष्टभ्रष्टकर बैंकों में रुपये जमा करें। क्या ऐसा करना आपकी संस्कृति एवं सभ्यता के अनुकूल होगा। मेरा विश्वास है कि भारत के सातलाख ग्रामों में रहने वाले जन एक स्वर से कहेंगे कि हम भूखे रहेंगे, नंगे रहेंगे, जाड़े में ठिठुरेंगे गरमी में तड़पेंगे किन्तु ऐसी गाय की खेती न करेंगे जिस में अपने पापी पेट को भरने के लिए गोवध करना पड़ेगा। आजकल पाश्चात्य सभ्यता से ओतप्रोत व्यक्ति इसे भावुकता और मूर्खता कहेंगे, किन्तु हमें यह भूलना न चाहिए मनुष्य में मस्तिष्क मात्र की सत्ता स्वीकार करने से मानव को अधोगति अवश्य भाविनी है। एटमबोम्ब, हाइड्रोजन-बॉब से हमारा छुटकारा नहीं हो सकता मनुष्य जाति के आदिम काल से अब तक मास्तिष्क एवं हृदय दोनों ने अपना अपना कार्य किया है, एक की पूर्णता दूसरे से होती है, एक के अभाव में दूसरा पंगु हो जाता है। महाराज छत्रपति शिवाजी ने गो एवं ब्राह्मणों की रक्षा के लिये तलवार उठाकर जो भाव-लहरी उत्पन्न की, उस ने एक बार समग्र भारतवर्ष में महाराष्ट्र विजय वैजयती को फहरा दिया और भारत सम्राट बहादुरशाह ने भी महाराष्ट्र कुल कमल दिवाकर पेशवा की प्रेरणा से भारत में गोवध न हो, ऐसी राजाज्ञा प्रचलित की।

गुरु गोबिंद सिंह और बन्दा बैरागी ने गो रक्षा के लिये जो कृपाण धारण की उन के अनुयायियों ने उस कृपाण को पुण्य वृत के रूप में धारण किया।

पिछली शताब्दी में अमेरिका ने भावुकता में बह कर ही प्रबल ब्रिटिश-सत्ता से टक्कर ले कर अपना स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित किया। इटली में गेरीबेल्डी ने राष्ट्रीयता की भावना का ऐसा मन्त्र फूंका कि देश कुछ का कुछ हो गया।

पराजित और विच्छिन्न जर्मन देश में हिटलर की ओजस्विनी भाव प्रवण वाग्धारा ने अभूत पूर्व शक्ति एवं स्फूर्ति उत्पन्न की।

बाहर क्यों जाँय, हमारे देश में ही महात्मा जी ने स्वराज्य प्राप्ति की भावना ऐसा प्रबल संचार किया कि परमशक्तिमान् ब्रिटिश सामाज्य को भी झुकना पड़ा।

कहने का आशय यही है कि अपनी भावना और संस्कृति को लेकर ही देश का उत्थान और पतन होता है। प्रबल भावना की उपेक्षा नहीं की जा सकती, करनी भी नहीं चाहिए—भावना को ही लेकर हमारा अपनापन और हमारी संस्कृति है—अपनी भावना, संस्कृति और परम्परा को छोड़ कर हम और चाहे कुछ भी हो जावें भारतीय नहीं रहेंगे।

हम नहीं कह सकते हम ने कब से गो रक्षा को अपनी संस्कृति का अभिन्न अंग माना है। अतीत वैदिक काल से हम 'माँ गा मवागा मदिति वधिष्ट' चिल्लाते चले आ रहे हैं अर्थात् बिचारी निरपराध गाय को मत मारो। मारने की तो क्या, हम गाय को दुखी भी नहीं देख सकते 'यद्गृहे दुःखिता गावः सयाति नरकंनरः' अर्थात् जिस घर में गाय दुःखी होती है उसका मालिक नरक को जाता है। अथर्वेद में एक मंत्र आता है कि:—

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम्।
तंत्वासीसेन विध्यामो यथा नोऽसो,
प्रवीरहा॥

अर्थात् यदि तू हमारी गो, घोड़े तथा पुरुष की हत्या करता है तो हम सीसे की गोली से तुझे बींध देंगे जिस से तू हमारे वीरों का वध न कर सके।

पौराणिक काल में महाराज दिलीप एक गो की रक्षा के लिये बिना किसी क्षोभ के प्राण अर्पण करने को तैयार हो जाते हैं। महाराज ऋतंभर गो रक्षा करते हुए आक्रमणकारी सिंह को अँधेरे में मारना चाहते हैं पर धोखे से गाय मर जाती है तो परम दारुण प्रायश्चित्त करते हैं।

केवल एक बार चरती हुई गाय को चरने से रोक देने पर महाराज जनक को नरक के द्वार की झांकी करनी पड़ती है।

प्राचीन काल गोरक्षा के अनवरत प्रयत्नों से इतिहास के पृष्ठ भरे पड़े हैं किन्तु मध्य काल में भी विधर्मी शासकों द्वारा गो रक्षा के श्लाघ्य प्रयत्नों से भारतीय संस्कृति के प्रति सम्मान प्रदर्शित किया गया है।

सम्राट बाबर ने अपने युवराज हुमायूं को अन्तिम उपदेश इन शब्दों में दिया था—"प्रत्येक धर्म के सिद्धान्तों के आधार पर न्याय करना। गाय की कुरबानी का विशेषतया बहिष्कार करना क्योंकि इस के बिना तुम भारतीयों के हृदय पर अधिकार नहीं कर सकोगे।" कहना नहीं होगा कि जिस ने स्वयं ऐसा उपदेश दिया उसने प्राणपण से इस देश में गोवध नहीं होने दिया। सम्राट हुमायू ने एक बार दिन भर भूखे रहने पर भी सायंकाल गो माँस खाना स्वीकार न किया और बिचारा भूखा ही सो रहा। 'अरिहुँदंत। तृन धरई तांह मारत सबल न कोई नरहरि, कवि की एक प्रसिद्ध कविता से प्रेरित हो कर सम्राट अकबर महान् ने भी अपने विशाल साम्राज्य में गोवध बन्द कर दिया और गोवध बन्द करने के लिए सम्राट जहाँगीर तथा शाहजहाँ ने भी राजाज्ञाएं प्रचलित कीं। यही नहीं मुगलों के अंतिम बादशाह सम्राट बहादुरशाह ने भी भारत भर में गोवध न हो, ऐसा आदेश निकाला।

गोरक्षा की भावना का समादर करते हुए मुसलमान भाइयों ने अपनी विशाल-हृदयता और अपनेपन का जो भाव प्रकट किया है उसकी जितनी सराहना की जाये थोड़ी है। मेरे पास समय नहीं है, नहीं तो मैं आपको एक नहीं अनेक मुस्लिम सिद्धान्तों, मौलवी एवं नेताओं की गोवध न हो इस पक्ष में समय समय पर प्रकट की गई सम्मति का दिग्दर्शन कराऊं। इस देश के ही नहीं विदेश के भी जो बड़े मुसलमान यहाँ आये। उन्होंने यहाँ की संस्कृति का समादर करते हुए गोवध न हो, ऐसी स्पष्ट सम्मति प्रकट की। ... में अफगानिस्तान के अमीर हिन्दु... में आये थे। दिल्ली के मुसल... ने उसके स्वागत के लिये ... अवसर पर गोवध करना ... पर अमीर बिगड़ उठे और बोले ... गोवध कीजिएगा तो हम उलटे वपिस चले जायेंगे। अफगानिस्तान ... अमीर अमानतुल्ला ने बंबई की ... में एक बार कहा था, 'मुसल्मानो! ... लाओं और पीरों की बातों में न आ... हिन्दुओं के साथ शांति रखनी चाहि... हिन्दुस्तान के लिए गाय और बैल ... उपकारी जीव हैं आपको इनके वंश ... वृद्धि की चेष्टा करनी चाहिए"।

इस प्रकार देखते हैं कि ... हिन्दुओं ने ही नहीं मुसलमानों ने ... रक्षा हो इसमें हाथ बटाया है और ... भी हमारा प्रत्येक भारतवासी विशे... मुसलमान और ईसाई से अनुरोध ... गोवध कथमपि न हो ऐसा राजा... बनवाने में हमारा हाथ बटावें। ... अहिन्दू की एकता के स्नेह सूत्र में बां... में 'गोरक्षा का ही एक ऐसा दृढ़ ... है जो हृदय को हृदय से मिला... है।

लोर्ड लेक ने १८०५ ईसवी ... मथुरा में गोवध न हो, ऐसी घो... निकाली थी। कलकत्ता हाईकोर्ट ... माननीय चीफ जस्टिस सर जॉन वड... ने भारत में गो रक्षा संस्था का संचाल... करते हुए कहा कि:—

'गो मांसाहारियो के स्वार्थ के लि... गाय और बैलों पर आक्रमण किया जा... है। एक के स्वार्थ के लिए दूसरे ... स्वार्थ क्यों नष्ट किया जाय? थोड़े ... मांसहारियों के लिये गो हत्या जाति... और जिनका दूध का स्वार्थ है वे ... चिल्लाहट मचा कर ही रह जाएं।'

बंबई में भाषण देते हुए एक ई... बैपटिस्ट ने अपने भाषण में कहा ... "चौबिस करोड़ आदमी गो को पवित्र ... मानते हैं। यूरोपियनों के दिमाग में ... यह बात न उतरे लेकिन अंग्रेज ... भावना के अस्तित्व और गहराई ... उपेक्षा नहीं कर सकते। अधिका... हिन्दुस्तानियों का जब यह भाव है ... हिन्दुस्तान में एक गो का भी वध करना ... कैसे उचित हो सकता है। अगर ... कार गोवध बन्द न करें तो हमें ... करना ही होगा।"

इस देश में आने वाले मुसलमान ... एवं ईसाई महानुभाओं ने ही नहीं, पार... सज्जनों ने भी गोरक्षा के प्रयत्नों ... हाथ बटाकर भारतीय संस्कृति को अ... नाने की चेष्टा की है। सन् १८११ ... जबलपुर के श्री करसेट जी सोराब ... जस्सावाला 'गोवध भारत में न हो' ... लिए इंगलैंड गए और वहाँ अनेक ... तक निरन्तर इसी प्रयत्न में लगे रहे ... भारत में गोवध सर्वथा बन्द हो। ...

(शेष पृष्ठ १० पर)

रात का समय था। करीब-करीब ...ाठ बजा चाहते थे। अपने अपने ...निक कार्यक्रमों से मुक्ति पाकर लोग ...र लौट रहे थे। वह किसी के भोजन का ...मय था, किसी के गोष्ठि करने का ...मय था, और जिनके भोजन बनने में ...सी समय था, वे पडोसियों के आंगन ...ठ कर इधर उधर की गप लड़ा रहे थे। ...उस दिन सैर करके घर की ओर आ ...रहा था।

"आग लगी आग लगी"

यह सुनकर, मैं रुक गया। इन दिनों ...कड़ी तपती है। आग लगना कोई ...श्चर्य नहीं था। फिर भी 'आग लगी' ...सुनकर उसे देखने का अच्छा तीव्र ...ती है। कारण, जिस जगह आग ...ती है वहां का दृश्य एक समवेदना ...होता है। वहां अग्नि का भीषण-...ण्डव-नृत्य और हाहाकार बड़े खूबी के ...सम्मिलित हुआ देखने को मिलता ...उसे देखकर जो दिल में भाव उठते ...उनका वर्णन वही व्यक्ति कर सकता ...जिसने आग को अपने आंखों देखा ...।

...वहां आग लगी है, यह जानने के ...मुड़ा। दस-बारह व्यक्तियों को ...र देख मैं भी लपक कर उनके ...लिया। उनमें से एक व्यक्ति ...

...ग कहां लगी है? उसने हांपते ...:—

...मुनिस्टो ने रेलवे के डिब्बों में आग ...दी है।

...जिस स्थान में आग लगी थी, ...स्थान पर पहुँचा। वह स्थान रेलवे ...खुले मैदान में शरणार्थियों का ...था। आग तेजी से बढ़ती जा रही ...लपटों के रूप में सारा क्षेत्र ...रहा था। बहुत से हमदर्दी लोग ...को काबू में लाने के लिए। जी ...प्रयत्न कर रहे थे। मैं भीड़ में ...के करीब जाने की कोशिश कर ...। लेकिन कामयाब न हो सका। ...रुक गया। आजू-बाजू के लोग ...के विषय में बातचित कर रहे थे। ...कैसे लगी, यह जानने के लिए, ...। उनमें से एक ने कहां...

...। कुछ भी हो। हमारा ख्याल ...आग कमुनिष्टो ने लगाई है। ...कहां...कमुनिस्ट यहा पर ऐसा ...नहीं करेंगे। कारण उनका जोर-...कम है। यदि उन्होंने आग ...होगी तो उनकी खैर नहीं। ...थी चाहे जैसा तर्क-वितर्क ...थी। लेकिन सच बात क्या था, ...उस वक्त बहुत कठिन था। ...और आगे बढ़ा। वह पर चर्चा ...थी...

...मानों ने बदला लेने के लिये, ...लगाई है। कुछ व्यक्तियों को ...से, ऐसे कार्य करने के लिए,

कहानी

आग के आठ

लेखक, श्री वीरेन्द्रकुमार खापर्डे

> मनुष्य स्वार्थवश अंधा हो जाता है। आजकल का युग ऐसा ही लगा है। मानव समाज में पता नहीं कौन सी मनोवृत्ति उत्पन्न हो गई है कि वह आदर्शवाद की आड़ में ऐसे कर्म करने में सन्नद्ध है कि दांतों तले उंगली दबानी पड़ती है। इस कहानी में भी एक सटोरिये की स्वार्थपरता का सुन्दर चित्रण किया गया है। कहानी पठनीय तथा मनोरंजक है।

आग से परेशान शरणार्थी बुढ़िया भगवान् को पुकार रही है।

सहायता मिलती है। बहुत से गुप्तचर हिन्दुस्तान में फैले हुए हैं। और वे यहां के मुसलमानों को बदला लेने की प्रवृत्ति से प्रभावित कर उन्हें अग्निकांड तथा दंगा करने के लिए, प्रोत्साहित करते हैं।

इन सब चर्चाओं का मेरे मस्तिष्क पर प्रभाव पड़ रहा था मेरे मस्तिष्क में विचार धाराओं का जोर से तुफान उठा मेरी आग देखने की जिज्ञासा कम होकर इन बातों की तरफ आकर्षित हो गई। मैं सोचने लगा कि क्या ऐसा होना संभव है?

क्यों न हो? हो सकता है। हम जब देखते हैं कि हमारे पड़ोसी हमारे अचार-विचार तथा रहन-सहन में एकदम घुल मिल गए थे। आपस में प्रेम भाव का आलाप गा रहे थे। हमने भी क्या कमी रखी थी। हमने भाई-चारे का उच्च आदर्श को अपनाकर उनके साथ अपने उदार अंतःकरण को बताने के लिए। कोई कसर नहीं रखी थी। उनके लिए क्या-क्या नहीं किया। अपने वृत्ति को और अपने विचारों को तिलांजलि देकर सहन किया केवल सद्भावना के लिए। दोनों के विकास के लिए, आनन्दमय जीवन के लिए। लेकिन यह सारा प्रयत्न हमारा विफल हो गया है। वे लोग केवल धार्मिक और स्वार्थी-वृत्ति को जिन्दा रखने के लिए हमारी उदारता का दुरोपयोग कर, ऐसा व्यवहार कर रहे हैं कि उन्हें देखकर शरम से आंखें गड़ जाती हैं। दुख से हृदय तिलमिला जाता है।

मैं विचारों के आवेष में बढ़ता ही जारहा था। मुझे अपने विचारों से ऐसा प्रतीत हो रहा था कि जिस प्रकार यह लोग व्यवहार कर रहे हैं, उसी प्रकार हम भी उसका जवाब उन्हीं के व्यवहारों के समान दें। इस समय बदले की भावना शीघ्रता से जग उठना सहाजिक है। जब कोई अपनी हानि करता है, और अपने किसी की हानि की ही न हो तब एक प्रकार का बदले का जोश उमंड़ जाता है। और उस वक्त बदला लेने की प्रतिक्रिया बौखला उठती है। लेकिन क्या यह उचित है? कोई पागलपन करता है, और यह तो स्पष्ट है कि केवल उसका पागलपन है, तो आदमी को यह उचित नहीं कि, उसके समान पागल होकर, उसी को कृति में जवाब दें।

आग सेसर्वस्व स्वाहा हो गया, क्या किया जाये?

इतने में शुक्लाजी स्थानीय सब इन्स्पेक्टर के साथ, बातचीत करते हुए, सामने से आते दिखाई दिए। उनकी बातचीत इसी आग के विषय में हो रही थी। मैं उनके पीछे-पीछे हो लिया। सब-इन्स्पेक्टर साहब शुक्लाजी से बता रहे थे:—

किसी शरणार्थी के घर में चूल्हा जल रहा था, घर में कोई नहीं था। झोपड़ी में मिट्टी के तेल के पीपे रखे हुए थे, शायद उन्हीं तेल के पीपों से चिनगारी लगकर आग लग गई हो। और हवा से वह आग तुरन्त सर्वत्र फैल गई हो।

यह सुनकर मैंने दीर्घ स्वास ली। और सोचने लगा तभी की विचार धाराओं पर।

आग धीरे-धीरे शान्तहो रही थी। लोग लौट रहे थे। मैं भी घर लौटने लगा। मेरे साथ दस-बारह लोगों की टोली आ रही थी। वे आपस में कह रहे थे:—

शरणार्थियों की झोपड़ियों में आग लगी है। नंबर आठ लगाना चाहिए।

छोड़िए साहब। आग के तो पांच लगाना चाहिए। भाई मेरा पांच लगा दो।

उनमें से एक व्यक्ति छोटे-छोटे कागजों के टुकड़ों पर एक इंच की पेन्सिल से उन व्यक्तियों के बताए हुए, नंबर लिख रहा था। और उन्हें ज्यादा पैसे लगाने के लिये कह रहा था। क्या बात है, यह जानने के लिये मेरा कुतुहूल बढ़ा। मैंने एक व्यक्ति से पूछा:—

यह नंबर लिखने का मतलब क्या है?

कम्यूनिस्ट भी जनता में शांति-भंग कर रहे हैं।

उसने हंसते हुए कहा:—

जनाब ! यह सट्टों के नंबर हैं। यदि कल यह लिखा हुआ नंबर आ जायगा तो लगाये हुये, पैसों के चौगुना दाम मिलेंगे।

यह नंबर लिखने वाला सटोरिया था। मैंने उसके पास जाकर पूछा:—

भाई साहब ! आप को इस धन्दे से कितनी आमदनी होती है ?

उसने हंसकर कहा— कभी तो घर से भरना पड़ता है। फिर भी हजार-बारह सौ, कमा ही लेते हैं।

मैंने कहा— इन नबरों का इस आग से क्या सम्बन्ध ! देखिये न ! उनके ऊपर कैसी मुसीबत है।

वह कहने लगा — उनकी मुसीबत में हमारे भाग्य की किरणें चमक रही हैं।

यह सुनकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। क्या मानव कि विचार धाराएं इतनी घृणित हैं ? जो दूसरों की हानि में अपनी भलाई चाहते हैं। किसी की हानि देखकर उनके दिल पर कोई असर नहीं होता ? मैंने कहा:—

भाई साहब ! आप जो धन्दा करते हैं यह कोई अच्छा धन्दा नहीं है, इसमें बहुत हानि है।

वह मेरी तरफ व्यंग-पूर्ण-दृष्टि से देखकर कहने लगा:—

जायज क्या है ? भाई साहब ! पेट भरने के लिये सब कुछ करना पड़ता है।

और वह चल दिया। मैं घर आकर इन दो पहलूओं पर सोचने लगा। शरणार्थियों की जलती हुई, झोपड़ियां शरणार्थियों का सर्वस्व राख कर रही हैं और इधर उन सटोरियों की जेबों में चांदी के टुकड़ों की झंकार सुनाई दे रही है।

इसी सागर में मैं डूबता-उतरता पता नहीं कब सो गया। दूसरे दिन सुबह जरा देर से आंख खुली।

शहर के उस चौरास्ते से गुजर रहा था। पान खाने की इच्छा से उस ठेले पर गया। वहां एक आदमी बड़ी खुशी के साथ कह रहा था:—

दादा ! कल आग क्या मौके से लगी ! कल आग लगी और न्ययार्क काटन आट पर ही रुक गया।

हमारा रंग-मंच

'जान पहचान'

श्री वेदप्रकाश शर्मा एम० एस-सी०

जान पहचान 'यूनाइटेड टेकनीसीयनस' की प्रथम भेंट है. निर्देशन फाली मिस्त्री का है। मुख्य भूमिका में नरगिस राजकपूर और जीवन हैं।

राजकपूर एक मूर्ति बनाने वाला कलाकार है और उसको एक ऐसी लड़की की खोज है जो कला का सम्पूर्ण रूप हो। इधर उधर टक्करें मारने के उपरांत उसको एक मनोवांछित लड़की नरगिस के रूप में मिल जाती है। नरगिस और राज कपूर में प्रेम हो जाता है और यह दोनों छिपे तौर शादी कर लेते हैं। इधर राज के पिता बीमार पड़ जाते हैं और वह नरगिस को छोड़कर अपने पिता को देखने चला जाता है। अपने पिता की मृत्यु के बाद राज जब वापिस लौट रहा था तो उसकी मोटर के साथ दुर्घटना हो जाती है और उसका खूबसूरत चेहरा एकदम खराब हो जाता है। राज को अपने भद्दे चेहरे को नरगिस के सामने ले जाने में शर्म मालूम होती है और वह 'प्लासटिक सर्जरी' द्वारा इलाज करवाने के लिये चला जाता है।

इधर नरगिस गर्भवती हो जाती है और यह सोचा जाता है कि उसकी यह हालत उसकी बदचलनी के कारण हुई है। नरगिस को बदनामी से बचाने के लिये जीवन जो राज का मित्र है, अपने को नरगिस के बच्चे का बाप घोषित करता है। वह नरगिस को अपने घर ले जाता है। समाज इन दोनों को बाहर निकाल देता है। जब राज कपूर वापिस आता है तो उसकी पत्नी उसकी बाहों में अपने प्राण त्याग देती है।

इस चित्र में किसी की भी भूमिका ठीक नहीं उतरी है। जब तक प्रेम का रोमांस चलता है तब तक तो चित्र में कुछ जान रहती है, लेकिन जहां दुख पड़ा कि चित्र एकदम भद्दा मालूम होता है। नरगिस और राज कपूर का अभिनय इस चित्र में किसी काम का नहीं है। जीवन साहब भी अपनी भूमिका में कुछ जमें नहीं। फाली मिस्त्री जिन्होंने इस चित्र का निर्देशन किया है। उन्होंने निर्देशन के बजाय फोटोग्राफी की ओर ही अधिक ध्यान दिया है। यद्यपि इन महाशय ने अपनी फोटोग्राफी की योग्यता दिखाने के भरसक प्रयत्न किये हैं, परन्तु उनको कोई सफलता नहीं मिली है, लाइट्स का प्रबन्ध अत्यन्त गड़बड़ है और इस कारण फोटोग्राफी कहीं कहीं अत्यन्त अस्वाभाविक मालूम पड़ती है। चित्र साधारण श्रेणी का है।

सुप्रद्धि अभिनेत्री सुरैया अपने अभिनय तथा के लिये प्रसिद्ध है।

...द्ध अभिनेत्री श्रीमती देविकारानी आजकल कहां हैं।

सिंगार

सिङ्गार 'हल्दिया-नन्दा प्रोडक्शन' की प्रथम भेंट है। कहानी और निर्देशन जे० के० नन्दा का है, मुख्य भूमिका में सुरैया, मधुबाला, दुर्गाखोटे, जैराज और के एन सिंह हैं, इस चित्र को देखने से मालूम हुआ कि किसी भी ख्याली घोड़ों के आधार पर भारतवर्ष में एक सिने चित्र का निर्माण हो सकता है। मातत्व एक स्त्री की सबसे बड़ी इच्छा है और जब तक इसको यह पद नहीं मिल जाता है, तब तक वह सन्तुष्ट नहीं होती है। यहां हमको इस चित्र का सारांश सा दिखाई देता है, परन्तु श्रीमान नन्दा जी ने कोई स्वाभाविक कहानी की अपेक्षा ख्याली घोड़े ही अधिक दौड़ाये है।

जैराज की सुरैया से भेंट होती है और जैसा एक हिन्दुस्तानी चित्र में स्वाभाविक है, दोनों पहली ही मुलाकात में प्रेम के बधन में गुथ जाते हैं, शादी के पांच वर्षों के उपरान्त सुरैया को मां बनने की बड़ी चाहत है, परन्तु जैराज को यह विचार पसन्द नहीं आता है। इसलिये जब उसकी पत्नी एक बच्चे की मां बन जाती है, जैराज पागलों की तरह व्यवहार करता है और घर में फर्नीचर इत्यादि को तोड़-फोड़ डालता है। इसके उपरान्त वह घर छोड़कर चला जाता है और उसकी भेंट मधुबाला से जो एक नाचने वाली लड़की है, हो जाती है। मधुबाला की शादी से पहले जैराज अपने पुत्र को देखता है और वह उसके बगैर नहीं रह सकता है। मना करने पर वह नीची बस्ती के बच्चों के साथ घुलमिल जाता है और एक दिन वह अपने बच्चे को उठा कर ले जाता है। कहानी में सुरैया और जैराज में फिर मेल मिलाप होजाता है। दुर्गा खोटे की अपनी छोटी भूमिका के अतिरिक्त और किसी कलाकार का भी दर्शकों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, सुरैया के तो क्या कहने! अधिक चित्रों में एक साथ कार्य करने से अब इसकी पहले वाली कार्ययोग्यता नहीं देखाई देती है और इसी कारण इसकी ख्याति कम होती जा रही है।

नृत्य-प्रदर्शन के समय भारतीय छात्रा की एक मुद्रा।

(शेष पृष्ठ ६ के आगे)

जस्सावाला और उनके साथियों ने ब्रिटिश सरकार को यह भी आश्वासन दिया कि गोरों के लिए आस्ट्रेलिया से गो मांस मँगा देने और यहाँ का गोवध बन्द करने में जो घाटा होगा वह पूरा कर देने के लिए हम प्रस्तुत हैं।

एक ओर तो अहिन्दुओं का गोरक्षा के लिए ऐसा सत्प्रयत्न औरत्यागभ्भावना और दूसरी ओर वर्त्तमान सरकार की यह विज्ञप्ति कि पशुवधसहसा रोकदेने से विदेशी चर्म व्यापार में जो प्रभाव पड़ेगा उसकी ओर ध्यान दिया जावे—हृदय में क्षोभ उत्पन्न करती है। किंतुयहविचारते हुए कि यह जनतंत्र सरकार और जनता के भावना का आदर करेगी हम जनता स्पष्ट शब्दों में पूछना चाहते हैं 'क्या चमड़ों के लिए निर्यात अधिकहच इसके लिए आप गोवध करन। चाहते हैं?'

आजकल यह भी एक युक्तिवाद उपस्थित किया जाता है कि १४ वर्ष से ऊपर की गाय या बैल अनुपयोगी होने के कारण मार डाली जावे और केवल उपयोगी पशु की रक्षा हो। जो उपयोगी अनुयोगी का प्रश्न उठाकर इस नियम की आड़ में गोवध करते रहना चाहते हैं उनका समाधान करना कठिन है। किन्तु जिनका हृदय पक्षपात् शून्य है उनसे मेरा यही निवेदन है कि पिछले आठ वर्ष के इतिहास के अनुभव से अवश्यमेव लाभ उठाना चाहिये। सन् १९४२ में 'केवल अनुपयोगी पशु का वध हो ऐसे 'नियम अनेक प्रांन्तों में प्रचलित किए गए। किन्तु ऐसे समस्त प्रांतों में निरन्तर लाखों गो एवं गोपुत्रों का वध होता रहा है—कोई भी अपने हृदय पर हाथ रखकर यह नहीं कह सकता कि प्रत्येक वध प्राप्त पशु अनुपयोगी था। यही नहीं पशुवध के लिए उपयोगी अनुपयोगी का विभाजन करने से स्वार्थी नीच जन कितना अधिक संख्या में फूंका आदि के प्रयोग से उत्तमोत्तम पशु को अनुपयोगी बना देगें इसकी कोई गणना नहीं हो सकती।

वध-शालाओं में वध की सम्मति देने वाले डाक्टर भी मानवीय दुर्बलताओं में सर्वथा मुक्त नहीं होते और यह निश्चय है कि गोवध के उपयोगी अनुपयोगी का अन्तर बनाये जाने पर गोवध 'रुकेगा नहीं चलता ही रहेगा इसलिए हम लोगों को एक सम्मति से एक स्वर से 'गो वध सर्वथा बन्द हो' ऐसे भाव प्रकट करने चाहिए।

हमारे भावों को सुस्पष्ट व्यक्त कर देने पर भी जो प्रांतीय सरकार जनता के भावों को ठुकरा कर भी उपयोगी अनुपयोगी का विभाजन करती है उनके द्वारा स्वीकृत नियमों का भी पूर्णतः पालन हो इसके लिए हमें प्रत्येक गो वधशाला ऐसे वैतनिक या अवैतनिक व्यक्ति नियत करने चाहिए जो प्रतिदिन यह परीक्षा करते रहें कि गो वध संबन्धी स्वीकृत नियमों का उल्लंघन तो नहीं हो रहा है।

गो रक्षा एवं उन्नति के लिए भिन्न भिन्न गो शाला केन्द्रों में लाग कर लगे हुए हैं—ऐसे कर प्रायः पूर्ण रूप से एकत्रित नहीं होते और कहीं कहीं गौशाला धन का पूर्ण सदुपयोग भी नहीं होता। इस प्रकार के करों के संग्रह की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। भारत में गौ वध सर्वथा बन्द हो और गौ वंश की उन्नति हो इसके लिए यदि विशेष कर भी लगाया जावे तो लोगों को मान्य होगा किन्तु हमें यह कदापि न भूलना चाहिए कि भारतवासी यह सहर्ष तभी देंगे जब 'गोवध सर्वथा बन्द हो' ऐसा सुस्पष्ट राजनियम होगा।

यह सभी जानते हैं कि बड़े बड़े नगरों में दूध सूख जाने पर गायों की दुदशा होने लगती है और उनको प्रायः वधशाला में जाकर अकाल मृत्यु को प्राप्त करना होता है अतएव रेलवे को ऐसा नियम बनना चाहिये कि 'गो को बड़े नगर ले जाते समय ही पर्याप्त कराया ले लिया जावेगा' और गाय के सूखने पर भारत के किसी भी भाग में "गो को बिना किराये पहुँचाया दिया जावेगा" नियम के बनने से दुःखी गायें पुनः चारे सुलभ स्थानों में आकर अपनी प्राण रक्षा करती हुई कालान्तर गोरस से घर भर देंगी।

इधर उधर की

सरकार ने "१९४९ के विहार गुड़ (स्थानान्तरण) नियन्त्रण आदेश" में संशोधन करके राज्य के किसी स्टेशन से ई० आई० आर० की लूप लाइन पर भागलपुर से आगे और आसाम रेलवे की कटिहार लावा शखा और कटिहार मनिहारी शाखा पर कटिहारी से आगे किसी स्टेशन तक रेल द्वारा गुड़ के स्थानान्तरण पर प्रतिवन्ध लगा दिया है।

× × ×

२६ मार्च को उत्तर सतारा जिले के कोरगांव में उगाही दिवस मनाया गया। इस अवसर पर लगभग ३५ समीपवर्ती गांवों के किसान गाड़ियों में अनाज भर कर लाये उसे सरकारी गोदामों में जमा करा दिया। कुल ३२,००० से भी अधिक बोरे भरे गए।

इस अवसर पर भाषण देते हुए श्री दिनकरराव देसाई ने उगाही दिवस मनाने की इस नई सूझ के लिये सतारा जिले की जनता को धन्यवाद दिया और कहा कि विदेशों से अन्न का आयात जितना शीघ्र बन्द हो, उतना ही अच्छा। उन्होंने बताया कि वर्तमान परिस्थिति में नियन्त्रणों को जारी रहना बहुत जरूरी है, जब वह किसानों से पर्याप्त मात्रा में प्राप्त हो।

× × ×

इस वर्ष राज्य में कुल २२,६१,५३४ टन चावल पैदा होने का अनुमान है जबकि गत वर्ष लगभग २३,५९,५३४ टन पैदा हुआ था। इस प्रकार, इस वर्ष चावल की पैदावार में गत वर्ष की अपेक्षा प्रतिशत की कमी हुई। इस कमी का कारण वर्षा और बाढ़ों की अधिकता बताई जाती है।

शेष पृष्ठ ५ के आगे

और रामायण के सम्बन्ध में है। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि तैलगू का महाभारत मूल से भी बढ़िया है। उसे अनुवाद तो किसी सूरत में भी नहीं कहा जा सकता। आप लोगों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि तैलगू की रामायण की रचना हमारे यहाँ की महिलाओं ने, कवियत्रियों ने की है।

"हमारे यहाँ प्राचीन साहित्य गद्य है। यहाँ तक की हमारी भाषा का शब्द कोश भी श्लोकों में लिखा गया है। गद्य-साहित्य तो बाद में विषय नकार के दिनों विकसित होना शुरू हुआ।

"तैलगू भाषा का नाट्य शास्त्र और ग्रन्थ लेखन हाल की ही चीज है। सब से पहिला नाटक काली दास के अभिज्ञान शाकुन्तल के कथानक के आधार पर लिखा गया। दूसरा नाटक उत्तर राम चरित की कथावस्तु को लेकर लिखा गया। १९२५ में हमारे यहां एक नाटक कविता में लिखा गया। हमारे यहां कविता करना तो एक पारिवारिक अभिनय है। एक कविता का एक पद पत्नी पूरा करेगी तो दूसरा पति। उत्तर भारत में आप लोग अंग्रेजी का 'वर्ड मेकिंग' खेलते है। मगर हमारे यहाँ उसी आधार पर कविता का और नाटकों का निर्माण होता है।

अन्त में आपने कहा—"मुझे विश्वास है कि यदि आप लोग तेलगू पढ़ने लग जाये तो आप अपनी भाषा को भी भूल जायेंगे।"

श्री आयंगर के बाद श्रीमती सरोज ... ने एक गीत सितार पर बना कर सुनाया। वह कहता है, हे भगवन् हम तेरे समीप आते आते रह गये—गीत भावपूर्ण था। इस गीत का भाव। लाप आदि उत्तर भारत के गीत के समान था; सिर्फ भाषा ही भिन्न थी। दक्षिण भारत में अभी भी भारतीय संगीत जिस प्रकार विशुद्ध रूप में है, इस का रसास्वादन संगम में करने को मिला।

गुजराती भाषा

गुजराती भाषा के सम्बंध में श्री ... पँड्या ने बताया—"गुजराती के कवि नरसी महता का उनको 'वैष्णव जन तो तेने कहिए' गीत को महात्मा गांधी ने अमर कर दिया है। उन का समय १५वीं सदी का है।

उनके बाद नवीन साहित्य लिखने में गोवर्धनराम शंकर का मान सर्व प्रथम लिया जा सकता है। उन्हों ने अपनी रचनाओं में अनेके सामाजिक व राजनैतिक समस्याओं को भी स्थान दिया। ... पर भी हमारे यहाँ काफी ... विद्यमान है। स्वदेशाभिमान ... का उदाहरण है।

... से पहले गोवर्धन राम ने ... 'चित्र' नामक नाटक लिख कर ... समस्याओं पर प्रकाश डाला।

उनका दृष्टिकोण बहुत ऊँचा था और शैली एकदम नयी व।

वर्त्तमान सदी के प्रमुख साहित्यकारों में सब से प्रथम नाम श्री कन्हैया लाल मानिक लाल मुनशी का है। उनकी रचनाएँ स्फूर्ति दायक गुज्जर होती है। 'ग्राम देश' में उन्होंने गुजरात की अस्थिरता पर बड़े अधिकार के साथ प्रकाश डाला है।

"२० वीं सदी दूसरे साहित्य सेवी मेंघाणी जी; उन्होंने गुजराती लोक साहित्य का प्रमाणिक सग्रह तैयार किया है। इतना ही नहीं, उन्होंने मौलिक नाटक व कविताएँ भी लिखी हैं।

"सर्व श्री समया लाल, धूमकेतु और जोतीन्द्र दवे की कहानियाँ व दूसरी रचनाएं गुजराती भाषा भाषियों में बड़ी लोकप्रिय हैं।

"कवियों में कलापी आदि का नाम गुज़राती साहित्य में अमर हो गया है। वह २० वर्ष की उम्र में ही चल बसे गए थे। इतनी छोटी सी उम्र में उन्होंने भी कविताएं कीं, उनको गुजरात के युवक समाज में बड़ा प्रचार है। वे कविताएं युवकों की निधि हैं। दूसरे कवि हैं बलवन्त राम। कवि हैं। और साथ में मनीषी भी। उन का चिन्तन ग्रहण होता है।

"यद्यपि महात्मा गाधी ने गुजराती में साहित्य का निर्माण नहीं किया; फिर भी उन्हों जो कुछ बोला और जो कुछ लिखा उसे गुजराती साहित्य में गौरवमय स्थान प्राप्त हो गया।"

श्री यशवन्त पंड्या के भाषण के उपरान्त गुजराती साहित्य के महारथी श्री गगन विहारी लाल महता ने सभा में खड़े होकर अपने दर्शन दिया।

कुमारी अरविन्दा दूबे ने गुजराती गीत गाकर सुनाया। यह गीत गुजराती के सुप्रसिद्ध कवि श्री नरसिंह राव का था। उनका पुत्र २५ वर्ष की उम्र में ही गुजर गया था। उसकी स्मृति में उन्होंने 'स्मरण संहिता' नाम से एक काव्य लिखा। उक्त गीत उसी में से लिया गया था। गीत का आशय यह था कि जब उनके स्वर्गीय पुत्र की आत्मा स्वर्ग लोक में पहुँची तो वहाँ उसे स्वर्ग का द्वार वन्द मिला। तब वह भगवान से द्वार खोलने को प्रार्थना करती है और कहती है—"मंगल मन्दिर खोल दयामय!" गीत बड़ा मनोहारी और भावपूर्ण था। लय और भाषा के लिहाज से यह गीय उत्तर भारत के गीतों से भिन्न प्रतीत नहीं होता था।

मलयालम

मलयालम भाषा के सम्बन्ध में श्री गोपाल मेनन ने कहा—"मलयालम भाषा में महिला आदर को बहुत बड़ा स्थान है। कल जब मैं वायुवान से उतरा तो मेरी पुत्री ने मुझे इस संगम में सम्मिलित होने की सूचना दी। मैं उसके कहने मात्र से यहां आना मान गया।

"निस्सन्देह मलयालम भाषा के साहित्य का कोई सुन्दर संग्रह तैयार नहीं हो सका। वैसे भारत के पश्चिमी घाट में बोली जाने वाली यह मलयालम भाषा बड़ी मीठी और सरल है। वह तामिल की तरह कठोर नहीं है।

अपने इस कथन को सिद्ध करने के लिये आपने अनेक उदाहरण पेश किया। इस समय श्रोताओं का काफी मनोरञ्जन हुआ। खास तौर से तामिल और तैलगू भाषा भाषी लोगों में उनके भाषण से काफी खलबली पैदा हो रही थी।

अन्त में आपने कहा—"मलयालम भाषा के ८० प्रतिशत शब्द संस्कृत के हैं, तामिल के नहीं। इसी लिये तो यह भाषा सरस है।"

उनके बाद उनकी पुत्री श्रीमती ए० आर० के० मैनन तथा उनकी बहन ने मिलकर मलयालम का एक गीत सुनाया उसका विषय नल-दमयन्ती था।

मराठी

मराठी साहित्य का परिचय वैसे निर्माण, विद्युत् व खान मन्त्री काका साहेब गाडगिल को देना था। मगर मन्त्रि मन्डल की एक आवश्यक बैठक में व्यस्त रहने के कारण वह न आ सके। इसलिये उनके स्थान पर संगम के अध्यक्ष श्री मावलङ्कर ने ही मराठी साहित्य पर प्रकाश डाला। उनके प्रवचन से पहिले कुमारी कमल केलकर ने मराठी का एक भाव गीत गाकर सुनाया।

इस भाव गीत में कवि मातृ-भूमि जननी और जन्म-भूमि के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुये उसे स्वाधीन करने के लिये ज्वालाओं से खेलता है।

श्री मावलंकर ने मराठी साहित्य पर सरसरी नजर डालते हुये बताया "१८ वीं सदी से हमारे यहां गद्य-साहित्य उन्नत हुआ। उससे पहिले के साहित्य कल्पना प्रधान था। अधिकांश रचनाएं महाभारत, रामायण, हरिकथा और भगवान् की कथाओं को लेकर की जाती थीं। सब लोग देववाणी संस्कृत में अपनी रचनाएं किया करते थे। देववाणी में लिखाने वाले ऐसे ही आदिकवि का नाम श्री मुकुन्द राव है। उनका काल ईसा की १०वीं सदी है।

"आगे चलकर देववाणी में लिखने की प्रथा को सबसे पहिले तोड़ा सन्त ज्ञानेश्वर महाराज ने। उनका कहना था—यदि "संस्कृत भाषा देववाणी है तो मराठी भाषा चोर वाणी तो नहीं है। वे एक संन्यासी के प्रपुत्र थे। उन्होने 'भावार्थ दीपिका' मराठी में लिखी। इसमें गीता के तत्वज्ञान का सुगम अनुवाद किया गया है। मराठी साहित्य का उदय संत ज्ञानेश्वर की उक्त पुस्तक के साथ होता है। इस पुस्तक को लाखो की तादद में पढ़ा जाता है। यह हमारे यहां का प्रमुख धर्म ग्रन्थ है।
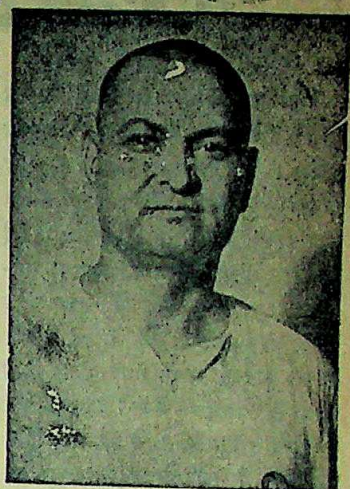
अनेक भाषाओं के मर्मज्ञ महापंडित राहुल सांकृत्यायन

बाद में अनेक साधु सन्तों ने मराठी में भक्ति के सम्बन्ध में अनेक ग्रन्थ लिखे ऐसे ही एक सन्त मुक्तेश्वर थे। इन्होंने महाभारत को मराठी में अपने ढङ्ग से लिखा।

मराठी पद्य प्रायः संस्कृत के छन्दों के आधार पर लिखे गए हैं। शार्दूल-विक्रीड़ित और औरी छन्दों का खुलकर प्रयोग किया गया है। लेकिन मराठी संतों ने अनेक स्वतन्त्र छंदों का भी विकास किया। सन्त तुकाराम ऐसे ही सन्तों में थे। उन्होंने अभंग छन्द का विकास किया था। नामदेव ने भी इसी छन्द का प्रयोग किया है।

कवि मोरो पन्त ने मराठी में, १०८ रामायण लिखे हैं। एक बार उनके एक दोस्त ने अपने लड़के को भेजा और कहा जाकर देखो, मोरो पन्त क्या कर रहे है!

लड़का मोरोपन्त के यहां पहुँचा और बोला—"पिता जी पूछते हैं, आप इस समय क्या कर रहें हैं?"

"जाकर कह दो, रघुनाथ चरित्र लिख रहा हूँ।" मोरोपन्त बोले।

लड़के ने जाकर यही शब्द अपने पिता जी को सुना दिये। पिता जी सोच में पड़ गए। आखिरकार मोरोपन्त ने यह क्यों कहा है—'मैं रघुनाथ 'चरित्र' लिख रहा हूँ। उन्होंने यह क्यों नहीं कहा कि—"मैं रामायण लिख रहा हूँ।" बहुत विचार करने के बाद वे इस परिणाम पर पहुँचे कि मोरोपन्त तो 'निरोष्ट्र रामायण' लिख रहे हैं। उन्होंने ऐसी रामायण लिखी हैं, जिसमें ओष्ट से बोले जाने वाले 'प, फ, ब, भ और म का नाम ही नहीं।

"पेशवाओं के युग में मराठी में हंसी मजाक तथा वीरता पूर्ण गीत भी लिखे गए। उन दिनों वीर योद्धाओं को लड़ने के लिये प्रोत्साहन देने की आवश्यकता थी। इसलिये वीर रस की कविताएं पर्य्याप्त संख्या में लिखी गई।

"मराठी में गद्य-साहित्य भी काफी लिखा गया है। श्री आप्टे ने कादम्बरी की शैली पर 'नवल कथा' लिखी है।

सम्पादक के नाम चिट्ठियां

भारतीय गो सेवक समाज

हरिद्वार में कुम्भ स्नान के समय के साथ एक अखिल भारतीय गो सम्मेलन हुआ। यह सम्मेलन अपने ढङ्ग का अनूठा सम्मेलन था। गो सेवक समाज की स्थापना तो नवम्बर १९४८ में हुई थी और इसका प्रथम अधिवेशन जनवरी १९४९ में बम्बई में हुआ। यह संस्था गो सेवकों का एक संगठन है और इसका आदर्श भारत सेवा मंडल जैसी सस्था है जिसमें गौ सेवकों का एक दल है जो गो सेवा के लिये अपना जीवन अर्पित कर दें और केवल उदर पूर्ति का भार समाज पर डाले। समाज के पांच प्रकार के सदस्य हैं जिनमें आजीवन सदस्य से लेकर एक रुपया देकर गो भक्त सदस्य हो सकते हैं। अभी तक पाँच आजीवन सदस्य भी बन गए हैं। ये पांचों सदस्य श्री सेठ गोविन्द दास, श्री हरदेव सहाय, श्री ज० न० मान्कर, श्री धर्मलाल सिंह व श्री नवरथ पांच विभिन्न प्रांतों मध्य प्रदेश, पञ्जाब, बम्बई, बिहार व महाराष्ट्र के प्रतिनिधि हैं।

इन उद्देश्यों की पूर्ति में समाज को आशातीत सफलता मिली है। भारत की विधान परिषद गोवध निषेध को अपने नीति निर्देशक सिद्धान्तों में स्वीकार किया। गोशालाओं की उन्नति के लिये भारत सरकार ने गोशाला बोर्ड बनाया। प्रांतीय तथा केन्द्रीय विधान सभाओं व संसद में गोवध निषेध और वनस्पति घी बन्द करने के कानूनी मसोदे भेजे गये जो कि कई स्थानों पर उपस्थित हो गये हैं तथा विचाराधीन हैं। इनके अतिरिक्त अनेकानेक म्युनिसिपल बोर्डों व जिला बोर्डों ने गोवध निषेधक आज्ञाएं प्रचारित कीं। गोवध निषेध के सम्बन्ध में प्रबल जनमत संगठित किया गया और दिल्ली, गोहाटी कलकत्ता, कटक, मद्रास, हैदराबाद पटना तथा भिवानी में बड़े सफल गो सम्मेलन किए गए।

समाज के प्रयत्नों के फलस्वरूप प्रत्येक प्रांत की विधान सभा के सदस्यों की एक बड़ी संख्या ने अपने को गोवध निषेध के पक्ष में घोषित किया है। गोवध निषेध की समाज की नीति केवल धार्मिक आधार पर अवलम्बित नहीं है। समाज का दावा है कि इस देश की उपयोगी पशुओं को अत्यधिक आवश्यकता है और अनावश्यक गोवध की कानूनी सुविधा का लाभ उठा कर उपयोगी पशुओं को कटवा दिया जाता है। पशुओं की उम्र का पता लगाना आसान नहीं है और एकाध महीने में किसी भी पशु को अनुपयोगी होने का सार्टिफेकेट प्राप्त करने वाला बताया जा सकता है। समाज के सभापति सेठ गोविन्ददास ने भिन्नभिन्न बूचड़खानों का निरीक्षण कर जिसमें कलकत्ता तथा बंबई जैसे नगर सम्मिलित हैं, यह अनुभव किया जिसका कोई उत्तर नहीं दिया जा सकता है।

गो सेवक समाज गो आंदोलन संबन्धी भारत की सबसे अधिक प्रतिनिधि संस्था है। जिसमें विभिन्न प्रांतों के प्रतिष्ठित सार्वजनिक कार्यकर्ता व राजनेता सम्मिलित हैं। समाज की नीति सरकार के सहयोग से गोवंश की रक्षा का प्रयत्न करने की है और वह गोवध निषेध के लिए सत्याग्रह आदि के विरुद्ध है। समाज का मत है कि बिना सरकार की सहायता के इतना आवश्यक कार्य हो नहीं सकता और समाज को यह भी आशा है कि सरकार की सहायता उसे उत्तरोत्तर प्राप्त होती जाएगी। इस वर्ष समाज के पाँच लाख गोभक्त सदस्य बनाने की योजना है।

—संवाददाता

यह ग्रंथ सामाजिक है। इसकी टीका बड़ी विद्वत्तापूर्ण है।

"मराठी में नाट्य और हास्य साहित्य अभी हाल में ही लिखा जाने लगा है। लोगों में देशभक्ति पैदा करने के लिये बड़े सत्याग्रहियों ने मेलों में बैठकर रचनाएं की हैं। उन्होंने गांधी जी की आदर्शवादिता से प्रभावित होकर गांवों, किसानों और उनमें सामाजिक परिवर्त्तन करने के सम्बन्ध खूब में लिखा है। प्रसिद्ध सत्याग्रही साने गुरु जी तथा श्री खांडेकर ऐसे ही साहित्यिक हैं। श्री खांडेकर ने अनेक नाटक लिखकर गांधी-दर्शन का दिग्दर्शन कराया है।

अन्त में आप ने कहा—"मराठी साहित्य सेवी सिर्फ मराठी सीख कर ही सन्तोष नहीं कर लेता। वह मराठी के अतिरिक्त बंगला, गुजराती और हिंदी आदि अन्य भाषाओं को भी सीखता है। वह अन्य भाषाओं में लिखी साहित्यिक पुस्तकों का मराठी में उल्था करने में गौरव अनुभव करता है। मौलिक तो वह लिखता ही है। मैं बड़े गर्व से कह सकता हूँ कि प्रांतीय भाषाओं में बङ्गला से दूसरा नम्बर यदि किसी भाषा का है तो मराठी है।"

नये सभापति

अपना भाषण समाप्त करने के बाद किसी आवश्यक कार्य से उठ कर चले गए। उनके बाद उनके स्थान पर श्री अनन्त शयमम् आयंगर के सभापतित्व में शेष कार्रवाई हुई।

ग्राहकों, एजेंटों और विज्ञापनदाताओं को समस्त पत्र व्यवहार मैनेजर, 'देशदूत' इलाहाबाद के नाम पर ही करना चाहिए।

स्वास्थ्य और व्यायाम

मलेरिया की मृत्यु

साइप्रस द्वीप में सफल प्रयोग

विगत जनवरी ६, १९५० को भूमध्य सागर के साइप्रेस नामक द्वीप ने अपने इतिहास में एक नया अध्याय आरम्भ किया। उसी दिन संसार ने सुना कि साइप्रेस ने मलेरिया निवारक सतत प्रयत्नों में पूर्ण सफलता प्राप्त कर ली।

कुछ कार्यरत लोगों ने, जिनकी संख्या सात या आठ सौ से अधिक कभी नहीं थी, साइप्रेस के प्रधान स्वास्थ्य निरीक्षक मेहमेद अजीज की अध्यक्षता में सारे पर्वतीय प्रदेशों तक पहुँच कर उन स्थानों के कोने में डी० डी० टी० औषधि छिड़की जहां पर मच्छड़ पनपते थे।

ये लोग उन आधुनिक साधनों से वंचित थे जिनका उपयोग मलेरिया विनाश के लिये आज अन्य कई स्थानों में किया जा रहा है। इनके एक मात्र साधन थे अपने कर्तव्य का पूरा ज्ञान और मलेरिया को स्थायीरूप से समाप्त करने का संकल्प उन्होंने पहाड़ों पर चढ़ कर, मैंदानों का बराबर चक्कर लगाकर मलेरिया ग्रसित दलदलों में घुटनों तक धुसकर, चट्टानों के कोने पर खड़े होकर बारबार मृत्यु से बाल बाल बच कर, मच्छड़ों को ढूंढा और जहाँ इन्हें पाया उन्हें मार डाला।

परिणाम! १९४६ में, जब यह मलेरिया विनाश आन्दोलन प्रारम्भ हुआ था, एक वर्ष में १८,००० लोग मलेरिया के शिकार हुआ करते थे किंतु १९४९ के अन्त में केवल सौ लोग, और वे भी मलेरिया के पुराने मरीज।

प्रारम्भ में ब्रिटिश सरकार ने औपनिवेशिक विकाश और कल्याण कोष से ... १७,००० पौंडों (२,२६,७०० रुपयों) की सहायता दी थी। उसके बाद से सारा खर्च साइप्रेस की सरकार ने सहन किया है। कुल खर्च ३,००,००० पौंडों से कुछ कम बैठा, अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति के पीछे १३ शिलिंग (८ रुपये ११ आने)।

साइप्रेस शताब्दियों से मलेरिया का शिकार रहा है। केवल तीन वर्षों पहले तक यहां कई गांवों में मलेरिया की जड़ मजबूती से जमी थी। आज साइप्रेस के लोग सगर्व कह सकते हैं कि उन्होंने मलेरिया का नाम निशान तक मिटाकर अपनी आर्थिक उन्नति और स्वास्थ्य वृद्धि का रास्ता साफ कर लिया है।

स्वयं अपने हाथों से मुक्ति पाकर साइप्रेस के लोगों ने केवल अपना ही कल्याण नहीं किया किन्तु संसार के सभी मलेरिया पीड़ित देशों के सामने एक अनुकरणीय उदाहरण भी उपस्थित किया है।

साइप्रसद्वीप में मलेरिया के मच्छरों को नष्ट करने के लिये वहाँ की सरकार द्वारा डी० डी० टी० का प्रयोग किया जा रहा है।

पिछले अङ्कों का सारांश

[मोहनलाल, उसका चचेरा भाई तोता और उसकी पत्नी रोनी, साधारण तथा गरीब किसान का जीवन। दो बैल, एक दुधारू भैंस और ...ड़ी सी खेती। यही उनकी निधि थी। खेत पक गया था। मोहनलाल, तोता तथा रोनी ने खेत की कटाई की और खलियान लग गया। जिन्हें ...का ठिकाना नहीं था, उन्हें आशा हुई कि मड़ाई होने के बाद ही उन्हें दोनों वक्त कम से कम रोटियाँ मिलने लगेंगी और बैलों तथा भैंस को चारा ...छ दिनों के लिये हो जायेगा। किन्तु उभंगम का समय, खलियान में एकाएक जमींदार के सिपाही आ पहुँचे, और जोर-जबरदस्ती करके ...ज के ढेर का तीन हिस्सा बैलगाड़ी पर लाद ले गये। मोहनलाल और रोनी ने दया की प्रार्थना की किन्तु जमींदार के सिपाहियों ने एक न ...। खलियान में अनाज के ढेर का केवल चौथाई भाग वह छोड़ गये। मोहनलाल और रोनी का हृदय भावी चिंता से व्याकुल हो उठा। ...र फिर.........]

देशदूत २६ मार्च के आगे

[११

...तो के महल में चहल पहल ...न तौर से महल के उस रंगीन ...से रंग महल कहते थे। रंग ...न्धियों में डूब सा रहा था। ...ुलायम गालीचों पर घुँघरू की ... तबले की मीठी थाप का साथ ...ी और मेंहदी से रंगे सुन्दर पावों ...री मसनद तकियों से टिके ...र मुहम्मद शाह रंगीले के मस्त ...ो विकसित मुस्कराहट की झुनक ...थीं। सुराहियों से उँड़ेली हुई ...े कटोरों में शराब का उफनाता ...वाह खूबसूरत खवासिनों की ...उँगलियों को, बादशाह के होठों ...हुँचाने के समय, छू छू जा रहा ...हम्मद शाह कोमलाङ्गी सुन्दरियों ...की रुमझुम, तबले की थपकी, ...की मृदुल खन खन नृत्य के ...अदा, गानतान के माधुर्य और ...सिनों के आभूषण अलकेत ...उँड़ेली हुई शराब में उलझा ...था।

...समय लाल किले के बाहरी ...र बड़ा शोर गुल हुआ। उसका ...बक्का तान और रुमझुमको लगा। ...'क्या बवाल है?' मुहम्मद शाह ...ने ढले हुए स्वर में सवाल ...। नर्तकी और खवासिने अदब ...ध्यान देकर सुनने लगीं। कान ...की ओर से आने वाले शोर पर

...म पल पल पर बढ़ रहा था: ...र डाला! लूट लिया!! तबाह हो ...बचाइये!!!! पनाह दीजिये!!!!!' ...शाह की एक भौंह पर नखरे के ...ी चढ़ी।

बोला,'इन कमबख्त जाहिलों को यही वक्त मिला गले बाजी के लिए! कितना चिल्ला रहे हैं! कान के पर्दे फटे जा रहे है!!! चुप करो कोई इन बेहूदों को।'

आसा बरदार फाटक पर गया और हाँफता हुआ तुरन्त लौटकर आया।

'जहाँ पनाह, फाटक पर दिल्ली की बेशुमार रय्य खड़ी हुई है। कुछ उनमें से बुरी तरह घायल भी हैं, उसने सूचना दी।

अब बादशाह की आँख पर दूसारी त्योरी आई।

बोला,'आखिर है क्या? वजह भी कोई हो। घायल होगए तो कौनसा गजब हो गया? दिल्ली की सड़कों पर आए दिन होता रहता है। किसी सरदार के साथ बद-तहजीबी का बर्ताव किया होगा गँवारों ने। उसने सपाटे कस दिए होंगे। क्या ये गधे सबेरे नहीं आसकते थे फ़रियाद सुनाने?

कुहराम की घोरता और भी बढ़ी।

'बड़े बड़े भाले लिए थे!'

'लम्बी तलवारें!!'

गाँठ गठीले घोड़े जिन्होने रौंद डाला!!!

'मार डला! लूट लिया!! हाय हाय!!!'

'हाथी घायल कर दिये!'

'ऊँटों को मार डाला!!'

'कई हाथियों को तो उठाकर ही ले भागे!!!'

'हमारे ऊँट ले गए!!!!'

कुहराम किसी भाँति भी बन्द न हुआ मजलिस का रंग बिगड़ गया। नर्तकियों और खवासियों ने नाक-भों सिकोड़ी। साजिन्दों ने अपने बाद्य अलग रख दिया। मुहम्मद शाह को क्रोध आ गया। झुकता झूमता चोबखाने की मन्जिद पर कुछ दरबारियों के साथ गया। इनमें से एक वीर हसन खाँ कोका नाम का था। ईरानी था, परन्तु उसको पठान बनने और कहलाने का शौक था! उस समय पठानों के दुस्साहस, हेकड़ी, गँवारी, क्रूरता और शांखी को मूर्खता न कहकर बहादुरी का नाम दिया जाता था। सूरत शकल का अच्छा था; दिल्ली की सड़कों पर इसने खून भी कई किए थे। मुहम्मद शाह ने उसके लक्ष्मणों में पुरुषार्थ का अतिरेक कल्पित करके

'खाँ जहाँ वहादुर कोकल ताश ज़फ़र जंग' के उपाधि दी थी।

मीर हसन खाँ ने ऊँची आवाज़ में कहा,'कुहराम मत मचाओ। एक एक करके बात करो।'

मुश्किल से शोर कम हुआ।

एक ने चिल्ला कर कहा,'मेले में बेचने के किए हम कपड़े लेगए थे। सब लूट किए गए!'

दूसरे ने और भी चिल्ला कर पुकारा,'मेरी दूकान पर एक रईस हाथी पर बैठ कर आए थे जेवर मोल लेने, वे पटान थे। उनको मार डाला और हाथी को घायल कर दिया!'

एक कूँजड़ा चिल्लाया,'हम कूँजड़ों की साग भाजी लूलटी! सारा प्याज लेगए बदमाश!! एक गाँठ भी तो नहीं छोड़ी!!!'

एक नाई चीखा,'मैं हजामत बना रहा था; लुटेरे मेरे सारे कैंची उस्तरे उठा ले गए फिर सब के सब इतनी चिल्ल पुकार की होड़ में लगगए कि किसी की भी बात समझ में न आपाई।

बादशाह ने कहजवाया,'अरे मेवाती होंगे, मेवाती। वे ही दिल्की के आसपास ऐसे छिट-पुट हमले किया करते हैं। दिल्ली के

ये बेवकूफ़ क्यों महरौजी और निजामुद्दीन सरीखी वीरान जगहों में अपना कीमती माल लेगये? कल इन्तज़ाम किया जायगा।

क्रमशः

राजस्थान की स्वायत्त शासन की प्रगति
डिस्ट्रिक्टबोर्डों और म्यूनिसिपल बोर्डों की स्थिति क्या है ?

लेखक, श्री कमलकिशोर जैन

राजस्थान में स्वायत्त शासन की प्रगति कैसी है ? शिक्षा, स्वास्थ्य नागरिक अधिकारों की स्थिति क्या है ? इस सम्बन्ध में लेखक ने इस लेख में प्रकाश डाला है। लेखक ने यह भी बतलाया है कि राजस्थान में नागरिक उन्नति किस प्रकार प्रगतिशाली हो सकती है। लेख पठनीय तथा सुन्दर है।

पूज्य बापू का ध्येय ग्राम पंचायतों द्वारा ही देश में वास्तविक स्वराज्य कायम करने का था। स्वतंत्र भारत में उसकी कल्पना को साकार रूप देने की ओर जिस प्रकार भारत के दूसरे प्रान्तों ने कदम उठाया उसी प्रकार राजस्थान सरकार ने भी अपने अपने स्वायत शासन सचिवालय को जरिए प्रान्त में पंचायती राज के द्वारा रामराज्य के दर्शन कराने की ओर कार्य प्रारम्भ किया।

राजस्थान प्रांत के निर्माण के पहले भूतपूर्व रियासतों में स्वायत शासन सचिवालय काम तो अवश्य कर रहे थे परन्तु एकीकरण के बाद जिस प्रकार से इस विभाग का कार्य चला वह प्रांत व्यापी रहा और उसके दृष्टिकोण में काफी अन्तर पड़ गया जो कि स्वाभाविक ही था। एकीकरण के प्रारम्भ में समस्त राजस्थान में लगभग ७००० गांव में पंचायतों का लाभ उठा रही थी और १३३ कस्बा म्युनिसिपेलिटियां, सात जिला बोर्ड और चार शहर म्युनिसिपेलिटियां काम कर रही थीं। ग्राम पंचायतों की संख्या अब लगभग १५०० हो गयी है जिनके द्वारा करीब १४ हजार गांव लाभ उठा रहे हैं। विभिन्न इकाइयों में विभिन्न प्रकार के एक्ट जो पहले के बने हुये थे उनसे शासन व्यवस्था में काफी दिक्कत आ रही थी, इसी को दृष्टि में रखते हुए सरकार के स्वायत शासन विभाग ने सर्व प्रथम पूरे राजस्थान के लिए एकसा एक्ट बनाने का कार्य हाथ में लिया और जिसके फल स्वरूप ग्राम पंचायत एक्ट बन चुका है जो कुछ ही दिनों में जनता के हाथों में आ जायगा।

कस्बा म्युनिसिपेलिटी एक्ट का मसविदा मन्त्री मंडल द्वारा जल्दी ही स्वीकार कर लिया जायगा। जिला बोर्ड के लिये भी नया एक्ट बन रहा है। सब से बाद में शहर म्युनिसिपल एक्ट बनाया जायगा क्योंकि सब ही जगह किसी न किसी प्रकार के एक्ट से इन म्युनिसिपेलिटियों का कार्य अभी चल ही रहा है, और इनसे पहले दूसरे एक्टों का भी बनना जरूरी भी है।

नये विधान

सरकार ने म्युनिसिपेलिटी और जिला बोर्डों का कार्य सुचारुरूप से चलाने के लिए इनका एक अलग विभाग कायम किया है, जिसके प्रधान अधिकारी चीफ इन्स्पेक्टर रहेंगे। इनका प्रधान कार्यालय जयपुर में होगा। इसी प्रकार ग्राम पंचायतों के लिये भी जयपुर कार्यालय रख कर एक वर्ष भिन्न विभाग कायम किया गया है। इन विभागों के खुलने से पहले राजस्थान की विभिन्न म्युनिसिपेलिटियां व पंचायतें आदि को सरकार से पत्र-व्यवहार करने में काफी दिकत रहती थी और समय भी अधिक लगता था। अब इनसे सीधा पत्र-व्यवहार किया जा सकेगा। और प्रतिदिन की कार्यवाही आसानी से चल सकेगी।

इनके अतिरिक्त जनता में स्वायत शासन और नागरिकता की भावना पैदा करने के लिये सरकार ने एक स्वायत शासन मंडल भी स्थापित किया है। जिसके लिये दो लाख रुपया वार्षिक का बजट स्वीकार किया गया है। इस मंडल के कुल २३ सदस्य हैं। जो कुछ को छोड़कर सभी गैर-सरकारी हैं। ये सदस्य मंडल के कार्य में काफी दिलस्पी ले रहे हैं। इसके अध्यक्ष माननीय स्वायतशासन मंत्री श्री फूलचन्द्र बाफणा हैं। गत ३१ मार्च तक के लिये इस मंडल की सरकार ने १ लाख रुपया स्वीकार किया था। मंडल एक पाक्षिक पत्र 'पंचायत' भी शीघ्र ही निकालने वाला है। वैसे आज बुलेटिन, बुकलेट्स आदि के द्वारा प्रचार कार्य जारी है और पंचों के लिये शिक्षण-शिविर भी जल्दी ही चालू करने की व्यवस्था की जा रही है।

चुनाव के अधार

राजस्थान की सभी स्थानीय स्वायत शासन संस्थाओं के लिये चुनाव के वास्ते बालिग मताधिकार का तरीका अपनाया गया है और इसकी घोषणा भी कर दी गई है।

कस्बा म्युनिसिपेलिटियों में योग्य व्यक्तियों के चुनाव और उन्हीं को सुविधा देने के लिये सरकार ने यह नियम बना दिया है कि दस हजार तक की बस्ती वाले सभी कस्बों में चुनाव सिंगल कान्स्टीच्यूएन्सी के आधार पर होंगे। दस हजार से बीस हजार की बस्ती में पाँच वार्ड और बीस हजार से पचास हजार के कस्बों में आठ से अधिक वार्ड नहीं रखे जायेंगे। चुनाव में जातीय या साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व सदैव के लिए समाप्त कर दिया गया है। इन नियमों के अनुसार राजस्थान में सभी जगह मतदाता सूची तैयार करने का काम चालू है जिससे जल्दी से जल्दी नये चुनाव कराये जा सकेंगे। अनेक स्थानों पर ये सूचियां बन भी चुकी हैं। म्युनिसिपल बोर्ड के सभी सदस्य चुने हुए होंगे। यदि पिछड़ी हुई जातीयां व महिला वर्ग में से कोई सदस्य नहीं चुना गया तो सरकार इन दो को नामजाद कर सकेगा। १० हजार की बस्ती वाले कस्बे में बारह से अधिक सदस्य नहीं चुना जा सकेंगे और इसके आगे प्रति पाँच हजार पर एक सदस्य और चुन जा सकेगा। अध्यक्ष का चुनाव सीधा जनता द्वारा या चुने हुये सदस्यों द्वारा, दोनों ही प्रकार से हो सकेगा। उपाध्यक्ष तो सदस्यों द्वारा ही चुना जावेगा।

स्वायत शासन विभाग की यह नीति रहेगी कि कम से कम प्रत्येक पांच हजार की बस्ती वाले कस्बे में एक कस्बा म्युनिसिपेलिटी कायम की जाये। यह म्युनिसिपेलिटियां अपना खर्चा चलाने के लिये कुछ टेक्स भी लगा सकेगी। सरकार भी इन्हें कुछ आर्थिक सहायता देने के प्रश्न पर विचार कर रही है। वैसे यह प्रयत्न किया जा रहा है कि राजस्थान की सभी स्थानीय स्वायत शासन संस्थायें अपने पैरों पर खड़ा होना सीखे और स्वावलम्बी बने, वैसे जनता के हित के बड़े कार्यों के लिये सरकार कुछ न कुछ आर्थिक सहायता देती रहेगी।

पंचायत एक्ट

एकीकरण के पहले केवल भूतपूर्व राजस्थान में ही ग्राम पंचायतों का एक अलग विभाग बना हुआ था और वहां कुछ ढङ्ग से कार्य भी हो रहा था बाकी इकाइयों में रेवेन्यू अधिकारियों द्वारा ही इनकी सम्भाल होती थी और वे ही देख-रेख करते थे।

नये पंचायत एक्ट में पंचों को काफी अधिकार दिये गये हैं और उनकी सुविधा के लिये नया विभाग भी खोल दिया गया है। नये एक्ट के अनुसार पांच हजार की जनसंख्या के गांवों के समूह में एक पंचायत की स्थापना हो सकेगी। पंचायतें आम तौर पर सभी गांवों में स्थापित की की जावेंगी। सरकार पंचायतों के निरीक्षण का समुचित प्रबन्ध करेगी। पञ्चायतों की आर्थिक स्थिति सुधार कर उन्हें स्वावलम्बी बनाने की ओर विशेष प्रयत्न किया जावेगा। सारे क्षेत्र से बालिग मताधिकार के आधार पर सरपञ्चों का चुनाव होगा। यदि पंचों के चुनाव में परिगणित जाति के लोग न आसकेंगे तो उनके लिये स्थान सुरक्षित रहेंगे पञ्चायतें अनुचित लाग बाग व बेगार के अपराधों की सुनवाई भी कर सकेगी। पञ्चायतें के ग्राम प्रबन्ध पर पञ्च प्रश्न कर सकेंगे और सरपञ्च को उन्हें उत्तर देना ही होगा। पञ्चायतों को भी कुछ टेक्स लगा के अधिकार दिये गये हैं। गांवों में सस्ता न्याय देने के लिये पञ्चायत न्यायालय भी कायम किये जावेंगे जिन्हें काफी मात्रा में दीवानी और फौजदारी अधिकार होंगे।

भारत में अभी जनतन्त्र की भावना पूर्ण रूप से जाग्रत नहीं हुई है और राजस्थान में तो अभी इस सम्बन्ध में काफी समय लगेगा। परन्तु यह आशा है कि सरकार के स्वायत शासन विभाग के जरिए हम जल्दी ही इस योग्य बन जावेंगे कि दूसरे प्रांत से पीछे न रहें। अभी तक राजस्थान की स्वायत संस्थाओं के चुने हुए अधिकांश सदस्य अपने कर्त्तव्य और जिम्मेदारी को पूरी तरह से नहीं समझ रहे हैं। नागरिकता के नियमों की जानकारी कराने के लिये जनता को हमें राजस्थान में बहुत कुछ सिखाना है। यह भारी राजनैतिक व सामाजिक समस्या है जो किसी भी सरकार के कानून द्वारा हल नहीं की जा सकती। इस विषय सार्वजनिक संस्थाओं व जनता के सहयोग की परम आवश्यकता है।

सचित्र साप्ताहिक 'देशदूत'

संवाददाताओं से निवेदन ... संयुक्तप्रांत, मध्यप्रांत, ... भारत तथा राजपूताने के ... भेजनेवालों से निवेदन है कि ... अपने संवाद संक्षिप्तरूप में ... भेजने का कष्ट करें।

संपादक 'देशदूत'

[श्र]ी सोहनलाल द्विवेदी लिखित काव्य कृतियों के नवीन संस्करण

भैरवी

गांधी युग का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। महामना मालवीयजी के शब्दों में 'ऐसी कविता का प्रचार देश के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक होना चाहिए।' मूल्य २।।≡)

वासवदत्ता

बाबू मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं 'इस रचना से मैं बहुत प्रभावित हुआ।' स्वच्छन्दतापूर्वक जिस प्रौढ़ता की ओर द्विवेदीजी अग्रसर हो रहे हैं, जान पड़ता है, स्वयं वह भी उन्हें वरण करने के लिए आतुर हो रही है। 'वासवदत्ता' के प्रकाशन ने हिन्दी-साहित्य में एक नई क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। स्वयं पढ़कर निर्णय कीजिए। मूल्य१।।)

कुणाल

महापंडित राहुल सांकृत्यायन की सम्मति में—अशोक, तिष्यरक्षिता और कुणाल खास तौर से—'कुणाल' के चरित्र-चित्रण में कवि ने कमाल किया है। शब्द-सौकुमार्य और भावोत्कर्ष के साथ ही नपे तुले शब्दों के प्रयोग ने काव्य को बहुत उँचा उठाया है। विशेष संस्करण मूल्य २।।)

पूजागीत

राष्ट्रीय चेतना को काव्य का सच्चा स्वरूप देने के लिए द्विवेदी जी को प्रचुर सम्मान तथा लोकप्रियता प्राप्त हुई है। ये पूजा-गीत कवि के गौरव के अनुरूप ही हैं। मूल्य २)

विषपान

सुप्रसिद्ध पौराणिक कथा का सरल तथा सबल खंड-काव्य है। भाषा का प्रवाह, प्रसन्न शैली तथा कथा के मार्मिक घटना-क्रम की वर्णना ने इसे बड़ा ही हृदयग्राही बना दिया है। मूल्य १)

झरना, शिशुभारती, बाँसुरी

द्विवेदी जी पहले बालकों के कवि हैं पीछे राष्ट्र के। पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा माननीय सम्पूर्णानन्दजी ने इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा की है। 'अमृत बाज़ार पत्रिका' की सम्मति में—जिस प्रकार की शिक्षा बालकों को देने के लिए हमारे नेता वर्षों से प्रयत्न कर रहे हैं, इन पुस्तकों में उसी प्रकार का साहित्य है। प्रत्येक पुस्तक में कई रङ्गीन तथा अनेक सादे चित्र हैं। प्रत्येक पुस्तक का मूल्य १)

तीनों सेट का मूल्य १२ रु०

—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

ESTD 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेंट रिकगनाइजड AIDED

सिन्हा होमियो मेडिकल कौलेज

—पो० लहेरियासराय, बिहार—

आज हिन्दी उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़ कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्सन सहित फीस H.L.M.S. १०), H.M.B.S १५) H.M.D.S. २५) पुस्तकें—अ० पारिवारिक १।।) बायोकेमिक १।।) मेटेरिया मेडिका १।।) मेडिकल डिक्सनरी २) आर्गेनन १।।) फार्मा कोपिया १।।) रेड लाइन सीम्पटम्स १।।) (१) बृ० इंजेक्सन चिकित्सा ३) बृ० अ० पारिवारिक चिकित्सा ६।।) बृ० अ० मेटेरिया मेडीका ६।।) ऐनाटोमी १।।) परिक्षाविधान १।।) रिलेशन शिप, १।।) कुल किताबें २५) में एक साथ दी जायँगी डा० ख० माफ। अमेरिकन दवाइयाँ ३०—≈)।। २००—≡) ड्राम, फी औंस ।।), घरेलू बक्स पुस्तक सहित ३६ शीशी का ८) सुगर और गोली २।।) फी पाउण्ड। चौथाई Advance भेज दें। थोक खरीदार को २५ प्रतिशत कमीशन देते हैं।

नोटः—बृहत् सूची मुफ़्त—सचित्र मेडिकल मैगजीन मासिक ।।) सालाना—५)

संरक्षक—राय सा० डा० यदुबीरसिंह एम० डी० यस० (U.S.A.)

सचित्र साप्ताहिक 'देशदूत' का विशेषांक

काश्मीर अंक

इस अंक का संपादन करेंगे

पंडित शिवनाथ काटजू एम० ए०, एल-एल० बी०

'देशदूत' के काश्मीर अंक विशेषांक के प्रकाशन की तैयारी जोरों से प्रारंभ हो गई है। काश्मीर की समस्या स्वतंत्र भारत को आज की एक प्रमुख समस्या है। काश्मीर भारत का अंग है। उसकी रक्षा तथा स्वतन्त्रता भारतीय सरकार का कर्तव्य है! इस विशेषांक में काश्मीर की वर्तमान समस्याओं पर राष्ट्र के बड़े बड़े नेताओं के गंभीर तथा जानकारी पूर्ण लेख रहेंगे। काश्मीर की भौगोलिक, ऐतिहासिक तथा राष्ट्रीयता का सचित्र विवरण दिया जायेगा। काश्मीर के प्रति पाकिस्तानी नीति पर भी नेताओं द्वारा सुन्दर प्रकाश डाला जायेगा। काश्मीर के संबंध में सुन्दर चित्र तथा नेशनल कान्फ्रेंस के नेताओं के संदेश आदि भी आकर्षक रूप में होंगे।

विज्ञापनदाताओं तथा एजेंटों क

अभी से अपना स्थान तथा बिक्री के लिये कापियाँ रिजर्व करा लेना चाहिये। नये ग्राहकों को यह अंक मुफ़्त मिलेगा। यह अंक काश्मीर का एक अलबम होगा।

दर्जनों चित्रों तथा कार्टूनों से सुसज्जित

इस अंक का मूल्य होगा केवल ।≈)

व्यवस्थापक 'देशदूत' इलाहाबाद

भारत के कोने-कोने में हजारों जनता-द्वारा पढ़ा

जानेवाला तथा ११ वर्षों से लगातार प्रकाशित होनेवाला

प्रमुख राष्ट्रीय साप्ताहिक पत्र

सचित्र देशदूत में

विज्ञापन देकर अपने व्यापार क बढ़ाइये

भारत में अभी जनतन्त्र की भाव
र्ण रूप से जागृत नहीं हुई है
जस्थान में तो अभी इस सम्बन्ध
समय लगेगा। परन्तु यह आ
सरकार के स्वायत शासन नि
ए हम जल्दी ही इस योग्य
दूसरे प्रांत से पीछे न
स्थान की स्वायत संस्
अधिकांश सदस्य अ
मेदारी को पूरी तरह
गारिकता के नि
के लिये
बहुत

Registered No. A—295

विविध विषयों के हमारे बढ़िया

इस पुस्तकमाला की ४ प्रसिद्ध पुस्तकें हैं—(१) 'योगायोग' कवित्वमय श्रेष्ठ उपन्यास। मूल्य ४) (२) 'विश्वपरिचय' विज्ञान-विषय अनन्य ग्रन्थ। मूल्य २), (३) 'रूस की चिट्ठी। रूस का आँखों देखा वर्णन, मूल्य २) (४) 'चार अध्याय' ऐसा उपन्यास जिसमें राजनीति, समाज और स्त्री-पुरुष-समस्या आदि पर विचार है मूल्य १।)

बालकृष्ण राव

कवि और छवि

इसमें प्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव के नये गीतों का संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अन्तर्द्वन्द्व से पूर्ण है। छपाई सफाई नयन मोहक। सचित्र सजिल्द प्रति का मूल्य २) दो रूपये।

लेखक भू० पू० काकोरी सके के कैदी श्री मन्मथनाथ गुप्त और राजेन्द्र वर्मा। समाजवाद के अध्ययन के लिये पढ़ना आवश्यक है। मार्क्सवाद के दर्शनों में यह सबसे गहन है। एक दर्जन अध्यायों में विषय का प्रतिपादन हुआ है। मूल्य ६) छः रुपये।

यह श्री श्यामनारायण पाण्डेय की प्रसिद्ध रचना है। इसमें महाराणा प्रताप के हल्दीघाटी वाले संग्राम का वीरता पूर्ण वर्णन बढ़िया छन्दों में है। सजिल्द सचित्र पुस्तक का मूल्य २॥।) दो रुपये बारह आने।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, ३६ पन्नालाल रोड, इलाहाबाद

।।प्रधान संपादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल। कृष्ण प्रेस, प्रयाग में ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल द्वारा मुद्रित तथा 'देशदूत' कार्यालय प्रयाग, द्वारा प्रकाशित

अनेक विषयों की बढ़िया पुस्तकें

हिन्दी भाषा का संक्षिप्त इतिहास

यह राय बहादुर डाक्टर श्यामसुन्दर दास के इसी नाम के ग्रन्थ का सारांश है। विषय नाम से ही प्रकट है। अपनी भाषा का इतिहास संक्षेप में पढ़ने के लिए इसे लीजिए। अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य १) एक रुपया।

आदर्श भूमि अथवा चित्तौर

चित्तौर राजपूतों के त्याग के कारण तीर्थ बन गया है। भारत के गौरव स्वरूप उसी चित्तौर का ओजपूर्ण भाषा में लिखा गया इतिहास पढ़कर अपनी जानकारी बढ़ाइए। मूल्य २) दो रुपये।

पंडित जी

नामी उपन्यास लेखक शरद बाबू के इस उपन्यास में कुलीनता, उच्च शिक्षा, द्विज और द्विजेतर, गाँव की भलाई और अपनी उन्नति, नई शिक्षा और मिथ्या अभिमान आदि के सम्बन्ध पर बहुत ही विशद विवेचना की गई है। मूल्य २) दो रुपये।

मैक्सिम गार्की

रूस के इस विश्रुत कलाकार के परिचय के लिए इस पुस्तक को पढ़िए। है तो यह जीवन चरित, पर इसे पढ़ने में कहानी का आनन्द मिलेगा। इसकी जीवनचर्या का वर्णन पढ़कर पाठक जान सकेंगे कि इस कलाकार को किन विकट कठिनाइयों में होकर गुजरना पड़ा था। छोटे टाइपों में छपी लगभग ढाई सौ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य ३) तीन रुपये।

युद्ध और शान्ति

यह संसार के श्रेष्ठ उपन्यास लेखक और विचारक काउंट लियो टालस्टाय के प्रसिद्ध रूसी उपन्यास 'वार एण्ड पीस' का हिन्दी रूपान्तर है। यह जिस समय लिखा गया था उस समय टालस्टाय की शैली परिमार्जित हो गई थी और उन्हें अन्तर्द्वन्द्व से छुटकारा मिल कर शान्ति मिल गई थी। लेखक ने इसमें मानव-जीवन का सच्चा चित्र, अपने समय के रूस की तस्वीर और राष्ट्रों की खींचतान बड़ी खूबी से चित्रित की है—जीवन और मृत्यु के रहस्य का भी उद्घाटन किया है। लगभग पौने सात सौ पृष्ठों की सजिल्द प्रति का मूल्य ५।-) पाँच रुपये पाँच आने।

कुलबोरन

श्री चन्द्रभूषण वैश्य ने इस उपन्यास को सत्य घटना के आधार पर लिखा है। समाज की अन्ध परम्पराओं से देश की जो हानि हो रही है उसका इसमें सजीव चित्र है। सुधार करनेवाले को रूढ़ियों के अन्ध भक्तों से जैसा लोहा लेना पड़ता है उसका नमूना। उपन्यास का नायक, 'कुलबोरन' है। अच्छे कागज पर छपी सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥ दो रुपये आठ आने।

अल्पता की समस्या

'साम्प्रदायिक भेद पर विशेष अधिकार माँगना और ऊलजलूल दावे पेश करना तथा उन माँगों के पूरा न होने पर देशद्रोह के लिए कमर कस लेना किसी देश-भक्त का काम नहीं।' इसी पर दृष्टि रख कर पंडित वेंकटेश नारायण तिवारी एम० ए० ने तथ्यों और आँकड़ों के साथ पुस्तक में सहमत को समझाया है। पाकिस्तान बन जाने पर भी जिनके मन में ऊपर लिखी भावना है उनके समाधान के लिए इसमें सप्रमाण उत्तर है। मूल्य २) दो रुपये।

ईरान

महा पंडित राहुल सांकृत्यायन ने इस पुस्तक में अपनी ईरान-यात्रा का विशद वर्णन किया है। इसके पढ़ने से ईरान की बहुत-सी जानकारी पाठकों को हो जायगी। भ्रमण-वर्णन कहानी का सा आनन्द देगा। मूल्य १=) एक रुपया ग्यारह आने।

मध्य प्रदेश और बरार का इतिहास

इस अत्यन्त प्रामाणिक इतिहास में उक्त प्रदेश से सम्बन्ध रखनेवाली सभी प्राचीन और अर्वाचीन महत्त्वपूर्ण बातें आ गई हैं। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

सुन्दरी-सुबोध

इस पुस्तक में पति-पत्नी को सन्तुष्ट रखने के उपाय इस ढंग से बताये गये हैं कि कहानी का आनन्द देते हैं। इसके सिवा सास पतोहू, देवरानी-जेठानी, ननद-भौजाई, माता-पुत्र आदि स्त्री के दूसरे सम्बन्धों को भी ठीक २ रखने के उपाय बताये गये हैं। पुरुषों के लिए भी बहुमूल्य अनुभूत बातें दी गई हैं। इनको उपयोग में लाने से गृहस्थी सुखमय हो सकती है। ३०० पृष्ठों से अधिक की सजिल्द प्रति का मूल्य २॥) दो रुपये आठ आने।

आदर्श महिला

इस पुस्तक में सीता, सावित्री, दमयन्ती, शैव्या और चिन्ता आदि पाँच प्रसिद्ध देवियों की जीवन-घटनाओं का सजीव सचित्र वर्णन किया गया है। इसको पढ़ने में कहानी का आनन्द मिलेगा और शिक्षा सहज ही। मूल्य २॥=) दो रुपये ग्यारह आने।

कथा सरित्सागर

इस पुस्तक में आदि से [अन्त] तक एक से एक बढ़िया कहानियाँ [हैं]। जैसा इसका नाम है, यह क[थाओं] का समुद्र है। प्रत्येक कथा के [पीछे] एक न एक दृष्टान्त है। [...] सजिल्द प्रति का [१]=) मू[ल्य] रुपये ग्यारह आने।

देव दर्शन

इसमें ब्रजभाषा के प्रख्यात [कवि] देव की जीवनी और उनके [...] काव्यों का आलोचनात्मक प[रिचय] दिया गया है। ब्रज काव्य के प्रे[मियों] और हिन्दी साहित्य के विद्यार्थि[यों के] लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उ[पयोगी] है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य [...] एक रुपया पाँच आने।

बन्दना

यह श्रीमती चन्द्रमुखी ओझा [...] के ५० मधुर गीतों का संग्र[ह है]। आरम्भ में श्री सूर्यकान्त [त्रिपाठी] 'निराला' की लिखी प्रशस्ति [है]। अच्छे कागज पर छपी स[जिल्द] पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

तुलसी के चार दल

(प्रथम और द्वितीय भा[ग]) गोस्वामी तुलसीदास जी के राम[लला] नहछू, बरवै रामायण, पार्वती म[ंगल] और जानकी मंगल का आलो[च]नात्मक परिचय तथा इन चारों [ग्रन्थों] की अध्ययनपूर्ण टीका। इसे इन [ग्रन्थों] की कुंजी समझिए। मूल्य प्रथम [भाग] का १) रुपये, द्वितीय भाग का [...] दो रुपये ग्यारह आने।

ग्रह-नक्षत्र

इस पुस्तक में ग्रहों और न[क्षत्रों] आदि से सम्बन्ध रखने वाल[ी] सभी आवश्यक बातों का [...] वर्णन सरल भाषा में है। मू[ल्य ३)] तीन रुपये

हार या जीत

इस उपन्यास में लेखक ब्रजेश्वर वर्मा एम० ए०, डी० [...] ने एक कहानी लुहार की अल्प[...] बेटी को घटनाक्रम से अनाथ [...] में, देहात से महाराजगंज की [...] पृथाकुंवरि के आश्रय में पहुँचा[या] है। वहाँ रानी की कृपा में [उस] लड़की ने विद्या पढ़ी। फिर इसमें [...] गुणों का विकास हुआ जिससे [...] सभ्य होकर सम्मान पाता है। [...] असहयोग आन्दोलन में सक्रिय [भाग] लिया और अन्त में कलकत्ता [...] नौकरी कर ली। कई पुस्तकें लि[खीं]। विदेश यात्रा के बाद रानी के [...] की प्रार्थना पर उससे विवाह [...]। उपन्यास की घटनावली, विचा[र] संघर्ष और चन्दा की [...] दृढ़ता सराहने योग्य है। मू[ल्य ...] दो रुपये।

देशदूत

[वर्ष १२, संख्या ३५] [रविवार, २१ मई, १९५०

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति पंडित चंद्रबली पांडेय

स्वाध्याय और सत्साहित्य-सृजन

आठ आवश्यक गुणों से संपन्न हैं

लेखक, पं० बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

आज जिस विषय पर हम विचार करने के लिये एकत्रित हुये हैं वह है स्वाध्याय और साहित्य-सृजन। बहुधा इस विषय पर विवाद हुआ है। कुछ विचारकों के मतानुसार साहित्य सृष्टा के लिये स्वाध्यायी होने की आवश्यकता है और कुछ विचारकों का यह मत है कि साहित्य का सृजन बिना गम्भीर अध्ययन के सम्भव नहीं है। इस प्रश्न का 'हां' या 'नहीं' में उत्तर देने के पहले हमें यह देखना होगा कि एक साहित्य सृष्टा में किन विशेष गुणों की आवश्यकता होती है।

मेरे मतानुसार सात आठ ऐसी विशेष बातें हैं जिनके बिना सत्साहित्य का सृजन सम्भव नहीं प्रतीत होता। एक साहित्य सृष्ठा में पहला आवश्यक गुण है कल्पना शक्ति। कल्पना शक्ति के आधार पर ही एक साहित्य सृष्टा जीवन की साधारण परिस्थियों को एक कथानक का स्वरूप देता है और उनमें चमत्कार उत्पन्नकर सकता है।

दूसरा गुण जो आवश्यक है वह है उसका सामर्थ्य। यदि शब्द दारिद्र को लेकर कोई व्यक्ति साहित्य का सृजन करना चाहे तो वह वैसा कर सकता है किन्तु उसके साहित्य में उस व्यापकता का समावेश नहीं हो पायगा जो जीवन के प्रत्येक अंग का स्पर्श कर सके। शेक्सपीयर के सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि वही एक ऐसा साहित्य सृष्टा है जिसने आँग्ल भाषा के सबसे अधिक शब्दों का प्रयोग किया है। और इस कथन में इसलिये भी सत्यता है कि शेक्सपीयर ने अपने काव्य अथवा नाटकों में फिर चाहे वे दुखान्त हो अथवा सुखान्त जीवन के जिन भिन्न-भिन्न स्वरूपों का दिग्दर्शन हमें कराया है वह बिना बृहत् शब्द भण्डार के सम्भव नहीं है।

तीसरा गुण है मानव स्वभाव की अध्ययन पटुता। यदि एक साहित्य सृष्टा इस गुण से निहित है तो वह अपने साहित्य में अमरत्व का समावेश नहीं कर सकेगा। मानव स्वभाव का अध्ययन करते समय एक साहित्यकार के लिये यह आवश्यक हो जाता है कि वह निष्पक्ष होकर मानव को देखें। किसी वाद-विवाद के पक्षपात को मन में प्रतिष्ठित करके यदि एक साहित्य रचयिता मानव स्वभाव को देखेगा तो वह मानव के यथार्थ स्वरूप को देखने में समर्थ न हो सकेगा। इस विषय में यदि मैं एक उदाहरण दूं तो मेरी बात स्पष्ट हो जायगी। बहुत वर्ष पहले मैंने रूसी क्रान्ति—उत्तरकाल के एक ख्यातनामा उपन्यासकार फिडियोर ग्लेडकोफ का 'सीमेण्ट' नामक उपन्यास पढ़ा था। आप जानते हैं कि रूसी क्रान्तिकारी कौटुम्बिक जीवन को श्रेणी विहीन समाज की स्थापना में एक प्रकार की बाधा मानते हैं। अतः केवल प्रचार की दृष्टि से यदि ग्लेडकोफ कौटुम्बिक जीवन के उन्मूलन का चित्र अपने उपन्यास में खींचने का प्रयास करता तो कदाचित् वह बहुतों की दृष्टि में भर्त्सना का पात्र न होता। परन्तु ग्लेड़कोफ ने अपने को इस वाद-विवाद की शृंखला में जकड़ने नहीं दिया। उसके उपन्यास की नायिका 'दाशा' नामक एक युवती है, जिसकी 'नुरका' नामकी तीन चार वर्ष की पुत्री है। रूस में बच्चों के लिये पर्यंकालय (नर्सरी होम) खोल दिये गये थे। दाशा नुरका को वहाँ भेज देती है, दिनरात क्रान्ति मूलक सामाजिक कार्यों में व्यस्त रहती है और सप्ताह में एक दो बार अपनी नुरका से मिलने वहां चली जाती है। एक बार वह जाती है और देखती है जैसे उसकी बेटी बहुत गम्भीर, वयस प्राप्त बालिका के सदृश व्यवहार कर रही है। उसकी आँखों में एक अस्वाभाविक गाम्भीर्य है। वह उसे गोद में उठा लेती है और उससे पूछती है, 'नुरका' मेरी प्राण, तू क्या चाहती है?' नुरका कहती है, 'अम्मां मुझे कुछ नहीं चाहिये।'—'नहीं, बेटी, तू अवश्य कुछ चाहती है। बता तू क्या चाहती है?' तीन वर्ष की नुरका फिर गम्भीरता पूर्वक कहती है, 'नहीं अम्मां मुझे कुछ नहीं चाहिये।'

उसके इस गम्भीर वाक्य को सुन दाशा का हृदय झकझोर उठता है। वह फिर बड़े प्यार से उससे पूछती हैं, 'नहीं नुरका, तू बता क्या चाहती है?'

तब नुरका अपनी मां के गले में हाथ डाल कर प्रेम से कहती है, 'अम्मां मैं चाहती हूँ तुम्हें और मैं चाहती हूँ अंगूर।

जिस समय मैंने यह वर्णन पढ़ा फिडियोर ग्लेडकोफ के आगे मेरा मस्तक झुक गया। कौटुम्बिक जीवन का उन्मूलन करने के सिद्धान्त को मानते हुये भी ग्लेडकोफ ने निष्पक्ष होकर मानव स्वभाव को यथार्थ रूप में देखने का जोरास्ताहल किया वही साहस सच्चे साहित्य सृष्टा की विभूति है। इसलिये मैं यह कहता हूँ कि साहित्य सृष्टा निष्पक्ष होकर मानव स्वभाव को समझने का प्रयास करें तभी वे ऊंचे साहित्य का निर्माण कर सकेंगे।

साहित्य सृजन में याथातथ्य-ग्राह (Grip of funda-mentals)

[अर्थ]मंत्री श्री राजगोपालाचार्य भारत के अर्थ मंत्री बनाये गये हैं

भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू

की भी आवश्यकता है। जीवन में कुछ तथ्य ऐसे हैं जो शाश्वत हैं। यदि इन शाश्वत तत्वों को साहित्यकार हृदयंगम नहीं कर सकेंगे तो उनके साहित्य में छिछलापन आ जायगा। यह चौथा गुण है जिसे प्रत्येक साहित्य सृष्टा को अपने भीतर प्रतिष्ठित करने का प्रयास करना चाहिये।

पांचवा गुण है कला सौष्ठव। अंगरेजी में जिसे 'टेकनीक' कहते हैं उसे मैंने कला सौष्ठव का नाम दिया है। किस परिस्थिति को किस प्रकार किस सम्भाषण को किन शब्दों में व्यक्त किया जाय इस का ज्ञान साहित्यकार के लिये आवश्यक है। यदि यह सामर्थ्य एक साहित्यकार में नहीं है तो उसका चरित्र चित्रण एवं परिस्थिति निदर्शन अस्वाभाविक हो जायगा।

परिस्थिति सृजन-सामर्थ्य (Power to create situations) भी एक आवश्यक गुण है जो एक साहित्यकार में होना चाहिये। बिना इस सामर्थ्य के हम साहित्य में चमत्कार नहीं ला सकते इसलिये मैं इस गुण को भी साहित्य-सृष्टा का एक आवश्यक गुण मानता हूं।

सातवाँ आवश्यक गुण है व्यापक जीवन-दर्शन-सामर्थ्य (Power of presenting life in varied forms) यदि हम अपने साहित्य को व्यापक स्वरूप देना चाहते हैं तो हमें यह विशेषता भी अपने में लानी पड़ेगी। इसके बिना हम केवल एकांगी होकर रह जायंगे। मैं यह नहीं कहता कि यदि किसी साहित्यकार का चित्रपट बहुत बड़ा और व्यापक नहीं है तो वह सत्साहित्य का सृजन कर ही न सकेगा। छोटे चित्रपट में भी एक कुशल चितेरा जैसे रंग भरेगा और ऐसी रेखाएं उतारेगा जो उस कृति को अमर कृति बना देगी। उदाहरण के लिये रूस के दो दिग्गज ले लीजिये। एक हैं टालस्टाय, दूसरे हैं तुर्गनीव। टालस्टाय का अना करेनिना और तुर्गनीव का लिजा ये दो उपन्यास ले लीजिये। अना में आप टालस्टाय के महान् सामर्थ्य का अवलोकन करेंगे। तत्कालीन रूसी समाजिक जीवन का कदाचित् ही ऐसा कोई अग हो जिसका चित्रण अना में आपको न मिले। अना एक महान् उपन्यास है किन्तु तुर्गनीव की लिजा में जीवन के व्यापक दर्शन नहीं है। एक घटना है—लिजा अपने प्रेम में निराश होती है और अन्त में एक मठ में ब्रह्मचारिणी के रूप में दीक्षित हो जाती है। किन्तु लिजा उपन्यास का एक एक पृष्ठ मानव हृदय की वेदना से और असफलता की आह से परिपूर्ण है। लिजा भी मानव की शाश्वत टोह की प्रतिरूप बन गई है। अतः कुछ आलोचकों का तो यहाँ तक मत है कि जहाँ अना करेनिना एक महान् उपन्यास है वहाँ लिजा निश्चय एक वृहत्तर उपन्यास है। टालस्टाय का चित्रपट विशाल है। तुर्गनीव का चित्रपट तनु है, बहुत छोटा, है परन्तु क्या चित्रपट है कि देखते रहिये और आनन्द विभोर होते रहिये। जहाँ जीवन का व्यापक दर्शन सत्साहित्य सृष्टा में मिलता है वहीं सत्साहित्य सृष्टा में जीवन के एक अंग का दर्शन भी ऐसे उन्नत रूप में मिलता है कि मानव हृदय चिदानन्द का अनुभव करने लगता है।

इन गुणों के अतिरिक्त एक गुण और है जो मेरी सम्मति में प्रत्येक सत्साहित्य सृष्टा में विद्यमान रहता है। वह है समाधि सामर्थ्य (Power of meditation) यदि यह सामर्थ्य नहीं है तो उस साहित्य-सृष्टा की कृति में संश्लेषण का अभाव हो जायगा।

ऊपर मैंने जिन आठ आवश्यक गुणों का विवेचन किया है वे गुण एकाधिक रूप में प्रत्येक सत्साहित्य में आपको विद्यमान मिलेंगे। प्रश्न यह है कि क्या उपर्युक्त गुणों का विकास बिना स्वाध्याय के सम्भव है? इसका उत्तर बड़ा कठिन है। मैं इसका उत्तर 'हाँ' और 'नहीं' दोनों रूप में देना चाहता हूँ। लोकोत्तर साहित्य सृष्टा ऐसे हो सकते हैं जो बिना अध्ययन के, बिना पठन के साहित्य सृजन कर सकें। पर ऐसा बहुत कम होता है। इस श्रेणी में आप हमारे मन्त्र द्रष्टा वैदिक ऋषियों एवं उपनिषद्कारों को रख सकते हैं। स्वाध्याय का अर्थ हम केवल पुस्तकों के पठन-पाठन तक सीमित रखें तो यह कहा जा सकता है कि कदाचित् पुराकाल के महान् साहित्य सृष्टाओं के सम्मुख इस प्रकार की पठन-पाठन सामग्री उपस्थित नहीं थी और फिर भी उन्होंने अमर साहित्य का निर्माण किया। किन्तु यदि स्वाध्याय के अर्थ को हम मनन, चिन्तन एवं निदिध्यासन के रूप में ग्रहण करें तो हमें यह कहने पर वाध्य होना पड़ेगा कि बिना स्वाध्याय के सत्साहित्य का सृजन असम्भव है। मेरी सम्मति में तो प्रमाणिक मार्गदर्शक यही सिद्धान्त है कि सत्साहित्य के सृजन के लिये स्वाध्याय नितान्त आवश्यक है। हमारे नवयुवक साहित्य सृष्टाओं को सदा यह तत्व अपने सम्मुख रखना चाहिये।

मुजफ़्फ़रपुर में सुहृदसंघ के तत्वाधान में सर्वोदय साहित्य परिषद् समारोह आज स्थानीय टाउनहाल में बड़े धूम-धाम से मनाया गया। पंडाल भवन खचाखच भरा हुआ था। स्थानाभाव में हजारों व्यक्ति लाउड स्पीकर के जरिये भाषण सुन रहे थे। परिषद का उद्‌घाटन बिहार सरकार के अर्थमंत्री माननीय डाक्टर अनुग्रह नारायण सिंह ने किया और परिषद् श्री जगन्नाथ प्रसाद मिश्र, प्रोफेसर मिथिला कालेज दरभंगा की अध्यक्षता में मनाया गया। श्री सीताराम हरि दांडेकर के द्वारा स्वागतगान के बाद श्री सत्येन्द्र सहाय वर्मा द्वारा प्रस्ताव एवं श्री रमण द्वारा अनुमोदन होने के बाद करतलि ध्वनियों के बीच सभापति ने आसन ग्रहण किया। स्वागत समिति के अध्यक्ष श्री महेश प्रसाद सिंह एम० एल० ए० ने अपने संक्षेप एवं सारगर्भित भाषण द्वारा आगत सज्जनों का स्वागत किया। बिहार सरकार के अर्थ सचिव माननीय डा० अनुग्रह नारायण सिंह ने परिषद् का उद्‌घाटन करते हुए अपने भाषण में सर्वोदय समाज के उद्‌गम में इसके उद्देश्य पर प्रकाश डाला। और संघ द्वारा सेवाओं की प्रशंसा की। सर्वोदय साहित्य परिषद के अध्यक्ष श्री शशिरंजन प्रसाद ने अपने लिखित भाषण में परिषद के स्थापना तथा उद्देश्य को बताते हुए यह कहा कि मानव कल्याण ही सर्वोदय साहित्य द्वारा संघ का उद्देश्य है। परिषद के मंत्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल ने प्रसिद्ध साहित्यिकों के संवाद सुनाये जिन्होंने आने से विवशता प्रकट की थी और समारोह की सफलता की कामना। उनमें से निम्नलिखित सज्जनों के नाम उल्लेखनीय हैं—सर्वश्री हजारी प्रसाद द्विवेदी, जैनेन्द्रकुमार, रामकुमार वर्मा, कविवर बच्चन, लक्ष्मीनारायण सिंह सुधांशु, एम० एल० ए०, कविवर दिनकर, छविनाथ पांडेय, पंडित देवव्रत शास्त्री, आदि। नगर कांग्रेस कमेटी के सभापति श्री ब्रजबिहारी प्रसाद ने अपने भाषण में संघ की इस योजना की प्रशंसा की और इस कोलाहल के युग में सर्वोदय साहित्य परिषद की स्थापना की आवश्यकता प्रकट की।

परिषद के सभापति प्रो० मिश्र जी ने लगभग आध घंटे तक भाषण करते हुए सर्वोदय समाज एवं सर्वोदय साहित्य के विविध अंगों पर प्रकाश डाला। श्रोता मंत्रमुग्ध होकर उनका भाषण सुन रहे थे। आगे चलकर आपने संघ के द्वारा की गयी साहित्य की सेवाओं की बहुत प्रशंसा की और सर्वोदय साहित्य की परिषद् की भविष्य की बहुत इच्छा प्रकट की। तत्पश्चात् कतिपय विख्यात कवियों का कविता-पाठ हुआ जिसमें निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं—सर्वश्री जानकी वल्लभ शास्त्री, रमण, किशोर, उदय, किरण और ध्रुव। सभापति द्वारा उपस्थित किये जाने पर सुप्रसिद्ध विद्वान एवं पत्रकार श्री भवानी दयाल संन्यासी तथा संघ के चित्रकार देवव्रत के असामयिक मृत्यु पर शोक प्रस्ताव पास किया गया।

—संवाददाता।
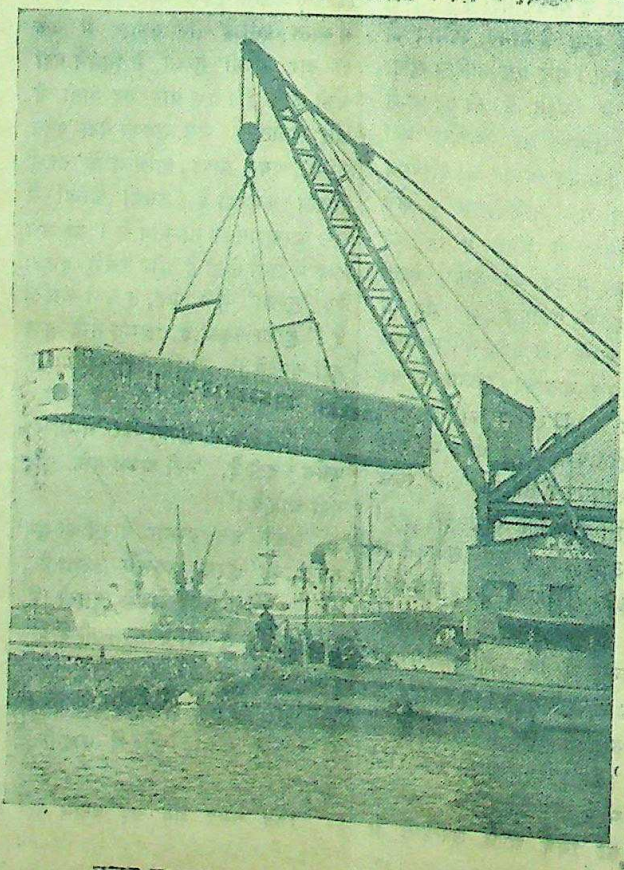
लन्दन का नया बन्दरगाह जिसका निर्माण अभी हुआ है।

भारत-पाकिस्तान समझौता

...नों राष्ट्र आज इतिहास के चौराहे पर खड़े हैं

लेखक—माननीय श्री चन्द्रभान गुप्त
(रसद मंत्री उत्तर प्रदेश)

...रत पाकिस्तान समझौता क्यों हुआ ? इस समझौते का महत्व क्या है ? क्या ...द्भावना से वास्तव में भारत-पाकिस्तान के बीच सद्भावना स्थापित होगी ? ...ेख में माननीय गुप्त जी ने समझौते का महत्व बतलाया है। लेख पठनीय, ...क और सुन्दर है।

...त ढाई वर्षों में भारत और पाकि... के बढ़ते हुये प्रारम्भिक वैमनस्य ...करने के लिये कई बार सतत् ...विफल प्रयत्न किये गये हैं। कई ... और राजनीतिक समझौते ...ये, किन्तु वे भी अधिक दिनों तक ...सके और हर समझौते के बाद ...नाओं का एक श्रोत सा उमड़ ...स वर्ष मार्च में तो स्थिति अत्यत ...हो गई थी। क्रियाओं और ...क्रियाओं के उस भयंकर बवंडर में ... और विवेकशील व्यक्तियों का ...डगमगाने लगा था और चारों ...तरफ़ ही अंधकार छा गया था। ... सार्वजनिक जीवन निष्प्राण ... था। एक बार तो इस अंध ... प्रेम और सद्भावना का वह ...विलीन होने लगा था, जिस पर ... सैनिक की भांति हम पिछले ...ों से चलते आ रहे हैं। किन्तु ...समय मार्ग पर प्रकाश की एक ...ी फुहार पड़ी। हमारी खोई हुई ... और सद्भावना वापस लौट ... ८ अप्रैल का नेहरू-लियाकत ...ता हमारे लिये एक नई आशा ...विश्वास की ज्योति लेकर आया। ...अग्नि की ओर तेजी से बढ़ रहे थे, ...इस समझौते के बाद स्थिर, पर ...पगों से पीछे लौट पड़े।

...समझौते पर दोनों प्रधान मंत्रियों ...ताक्षर हुये आज एक मास और चार दिन पूरे हो रहे हैं। इन ३४ दिनों में हमने प्रत्येक दिवस उत्सुक और कंपित हृदयों से समाचारों की प्रतीक्षा की है और अब यह अनुभव करके हम प्रफुल्लित हो उठते हैं कि इस थोड़े से समय में ही वातावरण में एक अनोखा परिवर्तन आ गया है। समाचार पत्रों का रुख पूर्णतया बदल गया है। यहां तक कि पाकिस्तान के वे अखबार जो भारत के प्रति निरतर विष वमन करते रहे हैं, एकाएक मैत्री और भ्रातृ भाव के स्तर में बोलने लगे हैं। इस समय पाकिस्तानी समाचार-पत्रों का एक प्रतिनिधि मंडल भारत आया हुआ है और कुछ भारतीय पत्र प्रतिनिधि स्थिति का अध्ययन करने पाकिस्तान गये हुये हैं। इससे दोनों देशों के पत्रकारों में वैयक्तिक मैत्री भाव स्थापित होने और उन्हें एक दूसरे का दृष्टिकोण समझने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है। श्री लियाकत अली का भारत आना और पं० नेहरू का कराची में पाकिस्तानी जनता और समाचार-पत्रों द्वारा हृदयग्राही स्वागत एक नई दिशा की ओर इंगित करते हैं। इस बीच में दोनों देशों के आर्थिक सम्बन्धों में भी काफी सुधार हुआ है। आशा है इस मैत्रीपूर्ण वातावरण में पंजाब की नहरों के पानी और बिजली की समस्या तथा पाकिस्तानी रुपये का अवमूल्यन न होने के कारण उत्पन्न हुई कठिनाइयों का भी कोई न कोई हल शीघ्र ही निकल आयगा। दोनों सरकारों के प्रधान मंत्रियों तथा विभिन्न अन्य मंत्रियों और अधिकारियों के सम्मेलनों ने आपसी तनातनी को कम करने में बड़ी सहायता प्रदान की है। अब दोनों देशों के अल्पसंख्यकों में एक नये विश्वास की भावना जाग्रत होती जा रही है। निष्क्रमणार्थियों की संख्या में काफी कमी हो गई है और कुछ लोग अपने घरों को वापस भी लौटने लगे हैं। उत्तर प्रदेश से पाकिस्तान जाने वालों की संख्या अब बहुत ही कम हो गई है। शाहजहांपुर आदि कुछ जिलों में जो मुसलमान गांवों से भागकर शहरों में आगये थे, उनमें से अधिकांश अब गांवों में लौट कर वहां के सार्वजनिक जीवन में फिर घुल मिल गये हैं। जो समाचार-पत्र तथा देशवासी पुराने कटु अनुभवों को स्मरण करके नेहरू-लियाकत समझौते को केवल एक कागज का टुकड़ा मात्र समझ कर इस पर बारम्बार प्रहार करते थे, उनके रुख में भी अब स्पष्टतः कुछ नर्मी दिखाई पड़ने लगी है। किन्तु उस विश्वास पूर्ण वातावरण में कुछ शंकायें भी उठाई जा रही हैं। प्रमुख शंका यह है कि निष्क्रमणार्थियों का आना अभी पूर्णतया रुका नहीं है तथा पाकिस्तान से भारत आने वाले लोगों की संख्या अब भी अपेक्षाकृत अधिक है। इस प्रकार की शंका करने वाले प्रायः यह भूल जाते हैं कि वर्षों की दुर्भावनाओं और दुखद घटनाओं ने अल्प संख्यकों के विश्वास की जड़ें हिला दी थीं। उन्हें एक बार फिर जमीन पकड़ने में कुछ समय तो लगेगा ही। समझौते की सफलता का मुख्य लक्षण तो यही है कि समझौता होने के पश्चात दोनों देशों में साम्प्रदायिक दंगों की भीषण आग ठंढी पड़ गई है। अब केवल यदा-कदा छुट-पुट दुर्घटनाओं के ही समाचार सुन पड़ते हैं। आशा है वर्तमान मधुर वातावरण में यह कटुता भी अधिक दिनों तक न टिक सकेगी।

समझौते के बाद से अब तक हम सब ने मिलकर स्थिति को सुधारने का अधिक प्रयत्न किया है और उसका फल हमारे सम्मुख है। किन्तु केवल इतने से ही हमारी जिम्मेदारी समाप्त नहीं हो जाती। हम पारस्परिक मैत्री और सद्भावनाओं की एक ऐसी सुदृढ़ इमारत बनाना चाहते हैं जिसमें करोड़ों नर-नारी राहत की सांस ले सकें। इस इमारत की नींव रखी जा चुकी है और अब हम सबको मिल जुल कर इसके ऊपरी भाग का निर्माण करना है। भावी सफलता के लिये हमें यह भली भांति समझ लेना चाहिये कि जिस मार्ग का हम अनुगमन कर रहे हैं वह कोरी भावुकता और आदर्शवादिता का मार्ग नहीं है। गांधीवादी आदर्श निरा आदर्श ही नहीं है, बल्कि वह यथार्थ को भी अपने में पूर्णतः समेटे हुये है। वर्तमान परिस्थितियों को यथार्थवादी दृष्टिकोण से परखने पर भी यही मार्ग सर्वोत्तम जान पड़ेगा। कुछ लोगों का विचार है कि भारत और पाकिस्तान की समस्या किसी समझौते से नहीं बल्कि केवल युद्ध से ही हल की जा सकती है। पीड़ित, दलित और अपमानित मानवता में प्रतिहिंसा की अग्नि प्रज्वलित हो उठना स्वाभाविक ही है, किन्तु क्या कभी आपने यह भी सोचा है कि यह मार्ग कितना दुर्गम, कितना बीहड़ और कितना भयावह है। युद्ध के नारे लगाना सरल है पर युद्ध छेड़ना और उसका प्रतिफल भुगतना कोई मजाक नहीं। गत विश्व युद्ध के समय यद्यपि भारत-भूमि पर कोई युद्ध नहीं हुआ था, किन्तु फिर भी उससे अप्रत्यक्ष

(शेष पृष्ठ १२ पर)

भारत के प्रधान मंत्री पंडित नेहरू बरमा के प्रधान मंत्री के साथ वार्ता कर रहे हैं।

...श्चिमी बंगाल के गवर्नर माननीय डाक्टर कैलाशनाथ काटजू।

कांग्रेस के वर्तमान सभापति डाक्टर पट्टाभि सीतारमैया।

स्वर्गीय स्वामी भवानीदयाल सन्यासी

प्रवासी भारतीयों के राष्ट्रवादी लोकप्रिय नेता

लेखक, श्री उमाशंकर

प्रवासी भारतीयों के हितैषी तथा नेता स्वामी भवानी दयाल सन्यासी का पिछले दिनो देहावसान हो गया। स्वामी जी ने अपने जीवन का अधिकांश समय प्रवासी भारतीयों की सेवा में लगाया था। इस लेख में स्वामी जी के जोवन पर संक्षिप्त प्रकाश डाला गया है, जो पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

'जब तेरी डोली उठा ली जायेगी,
बे महूरत उठा ली जायेगी।"

अबतक कवि की ये पंक्तियाँ गाने की हीं लाइनें थी, जिन्हें हम सदैव गाया करते थे, पर आज इनकी मर्मज्ञता का यथोचित ज्ञान हुआ, जब हम ने सुना कि बगैर मुहूर्त ही स्वामी जी को डोली में बिठा कर लोगों ने उन्हें ससार से सर्वदा के लिए बिदा कर दिया। स्वामी जी की मृत्यु के साथ साथ इन पंक्तियों का रहस्यो-द्घाटन जा हुआ है, उस से हम संसार की ओर ही विरक्ति का अनुभव करते है।

जीवन परिचय

आज इस छोटे निबन्ध के द्वारा हम पाठकों का स्वर्गीय स्वामी भवानी दयाल सन्यासी के जीवन के कुछ परिचय करा देना चाहते है। आप बिहार प्रान्त के शाहाबाद जिले में ससराम सब डीवीजन के अन्दर बहुआरा एक गांव के रहने वाले थे, पर जन्म पाया था दक्षिण अफ्रीका के सुप्रसिद्ध और सर्वश्रेष्ट नगर जोहंसवर्ग में। आप का जन्म १० वीं सितम्बर, १८९२ ई० में हुआ था और १९०४ में पहले पहले भारत का आपने देखा था।

आपकी शिक्षा जोहंसवर्ग के सेन्ट सिप्रियन और वेस्लन मेथाडिस्ट स्कूल में हुई। कहा जाता है कि आप की शिक्षा कई स्कूलों में हुई, पर आप का पढ़ाई का कोई प्रमाणपत्र नहीं प्राप्त हुआ। अपनी स्वाध्याय के कारण आपने अपने को जीवन भर प्रगति के पथ पर अग्रसर किया।

आप की शिक्षा विदेश में हुई थी, फिर भी आप के हृदय में हिन्दी का बीज जन्म से ही अकुंरित था। घर में माता पिता हिन्दी में बातें करते थे, और इस कारण हिन्दी में बातें करने की आदत उनमें पड़ गई थी। साथ ही साथ आपने पं० आत्माराम जी गुजराती की पाठशाला में हिन्दी की शिक्षा भी प्राप्त कर ली थी। पर हिन्दी की शिक्षा आपकी भारत में आने के बाद से ही समुचित रूप से आरंभ हुई।

भारत आगमन

स्वामी जी सन् १९०४ में भारत में आये। आप के आने के एक ही वर्ष के बाद सन् १९०५ में वंग-भंग आन्दालन का सूत्रपात हुआ, यह सत्य है कि आपने उस आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग नहीं लिया, पर एक राष्ट्रीय वाचनालय खोल कर देहातों में आन्दोलन के अनुकूल का वायुमंडल तैयार कर था।

इतिहास इस बात की साक्षी है कि बंग-भंग आन्दोलन के बाद देशभक्त विभिन्न क्षेत्र में बट गये। कुछ विधानवादी हुए, कुछ समाज सुधारक और कुछ आतंकवादी। आप समाज सुधारक बने और सन् १९०६ में आप आर्यसमाजी बन गये। आपने अपने ग्राम बहुआरा में एक आर्य समाज की स्थापना की तथा उसके अन्तर्गत एक वैदिन पाठशाला भी संचालित किया। गाँवों गाँवों में घूम कर, आप आर्य समाज पर भाषण देते फिरे। दो ही वर्षो के अन्द आप का ध्यान बिहार के प्रमुख आर्य समाजियों में हो गया और आप सन् १९११ में बिहार की आर्य प्रतिनिधि सभा के अनैतनिक उपदेशक बनाये गये।

सन् १९०४ में आप भारत में आये थे और सन् १९१२ में वापस लौट गये। भारत में ८ वर्षों तक आप रहे। ये ८ वर्ष आपको मान प्रतिष्ठा के लिए बहुत ही गौरवपूर्ण रहे हैं। परपारिवारिक जीवन आपका सुखद नहीं था। आपकी माता जी का देहान्त तो सन् १८९९ में ही हो चुका था और आपने सन् १९-११ में अपने पिता जी को भी खो दिया। पिता का खोने का तो दुःख था ही, आपकी विधवा विमता ने पिता जी का देहान्त होने पर सम्पति के बंटवारे के लिए एक गृहकलह उठा खड़ा किया। आप को इससे बहुत दुःख हुआ। आपने केवल अपने निर्वाह के लिए थोड़ी सम्मति रखकर बाकी विमाता को सौंप दी। पारिवारिक जीवन में आप को शान्ति मिली थी, तो केवल अपनी पत्नी द्वारा आज जी चलकर उनके जीवन में एक बहुत बड़ी सहायिका हुई आपकी पत्नी का नाम श्रीमती जगरानी देवी था।

ट्रांसवाल से वापस

भारत से ट्रांसवाल में वापस आने में

(शेष पृष्ठ १२ पर)
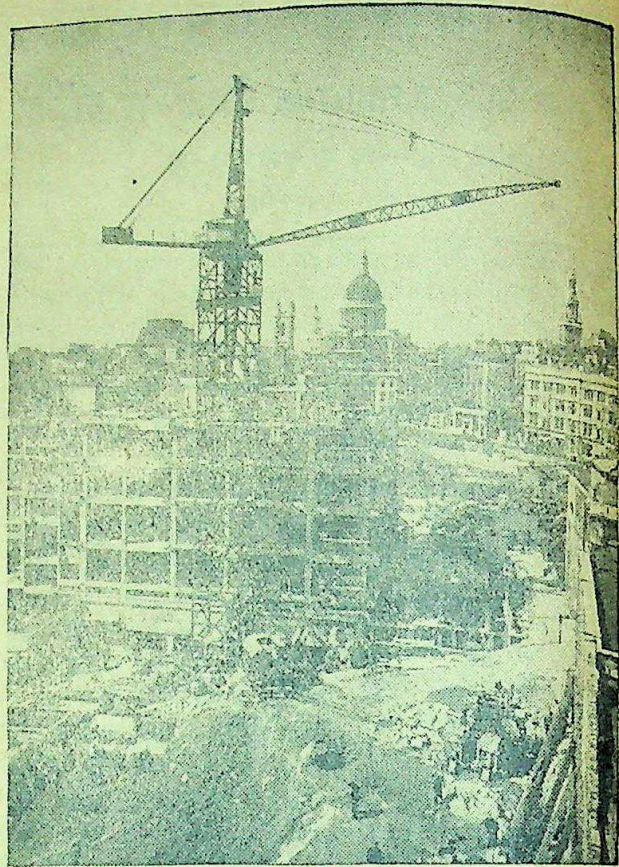
लंदन में गत महायुद्ध के बाद बननेवाली सबसे बड़ी इमारत।

इगलैण्ड के रायल कालेज में ब्रिटिश साम्राज्य की साम्राज्ञी को आनरेरी डिगरी दी जा रही है।

इंगलैण्ड के सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञ हेराल्ड लास्की।

स्वास्थ्य और व्यायाम

अफीम

अफीम की उत्पत्ति

लेखक, श्री चन्द्रमोहन विद्यार्थी

एक बार एक जंगल में एक साधू छोटी सी कुटिया में गंगा नदी के सुख से ईश्वर का भजन करता। उसकी कुटिया में एक चूहा भी था।

साधू का स्वभाव मोम की भाँति था; उन्होंने उस चूहे की मनुष्यों भाँति बोलने की शक्ति दे रखी थी वह आदमियों की भाँति बोल था।

एक दिन जब साधू रात्रि के समय कर रहा था, चूहा आया और हाथ जोड़ कर बड़े नम्र भाव से बोला—

"आप की कृपा से मैं आदमियों की लेता हूँ परन्तु मैं आपसे एक और मांगना चाहता हूँ"।

'मांगो'

--- "जब आप दिन में नहीं में जाते हैं तब एक बिल्ली आती मुझे डराती है वह एक न एक मुझे खा जावेगी इसलिये आप मुझे एक बिल्ली के रूप में परिणित कीजिए"। साधू ने अपने कमंडल ले निकाला और उसके ऊपर छिड़क उसी समय चूहा बिल्ली बन गया।

एक दिन साधू ने बिल्ली से पूछा— तुम्हारी यह अवस्था पसन्द है या नहीं।

बिल्ली---"ज्यादा नहीं" क्योंकि जंगली कुत्ते आते हैं और भौंकने लगते हैं। जिससे मुझे बड़ा डर लगता है।

साधूने कहा---"जाओ तुम कुत्ता बन जाओ" बिल्ली तुरन्त कुत्ता बन गई।

कुछ दिनों पश्चात् कुत्ते ने साधू से कहा "मैं इतना बड़ा जानवर हूँ मेरा पेट आपके बचे हुये भोजन से नहीं भरता मुझे इन बंदरों केप्रति डाह है, जो कि पके पके फल खाया करते हैं। आप मुझे बंदर बना दीजिये। साधू ने उसे बंदर ही बना दिया।

कुछ दिनों तक तो बंदर बहुत खुश प्रतीत होता रहा परन्तु ज्योंही गर्मी आई और नदी नाले पोखरे सूख गये तब वह साधू के पास आया और बोला----"मेरा अब पेट तो भरा रहता है परन्तु पानी के अभाव से सभी बेकार है। मैं इस समय प्यासों मर रहा हूँ आप मुझे जंगली सुअर बना दीजिये, जिससे मैं भी उन्हीं की तरह अपना शरीर पानी में भिगोये रखूँ"।

साधू ने अपने साथी की बात को मान लिया और उसे सुअर बना दिया।

सुअर सारा दिन पानी में ही बैठा रहा था, और खेला करता था, परन्तु एक दिन वह बलवान बच गया जब कि एक राजा एक हाथी पर चढ़े शिकार के लिये जा रहे थे। वह दौड़ता हुआ साधू के पास आया और उसने सारा हाल बताया और अपने को हाथी रूप में बन जाने का वर मांगा।

साधू ने उसे हाथी ही बना दिया।

हाथी एक दिन जंगल में घूम रहा था वहीं पर एक राजा ने शिकार के लिये घूम रहा था, उसने अपने सिपाहियों को आज्ञा दी कि इस हाथी कोपकड़ लो और इसे स्तबल में ले चलो।

हाथी बड़ी ही आसानी से पकड़

योरोपियन आर्थिक सहयोग समिति के नये सभापति डा० डी० यू० स्ट्रिकर

लिया गया और राज स्तबल को ले जाया गया।

एक दिन राजा और रानी ने गंगा स्नान का विचार किया और उसी ही नये हाथी बुलाया और उसी पर बैठकर गंगा स्नान के लिये चले।

हाथी बड़ी खुशी के साथ राज दरबार में आया परन्तु ज्योंही रानी हाथी पर चढ़ी त्योंही उसने अपनी बेइज्जती समझी और बड़ी जोर से कूद पड़ा जिस से रानी हौदा समेत नीचे आगई। राजा तुरन्त रानी के कपड़ों की मिट्टी को अपने ही हाथों से पोछने लगा और उसे चूमने लगा।

हाथी ने यह सब देखा और मन में सोचा कि दुनियाँ में रानी ही सबसे प्रिय वस्तु है इससे अब मैं साधू के पास जाऊँ और उनसे मुझे स्त्री बना देने का वर मागूँ।

यह विचार कर हाथी तेजी से जगंल पार करता हुआ साधू की कुटिया में गया। और बड़े आदर सहित साधू की दण्डवत की और सब कहानी साधू को सुनाई, और रानी बनने का वर मांगा। साधू ने कहा—"मैं तुम्हें रानी बना दूँगा तब मैं तुम्हारे लिये एक राजकुमार और राज्य कहाँ से लाऊँ "मैं तुम्हें एक सुन्दर लड़की बना सकता हूँ और तुममें यह गुण दे सकता हूँ कि जब कभी तुम किसी राजकुमार से मिलो तो तुम उसे अपने वश में कर सको"।

हाथी ने साधू की बात का समर्थन किया---साधू ने उसे एक सुन्दर लड़की बना दिया और उसका नाम 'पोस्टोमनी' रखा।

एक दिन जब पोस्टोमनी कुटिया के दरवाजे बैठी थी, और साधू नदी में पूजा करने गया था, उसे एक नवयुवक राजसी भेश में घोड़े पर सवार उस कुटिया की ओर आते हुये दिखाई पड़ा।

सवार—"मैं बहुत प्यासा हूँ, मुझे पानी दीजिये"।

लड़की बोली — "आइये और विश्राम कीजिये मैं आप को पानी पीने को दूँगी"।

लड़की ने उसे पानी पिलाया, और दोनों में बातें होती रहीं—और द न एक दूसरे को चाहने लगे। जब साधू वापस आया तब यह देख कर उसने पोस्टोमनी की शादी उसी के साथ कर दी। वह आदमी राजा था, वह उसे अपने महलों को ले गया।

कुछ दिनों पश्चात् पोस्टोमनी एक कुएं में गिर कर मर गई। राजा बहुत ही दुखी हुआ और उसे निकलवा कर क्रिया कर्म किया।

पोस्टोमनी के शरीर के शेष भाग से एक पेड़ निकला। उस पेड़ में अफीम फलती है। जोकि नशा के काम आती है।

जो लोग अफीम को खाते या पीते हैं उनमें—चूहे की भांति शैतान, बिल्ली की भांति दूध प्रेमी, सुवर की भांति जगंली, और रानी की भांति रहन सहन में, यह गुण पाये जाते हैं।

क्योंकि पोस्टोमनी, चूहा से बिल्ली बना, सुअर हाथी और फिर रानी में बदली गई थी।

संवाद पहुँचाने के लिये एक नई मशीन का आविष्कार किया गया है। हवाई जहाज में ट्रांसमीटर से सम्वाद भेजने का काम हो रहा है।

(शेष पृष्ठ १२ के आगे)

आप को बहुत कठिनाइयों का सामना करनापड़ा। जब आप अपनी पत्नी श्रीमती जगरानी देवी तथा अपने अनुज श्री देवी दयाल जी के सास डरबन में पहुँचे आपको आदेश दिया गया कि आप भारत लौट जायं ! आपकी डरबन शहर में जहाज से उतरने भी नहीं दिया गया महात्मा गांधी, जो उन दिनों अफ्रिका में थे, उनके परामर्श से पोलक साहब ने सुप्रीम कोर्ट में फरियाद की और कोर्ट ने चौदह दिनों के अन्दर प्रवासाधिकार सिद्ध करने का अवसर दिया। पर वे इतने कम दिन में उसे प्रमाणित नहीं कर सके। अतएव, डरबन से ट्रांसवाल में पहुँचे। पर याद रहे कि ट्रांसवाल कीसीमा पर फिर आप गिरफतार हुए और आप पर प्रिटोरिया की अदालत में मामला चला, पर पोलक साहब की चेष्टा के बाद आपकी मुक्ति हुई।

सत्याग्रह संग्राम में सक्रिय भाग

बंग-भंग आन्दोलन ने आपके हृदय में जागरण का स्वर भर दिया था भारत से वापस आने के समय आप पर जो भी कांड हुए, उनसे आप और भी उतेजित हुए। महात्मा गान्धी की उपस्थिति ने देश में जागृति का सुप्रभात आरंभ किया था। स्वामी जी की प्रेरणा से जर्मिस्टन नगर में नवयुवकों ने इंडियन बंग-भंग एसाशियेशन नामक एक संस्था स्थापित किया। आप ही इस संस्था के अध्यक्ष बनाये गये। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य था प्रवासी भारतीय का उत्थान करना।

सन् १९१३ में महात्मा गान्धो ने जब भारतीयश्रमजीवियों पर लगे हुए तीन पौंड सालाना टेक्स को रद कराने के लिए सत्याग्रह आरंभ किया तब आप भी अपनी पत्नी के साथ उसमें योग दान दिया। आप को अपने परिवार के साथ कठोर करादन्ड मिला। आपका का तीन मास का बच्चा भी कैद किया गया।

सम्पादक कार्य

सत्याग्रह की समाप्ति पर आप महात्मा गान्धी के पत्र इंडियन ओपीनियन के हिन्दी विभाग के सम्पादक बनाये गये, इसके पूर्व सन् १९११ में जब आप भारत थे तब वे पटने से निकलनेवाले आर्यावर्त नामक मासिक पत्र के सहकारी सम्पादक के रूप में रह चुके थे। गान्धी जी के भारत चले आने पर, आप का इंडियन ओपीनियन से सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

पर आपको एक सुसम्पादित पत्र का अभाव सदैव खलता रहा। आपने अपनी पत्नी के नाम पर जगरानी प्रेस डरबन के निकट जेकन्स नामक स्थान पर खोला और उसी प्रेस से सन् १९३२ में हिन्दी नामक एक साताहिक पत्र निकाला। हिन्दी की चर्चा करते हुए आचार्य शिव पूजन ने अपने एक निबन्ध में कहा है, "हिन्दी के सम्पादक, व्यवस्थापक, अध्यक्ष तथा सब कुछ आप ही थे। आपकी सम्पादन शैली में आपकी साहित्यिक प्रवृत्ति एवं मनोवृत्ति का स्पष्ट छाप है।" इसके अतिरिक्त अफ्रिका से आपने धर्मवीर तथा अजमेर से मरते दिन तक प्रवासी का सम्पादन किया।

कांग्रेस में भाग

यों तो कांग्रेस से आपका सम्बन्ध बहुत ही प्रचीन था। बंग-भंग आंदोलन से ही आप काँग्रेस से प्रभावित थे। पर आपका सक्रिय भाग प्रवासी प्रश्न लेकर काँग्रेस से हुआ। अमृतसर काँग्रेस तथा गया काँग्रेस में आप प्रवासी बन्धुओं के प्रतिनिधि बनकर भाग लिया था। आपकी ही प्रेरणा से काँग्रेस ने प्रवासी बन्धुओं द्वारा विदेशों से संचालित काँग्रेस को स्वीकार किया। उन्हें हर वर्ष १० प्रतिनिधि भेजने की अनुमति दी।

सन् १९४० में जब काँग्रेस ने असहयोग आन्दोलन आरम्भ किया, तब आपने देश के साथ दिया। आप गाँव गाँव घूमकर प्रचार किया तथा लोगों को असहयोग करने के लिये उत्साहित किया जगदीश पुर, डुमराँव तथा बक्सर में भाषण देने के लिए आप पर मुकदमा चला और अढाई वर्ष का कारावास दिया गया। आप जब आरा स्टेशन पर पकड़े गए थे तब आपने शाहाबाद के लोगों को जहाँ के आप रहने वाले थे, यह सन्देश दिया कि—

"भारत की पहली क्रान्ति में, कुंअर अमर ने राखी लाज।
शाहाबाद के वीर सपूतों, हँसी न होने पाये आज ॥"

साहित्य सम्मेलन से सम्बन्ध

आपका सम्बन्ध हिन्दी साहित्य सम्मेलनों से काफी था। विदेशों में भी आप ने कई साहित्यक संस्थाओं की स्थापना की आपने दक्षिण अफ्रिका हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना की। इन सभी संस्थाओं का मुख्य कार्य था हिन्दी का प्रचार करना।

भारत में जब आप आए, तब आप का सम्बन्ध यहाँ के संस्थाओं से भी हो गया। आप सन् १९४० से अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अवसर पर होनेवाले पत्रकार सम्मेलन के अध्यक्ष भी बनाए गए थे। बिहार प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन के दसवाँ अधिवेशन जो देवघर में हुआ था, उसका भी आप ही अध्यक्ष थे। आप भारत के अन्य छोटी छोटी संस्थाओं को सदैव सहयोग दिया करते थे। मृत्यु के कुछ ही दिनों पूर्व आप ने प्रेमचन्द साहित्य परिषद के कार्यों का अभिनन्दन करते हुए मुझे लिखा था— "इस तरह के परिषद् की प्रायः सभी नगरों में आवश्यकता है।"

आपकी क्षति से देश ने एक कर्मठ नेता, एक सफल सम्पादक, एक महान् साहित्यिक, एक आदर्श उपदेशक तथा एक प्रवासी बन्धु को खो दिया है। बिहार को, विशेष कर आपकी मृत्यु से बहुत ही अधिक धक्का लगा है। डाक्टर सिन्हा की मृत्यु ने जो घाव किया था, वह भरा भी नहीं था कि दूसरा घाव लगा। भगवान बिहार को ही नहीं, देश को शक्ति दें तथा स्वामी जी को शान्ति।

—प्रेमचन्द साहित्य परिषद् द्वारा

(शेष पृष्ठ ५ के आगे)

रूप में हमारी सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था को एक ऐसा धक्का लगा है कि हम गत पांच वर्षों में भरसक प्रयत्न करने पर भी अभी तक भली भांति नहीं उभर पाये हैं। भावुकता के क्षणिक आवेश में बह कर अपने हितों को खतरे में डाल देना बुद्धिमत्ता नहीं है।

जब तक हम यह पूर्णतया हृदयंगम नहीं कर लेते कि हमारी साम्प्रादायिक समस्याओं का हल केवल पारस्परिक प्रेम और भ्रातृ भाव में ही निहित है, तब तक हमारे लिये इस मार्ग पर तेजी से सफलता पूर्वक आगे बढ सकना सम्भव नहीं है। इसके साथ यह भी समझ लेना आवश्यक है कि इस प्रकार का वातावरण केवल सरकार देश के मुट्ठी भर नेता नहीं उत्पन्न कर सकते। वे केवल मार्ग निर्देश ही कर सकते हैं, वास्तविक कार्य तो सर्वसाधारण को करना है। जब कभी लड़ाई-झगड़े होते हैं तो वास्तव में जनता ही पिसती है, बड़े लोगों पर तो शायद ही कभी आँच आती हो। अतः जन साधारण को अपने हित को दृष्टि में रखकर एक स्वस्थ वातावरण उत्पन्न करना चाहिये, जिसमें वे सुख और शांति से सांस ले सकें और निर्भय होकर जीवन यापन कर सकें। दुर्भाग्यवश हमारे बीच में ऐसे व्यक्तियों की भी कमी नही है, जो अपने संकुचित राजनीतिक और आर्थिक स्वार्थों के लिये राष्ट्रीय हित को भी बलिदान कर देने में नहीं चूकते। ऐसे लोगों ने समय-समय पर हमारे सार्वजनिक जीवन में विष घोला है। किन्तु अब हम एक ऐसे नाज़ुक स्थान पर आ पहुँचे हैं जहाँ से गलत दिशा की ओर उठाया गया एक कदम भी, हमें गहरे गर्त में ढकेल देगा।

अंत में मैं दो शब्द अपने उन अभागे भाइयों और बहिनों के विषय में कहना चाहता हूँ, जो अपना घर-बार, धन-दौलत और मान-मर्यादा लुटा कर इस देश में आये हैं। उनके घाव अभी हरे हैं। अपने अपमान और जाति के स्मरण करके उनमें क्रोध और उत्तेजना की भावना उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है। लेकिन अपने घावों को स्वयं अपने हाथों ही कुरेद कर ताजा करते रहना उपचार का कोई सही तरीका नहीं है। इस सम्बन्ध में हमें यह भी न भूल जाना चाहिये कि निष्क्रमणार्थियों को केवल व्याख्यानों और उपदेशों से ही सांत्वना नहीं मिल सकती। उन्हें अपने दुख भुला देने में हमें उनकी सहायता—सहायता ही नहीं, बल्कि अपना कुछ बलिदान भी करना होगा। हमें ऐसे प्रयत्न करने होंगे जिनके फल स्वरूप वे या तो अपने पुराने घरों को वापस लौट जांय अथवा यहीं बस कर हमारे सार्वजनिक जीवन में यहीं घुल मिल जांय।

आज भारत और पाकिस्तान देश इतिहास के चौराहे पर खड़े हैं। उनके निवासी कभी प्रेम पूर्वक भाई-भाई की तरह रह चुके हैं। आज भले ही कुछ लोग अपने राजनीतिक और आर्थिक स्वार्थों से वशीभूत होकर भारत और पाकिस्तान को आपस में कट मरने के लिये उत्तेजित करें, किन्तु भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से उनके हित परस्पर इतने गुथे हुये हैं कि उन्हें एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। मिल कर ही वे जीवित रह सकते हैं और अन्य देशों का नेतृत्व कर सकते हैं, अलग होने पर दोनों का विनाश निश्चित है।

पिछले अङ्कों का सारांश

[मोहनलाल, उसका चचेरा भाई तोता और उसकी पत्नी रोनी, साधारण तथा गरीब किसान का जीवन। दो बैल, एक दुधारू भैंस और ...सी खेती। यही उनकी निधि थी। खेत पक गया था। मोहनलाल, तोता तथा रोनी ने खेत की कटाई की और खलियान लग गया। जिन्हें ...का ठिकाना नहीं था, उन्हें आशा हुई कि मड़ाई होने के बाद ही उन्हें दोनों वक्त कम से कम रोटियाँ मिलने लगेंगी और बैलों तथा भैंस को चारा ...कुछ दिनों के लिये हो जायेगा। किन्तु दुर्भाग्य का समय, खलियान में एकाएक जमींदार के सिपाही आ पहुँचे, और जोर-जबरदस्ती करके ...ज के ढेर का तीन हिस्सा बैलगाड़ी पर लाद ले गये। मोहनलाल और रोनी ने दया की प्रार्थना की किन्तु जमींदार के सिपाहियों ने एक न ...। खलियान में अनाज के ढेर का केवल चौथाई भाग वह छोड़ गये। मोहनलाल और रोनी का हृदय भावी चिंता से व्याकुल हो उ... फिर.........]

गतांक के आगे

...सेना के नायक ने हसन खाँ
...हर फिर रोकथाम की। उसने
...वह मन ही मन उनको
...वाले करके अपने स्थान को

...खाँ के अधीर साथियों ने
...हा 'बिलकुल बुजदिल है।'
...लों में पड़ा पड़ा खुद गल रहा है
...गोंको भी गलाना चाहता है।'
...यह बादशाह सलामत के पास
...कर हमलोगों को लौट पड़ने का
...जवाने की कोशिश करेगा।'
...पड़ो और बादशाह सलामत
...ह की कलगी लगाकर लौटो।'
...दो धावा।'
...भी दुश्मन बचकर न जाने
...भी पुकारें एक साथ लगीं।
...खां और उसके आठ हजार
...राव के पड़ाव की दिशा में
...

...काफी चढ़ चुका था। इन सवारों
...भड़क और बढ़िया घोड़ों की
...चमक घोड़ों की तीखी आभा
...उड़ती हुई धूल में बिजली की
...चमक चमक जा रही थी।
...ह ने एक बुर्ज पर से इस
...देखा और हसन खां और उस
...ो महल छोड़कर बाहर निकल
...काल क्षमा कर दिया।
...एक दरबारी से बोला, 'क्या
...है हसन खाँ! चाहता था
...आगे मैं होता और बाजी-
...को मजा चखाता।'
... ने नम्रता पूर्वक प्रतिवाद
...पनाह तो सिर्फ इशारा करते
... हसन खां सिर दे देने को

...शाह ने खुशामद को पीलिया
...ली है हो।'

क्रमश:

उत्तर प्रदेश में प्रशासकीय पुनस्संगठन

अधिक से अधिक उपयोगी बनाने के क्या उपाय है ?

(लेखक) श्री. पी. ए. गोपाल कृष्णन, आर. सी. एस.

उत्तर-प्रवेश की सरकार ने प्रशासकीय व्यवस्था की कार्यकुशलता को अक्षुण्य बनाये रखकर उस पर होने वाले खर्च को कम करने के हेतुपुनसंगठन के जो उपाय ग्रहण किये है उनके संबंध में इस राज्य के फाइनेंस कमिश्नर श्री गोपाल कृष्णन द्वारा आल इंडिया रेडियो के लखनऊ स्टेशन से प्रसारित की गई यह द्वितीय वार्ता है :

मैंने अपने एक लेख में प्रशासकीय पुनस्संगठन के सामान्य सिद्धान्तों का वर्णन किया था जिनका आधार कार्य-कुशलता कायम रखते हुए खर्च घटाना है। प्रशासकीय व्यवस्था के ढाचे में परिवर्तन करना तथा भारी कार्यभार कर पुनर्वितरण इस पुनस्संगठन के मुख्य उद्देश्य हैं, जिनकी सब दृष्टियों से भली भांति समीक्षा होनी चाहिये। उत्तर प्रदेशीय सरकार के सामने इस संबंध में अपनी कतिपय रिपोर्ट प्रस्तुत कर चुका हूँ जिनमें विशिष्ट सिफारिशें की गई हैं। एक ही वस्तु पर व्यय की पुनरावृत्ति को रोकना, प्रशासकीय व्यवस्था के अनावश्यक अथवा कम आवश्यक अंगों को घटना अपव्यय की प्रवृत्ति का निराकरण, वित्तीय नियंत्रण सुदृढ़ करना और सुनियोजित आधार पर विभिन्न विभागों को रुपया देने के लिए नियमित प्रबन्ध करने के सभी सम्भव उपाय किये गये है। चालू वर्ष में आय में भारी कमी के लक्षण होते हुए भी इन उपायों के कारण सरकार अपने बजट को संतुलित कर सकी। यही नहीं उसने प्रशासकीय पुनसंगठन के लिए इन उपायों के फल-स्वरूप समुचित वातावरण तैयार किया।

एक ही वस्तु पर दोहरा खर्च होने के उदाहरणों में पुराने ग्राम सुधार विभाग का उल्लेख किया जा सकता है जिसका अब अन्त कर दिया गया है। अब से १४—१५ वर्ष पूर्व इस विभाग को जन्म दिया गया था और तब से वह अनेक अवस्थाओं में होकर गुजरा। सन् १९३७ और ३९ के मध्य हम से सख्त का संचार किया गया और उसके कार्यक्रम के लिए मंत्रिमंडल द्वारा बजट में भारी रकम रखी गयी। युद्ध काल में इस विभाग का कलेवर घटा दिया गया किन्तु ग्राम-सुधार योजनाओं को चलाने के लिये कृषि, मेडिकल और शिक्षा जैसे कार्यों के हेतु कुछ सर्विस-अनुदान इसे प्राप्त होते रहे। अतः युद्ध के वर्षों में यह विभाग येनकेन प्रकारेण चलता रहा। लेकिन इस काल में उसने कोई विशेष उपयोगी कार्य नहीं किया। सन् १९४६ में बड़ी संख्या में बहुधंधी सहकारी समितियों का संगठन किया गया और आज देहाती क्षेत्र में समस्त विकास कार्य के लिये वे समितियाँ उत्तरदायी हैं। इस प्रकार ग्राम सुधार विभाग एक व्यर्थ विभाग बन गया और उसका अन्त कर दिया गया। इस विभाग में जो योग्य एवं कुशल कर्मचारी थे उन्हें सहकारी विभाग में खपा लिया गया। ग्राम सुधार कर्मचारियों के लिये जो अलग सर्विस-अनुदान निर्धारित किये जाते थे उन्हें यथासंभव मुख्य अनुदानों के साथ मिला दिया गया और इस समन्वय द्वारा व्यय कम किया जा सका। इन उपायों से सरकार ने लगभग २२ लाख रुपये सालाना की बचत की।

चोरी से माल लाने ले जाने वाले अथवा चोर बाजार के व्यापारियों के विरुद्ध कार्रवाई करने के लिये पुलिस विभाग के अन्तर्गत एक विशेष शाखा बनायी गयी थी। इस विशेष शाखा की आवश्यकता उस समय तक थी जब तक कि नियमित पुलिस विभाग शान्ति व्यवस्था स्थापित करने की समस्याओं के कार्य में लगा था। स्थिति सामान्य हो जाने पर यदि इस शाखाको कायम रखा जाय तो इसका अर्थ होता दोहरा खर्च अतएव इस शाखा को तोड़ दिया गया और उसका काम नियमित पुलिस दल के सिपुर्द कर दिया गया। प्रान्तीय आर्म्ड कांस्टेबलेरी के कलेवर को भी इस हद तक घटा दिया गया कि राज्य की वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये वह प्रर्याप्त हो। इन उपायों के बल-स्वरूप पुलिस विभाग के खर्च में १६ लाख रुपये सालाना की बचत की गयी है।

चालू वर्ष में एक और बड़ी बचत की गयी है अर्थात् सार्वजनिक निर्माण कार्यों में मरम्मत और इमारतों की सुरक्षा

की मद में ८५ लाख रुपये की बचत की गयी है। इस संबंध में होनेवाला खर्च ५२ करोड़ रुपये के बचत में से ७.९५ करोड़ रूपये है। यह खर्च विभिन्न मदों में बंटा हुआ है और सबसे अधिक खर्च सिंचाई, सड़को और इमारतों पर होता है। इस दिशा में होने वाले खर्च की वृद्धि के विषय में कई वर्ष तक भली भाँति जांच की गयी और जहां कहीं भी अपव्यय की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर हुई उसे काट दिया गया। इस प्रकार की मरम्मत और रक्षा कार्यों के लिये समुचित व्यय निर्धारण के हेतु अभी जांच जारी है। उदाहरणार्थ, सिंचाई कार्य का रक्षा व्यय इस वजट वर्ष में २.५ करोड़ रुपये है। यह पता चला है कि सन् १६४३-४४ से विभिन्न सर्किलों में यह व्यय न्यूनाधिक रूप से बढ़ा है, यद्यपि मजदूरों और सामग्री पर होने वाले खर्च प्राय: प्रत्येक सर्किल में समान रूपसे बढ़े हैं। द्वितीय और तृतीय सर्किल में खर्चे का प्रतिशत क्रमशः २०.८ से ४६.४ और १३.४ से ४७.५ हो गया है जब कि चौथे और छठे सर्किलों में वृद्धि क्रम शः केवल ३०.४ से ३६.५ और २६.३ से ३६.१ हो गयी हैं। इन अन्तरों के कारणों पर भी जांच हो रही है और यदि खर्च घटाने के समुचित।कारण मिले तो कर दाता के रुपयो में लाखों की बचत की जा सकेगी।

चालू वर्ष के बजट में वचत की सबसे बड़ी मद आमस्मिक खर्चो में की गयी है, अर्थात् इन खर्चों के लिए १९४९-५० के संशोधित बजट में ८.३ करोड़ रूपये की रकम रखी गयी थी जिसे घटा कर चालू वर्ष में ७.२ करोड़ कर दिया गया है। यह खर्च समस्त सर्विस अनुदानों में बंटा हुआ है और बहुत कार्य इसके अन्तर्गत आजाते हैं जैसे कि दफ़्तर के साज सामान और फर्नीचर की खरीद जाड़े गर्मी के मौसमों के खर्च, सरकारी फार्मों पर कृषि के खर्च जिसमें बीज औजार जुताई के खर्च शामिल हैं और दुग्धशालाओं के कारबार का खर्च तथा राजकीय यातपात और कारखानों का खर्च भलीभांति विचार करने के बाद आकस्मिक खर्चें के अन्तर्गत प्रत्येक मद पर दिये जाने वाले रुपये में कमी कर दी गयी हैं। इस प्रकार कुल १ करोड़ रुपये से अधिक की बचत हुई है। अलग अलग मदों के संबंध में विशेष जाँच जारी है।

पूंजी और राजस्व दोनों के निर्धारण के लिये चालू वर्ष के बजट में यथार्थता और नियोजन को विशेषरूप से आधार बनाया गया है। खाद्य को प्राथमिकता दी गयी है। इसके बाद शिक्षा, मेडिकल, जन-स्वास्थ्य तथा अन्य विकास योजनाएं आती हैं। पूंजी बजट में सिंचाई, बाँध, टेयूब वेल को प्रथम स्थान प्राप्त है। इसके बाद हाईडेल प्राजेक्टों और अन्य कारखानों को रखा गया है। जहाँ खर्चें के लिये समुचित योजना बन जाती है वहाँ उसके फलस्वरूप रुपया अनावश्यक कार्यों में नहीं फंसता। जिन जिन वस्तुओं की सबसे अधिक आवश्यकता होती है उन्हीं के उत्पादन और सबसे अधिक महत्व के कार्यों को करने के लिये ही उसका उपयोग किया जाता है। जन-वित्त के सम्बन्ध में सबसे अधिक महत्व की बात बात यही होती है कि सार्वजानिक लाभ के लिये प्राथमिकता के अनुसार रुपया समय पर उपयोग में लाया जाय। सरकार ने इसी बात को निभाने का चालू वर्ष के बजट में प्रयत्न किया है।

वित्तीय नियंत्रण को सुदृढ़ करने के लिये, फाइनेंस और एकाउट अफ़सरों को अधिकांश बड़े बड़े विभागों मे नियुक्त किया गया है और यात्रा भत्तों एवं अन्य मरदों पर होने वाले खर्च की जांच और नियमन के लिये कन्ट्रोलिंग अफसर नियुक्त किये गये हैं।

लाभ हानि के नकशे और अन्य निश्चित अवधि के नकशे सभी व्यावसायिक एवं अर्द्ध व्यावसायिक योजनाओं के हेतु निर्धारित किया गये हैं और तत्सम्बंधी उन्नत प्रकार के एवं विक्रय बजटों के सूत्रपात के लिये जांच हो रही है। विभिन्न प्रशासकीय विभागो के स्टोर्स की खरीद को अत्यन्त सीमित कर दिया गया है और फालतू स्टोर की वस्तुओं को या तो वास्तविक आवश्यकताओं के अनुसार पुनः वितरित किया जा रहा है या बेचा जा रहा है। एक या दो गैर व्यावसायिक सर्विस-डिपार्टमेंटों में व्यावसायिक कार्यकुशलता का पता लगाने और उसे बढ़ाने के निमित आँकड़े एकत्र करने का कार्य आरम्भ किया गया है। यह काम अर्थ एवं सख्या विभाग को सौंपा गया है।

इन उपायों के अतिरिक्त कार्य के गुण और परिमाण के अनुसार रुपये के रूप में पारितोषिक देने की व्यवस्था के विषय में भी कुछ प्रयोग किये जा रहे है। कृषि इंजीनिरिङ्ग विभाग में इस प्रकार के एक प्रयोग का आरम्भ किया गया है। ट्रैक्टरों के आपरेटरों को कतिपय निर्धारित घंटों तक जुताई करनी पड़ती है और तब वे काम की शर्त के अनुसार निश्चित वेतन पाने के योग्य होते हैं। यदि वे निर्धारित स्तर से कुछ प्रतिशत् अधिक कार्य करते हैं तो उन्हें उनके सामान्य एवं काम की शर्त के अनुसार वेतन के अतिरिक्त बोनस मिलेगा। अब तक वे समय के अनुसार बेतन पाते रहते थे और कभी कभी तो ट्रेक्टरों की उपेक्षा करके उनके बिगड़ने की परवाह नहीं करते थे। अब उन्हें यह जो प्रलोभन दिया गया है उससे आशा है वे अधिक काम करेंगे और सरकार को हानि भी कम होगी। फोरमैनों तथा अन्य लोगों जिनके अधिकार में ट्रेक्टर रहते हैं, को भी इसी प्रकार का प्रलोभन दिया गया है जिससे कि वे अधिक संख्या में ट्रेक्टरों को कार्य करने की दशा में कायम रख सकें। यदि यह प्रयोग सफल सिद्ध होता है तो इसी प्रकार के अनुकूल तरीकों का सरकार के अन्य विभागों में भी प्रयोग किया जायगा।

अन्त में यह कह देना आवश्यक है कि सरकार ने सचिवालय के पुनस्संगठन के कतिपय प्रस्तावों को स्वीकार कर लिया है। एक हद तक शक्ति का विकेन्द्रीकरण होगा और वित्तीय अवरोधों को घटाया जायगा। सचिवालय के प्रशासकीय विभाग के कार्यक्षेत्रों की सीमा को घटाया जायगा और विभिन्न प्रशासकीय विभाग द्वारा वजट-नियन्त्रण की व्यवस्था बढ़ायी जायगी। सेक्रेटेरिएट के छोटे अफसरों के प्रशिक्षण के लिये एक योजना स्वीकृत हुई है। इन सब उपायों के कार्यान्वित हो जाने पर १० लाख से लेकर १६ लाख रुपये तक की सेक्रेटेरिएट में बचत होने का अनुमान है और आशा की जाती है कि सरकार के प्रधान कार्यालय की कार्यकुशलता भी इसकेफलस्वरूप बढ़ जायगी।

⊙ ⊙ ⊙

जोधपुर महाराज पर फेडेरल कोर्ट में मुकदमा दायरी जोधपुर। (हवाई डाक से)-अखिल भारतीय राजपूतमहासभा के सभापति ने एक भेट में यह रहस्योद्घाटन किया कि वे शीघ्र ही जोधपुर महाराज श्री हनुवंत सिंह जी के विरुद्ध फेडेरल कोर्ट ऑफ इन्डिया में मुकदमा दायर कर रहे हैं। इसका कारण बताया गया है कि महाराजा ने अपनी बहिन के विवाह में बड़ौदा युवराज को ४७ बाँदियाँ दहेंज में देकर मानवीय अधिकारों की धाराओं को भंग किया है। ज्ञात हूआ है कि राजपूत सभा इस विषय में धाराशास्त्रियों के साथ विचार विमर्श कर रही है।

—यू० आर० एन० एस०

Registered No. A—295

विविध विषयों के हमारे बढ़िया ग्रन्थ

इस पुस्तकमाला की ४ प्रसिद्ध पुस्तकें हैं—(१) 'योगायोग' कवित्वमय श्रेष्ठ उपन्यास। मूल्य ४) (२) 'विश्वपरिचय' विज्ञान-विषय अनन्य ग्रन्थ। मूल्य २), (३) 'रूस की चिट्ठी'। रूस का आँखों देखा वर्णन, मूल्य २) (४) 'चार अध्याय' ऐसा उपन्यास जिसमें राजनीति, समाज और स्त्री-पुरुष-समस्या आदि पर विचार है मूल्य १।)

इसमें प्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव के नये गीतों का संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अन्तर्दर्शन से पूर्ण है। छपाई सफाई नयन ग्राहक। सचित्र सजिल्द प्रति का मूल्य २) दो रुपये।

लेखक भू० पू० काकोरी सके के कैदी श्री मन्मथनाथ गुप्त और राजेन्द्र वर्मा। समाजवाद के अध्ययन के लिये पढ़ना आवश्यक है। मार्क्सवाद के दर्शनों में यह सबसे गहन है। एक दर्जन अध्यायों में विषय का प्रतिपादन हुआ है। मूल्य ६) छः रुपये।

यह श्री श्यामनारायण पाण्डेय की प्रसिद्ध रचना है। इसमें महाराणा प्रताप के हल्दीघाटी वाले संग्राम का वीरता पूर्ण वर्णन बढ़िया छन्दों में है। सजिल्द सचित्र पुस्तक का मूल्य २।।) दो रुपये बारह आने।

मैनेजर—बुक-डिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, ३६ पन्नालाल रोड, इलाहाबाद

प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल। कृष्ण प्रेस, प्रयाग में ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल द्वारा मुद्रित तथा 'देशदूत' कार्यालय प्रयाग, द्वारा प्रकाशित।

अनेक विषयों की बढ़िया पुस्तकें

हिन्दी भाषा का संक्षिप्त इतिहास

यह राय बहादुर डाक्टर श्यामसुन्दर दास के इसी नाम के ग्रन्थ का सारांश है। विषय नाम से ही प्रकट है। अपनी भाषा का इतिहास संक्षेप में पढ़ने के लिए इसे लीजिए। अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य १) एक रुपया।

आदर्श भूमि अथवा चित्तौर

चित्तौर राजपूतों के त्याग के कारण तीर्थ बन गया है। भारत के गौरव स्वरूप उसी चित्तौर का ओजपूर्ण भाषा में लिखा गया इतिहास पढ़कर अपनी जानकारी बढ़ाइए। मूल्य २) दो रुपये।

पंडित जी

नामी उपन्यास लेखक शरद बाबू के इस उपन्यास में कुलीनता, उच्च शिक्षा, द्विज और द्विजेतर, गाँव की भलाई और अपनी उन्नति, नई शिक्षा और मिथ्या अभिमान आदि के सम्बन्ध में बहुत ही विशद विवेचना की गई है। मूल्य २) दो रुपये।

मैक्सिम गोर्की

रूस के इस विश्रुत कलाकार के परिचय के लिए इस पुस्तक को पढ़िए। है तो यह जीवन चरित, पर इसे पढ़ने में कहानी का आनन्द मिलेगा। इसकी जीवनचर्या का वर्णन पढ़कर पाठक जान सकेंगे कि इस कलाकार को किन विकट कठिनाइयों में होकर गुजरना पड़ा था। छोटे टाइपों में छपी लगभग ढाई सौ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य ३) तीन रुपये।

युद्ध और शान्ति

यह संसार के श्रेष्ठ उपन्यास-लेखक और विचारक काउण्ट लियो टालस्टाय के प्रसिद्ध रूसी उपन्यास 'वार एण्ड पीस' का हिन्दी रूपान्तर है। यह ऐतिहासिक उपन्यास तब लिखा गया था जब लेखक की शैली परिमार्जित हो गई थी और उन्हें अन्तर्द्वन्द्व से छुटकारा मिल कर शान्ति मिल गई थी। लेखक ने उसमें मानव-जीवन का सम्पूर्ण चित्र, अपने समय के रूस की तस्वीर और राष्ट्रों की खींचतान बड़ी खूबी से चित्रित की है—जीवन और मृत्यु के रहस्य का भी उद्घाटन किया है। लगभग पौने सात सौ पृष्ठों की सजिल्द प्रति का मूल्य ५।-) पाँच रुपये पाँच आने

कुलबोरन

श्री चन्द्रभूषण वैश्य ने इस उपन्यास को सत्य घटना के आधार पर लिखा है। समाज की अन्ध परम्पराओं से देश की जो हानि हो रही है उसका इसमें सजीव चित्र है। सुधार करनेवाले को रूढ़ियों के अन्ध भक्तों से जैसा लोहा लेना पड़ता है उसका नमूना उपन्यास का नायक, 'कुलबोरन' है। अच्छे कागज पर छपी सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥) दो रुपये आठ आने।

अल्पता की समस्या

'साम्प्रदायिक भेद पर विशेष अधिकार माँगना और ऊलजलूल दावे पेश करना तथा उन माँगों के पूरा न होने पर देशद्रोह के लिए कमर कस लेना किसी देश-भक्त का काम नहीं।' इसी पर दृष्टि रख कर पंडित वेंकटेश नरायण तिवारी एम० ए० ने तथ्यों और आँकड़ों के साथ पुस्तक में उलझन को समझाया है। पाकिस्तान बन जाने पर भी जिनके मन में ऊपर लिखी भावना है उनके समाधान के लिए इसमें सप्रमाण उत्तर है। मूल्य २) दो रुपये।

ईरान

महा पंडित राहुल सांकृत्यायन ने इस पुस्तक में अपनी ईरान-यात्रा का विशद वर्णन किया है। इसके पढ़ने से ईरान की बहुत-सी जानकारी पाठकों को हो जायगी। भ्रमण-वर्णन कहानी का सा आनन्द देगा। मूल्य १।।≡) एक रुपया ग्यारह आने।

मध्य प्रदेश और बरार का इतिहास

इस अत्यन्त प्रामाणिक इतिहास में उक्त प्रदेश से सम्बन्ध रखनेवाली सभी प्राचीन और अर्वाचीन महत्त्वपूर्ण बातें आ गई हैं। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

सुन्दरी-सुबोध

इस पुस्तक में पति-पत्नी को सन्तुष्ट रखने के उपाय इस ढंग से बताये गये हैं कि कहानी का आनन्द देते हैं। इसके सिवा सास-पतोहू, देवरानी-जेठानी, ननद-भौजाई, माता-पुत्र आदि स्त्री के दूसरे सम्बन्धों को भी ठीक २ रखने के उपाय बताये गये हैं। पुरुषों के लिए भी बहुमूल्य अनुभूत बातें दी गई हैं। इनको उपयोग में लाने से गृहस्थी सुखमय हो सकती है। ३०० पृष्ठों से अधिक की सजिल्द प्रति का मूल्य २॥) दो रुपये आठ आने।

आदर्श महिला

इस पुस्तक में सीता, सावित्री, दमयन्ती, शैव्या और चिन्ता आदि पाँच प्रसिद्ध देवियों की जीवन-घटनाओं का सजीव सचित्र वर्णन दिया गया है। इसको पढ़ने में कहानी का आनन्द मिलेगा और शिक्षा सहज ही। मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

कथा सरित्सागर

इस पुस्तक में आदि से अ… तक एक से एक बढ़िया कहानियाँ… जैसा इसका नाम है, यह कथा… का समुद्र है। प्रत्येक कथा के … एक न एक दृष्टान्त है। स… सजिल्द प्रति का २॥≡) मूल्य… रुपये ग्यारह आने।

देव दर्शन

इसमें ब्रजभाषा के प्रख्यात क… देव की जीवनी और उनके सम… काव्यों का आलोचनात्मक परि… दिया गया है। ब्रज काव्य के प्रेमि… अतिरिक्त साहित्य के विद्यार्थियों… लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयो… है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १-… एक रुपया पाँच आने।

बन्दना

यह श्रीमती चन्द्रमुखी ओझा 'सु… के ५२ मधुर गीतों का संग्रह है… आरम्भ में श्री सूर्यकान्त त्रिपा… 'निराला' की लिखी प्रशस्ति… अच्छे कागज पर छपी सजि… पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

तुलसी के चार दल

(प्रथम और द्वितीय भाग) गोस्वामी तुलसीदास जी के रामल… नहछू, बरवै रामायण, पार्वती मंग… और जानकी मंगल का आलो… नात्मक परिचय तथा इन चारों ग्र… की अध्ययनपूर्ण टीका। इसे इन ग्र… की कुंजी समझिए। मूल्य प्रथम भा… का ३) रुपये, द्वितीय भाग का २॥≡… दो रुपये ग्यारह आने।

ग्रह-नक्षत्र

इस पुस्तक में ग्रहों और नक्ष… आदि से सम्बन्ध रखने वाली प्रा… सभी आवश्यक बातों का सचि… वर्णन सरल भाषा में है। मूल्य… तीन रुपये।

हार या जीत

इस उपन्यास में लेखक … ब्रजेश्वर वर्मा एम० ए०, डी० फि… ने एक देहाती लुहार की अल्पवय… बेटी को घटनाक्रम से, अनाथ … में, देहात से महराजगंज की रा… पृथाकुंवरि के आश्रय में पहुँचा दि… है। वहाँ रानी की कृपा से … लड़की ने विद्या पढ़ी। फिर इसमें … गुणों का विकास हुआ जिससे मनु… सभ्य होकर सम्मान पाता है। इ… असहयोग आन्दोलन में सक्रिय भा… लिया और अन्त में कलकत्ता जा… नौकरी कर ली। कई पुस्तकें लिखी… विदेश-यात्रा के बाद रानी के कु… की प्रार्थना पर उससे विवाह कि… उपन्यास की घटनावली, विचारों… संघर्ष और चन्दा की नम्रता… दृढ़ता सराहने योग्य है। मूल्य … दो रुपये।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

देशदूत

वर्ष १२, संख्या ३६] [रविवार, १८ जून, १९५०

मलाया का रबड़ उद्योग

वैज्ञानिक अनुसन्धान की सहायता कैसे होती है?

संसार में कई प्रकार की कच्ची चीज़ें पाई जाती हैं जिनमें से एक है प्राकृतिक रबड़। किन्तु अन्य चीज़ों की अपेक्षा कहीं अधिक मात्रा में प्राकृतिक रबड़ औद्योगिक और दैनिक जीवन का अनिवार्य अंग बन गया है। पिछले कुछ वर्षों से रबड़ अधिकाधिक कामों के लिये प्रयुक्त हो रहा है और वैज्ञानिक अनुसन्धान रबड़ को कई रूपों में प्रकट कर रहा है।

मलाया का रबड़ उद्योग उन उद्योगों में से एक था जिसे युद्धकाल में जापानी अधिकार के कारण क्षति उठानी पड़ी थी। किन्तु पुनर्स्थापना का सबसे पहले रबड़ उद्योग ने पूरा किया और उस समय से यह उपनिवेशों में डालर प्राप्ति का सबसे बड़ा साधन सिद्ध हो रहा है। १९४९ में ६,७९,७१० टनों का निर्यात हुआ था, जिसमें से आधे से भी अधिक संयुक्तराज्य अमेरिका को भेजा गया था।

रबड़ उद्योग की सफलता बहुत अंश तक मलाया रबड़ अनुसन्धान संस्था द्वारा दी गई सहायता और सलाह के कारण सम्भव हुई। यहाँ अनुसन्धान और परीक्षा का काम निरन्तर चलता रहता है। ईसी रबड़ अनुसन्धान संस्था के चित्र आप देख रहे हैं।

कारखानों में फोटोग्राफर रिकार्ड रखने के लिये फोटो ले रहा है।
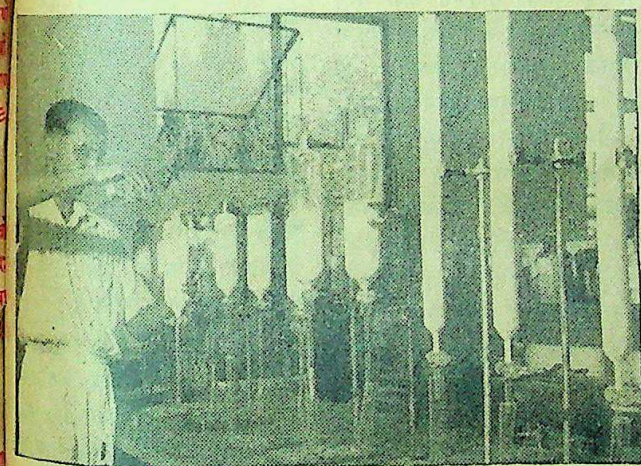
कारखाने में रसायनिक रबर को साफ़ कर रहे हैं।

रबर के कारखाने में रबर की सफाई का काम हो रहा है।
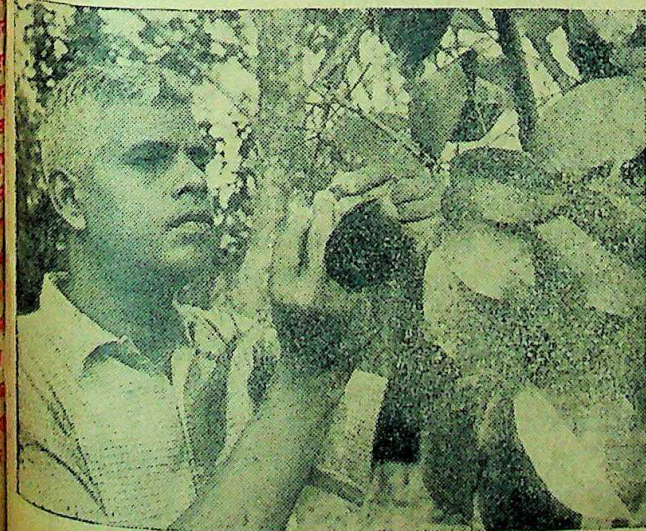
रबर की परीक्षा को सफलता पर फलों के अनुसन्धान पर प्रभाव [illegible]
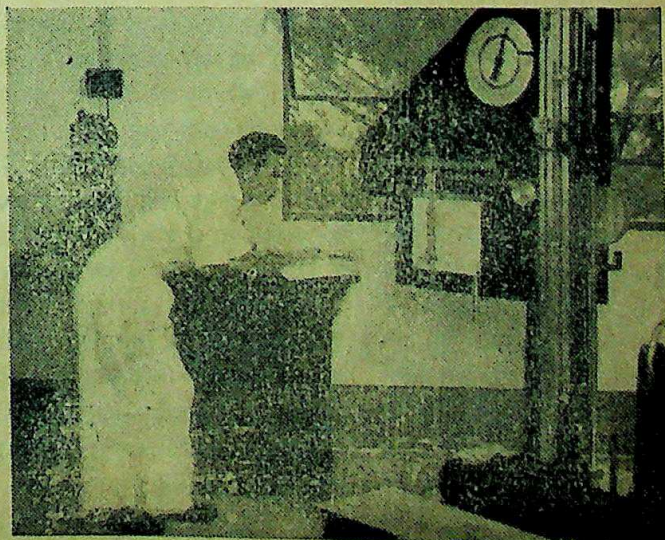
रबर के कारखाने में रबर की परीक्षा की जा रही है।

आश्चर्यजनक तथा मनोरंजक

दक्षिण भारत में भानुमती का जादू का रहस्य

लेखिका, श्रीमती शचीरानी गुर्टू, एम० ए० (हिन्दी), साहित्याचार्य

पंडित जवाहरलाल नेहरू शीघ्र ही दक्षिण का दौरा करने वाले हैं।

यह विश्व कितने विचित्र कौतूहलों एवं रहस्यों से परिपूर्ण है। पर विज्ञान की कसौटी पर जो चीज खरी नहीं उतरती उसे आधुनिक या तो मतिभ्रम कह कर टाल देते हैं अथवा दैवी दुर्घटना, धूर्तता या छल-कपट आदि समझकर उसकी उपेक्षा करते हैं। किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि विश्व के विभिन्न भागों में यदाकदा जादू की ऐसी सच्ची और अद्भुत घटनाएँ सुनने व देखने को मिलती हैं, जिनका रहस्य न तो समझ में आता है और न दूसरे को समझाया ही जा सकता है।

दक्षिण भारत और हैदराबाद रियासत की तरफ कुछ इसी प्रकार की घृणित जादू की किस्में सुनी गई हैं, जो "भानमती" के नाम से प्रसिद्ध हैं। यह जादू बहुत ही तामसी और निम्न कोटि का है और इसके प्रयोग भी बहुत ही विचित्र होते हैं। कोई भी उपाय इसके प्रभाव को रोकने में असमर्थ है।

सरकारी तौरपर भी ऐसी कई घटनाओं का उल्लेख मिलता है। लगभग बीस वर्ष पूर्व हैदराबाद गवर्नमेंट ने बीदर नगर के सहस्रों सम्मानित नागरिकों के के हस्ताक्षरों से युक्त एक स्मृतिपत्र प्राप्त किया था। जिसमें उन्होंने इन धूर्त "भानमती" के अनुयायी जादूगरों की एक टोली का जिक्र किया था। ये जादूगर तरह तरह के अत्याचार जादू के तामसिक प्रयोग, तन्त्र मन्त्र और दुष्कृत्यों से अपने में विचित्र शक्ति उत्पन्न करके लोगों को बहुत अधिक सताते और पीड़ा पहुँचाते थे। कभी कभी तो उनकी नीचतायें इस हद तक पहुँच जाती थीं कि गवर्नमेंट की मदद लेनी पड़ती थी।

बहुत दिनों तक इस प्रकार के जादूगरों के अस्तित्व पर अविश्वास किया गया और कानूनी कार्यवाही हास्यास्पद समझी गयी, किन्तु सम्मानित एवं विश्वस्त व्यक्तियों की लगातार शिकायतों और जनता के एक बहुत बड़े समुदाय में असन्तोष फैल जाने से गवर्नमेंट को बाध्य होकर इधर ध्यान देना पड़ा। हैदराबाद गवर्नमेंट ने एक अंग्रेज अफसर श्री एल० बी० गोड और भारतीय पुलिस सर्विस को इस जादू की तहकीकात के लिये नियुक्त किया। जैसा कि प्रायः सभी पुलिस वालों का बहुत ही खरा और स्पष्ट तरीका होता है, और वे बात की असलियत टटोलने में बहुत अधिक सचेष्ट होते हैं उसी तरीके को श्री गोड नेभीअख्तियार किया। बहुत दिनों तकतो उन्हें ऐसी बातों परविश्वास ही नहींहुआ। जो कोई उनसे इस संबन्ध में कुछ कहता वे उसकी उपेक्षा सी करते। किन्तु धीरे धीरे जब वे इसकी गहराइयों में घुसते गये और इस प्रकार की रहस्यपूर्ण घटनाओं से अवगत होते गये तो वे अत्यन्त भयभीत व चिन्तित रहने लगे और उन्हें ऐसी बातों से सख्त नफरत और परेशानी होने लगी। अन्त में वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि भानमती का जादू बहुत ही विचित्र, अमानुषी और मनहूस है। वह दूसरों का सर्वनाश कर देने में समर्थ है और कष्ट, पीड़ा और घातक प्रयोगों का समूह है। किसी भी कानूनी कार्यवाही से रोका नहीं जा सकता। प्रत्युत इसके अपने ही हथियारों से इसका दमन सम्भव है।

अन्त में श्री गोड ने निजाम की गवनमेंट को जब इस मामले की अंतिम रिपोर्ट दी तो उन्होंने कोई ऐसी आश्चर्य जनक घटनाओं का उल्लेख किया जो उनके व्यक्तिगत अनुभव में आ चुकी थी या जो अत्यन्त विश्वस्त सूत्रों से उन्हें प्राप्त हुई थीं। इस रिपोर्ट में भानमती के अनुयायी जादूगरों के विभिन्न अत्याचारों, कृत्यों और टोनों की विचित्र विधियों का भी विस्तृत वर्णन किया गया था और ऐसे दूषित एवं भयावह वातावरण के कई रंगीन चित्र भी प्रस्तुत किये गये थे। मि० गोड की यह रिपोर्ट अब भी सुरक्षित रखी हुई है, किन्तु इस का अर्थ यह नहीं कि इससे भानमती के जादूगरों की संख्या में कुछ अन्तर पड़ा अथवा कोई कमी हुई हो। हाल की पुलिस रिपोर्टों से पता चलता है कि भानमती के अनुयायियों की संख्या अब भी काफी मात्रा में है और रियासत भर में इस जादू का व्यापक रूप से प्रचार है और लोग इससे भयभीत भी रहते हैं। यही नहीं, वरन् जिला पुलिस की ओर से कुछ ऐसे चिकित्सक भी, जिन्हें ओझा कहा जाता है—नियुक्त हैं, जो घूम घूम कर इस प्रकार के रोगों का उपचार किया करते हैं।

श्री गोड की रिपोर्ट से ज्ञात होता है भानमती का जादू बहुत ही दुस्साध्य एवं कठिन है। प्रत्येक की पहुँच इस तक सम्भव नहीं। इस फन के बहुत से अनुभवी और मँजे हुए उस्ताद होते हैं जो इस व्यवसाय में अत्यन्त निपुण और पारंगत होते हैं। उनको जादू और तन्त्र मंत्र के इतने घृणित और दुरूह साधन करने पड़ते हैं, अपनी कोमल और उदार भावनाओं को इतना अधिक कुचलना पड़ता है, इतने अजीब, तामसिक, रहस्यपूर्ण कार्य करने पड़ते हैं कि साधारण व्यक्ति की बुद्धि और मस्तिष्क चकराने लगता है।

ये उस्ताद बहुत ही विधि विधान से भानमती के कठोर नियमों का पालन करते हैं। वे अत्यन्त एकान्त भयावह स्थान जो अधिकतर श्मशान भूमि होती हैं चुन लेते हैं और इस जादू की तामसिक पूजा विधि को सम्पन्न करने के लिये एक होकर एक घेरा बना लेते हैं। बीच में मनुष्यों की खोपड़ियाँ, हड्डी, माँस, रक्त आदि इकट्ठा कर लेते हैं और मिट्टी, आटा, चमड़ा, हड्डी, लाल और लकड़ी आदि की विचित्र टेढ़ी मेढ़ी शक्लें बनाकर रख लेते हैं। लकड़ी में वे अधिकतर अंजीर की लकड़ी का ही उपयोग करते हैं। स्त्री पुरुष या बच्चा जिसे भी वे अपनी दुष्प्रवृत्तियों का शिकारबनाना चाहते हैं, उसी कीकल्पित शक्ल की एक पुतली सी अपने समक्ष बना कर रख लेते हैं और उसके चारों ओर हड्डी, खोपड़ियां, दांत, अंतड़ियाँ और मृत व्यक्तियों के विविध अवयव बिखेर देते हैं। तेज छुरे, चाकू और तलवारें भी नोक पर। जमीन में गाड़कर खड़ी कर देते हैं और जब उस्ताद को उनकी सफलता में पूर्ण विश्वास हो जाता है तो वह रखी हुई पुतली को उस आदमी को उस आदमी का नाम लेकर जिस पर कि वह अपने जादू का प्रयोग करना चाहता है, तरह तरह से सताता और दुख देता है। आश्चर्य की बात है यह है कि तत्क्षण ही इसका प्रभाव निर्दिष्ट व्यक्ति पर पड़ता है, उसके सारे शरीर में काले निशान पड़ जाते हैं, और मिर्च सी लगने लगती है। उसके मुख में भी भयानक मिर्च लगने लगती है। वह अभागा प्राणी यंत्रणा भोगता है और मछली की तरह तड़पता उस्ताद की है। इच्छानुसार उसे उतनी ही देर तक कष्ट भोगना पड़ता है जब तक कि वह उसकी कुछ रोक नहीं करता।

कभी कभी तो इन व्यक्तियों की, जिन पर कि इन मंत्रों का प्रयोग किया जाता है बहुत ही दुर्दशा होती है। उन के बिस्तरों और वस्त्रों में आग लग जाती है। सामने रखा हुआ भोजन कूड़े-करकट में बदल जाता है, चारों तरफ से पत्थर बरसने लगते हैं—सुइयाँ, काँटे और जीवित चिड़ियाँ मुँह में से निकल आती हैं। यही नहीं और भी तरह तरह की यातनाएँ उन्हें सहन करनी पड़ती हैं, जिस का कोई कारण समझ में नहीं आता।

माननीय श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी के लिये सतत उद्योग शील हैं।

कोई भी चिकित्सा प्रणाली रोगी का उपचार करने में असमर्थ है। अतएव उसे हताश होकर झाड़-फूँक करने वाले ओझा की शरण लेनी पड़ती है। ये ओझा उस्ताद से साँठ गाँठ किये रहते किये रहते है और मंत्रों से ही रोगी का उपचार करते हैं। जो फीस ओझा को प्राप्त होती है—उसे वह और उस्ताद परस्पर में विभक्त कर लेते हैं। जब उस्ताद केवल पैसा प्राप्त करने के लिए ही दूसरों को सताता है तो उसे ओझा के सहयोग से बहुत कुछ मिल जाता है।

विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि उस्ताद सभी प्रकार के व्यक्तियों को अपने चपेट में ला सकता है। वह जिस पर भी मंत्रों का प्रयोग करना चाहता है सफल होता है, किन्तु एक बात विशेष ध्यान देने की है कि वह भी अपने मंत्रों का एकदम प्रयोग नहीं कर सकता। उसे अत्यन्त कठोर साधना करनी है। यही कारण है कि जब जब किसी उस्ताद को पुलिस ने अकस्मात् पड़क कर बन्दी बना लिया है तो वह बिलकुल असहाय और असमर्थ हो गया है। जब तक वह भानमती की साधना नहीं करता तब तक वह लोगों का कुछ भी नहीं बिगड़ा सकता !

पुलिस रिपोर्टों से ज्ञात होता है कि भारत के देहातों में इस प्रकार की रहस्यपूर्ण घटनायें प्रायः होती रहती हैं। यह भी सुना गया है कि पूरा गाँव का गाँव बदला लेने के लिये इन पर आक्रमण कर देता है और इन्हें दण्ड देता है। मालाबार प्रदेश और दक्षिण भारत

(शेष पृष्ठ १३ पर)

रूसी साम्यवाद की समृद्धि

संसार की राजनीति में उसका महत्व पूर्ण स्थान क्यों है ?

लेखक, प्रोफेसर ओ३मप्रकाश वर्मा एम० ए०, एम० काम०

सोवियत रूस की आज की राजनैतिक, संस्कृतिक तथा आर्थिक स्थिति कैसी है ? शासन-संचालन किस प्रकार के शासन-विधान के अनुसार हो रहा है, इन सभी विषयों पर इस लेख में व्यापक और सुन्दर प्रकाश डाला गया है। लेख में आज की रूसी राजनीति का विहग ज्ञान प्राप्त होता है। लेख पठनीय तथा विचारणीय है।

भारत के प्रधान मंत्री पंडित नेहरू साम्यवाद के समर्थक हैं।

युगकालीन राजनीतिक विश्व में हँसिया हथौड़ा युक्त लाल झण्डा उसके ...का बाल बन गया है। संयुक्त ...की समस्त माननीय महत्वपूर्ण अधिवेशनोंमें राजनीतिक भेड़िये की कटु ...ट तथा भीषण पंजों की कार्यवा... सुनाई तथा दिखाई पड़ती हैं। ...के देखते देखते संसार के मानचित्र ...लाल कूची फिरती जा रही है। क्रम ...समृद्धिशाली राष्ट्र साम्यवाद के ...नुयायी बनते जा रहे हैं। एशिया पर तो ...का जादू भरपूर पड़ रहा है और एक ...फान लहर सी आती दिखती है, जिसमें ...चीन चला गया, मलाया, फिलिपाइन्स, ...बर्मा, सुमात्रा, हिन्दचीन, हिन्देशिया, ...यत्र तत्र सर्वत्र उसकी आग जल ...रही है और तिब्बत और भारत में भी ...चिनगारियों का भय किया जा रहा है ... आखिर यह साम्यवाद है क्या ...वस्तु ? आज यहाँ पर हम इसके इतिहास ...स, मुख्य एवं मौलिक सिद्धान्तों की ...व्याख्या करने की चेष्टा करेंगे, जिनके ...अध्ययन के उपरान्त ही हम किसी प्रकर ...के सफल उपचार का प्रयोग कर सकेंगे।

एक क्रान्तिकारी कार्यरूप

साम्यवाद मार्क्सवाद का क्रान्तिकारी ...कार्यरूप है। यह समाजवाद से कुछ ...मौलिक रूपों में भिन्न भी है जो उनकी ...व्यावहारिक प्रणालियों के कारण है। ...साम्यवादी महानुभावों का ऐसा विश्वास ...है कि वर्ग-संघर्ष पूँजीवादी समाज का ...विशिष्ट एवं अभिन्न गुण (अथवा वास्तव ...में अवगुण ?) है, जिसके कारण उस ...देश की शासन पद्धति पर सम्पत्ति वर्ग ...का पर्याप्त अधिकार तथा प्रभाव रहता ...है। अतएव वे क्रम से तथा अहिंसात्मक ...रूप से शासन-पद्धति बदल देने वाले ...समाजवादी सिद्धान्त पर आस्था नहीं ...रखते हैं वरन् वे सीधे सीधे अस्त्रों के बल ...पर शासन के बागडोर अपने दृढ़ हाथों ...में ले लेने को अधिक कार्यशील तथा न्यायसंगत समझते हैं। दूसरा अन्तर दोनों के अन्तिम ध्येयों में है। साम्यवाद समाजवाद को स्वयं संक्रमक कालीन प्रणाली स्वीकार करता है और जिसको ठीक तौर से पार करने के लिये श्रमिक तानाशाही की नितान्त आवश्यकता होती है और जिसमें से ऐसे समाज की उत्पत्ति होगी, जिसमें शासन की पुलिस प्रवृत्ति समाप्त हो जावेगी और समस्त नागरिकों का वैयक्तिक एवम् सामूहिक कल्याण सशरीर सामने आ जावेगा।

रूस में साम्यवाद

इन्हीं मौलिक सिद्धान्तों ने डाँवाडोल रूस में प्राण फूँके हैं, और वर्तमान समृद्धिशाली और शक्तिशाली सोवियत संघ की नींव डाल दी है। सोवियत संघ सोवियत समाजवादी प्रजातन्त्री संघ (यु० एस० एस० आर०) का संक्षिप्त परियायवाची है। प्राचीन रूस की धरती का सरकारी नाम यही है। इसके अन्तर्गत सोलह स्वतन्त्र प्रजातन्त्रों का मनचाहा संघ है। इनकी केन्द्रीय सरकार भी है। चूँकि इनके डेलीगेटों की एक काउंसिल श्रमिकों, कृषकों तथा युद्धाओं के क्षेत्रों से निर्वाचित किये जाते हैं इसलिये इसे सोवियत कहते हैं। उत्पादक साधनों की सम्पत्ति जनता की है अतएव ऐसी आर्थिक प्रणाली को समाजवादी होने की संज्ञा दी गयी है और युनियन के विभिन्न अंग अपने वैयक्तिक विषयों पर स्वतंत्र हैं तथापि उन्हें प्रजातन्त्र कहा जाता है।

रूसी क्रान्ति

मार्क्सवादी विचारधारा के अनुसार पूर्ण क्रान्ति उस देश में आती है, जहाँ पूँजीवाद अपने पूर्ण यौवन को प्राप्त कर नीचे शीघ्रता से ढुलकता है। इस प्रकार वह आर्थिक विकास के प्रथम स्तर पर भी न था। राजनीतिक रूप से तो वह और भी गया गुजरा था, वहाँ निरंकुश राजशाही अपनी चरम सीमा पर थी—जार का जमाना था ही। सौ के लगभग विभिन्न जातियाँ रूस में विद्यमान थीं। उसमें असमानता का बोल बाला था। उस काल की जनता के पास इससे बढ़ कर कोई अन्य धन न हो सकता था। विभिन्न जातियों को समानता प्रदान करने के लिये "बल पूर्वक रूसी बनाने" का आन्दोलन चलाया गया। जिससे असमानता और शत्रुता और भी बढ़ गयी। यूँ तो पीटर महान एवं कैथरीन द्वितीय ने औद्योगिकवाद लाने का प्रयत्न किया, तो भी उसमें प्रगति न आ सकी। सन् १८६१ में "सर्फ" मिटा दिये गये पर इससे पिछड़ी तथा निरक्षर एवं संतप्त जनता की दशा में अन्तर न पड़ा।

इसी समय पश्चिमी यूरोप में उदार विचारों का जोर था। वह जनता की आर्थिक दशा सुधारने की विशेष हानि यो। उन विचारों ने इस में भी पदार्पण किया और १८६० के उपरान्त जनता ने सरकार से धरती में सुधार करने की तेज मांगें करनी आरम्भ कर दी। निरंकुश वादी सरकार ने जनता की आवाज को बल पूर्वक दबा तथा उखाड़ देने की चेष्टा की। इसका परिणाम यह हुआ कि जनता उबल पड़ी। यह जलती हुई आग में घी हो गया और "बुभुक्षितः किं न करोति पापं" के अनुसार उसने हिंसा की शरण ग्रहण कर ली। सरकार को उखाड़ फेंकने के करतब आरम्भ हो गये इधर औद्योगिकवाद के कारण श्रमिक वर्ग बन चुका था, उनके अधिवेशन हो रहे थे। इसमें दो दल बन गये (१) मेन्शेविक तथा बाल्शेविक। बाल्शेविक प्रधान एवं बहुमत में थे। इसके माननीय नेता लेनिन बने। इसके अधीन श्रमिक वर्ग ने सरकार को बल पूर्वक छीन लेने की शपथ खा ली और इन्होंने क्रान्ति का नारा लगाया। शक्ति हाथ में लेकर सारी भूमि तथा कारखानों को समाज की सम्पत्ति बना देने का निर्णय लिया। बीसवीं शताब्दी नये गुल खिलाने आयी १९०४ में रूस जापान से भिड़ पड़ा और जैसे ही सरकार युद्ध रत हुई वैसे ही रूस की आन्तरिक स्थिति में और भी गड़बड़ी होने लगी। इस गड़बड़ को मिटा देने के लिए तत्कालीन जार ने अपने पास आये हुये १५०० प्रार्थियों की हत्या करवा दी। इससे मामला बढ़ ही गया। अब उसने डरकर एक नवीन इम्पीरियल ड्यूमा (प्रतिनिधि लोक-सभा बनाने की घोषणा की, परन्तु इसके विपरीत एक और भी कठोर दमनशाली नीति का आश्रय लिया गया। और इसी समय जनता ने योद्धाओं कृषक तथा श्रमिकों द्वारा निर्वाचित सभाएँ (सोवियतें) बना लीं। अब योरोपीय युद्ध आ पहुँचा। जनता ने देश की सरकार का साथ देना चाहा। क्योंकि वे जर्मनों को बुलाकर बैठा देने के विरुद्ध थे। साथ ही उनका यह भी विचार था कि सरकार का साथ देने से सम्भवतः देश में राजनीतिक सुधार अधिक हो जाय। केवल लेनिन का दल इसके विरुद्ध था। वह युद्ध अवसर से लाभ उठाना चाहता था। उसका विचार ठीक निकला। रूस युद्ध में पराजित होता जा रहा था। पराजय ने जारशाही की अन्तिम शक्ति को भी धराशायी कर

(शेष पृष्ठ ११ पर)

गीत

लेखक, श्री नर्मदेश्वर उपाध्याय

मेरे प्राणों की नीरवता को मुखरिता कर दो !

बुझी ज्योति, घिर रही निराशा
तृप्ति बन गई अमिट पिपासा
गूँज रही है सूनेपन में
जीवन और मरण की भाषा

जटिल प्रश्न बन कर आया मैं, कोई उत्तर दो !

सूख गये आँसू नयनों में
सत्य शेष है अब सपनों में
यह कैसी विधि की विडंबना
कल्प डूबते शून्य क्षणों में

मेरी अन्तर वीणा के तारों में करुणस्वर भर दो !

अपना था जो आज खो गया
मेरा स्वयं विनाश हो गया
उदय हो रहा था प्रकाश जो
आज अचानक अस्त हो गया

जीवन का विष नहीं चाहिये, मृत्यु-अमृत वर दो !
मेरे प्राणों की नीरवता को मुखरित कर दो !!

हिन्दी पत्रकारिता का भविष्य उज्ज्वल है

हिन्दी पत्रकारों को संगठित तथा पत्रकारिता का स्तर ऊँचा उठाना चाहिए।

पिछले दिनों पटना में बिहार प्रांतीय हिन्दी पत्रकार सम्मेलन का अधिवेशन हुआ था। सभापति-पद से पंडित कमलापति त्रिपाठी ने ओजस्वी भाषण दिया था, जिसमें हिन्दी पत्रकारों की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। भाषण का महत्वपूर्ण अंश नीचे किया जाता है।

पत्रकारों का दायित्व

हम पत्रकारोंका यह परम सौभाग्य है कि हमने अपने देशको सफल होते देखा और राष्ट्रकी तपस्याके फलस्वरूप नव भारतीय प्रजातंत्रकी उत्पत्ति हमारे सामने हुई। देशकी स्वतंत्रत के साथ-साथ हमारी स्थिति परिवर्तित हुई है, हमारी आवश्यकताओं में परिवर्तन हुआ है—हमारे कर्तव्य और अधिकार ने भी दूसरा व्यह ग्रहण किया है। आज इस देश के पत्रों और पत्रकारों पर बड़ा भारी दायित्व आ पड़ा है। शताब्दियों के बाद स्वतंत्रता प्राप्त किये हुए राष्ट्रके निर्माणका महान कार्य देशके सामने है जिसमें योग प्रदान करने तथा नव-निर्माणके कार्य को सफल बनाने का भार सबसे अधिक पत्रकारों पर ही है। पत्रकार की लेखनी से निकली भावधराएँ जीवनके अंगप्रत्यंग को ओतप्रोत करती हैं। हमारे पत्र देश के कोने-कोनेमें पहुँचते हैं, गाँवकी झोपड़ियों में जाते हैं, निर्जन बन पर्वतों के अंकमें बसे हुए छिटफुट लोगोंके हाथों में पहुँचने से लेकर जनसंकीर्ण महान नगरों के निवासियों तक पहुँचते हैं। हमारे पत्र संसारकी घटनाओंके दर्पण बनकर अपने प्रतिविम्बसे मानव जीवनको प्रभावित करते हैं और इस प्रकार व्यक्ति और समाजकी गतिके लिए अज्ञात भावसे सरणिका निर्माण करते हैं। ये पत्र समाजके अधिकतर लोगोंके लिए न केवल दिन प्रतिदिनका साहित्य निर्मित करते हैं। प्रत्युत उनके विचारों, भावों, दृष्टयों, आदर्शों और व्यवहारों की रचना भी करते हैं। ऐसी स्थितिमें एक राष्ट्रके समस्त सामाजिक जीवनको वांछनीय दिशाओंकी ओर उन्मुख करनेका दायित्व सिवा पत्रकारोंके और किस पर हो सकता है। आज पत्रकारोंको अपने इस उत्तर-दायित्वकी अनुभूति तथा तदनुकूल अपने कर्तव्यकी पूर्ति करना है। सौभाग्य से वह राष्ट्र स्वतंत्र हुआ है जिसकी स्वतंत्रताकी प्राप्तिके लिए हमने अपेक्षाकृत कम उद्योग नहीं किया था। आज इस देश को उसी स्वतंत्रताके अनुकूल निर्मित करना है जिसके बिना न उस स्वतंत्रताकी रक्षा हो सकेगी और न देश उसका उपभोग कर सकेगा।

स्मरण रखनेकी बात है कि हमारी स्वतंत्रताने जहां हमें सम्मान और मुक्ति प्रदान की है वहीं वह इस देशके शताब्दियोंके इतिहासके भले बुरे संस्कारोंको लिए हुए अंकुरित हुई है। जहां हमें अपने अतीतकी शुभ्रताका उत्तराधिकार प्राप्त हुआ है वहीं गत एक सहस्र वर्षों के काले युगने जिस कालिमा की सृष्टि की थी उसकी कलुषमयी छाया भी प्राप्त हुई है। नव-भारतके निर्माणके लिए इसी कारण अत्यन्त सावधान होनेकी आवश्यकता है। इस देशको जहाँ अपने अतीतके उज्ज्वल संस्कारोंसे स्फूर्ति और प्रेरणा प्राप्त करनी है वहीं उसकी कालिमा से अपनेको बचाना भी है। भारत ऐसे बड़े राष्ट्रका अधःपतन अकारण नहीं हुआ था। उसके जीवनमें जड़ता, अन्धानुगमन, अपनी श्रेष्ठताका मिथ्या दम्भ, संसारकी गतिके प्रति उदासीनता और उपेक्षा तथा पारस्परिक राग-द्वेष और जातपातमूलक सामाजिक विभेद और विक्षतताने प्रवेशकरके उसका विनाश किया था। आज जब हम स्वतंत्र भारतीय नव प्रजातंत्रकी भित्ति रख चुके हैं और सार्वभौम जनसत्तात्मक लोकतांत्रिक व्यवस्था तथा समाज्की रचना के लिये बद्धपरिकर हो रहे हैं तो यह आवश्यक है कि उन विकारोंसे राष्ट्रको निर्मुक्त करें जिनके परिहारके बिना एक सशक्त और प्रौढ़ भारतीय समाजकी रचना संभव न होगी। वर्तमान भारत को इसी कारण आज एक ऐसे वातावरण की आवश्यकता है जिसमें न साम्प्रदायिक विद्वेष, न जाति-पाति के झगड़े हों, न जन्म और धनके आधारपर छोटे-बड़का भेदभाव हो। स्मरण रखनेकी बात है कि हमारा इतिहास आज एक ऐसे युगमें प्रवेश कर रहा है जिसमें हमारी सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थित अपने अन्तर्निहित विरोधसे ही पीड़ित है। हम एक ओर लोकतंत्रात्मक समाजके उदयके लिए सचेष्ट हैं और दूसरी ओर ऊँच-नीच, छोटे-बड़े, जात-पात और धर्म विद्वेष के परम्परागत संस्कारोंसे प्रभावित हैं। इस अन्तविरोधको दूर किये बिना उस समाजकी और उस व्यवस्थाकी रचना संभव नहीं है जिसे राष्ट्रने अपना लक्ष्य बनाया है। इस अन्तविरोधको उन्मूलित करनेके लिए देशको नयी दृष्टि प्रदान करनी होगी और नये संस्कारोंसे संस्कृत करना पड़ेगा। मेरी समझमें स्वतंत्रताकी प्राप्ति के बाद हमारी स्थितिमें जो परिवर्तन हुआ है वह सबसे अधिक आज इसी आवश्यकताकी पूर्ति अपेक्षा कर रहा है। निश्चित है कि हम पत्रकारोंपर इस आवश्यकताकी पूर्तिका महान उत्तरदायित्व है। हमें इस बातका गर्व है कि इस देशके नेताओंने भारतमें उस असाम्प्रदायिक जनतंत्रात्मक राज्यव्यवस्थाकी नींव रखी है जिसकी छत्रछायामें भारती-जनसमाज अपने व्यक्तिगत और समष्टिगत विकासका अबाध अवसर प्राप्त करेगा। स्वतंत्रताकी उपलब्धिके बाद साम्प्रदायिकताका जो विष फूट पड़ा वह भी इस देशके नेताओंको पथसे विचिलित करनेमें समर्थ न हुआ। हमारा दृढ़ विश्वास है कि भावी इतिहासकार हमारे राष्ट्रकी प्रशंसा इसके लिए सदा करेगा। हम जानते हैं कि साम्प्रदायिकता विषने इस देशमें उन शक्तियोंकी सृष्टि भी की है जो प्रतिगामी कट्टरपंथी साम्प्रदायिक समाज और व्यवस्थाकी प्रतिष्ठा के लिए सचेष्ट हैं।

आज शताब्दियोंके बाद स्वतंत्र हुए इस राष्ट्रके कल्याण के लिये तथा मानव समाजकी प्रगति और विकासके लिए यह आवश्यक है कि हम इन शक्तियोंके प्रतिरोध में तथा इनके कुप्रभावसे राष्ट्रको बचाने में अपनी शक्ति लगाये। भारतके लिए असाम्प्रदायिकता कोई नयी चीज नहीं है। हमारा तो सारा इतिहास हमारी सारी संस्कृति और हमारी सारीदृष्टि सदा असाम्प्रदायिक हीरही है। जो लोग इस देश के इतिहाससे परिचित हैं वे जानते है कि हमारा धर्म, हमारा ईश्वर, हमारा दर्शन, हमारा समाज और हमारा जीवनादर्श सब कुछ असाम्प्रदायिक ही रहा है। आज भारतमें साम्प्रदायिक व्यवस्था स्थापित करनेकी आवाज उठानेवाले वास्तवमें भारतीयता के प्रतिकूल और भारतीय सांस्कृतिक परम्पराके सर्वथा विरूद्ध देशको ले जाने की चेष्टा कर रहे हैं। वे पत्रकार जो सदा प्रगति और जनकल्याणके इच्छुक रहे हैं राष्ट्रको विधेय पथपर ले चलना अपना कर्तव्य समझेंगे इसमें हमें कोई संदेह नहीं।

इसी स्थान पर मैं एक दूसरी बातकी ओर भी संकेत कर देना चाहता हूँ। एक ओर जहाँ हमारा यह कर्तव्य है कि इस नयी स्थिति और नये आदर्शके अनुकूल राष्ट्रके जीवनको मोड़नेकी चेष्टा करें वहीं दूसरी ओर शासन-सत्ताके प्रति सतर्क रहना भी आवश्यक है। पत्रकार सदा जनधिकार और जनस्वातंत्र्यका प्रहरी हुआ करता है। वह जनमतका निर्माण करता है और जनभावोंको प्रतिविम्बित भी करता है। यही कारण है कि आधुनिक जगतकी लोकतांत्रिक व्यवस्थामें उसका अत्यन्त आवश्यक, आदरणीय और महत्वपूर्ण स्थान हो गया है। विद्वान उसे चतुर्थ सत्ताकी संज्ञा प्रदान करते हैं। स्पष्ट है कि किसी भी लोकतान्त्रिक व्यवस्थाके लिए निष्पक्ष प्रौढ़ और जनधिकारका हिमायत करने वाला पत्रकारी उसका एक आवश्यक अंग है जिसके बिना लोकतंत्रक भवन का खड़ा रहना कठिन हो जाता है। दूसरी ओर यह भी निर्विवाद है कि "स्वतंत्रताका मूल्य अविचल जागरुकता और सतर्कता ही है" (Eternal Vigilence is the price of Liberty) जनसत्ता और जनाधिकार के प्रहरी होने का दावा करनेवाले हम पत्रकारों पर इस सतर्कता और जागरूकतका उत्तरदायित्व सबसे अधिक है। शासनसत्ता स्वभावतः शक्ति और अधिकारक केन्द्रीकरणकी ओर अग्रसर हो जाया करती है। प्रकृतया जनाधिकारके अपहरण और जनस्वातन्त्र्ये हस्तक्षेप करनेकी ओर पुरस्सरित होना शासन सत्ताके लिए नयी बात नहीं है। जगतके इतिहास पृष्ठ इस तथ्यकी ओर प्रचुर मात्रा में संकेत करते हैं। आदर्श और व्यवसारमें भेद होना मनुष्यके जीवनमें स्वाभाविक है, फलतः मनुष्य द्वारा संचालित शासनसत्ता उत्तम और उन्नत आदर्शोंको सम्मुख प्रतिष्ठिति रखते हुए भी बहुधा व्यवहारमें पथभ्रष्ट और लक्ष्यविमुख होती रही हैं। जनसुरक्षा, शान्ति और व्यवस्था, राष्ट्रीय हित और स्टेटके कल्याणके नामपर लोकतंत्र और जनसत्ता पर आघात होना साधारण-सी बात नहीं है। हम पत्रकारोंको इस दिशामें अत्यन्त सतर्क रहनेकी आवश्यकता है। हमें जनाधिकारकी रक्षाके लिए सतत् और अडिग रूपसे प्रयत्नशील रहना है। जहाँ हम शान्ति-व्यवस्था और सुरक्षा तथा स्टेटकी प्रौढ़ताके इच्छुक हैं वहीं हम जनसत्ता पर आघात न होने देनेके कर्तव्यकी पूर्ति में अपनी सारी शक्ति लगा दें।

मैंने पत्रकारोंके कर्तव्यकी ओर संकेत करने की धृष्टता इसलिए नहीं की कि मैं अपने बन्धुओंको कोई उपदेश देना चाहता हूँ। मैंने नम्रतापूर्वक उस दिशाकी ओर सकेत मात्र करनेकी चेष्टा की है जिधर हमारा कर्तव्य निहित है। मुझे इसकी आवश्यकता प्रतीत हुई, क्यों कि इस संक्रमणके कालमें जब चतुर्दिक उलटफेर हो रहा है और क्षणप्रतिक्षण पट-परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहा है भावनाओं और भावुकताकी धाराओंमें बहकर पथसे विमुख हो जाना असंभव नहीं है। फलतः निश्छल भावसे कर्त्तव्यकी ओर दृष्टि रखना हमारे लिए आवश्यक है। हम लेखन-स्वतंत्रता और विचार-स्वतंत्रताके नामपर स्वतंत्रका दुरुपयोग करना अनुचित समझते हैं पर साथ-साथ सुरक्षा और शान्ति व्यवस्थाके नाम पर पत्रोंकी स्वतंत्रता तथा जनताके मौलिक अधिकारोंका अपहरण भी अनुचितसमझते हैं। और इसी कारण देशके

(शेष पृष्ठ १२ पर)

कहानी

एटीकेट का डिप्लोमा

लेखक श्री बालकृष्ण कौशिक बी० ए० साहित्यरत्न

उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों एटीकेट से इतने प्रभावित होते हैं कि उसका ध्यान पगपग पर रखना पड़ता है। इस कहानी में एक घटना के आधार पर सुन्दर चित्रण किया गया है। कहानी रोचक तथा पठनीय है।

रमेश सगर्व स्वयम् को भौतिकवादी था। पाश्चात्य सभ्यता का वह दास और अपने देश की संस्कृति को गिरी हुई तथा हास्यास्पद समझता था। वी रहन-सहन व वेश-भूषा का प्रेमी और जेब में पैसे होने पर 'सिगार' पीता था। प्रातः आठ बजे उठना, उठकर दस बजे तक कोई उपन्यास या कहानी-पत्र पढ़ना, ग्यारह बजे तथा भोजन करना, तीन बजे तक करना, इसके पश्चात् रात्रि तक से मिलना, मनोरञ्जन के लिये थिएटर अथवा होटल जाना और बजे घर लौटकर भोजन कर सो —यह उसकी दैनिक-चर्या थी। घर के किसी काम की परवाह थी, के विषय में कोई चिन्ता। वर्ष तीसरे दर्जे में बी० ए० की पास की थी। स्वयम् को समझता कोटि का चित्रकार, कलाकार "जीनीयस !" और सोचता था कि बनाकर एक चित्र भी खेंच दिया दौलत तथा प्रसिद्धि दोनों पांव में।

जिस दिन से उसने एफ० ए० की पास की थी उस दिन से घर में किसी से न बनती थी। अपने परिवालों को वह गंवार समझता था किसी से सीधे मुँह बात तक न करता। अपने लिये उसने एक अलग नियत किया हुआ था। बाहर तो इस कमरे को ताला लगा जाता, ना तो सब से पृथक इसी कमरे में बिताता। किसी को इस कमरे में करने की आज्ञा न थी। अर्थाभाव अपने मित्रों से कहता, "अपने पिता से तो मैं तङ्ग आ चुका हूँ। ही "बैक-वर्ड" हैं। रुपये का उपयोग करना नहीं जानते। इन के साथ निर्वाह होना कठिन है।" रमेश की माता ग्रामीण स्वभाव की साधारण महिला थी। अधिक पढ़ी-लिखी न थीं। हिन्दी में पत्र अवश्य लेती थीं। अपनी संतान से उन्हें स्नेह था। नम्रता की वह मूर्त्ति थी। के पिता बाबू भोलानाथ यद्यपि एक में हैड क्लर्क थे और वेतन भी पाते थे फिर भी उनका रहन-सहन साधारण ढंग का था। मोटा खद्दर पहनते थे और अपने हाथ से दोनों समय गाय की सानी करते तथा दूध दोहते थे। गृहस्थी के किसी भी कार्य के लिये उनके घर में कोई सेवक न था। अपनी संस्कृति तथा धर्म-कर्म में उनकी आस्था थी। नित्य प्रातः मुँह अंधेरे उठकर गङ्गा-तट पर स्नान के लिये जाते; वहीं पूजा-पाठ करके घर लौटते तथा नित्य संध्या समय घंटे भर के लिये मन्दिर में जाकर भगवद् भजन करते। पति-पत्नि दोनों का धार्मिक प्रथाओं तथा देवी-देवताओं में विश्वास था। सब त्यौहार विधि पूर्वक मनाते और मंगलवार तथा पूर्णिमा के दिवस व्रत रखते थे। रमेश की दो छोटी बहनें तथा दो छोटे भाई थे। वे सब भी प्रत्येक बात में माता-पिता का अनुसरण करते थे। दोनों बहनों में बड़ी यद्यपि दसवीं कक्षा की छात्रिका थी और रमेश उसे अपने विचारों से प्रभावित करने की चेष्टा भी कभी कभी करता था, परन्तु वह भी उल्टे उसे ही स्वयम् को सुधारने की सलाह देती।

रमेश के लिये यह सब असह्य था। जितनी देर घर में रहता मन ही मन कुढ़ता रहता था। छोटे भाई यदि किसी काम से उसके कमरे में आते तो उन पर बहुत क्रुद्ध होता। बहनों तथा माता से सीधे मुँह बात न करता। यदि उससे घर के सम्बन्ध में कोई प्रश्न किया जाता तो खीजकर कटु उत्तर देता। भोलानाथ जी के तो वह सन्मुख तक न आता था। कई बार सोचता था कि कहीं नौकरी कर लें और घर से किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध न रखे। किन्तु यद्यपि भोलानाथ अपने पुत्र की भूल को भली भाँति समझते थे और रमेश के विपरीत भावों पर उन्हें क्रोध भी आता था, फिर भी वह सामर्थ्यानुकूल उसका हाथ तंग न रहने देते थे और इसी कारण से अपने लिये कोई कार्य-धंधा खोजने की ओर रमेश ने अभी तक विशेष रूप से ध्यान न दिया था।

बाबू भोलानाथ कई बार उसे समझाने का प्रयास कर चुके थे किन्तु जब कभी वह उसे समझाते रमेश को बहुत बुरा लगता। कई कई दिन घर से रुष्ट रहता। कई बार जब वह अपनी माता अथवा पिता के किसी कार्य पर टीका-टिप्पणी किये बिना न रह पाता अथवा किसी त्यौहार के दिन जान-बूझकर घर से अनुपस्थित रहता और पूजा इत्यादि में सम्मिलित न होकर सगर्व स्वयम् को नास्तिक कहता तो भोलानाथ के हृदय पर बड़ी चोट लगती। सोचते इसी समय पुत्र को घर से बाहर निकाल दें। संसार की वास्तविकता का अनुभव होने पर स्वयम् ही मूर्ख की आंखों से पर्दा हट जायेगा। किन्तु अपनी पत्नी के वात्सल्य-स्नेह की ओर देखकर क्रोध पीकर रह जाते थे।

पिता-पुत्र की यह प्रतिद्वन्द्विता एक दिन चरम सीमा को पहुँच गई। बाबू भोलानाथ के दफ़्तर जाने का समय था। घर के किसी कार्य से कुछ देर भी हो चुकी थी। बड़ी लड़की मनोरमा के वार्षिक परीक्षा के दिन थे अतः उसे परीक्षा-भवन तक पहुँचा कर आना था। किन्तु रमेश को इन सब बातों की लेशमात्र भी चिंता न थी। वह अपने कमरे में किसी मित्र के साथ मनो-विनोद कर रहा था। छोटे लड़के को उसके कमरे में भेजा गया तो वह उसकी सूरत देखते ही घुड़ककर बोला "बदतमीज, कहाँ घुसा आता है? निकल यहाँ से।" और उस बिचारे ने पिता की आज्ञा कहने के लिये मुँह खोला ही था कि रमेश ने उठकर एक थप्पड़ उसकी गाल पर दे मारा। छोटा बालक रोता हुआ पिता जी के पास लौट आया।

बाबू भोलानाथ ने दफ़्तर जाने के लिये कदम उठाया ही था। रमेश का यह अनुचित व्यवहार देखकर उनके तन में क्रोध से मानो आग लग गई—'छछोरेपन तथा नादानी की भी एक सीमा होती है। मूर्ख को बी० ए० तक क्या पढ़ा दिया। घर में एक बीमारी मोल ले ली। कहाँ तक सहन किया जाये। जब घर के प्रति वह अपनी कोई जिम्मेदारी महसूस नहीं करता तो ये विचारे ही क्यों उसके नाज सहें। जायें जहाँ जा सकता है। वह ऐसे पुत्र की सूरत तक देखकर प्रसन्न नहीं।

भोलानाथ आग-बबूला हुये रमेश के कमरे में आए। मारे क्रोध के उनका तमाम शरीर काँप रहा था। गरज कर बोले, "मेरी समझ में नहीं आता कि जब तुम अपने भाई-बहनों के लिये कुछ भी करने के योग्य नहीं तो घर में इन विचारों पर भार क्यों बने हुये हो? यदि इनसे अपने काम कराते हो तो इनके लिये कुछ करना भी तो कर्त्तव्य है।"

उन्हें इस प्रकार क्रोधित देखकर दोनों मित्र विस्मित हो उठ खड़े हुये। परिस्थिति अनुकूल न पाकर मित्र हाथ मिला कर चलता बना। रमेश भी कुर्सी एक ओर पटक कर कुछ उत्तर दिये बिना ही खूँटी से सूट उतार कर कपड़े तबदील करने लगा।

भोलानाथ उसका मनोभाव जानकर और भी क्रोधित हो बोले, "जाते हो मनु को स्कूल तक पहुँचाने अथवा मैं स्वयम् जाऊँ?"

रमेश बूट पहनते हुये बोला, "बस रहने दीजिए पिता जी, बहुत हो चुका। आपका घर आपको मुबारिक हो। मैं तो

[illegible] गवैये संगीत का प्रदर्शन कर रहे हैं।

बहुत पहले से जानता था कि इन "बैक-वर्ड" लोगों के साथ मेरा निर्वाह कठिन है। यदि मेरी आप लोग कोई इज्जत नहीं समझते तो कम से कम घर आए उस सज्जन की इज्जत का तो आपको ख्याल रखना चाहिये था। क्या सोचेगा वह अपने मन में कि रमेश के परिवार के लोग इतना 'एटीकेट' भी नहीं समझते।"

भोलानाथ की आँखो में खून उतर आया। उनके हाथ में यदि इस समय पिस्तौल होती तो वह अवश्य अपने ही पुत्र पर फायर कर बैठते। रमेश का टेनिस-रैकेट उठाकर चाहते थे कि जी भर कर दण्ड दे उस कुपुत्र की बुद्धि ठिकाने लगा दें किन्तु इस समय तक रमेश की माता भी वहाँ आ चुकी थी। उसने तथा बड़ी लड़की ने बीच में आकर उन्हें रोक दिया।

बाबू भोलानाथ मनोरमा को साथ ले घर से चलते हुये रमेश से बोले, "ध्यान रहे, संध्या को लौटकर मुझे तेरी अभागी सूरत घर में दिखाई न दे। यदि अंग्रेजीयत और एटीकेट पर अभिमान है तो अब घर लौट कर न आना।"

और उस दिन माँ के समझाने-बुझाने, रोने-धोने तथा पांव पड़ने पर भी रमेश हठ करके घर से चला गया।

⊙ ⊙ ⊙

किन्तु उसकी आँखों से धोके का आवरण हटने में अधिक दिन न लगे। संसार की वास्तविकता का कटु अनुभव होने पर शीघ्र ही उसकी बुद्धि ठिकाने लग गई। एक दो सप्ताह तक कभी इस मित्र के पास, कभी उसके पास ठहरता रहा। परन्तु जब सब ने उसकी किसी प्रकार से भी सहायता कर सकने में अपनी विवशता प्रदर्शित की तो एक धर्मशाला में ठहर कर नौकरी खोजने लगा। तमाम सरकारी दफ़्तरों में घूमा, बड़ी बड़ी फर्मों में गया, समाचारपत्रों के कार्यालयों में सम्पादकों से मिला, एक दो चित्र बनाकर भी भाग्य परीक्षा की किन्तु हर ओर से असफलता प्राप्त हुई। कहीं नौकरी न मिली और न किसी ने ही उसके चित्र की सराहना की। भोजन तक के लाले पड़ गए। कोई मित्र ऋण देने के लिये तैयार न था। सिगार, सिनेमा, होटल सब छुट गए। सूट और टाइयाँ कबाड़ी के यहाँ बेचनी पड़ी। बहुत ही दौड़-धूप के पश्चात् पुस्तकों की एक फ़र्म में ५० रुपये मासिक वेतन पर मामूली सी नौकरी मिली।

× × ×

रक्षा-बन्धन का दिवस था। रमेश को घर से गये कई मास बीत चुके थे। बाबू भोलानाथ तो पुत्र के विषय में चिंता करने के लिये तैयार न थे। उन्होंने अपना मन दृढ़ कर लिया था। किन्तु दोनों बहनें तथा उनकी माता बहुत दुखी थी। मनोरमा तो मन ही मन स्वयम् को कोसा करती थी कि उसी अभागी के कारण भैया को घर से निकलना पड़ा। प्रतिदिन ईश्वर से भैया के सकुशल लौट आने के लिए प्रार्थना करती थी। आज के दिन एक सुन्दर राखी भी उसने रमेश के लिये विशेषतया बना रखी थी कि भैया यदि भाग्य से लौट आये तो यह तो न मन में सोचे कि मनोरमा भैया को भूल गई है।

सब रमेश को याद कर रहे थे कि किसी ने द्वार पर दस्तक दी। मनोरमा ने द्वार खोला तो हर्ष से उछल पड़ी तथा दौड़कर भीतर आकर बोली, "माता जी, रमेश भैय्या आ गए!"

बाबू भोलानाथ को दफ़्तर से छुटी थी। भीतर बैठे समाचारपत्र देख रहे थे। चकित होकर सेहन में आये।

रमेश शुद्ध खादी के कपड़े पहने हुये थे, सिर पर गांधी टोपी लगाई हुई थी और पाँव में देशी चप्पल थी। लपक कर उसने पिता के चरण पकड़ लिये। भोलानाथ ने स्नेहातुर होकर उसे उठाते हुए कहा, "अरे अरे! बेटा, यह क्या करते हो। किन्तु रमेश ने पांव न छोड़े। दो अश्रुबिन्दु उसकी आँखों से निकलकर पिता के चरणों पर आ पड़े। वह अब सच्चा एटीकेट का डिप्लोमा ले आया था।

लेखकों को पुरस्कार

उत्तर प्रदेशीय सरकार की योजना

कला, विज्ञान और साहित्य के क्षेत्र में हिन्दी के मौलिक ग्रन्थों की रचना की अभिवृद्धि के हेतु उत्तर प्रदेश की सरकार इन विषयों से सम्बन्धित सभी लेखकों को आमंत्रि करती है कि वे अपने अपने ग्रन्थ हिन्दी परामर्शदात्री समिति के पास पुरस्कार के निमित्त विचारार्थ भेजें। इस वर्ष पुरस्कार निम्नलिखित विषयों पर दिये जाँयगे।

साहित्य—काव्य, नाटक, उपन्यास, निबंध, समालोचना, व्याकरण और भाषा-विज्ञान।

कला—अर्थशास्त्र, समाज शास्त्र, इतिहास, राजनीति और दर्शन।

विज्ञान—कृषि, बागवानी, वनस्पति-विज्ञान, प्राणि-शास्त्र, भूगोल इत्यादि।

समालोचना, समाज शास्त्र, कानून, मकेनिकल आर्ट की पुस्तकों और भूगोल के असाधारण ग्रन्थों पर विशेषरूप से विचार किया जायगा। निम्नलिखित नियमों का पालन होगा।

(१) जो ग्रन्थ पूर्व वर्ष में आ चुके हैं, उन पर विचार नहीं किया जायगा।

(२) प्रकाशित ग्रन्थों की छः प्रतियाँ और अप्रकाशित ग्रन्थ की ४ प्रतियाँ उत्तर प्रदेशीय सरकार के शिक्षा विभाग (ए-२) के सेक्रेटरी के दफ़्तर में अधिक से अधिक १ अगस्त, १९५० ई० तक पहुँच जानी चाहिए।

(३) अप्रकाशित ग्रन्थों की पांडुलिपियाँ फुलस्केप साइज़ के काग़ज पर हाशिया छोड़कर और लाइनों के बीच में डबल स्पेस देकर टाइप होनी चाहिए। हस्तलिखित प्रतियाँ भी ली जा सकती हैं यदि वे साफ साफ लिखी गयी हों। पांडुलिपियाँ सजिल्द होनी चाहिए।

(४) निश्चित तारीख के बाद आने वाली पुस्तकों को किसी दशा में भी स्वीकार नहीं किया जायगा।

(५) निबंधों या पुस्तक—पुस्तिकाओं की अजिल्द प्रूफ-प्रतियाँ स्वीकार नहीं की जांयगी। समाचार पत्रों से निकाली गयी कतरने (कटिंग्स) भी नही ली जांयगी

(६) अप्रकाशित पुस्तकों की एक प्रतिलिपि लेखकों को अपने पास रख लेनी चाहिए।

(७) भारतीय संघ के सभी राज्यों के ग्रन्थकार पुरस्कारों के निमित्त अपनी रचनाएं भेज सकते हैं।

(८) आयी हुई पुस्तकें और पांडुलिपियाँ किसी भी दशा में वापस नहीं की जांयगी।

(९) केवल मौलिक रचनाओं पर विचार किया जायगा। अनूदित एवं संकलित रचनाओं पर विचार नहीं किया जायगा।

(१०) पुस्तक या पांडुलिपि, जो भेजी जाय, की प्रत्येक प्रतिलिपि पर लेखक का स्थायी पता स्पष्ट अक्षरों में लिखा रहना चाहिए जिससे कि आवश्यकता पड़ने पर उनसे पत्र व्यवहार करने में कठिनाई न हों। पुस्तकों के साथ पत्र भी आना चाहिए।

(११) पुस्तकें रसीदी रजिस्टर्ड पार्सल द्वारा भेजी जानी चाहिए।

(१२) जनवरी १९४७ ई० से प्रकाशित पुस्तकें ही विचारार्थ भेजी जानी चाहिए।

ग्राहकों, एजेंटों और विज्ञापनदाताओं को समस्त पत्र व्यवहार मैनेजर, 'देशदूत' इलाहाबाद के नाम पर ही करना चाहिए।

साहित्यकार संसद

…कों की पुस्तकों के संबंध में प्रस्ताव

…साहित्यकार संसद की वार्षिक बैठक …अप्रैल १९५० को साढ़े पाँच बजे …भवन रसूलाबाद में राष्ट्र कवि …थिली शरण जी गुप्त की अध्यक्षता में …जिसमें संस्था के व्यवस्था सम्बन्धी …के अतिरिक्त लेखकों की सामान्य …ताओं पर विचार किया गया।

१—कापी राइट ऐक्ट के सम्बन्ध …वृन्दावनलाल वर्मा के संशोधन के …में प्राप्त पं० जवाहरलाल नेहरू के …र विचार किया गया और निश्चय …कि उन्हें वस्तु स्थिति से परिचित …ने का प्रयत्न किया जाय। अन्य …भाषाओं के लेखकों के उत्तरों …तिलिपि भी उनके पास भेजी जाय …वे उक्त संशोधन की आवश्यकता …वर्तमान कापी राइट से उत्पन्न विष- …और लेखकों की हानि का अनुमान …सकें। लेखकों के एक अन्तर …सम्मेलन का आयोजन किया …ससे उक्त प्रश्न पर अनेक दृष्टियों …र किया जा सके और लेखकों …के पक्ष में लोकमत संगठित …जा सके। इस बीच में मंत्री, …के विशेषज्ञों का उक्त कापी राइट …के सम्बन्ध में मत संग्रह का प्रबन्ध …।

…—निश्चय हुआ कि प्रकाशकों से …र पूछा जाय कि उनके पास ऐसी …प्रकाशित तथा अप्रकाशित पुस्तकें …नका कापी राइट वे खरीद चुके …पुस्तक, उसके कापी राइट के लिये …हुआ धन, प्रकाशन की अवधि …संस्करण उससे मिला अर्थ आदि …न्ध में प्रकाशक आदि साहित्यकार …को सूचना देना अस्वीकार करें तो …र से आग्रह किया जावे कि वह …सूचना प्राप्त करे; क्योंकि इसके …किसी प्रकार का समझौता …व है।

…—हिन्दी के राष्ट्र भाषा हो जाने के …इसकी विविध परीक्षाओं में बैठने …परीक्षार्थियों तथा पाठ्य पुस्तकों की …उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। उत्तर …के हाई स्कूल और इन्टरमीडियेट …बोर्ड के परीक्षार्थियों की संख्या एक …से अधिक है। हिन्दी साहित्य …न भी डेढ़ लाख विद्यार्थियों की …लेता है। अन्य निम्न और उच्च …अन्य प्रान्तों द्वारा संचालित परीक्षाओं …सम्मिलित होनेवाले विद्यार्थियों की …का अनुमान सहज है। पर इससे …को कुछ लाभ नहीं होता; क्योंकि …कार जिनकी रचनायें संग्रहीत करते …ते हैं नहीं देते।

निश्चय हुआ कि सभी सरकारी तथा गैर सरकारी परीक्षक संस्थाओं का ध्यान इस अन्याय और शोषण की ओर आकर्षित किया जावे और उनसे आग्रह किया जावे कि वे प्रकाशकों तथा संग्रहकारों की पुस्तकों पर विचार करते समय उनसे इस आशय का घोषणापत्र माँगें कि उन्होंने संग्रहीत रचनाओं के लेखकों को पारिश्रमिक दे दिया है।

४—साहित्यकार संसद ने प्रेस के लिये उत्तर प्रदेश की सरकार से जो ऋण माँगा था उसके सम्बन्ध में प्राप्त सरकारी उत्तर पर विचार किया गया। निश्चय हुआ कि सरकार का स्पष्ट मत जानने के लिये प्रधान मंत्री तथा शिक्षा मंत्री को फिर लिखा जावे, सरकार यदि संसद की एक लाख मूल्य की अचल सम्पत्ति के आधार पर, तीन प्रतिशत ब्याज के साथ दस हज़ार प्रतिवर्ष लौटाने की शर्त पर भी प्रेस के लिये ऋण न देना चाहे तो समझना चाहिये कि वह लेखकों की समस्या को स्थायी रूप से नहीं सुलझाना चाहती। ऐसी दशा में लेखक के पक्ष में लोकमत संगठित करने का प्रयन्त किया जावे और एक साधारण प्रेस खरीदने के लिए आवश्यक अर्थ संग्रह का कार्य आरम्भ किया जावे।

५—श्री मोतीलाल बनारसी दास प्रकाशन संस्था के सम्बन्ध में अश्क जी की शिकायत पर विचार किया गया और मंत्री को अधिकार दिया गया कि वह उक्त प्रकाशक से इस सम्बन्ध में पत्र व्यवहार करे। यदि प्रकाशक किसी समझौते के लिये प्रस्तुत न हो तो अश्क जी को कानूनी कार्यवाही की सम्मति और आवश्यक सहायता दी जावे।

६—श्री पदुमलाल पुन्ना लाल जी बक्शी की आर्थिक स्थिति और सांघातिक रोग के सम्बन्ध में खेद और चिन्ता प्रकट की गई और निश्चय किकिया गया उनके सम्बन्ध में मध्यप्रांत और उत्तर प्रदेश की सरकारों को लिखा जावे और उनकी उचित चिकित्सा का प्रबन्ध किया जावे।

७—निश्चय हुआ कि उत्तर प्रदेश की सरकार को लिखा जावे कि वह महाकवि निराला की प्रतिष्ठा के अनुरूप उनके लिये नियमित आर्थिक सहायता का वैसा ही प्रबन्ध करे जैसा बंगाल सरकार काजी नजरूल इस्लाम के लिए करती है।

८—मुनि कान्ति सागर जी ने साहित्यकार संसद के नाम से पाँच हज़ार की निधि एकत्र कर उसे न देने का जो अनुचित कार्य किया है उसके सम्बन्ध में खेद प्रकट किया गया। निश्चय हुआ कि उक्त धन सार्वजनिक होने के कारण इस सम्बन्ध में मंत्री आवश्यक वक्तव्य दें और इस सम्बन्ध में मुनि जी के गुरू तथा जैन सम्प्रदाय के अन्य सम्भ्रान्त व्यक्तियों को लिखा जावे जिससे वे ऐसे अवाञ्छनीय सदस्य के प्रति अनुशासन की कार्यवाही कर सकें।

९—निश्चय हुआ कि दक्षिण भारत के साहित्यकारों से सम्पर्क स्थापित करने के लिये साहित्यकार संसद एक प्रतिनिध मण्डल दक्षिण भेजे और दक्षिण के कवियों और लेखकों को उत्तर आने के लिये निमन्त्रित करें।

सचित्र साप्ताहिक 'देशदूत'

संवाददाताओं से निवेदन

संयुक्तप्रांत, मध्यप्रांत, मध्य भारत तथा राजपूताने के संवाद भेजनेवालों से निवेदन है कि वह अपने संवाद संक्षिप्तरूप में ही भेजने का कष्ट करें।

संपादक 'देशदूत'

गांधी कला भवन

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

इतिहासिक महापुरुषों के नाम पर किसी चीज का निर्माण करके हम स्वयं लाभ उठाते हैं। और उन महापुरुषों के प्रति सुन्दर श्रद्धांजलि होती है। बस्ती जिले में ऐसे स्मारकों की बड़ी कमी है। कमी ही नहीं है बल्कि यह भी कहा जा सकता है कि कोई स्मारक है ही नहीं। यह जिला बहुत बड़े इतिहासिक जिलों में से है। लेकिन इतने बड़े इतिहासिक जिले की तरफ किसी का ध्यान आज तक नहीं गया। महात्मा बुद्ध भगवान इसी जिले के उत्तरी भाग कपिलवस्तु (रोमनदेई) में ही पैदा हुये थे। महात्मा बुद्ध के पूर्वजों के इतिहासिक भग्नावशेष भवन आज भी बांसी तहसील के कई भागों में खड़े हैं। कई बौद्ध विहारों का चिह्न आज भी इस प्रदेश की धरती पर विद्यमान है।

जिलाधीश श्री कैलाशचन्द भित्तल के प्रयत्न और साहस से यहां एक सुन्दर गांधी कला भवन का निर्माण शिशु अवस्था में है। इस कला भवन से जिले की बहुत बड़ी कमी दूर हो रही है। 'गांधी कला भवन' गांधी जी के सिद्धांतों के अनुसार होगा। कला भवन के उद्घाटन के प्रारम्भ में श्री भित्तल साहब ने अपने भाषण में इस जिले के इतिहासिक तथ्यों को बताते हुये कहा "वास्तव में ऐसे भवन के स्थापित करने की मैंने एक विशेष आवश्यकता देखी। क्षेत्रफल तथा जनसंख्या के हिसाब से यह जिला प्रान्त का सबसे बड़ा है। ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से भी इसका बहुत बड़ा महत्व है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति के निर्माण में इसने बहुत विशिष्ट भाग लिया है। इसी जिला के अन्तरगत मरखौड़ा नामक स्थान पर सूर्यकुल श्रेष्ठ राजा दशरथ जी ने पुत्रेष्टि यज्ञ किया था। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान रामचन्द्र जी की जन्म भूमि और क्रीड़ास्थली अयोध्या इसी जिले का एक खण्ड है। महात्मा बुद्ध जिनकी जगत व्यापी वाणी तथा शान्ति और अहिंसा के दिव्य सन्देश से एशिया का कोना कोना गूंज उठा था। और अब भी गूंज रहा है। इसी जिले के उत्तरी भाग में लुम्बनी नामक स्थान में आविर्भूत हुये थे। साम्प्रदायिक एकता का पाठ पढ़ाने वाले महात्मा कबीर, ने इसी जिले के अन्तर्गत मगहर नामक स्थान पर शरीर त्याग किया था। गुप्त तथा कुशन काल के प्रस्तरखण्ड तथा मूर्तियां इसी जिले के भग्नावशेष खंडहरों में मिला है। शीशे का कार्यालय यहीं उपलब्ध हुआ है, जिसके अनुसन्धान की तरफ पुरातत्व विभाग ने ध्यान दिया है। यह आर्यवर्त के उस स्वर्ण युग का वर्णन है। जब श्याम, अनाम कम्बोडिया से यहाँ का व्यापार होता था।"

महात्मा जी हमारे देश के महान युग निर्माता थे। हमारे राष्ट्र पिता थे। हम कई शदियों तक उनके ऋण से उत्तीर्ण नही होंगे। उनके प्रातः स्मरणीय नाम पर गांधी कला भवन खोलते समय पबलिक सर्विस कमीशन के अध्यक्ष श्री अमरनाथ झा महोदय ने बहुत थोड़े और सारगर्भित भाषण में श्रोताओं को मुग्ध करते हुये कहा "बस्ती जिले में आने का यह मेरा प्रथम अवसर है। जिलाधीश महोदय ने गांधी कला भवन स्थापित करके जिले की अच्छी सेवा की है। ग्रीस देश में पहिले दो कलाओं पर अधिक जोर दिया जाता था। शारीरिक विकास और संगीत कला का। यह कला वहाँ बहुत आवश्यक समझा जाता था। हमारे देश में भी कहा गया है। कला और विद्या विहीन मनुष्य पशु तुल्य है। अब हमारे देश के विद्वानों का ध्यान इधर भी गया है। कुछ न कुछ सबका ध्यान कला संगीत की तरफ आकर्षित हो रहा है। यहाँ भी कला, संगीत और अन्य कला सम्बन्धी विषयो का काम होगा। यह सब देश के लिये शुभ लक्षण है। संगीत भी एक सुन्दर कला है। विद्या से सम्बन्ध रखता है। एक विषय है।

"मैं हिन्दी साहित्य सम्मेलन का सभापति रह चुका हूँ। आज कल उसका कार्यवाहक सभापति हूँ। सुना है यहाँ पिछले साल कवि सम्मेलन भी सफल रहा। मैं हिन्दी की सफलता चाहता हूँ। हिन्दी भाषा और उसकी नागरिक लिपि की उन्नति हो, यह मेरी मनोकामना है। हिन्दी सबके लिये सुलभ हो। हर एक को हिन्दी की उन्नति की तरफ योगदान देना है। हिन्दी आज राष्ट्र भाषा और राष्ट्रलिपि है। बहुत बड़ा सम्मान मिला है। लेकिन हमको संकीर्ण नहीं बनना है। जहां से भी हम नागरिक लिपि और भाषा की तरक्की कर सकें, वह सब उद्योग करना है। लेकिन साथ ही साथ हम यह भी कह देना चाहते हैं। हमें किसी प्रांतीय भाषाओं से द्वेष नहीं करना है। न उर्दू के साथ घृणा। हम उर्दू की भी तरक्की चाहते हैं। लेकिन साथ ही साथ यह भी साफ कह देना चाहता हूँ। उर्दू सारे राष्ट्र की भाषा और फारसी लिपि नहीं हो सकती है। प्रादेशिक भाषा के नाते हम उसकी तरक्की चाहते हैं। हमारे प्रान्त में बहुत से लोग उर्दू पढ़ते, बोलते और लिखते हैं। उनके विकास में हम सहयोग दें। उर्दू के नाश से हमारा नुकसान होगा। दोनों भाषाओं में आदान-प्रदान हो। उर्दू वाले हिन्दी की विशेषताओं को अपनाये और हिन्दी वाले उर्दू वालों की। दोनों के साहित्य में मौलिक विशेषतायें हैं। आपस में लेन देन की भावना बढ़ानी चाहिये। हिन्दी विकास बहुत आगे बढ़ाना है। लेकिन यह काम संकीर्ण मनोभावना से नहीं हो सकता। हिन्दी को मुर्दा जबान नहीं बनाना है। हिन्दी सारे हिन्द की भाषा है। इसकी उन्नति सारे देश की उन्नति है। अदब और जबान के बारे में झगड़ना बेकार हैं। प्रान्तीय भाषाओं की उन्नति पर भी हमें ध्यान रखना चाहिये। उनका अपना स्थानीय महत्व है। हमको जनपदीय भाषाओं का भी सम्मान करना है। अवध भोजपुरी और अन्य जनपदीय भाषाओं में बहुत बड़ी विशेषता है। इन जनपदीय भाषाओं को अगर हमने नष्ट किया तो हम स्वयं अपना विनास करेंगे। ऐसा न होने पावे। स्थानीय भाषाओं में मौलिकता है और उनमें बहुत गुण छिपे हैं। अवधी, भोजपुरी और बुलन्दखंडी जनपदीय कविताओं में मौलिकता टपकती है। मैंने बुन्देलखंडी और अवधी में कवितायें सुनी हैं। बहुत अच्छा लगा। जनपदीय भाषाओं का सम्बन्ध माता के दूध के साथ है। आप उसे गवारी भाषा कहकर उसकी उपेक्षा न करें बल्कि उसे हृदय से लगाने की कोशिश करें। गवारूँ भाषाओं में भी अपनापन भरा है। बोलियां थोड़ी थोड़ी दूरी पर बदल जाती है। जनपदीय भाषाओं की अवहेलना न करें। मातृभाषायें प्रभावोत्पादक होती हैं। गाँव की गवारू भाषा से भी हमें बहुत कुछ सीखना है।

महात्मा जी को मैंने १९१६ में कांग्रेस के अवसर पर देखा था। ३४ वर्ष के भीतर महात्मा जी ने अपने देश और विदेश की बहुत बड़ी सेवा की है। समाज के हर अंग की तरफ उनका ध्यान गया। कोई विषय अछूता उन्होंने छोड़ा नहीं। आखिर में शिक्षा में भी उन्होंने वर्धा बुनियादी के नाम से एक अच्छी योजना मुल्क के सामने पेश किया। हिन्दू समाज की तो बहुत बड़ी सेवा की है। पिछड़े हुये समाज को उन्होंने बहुत आगे बढ़ाया। उनके अनवरत परिश्रम और त्याग भरे जीवन से ही देश को आजादी मिली। महात्मा जी की अन्तिम यात्रा भी मैंने गंगा जमुना के पवित्र संगम पर देखा। अस्थि विसर्जन का दृश्य तो बड़ा ही भव्य था। लाखों नर नारियों के मुख से अल्ला ईश्वर तेरे नाम, सब को सन्मति दे भगवान। यह हिन्दू मुसलमान के मिलन का सुन्दर मंत्र हमें महात्मा जी ने दिया। उनके प्रेरणा ही संगम पर सभी सम्प्रदाय के लो... ने महात्मा जी के सुन्दर मंत्र का उच्चा... रण किया। महात्मा जी ने ही ... सम्प्रदाय के लोगों को इतने निकट ... इसमें सन्देह नहीं, अगर महात्मा जी ... वर्ष हमारे बीच और होते तो अ... ही ये दोनों कौमों में सच्ची एकता ... में सफल होते। धर्म—धर्म में मह... जी ने भेद नहीं किया। यह सुन्दर ... हमें महात्मा जी ने ही हमें दिया। ... अपने सिद्धान्तों के अनुसार उन्होंने ... भर काम किया। जब आप गांधी ... भवन में प्रवेश करें, तब एक बार मह... जी के जीवन पर दृष्टि फेक लें। ... साहस भरे जीवन और कार्य से ... बड़ी प्रेरणा मिलेगी। महात्मा जी ... जीवन पथ पर चल कर हम अपने ... को बहुत समुन्नत कर सकते हैं। मह... जी अपने कार्यों से अमर है। लेकिन ... नहीं समझता कि इतिहास में अब ... इतना बड़ा कोई व्यक्ति पैदा हुआ हो...

(शेष पृष्ठ ५ के आगे)

...न्त में २७ फरवरी १९१७ ...ड में आम हड़ताल हुई। सब ...ठप्प हो गया। हड़ताल को ...र देने के लिये सरकार ने ...को आज्ञा दी, कि वह हड़ता-... गोली चलावे पर वे सब ...र बैठे। उन्होंने विहत्थों पर ...लाने से इन्कार कर दिया। ...ने सरकार को चौपट कर के ...पने हाथों मे ले लो और १९-...१७ को जार को पदच्युत कर ...ने की राजसत्ता सदा सदा के ...न्त कर दी।

...मक काल के लिये राजकुमार ...न मन्त्रित्व में अस्थायी सरकार ...ई गयी। यह चल न सकी ...की सरकार बनायी गयी। पर ...सन्तुष्ट रहे और वे "शान्ति, ...रोटी" का नारा लगाने लगे। ...के हाथों में सम्पूर्ण राजसत्ता ...तथापि ७ नवम्बर १९१७ को ...रकार उतार फेंकी गयी और ...सभापतित्व में सोवियत सरकार ...ने जनवरी १९१८ को ब्रेस्ट ...स्थान पर जर्मन सरकार से ...युद्ध समाप्त कर दिया।

...र्ष १० जुलाई को प्रथम ...विधान पास हो गया। ...निलिखित बातें महत्व पूर्ण

...) समस्त भूमि उसके पूर्व ...से छीन कर राष्ट्र की बना दी ...को सब किसानों में बाँटने का ...गा।

...) समस्त प्राकृतिक चीजें—बैंक ...सम्पत्ति सरकारी सम्पत्ति हो

...) यातायात साधन, कल-...तथा खदानें सभी सरकारी हो

...) सब स्वस्थ नागरिकों के ...करना तथा काम पाना ...एवं धर्म बनाया।

...) व्यापारियों, मालिकों तथा ...नारियों को छोड़ कर जो बिना ...न प्राप्त करते हैं, सभी १९ वर्ष ...से बड़े नर-नारियों को मताधि-...गया।

...न में सरकार की रूपरेखा इस ...निश्चित की गई—स्थानीय, ...प्रजातन्त्र तथा राष्ट्रीय लोक ...सोवितें। स्थानीय सोवियत में ...निर्वाचित करेगी और आगे ...अन्य सोवितों को निर्वाचित ...निर्वाचित करेंगे—यह तो हो ...राष्ट्रीयकरण न किया जा ...लड़ाई में मित्र राष्ट्रों ने ...रक्खा था और आर्थिक ...ध्वंस सी हो चुकी थी। लाल ...आक्रमणकारियों को पराजित ...या, पर कृषि प्राधान्य होने से समाजवाद को जमाया न जा सका। परिणामस्वरूप "नवीन आर्थिक नीति" का श्रीगणेश सन् १९२१ में किया गया और जिसमें वैयक्तिक व्यवसाय, स्वतन्त्र विपार्ण तथा मूल्य प्रणाली चलाई गई। जिसमें विदेशी पूँजी को भी स्थान दिया गया। यह नीति सात वर्षों तक चलती रही और जैसे जैसे आर्थिक दशा सुधरने लगी, वैसे ही वैसे सहयोगी सहकारिता की शरण ली जाने लगी। १९२४ में महान लेनिन का देहान्त हुआ और ट्राटस्की को भगाकर स्टालिन ने शक्ति ले ली और पंच वार्षीय योजनाओं से माली दशा सुधारने लगी और उद्योग धन्धों तथा कृषि का राष्ट्रीयकरण एवं समाजवादी बनाया जाने लगा, इस प्रकार सोवियत संघ का अनुष्ठान हुआ और राजनीतिक एवं आर्थिक संकारों से सोवियत भूलि उच्चास्तर पर लाई जाने लगी। यह क्रान्ति जनक्रान्ति एवं जनता का इतिहास है, जो समस्त पिछड़े हुए देशों के लिये एक नवीन सन्देश है।

सोवियत सरकार

वर्तमान सोवियत संघ सोलह स्वतन्त्र प्रजातन्त्रों का एक स्वतन्त्र संघ है। यह सब प्रजातन्त्र स्वतन्त्र इच्छा से इस संघ के मनोनीत सदस्य हैं। इन पर सन् १९३६ का सोवियत विधान लागू होता है। इसके अनुसार सभी सदस्य प्रजा-तन्त्री सदस्य अपने अपने सभी विषयों पर काम—नियम बनाने तथा शासन—करते हैं केवल सेना, रक्षा आदि ऐसे विषय हैं, जो केन्द्रीय सरकार के अधि-कार में है, क्योंकि उनसे राष्ट्र का कल्याण पूरी तरह सुरक्षित रहता है। इस समय वहाँ ७०,००० स्थानीय सोवियत अर्थात् निर्वाचित प्रतिनिधियों की सभायें विद्यमान हैं। इनके सदस्यों को जनता स्वयं चुनकर भेजती है। निर्वाचन खुफिया मतदान (बेलट) से इनके ऊपर क्षेत्रीय, प्रान्तीय तथा प्रजा-तन्त्री सभायें हैं, जिसमें द्विगृहीय पार्ले-मेण्ट है जिनके बैठकें साल में दो बार होती हैं।

चुनाव प्रत्येक वयस्क (१८ वर्ष तथा ऊपर) नागरिक नर तथा नारी—भाग लेता है। इस १९३६ के विधान में धार्मिक कार्यकर्ताओं, व्यवसाइयों तथा मालिकों को भी मतदान का अधिकार दे दिया गया है, क्योंकि अब कुछ अंश को छोड़कर सभी उद्योग-धन्धे, कामकाजों का राष्ट्रीयकरण हो चुका है।

सुप्रीम काउन्सिस ३७ सदस्यों की एक प्रेसीडियम चुनती है, जो सुप्रीम काउन्सिल की सभा न होने पर सभी नियम बनाने तथा शासन करने के अधि-कार प्रयोग करती है। सुप्रीम काउन्सिल काउन्सिल आफ पीपुल्स कमीसर भी चुनती है, जो सरकार के प्रत्येक विभाग के प्रधान होते हैं। इसमें सभी आर्थिक विभाग आ जाते हैं। प्रत्येक प्रजातन्त्र में इसी ढंग की राजनीतिक रेखा है।

यह तो रही नियम बनाने एवं शासन करने की बात। अब नये न्याय का ढंग देखिये। सर्वोच्च न्याय-कर्त्ता होती है सुप्रीम कोर्ट। इसको भी सुप्रीम काउ-न्सिल नियुक्त करती है, पर केवल पाँच वर्षों के लिए। यह सदस्य प्रजातन्त्रों के बीच जन अधिकारों तथा न्याय के नियमों के विरुद्ध खड़े हुए विषयों पर न्याय देती है। प्रत्येक प्रजातंत्र में भी ऐसे हा सुप्रीम कोर्ट बने हुए हैं। इस प्रकार राजनीतिक सोवियत संघ की एक विशे-षता है।

सोवियत संघ को सरकार

रूस में कम्युनिस्ट आन्दोलन ने जो कि बाल्शेविमों का परिवर्तित रूप है—क्रांति की शिखा उद्दीप्त की थी और जन-राज्य स्थापित करने का श्रेय भी इसीको है। अतएव आज यही दल सर्वशक्तिमान् है। इसमें सभी निपुण, कार्य-कुशल, कामकाजी बुद्धिजीवियों तथा शिल्पियों को स्थान प्राप्त है। इसमें नेतागिरी से लेकर साधारण सदस्यता तक के लिये कामकाजी होना आवश्यक है। युवक तक चुन लिये जाते हैं, अगर वे अध्यवसायी एवं कार्य निपुण हों तो नवसदस्य विशेष कर युवक संगठनों से चुने जाते हैं जैसे जैसे "कास्मोमोल्स" तथा "यङ्ग पायोनि-यर्स"। प्रथम तो १५ से ३० वर्षीय एवं वर्षीया युवक-युवतियों का तथा द्वितीय १० से १६ वर्षों के बालक-बालिकाओं का संगठन है। कम्युनिस्ट दल की सद-स्यता ५० लाख से ऊपर है, जिसकी टुकड़ियाँ प्रत्येक औद्योगिक नगर में विस्तृत है, जो आल यूनियन पार्टी कांग्रेस बना लेती है। श्री वेब्स के अनु-सार यह दल "नेतागिरी सिखाने का स्थान" है जिसके मस्तिष्क एवं चुस्त कार्यकर्त्ता नाम और शक्ति सहज ही में प्राप्त कर लेते हैं। इनमें काम के प्रति अगाध प्रेम एक विशेष बात है। ये कठिन से कठिन काम को भी जी-जान हथेली पर रखकर करते हैं।

सोवियत सरकार तथा कम्युनिस्ट दल का कोई साथ नहीं। हाँ इतना अवश्य है कि सोवियट सरकार के सभी उत्तरदायी स्थानों पर कम्युनिस्ट दल के कार्यकर्ता रहते हैं और प्रत्येक सरकारी विषयों पर जो दल की राय होती है,

(शेष अगले अंक में)

(शेष पृष्ठ ६ के आगे)

ऐसी पत्रकारिता की आवश्यकता है जो उत्तरदायित्वपूर्ण हो और राष्ट्र की विकट परिस्थित में तुला को संतुलित रखने में समर्थ हो। भारत के पत्रकार देशभक्त और राष्ट्रसेवी रहे हैं, वर्तमान युग में वे अपनी उसी देशभक्ति और राष्ट्र प्रेम के द्वारा अपने कर्तव्य की पूर्ति में समर्थ हों यह हमारी कामना है। इसीमें हमारे कर्तव्य और अधिकारों की पूर्ति तथा रक्षा है।

हमारा पेशा

अब मैं दो शब्द अपने पेशे के सम्बन्ध में भी कहना चाहता हूँ। अब इस देश में पत्रकारिता कठिन तपस्या, कठोर कष्ट सहन और त्यागमय जीवन के पथ का अवलम्बन करते हुए आगे बढ़ी है। वैसे तो पत्रकार के लिए सदा तपस्वी, संघर्षशील तथा कष्टसहिष्णु होना आवश्यक है। हमारा पेशा ही ऐसा है कि इन गुणों के बिना हम चल ही नहीं सकते। एक ओर हम बुद्धिमानों हैं तो दूसरी ओर जनता जनार्दन के सेवक और उसके अधिकारों के रक्षक हैं। हम न केवल अपने प्रति प्रत्युत जन-समाज के प्रति उत्तरदायी हैं, अपने राष्ट्रों के अतीत, वर्तमान और भविष्य के प्रति भी उत्तरदायी हैं। इस बोझ का निर्वाह भला कठिन तपस्या और त्याग के बिना हो ही कैसे सकता है? इस देश के पत्रकारों ने इसी परम्परा से पोषण और विकास की उपलब्धि को है। हमें भविष्य में भी जीवन के लिए इसी पथ का अवलम्बन करना होगा, पर इसके साथ साथ आज की बदली हुई परिस्थितियों भी हैं जिनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। अब वह युग आ गया है जब प्रेस और पत्र ने उद्योग और व्यवसाय का रूप ग्रहण किया है। समाज के जीवन में पत्रों का स्थान दिन प्रति दिन महत्वपूर्ण होता जा रहा है। पत्रों की मांग और खपत दिन प्रति दिन बढ़ती चली जा रही है और बढ़ती चली जायगी। छपाई की कला में विज्ञान ने जो उन्नति की है उसके फलस्वरूप पत्रों की रचना और उनके उत्पादन में आश्चर्यजनक व्यापकता और परिवर्तन संभव हो गया है। उद्योगपतियों और पूँजीपति व्यावसायिकों के लिए पत्र व्यवसाय की ओर आकृष्ट हो जाना ऐसी स्थिति में स्वाभाविक है। साथ ही साथ समय के परिवर्तन ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि किसी भी पत्र का उत्पादन और संचालन आधुनिक युग में बिना पूँजी के संभव नहीं है। फलतः पत्रों का व्यवसाय पूँजीपतियों के हाथ में चला जा रहा है। दुनिया के अन्य देशों के पत्र-व्यवसाय पर आप दृष्टिपात करें तो आप देखेंगे कि प्रायः सर्वत्र ही प्रेस के संचालन का सूत्र पूँजीपतियों के हाथ में पहुँच चुका है। हमारे इस देश में भी हम उसी दिशा की ओर बढ़ते चले जा रहे हैं भले ही यह स्थिति वांछनीय न हो तथापि ऐसा लगता है कि यह गति अनिवार्य है जिसे इस युग में रोकना संभव नहीं है। स्थिति के इस परिवर्तन ने हम पत्रकारों को भी दूसरी दिशा की ओर सोचने को बाध्य किया। अवश्य ही पत्रकार त्यागमय और कष्टमय जीवन बिताने के लिए तैयार है तथापि यह संभव नहीं है कि वह पूँजीपतियों को यह अवसर प्रदान करे कि वे उसके जीवन से लाभ उठाकर उसका शोषण करें। पत्रकारिता एक ऐसा व्यवसाय है जो केवल यन्त्र और पूँजी के द्वारा नहीं चल सकता। उसके लिए मनुष्य की कलात्मक प्रवृत्ति, उसकी आन्तरिक कल्पना शक्ति तथा उसकी आत्मा की भावनामयी सहज उन्मुखता भी आवश्यक है। फलतः पत्रकार की कला और स्वाभाविक अन्तरशक्ति के बिना पूँजीपति की पूँजी उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकती। जब यह स्पष्ट है तब पत्रकार अपने अन्धशोषण को कभी स्वीकार नहीं कर सकता। मैं उन लोगों में हूँ जो पत्रकार के पेशे में 'ट्रेड यूनियनिज्म' को ले आना उचित नहीं समझता तथापि मैं यह अवश्य समझता हूँ कि हम पत्रकार धनलोलुपों के द्वारा अपनी कला का शोषण और अपनी लेखनी के साथ व्यभिचार नहीं होने दे सकते। इस खतरे का प्रतिकार किस प्रकार किया जाय इस पर पत्रकारों को विचार करना है। हमारे देश में अब तक कोई ऐसी संस्था का उदय नहीं हुआ जिसके द्वारा पत्रकार संघबद्ध हो सकें। विदेशी भाषा के पत्रों के बड़े-बड़े सम्पादकों ने तो ऐसी संस्था की एक बुनियाद भी रखी है पर हम देशी भाषा के पत्रकार और विशेषतः हिन्दी भाषा के पत्रकार तो कभी एक सूत्रता प्राप्त ही न कर सके।

यदि हमें शोषण के अभिशाप से अपने को बचाना है तो ऐसी संस्था की स्थापना की अविलम्ब चेष्टा होनी चाहिये अच्छा हो यदि आपका पत्रकार-संघ और यह सम्मेलन इस दिशा की ओर पग उठाये और यदि समस्त देशी भाषा के पत्रों का नहीं तो कम से कम आरंभ में हिन्दी भाषा के पत्रकारों की एक अखिल भारतीय संस्था को संघटित करने की चेष्टा करें। अतीत में ऐसी चेष्टाएँ की गयीं किन्तु फलवती सिद्ध न हुईं। अब ऐसे प्रयत्न को सफल बनाना ही होगा अन्यथा अपनी हानि के लिए तैयार हो जाना होगा। मैंने हिन्दी पत्रकारों के संघ की बात कही पर इसका अर्थ यह न समझा जाय कि दूसरी भाषा के पत्रों की हम उपेक्षा करना चाहते हैं। हिन्दी भाषा के पत्रों को इस ओर अग्रसर होकर अपनी उस कमी को पूरा करना चाहिये जो अब तक उनके उपहास का कारण रही है। स्मरण रखना चाहिये कि हिन्दी राष्ट्रभाषा हो गयी है और नागरी राष्ट्र लिपि का स्थान ग्रहण कर चुकी है। आगामी कुछ वर्षों में हिन्दी भाषा का प्रसार अनिवार्य है। इसके सिवा साक्षरता की वृद्धि अवश्यम्भावी है जिसके फलस्वरूप क्रमशः हिन्दी पत्रों की माँग और खपत बढ़ेगी। स्पष्ट है कि हिन्दी यदि राष्ट्र भाषा के पद पर समुचित रूप से आसीन होती है तो हिन्दी पत्रों का प्रसार भी अनिवार्यतः बढ़ता है। फिर राष्ट्रभाषा के पत्रकारों को तो और भी अधिक संघबद्ध होकर अन्यों के मार्ग निदर्शन की योग्यता प्राप्त करनी चाहिये।

अपने पेशे के सम्बन्ध में मैं दूसरी बात की ओर भी ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ। अपनी उन्नति और अपने विकास का सर्वोत्तम मार्ग यह है कि हम अपनी त्रुटियों की ओर ध्यान दें। हिन्दी राष्ट्रभाषा हो गयी और हिन्दी के पत्रकार समय पाकर अपना उचित और महत्वपूर्ण स्थान भी ग्रहण करेंगे पर आज हम हिन्दी के पत्रकारों और हमारे पत्रों की क्या दशा है इस पर निष्पक्ष रूप से दृष्टिपात करने की आवश्यकता है। क्या यह सत्य नहीं है कि हिन्दी के पत्रों का स्तर अपने देश की अन्य भाषाओं के पत्रों की तुलना में अत्यन्त गिरा हुआ है? अंग्रेजी भाषा के पत्रों के सामने तो हम नगण्य हैं ही पर साथ साथ बंगला, गुजराती, मराठी और तामिल, तेलगू भाषाओं के पत्रों की तुलना में भी हमारा कलेवर अत्यन्त हीन दिखाई देता है। समाचारों के संकलन सम्पादन, संवादों के प्रदर्शन, पत्रों की सजावट, उनके वेश तथा उनके स्वरूप सभी में हम दूसरों से कहीं पिछड़े हुए हैं। क्या हमारे लिए यह दुःख की बात नहीं है कि हम राष्ट्रभाषा के पत्रकार होते हुए सब के मुकाबले में इतने पीछे पड़े रहे! हम मानते हैं कि हमारे लिए साधनों का अभाव है और हमारी स्थिति कभी अनुकूल नहीं रही फिर भी हमारी हीन दशा का कारण केवल इतना ही नहीं है। अंग्रेजी पत्रों को जो सुविधा मिलती है उसे हम आप जानते हैं। छपाई की, तारों की, टेकी प्रिंटर की, मुद्रण यन्त्र की समाचार-संकलन करने वाली एजेन्सियों की सुविधाएँ अंग्रेजी पत्रों को प्राप्त होती है। हम इन सबसे वंचित हैं। यह भी सत्य है कि विदेशी भाषा के पत्रकार और पत्र दुर्भाग्य से इस देश में अब तक उन लोगों के द्वारा भी समादरित होते और सहायता प्राप्त करते रहे हैं जो देश के नेता और स्वतन्त्रता के कर्णधार हैं। हम अपने ही देश में अपने ही लोगों द्वारा उपेक्षा पाते हैं। इसे सभी स्वीकार करेंगे। इन बातों का भी प्रभाव विपरीत पड़ा है और हमारे विकास का कुण्ठन होता रहा है। पर इतना मान लेने पर भी हमें स्वीकार करना पड़ेगा कि हमने अपनी स्थिति की उन्नयन करने की ओर ध्यान नहीं दिया। अंग्रेजी के ...
हमारे देश में अन्य भाषा के पत्र
निकलते हैं जो उसी प्रकार सुविधाओं
वंचित रहे हैं जैसे हम, फिर भी ...
अपने स्तर को पर्याप्त रूप में ...
पर हिन्दी भाषा के पत्रकार इसमें ...
न हुए। दूसरों को दोष दे देने ...
हमारा काम नहीं चल सकता। हमें
स्वीकार करना पड़ेगा कि हिन्दी भाषा
पत्रकारों में साधारणतः उस ...
की न्यूनता है जो पत्रकारों में आ...
है। इसमें अध्ययन का अभाव है ...
रूकता की कमी है, हममें वह ...
चेतना, वह उत्सुकता, वह जिज्ञासा
पत्रकारिता की मोहकता से ...
उठने की वह शक्ति कहां है जो ...
में होना आवश्यक है। हममें कहाँ
पत्रकार है जो रहस्यों से आवरित ...
नाओं के उद्घाटन में समर्थ होते हैं
मन्त्रिमंडलों की गति का पता ल...
हैं और जो वातावरण की लहरों ...
आने वाले क्षणों की सूचना प्राप्त
लेते हैं। हिन्दी भाषा की पत्रकारि...
ऐसे कलाकारों की उत्पत्ति करनी
होगी और हम पत्रकारों को अपनी ...
की इस न्यूनता का परिहार करना
पड़ेगा। हमारे ऊपर इसका उत्तरदा...
है, क्योंकि हम उस भाषा के पत्रकार
जो महान भारतीय राष्ट्र की राष्ट्र...
बन चुकी है। हमें इस बात के लिए
प्रयत्न करना है कि इस सम्बन्ध में ...
सहायता सरकार और जनता दोनों
करे। सरकार से तो हमें यह सहायता
होनी चाहिये कि वह हिन्दी में
तार द्वारा समाचार भेजने की सुवि...
का अधिकाधिक विकास करे। हि...
टेलीप्रिंटर और लाइनोटाइप ...
के प्रश्नों को अपने हाथ में ले ...
इसके लिये आवश्यक लिपि-सु...
प्रयास करे। लिपि-सुधार के लिये ...
को ही अग्रसर होना होगा और ...
लिपि विशेषज्ञ विद्वानों को एक...
एक ऐसे लिपिमाला तैयार क...
चेष्टा करनी होगी जो एक ओर
अधिक से अधिक लोगों को ग्राह्य
दूसरी ओर मुद्रण-यंत्रों के अनुकूल
भाषा में भी एक रूपता लाने का
सरकार को ही उठाना होगा। ...
भाषाविज्ञ विद्वानों का एकत्रीकर...
जिनके द्वारा विविध विषयों के पारि...
शब्दों का प्रामाणिक कोश बने ...
उपयोग पत्रकार कर सकें। ...
हम यह सहायता चाहते हैं ...
अधिकाधिक मात्रा में देशी ...
पत्रों को प्रश्रय-प्रदान करे जिससे ...
आर्थिक स्थिति ऐसी हो जाय ...
पत्रकारों को अनुकूल स्थिति ...
करने का अवसर प्रदान कर सके ...
भी हिन्दी के पत्रकार अंग्रेजी के ...
की तुलना में इतना कम वेतन ...
कि उनकी जीवनयापन भी कठि...
रहता है। फलस्वरूप योग्य व्यक्ति ...
पत्रकारिता की ओर आकृष्ट ...

(शेष पृष्ठ ४ के आगे)
...भी इसी प्रकार का जादू प्रसिद्ध ...नमती से मिलता-जुलता है। ...गवर्नमेंट के म्युजियम बुलेटिन में ...ार के ओझा और उस्तादों के ... किस्से लिखे हुये हैं कि कैसे ये ...न्तर्ध्यान होकर अपनी इच्छानुसार ...भी जानवर के शरीर में प्रवेश कर ...हैं।

..."भानमती" के किस्सों में एक ... एक वकील की है जो बहुत ही ...ंजनक और रोचक है। उस ...का उल्लेख भी श्री "गोड़ की रिपोर्ट ...बीदार के वकील मोहम्मद सुल-...साहेब को खाड्डू जी की ओर से ...न्य बाबूजी नाम के व्यक्ति के ...मुकदमें की पैरवी करने के कारण ...ी परेशान होना पड़ा। बापू जी ...के साथियों ने मुलतानी साहेब ...माया कि ये इस चक्कर में न पड़ें ...मले को हाथ में न लें; किन्तु वे ...ाह न माने।

...मुकदमा शुरू हुआ तो जिरह के ...लतानी साहेब को सामने बाक्स ...े बापूजी बिलकुल भी नजर ... जज तथा अन्य उपस्थित ... समझाने का भी उन पर ... नहीं पड़ा। अन्त में बाध्य हो ... दिन के लिये मुकदमा इस ...स्थागित कर दिया कि वकील

(शेष पृष्ठ १२ के आगे)
...तक योग्य व्यक्ति इधर न ...तक हमारे पत्रों का स्तर भी ...ा कठिन ही होगा।

...आपका बहुत सा समय ले लिया ...समझ में जो बातें आवश्यक ...ी ओर संकेत भी कर दिया। ...दृढ़ विश्वास है कि हम पत्रकारों ...उज्वल है। हमें अपने राष्ट्र ...पर विश्वास है और मैं जानता ...ा यह देश शीघ्र ही जगत में ...प्रौढ़ प्रजातन्त्रात्मक शक्ति के ...तरित होगा। भारत की स्व-...ार के लिए आतङ्क और वेदना ...युत श्रेय और अभ्युत्थान का ...ी कि—हमारे इस देश के ...ी वह संदेश है जिसके द्वारा ...ई हुई मानवता पुनः कल्याण ...बढ़ सकती है। हमारे राष्ट्र-...धुनिक संसार को वह सदेश ...सका मूल स्रोत भारतीय राष्ट्र ...और उद्दीप्त आत्मा में है। ...त विश्व को इसी संदेश से ...करने में समर्थ होगा और ...: जगत के सामने प्रकाश ...ा निर्माण करने में कफल ...ारा विश्वास है। हम पत्र-...दय की यह कामना है कि ...सी नवराष्ट्र की स्थापना ...में सहायक हों और इस ...उत्तरदायित्व को पूर्ण करने ...े करें।

साहब की तबीयत अचानक खराब हो गई है।

घर लौटने पर मुलतानी साहब की और भी दुर्गति हुई। रात्रि में सोने के वक्त उन्हें बेचैनी और घबराहट होने लगी और किसी प्रकार भी नींद न आई। जब जब ये आँखें खोलकर देखने तो उन्हें अपने कमरे में धुँधले प्रकाश में दीवार पर चढ़ते हुये साँप दिखाई पड़ते। ध्यानपूर्वक आँखें फाड़ फाड़कर देखने पर उन्हें अपने चारों ओर साँप तो दृष्टि-गोचर नहीं होता किन्तु उनकी परछाई अवश्य दीवार पर रेंगती हुई दीखती। जब वे प्रातःकाल घूमने जाने के लिये तैयार हुये तो उनकी लड़की ने बताया कि उनकी नाक का रंग बिलकुल काला पड़ गया है। उन्होंने दर्पण में देखा तो बात बिलकुल सच निकली। उन्होंने बार बार साबुन से कालिमा को धोने का प्रयत्न किया, किन्तु किसी प्रकार रंग न मिटा। दो पहर तक मुलतानी साहेब की गर्दन, कन्धे, छाती और शरीर के निचले भाग पर काले काले निशान उभर आये, जो साँप और मनुष्य की विचित्र आकृति से प्रतीत होते थे। मुलतानी साहेब को इन सब दागों से परेशानी हुई और उन्होंने यह मामला पुलिस के सामने रखा। मजिस्ट्रेट को इस पर कोतूहल हुआ और उन्होंने इसे मुलतानी साहब का कोरा भ्रम समझा किन्तु उनका शरीर खोल कर देखा गया तो बात बिलकुल सच निकली।

इसी सिलसिले में जब बापूजी और उनके साथियों को मुलतानी साहेब को तङ्ग करने के अपराध में पकड़ा गया तो इस बात के अनेक प्रमाण मिले कि ये लोग भानमती के अनुयायी हैं और दूसरों को तंग किया करते हैं। मजिस्ट्रेट को भी उनके विरूद्ध केस चलाने में और सजा देने में काफी दिक्कत हुई।

इसी प्रकार की और भी सैकड़ों घटनाएँ रिपोर्ट में वर्णित हैं जिसमें बताया गया है कि किस प्रकार सारे गाँव ने डर कर भानमती के उस्तादों को मासिक और वार्षिक चन्दा दिया। इस रहस्यपूर्ण जादू का पता लगाने गोड़ ने जो परिश्रम और कष्ट भोगा वह वर्णनातीस है। उन्होंने अत्यन्त सम्मानित्त एवं सभ्य व्यक्तियों के कथनानुसार जिन्हें कि स्वयं भानमती की चपेट में आना पड़ा था और अन्य हजारों आदमियों की आँखों देखी गवाहियों के आधार पर यह रिपोर्ट तैयार की थी। इन बयानों और गवाहियों में एक यूरोपियन क्रिश्चियन मिशिनरी और हैदराबाद के एक अमीर की भी गवाही है। अमीर ने अपने बयान में भानमती के कारण होने वाली परेशानियों का वर्णन करते हुए लिखा है कि मेरे घर में अकस्मात् आग लग जाती थी और कमरे में न जाने कहाँ से पत्थर बरसने लगते थे। पहले तो अमीर को विश्वास नहीं हुआ। कोई भानमती का नाम लेता वह हँसकर टाल देता और मन ही मन किसी दुष्ट व्यक्ति के षड़यंत्र की कल्पना करता था या अपने घर वालों में से ही किसी का सजाक समझता; किन्तु भरसक प्रयत्न करने पर भी जब उसे अपराधी का पता न चला तो उसे भानमती के जादू पर विश्वास करना पड़ा।

एक और अंग्रेज ने भानमती के पूजा स्थान का आँखों देखा वर्णन किया है कि किस प्रकार ये लोग समस्त वातावरण का अत्यन्त तामसिक और अपवित्र बना लेते है। स्थान स्थान पर खोपडियाँ, हडडी और दुर्गन्ध युक्तद्रव्य रखे रहते है। कोने में महाकाली की मूर्ति मालाओं को धारण किये हुए और पुष्पों से सुसज्जित शोभित होती है, जिसके चारों तरफ दीपक जलते रहते हैं।

ताज्जुब की बात तो यह है कि वे भानमती के अनुयायी गुरु गोरखनाथ के उपासक हैं और अपने मन्त्रों में बार बार उनके नाम का उच्चारण करते हैं। अन्तर इतना ही है कि निर्गुणोपासक गुरु गोरखनाथ जी सद्वृत्तियों के लिये मंत्रों की शक्ति का उपयोग करते थे और ये लोग तामसिक क्रियाओं द्वारा उनके प्रभाव को विपरीत और दूसरों के लिये कष्टप्रद बना देते हैं।

संवाददाताओं के पत्र

पत्रकारों का सद्भावना-मंडल

हिन्दी क्षेत्रों में यह जानकर निराशा हुई है कि अखिल भारतीय समाचार पत्र सम्पादक सम्मेलन की ओर से भारतीय पत्रकारों का जो सद्भावना मंडल पाकिस्तान जा रहा है उसमें हिंदी का एक भी संपादक नहीं है। जो व्यक्ति चुने गये हैं उनमें चार समाचार-पत्रों के मैनीजिंग डाईरेक्टर हैं और ऐसे व्यक्तियों की संख्या तीन से अधिक नहीं है जो किसी पत्र के सम्पादक कहे जा सकते हैं। इनमें भी हिन्दी, मराठी, गुजराती, असामी, पंजाबी, उड़िया, तामिल, तेलगु, कन्नड़, मलयालम व सिन्धी का एक भी पत्रकार नहीं है।

सम्मेलन की ओर से भारतीय पत्र जगत की गतिविधि को जांचने के लिये जो सात निरीक्षक रखे गये हैं उनमें बची-खुची भारतीय भाषाओं का भी तिरस्कार कर दिया गया है। यह सात सज्जन इंडियन न्यूज़क्रानिकल, ट्रिब्यून, पाइनियर, इंडियन नेशन, आसाम ट्रिब्यून व बम्बई क्रानिकल जैसे अंग्रेजी पत्रों के सम्पादक हैं।

इस प्रकार यह अनुभव किया जा रहा है कि समाचार-पत्र सम्पादक सम्मेलन अब वस्तुतः अंग्रेजी पत्र सम्पादक सम्मेलन रह गया है और उसको इस बात की चिंता नहीं है कि हिन्दी अथवा अन्य देशी भाषाओं में क्या प्रकाशित होता है। हिन्दी पत्रकारों में यह भावना बढ़ती जा रही है कि अब समय आ गया है जब भारत सरकार से यह मांग की जाये कि अखिल भारतीय समाचार-पत्र सम्मेलन को ही भारतीय पत्रों का एक मात्र प्रतिनिधि न समझे क्योंकि वह अब वस्तुतः देश के मुट्ठी भर अंग्रेजी अखबारों का सम्मेलन रह गया है और जनता अथवा जनता के पत्रों का प्रतिनिधित्व नहीं करता।

दिल्ली में ज्ञात हुआ है कि भारत सरकार के सूचना विभाग ने अ० भा० समाचार-पत्र संम्पादक सम्मेलन द्वारा नियुक्त केन्द्रीय परामर्श दात्री समिति की सम्मति से यह निश्चय किया है कि भविष्य में उन्हीं भारतीय समाचार-पत्रों को केन्द्रीय सरकार द्वारा मान्यता व स्वीकृति दी जाय जिनका प्रचार कम से कम दस हजार हो। यह सीमा केवल भारतीय भाषाओं के पत्रों के लिये लागू होगी। अंग्रेजी, पत्रों, पाकिस्तान के पत्रों तथा अन्य विदेशी पत्रों को पूर्ववत् साधारण प्रकार से स्वीकृत किया जायगा।

इस नीति के अनुसार उन समस्त भारतीय भाषाओं के पत्रों को जिनके बारे में प्रेस-सूचना कार्यालय ने यह रिपोर्ट दी है कि उनका प्रचार दस हजार से कम है मान्यता वापस ली जा रही है और उनके संवाददाताओं की सुविधायें छीनी जा रही हैं।

यह ध्यान में रखने की बात है कि केन्द्रीय परामर्श समिति में न किसी प्रांतीय भाषा का और न हिन्दी का कोई भी संपादक है। इस कारण इस नियम के बिना भी हिन्दी पत्रों के संवाद दाताओं को अधिस्त होने में बड़ी कठिनाई होती थी।

ज्ञात हुआ है कि सूचना विभाग तथा अँग्रेजी पत्रों के संपादकों ने यह अनुभव किया है कि भारतीय भाषाओं के पत्रों के संवाददाताओं को समाचार संकलन की सुविधा देने से भारतीय भाषाओं के पत्रों का स्तर बढ़ जायगा जिससे अँग्रेजी पत्रों के महत्व तथा प्रचार पर संकट आने की संभावना है। उधर सरकार भी यह अनुभव करती है कि भारतीय भाषाओं के पत्र तथा पत्रकार अधिक स्वतन्त्रता का परिचय देते हैं और उनको सरकारी प्रभाव में रहना कठिन हो जाता है।

इन्हीं कारणों से दोनों पक्षों ने मिल कर यह सम्मिलित योजना बनाई है। पत्रों को यह सिद्ध करने का अवसर भी नहीं दिया जाता कि उनका प्रचार व प्रभाव कितना है।

भारतीय भाषाओं के साप्ताहिक पत्रो को, उनका प्रचार चाहे कितना हो, मान्यता न देने की भी नीति अपनाई जा रही है।

यह सब सूचना मंत्री श्री दिवाकर जी के उन आश्वासनों के बाद भी हो रही है जिनमें उन्होंने यह बार बार कहा है कि

भारतीय भाषाओं के पत्रों के साथ प्रचार अथवा प्रभाव का बंधन लगा कर उन्हें सुविधाओं से वंचित नहीं किया जायगा। साथ ही यह प्रधान मंत्री पंडित नेहरू के उस आश्वासन के विरुद्ध है जिसमें उन्होंने कहा था कि छोटे तथा स्वतंत्र पत्रों को प्रोत्साहन देना चाहिये।

जयपुर में राजपूताना प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी की कार्यसमिति की एक आवश्यक बैठक गत ता० ६ व ७ मई को प्रान्तीय कार्यालय, जयपुर, में कार्यवाहक अध्यक्ष श्री मा० आदित्येन्द्र जी की अध्यक्षता में हुई।

प्रथम दिवस कांग्रेस के प्रधान मंत्री श्री काला वेंकटराव जी के यहां पधारने के कारण कार्य समिति ने कुछ समय तक उनके साथ संगठन सम्बन्धी विचार विनिमय किया। दूसरे दिन की बैठक में किसानों की वर्तमान विषम समस्याओं को समझने व उनको सुलझाने के लिए एक उप समिति निर्माण करने का निश्चय किया गया जिसमें प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के कार्यवाहक अध्यक्ष मा० आदित्येन्द्रजी तथा प्रधान मन्त्री श्री जुगुल किशोर जी चतुर्वेदी के अतिरिक्त सर्वश्री सरदार हरलाल सिंह जी, चौधरी कुम्भाराम जी, माणिक्यलाल जी वर्मा, मा० भोलानाथ जी तथा माठा लाल जी द्विवेदी सदस्य निश्चित हुए।

किसानों से ली जाने वाली सेवा के सम्बन्ध में प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी और राजस्थान सरकार के बीच जो चर्चा चल रही थी उसका अन्तिम निर्णय करने का अधिकार उक्त उपसमिति को दिया गया। इसी प्रकार झूंझनू जिले के अन्तर्गत उदयपुर घाटी के किसानों से भोमियों द्वारा फी बीघा सरकारी मालगुजारी से बीस बीस गुणा तक लिये जाने वाले लगान को उचित स्तर पर लाने एवं मेवाड़ की कई तहसीलों में पिछले वर्ष से अकाल की स्थिति रहते हुये भी उसे अकालग्रस्त क्षेत्र घोषित न करने आदि के सम्बन्ध में सरकार से चर्चा चलाने का कार्य भी इसी उप-समिति के सुपुर्द किया गया।

एक अन्य प्रस्ताव द्वारा जयपुर कांग्रेस अधिवेशन का बचत की रकम को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी तथा प्रांतीय कांग्रेस कमेटी को अभी तक न लौटाने तथा उक्त स्वागत समिति के कार्यालय को अब १५ मास समाप्त हो जाने तक भी बन्द न करके उस पर अत्यधिक अपव्यय किये जाने पर क्षोभ प्रकट करते हुए अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी से इस सम्बन्ध में अविलम्ब उचित कार्यवाही करने का अनुरोध किया गया।

अन्त में कांग्रेस चुनावों को सुचारु रूप से सन्चालित कराने के सम्बन्ध में विचार विमर्ष करने के अनन्तर बैठक समाप्त हुई।

—संवाददाता

रायगढ़—शहर के लोगों में इस बात की बड़ी सरगर्मी के साथ चर्चा हो रही कि तीन उम्मीदवार सदर क्षेत्र के कांग्रेस पंचों के चुनाव के सिलसिले में बहुत ही गंदे और अनुचित तरीके काम में लाये। पता चला है कि इस क्षेत्र के मतदाताओं ने प्रांतीय व अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के पास इस बात की शिकायत की है कि उक्त उम्मीदवारों की ओर से मतदाताओं को रिश्वत दी गई और शराब भी पिलाई गई। मतदाताओं ने चुनाव रद्द करा पाने की मांग की है।

एक नागरिक

रायगढ़ः—जनता सिनेमा मालिक के जेब में खूब पैसा डाल रही है पर शिकायत, है सुन्दर फिल्म की जगह अश्लील चित्र ही ज्यादा प्रदर्शित होता है जिसका बुरा असर विद्यार्थी व नव जवानों के जीवन पर पड़ता है। टिकट का रेट में तीन बार रद्दोबदल हुआ। हाल में पंखे की कमी से दर्शकों को आराम नहीं मिलता, हाल की बेहद गर्मी से दर्शकों के स्वास्थ को नुकसान पहुँचता है। सिनेमा कामगार बड़ी मुसीबत से २०) महीने पर दिन काट रहा है। नागपुर की ऊँची कुर्सी पर बैठने वाले लेबर कमिश्नर का हम ध्यान इधर खींचना चाहेंगें कि वे फेक्टरी एक्ट लगावें। हजारों मजदूरों की जिन्दगी से खेल खेला जा रहा है। जो इन मज़दूरों का खून चूसते आये आज खादी टोपी पहन कर इसी शोषण नीति को आगे चलाना चाहते हैं ताकि अब आगे मज़दूरों की हड्डी घिसी जावे। ऐसी कांग्रेसी से सावधान रहें और इन मज़दूरों के हितों की रक्षा करें तो देश उन्नति की ओर अग्रसर होगा।

❀ ❀ ❀

उदयपुर—महिला मंडल उदयपुर में लड़कियों के उच्च शिक्षण के लिये छात्रावाश का प्रबन्ध है। जो एक अनुभवी और योग्य गृहव्यवस्थापिका के संरक्षण में चलता है जहाँ पर कमरे, पानी, बिजली पुस्तकालय इत्यादि की भी सुविधाएँ हैं। यहाँ पर बच्चेवाली बहनों के रहने के लिये भी आयोजन है। यहाँ पर रहनेवाली बहने उदयपुर में चलनेवाले महिला मंडल विद्यालय के सिवाय अन्य गर्ल्स स्कूल और कालेज में शिक्षण प्राप्त कर सकती हैं। जो बहनें छात्रवास में में प्रवेश लेना चाहें कृपया ता: १५ जून तक मंत्रीजी महिला मंडल के नाम पत्र व्यवहार करें ताकि उनके लिये स्थान सुरक्षित किया जा सके।

— संवाददाता

❀ ❀ ❀

बीकानेर—जिला कांग्रेस एडहाक कमेटी के तत्वावधान में आयोजित एक आम सभा में प्रस्ताव स्वीकार करके पं० नेहरू, सरदार पटेल, राजस्थान के मंत्रियों और संबंधित अधिकारियों को तार दिये गये हैं, जिनमें माँग की गई है कि राजस्थान सरकार की ओर से समय-समय पर आवश्यक सामग्री न मिलने के कारण बिजली की व्यवस्था अत्यन्त खराब हो गई है फलतः जल समस्या विकट रूप में सामने आ खड़ी हुई, इस ओर अविलम्ब ध्यान देकर लाखों इन्सानों के प्राणों को खतरे में पड़ने से बचाया जाय।

—संवाददाता

❀ ❀ ❀

जोधपुर—राजस्थान के कुमार तरुण वर्ग की प्रतिनिधि साहित्यिक संस्था कुमार साहित्य परिषद् की कार्यकारिणी की बैठक श्री नेमिचन्द्र जैन की अध्यक्षता में चार घटों तक होती रही। सदस्यों के अतिरिक्त विशेष निमंत्रण पर गाँवों के कार्यकर्ता भी उपस्थित थे। कार्यालय मंत्री श्री० जयदत्त शर्मा द्वारा परिषद् की गतिविधियों पर प्रकाश डाला गया। तत्पश्चात् परिषद् के संगठन और आर्थिक पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया।

—संवाददाता

❀ ❀ ❀

जोधपुरश्रीकांतिरूपराय द्वारा प्रस्तुत योजना परिषद् की दिशा को बदलने में सहायक सिद्ध होगी। शिक्षण केंद्र, साहित्य सृजन, गोष्ठियों का आयोजनादि कार्यक्रम पँचसूत्रीय योजना में है। श्री कांतिरूप ने प्रभावशाली शब्दों में स्पष्ट कहा कि इस योजना को पूर्ण करने के लिए काम अधिक किया जाय और बातें कम। कुछ स्वीकृत प्रस्तावों का सारांश यह है—(१) राजस्थान के विभिन्न हिंदी साहित्य सम्मेलन एक सम्मेलन के रूप में एकता के धागे में बँध जाय। इससे विद्वेष और फूट की खाई पटकर गतिलिए सम्मेलन आगे बढ़ सकेगा। (२) अ० भ० हिन्दी साहित्य सम्मेलन राजस्थान के प्रति अपनी उपेक्षामय नीति बदले। (३) राजस्थान सरकार साहित्यिक कृतियों पर पुरस्कार दें। अंत में अध्यक्ष ने भावभरे शब्दों में गति लिए आगे बढ़ते रहने की अपील की।

—संवाददाता

❀ ❀ ❀

झांसी—संवत् २००६ वि० की हिन्दी साहित्य-सम्मेलन परीक्षाओं में भाग लेनेवाले परीक्षार्थियों की सुविधा की दृष्टि से 'स्थायी समिति' ने योग्य छात्रों की सहायतार्थ जो उत्तर पुस्तिकाओं के पुनर्निरीक्षण का निर्णय किया वह स्तुत्य है। इसीलिए आलमपुर केन्द्र पर कई स्थानों के परिक्षार्थीयों एवं साहित्यकों ने एकत्र होकर सा० भू० श्री भगवानसिंह चन्देल, 'साहित्यरत्न', के नायकत्व में सम्मेलन की इस उदारतामयी सामयिक सूझ के उपलक्ष्य में बधाई का प्रस्ताव पास किया।

—संवाददाता

श्री सोहनलाल द्विवेदी
लिखित
काव्य कृतियों
के
नवीन संस्करण

भैरवी

गांधी युग का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। महामना मालवीयजी के शब्दों में 'ऐसी कविता का प्रचार देश के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक होना चाहिए।' मूल्य २।||≡)

वासवदत्ता

बाबू मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं 'इस रचना से मैं बहुत प्रभावित हुआ।' स्वच्छन्दतापूर्वक जिस प्रौढ़ता की ओर द्विवेदीजी अग्रसर हो रहे हैं, जान पड़ता है, स्वयं वह भी उन्हें वरण करने के लिए आतुर हो रही है। 'वासवदत्ता' के प्रकाशन ने हिन्दी-साहित्य में एक नई क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। स्वयं पढ़कर निर्णय कीजिए। मूल्य १||)

कुणाल

महापंडित राहुल सांकृत्यायन की सम्मति में—अशोक, तिष्यरक्षिता और कुणाल खास तौर से—'कुणाल' के चरित्र-चित्रण में कवि ने कमाल किया है। शब्द-सौकुमार्य और भावोत्कर्ष के साथ ही नपे तुले शब्दों के प्रयोग ने काव्य को बहुत ऊँचा उठाया है। विशेष संस्करण मूल्य २||)

पूजागीत

राष्ट्रीय चेतना को काव्य का सच्चा स्वरूप देने के लिए द्विवेदी जी को प्रचुर सम्मान तथा लोकप्रियता प्राप्त हुई है। ये पूजा-गीत कवि के गौरव के अनुरूप ही हैं। मूल्य २)

विषपान

सुप्रसिद्ध पौराणिक कथा का सरल तथा सबल खंड-काव्य है। भाषा का प्रवाह, प्रसन्न शैली तथा कथा के मार्मिक घटना-क्रम की वर्णना ने इसे बड़ा ही हृदयग्राही बना दिया है। मूल्य १)

...रना
...भारती
...सुरी

...का मूल्य १२ रु०

द्विवेदी जी पहले बालकों के कवि हैं पीछे राष्ट्र के। पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा माननीय सम्पूर्णानन्दजी ने इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा की है। 'अमृत बाज़ार पत्रिका' की सम्मति में—जिस प्रकार की शिक्षा बालकों को देने के लिए हमारे नेता वर्षों से प्रयत्न कर रहे हैं, इन पुस्तकों में उसी प्रकार का साहित्य है। प्रत्येक पुस्तक में कई रङ्गीन तथा अनेक सादे चित्र हैं। प्रत्येक पुस्तक का मूल्य १)

—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

ESTD 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेंट रिकगनाइजड AIDED

सिन्हा होमियो मेडिकल कौलेज
—पो० लहेरियासराय, बिहार—

आज हिन्दी उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़ कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्सन सहित फीस H.L.M.S. १०), H.M.B.S १५) H.M.D.S. २५) पुस्तकें—अ० पारिवारिक १||) बायोकेमिक १||) मेटेरिया मेडिका १||) मेडिकल डिक्सनरी २) आर्गेनन १||) फार्मा कोपिया १||) रेड लाइन सीम्पटम्स १||) (१) बृ० इंजेक्सन चिकित्सा ३) बृ० अ० पारिवारिक चिकित्सा ६||) बृ० अ० मेटेरिया मेडीका ६||) ऐनाटोमी १||) परिक्षाविधान १||) रिलेशन शिप, १||) कुल किताबें २५) में एक साथ दी जायँगी डा० ख० माफ। अमेरिकन दवाइयाँ ३०—=)|| २००—≡) ड्राम, फी औं० ||), घरेलू बक्स पुस्तक सहित ३६ शीशी का ८) सुगर और गोली २||) फी पाउण्ड। चौथाई Advance भेज दें। थोक खरीदार को २५ प्रतिशत कमीशन देते हैं।

नोटः—बृहत् सूची मुफ्त—सचित्र मेडिकल मैगजीन मासिक ||) सालाना—५)

संरक्षक—राय सा० डा० यदुबीरसिंह एम० डी० यस० (U.S.A.)

सचित्र साप्ताहिक 'देशदूत' का विशेषांक
काश्मीर अंक

इस अंक का संपादन करेंगे

पंडित शिवनाथ काटजू एम० ए०, एल-एल० बी०

'देशदूत' के काश्मीर अंक विशेषांक के प्रकाशन की तैयारी जोरों से प्रारंभ हो गई है। काश्मीर की समस्या स्वतंत्र भारत को आज की एक प्रमुख समस्या है। काश्मीर भारत का अंग है। उसकी रक्षा तथा स्वतन्त्रता भारतीय सरकार का कर्तव्य है! इस विशेषांक में काश्मीर की वर्तमान समस्याओं पर राष्ट्र के बड़े बड़े नेताओं के गंभीर तथा जानकारी पूर्ण लेख रहेंगे। काश्मीर की भौगोलिक, ऐतिहासिक तथा राष्ट्रीयता का सचित्र विवरण दिया जायेगा। काश्मीर के प्रति पाकिस्तानी नीति पर भी नेताओं द्वारा सुन्दर प्रकाश डाला जायेगा। काश्मीर के संबंध में सुन्दर चित्र तथा नेशनल कान्फ्रेंस के नेताओं के संदेश आदि भी आकर्षक रूप में होंगे।

विज्ञापनदाताओं तथा एजेंटों को

अभी से अपना स्थान तथा बिक्री के लिये कापियाँ रिजर्व करा लेना चाहिये। नये ग्राहकों को यह अंक मुफ्त मिलेगा। यह अंक काश्मीर का एक अल्बम होगा।

दर्जनों चित्रों तथा कार्टूनों से सुसज्जित

इस अंक का मूल्य होगा केवल ।=)

व्यवस्थापक 'देशदूत' इलाहाबाद

भारत के कोने-कोने में हजारों जनता-द्वारा पढ़ा
जानेवाला तथा ११ वर्षों से लगातार प्रकाशित होनेवाला

प्रमुख राष्ट्रीय साप्ताहिक पत्र
सचित्र देशदूत में

विज्ञापन देकर अपने व्यापार को बढ़ाइये

Registered No. A—295

विविध विषयों के हमारे बढ़िया ग्रन्थ

इस पुस्तकमाला की ४ प्रसिद्ध पुस्तकें हैं—(१) 'योगायोग' कवित्वमय श्रेष्ठ उपन्यास। मूल्य ४) (२) 'विश्वपरिचय' विज्ञान-विषय अनन्य ग्रन्थ। मूल्य २), (३) 'रूस की चिट्ठी। रूस का आँखों देखा वर्णन, मूल्य २) (४) 'चार अध्याय' ऐसा उपन्यास जिसमें राजनीति, समाज और स्त्री-पुरुष समस्या आदि पर विचार है मूल्य १॥)

इसमें प्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव के नये गीतों का संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और [illegible] से पूर्ण है। छपाई सफाई नयन मोहक। सचित्र सजिल्द [illegible] मूल्य २) दो रुपये।

लेखक भू० पू० काकोरी सके के कैदी श्री मन्मथनाथ गुप्त और राजेन्द्र वर्मा। समाजवाद के अध्ययन के लिये पढ़ना आवश्यक है। मार्क्सवाद के दर्शनों में यह सबसे गहन है। एक दर्जन अध्यायों में विषय का प्रतिपादन हुआ है। मूल्य ६) छः रुपये।

यह श्री श्यामनारायण पाण्डेय की प्रसिद्ध रचना है। [illegible] महाराणा प्रताप के हल्दीघाटी वाले संग्राम का वीरता पूर्ण [illegible] बढ़िया छन्दों में है। सजिल्द सचित्र पुस्तक का मूल्य २॥) दो [illegible] बारह आने।

मैनेजर—[illegible] लिमिटेड, २६ पन्नालाल रोड, इलाहाबाद

देशदूत

DESHDOOT
HINDI WEEKLY
Annual Price Rs 7-8.0
Per Copy Annas Two.
वार्षिक मूल्य ७॥)
एक प्रति का ≈)

With best wishes from Devika Rani

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

रविवार, २५ जून, १९५०
Sunday, 25th June, 1950

सामयिक लेख, कहानी, रंगमंच, आलोचना आदि इस अंक में पढ़िये

घर की मधुरता और बढ़ाइए

इन-री-हो

की बनाई हुई 'रेशमी मिठाई', 'फ्रूट ड्राप्स' और 'क्रीमोला' टाफी हाथ में पाते ही बच्चों की किलकारी और हँसी से घर गूँजने लगता है।

बच्चों को हँसाने और खुश करने के लिए 'इन-री-हो' की बनाई मिठाइयाँ बाजार में बिलकुल बेजोड़ हैं।

क्रीमोला टाफी
इन-री-हो ड्राप्स

इंडस्ट्रियल रिसर्च हाउस लिमिटेड
इलाहाबाद

अनेक विषयों की बढ़िया पुस्तकें

हिन्दी भाषा का संक्षिप्त इतिहास

यह राय बहादुर डाक्टर श्यामसुन्दर दास के इसी नाम के ग्रन्थ का सारांश है। विषय नाम से ही प्रकट है। अपनी भाषा का इतिहास संक्षेप में पढ़ने के लिए इसे लीजिए। अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य १) एक रुपया।

आदर्श भूमि अथवा चित्तौर

चित्तौर राजपूतों के त्याग के कारण तीर्थ बन गया है। भारत के गौरव स्वरूप उसी चित्तौर का ओजपूर्ण भाषा में लिखा गया इतिहास पढ़कर अपनी जानकारी बढ़ाइए। मूल्य २) दो रुपये।

पंडित जी

नामी उपन्यास लेखक शरद बाबू के इस उपन्यास में कुलीनता, उच्च शिक्षा, द्विज और द्विजेतर, गाँव की भलाई और अपनी उन्नति, नई शिक्षा और मिथ्या अभिमान आदि के सम्बन्ध में बहुत ही विशद विवेचना की गई है। मूल्य २) दो रुपये।

मैक्सिम गोर्की

रूस के इस विश्रुत कलाकार के परिचय के लिए इस पुस्तक को पढ़िए। है तो यह जीवन चरित, पर इसे पढ़ने में कहानी का आनन्द मिलेगा। इसकी जीवनचर्या का वर्णन पढ़कर पाठक जान सकेंगे कि इस कलाकार को किन विकट कठिनाइयों में होकर गुजरना पड़ा था। छोटे टाइपों में छपी लगभग ढाई सौ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य ३) तीन रुपये।

युद्ध और शान्ति

यह संसार के श्रेष्ठ उपन्यास-लेखक और विचारक का उण्ट लियो टाल्स्टाय के प्रसिद्ध रूसी उपन्यास 'वार एण्ड पीस' का हिन्दी रूपान्तर है। यह ऐतिहासिक उपन्यास तब लिखा गया था जब लेखक की शैली परिमार्जित हो गई थी और उन्हें अन्तर्द्वन्द्व से छुटकारा मिल कर शान्ति मिल गई थी। लेखक ने उसमें मानव-जीवन का सम्पूर्ण चित्र, अपने समय के रूस की तस्वीर और राष्ट्रों की खींचतान बड़ी खूबी से चित्रित की है—जीवन और मृत्यु के रहस्य का भी उद्घाटन किया है। लगभग पौने सात सौ पृष्ठों की सजिल्द प्रति का मूल्य ५।-) पाँच रुपये पाँच आने

कुलबोरन

श्री चन्द्रभूषण वैश्य ने इस उपन्यास को सत्य घटना के आधार पर लिखा है। समाज की अन्ध परम्पराओं से देश की जो हानि हो रही है उसका इसमें सजीव चित्र है। सुधार करनेवाले को रूढ़ियों के अन्ध भक्तों से जैसा लोहा लेना पड़ता है उसका नमूना उपन्यास का नायक, 'कुलबोरन' है। अच्छे कागज पर छपी सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥) दो रुपये आठ आने।

अल्पता की समस्या

'साम्प्रदायिक भेद पर विशेष अधिकार माँगना और ऊलजलूल दावे पेश करना तथा उन माँगों के पूरा न होने पर देशद्रोह के लिए कमर कस लेना किसी देश-भक्त का काम नहीं।' इसी पर दृष्टि रख कर पंडित वेंकटेश नरायण तिवारी एम० ए० ने तथ्यों और आँकड़ों के साथ पुस्तक में उलझन को समझाया है। पाकिस्तान बन जाने पर भी जिनके मन में ऊपर लिखी भावना है उनके समाधान के लिए इसमें सप्रमाण उत्तर है। मूल्य २) दो रुपये।

ईरान

महा पंडित राहुल सांकृत्यायन ने इस पुस्तक में अपनी ईरान-यात्रा का विशद वर्णन किया है। इसके पढ़ने से ईरान की बहुत-सी जानकारी पाठकों को हो जायगी। भ्रमण-वर्णन कहानी का सा आनन्द देगा। मूल्य १॥≡) एक रुपया ग्यारह आने।

मध्य प्रदेश और बरार का इतिहास

इस अत्यन्त प्रामाणिक इतिहास में उक्त प्रदेश से सम्बन्ध रखनेवाली सभी प्राचीन और अर्वाचीन महत्त्वपूर्ण बातें आ गई हैं। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

सुन्दरी-सुबोध

इस पुस्तक में पति-पत्नी को सन्तुष्ट रखने के उपाय इस ढंग से बताये गये हैं कि कहानी का आनन्द देते हैं। इसके सिवा सास-पतोहू, देवरानी-जेठानी, ननद-भौजाई, माता-पुत्र आदि स्त्री के दूसरे सम्बन्धों को भी ठीक २ रखने के उपाय बताये गये हैं। पुरुषों के लिए भी बहुमूल्य अनुभूत बातें दी गई हैं। इनको उपयोग में लाने से गृहस्थी सुखमय हो सकती है। ३०० पृष्ठों से अधिक की सजिल्द प्रति का मूल्य २॥) दो रुपये आठ आने।

आदर्श महिला

इस पुस्तक में सीता, सावित्री, दमयन्ती, शैब्या और चिन्ता आदि पाँच प्रसिद्ध देवियों की जीवन-घटनाओं का सजीव सचित्र वर्णन दिया गया है। इसको पढ़ने में कहानी का आनन्द मिलेगा और शिक्षा सहज ही। मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

कथा सरित्सागर

इस पुस्तक में आदि से [illegible] तक एक से एक बढ़िया कहानि[illegible] जैसा इसका नाम है, यह कथा[illegible] का समुद्र है। प्रत्येक कथा के [illegible] एक न एक दृष्टान्त है। [illegible] सजिल्द प्रति का २॥≡) मूल्य [illegible] रुपये ग्यारह आने।

देव दर्शन

इसमें ब्रजभाषा के प्रख्यात [illegible] देव की जीवनी और उनके [illegible] काव्यों का आलोचनात्मक प[illegible] दिया गया है। ब्रज काव्य के प्रे[illegible] अतिरिक्त साहित्य के विद्यार्थि[illegible] लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त उप[illegible] है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १[illegible] एक रुपया पाँच आने।

बन्दना

यह श्रीमती चन्द्रमुखी ओझा '[illegible]' के ५२ मधुर गीतों का संग्रह [illegible] आरम्भ में श्री सूर्यकान्त त्रि[illegible] 'निराला' की लिखी प्रशस्ति [illegible] अच्छे कागज पर छपी सजि[illegible] पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

तुलसी के चार दल

(प्रथम और द्वितीय भा[illegible]) गोस्वामी तुलसीदास जी के रामल[illegible] नहछू, बरवै रामायण, पार्वती मंग[illegible] और जानकी मंगल का आलो[illegible] नात्मक परिचय तथा इन चारों ग्रं[illegible] की अध्ययनपूर्ण टीका। इसे इन ग्रं[illegible] की कुंजी समझिए। मूल्य प्रथम भा[illegible] का ३) रुपये, द्वितीय भाग का २[illegible] दो रुपये ग्यारह आने।

ग्रह-नक्षत्र

इस पुस्तक में ग्रहों और नक्ष[illegible] आदि से सम्बन्ध रखने वाली प्रा[illegible] सभी आवश्यक बातों का सं[illegible] वर्णन सरल भाषा में है। मूल्य [illegible] तीन रुपये।

हार या जीत

इस उपन्यास में लेखक [illegible] ब्रजेश्वर वर्मा एम० ए०, डी० फि[illegible] ने एक देहाती लुहार की अल्पवय[illegible] बेटी को घटनाक्रम से, अनाथ [illegible] में, देहात से महराजगंज की रा[illegible] पृथाकुंवरि के आश्रय में पहुँचा दि[illegible] है। वहाँ रानी की कृपा से [illegible] लड़की ने विद्या पढ़ी। फिर इसमें [illegible] गुणों का विकास हुआ जिससे मनु[illegible] सभ्य होकर सम्मान पाता है। इस[illegible] असहयोग आन्दोलन में सक्रिय भा[illegible] लिया और अन्त में कलकत्ता जा[illegible] नौकरी कर ली। कई पुस्तकें लिखी[illegible] विदेश-यात्रा के बाद रानी के कुं[illegible] की प्रार्थना पर उससे विवाह किया[illegible] उपन्यास की घटनावली, विचारों [illegible] संघर्ष और चन्दा की नम्रतापू[illegible] दृढ़ता सराहने योग्य है। मूल्य [illegible] दो रुपये।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

वर्ष १२, संख्या ४०] [रविवार, २५ जून, १६५०

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, के पुरस्कार

प्रतिवर्ष हिन्दी साहित्य सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर निम्नलिखित पारितोषिक तथा पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। इस वर्ष उन सबके लिए विचारार्थ पुस्तकें स्वीकार किए जाने की अन्तिम तिथि सौर वै शाख सं० २००७ [तारीख १४ मई सन् १६५०] है। सभी पारितोषिक तथा पुरस्कारों के संक्षिप्त परिचय नीचे दिये जा रहे हैं।

श्री मङ्गला प्रसाद पारितोषिक—१२००) का उक्त पारितोषिक इस वर्ष साहित्य के व्यावहारिक विज्ञान विषय पर दिया जायगा। व्यावहारिक विज्ञान के अन्तर्गत वैद्यक, गृह-निर्माण, कृषि-शास्त्र, यंत्र शास्त्र सम्बन्धी साहित्य की गणना की जायगी। यह पारितोषिक निम्न विषयों में से प्रत्येक वर्ष एक एक विषय पर दिया जाता है। यथाः—काव्य, निबन्ध, इतिहास, समाज शास्त्र, दर्शन तात्विक विज्ञान और व्यावहारिक विज्ञान। क्रमानुसार इस वर्ष का पारितोषिक व्यावहारिक विज्ञान पर दिया जायगा।

श्री सेठ गोविन्दराम सेकसरिया विज्ञान पुरस्कार—१५००) रु० का उक्त पुरस्कार इस वर्ष धातु-विज्ञान विषय की वैज्ञानिक मौलिक रचना के सम्मानार्थ दिया जायगा। धातु-विज्ञान विषय के अन्तर्गत धातु विज्ञान, खनिज विज्ञान रसायन-विज्ञान और भूगर्भ विज्ञान की गणना की जायगी।

श्री सेकसरिया महिला पारितोषिक—५००) का उक्त महिला पारितोषिक किसी महिला लेखिका को उनकी स्वरचित हिन्दी मौलिक रचना के सम्मानार्थ दिया जायगा।

श्री मुरारका पारितोषिक—५००) का उक्त पारितोषिक बंगाली, उड़िया वा आसामी भाषा-भाषी लेखक या लेखिका द्वारा लिखी गई हिन्दी की किसी रचना के सम्मानार्थ दिया जायगा।

श्री रत्नकुमारी पुरस्कार—२५०) का उक्त पुरस्कार हिन्दी के किसी मौलिक नाटक के सम्मानार्थ दिया जायगा।

श्री नेमीचन्द्र पुरस्कार—५००) का उक्त पुरस्कार वीररस पूर्ण बाल साहित्य विषय पर हिन्दी की किसी मौलिक रचना के सम्मानार्थ दिया जायगा। बाल साहित्य विषय के। अन्तर्गत वे सभी रचनायें गृहीत होगी, जो देश, धर्म, समाज एवं बालकों के चतुर्दिक विकास और उत्थान को ध्यान में रखकर लिखी गई होंगी।

—प्रधान मन्त्री

* * *

श्री हरजीमल डालमिया पुरस्कार

इस वर्ष का साहित्य पुरस्कार डा० नगेन्द्र, एम० ए०, डा० लिट० को उनकी पुस्तक "रीति काव्य की भूमिका तथां देव और उनकी कविता" पर दिया गया। इस पुरस्कार के निर्णायक साहित्य के लब्धप्रतिष्ठ और मान्य विद्वान थे। इससे पूर्व गत वर्षों में श्री हरजीमल डालमिया पुरस्कार समिति ने निम्नलिखित रचनाओं पर पुरस्कार वितरित किये:—अष्टछाप—एकअध्ययनडा० दीनदयाल गुप्त बौद्ध दर्शनश्री बलदेव उपाध्याय कृष्णायनश्री द्वारका प्रसाद वर्ण धूलि,श्री सुमित्रानन्दन पन्त वैदिक दर्शन मिश्रडा० फतहसिंह चारवाकू दर्शन श्री विद्यासागर शास्त्री

आगामी वर्ष के साहित्य तथा दर्शन पुरस्कारों के लिये पुस्तकें १५ दिसम्बर, १६५० तक निम्न पते पर आना चाहिए:—श्रीमती सरस्वती देवी डालमिया, एम० ए०, शास्त्री, सभानेत्री, श्री हरजीमल डालमिया पुरस्कारमितिस, ६, मानसिंह रोड, नई दिल्ली।

दिल्ली प्रांतीय हिन्दी साहित्य,सम्मेलन की ओर से माननीय व्यपार मंत्री श्री प्रकाश का स्वागत १० फीरोजाबाद रोड, नई दिल्वी में किया गया।
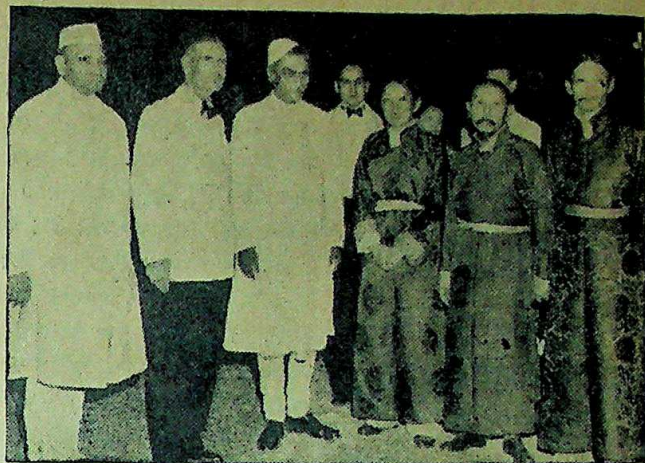
लंदन के सम्राट का जन्म दिवासपिछले दिनों दिल्ली में मनाया गया था। चित्र में राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद दिखाई दे रहे हैं।

श्री श्री प्रकाश जी ने उत्तर देते हुये कहा कि आपके बीच में अपने को पाकर मुझे बड़ा आनन्द आ रहा है। जब से देश में स्वराज्य हुआ मेरा कुछ ऐसा अभाग्य रहा कि मैं या देश से निकाल दिया गया और दूर दूर रहा।

आप के मन में हिन्दी के लिए बड़ी चिन्ता मालूम होती है। मुझे कभी चिन्ता नहीं रही। किसी भाषा का आप इतिहास लें कि राजा की सहायता से कोई भाषा नहीं बढ़ी। सप्तम एडवर्ड शुद्ध अंग्रेजी भी नहींबोल पाते थे और बहुत समय तक इंलैड में अंग्रेजी राज़्य भाषा नहीं थी। अग्रेजी भाषा को वहां के लेखकों, कवियों, निबंध लेखकों ने बनाया।जब हम हिन्दी को अपनावेंगे तो भय कैसा ? अग्रेजी का शब्द भंडार बढ़ता है इस से अंग्रेंजी जीवित है। पर फ्रांस की एकेडमी प्रति वर्ष शब्द निकालती है इस लिए फ्रेंच का प्रचार गिरता जाता है। हम लोगों को बिना कटु शब्द का प्रयोग किये हिन्दी का प्रचार करना है। भाषा का आसानी से प्रचार ऐसे हो सकता है जैसे योरूप में पोहियों में रहने वाले विद्यार्थी उन देशों की भाषा सीख जाते हैं। मैं डेढ़ महीने में जर्मन सीख गया। हमारे यहां भी ऐसा प्रबंन्ध हो। पोशियों वे घर हैं जहां विदेशी विद्यार्थी रहते, भोजन करते व मालिको से भाषा सीखते हैं।। वे ऐसे ही सीखते है जैसे बालक जन्म से सीखता है। आपने आगे कहा कि हिन्दी में प्रामाणिकता चाहिये। गांधी जी से लेकर जिन के लिए मेरे हृदय में बड़ी श्रद्धा है। अंग्रेजी का (खानसामा) जैसी हिन्दी बोलते हैं उसे ठीक समझते हैं। मैंने गांधी जी से कहा आप हिन्दी की हत्या करते हैं और जैसी आप बोलते हैं सुन्दर लाल जी भी लिखते हैं।

हिन्दी भाषा भाषियों का एक विशेष उत्तर दायित्व है। हमें प्रेम से हिन्दी सिखाना चाहिए और अपनी सदभावना का परिचय देने के लिए एकाध प्रांतीय भाषा सीखनी चाहिये। आगे आप ने कहा कि मैं अभी नया आया हूं। कुछ समय बाद आप से सम्मति लूंगा कि मेरे विभाग में हिन्दी का कैसे प्रवेश हो सकता है।

—संवाददाता

योरोप में एक नई तोप निर्मित हुई है। तोप का प्रदर्शन सार्वजनिक रूप से किया जा रहा है।

प्रवासी भारतीय

—०—

वहाँ भारतीयों की स्थति कैसी है ?

लेखक, श्री स्वामी सत्यभक्त

—०—

प्रवासी भारतीयों के बारे में भारत सरकार ने एक समीक्षा पूर्ण विवरण प्रकाशित किया है। उससे प्रवासी भारतीयों की अवस्था का कुछ पता चलता है। विवरण के अनुसार प्रवासी भारतीयों की संख्या भिन्न भिन्न देशों में निम्न लिखित है और उनका अनुपात भी कहीं कहीं काफी है।

देश	संख्या	प्रतिशत अनुपात
मोरिशस	२७१६३६	६३
फिजी	१२५६७४	४७
दक्षिण अफ्रिका	२८२४०७	...
पूर्वी अफ्रिका	१८४१००	...
ब्रिटिश गायना	१६८६२१	५४
ट्रिनिडाड	१६५७४७	३६
जमैका	४१४६२	२
मलाया	७०७८५५	१५
बर्मा	७ लाख	
लंका	७ लाख	
इन्डोनेशिया	३००००	
फारस खाड़ी की रियासतें	४०००	
ईरान	२५००	
मिश्र	१०००	
ईराक	७००	
अफगानिस्तान	२००	

तुर्की फिलस्तीन, सीरिया, लेबनान, ट्रान्स जोर्डन और यमन में सौ से भी कम भारतीय रहते हैं।

इन प्रवासी भारतीयों में बहु संख्यक भारतीयों की दशा खराब है। आर्थिक अवस्था उनकी अच्छी नहीं हैं। और राजनैतिक अधिकार भी उन्हे प्राप्त नहीं हैं या नाम मात्र के हैं।

दक्षिण अफ्रिका में जातीय भेद भाव-पूर्ण-नीति बहुत उग्र है। और राजनैतिक अधिकार भी उन्हे प्राप्त नहीं हैं या नाम मात्र के हैं। वहां की सरकार भारतीयों को निकाल भगाने के लिये हर तरह के प्रयत्न करती रही है। इसी हेतु से वहां एक दंगा कराया गया था जिसमें बहुत से भारतीय निर्दयता से मारे गये थे। उनके घर लूट लिये और जला दिये गये थे। भारतीय खास खास स्थानों पर बस भी नहीं सकते।

पूर्वी अफ्रिका में ऐसा भेदभाव तो नहीं है पर वहाँ की सरकार ने एक प्रवास नियंत्रण कानून बना दिया है जिसका प्रभाव भारतीयों पर ही पड़ता है।

मोरिशस और फिजी में भारतीयों की स्थिति इतनी खराब नहीं है। यहां भारतीयों को धारा सभा में भी स्थान प्राप्त हैं पर उनकी संख्या के अनुपात से बहुत कम। हाँ, फिजी में भारतीयों के भूमि अधिकार सुरक्षित नहीं हैं। और न उन्हें भूमि-विनियम के अधिकार हैं।

ब्रिटिश गायना के भारतीय भारत लौटने को बहुत उत्सुक है। इससे उनकी अवस्था का कुछ अंदाज लग सकता है।

बर्मा में ७ लाख भारतीय हैं। उनकी भूमि छुड़ाली गई हैं क्यों कि सब जमीन का राष्ट्रीय कारण किया गया है और सरकारी नौकरियों से भी भारतीयों को निकाल दिया गया है, क्योंकि नौकरियों का भी राष्ट्रीयकरण हो गया है।

इन्डोनेशिया में भारतीयों पर यह प्रतिबंध लगा दिया गया है कि वे अपने बाल बच्चों के लिये भारत में रुपया नहीं सकते। इससे भारतीय परेशानी में हैं। पैंतीस सौ भारतीय भारत बुला लिये गये हैं और भी बुलाये जायँगे।

मलाया में ज्यादा तर मजदूर हैं। वहाँ चीनियों को बिना किसी विशेष योग्यता के, सिर्फ चीनी होने के कारण भारतीयों से अधिक वेतन दिया जाता है।

लंका-भारत का ही हिस्सा रहा है और वहाँ के ज़ंगलों को काटकर भारतीय मजदूरों ने चाय के और रबर के बगीचे खड़े किये हैं। भारतीय जब यहाँ से गये थे तब इसी शर्त पर कि जो वहाँ बसना चाहें उन्हें वहाँ बसने के तथा नागरिकता के पूरे अधिकार मिलेंगे। सौ सौ वर्ष से वहां बसे हैं जिनको कई पीढ़िया वहां गुज़र चुकी हैं, पर अब लंका को स्वराज्य मिलते ही भारतीय वहां से निकाले जा रहे हैं। उनकी जमीनें छुड़ाई जा रही हैं, नौकरियों से हटाया जा रहा है, नागरिकता के अधिकार छीन लिये गये हैं, आयात् व्यापार के लाइसेन्स भी छीने जा रहे है। इस प्रकार पीढ़ियों से बसे हुये भारतीय वहां मौत के मुँह में फँस गये हैं।

इस प्रकार बहुसंख्यक भारतीयों की विदेशों में काफी दुर्दशा है। मध्यपूर्व आदि में अवस्था ठीक है पर वहां उनकी संख्या उंगलियों पर गिनने लायक है।

विदेशों में भारतीयों की यह दुर्दशा भारत की गुलामी का अभिशाप था। पर अब भारत स्वतंत्र हो गया है फिर भी उनकी दुर्दशा घटी नहीं है। बल्कि खेद और लज्जा की बात तो यह हैं कि दुर्दशा बढ़ गई है। दक्षिण आफ्रिका, लंका, बर्मा, मलाया आदि में भारतीयों के अधिकार छिन गये हैं, वे निकाले जा रहे हैं, खूब अपमानित किये जा रहे हैं और उनका जान माल अरक्षित बना दिया गया है। इतनी दुर्दशा गुलाम भारत के समय में भी नहीं थी। यह भारत की विदेश नीति की या श्री जवाहर लाल की असफलता का प्रभाव हैं।

इधर अमेरिका में नेहरूजी का काफी सत्कार किया गया, इससे हमारे देश को बहुत से पत्र शोर मचाने लगे कि भारत की इज्जत खूब बढ़ रही है, बहुत से तो भारत को एशिया का नेता मानने और कहने लगे हैं। पर भारत की इज्जत कैसी बढ़ी है और उसको नेतृत्व कैसा मिला है यह तो लंका बर्मा, मलाया सरीखे छोटे-छोटे एशियाई राष्ट्रों के द्वारा भारतियों के किये गये अपमान से तथा जरा-जरा सी बात में भारत सरकार की की गई उपेक्षा से साफ मालूम होता है।

आश्चर्य की बात तो यह है कि जिस ब्रिटिश कॉमनवेल्थ के भीतर रहने का भारत सरकार ने निश्चय किया है उसी में भारतीयों की अधिक से अधिक दुर्दशा है। कॉमनवेल्थ अगर भारतीयों को इतने अधिकार भी देने को तैयार नहीं है, जितने कॉमनवेल्थ के बाहर के लोगों को, तब कामनवेल्थ में रहने का क्या अर्थ है। उधर रूस को देखिये जिसमें काले गोरे आदि का कोई भेदभाव नहीं है, किसी तरह का जाति भेद नहीं हैं। इधर कॉमनवेल्थ में जरा-जरा से सिमित्त से भारतीयों का कचूमर बनाया जाता है।

नेहरू जी के इस वक्तव्य से मैं सहमत हूँ कि "जो भारतीय जहाँ बस गये हैं उन्हें वहीं की जनता में मिल जाना चाहिये।"

पर मुश्किल तो यह है कि भारतीय तो मिलने को तैयार हैं पर उन उन देशों के लोग मिलाने को तैयार नहीं है।

कुछ लोगों की तरफ से यह आवाज सुनाई देती है कि जब भारतीय विदेशों में बस गये हैं तब उनके विषय में भारत को बोलने का क्या अधिकार है। पर यह अधिकार तो इसी बात से साबित होता है कि विदेशी सरकारें अपने यहाँ के भारतीयों को भारत भगाने की कोशिश करती हैं। अगर उनने उन्हें अपना नागरिक मान लिया है तो उन्हें भारत भगाने की कोशिश क्यों की जाती है। भारत किसी राज्य के भीतरी मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहता पर वह यह अवश्य चाहता है कि भारतीयों को न्यायोचित अधिकार अवश्य मिलें। यह राष्ट्रीयता का सवाल नहीं है, मानवता का सवाल है। अगर दूसरे राष्ट्र मानवता की इस प्रकार अवहेलना करेंगे, जिसका सम्बन्ध भारत के खून से और उसके गौरव से हो तो उसे गंभीरता से उस पर विचार करना पड़ेगा। अन्तर्राष्ट्रीय के नाम पर भारतीयों के विशेषाधिकार नहीं किन्तु मनुष्योचित और न्यायोचित अधिकारों की अवहेलना नहीं की जा सकती।

भारत सरकार इस प्रश्न पर बिलकुल उपेक्षा कर रही है यह तो नहीं कहा जा सकता, फिर भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि उसकी नीति सफल नहीं हो रही है, वह जो तटस्थता का ढोल कर रही है इससे उसका कोई घनिष्ट मित्र नहीं रह गया है, उधर कॉमनवेल्थ में शामिल रह कर वह एक तरह से आत्म समर्पण मार्ग में बढ़ रही है। अपने गौरव का ध्यान रखकर चतुरता के साथ उसे अन्तर्राष्ट्रीय जगत में अपना स्थान बनाना है और टुच्चे-टूच्चे राष्ट्र भी जो उसका और उसकी सन्तान का जिस तरह अपमान कर रहे हैं वह असह्य है।

लंदन में अभी हाल में एकनया हवाई बेड़ा अपने ढंग का अकेला है। इंगलैण्ड की महारानी बेड़े का उद्घाटन [illegible]
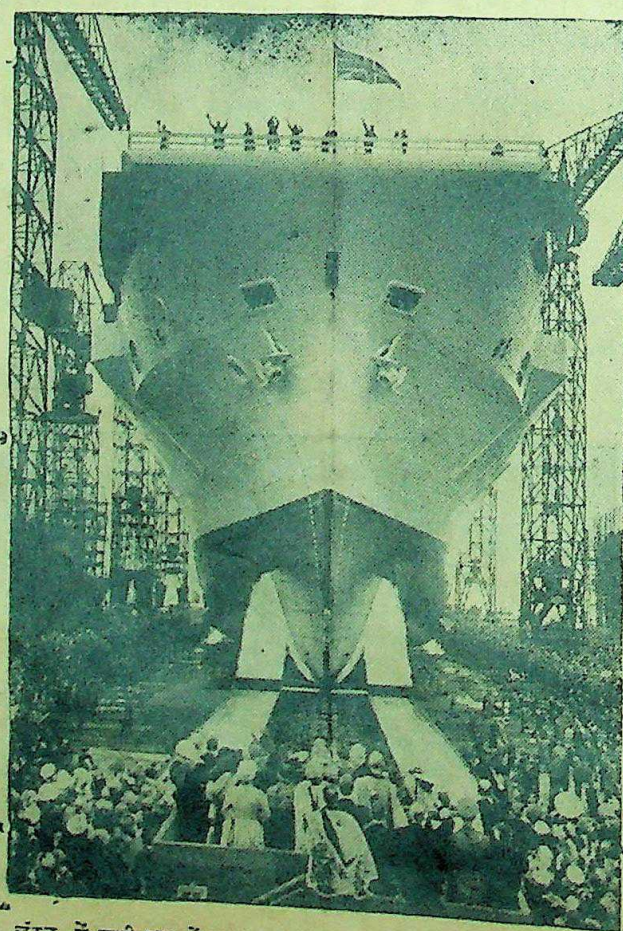
काश्मीर-पुराना और नया

सांस्कृतिक तथा आज की राजनीति पर एक विहग दृष्टि

लेखक, श्री राधाकृष्ण सुक्ल

पाकिस्तान की स्थापना के बाद से काश्मीर का महत्व विशेष रूप से बढ गया है। प्राचीन संस्कृति की दृष्टि से तो काश्मीर का महत्व है ही किन्तु आज की राजनीतिक दृष्टि से तो इसका महत्व और भी बढ़ गया है। इस लेख मे लेखक ने काश्मीर की प्राचीन तथा आज की स्थिति तथा समस्या पर सुन्दर प्रकाश डाला है। लेख पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

काश्मीर का देश बड़ा ही रमणीक व सुन्दर है। वहां की जलवायु बहुत अच्छी, आनन्दमयी और स्वास्थ वर्धक है। विशाल पर्वतों, अनुपम झीलों तथा नदियों के दृष्य अलौकिक हैं। भूमि खेती के लिये बड़ी उपजाऊ है। वहाँ इतने सुंदर फल तथा फल-फलारी उत्पन्न होते हैं कि उन्हें देख मनुष्य यकायक यही कह उठता है कि काश्मीर की गाथा देवगणों और देवियों की ही गाथा है। इसी लिये वह भारत की स्वर्ग भूमि कहलाता है।

❀ ❀ ❀

कल्हण द्वारा लिखित राज तरंगिणी नामक पुस्तक में काश्मीर के निर्माण का वर्णन दिया गया है। यह देश पूर्व ऐतिहासिक काल में एक विशाल झील था। ईश्वरीय गति के फल स्वरूप झील का पानी शुष्क हो गया और भूमि की उत्पत्ति हो गई। उस विशाल झील के चारों ओर विशाल पर्वत विद्यमान थे जिनसे बच कर जाना असम्भव था। हरमुख पर्वत पर श्री पार्वती देवी का निवास स्थान था। श्री पार्वती जी अलर झील में जल क्रीड़ा किया करती थीं। अलर झील में एक बहुत बड़ा नाग-दानव निवास करता था। नाग-दानव के कारण झील में तूफान आया करते थे जिससे नौका चलाने वालों को बहुत कष्ट होता था। दानवों तथा राक्षसों को वहाँ से निकालने के लिये बहुत काल तक देवगणों तथा राक्षसों में युद्ध चलता रहा। आखिर शिव भगवान देवगणों की सहायतार्थ वहाँ पहुँचे और लाखों वर्षों तपस्या करने के पश्चात् नाग-दानव का नाश करने की शक्ति प्राप्त की।

ब्रह्मा के पौत्र के साथ राक्षस खुल कर युद्ध नहीं करना चाहता था इसलिये वह झील में छिप गया। देवगणों ने वराहमूल (बारमूला) पर्वत पर धावा किया और उसे तोड़ कर उन्होंने झील का पानी बाहर निकाला। वर्तमान पोखर तथा कंदरायें उसी की साक्षी रूप आज भी वर्तमान हैं। फिर भी नाग-दानव छिपा रहा और सूर्य तथा चन्द्रदेव की सहायता से उसका पता लगाया गया।

पता लगने पर श्री पार्वती जी ने हरमुख पर्वत पर से एक छोटा पर्वत उठा कर राक्षस के ऊपर फेंक दिया जिससे उसकी मृत्यु हो गई। वह पर्वत अब भी वर्तमान है और उसी पर हरि-पर्वत का दुर्ग बना हुआ है। धीरे-धीरे समस्त राक्षस मार भगाये गये से और मनुष्य निवास करने लगे जिनके कारण काश्मीर का वर्तमान राज्य बन गया। यह पूर्व ऐतिहासिक गाथा है। इस पूर्व ऐतिहासिक गाथा से सर्वथ सिद्ध है कि जब काश्मीर देश के निर्माण की गाथा का सम्बन्ध भारतीय इतिहास तथा उसके प्राचीन देवगणों तथा राक्षसों से है तो वह भारत से कैसे विलग कहा या किया जा सकता है।

❀ ❀ ❀

काश्मीर में प्राचीन काल के बने हुये अनेक सांस्कृतिक स्थान तथा स्मारक हैं। यद्यपि यवन शासकों (जिसे सिकन्दर) तथा हिमपातों और जलवायु की भीषणता के फल स्वरूप अधिकांश स्मारकों का नाश हो गया है फिर भी राज्य विभाग जिन सांस्कृतिक स्थानों की रक्षा करने में सफल हुआ है वे आज भी वर्तमान हैं। उनमें से कुछ का वर्णन निम्नांकित है—
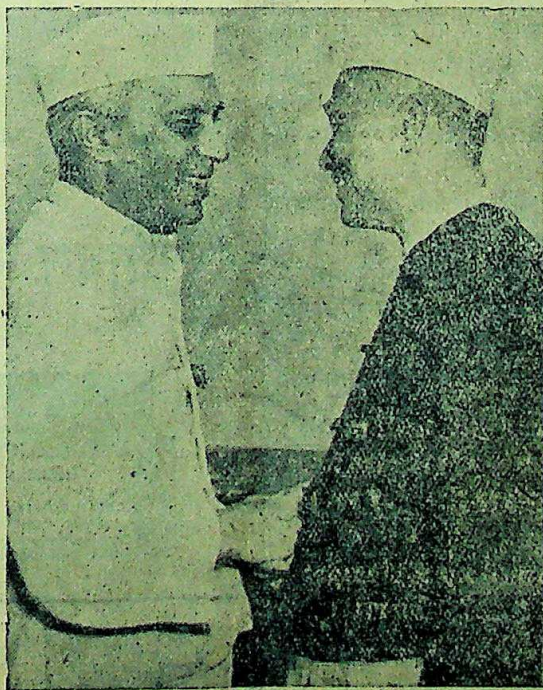
(१) कोटाला से ७६ वें मील पर सड़क के ऊपर हरे पत्थर का बना हुआ बन्दी का मन्दिर है। मन्दिर जीर्ण अवस्था में है। इसके निर्माण काल का ठीक ज्ञान प्राप्त नहीं है। कुछ लोगों का मत है कि यह बौद्ध मन्दिर है और कुछ का ध्यान यह प्राचीन हिन्दू मन्दिर है जो ७०० ई० में बना था।

२—कोहाला से ८१ मील की दूरी पर बूनियार का मन्दिर स्थित है। यह मन्दिर एक घाटी में अपनी असली अवस्था में वतमान है। कहा जाता है कि पांचवीं सदी में भवानी देवी के लिये इस मन्दिर का निर्माण हुआ था। इससे ६ मील आगे श्री लङ्क का देव स्थान है। यह बारह फुट ऊँचा भारी शिवलिङ्ग है जिसके चारों ओर चित्र अंकित है।

३—श्रीलिंग से डेढ़ मील दक्षिण फतेहगढ़ गाँव है। गाँव में ही मन्दिर स्थित है जिसके चारों ओर महाराज रणजीत सिंह ने किला बनवाया था। मन्दिर में ११ फुट लम्बे ४ फुट चौड़े तथा ३ फुट मोटे पत्थर लगे हैं। मन्दिर बनवाने वाले का नाम तथा उसकी निर्माण तिथि अज्ञात हैं। बराह मूल से डेढ़ मील दक्षिण पश्चिम मुजफ़्फ़राबाद सड़क पर, झेलम नदी के दाहने तट पर एक छोटे सरोवर के ऊपर नारायण-काल स्थित है जिसकी शोभा बड़ी ही रमणीक है।

४—बारामूला से १२ मील आगे श्रीनगर की ओर तापर गाँव स्थित है जहाँ नरेन्द्रेश्वर जी का मन्दिर स्थित है। इस मन्दिर का निर्माण प्रतापदित्य की स्त्री नरेन्द्रप्रभा ने ६३४ ६८४ के मध्य कराया था। सिकन्दर यवन राजा ने मन्दिर को तड़वाया था। तापर से ५ मील आगे सड़क पर शंकर गौरीश तथा सुगन्धेश्वर के दो मन्दिर स्थित हैं। इनका निर्माण काल ८८३ तथा ९०२ ई० के मध्य का है। इन्हें शंकर बर्मन राजा ने बनवाया था। राजा की स्त्री का नाम सुगंध था। श्रीनगर से १६ वें मील पर एक शिला स्तूप है।

प्रधान मंत्री पंडित नेहरू काश्मीर की समस्या सुलझाने में लगे हैं।

५—शंकराचार्य या तख्ते सुलेमान का स्मारक तख्ते सुलेमान नामक पर्वत पर स्थित है। श्रीनगर जाने वाले यात्रियों का आकर्षण इस मन्दिर की ओर अवश्य ही होता है। सर्व प्रथम इसका निर्माण संधिमान द्वारा हुआ था। वह लगभग २५ सौ० वर्ष ईसा के पूर्व काश्मीर का राजा था। महाराज गोपादित्य तथा ललितादित्य ने मन्दिर की दोबारा मरम्मत कराई था। सुल्तान मोहम्मद गजनी जब काश्मीर आया तो उसने अपनी नमाज उसी मन्दिर में पढ़ी थी इसलिये सिकन्दर जब सिकन्दर को इसका पता चला तो उसने इस मन्दिर को तोड़ने की मनाही कर दी। झेलम नदी से लेकर पहाड़ के ऊपर तक गढ़े हुये सुन्दर पत्थर लगे थे। इन्हीं पत्थरों को निलवा कर नूरजहाँ ने नगर की पत्थर-मस्जिद का निर्माण कराया था। बौद्ध इसे पस-पर्वत के नाम से विभूषित करते हैं और बड़ी भक्ति की दृष्टि से देखते हैं।

६—श्रीनगर में झेलम नदी के दूसरे तथा तीसरे पुल के मध्य नरेन्द्र स्वामी का मन्दिर हैं। इसे लखन नरेन्द्रादित्य ने बनवाया था। तीसरे तथा चौथे पुल के मध्य शाह हमदान मस्जिद स्थित है जो लकड़ी की बनी है। यह शाह हमदान नामक फकीर के स्मारक में बनाई गई है। यह फकीर फारस का निवासी था जो कुतुबउद्दीन के समय-काश्मीर में धर्म प्रचारार्थ आया था। कुतुबउद्दीन ने वहीं के काली मन्दिर को तोड़ कर यह मस्जिद बनवाई थी। काली मन्दिर का निर्माण १०० वर्ष ईसा के पूर्व महाराज प्रवरसेन ने कराया था।

यह मस्जिद कितने ही बार जलाई और बनाई गई अन्तिम बार अब्दुल बर्कत खाँ ने इसे बनवाया तब से वैसी

प्रधानमंत्री पंडित नेहरू अपनी वर्मा यात्रा में वर्मा के मंत्री से भेंट कर प्रसन्नता प्रगट कर रहे हैं।

ही खड़ी है। हिन्दू लोग झेलम के किनारे काली की पूजा करते है और कहते है कि उसका सोता मस्जिद के नीचे मन्दिर है। जब सिखों का काश्मीर पर अधिकार हुआ तो सिख सूबेदार हरीसिंह ने मस्जिद को उड़ा देने की आज्ञा दी क्योंकि वहाँ पर हिन्दू मन्दिर था परन्तु जैसे ही मन्दिर उड़ाया जाने को था वैसे ही मुसलमान लोग पंड़ित वीर बलदर के पास गये और मस्जिद को बचाने की प्रार्थना की। वीर बलदर की सहायता से ही सिख विजयी हुये। उन्होंने सिख गवर्नर के पास जा कर कहा कि हिन्दू स्मारक यद्यपि मुसलमानों की देख भाल में है फिर भी वह सुरक्षित है। नष्ट करने से उसकी दशा बिगड़ जावेगी और समस्त अपवित्र लोग वहाँ जावेंगे इसलिये उसे नष्ट न किया जाये। हरी सिंह ने पंडित जी की बात स्वीकार कर ली और उसे उड़ाया जाने से रोक दिया।

७—पत्थर मस्जिद या नौ मस्जिद झेलम तट पर शाह हमदान के ठीक दूसरी ओर स्थित है। इसे नूरजहाँ ने शंकराचार्य पहाड़ी पर वाली सीढ़ी के पत्थरों से बनवाया था। तैयार होने पर सुन्नी मुसलमानों ने इसे मस्जिद मानने से इन्कार किया था क्योंकि यह शिया स्त्री द्वारा बनवाई गई थी।

८—झेलम के चौथे पुल के नीचे महा श्री का मन्दिर स्थित है। यह महाराज प्रवरसेन द्वितीय द्वारा बनवाया गया था। अब मन्दिर कब्रिस्तान बना दिया गया है। सिकन्दर की बीबी उसमें गाड़ी गई थी। मन्दिर के बाह्य भाग में जैनुल आब्दीन की कब्र है। झेलम के छठवें पुल के समीप स्कन्द भवन है। यह युधिष्ठिर द्वितीय के मंत्री स्कन्दगुप्त द्वारा बनवाया गया था। यह पीर मोहम्मद बसर के स्मारक रूप में प्रयोग किया जाता है। छठवें पुल पर कुछ प्राचीन मन्दिरों के भग्नावशेष स्थित हैं जिसे लौकी श्री कहते हैं। इसी के नाम पर घाट का नाम लोखारीयार है जो लौकी-श्री-यार का अपभ्रंश है। छठें पुल के नीचें बायें तट पर त्रिभुवन स्वामी के मन्दिर के भग्नावशेष हैं। इसे चन्द्रपिदा राजा ने ६८४-६९३ के मध्य बनवाया था। समीप ही ठग बाबा साहब नामक मुसलमान साधु की कब्र है जिससे उसका नाम ठग बाबा साहब है।

९—क्षमागौरीश्वर का शिवमन्दिर दूध गंगा तथा झेलम के संगम पर स्थित है। इसे दसवीं शताब्दी में क्षमागुप्त नामक राजा ने बनवाया था। इस स्थान पर अभी हाल ही में मन्दिर की कुछ गढ़ी शिलायें तथा शारदा लिपि का शिलालेख पृथ्वी से खोद कर निकाले गये हैं। क्षमागौरीश्वर के दूसरे तट पर दिद्दा मठ है जिसे क्षमागुप्त की रानी दिद्दा ने बनवाया था। मन्दिर के आस-पास वाला नगर का भाग दिद्दामार के नाम से अब भी पुकारा जाता है। यह मठ अब मलिक साहब की समाधि है। दिद्दामठ से उत्तर की ओर अली मस्जिद की ईदगाह है जिसे १३९७ में जैनुल आब्दीन ने बनवाया था।

१०—इससे २ र्मील आगे विचार नाग के समीप विक्रमेश्वर मन्दिर के भग्नावशेष हैं। जिसे क्रियादित्य ने बनवाया था। सिकन्दर ने इस मन्दिर को बर्बाद करके पास ही एक मस्जिद तथा मन्दिर बनवाया था। आधमील और पूर्व की ओर अमृत भवन स्थित है जिसे मेगवाहन की रानी अमृतप्रभा ने बनवाया था। इस भाग को अब वाँन भवन कहते हैं। विचार नाग से २ मील दक्षिण राणादित्य का बनवाया हुआ राणेश्वर मन्दिर है जो मदीन साहब की समाधि के रूप में प्रयोग होता है। यहाँ से दक्षिण की ओर जाने पर एक बड़ा क़ब्रस्तान है जहाँ विष्णु राना स्वामी के मन्दिर के भग्नावशेष हैं।

११—यहाँ से थोड़ी दूर पर दक्षिण-पूर्व की ओर जामा मस्जिद है इस मस्जिद को सिकन्दर बादशाह ने १४०४ ई० में निर्माण कराया था। यह मस्जिद एक मन्दिर की सामग्री से तैयार की गई थी। मस्जिद का आंगन २५४·२३४ फुट है। यह मस्जिद तीन बार अग्नि द्वारा जलाई और पुनः बनाई गई। अन्तिम बार १६७४ ई० में औरङ्गजेब के समय में बनी थी। मस्जिद के स्थान को बौद्ध लोग पवित्र दृष्टि से देखते हैं। महाराज काश्मीर ने इस मस्जिद की मरम्मत के लिये १८९३ में २८ हज़ार तथा १९२२ ई० में ४० हज़ार रुपया दान दिया था।

यहाँ से पश्चिम की ओर थोड़ी दूर पर कादोकदल के समीप सद्भाव श्री का मन्दिर है जिसे प्रावरसेन द्वितीय ने बनवाया था। इसके अन्दर सुल्तान कुतुबउद्दीन गाड़ा गया था। यहाँ मीर हाजी मुहम्मद की समाधि मानी जाती है।

११—दाल झील के तट पर काश्मीरी मुसलमानों की सबसे बड़ी समाधि हजरत बाल है। इस स्थान पर हजरत मुहम्मद के बाल रखे हैं जो साल के कुछ विशेष दिनों में लोगों को दिखाये जाते हैं। इन बालों को ख्वाजा नूरुद्दीन १७०० ई० में लाये थे।

दाल झील की सीमा पर शाहजहाँ का बनवाना हुआ नसीम बाग है। बाटिका में हजारों छायादार चिनार के वृक्ष हैं। इस बाटिका से दाल झील का केन्द्र दिखाई पड़ता है।

१२—दाल झील के उत्तरी-पूर्वी किनारे पर शालीमार स्थित है। इसके सम्बन्ध में एक प्राचीन कथा है। कहा जाता है कि काश्मीर नरेश परवर सेन द्वितीय जो श्रीनगर की बुनियाद डालने वाले थे उन्होंने दाल झील के तट पर एक सुन्दर भवन बनवाया था और उसका नाम शालीमार रखा था। शालीमार का अर्थ "प्रेम का स्थान" होता है। समयानुसार वह महल नष्ट हो गया और वहाँ शालीमार नामक गाँव बस गया।

१६१९ ई० में मुग़ल सम्राट जहाँगीर ने गाँव में एक बाटिका लगवाई और उसका नाम "फरहतबक्श" रखा। १६३० में शाह की आज्ञानुसार जफर खां ने बाटिका को और अधिक सुसज्जित किया और इसका नाम "फैज बख्श" रखा।

शालीमार एक नहर द्वारा दाल झील से मिला है। नहर की लम्बाई लगभग एक मील और चौड़ाई १२ गज है नहर के दोनों ओर छायादार वृक्षों के मध्य चौड़े सुन्दर हरे मार्ग हैं। बाटिका की लम्बाई ५९० गज तथा ऊपर की ओर चौड़ाई २६७ और नीचे की ओर २०७ गज है। बाटिका अपनी सुन्दरता के लिये अद्वितीय है। इसे देख मानव-आँखें तृप्त हो जाती हैं।

१३—शालामार द्वार से सवातीन मील दक्षिण की ओर गुप्त गंगा है। यहाँ प्रति वर्ष बैसाखी के दिन मेला लगता है। गुप्त गगा एक सरोवर सा है। सरोवर के पृष्ठ भाग में एक भींटा है जिसके नीचे के पत्थर नकाशदार हैं। भींटे के नीचे संधिमती के बनवाये हुये मन्दिर के भग्नावशेष हैं। यह मन्दिर ५० वर्ष ईसा पूर्व बना था।

गुप्त गंगा से कुछ सौ गज की दूरी पर निशात बाटिका है। इस बाटिका को नूरजहाँ के भाई आसफ़जाह ने लगवाया था। निशात का अर्थ आनन्द है। १६३३ में शाहजहाँ ने इसका भ्रमण किया था। बाटिका में शालीमार नहर से पानी आता है। शाहजहाँ बाटिका देखकर बहुत प्रसन्न हुआ था। उसने बाटिका की कई बार प्रशंसा की ताकि आसफजाह कह दे कि "यह हुजूर ही का है" परन्तु आसफजाह ने न कहा इस पर शाहजहाँ क्रुद्ध हो गया और उसने नहर का पानी बन्द करा दिया। आसफजाह पानी के बिना बाटिका की बिगड़ती दशा देख एक दिन बड़ा दुखी हुआ, वह शोकावस्था में सो गया। उसके एक नौकर ने उसका यह हाल देखकर नहर खोल दिया। पानी की आवाज से आसफजाह जाग उठा। उसने बादशाह के भय के कारण नहर फिर बन्द करा दी। जब शाहजहाँ ने समाचार सुना तो नौकर को बुलाया। नौकर ने सारा हाल कह सुनाया और कहा कि मालिक का शोक दूर करने के लिये उसने नहर का पानी खोला था और उसके लिये वह सजा

(शेष पृष्ठ १२ पर)

चोरों के यार गठकटे

लेखक, श्री श्रीराम शर्मा 'राम'

आज कल के युग में चोरबाजारी और चोरबाजार वालों की अधिकता है किंतु ऐसे भी पुण्यात्मा चोरबाजार वाले हैं जो प्रत्यक्ष रूप से तो संस्कृति, धर्म और सरकारपरस्ती का ढोंग रचे हुए हैं किंतु अप्रत्यक्ष रूप से वह अपनी चोरबाजारी के द्वारा लाखों रुपये का सौदा कर रहे हैं। इस कहानी में इसी भावना का सुंदर चित्रण किया गया है, जो पठनीय, सामयिक तथा मनोरंजक है।

सेठ धनपतराय ने पाँच लाख रुपये का दान करके जिस मन्दिर का निर्माण कराया, उसकी शोभा और प्रतिष्ठा के सामने देश के बहुत से प्रसिद्ध मन्दिरों का मस्तक झुक गया। सुना गया कि सेठजी ने देश के प्रसिद्ध शिल्प-कलाविदों का सहयोग पाकर मन्दिर निर्माण में नयी और पुरानी कला-कृतियों का सामञ्जस्य स्थापित किया। नित्य ही सैकड़ों दर्शनार्थी मन्दिर देखने पहुँचते और मन्दिर की शोभा तथा सेठजी की धर्म निष्ठा, जाति प्रियता की भूरि-भूरि सराहना करते हुए लौटते। जिन अखबारों को सेठजी से साहाय्य प्राप्त था उनके अतिरिक्त अन्य पत्रों ने भी कालम-के-कालम मन्दिर और सेठजी की प्रशंसा में रंग डाले थे।

धर्म के प्रति जाति में चिरकाल से बना हुआ विश्वास उस समय और अधिक जागरित हुआ। धर्म ही जीवन का प्राण है...मनुष्य की आत्मिक, बौद्धिक और सांस्कृतिक उन्नति का प्रतीक एक साधन! धर्म है तो जय है,—मानव की विजय! इस विश्वास की पुनरावृत्ति का एक कारण यह भी हुआ कि सेठ धनपतराय की दानशीलता, धार्मिकता के साथ-साथ जनता ने देखा कि उनका व्यापार बढ़ गया...नाम बढ़ गया...जाति, समाज और देश में सर्वत्र उनके यश का गुणगान गाया जाने लगा।

यद्यपि इस विषय में अनेक प्रकार की किम्वदन्तियाँ भी प्रसारित हुईं। सेठजी के सम्पर्क में रहने वाले, उनके पैसे से पोषित हुए जितने व्यक्ति थे, वे सभी अवश्य ही यह कहते हुए सुने गये कि सेठजी महान् हैं...धर्म के अवतार! ऐसे व्यक्ति सेठजी की पत्नी का भी गुणगान करते और बताते कि उनका एक लक्ष है,—मीराबाई का अवतार हैं, सेठानीजी! बस, इतना अन्तर है कि इनके पति सेठजी हैं, धर्म के प्राण! और मीराबाई के पति थे राणाजी, उसके रूप के चाहक; उसकी पूजा के विरोधी!

निःसन्देह, सेठजी धर्मात्मा थे,—सेठानीजी; ऐसा सभी का विश्वास था। मित्रों, परिचितों और आश्रय पाने वालों ने इस सत्य को सत्य ही माना, ढोंग या प्रमाद नहीं।

जनता के अतिरिक्त सेठजी सरकार के दरबार में भी सम्मानीय समझे जाते। उनके व्यापार से जितना रुपया टैक्स के रूप में सरकार को मिलता वह अकेला इतना होता कि प्रान्त भर की आय से उसे किसी प्रकार भी कम नहीं कहा जा सकता था। इसके अतिरिक्त समय-समय पर सरकार को जो सहयोग दिया जाता वह भी अपना एक अलग स्थान रखता था। सेठजी ने इस सत्य को प्रमाणित किया कि पैसा, पैसा है,—बड़ा है। आदमी छोटा। पैसे के साथ आदमी उछलता है, इस खेल को सेठजी ने भी सीखा। देश के बड़े-बड़े नेता आते और पैसे के लिए सेठजी का मुँह देखते। और उस व्यक्ति का यही सुख था। यही वैभव। जगत की जड़ता और स्थिर प्रभुता को देख वह हँसते। मनुष्य कितना ही है और कितना कायर, मानो वह इतना समझ गये थे।

चतुर और समय के साथ चलने वाले सेठ धनपतराय!

× × ×

लेकिन जिस धर्म और जाति के लिए सेठ धनपतराय अपना पैसा खर्च करते,—धर्म और प्राण कहलाये गये—जब वही जाति न अपनी जगह से बढ़ी, न हटी, तो उन्हें अनुभव हुआ कि फ़रिहाद की तरह पहाड़ को काटा गया है। फ़रिहाद तो प्रेमी था, जान लड़ा बैठा था, वह शीरीं के लिए एक नहर क्या, जाने पानी के कितने सोये हुए सोते जगा सकता था। अतएव, इस तुलना में सेठ धनपतराय अपने को हीन पाते, तो जैसे अपने आप में खो जाते। आखिर शास्वत वे भी थे, मानवता के प्रतीक। इसलिए जब अपनी ही दृष्टि साफ नहीं दिखाई दी, तो वे अनेकों बनाये गये मन्दिर ईंट-गारे से अधिक महत्वपूर्ण नहीं दिखायी दिये। अब तक उन्होंने समझा कि लोग उनके पीछे चल रहे हैं, पर अब पता चला कि वे लोगों के पीछे चल रहे थे। उन्होंने कोई नया मार्ग नहीं बनाया। आदि काल से चली आई जो धूलि धूसरित पगडण्डी थी, उसी पर उनके पैर रिगस रहे थे। वह अन्य धनपतियों से श्रेष्ठ थे, जनता के प्रिय। परन्तु जिस सत्यं-शिवन् की आड़ लेकर वह जनता का रक्त शोषण कर रहे थे, वह एक ऐसी समस्या थी कि जिससे समाज के बहुत से व्यक्ति आँख नहीं फेर सकते थे। जिस प्रकार एक शराबी को शराब पीने की, चोर को चोरी करने की आदत पड़ जाती है, कदाचित् इसी प्रकार सेठजी में धार्मिक प्रवृत्ति के साथ-साथ स्वार्थ-साधना की इच्छा दबी एक दिन नहीं, वरन् उग्रतर होती गयी। उनके कारखानों में जो हजारों मजदूर काम करते थे, वे सभी जीवन की वेदना, उत्पीड़ा और कड़वाहट को छोड़ किसी एक दिन भी मधुरता की कल्पना नहीं कर सके थे। वे मजदूर जो रात-दिन मशीनों से लड़ते-मरते वे पुरस्कार में पाते,—लांछना, उपेक्षा और अकाल-मृत्यु! वे नहीं जानते कि जीवन क्या है,—जीवन का मोह क्या! बस, वे जीते और अन्धेरी कोठरियों में घुट-घुट कर ऐसे साँस तोड़ देते कि जैसे जीवन ही नहीं था उनके बस, एक आय था,—मानों अवांछनीय पाप, जो बरबस ही उन्हें भोगने को मिल गया था।

वे बेचारे मजदूर!

प्रायः देखा गया कि जब-जब सेठ धनपतराय के कारखानों में हड़ताल हुई तो क्या मजाल कि जनता जनार्दन के सेवक, मजदूरों के पृष्ठ-पोषक—नेता लोग उन मजदूरों की आवाज का साथ दे सके हों। मानो उनकी भी असमर्थता थी। सेठजी की निन्दा करने की बात उन्हें भी संगत नहीं लगती थी। इसका परिणाम यह होता कि सेठजी की बात चलती। अन्य कारखानों की अपेक्षा उनके यहाँ वेतन भी कम दिया जाता और सख्ती भी अधिक की जाती। लगता कि मजदूर के नाम पर आवाजें जरूर उठतीं, पर वे जहाँ थे; उन्हें आगे बढ़ाने की चेष्टा नहीं की जा सकती थी। आदर्श

अन्तर्राष्ट्रीयख्याति प्राप्त भारतीय कलाकार की अल्फ्रेड डेविड थाम्स (आगरा) लंदन में रायल एकेडमी की ओर से होने वाली प्रदर्शिनी में महात्मा गांधी के चित्र अपने चित्रों का प्रदर्शन कर रहे हैं।

खान ढूँढने का नया प्रयोग किया जा रहा है। यह प्रयोग पहले अफ्रीका के युद्ध में किया गया था। पर अब इसका प्रयोग आजकल व्यवसाय का एक अंग बन गया है। खनिज पदार्थों का इससे आसानी से पता लगाया जा सकता है।

लिए ? न, न, ऐसा नहीं, कभी नहीं। यह तो झूठ है,—ढोंग ! धर्म का झण्डा आगे करके पीछे से तलवार चलायी जाती और विजय प्राप्त की जाती है।

कोई कहते—धर्म यह नहीं,—पुण्य नहीं—दान नहीं,—पाप है, यह ! मन्दिर भरे पड़े हैं, देश में ! जिसमें गीदड़ लोटते हैं। जिनसे उपेक्षा और लगने के अतिरिक्त और क्या पाते हैं, लोग ! कायर भी बनते हैं। वे उदाहरण देकर कहते – सारनाथ के मन्दिर पर गोरी ने चढ़ाई की, तो साठ हजार ब्राह्मण वहाँ मौजूद थे। वे सभी कायर थे और गोरी की तलवार के सामने सिर झुका कर खड़े हो गये थे। वे उससे प्राणों की भीख मांग रहे थे।

किन्तु समय आया कि देश जागने लगा—एक जाति के द्वारा दूसरी जाति का खून किया जाने लगा। मनुष्यों द्वारा जिस प्रवृत्ति का परिचय दिया जा रहा था और देश को जलाने तथा नष्ट करने का प्रयत्न आरम्भ हो गया था, ठीक उसी के अनुकूल सेठ धनपतराय ने अपनी जाति के बाहर रहने वालों को कहना आरम्भ किया—'घृणित हैं ये... नीच...'

किन्तु सेठजी के कारखाने चल रहे थे। मशीनें धड़ाधड़ कपड़ा और अन्य वस्तुएँ निर्मित कर रही थीं। सेठजी के दलाल छूटे हुए थे, वे लाखों रुपयों का माल भारतीय सीमा के बाहर पहुँचाने में समर्थ होते थे। देश में भूख, त्रास और हीनता फैलती चली, परन्तु सेठ धनपतराय के मन का एक और अखण्ड संकल्प अभी जीवित था और वह अबोध गति से फल फूल रहा था। वह देश के विद्रोही नहीं, बागी नहीं, परन्तु बागियों के साथ उनका जिस प्रकार का गठबन्धन बन गया, मार्ग वही चिल्ला-चिल्ला कर कह रहा था—मनुष्य सब एक हैं, धर्म सब एक,—मन्दिर, मस्जिद के निर्माता !

चल रहा था, भावना का व्यक्ति भी बोल रहा था, परन्तु उसकी कायरता अभी जीवित थी, इसलिए मानव की मानवीयता अन्धकार में पड़ी हुई आहें भर रही थी।

लगता कि मानव मर रहा था, देश धू-धू कर करके जल रहा था।

इतना देख, शास्त्रविद् और धर्म परायण कहते—'धर्म यह नहीं है... पाप है !'

सुधारक कहते—'जिस जनता का रक्त-शोषण किया जाता है, लूटा जाता है, भूखों मारा जाता है, उसी के लिए इन मन्दिरों का निर्माण किया गया है ! यह मनुष्यता की हत्या है। इन मन्दिरों की एक-एक ईंट, गारा और चूना मानव के हाड़, मांस, खून और मज्जा से निर्मित किया गया है.. भ्रम में डाला गया है, यह मानव ! इसे बताया गया है कि एक ईश्वर है, सृष्टि का नियन्ता, जब एक मोहन भोग खा रहा है और इसका झूठे टुकड़े, तो उस ईश्वर को रोना नहीं आता क्या यहाँ मनुष्यता को सताया गया है। यह कहा गया है कि कर्मों का भोग यह है, भाग्य अपना-अपना ! आह ! कितनी अमानुषिकता है, यह ! कितना ढोंग और दम्भ प्रचारित किया है, इस धनिक समाज ने ! झूठ ! छल ! सुधारकवादी कहते—'धर्म मनुष्यता सिखाता है, ईश्वर पूजा के द्वारा दया और ममता का निर्माण होता है... इस हृदय हीनता का नहीं। इस रक्त शोषण का नहीं।

कुछ ऐसे भी व्यक्ति थे, जो कहते—यह सेठ धनपतराय की बात नहीं, सम्राटों और विश्व विजेताओं की इच्छा रही है कि वह अपने स्वार्थ के लिए जिस जनता को लूटते हैं, चूसते हैं, उसका मुँह बन्द करने के लिए धर्म का आश्रय लेते हैं,—पाप पुण्य की दीवार खड़ी करते हैं, ये लोग ! सम्राटों की विजय के लिए जिस जनता को भेड़-बकरियों की तरह युद्ध के मैदान में कटा दिया जाता है आखिर क्यों ? किस आधार पर ? क्या धर्म के लिए? क्या जाति उत्थान के

रूसी साम्यवाद की समृद्धि

संसार की राजनीति में उसका महत्वपूर्ण स्थान क्यों है ?

लेखक, प्रोफेसर ओ३मप्रकाश वर्मा एम० ए०, एस० काम०

सोवियत रूस की आज की राजनैतिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक स्थिति कैसी है ? शासन-संचालन किस प्रकार के शासन-विधान के अनुसार हो रहा है, इन सभी विषयों पर इस लेख में व्यापक और सुन्दर प्रकाश डाला गया है। लेख में आज की रूसी राजनीति का विहग ज्ञान प्राप्त होता है। लेख पठनीय तथा विचारणीय है। इस लेख का प्रथम अंश गतांक में छप चुका है।

(गतांक के आगे)

...को सरकारी तौर पर काम में ...ता है। अतएव प्रत्येक कम्यु-...के मत ही सरकारी मत होता ...में कोई हेरफेर नहीं होता पर ...जन सेवक दल की आज्ञाओं ...अधिकारी हैसियत में कार्यरूप ...करते हैं।

...के सुचारु संचालन में जब ...सरकार स्थापि हुई थी, तब ...स्टालिन कम्युनिस्ट दल के ...र्वाचित किये गये थे और तब ...क वे उसी पर आसीन हैं। ...जून १९४१ को रूस पर आक्र-...था तब तक स्टालिन सुप्रीम ...के एक निर्वाचित डेलीगेट थे ...क्रमण होते ही वे सोवियट संघ ...मन्त्री एवं प्रधान सेनापति ...दिये गये और तब से आज ...पद की शोभा एवं समस्त ...निभाते चले आ रहे हैं। ...युद्ध में महान् लाल सेना ने ...खदेड़ा तथा आज विश्व के ...क्रांतिज्ञों के लिये एक महान् ...लेनिन के देहावसान के ...ट्राटस्की ही इनके प्रति-...तत्कालीन विश्व क्रांति के ...और स्टालिन का कहना था ...न्ति केवल उस समय करनी ...निज देश में सफल क्रान्ति ...और उसको उदाहरण ...किया जाय। विश्व के ...कूटनीति से इन्होंने ट्राटस्को ...ना असम्भव कर दिया था ...लेनिन का स्थान इन्हें मिल ...प्रकार कम्युनिस्ट दल की ...इनके द्वारा ही विनिर्मित ...अतएव राष्ट्र का प्रधान मंत्रित्व ...इनको प्राप्त हुआ।

...उद्योगधन्धे

...संघ में उद्योगधन्धे तथा ...सरकार के अधिकार में है। ...पर स्वामित्व जनता का ...के समस्त साधन जनता ...सरकार योजना बनाती ...के अनुसार ही उत्पादन ...की जाती है। इस प्रकार ...एकीकरण की मात्रा अधि-...जाती है। सब को उचित ...ता है तथापि किसी धन्धे ...और किसी भी प्रगति के ...न हों, ऐसा नहीं हो ...केसीधे अधिकार में ...वाले धन्धों के अतिरिक्त ...को सहकारी संस्थाएं ...जिसमें देश तथा जनता ...होता है।

...में भारतीय संघ के ...एक उद्योग धन्धा है। ...रूप से हजारों एकड़ ...सम्पादित होती है जिस ...को बहुत भारी प्रोत्सा-हन मिलता है। सामूहिक कृषि का विस्तृत स्वरूप कोलखोजी और आर्तेल हैं, जिन में उत्पादन सरकारी योजना के अनुसार ही होता है और ज्यादती एवं कमी का नाम नहीं आ पाता।

उपभोग में आने वाली आवश्यक वस्तुओं के उचित वितरण की भी व्यवस्था ठीक रूप से होती है। नगरों में वितरण सरकारी स्टोरों तथा ग्रामों में सहकारी समितियों के माध्यम से सम्पन्न होता है। इस प्रकार सदस्यों की नेतृत्व शक्ति प्रतिपादित की जाती है और उसमें उत्तरोत्तर निखार आता है और देश के युवक तथा युवतियों की नैतिकता में वृद्धि होती रहती है।

वस्तुओं के मूल्य जनता के विभिन्न वर्गों के लिए भिन्न भिन्न रखे जाते हैं। धनी अथवा साधारण से अधिक धन उपार्जित करने वालों को उसी वस्तु की उसी मात्रा तथा उसी गुण की वस्तुओं के मूल्य साधारण जनता से अधिक देने होते हैं—इससे आर्थिक समानता में हलचल नहीं मचने पाती और आर्थिक प्रणाली को ठोसत्व मिलता है।

आर्थिक योजनाएँ बनाना

सोवियत संघ की समृद्धि की प्रचुर पृष्ठ भूमि में जहाँ एक ओर राजनीतिक प्रणाली तथा सोवियत नागरिक की नैतिकता है, तो दूसरी ओर वहाँ के शासन व्यवस्था की सयत्न सतर्कता भी। वहाँ की सरकार देश की माँग को इकट्ठा करके उसका अनुमान लगाकर उसी प्रकार अधिक कल-कारखानों को प्रारम्भ करती है और उनको आज्ञा देती है, कि वे अमुक अङ्कों अथवा मात्रा में अमुक वस्तु अथवा वस्तुओं का उत्पादन करें। उत्पादन पूर्ति के लिए सरकार उन कल-कारखानों को उचित सहाय्य भी प्रदान करती है। वह नियोजित योजना एक विशेष आल-यूनियन प्लानिंग कमीशन बनाता है। यह योजना पंचवर्षीय योजना का रूप लेती है। प्रथम पंचवर्षीय योजना १९२८-३३ के लिए बनायी गयी थी। इसमें शक्तिवर्धन, मशीन, शिल्प शिक्षा एवं कैपिटल सामान बनानेवाले उद्योगों को समाज के अन्तर्गत कर दी गई। दूसरी और तीसरी योजना में भी यही ध्येय सामने रक्खा गया, परन्तु विशेषकर उपभोक्त वस्तुओं एवम् सेवाओं के उत्पादन अभिवर्द्धित किया जाय और उद्योग धन्धों को साइबेरिया में भी जमा दिया जाय।

बैंक, साख तथा मुद्रा की व्यवस्था

सोवियत संघ के शासन तथा उद्योग-धन्धों को चलाने के लिए धन की आवश्यकता होती है। वहाँ के नागरिक अपनी सयत्न संचित बचत को बैंकों में जमा कर देते हैं। इसके लिए सोवियत संघ में एक केन्द्रीय राजकीय बैंक मौजूद है, जिसकी हजारों शाखाएँ एवं उपशाखाएँ हैं। यह बैंक धन्धों को चलाने के लिए सहायता प्रदान करती हैं। यही साख रखने का भी काम करते हैं। विभिन्न उद्योगधन्धों के बीच हिसाब-किताब को निबटाना भी इन्हीं बैंकों की जिम्मेदारी है। यह ही उनका लेखा-जोखा समान करते हैं। सोवियत संघ में मुद्रा भी प्रसारित है, जो घरेलू मामलों के लिए सरकार द्वारा नियंत्रित की जाती है और जिसका कोई सम्बन्ध बाह्य देशीय मुद्राओं से नहीं होता। आन्तरिक मुद्रा—रूबल—विदेशी मुद्राओं से कदापि प्रभावित नहीं होती।

सरकारी आयव्ययक

सोवियत संघ का आयव्ययक भारी मात्रा का होता है। अन्य देशों में अधिक धन व्यय किया जाता है सेना, जन-शासन, शिक्षा, सामाजिक सेवाओं बड़ी आदि पर; परन्तु यहाँ इन चीजों पर तो व्यय किया ही जाता है—पर इसके अतिरिक्त समस्त आय-व्ययक का तिहाई अंश सरकारी उद्योगधन्धों को चलाने पर भी व्यय किया जाता है। सरकार की आय का ९०% भाग बिक्री कर से प्राप्त होता है, जो प्रधान उत्पादक पर लगाया जाता है। शेष १०% घटने-बढ़ने वाले करों से प्राप्त होता है।

साम्यवाद के मूल सिद्धान्त एवं विशेषताएँ

विशेषतया तो यह कहना ही पड़ता है कि सोवियत कम्यूनिज्म में विशेषताएँ ही विशेषताएँ हैं, साधारण पूँजीवादी श्रृङ्खला से बंधी हुई जनता के लिए। तो भी उसकी कुछ साधारण बातों का विचार कर लेना आवश्यक है। हम जानते हैं कि सोवियत कम्यूनिज्म के अनुसार उत्पादन के समस्त साधन; सम्पत्ति तथा उत्पादित सामान सरकारी सम्पत्ति समझी जाती है, और उसका वितरण का उत्तरदायित्व भी सरकार पर ही पड़ता है। पर तभी आवश्यक एवं उपभोक्ता वस्तुएँ जैसे खाद्यान, कपड़े, घर, पुस्तकें, फर्नीचर वैयक्तिक हैं। अथवा उन पर सहकारी संस्थाओं का स्वामित्व होता है। बहुधा वे सहकारी रूप से ही चलायी जाती हैं, जिससे समूह का स्वामित्व अधिक कल्याण प्रद होता है।

मार्क्सवादी मूल सिद्धान्तों के अनुसार काम करते हुए सोवियत विधान में स्पष्ट लिखा है कि सभी नागरिकों को रंग, रूप, जाति-पाँति के भेदों को पृथक रखकर राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्रों में समानता दी जायगी और वास्तव में वहाँ इस पर पूरा पूरा अमल किया भी जाता है। इस मूल वस्तु को तोड़नेवाले को सोवियत न्याय कभी क्षमा नहीं कर सकता। यही कारण है कि संघ में नारियाँ सभी क्षेत्रों में बे-रोक-टोक काम करती पायी जाती हैं।

सामाजिक नियम

समाज की वास्तविक व्यवस्था कायम रखने लिए सोवियत संघ ने विवाह-विच्छेद के नियम लागू कर दिये हैं। साथ ही संघ सरकार यह चाहती है। कि वंश का सामाजिक रूप एक सामाजिक ईकाई में बना रहे। बच्चों की देखरेख के लिए माता-पिता भी उत्तरदायी होते हैं, यद्यपि उनकी अन्तिम जिम्मेदारी राष्ट्र की ही है। गर्भ-निरोध पर सूचनाएँ खुले आम दी जाती हैं और गर्भपात यद्यपि कानूनी कर दिया गया है, तो भी केवल उसी दशा में उसे सरकार ठीक समझती है जब ऐसा किया जाय केवल जचा की तन्दुरुस्ती के लिए।

सोवियत संघ में उत्पादन वृद्धि ही एक महान ध्येय समझा जाता है। अतएव यदि कोई नागरिक छुट-पुट जुर्म करता है, तो उसे औद्योगिक सुधार कैम्पों में डाल दिया जाता है, जहाँ उसे उत्पादन कार्यों में रत रहना होता है। परन्तु यदि किसी ने सामूहिक सम्पत्ति की चोरी की अथवा सरकार के विरुद्ध किसी विदेशी सत्ता को सहायता दी अथवा किसी नागरिक का शोषण किया, तो जघन्य से जघन्य सजा देने से भी वह नहीं हिचकता।

सोवियत कम्यूनिस्ट ईश्वर को एक रहस्य नहीं मानता और न उसे कोई विशेष ध्यान देने की वस्तु समझता है। वह भौतिकवादी है और इसलिए सांसारिक रहस्यों की खोज के लिए वह ईश्वर की शरण न लेकर विज्ञान एवं मनोविज्ञान की सहायता ग्रहण करने में ही मंगल मानता है।

वन-प्रधान भारतीय संस्कृति

राष्ट्रीय आत्मविश्वास हमें कब, कैसे प्राप्त होगा ?

लेखक, माननीय श्री० के० एम० मुन्शी

प्राचीन संस्कृति और साहित्य में वनों का बड़ा महत्व माना गया है। राष्ट्रीय सरकार के आने पर वनों की रक्षा तथा उसकी उन्नति की ओर विशेष ध्यान दिया जाने लगा है। इस लेख में माननीय श्री के० एम० मुंशी ने वनों की महता पर विशेष प्रकाश डाला है। श्री मुंशी ने सांस्कृतिक दृष्टि से वनों की विशेष महत्ता बतलाई है। लेख सामयिक तथा सुन्दर है।

एक समय ऐसा भी था जब हमारी संस्कृति सर्वांग जीवन को समरस बनाती थी। आर्थिक जीवन पर भी उसका प्रभाव पड़ता था लेकिन आज हमने इन प्रश्नों को एक दूसरे से बिल्कुल पृथक् कर दिया है। परिणामतः इस मूर्खता की कीमत हम आज दे रहे हैं। सच तो यह है कि समस्त जीवन एक है, अभेद्य है। यह सत्य देखने की कला हमारे हाथों से निकल गयी है। लेकिन मुझे तो यह स्पष्ट दिखायी देता है कि जब तक समस्त जीवन को एक रूप में देखने की कला हम फिर से नहीं सीखेंगे तब तक हम में न राष्ट्रीय आत्मविश्वास आयेगा और न इस भयंकर परिस्थिति से पार उतरने की शक्ति आयेगी।

भारत में कभी भी अन्न की कमी नहीं थी। भूतकाल में भारत धान्य और धन से समृद्ध था। आज अन्न न्यूनता हमारे सामने तांडव कर रही है। जो माता अभी तक "सुजलां सुफलां शस्य श्यामलां" थी वह क्षीण हो गयी है। अपनी संतानों को भी वह खिला नहीं सकती। क्यों? क्योंकि जो हमारी सांस्कारिक प्रणाली है उसको नवीन दृष्टि से देखने की शक्ति हममें नहीं रही। किन्तु यह बात निश्चय समझिये कि इस शक्ति के बिना हम अर्वाचीन जीवन में टिक नहीं सकते।

थोड़े दिन पहले मैंने एक बार कहा था "वृक्ष ही है, जल रोटी है और रोटी ही जीवन है।" यह वाक्य नग्न सत्य है, वाक्पटुता मात्र नहीं। आज सभी भारतीय हृदयों में असन्तोष भरा है क्योंकि हमारे पास खाने को अन्न नहीं। हमारे पास अन्न नहीं है क्योंकि पानी संग्रह करने की पुरानी पद्धति हम भूल गये और नई पद्धति हम हस्तगत नहीं कर सके। हमारे पास पानी नहीं है, वर्षा अनिश्चित है क्योंकि हम तरु महिमा भूल गये हैं। हजारों वर्षों तक हम जीवित रहे क्योंकि हम वन-बिलासी लोग थे, लेकिन आज हमारी दृष्टि संकुंचित हो गयी। हम नये-से बन गये। तरु गरिमा की हमको परवाह नहीं रही। वृक्षों को हम काटने लगे। वृक्षारोपण आज एक फैशन बन गया है, परन्तु उसमें जो धार्मिक श्रद्धा का तत्व था वह चला गया।

मेरा जन्म शहर में हुआ और शहर में ही प्रायः मैं रहा, किन्तु तरुओं के प्रति मेरा प्रेम सदा ही रहा। माथेरान की वृक्षावलियों की छाया में ही मैंने जीवन की सुन्दरता और प्रेरणा पायी है। अपने जीवन के महासंकल्प भी मैंने वहां ही किये। काश्मीर में पहलगाम के ऊपर बैसरन के देवदारू वृक्षों की छाया में मुझे आत्म सिद्धि का किंचिन् स्पर्श हुआ। जंगल के पथ पर जाते जाते ही वनदेवियों ने मुझे कल्पना विलास की शिक्षा दी थी और अपना उपन्यास "भगवान कौटिल्य" लिखते समय नैमिषारण्य के काल्पनिक दर्शन करते हुए ही अपनी सनातन संस्कृति की अमर आत्मा का मुझे साक्षात्कार हुआ।

हमारी संस्कृति में जो सुन्दरतम और सर्वश्रेष्ठ है उसका उद्भव सरस्वती के तट के वनों में हुआ। आर्यवर्त के एक श्रेष्ट स्रष्टा ने ऋग्वेद में कहा है "वरुण, अग्नि, पानी और औषधि आप सब तृप्त हों। मरुतों के आलिंगन से हमें सुख मिले और इन सब देवताओं के आशीर्वाद से हमारा रक्षण हो नैमिषारण्य के वन में शौनक मुनि ने हमको महाभारत की कथा सुनायी महाभारत जो भारतीय आत्मशक्ति का स्रोत है। हमारे अनेक तपोवनों में ही ऋषि मुनि वास करते थे, आजीवन अपने संस्कार, आत्मसंयम और भावनाओं को सुदृढ़ बनाते थे। भारतीय स्मरण भंडार नंदन वन के सौंदर्य से भरा हुआ है। महिलाओं में श्रेष्ठ सीता जी के भव्य आत्मसमर्पण की निश्वासपूर्ण करुणा अशोक वन से सम्बन्ध रखती है। हमारे जीवन का उल्लास वृन्दावन के साथ लिपटा हुआ है। वृन्दावन को हम कैसे भूल सकते हैं। वहाँ कृष्ण भगवान ने यमुना तट पर नर्तन करते हुए डालियों और पुष्पों की ताल के साथ अपनी वेणु बजायी। उसकी ध्वनि आज भी हमारे कानों में सुनायी देती है और भगवान् ने ही कहा था—"अश्वत्थः सर्व वृक्षाणां" मैं वृक्षों में अश्वत्थ हूँ।

हमको पूर्वजों की ज्वलन्त संस्कृति मिली है, परन्तु हम उनके योग्य नहीं रहे। हम अपने वनों को काट डालते हैं। हम वृक्षों का आरोपण करना भूल गये। वृक्ष पूजा का हमारे जीवन में स्थान नहीं रहा। हमारी स्त्रियों में से शकुन्तला की आत्मा चली गयी है। शकुन्तला वृक्षों को पानी दिये बिना आप पानी ग्रहण नहीं करती थी। आभूषण प्रिय होती हुई भी वह यह सोच कर पल्लवों को नहीं चुनती थी कि इससे वृक्षों को दुःख होगा। जब वृक्षों को फल आते तो वह बहुत ही आनन्द अनुभव करती थी।

पातं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या।
नादत्ते प्रिय मंडनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।
आद्ये वः कुसुमप्रसूति समये यस्या भवत्युत्सव
सेयं याति शकुन्तला पति गृहं सर्वैरनुज्ञायताम्॥

पार्वती ने देवदारू को पुत्र के समान समझ कर मां के दूध के समान पानी पिला कर बढ़ाया।

अमुं पुरः पश्यसि देवदारुं पुत्रीकृतोऽसौ वृषभध्वजेन।
यो हेमकुम्भस्तन निस्सृतानां स्कंदस्य मातुः पयसां रसज्ञः॥

अब हमारी रसवृति कुंठित हो चुकी है। इसको फिर से जीवित करना चाहिये। वृक्षों की नीलां छटा के लिये हमारे पूर्वजों में जो प्रेम था वह प्रेम हममें भी होना चाहिये। हमें अपनी वन प्रधान संस्कृति की ओर अभिमुख होना चाहिये। वनों की छाया में उसने जन्म लिया। वृक्षों के पत्तों पर प्रभात में जो जलकण पड़ते हैं उसका उन्होंने जलपान किया। समीर में डोलती हुई पत्रावलियों में से आते हुए चन्द्रकिरण के साथ उसने नृत्य कला के प्रथम पाठ पढ़े। हम यह सब नहीं भूल सकते।

आप सब लोग तो कवि हैं, साहित्यिक हैं, रसिकजन हैं। मंजरिता वृक्षों का सौंदर्य हम नहीं भूल सकते। हम नहीं भूल सकते भव्य वृक्षों का अद्भुत गौरव और वृद्ध ऋषियों के समान जगत् के कल्याण में ही जीवन साफल्य समझने वाले वनों को। यदि प्रत्येक पुरुष और स्त्री वृक्षों के महत्व को समझे और वत् उनका परिपालन करे तो मा... हर नगर हर गांव जीवनोल्लास से... प्रोत हो जायगा। यह सुगम और... सा तथ्य भी हम कैसे भूल सकते...

अथर्ववेद की प्रार्थना से... वक्तव्य में समाप्त करूंगा।

पयेस्वती रोषधयः पयस्वान्माम...
आयो पयेस्वतीनाभा भरे हं स...

"औषधियों में दूध की स... मेरी कविता भी दूध से भरी हुई... की समृद्धि से मेरी शक्ति सहस्र... जाय।"

(शेष पृष्ठ ६ के आगे)

नहीं; वह तो समूह के कल्याण को ही अपना परम धर्म मानता है।

अन्त में यह कह देना आवश्यक है, कि—कम्युनिस्ट पूँजीवादी प्रणाली में जनतन्त्र की झलक पाना असम्भव एवं घोर विडम्बना मानते हैं। उनका विचार है—और ठीक भी है—कि आर्थिक स्वतन्त्रता के अभाव में राजनीतिक स्वतन्त्रता स्थायी रह ही नहीं सकती। वह तो केवल एक कल्प-विषय है।

इस प्रकार कम्युनिज्म सर्वाङ्गी जनतन्त्री प्रणाली के प्रतिपादन का मार्ग है, न कि उसका रोड़ा।

[स]म्पादक के नाम चिट्ठियाँ

[व]नस्पति प्रतिबंधक कानून

[के]न्द्रीय धारासभा में पं० ठाकुरदास [भार्गव] ने "वनस्पति" याने तेलों के [जमाने] की क्रिया और धंधे को बन्द करने [वाले] बैंक विधेयक (बिल) पेश किया [है।] [य]दि यह विधेयक मन्जूर होगा तो वन[स्पति] के सब कारखाने बन्द किये जायेंगे। [और] विदेश से भी उसकी आयात करने [की] [म]नाही होगी। इसके बारे में लोकमत [जान]ने इसे समझने के लिये सरकार ने [इस]को अखबारों आदि द्वारा प्रका[शित] किया। और ता० ३१ अगस्त तक [लोग] अपनी अपनी राय जाहिर करने [की] सूचना दी है।

[व]नस्पति हमारे देश का एक बड़ा ... पदार्थ बन गया है। इसके [बना]ने वाले और बेचने वाले व्यापा[रियों] [को] यह धन्धा इतना फायदेमन्द [हुआ] है कि तेजी से उसके कार[खाने बढ़]ाने की कोशिश हो रही है। [इस]के प्रचारार्थ आकर्षक विज्ञापन [में] लाखों रुपये खर्च करना आसान है। थोड़ा भी महत्व रखने वाले [किसी] अखबार को देखिये, वनस्पति [के] झूठे गुणगान करने वाले बड़े-[बड़े विज्ञाप]न पाठकों के ध्यान को आज[क]र्षित कर देते हैं। इसके अलावा ...य में तरह-तरह की जानकारी ... बड़े आकर्षक और मँहगे ... छपी हुई सचित्र पत्रिकायें भी ... की गयी हैं। और ता० ३१ ... अविध के भीतर उसके पक्ष [में] लोकमत प्राप्त करने के लिये ... के प्रयत्न किये जा रहे हैं।

... तरफ से यह पदार्थ जितना ... को फायदेमन्द हुआ है, उतना ... के लिये शकमद हो गयी है। ... गो-पालन का धंधा चलाने ... ने बाधायें पैदा कर दी हैं। ... धंधा तोड़ दिया है। आरोग्य ... उसको कोई महत्व सिद्ध नहीं ... भी अपने मायावी रूप से ... कर वह अपने खाने वाले ... जरूरी खर्च में डालता है। और ... फँसाता है। शुद्ध तेल बाकी ... घी प्राप्त करना जनता के ... बहुत ही मुश्किल कर दिया ... धंधे से नीति की भावना ... में उसने बलवान् सहयोग ...

...हरण की वह काव्योक्ति यहां ... होती है। मायावी राक्षस ने ... का रूप धारण करके जानकी ... किया, राम जानते थे कि ... नहीं हो सकता। फिर भी ... उसके पीछे दौड़े। परिणाम ... माया पैदा कर दी थी वह ... जानकी को हरण कर ले गया ... शील और जीवन दोनों को उसने जोखिम में डाल दिया। इसी तरह मायावी तेल भी घी का रूप लेकर जनता को आकर्षित करके यह घी नहीं बल्कि नकली पदार्थ है ऐसा जानते हुये भी गृहस्थ को उसे खरीदने के लिये मजबूर कर देता है। परिणाम में जिसने वह माया पैदा की है। उस उद्योगपति ने जनता की नीति, आजीविका, धन, और आरोग्य चारों जोखिम में डाल दिये हैं।

यह कहना मुश्किल है कि केन्द्रीय धारासभा में पं० भार्गव के बिल का आखिरी नतीजा क्या आयेगा। मालूम होता है कि केन्द्रीय और प्रान्तीय मंत्रि-मंडलों में इस विषय पर एक राय नहीं है। कई मंत्री वनस्पति के बिलकुल पक्ष में मालूम होते हैं। कई साफ विरुद्ध और कई तटस्थ। इसमें यहाँ तक अनुभव आया है कि इस विषय में जब एक परिषद बुलाई गई थी तब उसमें आये हुये कई प्रान्तों के मंत्रियों ने जो राय दी थी उससे उलटी राय उनके मंत्रि-मंडल की ओर से श्री जयरामदास दौलतराम ने धारासभा में किये हुये निवेदन में पेश की है। कई मंत्रियों ने और विशेषज्ञों ने जाने अजाने अपने क्षेत्र से बाहर जा कर भी ऐसे बयान दे दिये हैं जो वनस्पति उद्योगवालों के हाथों में प्रचार का बड़ा उपयुक्त साधन हो गया है। उदाहरणार्थ डॉ० गिल्डर का निष्पातों के प्रयोगों का सारांश देना तो अपने क्षेत्र के भीतर की बात मानी जा सकती है। लेकिन उनका आगाखां जल का किस्सा सुनाना या यह सर्टिफिकिट दे देना कि उन्होंने खुद वनस्पति का उपयोग किया है। और उससे उन्हें कुछ नुकसान नहीं हुआ। कतई क्षेत्र वाह्य बात थी। फिर भी यह कहना कि घी का तलने में ही ज्यादातर उपयोग होता है, बिलकुल गलत विधान है। इसी तरह डॉ० शांतिस्वरूप भटनागर यदि इतना ही कहते कि कोई योग्य रंग नहीं प्राप्त हो रहा है तो वह उनके क्षेत्र की बात हो जाती। लेकिन रंग मिलाने से उद्योग और वाणिज्य के आर्थिक विकास में क्या फरक हो जायगा, यह उनके क्षेत्र में नहीं आती थी। जब ये लोग जानते हैं कि इस विषय पर बड़ी गंभीरता से सोचनेवाले दूसरे लोग भी हैं, खुद विशेषज्ञों और मंत्रिमंडलों में भी है, तब एक अधिकारी के पद से ऐसी अप्रस्तुत बातें करके उन्होंने स्वयं अपनो खुद की विश्वासपात्रता को ही शंकास्पद नही बनाया, बल्कि बहुत से विशेषज्ञों और अधिकारियों की भी। हाल हाल में वनस्पति के जो विज्ञापन निकल रहे हैं, वे सब इन अप्रस्तुत रायों का फायदा उठा रहे हैं। साथ-साथ इस में असत्य भी मिलाया जाता है। उदाहरणार्थ, डॉ भटनागर का हवाला देते हुये एक हिन्दी विज्ञापन में बताया है कि "परिणामों से यह पूर्णतया सिद्ध हुआ कि वनस्पति पौष्टिक और स्वास्थ्यदायक है।" "वनस्पति हर प्रकार से अच्छी है।" "वनस्पति की अवश्यकता है।" एक दूसरे विज्ञापन में लिखा है, "एक डॉक्टर ने यह भी कहा था कि जो वनस्पति के उत्पादन का विरोध करते हैं वे निर्धनों के शत्रु और धनवानों के मित्र हैं।" ये सब असत्य बातें हैं। विशेषज्ञों द्वारा अधिक से अधिक इतना ही कहा गया है कि आरोग्य की दृष्टि से कच्चे अथवा परिशुद्ध तेल की भांति वनस्पति का भी कोई हानिकारक प्रभाव नहीं पड़ा। अर्थात् कच्चे अथवा परिशुद्ध तेल से उसकी आरोग्य के विषय में कीमत न ज्यादा है न कम। घी के साथ तो उसकी तुलना ही नहीं। हम नहीं जानते कि शुद्ध घी और बाजार मिलावटी घी के साथ वनस्पति के तुलनात्मक प्रयोग किये गये या नहीं। और किये गये तो उनके परिणाम क्यों नहीं बताये गये। फिर भी तेलों के क्षेत्र में वनस्पति ने अपनी कोई आरोग्यवर्धक विशेषता नहीं बतायी है। उसकी जो विशेषता है, वह सिर्फ घी का वेष ले कर आंख और मने पर माया फैलाने की ही है। और इसके लिये उसकी वाजिब कीमत से बहुत ज्यादा दाम उस पर खर्च होते हैं।

इसके दूसरे नुकसान भी बहुत हैं। उसने तेल के कारखानों को अनिवार्य बना दिया है। कारखानों में तेल की शुद्धि-क्रिया में जो कचड़ा निकलता है उसे तेली लोग सस्ते में खरीद कर अच्छे तेल में मिलाते हैं। दूसरी चीजें भी मिलाते हैं और मिलावटी तेल करते हैं। वनस्पति को घी में मिला कर उसे भी मिलावटी करते हैं। शुद्ध करने का और जमाने का खर्च करके भी न शुद्ध तेल मिलता है, न शुद्ध घी। फिर लोग सोचते हैं कि सब झझटें छोड़ कर वनस्पति का ही उपयोग करना बेहतर है। इस तरह दूसरे खाद्यों को बिगाड़ कर वह अपना स्थान जमाता है।

स्थानिक घानियाँ बन्द होने से उनकी खली भी नहीं मिल सकती। मिल की खली में तेल का अंश कम रहता है, अशुद्धियां ज्यादा होती हैं। फिर वह निर्यात की जाती है और खाद में जाती है। याने मवेशी की खुराक की एक आवश्यक चीज सयुद्रपार जाती है और भूमि में वैसी ही मिलायी जाती है, जिससे कितना लाभ होता है इस पर कुछ शंका भी है। इस तरह कृषि और गो-पालन दोनों का नुकसान होता है।

अनीति का तो कहना ही क्या? मिलावट और काला बाजार आदि चीजों की शर्म ही नहीं रह गयी। झूठ प्रचार की एक कला बनायी गयी है।

इन सब बातों का ख्याल करके लोगों को, विशेष कर सार्वजनिक सेवा की संस्थाओं म्युनिसिपालिटियों, पंचायतों आदि को अपनी राय ता० ३१ अगस्त के पहले केंद्रीय सरकार के अन्नमंत्री और केंद्रीय धारासभा के सभापति को भेज देनी चाहिये। राय इस रूप में भेजी जा सकती है।

"इस सभा का मत है कि इस देश के हित में खाद्य तेलों के जमाने या जमाये हुये तेलों का व्यापार करने पर शीघ्र प्रतिबंध लगाना चाहिये, और जब तक ऐसा नहीं हुआ है तब तक जमाये हुये तेलों में ऐसा रंग मिलाना चाहिये, जिससे शुद्ध घी के साथ उसे मिला कर धोखा देना संभव न हो।"

ऐसे प्रस्ताव की एक प्रति मंत्री, गो-सेवा संघ, गोपुरी-नालवाडी, (वर्धा) के पास भी भेज देनी चाहिये।

वर्धा० ता० १०-६-५०

किशोरलाल घ० मशरूवाला

श्री० किशोरलालभाई के इस लेख के साथ मैं पूरी तरह सहमत हूँ

परंधाम, पवनार ता० १०-६-५० विनोवा

सचित्र साप्ताहिक 'देशदूत'

संवाददाताओं से निवेदन

संयुक्तप्रांत, मध्यप्रांत, मध्य भारत तथा राजपूताने के संवाद भेजनेवालों से निवेदन है कि वह अपने संवाद संक्षिप्तरूप में ही भेजने का कष्ट करें।

संपादक 'देशदूत'

(शेष पृष्ठ ६ के आगे)

भुगतने के लिये तैयार है । शाहजहाँ बहुत प्रसन्न हुआ और नौकर को खिलअत देकर रवाना किया तथा आसफजाह को शालीमार नहर निशात बाग में पानी लाने के लिये सनद दे दी ।

१४—दाल झील के दक्षिण की ओर पहाड़ी पर परीमहल स्थित है । राजकुमार दाराशिकोह ने इसे अपने गुरु मुल्लाशाह के लिये बनवाया था कि वह तारागणों का अध्ययन करेगा । परी महल सचमुच ही परियों के रहने योग्य महल है ।

श्रीनगर से लगभग ४ मील की दूरी पर पान्द्रेन्थन का मन्दिर एक सरोवर के मध्य भाग में स्थित है । पान्द्रेन्थन से पांच मील उत्तर-पूर्व खुनमुह है जहाँ प्राचीन मन्दिरों के भग्नावशेष हैं ।

खेरव के छोटे मन्दिर खेरव गाँव में हैं । पाम्पुर के मन्दिर खेरव के ४ मील दक्षिण-पश्चिम हैं । इसका प्राचीन नाम पद्मपुर है । यहाँ विष्णुपद्म स्वामी का मन्दिर था ।

पाम्पुर से ४ मील दक्षिण पूर्व लाधूव का मन्दिर है । यहाँ सुन्देश्वर नाग पर दो मन्दिर हैं । एक मन्दिर के चारों ओर पानी है ।

कुतहार का मन्दिर, सोता अरपथ घाटी में वीरनाग से १० मील की दूरी पर है जहाँ एक सोता है जिसके चारों ओर महाराज भोज की बनवाई हुई चहार दीवारी के खँडहर हैं ।

१५—पम्प सुधन से ४ मील दक्षिण-पश्चिम अछबल स्थित है । यहाँ पर एक सोता है जो काश्मीर में सबसे अधिक सुन्दर सोता है । कहा जाता है कि भूम से निकलने वाला बूंघी नदी का एक भाग है । बूंघी नदी दीवाल ग्राम के समीप पहाड़ी कंदरा में लुप्त हो जाती है । एक बार कुछ घास के तिनके नदी में लुप्त होने वाले स्थान में डाले गये थे वह अछबल में आ निकले ।

अछबल के चार मील उत्तर मारतंड मन्दिर है । यह मारतंडेश्वर का मन्दिर रामदेव नामक राजा ने ईसा से ३ हजार वर्ष पूर्व बनवाया था यह मन्दिर बड़ा सुन्दर बना था ।

इनके अतिरिक्त क्विल पापर, जोवरार, अवंतीपुर नर स्थान, वृजविहार; लोक भावना, वीर नाग, मट्टन, बुम्जू, मामल, अम्बुरहर के मठ, इलाही बाग, म्यून मन्दिर, नारान नाग तुलामुला, परापुर सूनलंक और फीरोजपुर के मन्दिर तथा खँडहर देखने योग्य हैं ।

अद्भुत तथा आश्चर्यजनक स्थान

काश्मीर में अनेक स्थान तथा वस्तुएँ इतनी आश्चर्यजनक हैं कि उन्हें देख मानव हृदय विस्मय पूर्ण अवस्था में आनन्द से ओत-पोत हो जाता है ।

अमरनाथ—श्रीनगर से आठ चौकी आगे पूर्वी पर्वतों के मध्य एक गुफा है । इस गुफा में हिम का एक शिवलिंग स्वयं बनता है और प्रत्येक मास चन्द्रमा के साथ ही साथ बढ़ता-घटता है । यही अमरनाथ का प्रसिद्ध-विख्यात स्थान है । श्रावण पूर्णिमा पर यहाँ प्रतिवर्ष एक बड़ा मेला लगता है जिसमें समस्त भारत के लोग आकर शामिल होते हैं । अमरनाथ स्वामी जाने का मार्ग बड़ा ही जटिल है । हिमाच्छादित पर्वतीय हिमानी मार्ग द्वारा लोगों को जाना पड़ता है । बरफ की शीत से बचने के लिए पैरों में कम्बल तथा कपड़े के चिथड़े बांधकर लोग चलते हैं । लाल, हरी तथा नीली बरफ के मार्ग रास्ते में पड़ते है । लाल बरफ वाले मार्ग पर खामोश रहना पड़ता है । किञ्चित आवाज से वहाँ खूनी बरफ की वर्षा होने लगती हैं । हिमानी ढालों पर चलते समय यदि उनकी कोई वस्तु गिर जाती है तो उसे उठाने के लिये वह नहीं झुकती क्योंकि झुकने पर स्वयं गिर जाने तथा लुढ़क कर गहरी कदरा में चले जाने और मर जाने का भीषण खतरा रहता है ।

कहा जाता है कि अमरनाथ के आगे बांदीपुरा के ऊपर पर्वत पर दो और गुफाएँ हैं जहाँ हिम के लिंग बनते हैं ।

लारमेतुलामूल—लार गाँव में एक सोता है जिसका जल कभी तो गाढालाल और और कभी हरा रहता है । हिन्दू लोग वहाँ पूजा करते हैं । शुक्ल पक्ष की अष्टमी और पूर्णिमा के अवसर पर प्रत्येक मास यहाँ एक बड़ा मेला होता है । ज्येष्ठ मास का मेला बड़ा होता है । तुलामूल की भांति ही उत्तर मछनीपुर में ताकर स्थान पर एक सोता है जिसका पानी रंग बदलता रहता है ।

त्रिसंध्या—दांवल ग्राम में त्रिसंध्या नामक सोता है । वैशाख ज्येष्ठ मासों को छोड़कर सालभर यह सोता सूखा रहता है । आरम्भ में कुछ समय तक तो पानी बराबर रहता है उसके पश्चात् किसी घड़ी पानी बहता है और किसी घड़ी सूख जाता है । इस प्रकार जल प्रवाह का क्रम दिन में २४ घंटे के अन्दर कई बार होता है ।

रुद्रसंध्या—त्रिसंध्या की भांति ही यह सोता भी साल भर सूखा रहता है । केवल बैसाख-जेठ में पानी आता है । त्रिसंध्या की तरह इसका जल भी क्रमबद्ध दिन में कई बार बहता और सूखता है ।

वासुकनाग—रुद्रसंध्या के ६ मील पश्चिम एक बड़ा जल स्रोत है । यह जाड़े के ६ महीनों में बिलकुल सूखा रहता है परन्तु गरमी के ६ मासों में इसमें खूब पानी आता है जिससे एक बड़े प्रदेश की सिंचाई होती है ।

पवनसंध्या—वीरनाग से ५ मील पूर्व पवनसंध्या नामक जल स्रोत है । इस सोते का जल इस प्रकार घटता बढ़ता रहता है मानों यह पवन (हवा) पान करके ही प्रवाहित है । इसीसे इसका नाम पवनसंध्या है ।

सप्तऋषि—वीरनाग के समीप विधावतूर में सात सोते हैं जो वासुक नाग की भांति जाड़े के ६ महीनों में सूखे तथा ग्रीष्म काल के ६ मासों में भरे रहते हैं । इन्हें सप्तऋषि कहते हैं ।

लिंगेश्वर उत्तर मछीपुरा में हलमतपुर स्थान पर पांच सोते हैं । इन सोतों में से एक में एक पत्थर का लिंग है । यह लिंग स्वयं घूमता है और एक मास में एक कोण से दूसरे कोण तक घूम जाता है । लिंग के क्रमबद्ध होने से आश्चर्य होता है ।

तपदान—शुपयान में दुञ्जान स्थान पर तपदान नामक उष्ण जल स्रोत है जिसका जल सदैव उष्ण रहता है । इसी भांति अनन्त नाग से ६८ मील की दूरी पर मरगान घाट पार करने पर एक और ऊषण जल का सोता है ।

सीताकुंड—ब्रांग में मगर छुन्द लारिकपुर के ऊपर सीताकुंड नामक सोता है । इस सोते की कुछ मछलियाँ एक आँख वाली होती हैं ।

हरमुख—लार की ऊँची पहाड़ी हरमुख कहलाती है । कहा जाता है कि इस पहाड़ी से दिखलाई पड़ने वाला सर्प काटता नहीं है ।

ज्ञानेश्वर मन्दिर—बाँदीपुर से १२ मील पूर्व सिमथान गाँव के ऊपर पहाड़ी गुफा में एक मन्दिर है । इस मन्दिर की पत्थर की छतपर पत्थर के बने गाय के थन हैं ! मन्दिर में एक लिंग है जिसके ऊपर गाय के स्तनों से पानी टपकता रहता है । मन्दिर तक पहुँचने के लिये एक गज चौड़ा संकरा मार्ग है ।

अज्ञातगुफाएँ—बुम्जू में मत्तन के उत्तर एक पहाड़ी गुफा है । यह गुफा बहुत लम्बी है जिसका पता अभी तक लगाया नहीं जा सका । इसी प्रकार बीस स्थान पर एक दूसरी गुफा है । कहा जाता है कि प्रसिद्ध तपस्वी तथा दार्शनिक अभिनव गुप्त ने अपने १८०० चेलों के साथ इसमें प्रवेश किया था और आज तक वापस नहीं लौटे ।

स्वयम्भु—यह स्थान मछीपुरा में होम ग्राम से आध मील दक्षिण-पश्चिम है । इस स्थान पर पूरे ३० वर्ष में एक बार पृथ्वी गर्म हो जाती है । उस समय हिन्दू लोग वहाँ तीर्थ यात्रा के लिये एकत्रित होते है । यात्री बतन में चावल और पानी डाल कर भूमि में गाड़ देते है और इस प्रकार अपने पित्रों को पकाकर चावल अर्पण करते हैं । वहाँ पर यदि एक फुट जमीन खोद कर घी और शक्कर डाली जाती है तो अग्नि की लपटें उठती रहती हैं ।

अक्षयचिनार—प्रयाग झेलम के संगम पर एक छोटा सा द्वीप है । इस द्वीप में एक छोटा सा चिनार का वृक्ष है जो न कभी बढ़ता, मोटा होता या छोटा होता है । यह वृक्ष प्राचीन काल से आज तक वैसा का वैसा ही बना है ।

अयान या ऊलर गाँव में (श्रीनगर से लगभग १२ मील दक्षिण) एक झरना है । जिसमें स्नान करने से चर्म रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है । अनन्तनाग और कुतबल में भी ऐसे सोते हैं ।

लुहरनाग—कोटहार में सर... पर्वत के ऊपर एक झरना है जिसे लुहरनाग कहते हैं । इसका जल बड़े वेग के साथ कुम्हार के चाक की भांति चक्कर खाता हुआ निकलता है ।

प्रसिद्ध अभिनेत्री गीताबाली

...त्मक जीवन के कुछ मनोरंजक संस्मरण

लेखक, उमेश जोशी

...बी० बी० सी० दादर स्टेशन ...गेट से आ रहा था, जैसे ही ...र पर रुकी, एक नई चहल- ...ने आई। चर्च गेट के बाद ...एक ऐसा स्टेशन है जिसमें ...जीवन की रागिनी लिए हुए ...दिखाई पड़ता है, वह इस ...स्टेशन से अधिकतर फिल्म ...पर चढ़ते हैं, क्योंकि दादर ...फिल्म कम्पनियाँ हैं, फिल्म ...। मैं अपने फस्ट क्लास के ...बैठा था, तबियत नहीं लग ...रोड से एक महाशय चढ़े ...ह अगले स्टेशन महालक्ष्मी ...। अकेलेपन की वजह से ...रहा था। गाड़ी को दादर ...छूटे हुए दो मिनट हो चुके ...में मैं सोच रहा था कि ...सम्पूर्ण चहल-पहल में से ...चहल-पहल हमारे डिब्बे में ...गये, लेकिन मैं निराश हो ...और मैंने श्री वृन्दावनलाल ...ा हुआ लोकप्रिय उपन्यास ...कोई..." को उठाया परन्तु ...नहीं लगा, फिर भी मैं अपने ...जबरदस्ती उसमें लगा रहा ...ने में—

...बदतमीज होते हैं आजकल ...छोकड़े! कैसे घूरते हैं मानों ...किसी मरी को देखा ही ...कहते-कहते गीताबाली ने ...डिब्बे में प्रवेश किया।

...ते .ी—

...आप खूब मिले जोशीजी, ...से कट जायेगा।"

...का गुस्सा किस पर उतर ...फिर क्यों माथे पर बल पड़ ...रहे तो है।" मैंने किताब ...हुए कहा।

...गुस्सा होने की तो बात ...साहब, यह कहां की इन्सा- ...की सभ्यता है कि कालेज ...ों ने केला खा-खा कर ...रास्ते में डाल दिये। मैं ...में आ रही थी। चूंकि ...थी, जैसे ही मैं उन लड़कों ...तो वह मुझे ऐसे घूरने ...विदेशी पहली बार भारत ...ताजमहल को घूरता है। ...हरकत से मुझे मन ही मन ...। अगर मैं जल्दी में न ...उनको घूरने का मजा ...दी ही उन लड़कों के झुन्ड से चार छः कदम आगे मेरा पैर केले के छिलके पर ...एकदम गिर पड़ी—और उ... लड़के खिलखिला कर हँस पड़े ...ही उठ बैठी। लड़कों पर मुझे ...आया लेकिन मैं गुस्से को कड़... की घूंट की तरह पी गई—... चार कदम आगे बढ़ी—एक ... आगे बढ़कर अपनी डायरी ... करते हुए कहा—"प्लीज गि... ब्यूटी फुल ओटोग्राफ।" ... डायरी लेकर फेंक दी और ... आगे बढ़ आई।"

"यह आपने ठीक नहीं कि... तो कलाकारिणी थीं। आपको ... चाहिये था, लड़कों की गलतियों... को माफ कर देना चाहिये था ... उन लड़कों में और आप में क्... रह गया। आपके सद्व्यवहार क... ऊपर अच्छा प्रभाव पड़ता। और ... अपने कार्य पर पश्चाताप भी होत... बुराई भलाई से जीती जाती है ... स्थायित्व होता है और होती है मन... पवित्र शान्ति।"

"लेकिन जोशीजी आज का जमा... टिट फ़ोर टेट का है, कांटे से कांट... निकलता है, क्योंकि हमारा समाज का नैतिक सार इतना ऊँचा नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने उत्तरदायित्व की सहमियत को समझे। अपने उसूलों एवं आदर्शों की कद्र करना जाने। आज का मानव तो इन्सानियत से विलकुल नग्न है। खासतौर से हमारा नवयुवक समाज तो मोरलटी से एकदम गिरा हुआ है। अगर इन नवयुवकों की उद्दंडता, इनकी गुस्ताखियों को देखकर उनके साथ सद्व्यवहार आप करेंगे तो वे आपके सिर पर चढ़ेंगे, और आपकी इस कमजोरी से वे नजायज फायदा उठायेंगे। इसीलिये उनको ठीक रास्ते पर लाने के लिए उनके साथ लेश मात्र भी रिआइत नहीं करनी चाहिए। कालेज के लड़के बड़े शरारती एवं षड़यंत्रकारी होते हैं।" गीताबाली ने केला और सन्तरा मुझे देते हुए कहा।

मैंने केले को खाते हुए कहा—"आपको कालेज के लड़कों का काफी अनुभव मालूम होता है। आपका बड़ा कटु अनुभव है।"

"अरे साहब क्यों न हो, कालेज की दुनियाँ ही ऐसी है। आइये मैं आपको भी अपनी पिछली कालेज की दुनियाँ में ले चलूँ, ताकि आप भी जान जाँय कि

सम्ब

× ×

कालेज की गेलरी में

"अरे साहब जरा इधर भी देखिये, हमने ऐसी क्या खता की है कि हम आपकी एक मीठी मुस्कराहट के लिए तरसते रहते हैं। खैर साहब, तरसाइये खूब, आपके तरसाने में भी हमे बड़ा मजा आता है।

आँखें खुदा ने दी हैं मगर देखते नहीं,

मैं जिनके देखने को समझता हूँ जिन्दगी,

उनका ये हाल है कि इधर देखते नहीं।"

"अरे साहब सुबह ही सुबह किस चिड़ियाँ को नैनो के जाल में फाँसा जा रहा है। अकेले ही अकेले शिकार कर लिया करते हो, और बन्दा को पूछते ही नहीं। अच्छा साहब न पूँछिये, लेकिन हमारे बिना हुजूर कामयाब न होंगे, समझे हेमू।"

"अरे राघव, तुम खूब मिले। तुम तो लड़कियों के पटाने में उस्ताद हो। न मालूम तुमने अब तक कितनी लड़कियों को ... में ही पटा लिया। दो एक नुस्खे हमें भी बतला दो, जिससे ... नया पंछी तुम्हारे नैन... के आसमान पर उड़ने लगा है? लेकिन हेमू, अभी तो उस पंछी को अच्छी तरह से उड़ने दो, जल्दी क्या है? परन्तु हमें भी तो मालूम हो कि वह खुशकिस्मत पंछी कौन है। अगर वह तुम्हारे पास आजायेगा तो उसके भी भाग्य जाग जायेंगे। तुम करोड़पति हो—पैसे के बल चाहे जिसको जीतो।"

"अरे राघव यह बात नहीं, अब तक तो मैं भी यही समझता था। किन्तु इधर जब से वह गीता नई लड़की कालेज में आई है, तब से मेरा यह समझना बिलकुल झूठा साबित हुआ। क्या बताऊँ उसके रूप लावण्य तो बिलकुल चाँद का टुकड़ा है। जब वह सामने आती है, तो सच कहता हू राघव मेरे सारे शरीर में बिजली कौंध जाती है। एक पल भी मैं उससे आँखे नहीं मिला पाता। उसके तेज के सामने हजार सूर्यों का तेज भी फीका है।"

"लेकिन दोस्त दौलत की चमक के सामने दुनियाँ की सारी चमक फीकी है, और फिर तुम्हारे पास तो ऐसी चमक है कि जिसके सहारे चाहे तो तुम स्वर्ग की अप्सरा को भी जीत सकते हो। गीता

(शेष पृष्ठ ६ के आगे)

भुगतने के लिये तैयार है । शाहजहाँ बहुत प्रसन्न हुआ और नौकर को खिलअत देकर रवाना किया तथा आसफजाह को शालीमार नहर निशात बाग में पानी लाने के लिये सनद दे दी ।

१४—दाल झील के दक्षिण की ओर पहाड़ी पर परीमहल स्थित है । राजकुमार दाराशिकोह ने इसे अपने गुरु मुल्लाशाह के लिये बनवाया था कि वह तारागणों का अध्ययन करेगा । परी महल सचमुच ही परियों के रहने योग्य महल है ।

श्रीनगर से लगभग ४ मील की दूरी पर पान्द्रेन्थन का मन्दिर एक सरोवर के मध्य भाग में स्थित है । पान्द्रेन्थन से पांच मील उत्तर-पूर्व खुनमूह है जहाँ प्राचीन मन्दिरों के भग्नावशेष हैं ।

खेरव के छोटे मन्दिर खेरव गाँव में हैं । पाम्पुर के मन्दिर खेरव के ४ मील दक्षिण-पश्चिम हैं । इसका प्राचीन नाम पद्मपुर है । यहाँ विष्णुपद्म स्वामी का मन्दिर था ।

पाम्पुर से ४ मील दक्षिण पूर्व लाधूव का मन्दिर है । यहाँ सुन्देश्वर नाग पर दो मन्दिर हैं । एक मन्दिर के चारों ओर पानी है ।

कुतहार का मन्दिर, सोता अरपथ घाटी में वीरनाग से १० मील की दूरी पर है जहाँ एक सोता है जिसके चारों ओर महाराज भोज की बनवाई हुई चहार दीवारी के खँडहर हैं ।

१५—पम्प सुधन से ४मील दक्षिण-पश्चिम अछबल स्थित है । यहाँ पर एक सोता है जो काश्मीर में सबसे अधिक ...न्दर सोता है । कहा जाता है कि भूम चुपचाप सुनहला बूंधी नदी का एक तक मैंने यह समझा कि शायद वे... चुप्पी के कारण, वह मुझे छेड़ना बंद देगा, परन्तु ऐसा नहीं हुआ । उसकी शरारत दिन ब-दिन बढ रहीहैं ।

"अरी गीता तू बड़ी भोली है । तुमसे बराबर करारा जवाबदेना चाहिए था । आजकल के नवयुवच ...प्पी से थोड़े ही मानते हैं । इनके साथ जबतक ईंट का जवाब पत्थर से नहीं दिया जायेगा, तब तक इन कीअक्ल ठिकाने थोड़े ही आती है । आज कल के नवयुवक लड़कियों को देखकर असमान पर चलने लगते हैं । अरे यह तो बता कि वह खूबसूरत भी हैं या यों ही दिल लगाने का शौक चर्राया है ।"

गीता ने हँसतेहुए कहा—

"मौना बहुत खूबसूरत है, उनकी खूबसूरती की उपमा सिर्फ उस तवे से दी सकती है जो कि रोटी करके हाल ही हाल चूल्हे से उतरा हो और उस तवेसी खूबसूरत शक्ल पर आकाश के तारोगणों की तरह चेचक के गहरे-गहरे दाग शोभायमान हैं । आँख तो बरसाती मच्छड़ की तरह है । आवाज ...टे बाँस की तरह सुरीली है । समझो मौना "

(शेष अगले अंक पर)

है । इस गुफा में हिम का एक शिवलिंग स्वयं बनता है और प्रत्येक मास चन्द्रमा के साथ ही साथ बढ़ता-घटता है । यही अमरनाथ का प्रसिद्ध-विख्यात स्थान है । श्रावण पूर्णिमा पर यहाँ प्रतिवर्ष एक बड़ा मेला लगता है जिसमें समस्त भारत के लोग आकर शामिल होते हैं । अमरनाथ स्वामी जाने का मार्ग बड़ा ही जटिल है । हिमाच्छादित पर्वतीय हिमानी मार्ग द्वारा लोगों को जाना पड़ता है । बरफ की शीत से बचने के लिए पैरों में कम्बल तथा कपड़े के चिथड़े बांधकर लोग चलते हैं । लाल, हरी तथा नीली बरफ के मार्ग रास्ते में पड़ते है । लाल बरफ वाले मार्ग पर खामोश रहना पड़ता है । किञ्चित आवाज से वहाँ खूनी बरफ की वर्षा होने लगती हैं । हिमानी ढालों पर चलते समय यदि उनकी कोई वस्तु गिर जाती है तो उसे उठाने के लिये वह नहीं झुकती क्योंकि झुकने पर स्वयं गिर जाने तथा लुढ़क कर गहरी कदरा में चले जाने और मर जाने का भीषण खतरा रहता है ।

कहा जाता है कि अमरनाथ के आगे बांदीपुरा के ऊपर पर्वत पर दो और गुफाएँ हैं जहाँ हिम के लिंग बनते हैं ।

लारमेतुलामूल—लार गाँव में एक सोता है जिसका जल कभी तो गाढालाल और और कभी हरा रहता है । हिन्दू लोग वहाँ पूजा करते हैं । शुक्ल पक्ष की अष्टमी और पूर्णिमा के अवसर पर प्रत्येक मास यहाँ एक बड़ा मेला होता है । ज्येष्ठ मास का मेला बड़ा होता है । तुलामूल की भांति ही उत्तर मछनीपुर में ताकर स्थान पर एक सोता है जिसका ...न पानी रंग बदलता रहता है । ... बजाना शुरू किया । पू... एक अजीब सा रसीला वातावरण बन गया । संगीत की ध्वनि के अंत होते ही वातावरण 'आह कराहों' के हाथ शांत हो सका ।

पिलानी (डाक से) राजस्थान के सुप्रसिद्ध विद्वान विद्यामार्तण्ड पंडित रूपराम जी शास्त्री का स्वर्गवास ८३ वर्ष की उम्र में हो गया । करीब ५० साल पहले बिरला जी के शिक्षा-प्रतिष्ठान को आपने ही बिरला-बन्धुओं के दादा श्री सेठ शिवनारायन जी बिरला के आग्रह से प्रारम्भ किया था । विद्यामार्तण्ड जी के चरणों में बैठकर २५ वर्षों में हजारों शिष्यों ने संस्कृत और हिन्दी की उच्चशिक्षा प्राप्त की थी ।

सकर में समाज शिक्षा का कार्य संतोषपूर्ण तरीके से चल रहा है । विवाहों की भरमार होने के कारण इस सप्ताह उपस्थिति कम रही । शिविर संचालक श्री बिहारी लाल गोयल उपस्थिति वृद्धि करने का यथा शक्ति प्रयत्न कर रहे हैं । नगर के लोक प्रिय समाज सेवी डा० बी० पी० राय चेयरमैन स्वास्थ्य विभाग सागर अपना अमूल्य समय देकर शहर के शिक्षा केन्द्रों में जाकर उन्हें उपयोगी बातें बतला कर प्रौढ़ों को ...

...पुर स्थान ... में से एक मे... लिंग स्वयं घू... एक कोण से रहे हैं । है । लिंग के ...र महिला मंडल जुलाई से होता है । सेवा के दृष्टिकोण को लेकर तपदान... आसपास एक गांव में एक पर तपदान न रहा है । जिसका संचालन जिसका जल ... ग्रामसेविका करेगी । जिसमें भांति अनन्त..., बाल शिक्षण, चिकित्सा, पर मरगान घा खेती, ग्राम सफाई, ग्राम, ऊषण ...ल कताई, बुनाई व अन्य हाथ के सीताकुण्डादि के शिक्षण का कार्यक्रम लारिकपुर ग्रामसेवा में रूचि रखनेवाले सोता है । ... प्रार्थना है कि हमें उपयोगी एक आँख ...ज कर कृतार्थ करें ।

हरमुखपुर महिला मडल में महिलाओं मुख कहलाए के लिये विद्यालय, छात्रावास, इस पहाड़ी शिक्षण व संस्कारो के लिये बाल काटता न... चलता है । बम्बई, कलकत्ते के शानेखे प्रवासी राजस्थानियों की महिमील पूर्व ...डल शिक्षण के लिये आती हैं । गुफा में ... राजस्थानी भाइयों के लिये यह पत्थर ...वसर है कि वह अपने परिवार की थन हैं...ओं के समुचित शिक्षण के लिये ऊपर...हेला मंडल में भेजें । यहाँ पर उनकी रह...सुविधाओं के लिये विशेष प्रबन्ध है ।

कानपुर में आदर्श देशभक्त श्री गणेशशंकर विद्यार्थी के सुनाम के साथ श्रीगणेश कला स्टूडियो स्थापित करने का निश्चय किया गया है । विद्यार्थी जी की स्मृति में इतने बड़े प्रयास का स्वाभाविक अभिप्राय सहज ही समझा जा सकता है । हमारी प्रबल आकांक्षा है कि हमारे स्टूडियो का सदुपयोग जनता-जनार्दन की सेवा हेतु हो और वहाँ निर्मित होने वाला प्रत्येक चित्र उस दीन-हीन जनता के पुनरुद्धार में सहायक हो जिसकी वह स्वाधीन भारत में आशा करती है । चित्रपट-कला की यही सार्थकता है कि वह जनता का नैतिक, सांस्कृतिक और मानसिक स्तर ऊंचे उठाते हुए आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान करने में सहायक हो ।

सागर अन्तराष्ट्रीय आध्यात्मिक शान्ति परिषद के प्रधान श्री धर्मध्रुव गौर के सम्पादकत्व में "सतसंग" नामक हिन्दी मासिक पत्र आगामी मास से बड़ी सजधज व उपयोगी सामग्री के साथ प्रकाशित हो जायगा ।

श्री सोहनलाल द्विवेदी लिखित काव्य कृतियों के नवीन संस्करण

भैरवी

गांधी युग का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। महामना मालवीयजी के शब्दों में 'ऐसी कविता का प्रचार देश के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक होना चाहिए।' मूल्य २।।=)

वासवदत्ता

बाबू मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं 'इस रचना से मैं बहुत प्रभावित हुआ।' स्वच्छन्दतापूर्वक जिस प्रौढ़ता की ओर द्विवेदीजी अग्रसर हो रहे हैं, जान पड़ता है, स्वयं वह भी उन्हें वरण करने के लिए आतुर हो रही है। 'वासवदत्ता' के प्रकाशन ने हिन्दी-साहित्य में एक नई क्रान्ति उत्पन्न कर दी है स्वयं पढ़कर निर्णय कीजिए। मूल्य १।।)

कुणाल

महापंडित राहुल सांकृत्यायन की सम्मति में—अशोक, तिष्यरक्षिता और कुणाल खास तौर से—'कुणाल' के चरित्र-चित्रण में कवि ने कमाल किया है। शब्द-सौकुमार्य और भावोत्कर्ष के साथ ही नपे तुले शब्दों के प्रयोग ने काव्य को बहुत ऊँचा उठाया है। विशेष संस्करण मूल्य २।।)

पूजागीत

राष्ट्रीय चेतना को काव्य का सच्चा स्वरूप देने के लिए द्विवेदी जी को प्रचुर सम्मान तथा लोकप्रियता प्राप्त हुई है। ये पूजा-गीत कवि के गौरव के अनुरूप ही हैं। मूल्य २)

विषपान

सुप्रसिद्ध पौराणिक कथा का सरल तथा सबल खंड-काव्य है। भाषा का प्रवाह, प्रसन्न शैली तथा कथा के मार्मिक घटना-क्रम की वर्णना ने इसे बड़ा ही हृदयग्राही बना दिया है। मूल्य १)

बांसुरी / शिशुभारती

द्विवेदी जी पहले बालकों के कवि हैं पीछे राष्ट्र के। पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा माननीय सम्पूर्णानन्दजी ने इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा की है। 'अमृत बाजार पत्रिका' की सम्मति में—जिस प्रकार की शिक्षा बालकों को देने के लिए हमारे नेता वर्षों से प्रयत्न कर रहे हैं, इन पुस्तकों में उसी प्रकार का साहित्य है। प्रत्येक पुस्तक में कई रङ्गीन तथा अनेक सादे चित्र हैं। प्रत्येक पुस्तक का मूल्य १)

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

ESTD 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेंट रिकगनाइज्ड AIDED

सिन्हा होमियो मेडिकल कौलेज

—पो० लहेरियासराय, बिहार—

आज हिन्दी उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़ कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्सन सहित फीस H.L.M.S. १०), H.M.B.S १५) H.M.D.S. २५) पुस्तकें—अ० पारिवारिक १।।) बायोकेमिक १।।) मेटेरिया मेडिका १।।) मेडिकल डिक्सनरी ८) आर्गेनन १।।) फार्मा कोपिया १।।) रेड लाइन सीम्पटम्स १।।) (१) वृ० इंजेक्सन चिकित्सा ३) वृ० अ० पारिवारिक चिकित्सा ६।।) वृ० अ० मेटेरिया मेडीका ५।।) ऐनाटोमा १।।) परिक्षाविधान ।।) रिलेशन शिप, १।।) कुल किताबें २५) में एक साथ दी जायँगी डा० ख० माफ। अमेरिकन दवाइयाँ ३०—=)।। २००—=) ड्राम, फी औं ।।), घरेलू बक्स पुस्तक सहित १६ शीशी का ८) सुगर और गोली २।।) फी पाउण्ड। चौथाई Advance भेज दें। थोक खरीदार को २५ प्रतिशत कमीशन देते हैं।

नोट:—वृहत् सूची मुफ्त—सचित्र मेडिकल मैगज़ीन मासिक ।।) सालाना—५)
संरक्षक—राय सा० डा० यदुवीरसिंह एम० डी० यस० (U.S.A.)

सचित्र साप्ताहिक 'देशदूत' का विशेषांक

काश्मीर अंक

इस अंक का संपादन करेंगे

पंडित शिवनाथ काटजू एम० ए०, एल-एल० बी०

'देशदूत' के काश्मीर अंक विशेषांक के प्रकाशन की तैयारी जोरों से प्रारंभ हो गई है। काश्मीर की समस्या स्वतंत्र भारत को आज की एक प्रमुख समस्या है। काश्मीर भारत का अंग है। उसकी र॰॰ तथा स्वतन्त्रता भारतीय सरकार का कर्तव्य है! इस विशेषांक में काश्मीर की वर्तमान समस्याओं पर राष्ट्र के बड़े बड़े नेताओं के गंभीर तथा जानकारी पूर्ण लेख रहेंगे। काश्मीर की भौगोलिक, ऐतिहासिक तथा राष्ट्रीयता का सचित्र विवरण दिया जायेगा। काश्मीर के प्रति पाकिस्तानी नीति पर भी नेताओं द्वारा सुन्दर प्रकाश डाला जायेगा। काश्मीर के संबंध में सुन्दर चित्र तथा नेशनल कान्फ्रेंस के नेताओं के संदेश आदि भी आकर्षक रूप में होंगे।

विज्ञापनदाताओं तथा एजेंटों को

अभी से अपना स्थान तथा बिक्री के लिये कापियाँ रिजर्व करा लेना चाहिये। नये ग्राहकों को यह अंक मुफ्त मिलेगा। यह अंक काश्मीर का एक अल्बम होगा।

दर्जनों चित्रों तथा कार्टूनों से सुसज्जित

इस अंक का मूल्य होगा केवल ।=)

व्यवस्थापक 'देशदूत' इलाहाबाद

भारत के कोने-कोने में हजारों जनता-द्वारा पढ़ा जानेवाला तथा ११ वर्षों से लगातार प्रकाशित होनेवाला

प्रमुख राष्ट्रीय साप्ताहिक पत्र

सचित्र देशदूत में

विज्ञापन देकर अपने व्यापार को बढ़ाइये

Registered No. A—295

विविध विषयों के हमारे बढ़िया ग्रन्थ

इस पुस्तकमाला की ४ प्रसिद्ध पुस्तकें हैं—(१) 'योगायोग' कवित्वमय श्रेष्ठ उपन्यास। मूल्य ४) (२) 'विश्वपरिचय' विज्ञान-विषय अनन्य ग्रन्थ। मूल्य २), (३) 'रूस की चिट्ठी। रूस का आँखों देखा वर्णन, मूल्य २) (४) 'चार अध्याय' ऐसा उपन्यास जिसमें राजनीति, समाज और स्त्री-पुरुष समस्या आदि पर विचार है मूल्य १॥)

इसमें प्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव के नये गीतों का संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अन्तर्दृष्टि से पूर्ण है। छपाई सफाई नयन मोहक। सचित्र सजिल्द प्रति मूल्य २) दो रुपये।
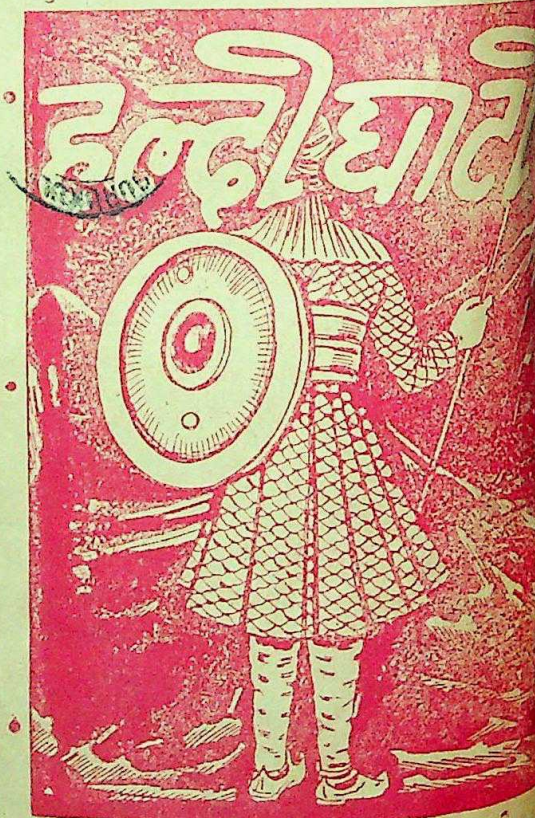
लेखक भू० पू० काकोरी सके के कैदी श्री मन्मथनाथ गुप्त और राजेन्द्र वर्मा। समाजवाद के अध्ययन के लिये पढ़ना आवश्यक है। मार्क्सवाद के दर्शनों में यह सबसे गहन है। एक दर्जन अध्यायों में विषय का प्रतिपादन हुआ है। मूल्य ६) छः रुपये।

यह श्री श्यामनारायण पाण्डेय की प्रसिद्ध रचना है। महाराणा प्रताप के हल्दीघाटी वाले संग्राम का वीरता पूर्ण बढ़िया छन्दों में है। सजिल्द सचित्र पुस्तक का मूल्य ३॥) बारह आने।

मैनेजर—[illegible] रोड, इलाहाबाद

देशदूत

DESHDOOT
HINDI WEEKLY
Annual Price Rs. 7-8-0
Per Copy Annas Two.
वार्षिक मूल्य ७॥)
एक प्रति का =)

३ सितंबर, सन् १९५० ❋ लोकप्रिय साप्ताहिक पत्र ❋ Sunday, 3rd September, 1950

...श्मीर की स्थिति इस समय बड़ी संघर्ष पूर्ण ...रही है। ब्रिटेन तथा अमरीका चाहते हैं कि ...मीर का विभाजन हो जाये साथ ही आजाद-...मीर का भू-भाग भी अपना अस्तित्व बनाये रहे। ...ों विदेशी वहाँ कब्ज़ा रखना चाहते हैं।

राष्ट्रीय उन्नति का एक मात्र साधन है उद्योग-धंधा। यदि भारतीय उद्योगधंधा तथा व्यवसाय सक्रिय रूप में विस्तृत किया जाये तो हमें किसी भी वस्तु के लिये विदेशों का मुँह न ताकना पड़े। महात्मा गांधी की आर्थिक-नीति इस संबंध में सर्वोत्तम थी।

अनेक विषयों की बढ़िया पुस्तकें

हिन्दी भाषा का संक्षिप्त इतिहास

यह राय बहादुर डाक्टर श्यामसुन्दर दास के इसी नाम के ग्रन्थ का सारांश है। विषय नाम से ही प्रकट है। अपनी भाषा का इतिहास संक्षेप में पढ़ने के लिए इसे लीजिए। अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य १) एक रुपया।

आदर्श भूमि अथवा चित्तौर

चित्तौर राजपूतों के त्याग के कारण तीर्थ बन गया है। भारत के गौरव स्वरूप उसी चित्तौर का ओजपूर्ण भाषा में लिखा गया इतिहास पढ़कर अपनी जानकारी बढ़ाइए। मूल्य २) दो रुपये।

पंडित जी

नामी उपन्यास लेखक शरद बाबू के इस उपन्यास में कुलीनता, उच्च शिक्षा, द्विज और द्विजेतर, गाँव की भलाई और अपनी उन्नति, नई शिक्षा और मिथ्या अभिमान आदि के सम्बन्ध में बहुत ही विशद विवेचना की गई है। मूल्य २) दो रुपये।

मैक्सिम गोर्की

रूस के इस विश्रुत कलाकार के परिचय के लिए इस पुस्तक को पढ़िए। है तो यह जीवन चरित, पर इसे पढ़ने में कहानी का आनन्द मिलेगा। इसकी जीवनचर्या का वर्णन पढ़कर पाठक जान सकेंगे कि इस कलाकार को किन विकट कठिनाइयों में होकर गुजरना पड़ा था। छोटे टाइपों में छपी लगभग ढाई सौ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य ३) तीन रुपये।

युद्ध और शान्ति

यह संसार के श्रेष्ठ उपन्यास-लेखक और विचारक का काउंट लिओ टाल्स्टाय के प्रसिद्ध रूसी उपन्यास 'वार एण्ड पीस' का हिन्दी रूपान्तर है। यह ऐतिहासिक उपन्यास तब लिखा गया था जब लेखक की शैली परिमार्जित हो गई थी और उन्हें अन्तर्द्वन्द्व से छुटकारा मिल कर शान्ति मिल गई थी। लेखक ने इसमें मानव-जीवन का सम्पूर्ण चित्र, अपने समय के रूस की तस्वीर और राष्ट्रों की खींचतान बड़ी खूबी से चित्रित की है—जीवन और मृत्यु के रहस्य का भी उद्घाटन किया है। लगभग पौने सात सौ पृष्ठों की सजिल्द प्रति का मूल्य ५।-) पाँच रुपये पाँच आने

कुलबोरन

श्री चन्द्रभूषण वैश्य ने इस उपन्यास को सत्य घटना के आधार पर लिखा है। समाज की अन्ध परम्पराओं से देश की जो हानि हो रही है उसका इसमें सजीव चित्र है। सुधार करनेवाले को रूढ़ियों के अन्ध भक्तों से जैसा लोहा लेना पड़ता है उसका नमूना उपन्यास का नायक, 'कुलबोरन' है। अच्छे कागज पर छपी सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥) दो रुपये आठ आने।

अल्पता की समस्या

'साम्प्रदायिक भेद पर विशेष अधिकार माँगना और ऊलजलूल दावे पेश करना तथा उन माँगों के पूरा न होने पर देशद्रोह के लिए कमर कस लेना किसी देश-भक्त का काम नहीं।' इसी पर दृष्टि रख कर पंडित वेंकटेश नरायण तिवारी एम० ए० ने तथ्यों और आँकड़ों के साथ पुस्तक में उलझन को समझाया है। पाकिस्तान बन जाने पर भी जिनके मन में ऊपर लिखी भावना है उनके समाधान के लिए इसमें सप्रमाण उत्तर है। मूल्य २) दो रुपये।

ईरान

महा पंडित राहुल सांकृत्यायन ने इस पुस्तक में अपनी ईरान-यात्रा का विशद वर्णन किया है। इसके पढ़ने से ईरान की बहुत-सी जानकारी पाठकों को हो जायगी। भ्रमण-वर्णन कहानी का सा आनन्द देगा। मूल्य १॥=) एक रुपया ग्यारह आने।

मध्य प्रदेश और बरार का इतिहास

इस अत्यन्त प्रामाणिक इतिहास में उक्त प्रदेश से सम्बन्ध रखनेवाली सभी प्राचीन और अर्वाचीन महत्वपूर्ण बातें आ गई हैं। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

सुन्दरी-सुबोध

इस पुस्तक में पति-पत्नी को सन्तुष्ट रखने के उपाय इस ढंग से बताये गये हैं कि कहानी का आनन्द देते हैं। इसके सिवा सास-पतोहू, देवरानी-जेठानी, ननद-भौजाई, माता-पुत्र आदि की के दूसरे सम्बन्धों को भी ठीक २ रखने के उपाय बताये गये हैं। पुरुषों के लिए भी बहुमूल्य अनुभूत बातें दी गई हैं। इनको उपयोग में लाने से गृहस्थी सुखमय हो सकती है। ३०० पृष्ठों से अधिक की सजिल्द प्रति का मूल्य २॥) दो रुपये आठ आने।

आदर्श महिला

इस पुस्तक में सीता, सावित्री, दमयन्ती, शैव्या और चिन्ता आदि पाँच प्रसिद्ध देवियों की जीवन-घटनाओं का सजीव सचित्र वर्णन दिया गया है। इसको पढ़ने में कहानी का आनन्द मिलेगा और शिक्षा सहज ही। मूल्य २॥=) दो रुपये ग्यारह आने।

कथा सरित्सागर

इस पुस्तक में आदि से ... तक एक से एक बढ़िया कहानि... जैसा इसका नाम है, यह ... का समुद्र है। प्रत्येक कथा ... एक न एक दृष्टान्त है। ... सजिल्द प्रति का २॥=) ... रुपये ग्यारह आने।

देव दर्शन

इसमें ब्रजभाषा के प्रख्या... देव की जीवनी और उनके ... काव्यों का आलोचनात्मक ... दिया गया है। ब्रज काव्य के ... अतिरिक्त साहित्य के विद्यार्थि... लिए भी यह पुस्तक अत्यन्त ... है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ... एक रुपया पाँच आने।

बन्दना

यह श्रीमती चन्द्रमुखी ओझा ... के ५२ मधुर गीतों का संग्र... आरम्भ में श्री सूर्यकान्त ... 'निराला' की लिखी प्रशं... अच्छे कागज पर छपी ... पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

तुलसी के चार दल

(प्रथम और द्वितीय ... गोस्वामी तुलसीदास जी के ... नहछू, बरवै रामायण, पार्वती ... और जानकी मंगल का आलो... नात्मक परिचय तथा इन चारों ... की अध्ययनपूर्ण टीका। इसे इन ... की कुंजी समझिए। मूल्य प्रथम ... का ३) रुपये, द्वितीय भाग का ... दो रुपये ग्यारह आने।

ग्रह-नक्षत्र

इस पुस्तक में ग्रहों और ... आदि से सम्बन्ध रखने वाली ... सभी आवश्यक बातों का ... वर्णन सरल भाषा में है। मू... तीन रुपये।

हार या जीत

इस उपन्यास में लेखक ... ब्रजेश्वर वर्मा एम० ए०, डी० ... ने एक देहाती लुहार की अल्प... बेटी को घटनाक्रम से, अनाथ ... में, देहात से महराजगंज की ... पृथाकुंवरि के आश्रय में पहुँचा... है। वहाँ रानी की कृपा से ... लड़की ने विद्या पढ़ी। फिर इसके ... गुणों का विकास हुआ जिससे ... सभ्य होकर सम्मान पाता है। ... असहयोग आन्दोलन में सक्रिय ... लिया और अन्त में कलकत्ता ... नौकरी कर ली। कई पुस्तकें ... विदेश-यात्रा के बाद रानी के ... की प्रार्थना पर उससे विवाह ... उपन्यास की घटनावली, विचारों ... संघर्ष और बन्दा की नम्रता ... दृढ़ता सराहने योग्य है। मू... दो रुपये।

मैनेजर—देशदूत पब्लिशिंग हाउस, कटरा, इलाहाबाद

र्ष १३, संख्या १] [रविवार, ३ सितम्बर, १९५०

ढ़ी, सीधी, खरी-मजेदार

ाश्मीर की समस्या घुटाले में पड़ । पंडित नेहरू ने साम्यवादी चीन समर्थन करके अमरीका को नाराज़ दिया है, तभी तो काश्मीर के डिक्शन साहब आजाद काश्मीर भाग में मतगणना कराने का दे गये हैं। अब देखना है सुरक्षा इस सम्बन्ध में क्या निर्णय देती अपने राम की समझ में ब्रिटिश और न जिन्दा रहते काश्मीर का नहीं होने देंगे। इसलिये काश्मीर ता बट्टेखाते में पड़ा हुआ ही । और क्या कहा जाये ?

× ×

स्तान का यद्यपि भारत से कई के सुलझाने के सम्बन्ध में हो चुका है फिर भी वह अमरीका न का नम्बरी चाटुकार तो है ता तो यह चाहिए कि वह इन्हीं ों की कृपा से अपना अस्तित्व र है। तभी तो पाकिस्तान के त्री श्री लियाकतअली खाँ लल- कि हम काश्मीर के मुसलमानों त करा कर ही दम लेंगे। यह र उनके बूते का रोग नहीं है। काश्मीर का मामला त्रिशंकु की टका ही समझिये। अमरीका ने काश्मीर का समझौता करा चुके। भारत तथा पाकिस्तान की मैत्री की वास्तविकता इससे भली भाँति प्रगट हो जाती है ?

× × ×

आसाम पर प्रकृति का प्रकोप क्यों हो रहा है, ईश्वर जाने। भूकंप आसाम ही में क्यों आया, बरमा में क्यों नहीं आया, या दक्षिण पूर्व में और भी बहुत से टापू हैं, वहाँ क्यों नहीं आया, यह भी खुदाई दण्ड है। प्रकृति के आगे किसी का वश नहीं किन्तु, थैली वालों को भूकंप पीडितों की पूरी सहायता करनी चाहिए। पिछले कई वर्षों में इस देश में चोरबाजारी से अच्छी खासी लूट हुई है, इसलिये ऐसे संकट के समय यदि चोर बाजार वाले चेत जायें तो पीडितों की बड़ी सहायता हो सकती है। लेकिन चोर बाजार वाले चेतें तब तो !

× × ×

राजस्थान की प्रांतीय कांग्रेस कमेटी तथा सत्तारूढ़ कांग्रेस जनों में बड़ा भयंकर संघर्ष चल रहा था। किन्तु पिछले कांग्रेसी चुनाव का जो परिणाम [illegible] में प्रेम का बल- बला उत्पन्न हो गया। अब प्रेम, सहयोग और मेल मिलाप के सिवा आगे कुछ सुझाई नहीं देता। अपने राम ने अख- बारों में पढ़ा कि राजस्थान के प्रधान मंत्री श्री हीरालाल शास्त्री तथा पंडित जयनरायणव्यास सरदार वल्लभ भाई पटेल से प्रेमालाप करते हुए मिले और आशा है कि राजस्थान की नीति में निकट भविष्य में बहुत बड़ा परिवर्तन होने जा रहा है। कहना यह चाहिए कि संघे शक्ति कलौयुगे। जनता की शक्ति के आगे सत्तारूढ़ों का पारा ऊपर से नीचे खिसक आता ही है, यह प्राकृतिक भी है।

× × ×

मध्यभारत में भी इसी प्रकार का संघर्ष चल रहा है। पंडित लीलाधर जोशी गये श्री विजय वर्गीय जी आये। पिया जिसको कहे वही सुहागिन। भारत- सरकार की राज्य मिनिस्ट्री जिसको सुहागिन कहेगी वही सुहागिन होगी ही, नियम यही कहता है लेकिन वहाँ भी राजस्थान की ही भाँति कांग्रेस जनों में हुल्लड़बाज़ी चल रही है। देखना है मध्यभारत की नैया किधर पलटा खाती है। ग्वालियर और इंदौर के संघर्ष स्वरूप देखना है स्टेट मिनिस्ट्री पुरानी को सुहागिन होने का सार्टिफिकेट देती है या फिर किसी नई नवेली को।

× × ×

एक पत्र ने लिखा है कि कांग्रेस के सभापति चुनाव में पंडित नेहरू तथा सरसार पटेल को अपना मौन भंग करने के लिये चुनाव लड़ने वालों की ओर से बहुत जोर डाला गया किन्तु यह दोनों नेता गुटुर-गुटुर देखते ही रहे, बोले कुछ नहीं। थोड़ा बहुत बोले भी तो पंडित नेहरू। किन्तु दोनों के नाम से प्रचार कार्य तो किया ही गया। क्योंकि इसी प्रकार के प्रचार से चुनाव लड़ने वालों ने लाभ उठाया। अपने राम की समझ में जो होना था हुआ, अब सभापति जी को तनिक सावधानी से कांग्रेस की बागडोर संभालनी चाहिए और आदर्शवाद तथा नैतिकता की दुहाई देने से ही काम नहीं चलेगा। कांग्रेस जनता की दृष्टि में बहुत पीछे खिसक चुकी है, इस समय कांग्रेसी होना तथा खद्दर पहनना जनता की दृष्टि में पवित्र काम नहीं रह गया है, क्योंकि खद्दर की पोशाक में जिस प्रकार की नैतिकता कम हुई है, उसी प्रकार जनता की मति भी बदली है। क्या हम आशा करें कि वर्तमान सभापति महात्मा गांधी द्वारा बताये मार्ग की ओर अग्रसर हो कर जनता का स्तर ऊँचा उठाने में सफलता प्राप्त करेंगे, अवश्य ही करेंगे बशर्ते सत्तारूढ़ो और कांग्रेस जनों का स्वर एक हो। स्वर बे सुरा हुआ और मामला फिर घुटाले में पड़ा। पंडित नेहरू तथा सरदार पटेल के साधारण से साधारण विचार का प्रभाव तो जनता पर पड़ता ही है और यदि कांग्रेस जन दलबन्दी में पड़ कर लाभ उठायें तो क्या बेजा। इसलिये भूल से ही सुधार हो तो अच्छा। यों भाग्य किधर किसे ले जाये, कहा नहीं जा सकता।

नासिक कांग्रेस के सभापतित्व के लिये माननीय टंडन जी को भारत के १४ प्रांतों ने मत दान दिया है।

के गवर्नर माननीय डाक्टर कैलाशनाथ काटजू।

गीत

लेखक, प्रोफेसर चंद्रप्रकाश वर्मा एम० ए०

ये दिन-रात तुम्हारे ही हैं,
वर्षा के ये सजल-श्याम घन तुमने केश सँवारे ही हैं।
जीवन के एकाकीपन से
ऊब-ऊब जब तुम्हें पुकारा,
तब आई लहराती नभ से
प्रिय की स्वरधारा, जल-धारा;
अंकुर पनप उठे, पर ये तो सूखे प्राण हमारे ही हैं।
विद्युत् की यह कौंध हिल उठे
सहसा आज तुम्हारे कुंडल,
सात रंग बह रहे चीर सा
लहर-लहर जाए दिग्मंडल;
यह उज्जलव बक पांति—श्वेत कर तुमने आज पसारे ही हैं।
पवन-वेग, पर्वत-पर्वत पावस
ऋतु तुम तिमिरांजन आंजे,
नृत्य-निरत, चल-चरण तड़ित-गति,
रुन झुन नूपुर घन-रव-बाजे;
मुख-दर्शन को, तम के दीपक, नभ के चार सितारे ही हैं।

सचित्र
साप्ताहिक 'देशदूत'

संवाददाताओं से निवेदन

संयुक्तप्रांत, मध्यप्रांत, मध्य भारत तथा राजपूताने के संवाद भेजनेवालों से निवेदन है कि वह अपने संवाद संक्षिप्तरूप में ही भेजने का कष्ट करें।

संपादक 'देशदूत'

सम्पादक का पृष्ठ

कांग्रेस किधर ?

राष्ट्रीय जनता की प्रगति इस समय किधर जा रही है ? हमारे देश में कांग्रेस सबसे महान और सुदृढ़ राष्ट्रीय संस्था है। कांग्रेस द्वारा ही राष्ट्र के नेताओं ने राष्ट्रीय चेतना और जागृति की स्थापना की है। कांग्रेस के सुदृढ़ और शक्तिशाली संगठन द्वारा ही विदेशी सत्ता के विरुद्ध आवाज़ उठाई गई और आज उसका स्थान राष्ट्रीय सत्ता ने लेलिया है। विदेशी सत्ता को यह स्वप्न में भी विस्वास नहीं था कि भारतीय इतनी सफलता से राष्ट्र का शासन संचालन कर सकेंगे किंतु जिस दृढ़ता से राष्ट्र के नेताओं ने जनता की बागडोर संभाली है वह इतिहास के पन्नों में अमिट है। कांग्रेस के नाम पर लाखों व्यक्तियों ने अपना बलिदान दिाय, अपनी सारी शक्ति विदेशियों के निकालने में लगा दी तथा महात्मा गांधी ऐसे महान नेता के नेतृत्व में जनता तथा राष्ट्र नेताओं ने क्या २ नहीं किया किंतु आज स्वयं जब कांग्रेस जन सत्तारुढ़ तब समझने की बात है कि क्या वही बलिदानी तथा त्यागी भावना आज भी कांग्रेस जनों में विद्यमान है ? क्या कांग्रेस का वह क्रांतिकारी भावना आज भी कार्यरूप में परिणित हो रही है ? क्या कांग्रेस जन आज भी अपने को वास्तविक जन सेवक कह सकता है ? क्या हमारा आर्थिक, समाजिक तथा नैतिक स्तर पराभव की ओर नहीं जा रहा है ? क्या सत्तारूढ़ कांग्रेसी जन अपने को जनता का सच्चा सेवक कह सकते हैं ? ऐसा क्यों हो रहा है ? कांग्रेस को कांग्रेस जन किधर ले जा रहे हैं ? जनता के सामने आज का यह अहम तथा जटिल प्रश्न उत्पन्न हो गया है ? कांग्रेस जनों में परस्पर विद्वेष, कलह और दलबंदी की व्यापकता बढ़ती जा रही है। आदर्श तथा नैतिक स्तर से वह गिरते जा रहे हैं ? स्वार्थों की भावना सीमा पार कर रही है। यदि यही स्थिति रही तो कांग्रेसी सत्ता कितने दिनों तक टिकी रह सकती है, विशुद्ध तथा ईमानदार कांग्रेस जनों तथा जनता के सामने यह प्रश्न भी व्यापक रूप में व्याप्त है। यह बात नहीं है कि कांग्रेस ईमानदार तथा तपस्वियों से हीन हो गई है किन्तु वह शक्तिहीन है, उनकी वाणी का कोई प्रभाव नहीं है, शक्ति के आगे उनकी आशा क्षीण हो रही है। यदि ऐसा न होता तो आज कांग्रेस कहाँ चली गई होती। ऐसे ही आदर्शवादियों के प्रभाव से ही उसका पाया आज भी दृढ़ है परन्तु जल्दी से जल्दी यदि कांग्रेस को पुनर्संगठित नहीं किया जाता और उसमें आदर्श तथा नैतिकता की दृष्टि से उसमें नव जीवन का संचार नहीं होता है तो उसका अस्तित्व निश्चित रूप से खतरे में है।

इसलिये आवश्यक है कि कांग्रेस को सुदृढ़ हाथों में सौंपा जाये। आजकल देखा जा रहा है कि यद्यपि शासन भी कांग्रेस जनों के ही हाथों में है फिर भी कांग्रेस के प्रमुख कार्यकर्ताओं तथा सत्तारूढ़ कांग्रेस जनों में घोरमतभेद और संघर्ष चल रहा है। सत्तारूढ चाहते हैं कांग्रेस अधिकारी शासन नीति का समर्थन करें और कांग्रेस-अधिकारी चाहते हैं कि चूंकि कांग्रेस जनता सत्तारूढ़ है इसलिये वह कांग्रेस के आदेशा नुसार ही अपनी शासन-नीति संचालित करें। लेकिन इसके विपरीत आवश्यकता है कांग्रेस-अधिकारियों तथा सत्तारूढ़ कांग्रेस जनों में पारस्परिक सहयोग की। जब तक शुद्ध रूप से परस्पर सहयोग न होगा तब तक राष्ट्रीय उन्नति में बाधा उत्पन्न होना अनिवार्य है। इस का सब से ज्वलंत प्रमाण है नासिक कांग्रेस के लिये सभापति का चुनावए। एक समय था जब कि कांग्रेस के सभापति का चुनाव एक मत से होता था और एक अब ऐसा समय आया है जब कि सभापतित्व के लिये संघर्ष करना पड़ा है। ठीक है कि यह सब जागरण के लक्षण हैं और जनतंत्र में ऐसा होता भी है किंतु इस प्रकार के चुनाव के भीतर जो मनोवृत्ति है वह निंदनीय है। यह कहा जाय अमुक नेता के सभापति बन जाने से कांग्रेस पवित्र हो जायेगी और आदर्श तथा नैतिकता की बाढ़ आ जायेगी ऐसा हम मानने को तैयार नहीं हैं। प्रत्येक का अपना मन तथा अपनी नीति है, वह कांग्रेस को नैतिक स्तर पर पहुँचाने में कितना सफल होगा, इस की पहचान तो बाद को होगी। इसलिये आवश्यक है कि राष्ट्रीय नेता सचते हों नहीं तो वर्षों की समस्या और बलिदान व्यर्थ जायेगा। जनता के आदश और स्तर को ऊँचा उठाना ही कांग्रेस सत्तारूढ़ों का परम कर्तव्य है और यह काम निस्वार्थ भावना तथा सहयोग से ही हो सकता है।

सामाजिक असमानता

क्या विधान की सहायता से सामाजिक उन्नति दूर हो सकता है ?

लेखक, प्रोफेसर आर० डी० व्होरा एम० काम०

भारतीय विधान में सेक्शन १४ व १७ के अनुसार हर व्यक्ति को विधान की दृष्टि से समान अधिकार दिये गये हैं व अस्पृश्यता को गैन कानूनी घोषित कर किया गया है। क्या हम विधान की सहायता से समाज के इस दुर्गुण को हटा सकते हैं।

भारतीय समाज ही एक ऐसा समाज है, जिसे अपने उच्चतत्त्व—ज्ञान विश्व बन्धुत्व, ईर्षा और द्वेष रहित मानव जाति की सेवा इत्यादि महान् विचारों के कारण विश्व में बहुत ही उच्च स्थान प्राप्त है। परन्तु खेद का विषय है कि जहाँ एक ओर भारतीय विचार धारा उच्च तत्त्वों में अपनी सानी नहीं रखती, वहाँ दूसरी ओर इतनी ही निन्दनीय विचार धारा समाज में पायी जाती है। वर्ग-भेद जातीय अंचनीचता, शुद्रों के प्रति समाज में पाया जानेवाला व्यवहार—ये ऐसी समस्याएँ हैं, जो भारत के लिए एक पहेली बन गयी हैं।

जो व्यक्ति या जो वर्ग अपने आप आप को ऊँच समझता है या श्रेष्ठ समझता है, उसे भी इस तरह की असमानता के कारण हानि ही उठानी पड़ती है, वह व्यक्ति या वह वर्ग अपनी योग्यता का सच्चा मूल्यांकन नहीं कर सकते तथा कसौटी के समय अपने सारे कार्यों में असफल रहते हैं। ऐसे व्यक्ति या ऐसा वर्ग अपनी योग्यता हमेशा वाजिब से अधिक समझते हैं। इस तरह जिस देश में ऐसे रहिवासी या बाशिन्दे हों, जो या तो अपना मूल्य वास्तव से कम समझें, या अधिक समझें, ऐसा देश राजकीय, आर्थिक व सामाजिक दृष्टि कोण से उन्नति नहीं कर सकता।

उक्त विचारधारा को सही अर्थों में और विश्लेषण के साथ समझ लेना चाहिए, ताकि उसका अर्थ सही माने में समझा जा सके।

पैसे में किसी तरह का गुण नहीं। पैसे वाले के यहाँ जन्म लेने में किसी तरह की योग्यता की आवश्यकता नहीं। तो फिर हमें उस व्यक्ति को ऊँचा या आदरणीय समझने का कोई कारण नहीं, कि जिसके पास पैसा हो। हमें हमारे उन बन्धुओं का आदर करना चाहिए, जो चतुर हैं, जो योग्यता रखते हैं—चाहे फिर वे पूँजीपति हों, चाहे निर्धन। इसके अतिरिक्त किसी भी व्यक्ति को आदरणीय दृष्टि से देखना या ऊँचा समझना, देश और समाज के दृष्टिकोण से हानिकारक, कायरता पूर्ण और मनुष्य जाति के लिए कलंक होगा। यह शर्म की बात होगी कि हम अयोग्य व्यक्तियों को सिर झुकाएँ उनकी प्रभुता मानें या उनका आदर करें। यदि हम हमारे समाज में प्रचलित इस तरह की कुप्रथाओं को न रोकें तो हमारे सारे तत्त्वज्ञान मिथ्या हैं।

यहाँ यह समझ लेना आवश्यक होगा, कि दुनिया के सारे व्यक्ति समान शरीरिक गुण वाले समान बुद्धिवाले व समान अध्यात्म शक्ति वाले नहीं होते। हर व्यक्ति की बुद्धि में चतुराई में और नैतिकता में फर्क होता है। कई दयालु होते हैं तो कई निर्दयी; कई चालाक होते हैं तो कई भोले, इत्यादि परन्तु साधारणतः अधिकांश लोग अधिक चतुर भी नहीं होते, तो अधिक भोले भी नहीं, अधिक दयालु नहीं, तो अधिक निर्दयी भी नहीं। समाज में कुछ ही लोग ऐसे होते हैं, जो दूसरों से विषमता रखते हैं। यह उचित होगा, कि हम अधिक योग्य योग्यता, अधिक चतुराई इत्यादि गुणों वाले व्यक्ति का आदर करें। परन्तु साथ ही साथ हमें यह ध्यान में रखना चाहिए, कि यह मान या यह आदर उस व्यक्ति विशेष का हो, न कि उस जाति का जिसमें वह व्यक्ति पैदा हुआ हो। महात्मा गांधी ने बनिया जाति में जन्म लिया, इसलिए सारी बनिया जाति पूजनीय नहीं हो सकती। ठीक इसी तरह पण्डित जवाहरलालनेहरू ब्राह्मण हैं, इसलिए सारे ब्राह्मण ऊँचे नहीं बन जाते। विजय मरचन्ट क्रिकेट पटु हैं, गामा प्रथम मल्ल है, इसलिए सारे क्रिकेट खिलाड़ी और सारे मल्ल हमारे आदर के योग्य नहीं बन सकते। जो व्यक्ति कोई योग्यता रखता हो, वही आदर व मान के पात्र हैं। यह शर्म की बात होगी, कि हम किसी जाति के आगे—पैसों के आगे या कपड़ों के आगे सिर झुकावें।

यहाँ इस बात पर प्रकाश डाल देना आवश्यक होगा, कि जिन व्यक्तियों की नसों में महान् आत्माओं का रक्त है उनका हम आदर करें व यह स्वाभाविक भी है। यह बहुत अस्वाभाविक होगा कि हम महात्माजी के पुत्रों और पण्डित जी की पुत्री का आदर करें व उनसे मिलने का उत्कण्ठा भी रखें। साधारणतः ऐसा देखा जाता है कि बड़े व्यक्तित्व वाले पुरुषों की सन्तान उतनी योग्य नहीं होता, परन्तु फिर भी औसत व्यक्तित्व वाले मनुष्य की अपेक्षा अधिक ही व्यक्तित्व वाली होती है व इस कारण आदरणीय है।

(शेष पृष्ठ १३ पर)

राष्ट्रीयकरण और मुआवजा

यह समस्या किस-प्रकार हल की जा सकती है ?

लेखक, स्वामी सत्यभक्त

आजकल उद्योग धंधों तथा भूमि के राष्ट्रीयकरणकी चर्चा के साथ-साथ मुआवजे का प्रश्न भी प्रांतीय सरकारों तथा जनता के नेताओं के सामने है। आज का कांग्रेस दल मुआवजे के पक्ष में है किन्तु समाजवादी दल इसके विरुद्ध है। इस लेख में विद्वान लेखक ने कांग्रेस दल की नीति का समर्थन किया है और राष्ट्रीकरण तथा मुआवजा के सम्बन्ध में अपने कुछ सुझाव दिये हैं। लेख विचारणीय तथा पठनीय है।

कांग्रेस के वर्तमान प्रेसिडेंट डाक्टर पट्टाभि सीतारमैया।

...मंत्री पंडित नेहरू राष्ट्रीयकरण के पक्ष में हैं।

आजकल राष्ट्रीय करण को काफी ...है। सभी राजनैतिक दल थोड़े ...अंशों में राष्ट्रीय करण की चर्चा ...है। और दुनिया की जैसी हवा है ...देखते हुये यह कहना पड़ता है कि ...नहीं तो कल इस देश में थोड़े ...उद्योगों का राष्ट्रीयकरण होगा। ...शस्त्र-बल से क्रान्ति करना ...हैं वे अगर सफल हुए तब तो ...करण में मुआवजे का सवाल ...उठता। वे बिना मुआवजा दिये ...करण कर डालेंगे। पर जो लोग ...जीत कर धारा सभाओं में बहुमत ...कर राष्ट्रीयकरण करना चाहते हैं, ...समाजवादी दल, संयुक्त समाज-...दल आदि, वे भी मुआवजा दिये ...राष्ट्रीय करण के पक्ष में हैं। पर ...नीतिवाद में राष्ट्रीयकरण के साथ ...वजा देने की बात कही है। मैं ...देने को न्यायोचित और ...समझता हूँ।

...न्यायोचित इसलिये कि मुआवजा ...में भलाई का बदला बुराई से ...बुराई का बदला भलाई से दिया ...। जिन लोगों ने अपनी सम्पत्ति ...सोने चांदी आदि में रोक कर ...तो अपनी सम्पत्ति सुरक्षित रख ...पर जिन्होंने उद्योगों में लगा कर ...समृद्ध बनाने में, बेकारी हटाने ...लगाई वे इस भलाई के बदले ...खो बैठेंगे यह अन्याय है। ...है कि उन्होंने अपने मतलब से ...लगाई थी पर मतलबी तो सब हैं ...अपनी संपत्ति किसी दूसरे तरीके ...की, वे क्या कम मतलबी हैं। ...हुआ कि उनके संग्रह से देश ...धंधे नहीं पनपे और इनके तरीके ...। इसके लिये इन्हें दंड क्यों ...चाहिये? इसलिये मुआवजा न ...याय है पक्षपात है।

...वजा देना आवश्यक इसलिये है कि ऐसा न किया जायगा तो देश की औद्योगिक परिस्थिति आज ही चौपट हो जायगी। समाजवाद या राष्ट्रीयकरण जब आयेगा तब आयेगा, परन्तु औद्योगिक क्षेत्र में पूंजी आना आज से ही बन्द हो जायगा, जैसा कि हो रहा है। इतना ही नहीं औद्योगिक क्षेत्र का उत्साह नष्ट हो जायगा और लोग औद्योगिक क्षेत्रों से पूँजी निकालना शुरू कर देंगे। इन कारणों से वर्तमान उद्योग भी क्षीण हो जायगा। इस तरह देश कंगालियत की तरफ चला जायेगा, जाने भी लगा है। अगर हम योग्य मुआवजा देने की घोषणा कर दें तो औद्योगिक स्थिति सुधर ही नहीं सकती है बल्कि तरक्की कर सकती है। इसलिये मुआवजा देने की बात आवश्यक भी है।

तीसरी बात यह है कि जो लोग राष्ट्रीयकरण को पसन्द करते हैं वे लोग भी उस समय राष्ट्रीय करण के विरोध में हो जाते हैं जब मुआवजा न देने की बात कही जाती है। बहुत से ऐसे मिल मालिक हैं जो चाहते हैं कि मिल का काम कोई दूसरा सम्हाल ले क्योंकि मज़दूरों के झगड़े टैक्सों के झगड़े आदि कारण से वे अपनी पूंजी निकाल कर उस झंझट से छूटने को तैयार हैं। अगर उन्हें मुआवजा मिले तो वे राष्ट्रीयकरण के पक्ष में हो जायँगे।

ऐसे भी जमींदार हैं, और काफी हैं, जो अपनी जमीन और जमींदारी बेचने को तैयार हैं थोड़ी बहुत कम कीमत मिले तो भी देने को तैयार हैं क्योंकि इस क्षेत्र में भी काफी झगड़े, मजदूरों का न मिलना आदि परेशानी से वे तंग आ गये हैं। ये लोग भी अगर मुआवजा मिले तो राष्ट्रीयकरण के पक्ष में आ जायँगे। इस प्रकार चुनाव में नई आर्थिक व्यवस्था का पक्ष मजबूत होगा।

बिना मुआवजा के राष्ट्रीयकरण की बात हवा में काफी फैल जाने से जमीनों की बिक्री भी कठिन हो गई है। बहुत से ऐसे किसान जो जमीन खरीदने की हालत में हैं पर वे अभी इस लिये जमीन नहीं खरीद रहे हैं कि सरकार मुफ्त में ही दूसरों की जमीन जप्त करके हमें दे देगी इस दुराशा से जमीन का उठना भी अर्थात् विकेन्द्रीकरण रुका हुआ है जितना हो सकता है।

इन सब बातों का विचार करके कहना पड़ता है कि बिना मुआवजा के राष्ट्रीयकरण की बात हर हालत में नुकसान देह है। राष्ट्रीयकरण करने से ही देश की आर्थिक हालत सुधर जायगी या शोषण रुक जायगा यह नहीं कह सकते फिर भी जो उद्योग राष्ट्रीयकरण के द्वारा ही लाभ दे सकते हैं उनका राष्ट्रीयकरण करना उचित होगा। छोटे छोटे उद्योगों का राष्ट्रीयकरण व्यावहारिक न होगा। अभी अभी बम्बई सरकार ने मोटर सर्विसों का राष्ट्रीयकरण किया, फल यह हुआ कि उनसे जो आमदनी होती थी वह बन्द हो गई, सरकार को न मिली। ऐसे ऐसे उद्योगों के राष्ट्रीयकरण में आज काफी सोच-विचार करना पड़ेगा। फिर भी अनेक बड़े बड़े उद्योगों का राष्ट्रीयकरण तो करना ही पड़ेगा। पर वामदलों का कहना है कि "बिना मुआवजा के अगर राष्ट्रीयकरण न किया जाय तो राष्ट्रीयकरण संभव नहीं है। क्योंकि सरकार के पास इतनी पूंजी कहाँ से आयेगी कि सब उद्योगों का मूल्य चुकाया जा सके। मुआवजा के कारण जमीदारी प्रथा रुक रही है। पर यह सवाल इतना जटिल नहीं है कि इसका उपाय न किया जा सके। निम्नलिखित तरीकों से यह समस्या हल की जा सकती है।

सभी उद्योगों का एक साथ राष्ट्रीयकरण नहीं करना है। देखना है किन उद्योगों को सरकार आज की अपेक्षा अच्छे ढंग से चला सकती है। उत्पादन बढ़ सकता है और खर्च कम पड़ सकता है। ज्यों ज्यों सफलता मिलती जायगी त्यों त्यों राष्ट्रीयकरण का क्षेत्र बढ़ता जायगा। इस आंशिक राष्ट्रीयकरण के लिये सरकार पैसे का इन्तजाम कर सकती है।

अगर राष्ट्रीयकरण आवश्यक हो तो किन्तु सरकार के पास मुआवजे का पैसा न हो तो उसी तरीके से राष्ट्रीयकरण जा सकता है जैसे सरकार ने अभी अभी रिजर्व बैंक का राष्ट्रीयकरण किया है। सरकार ने शेयर होल्डरों से सब शेयर ले लिये और उसके बदले में तीन फी सदी ब्याज के बौंड दे दिये। शेयर

(शेष पृष्ठ १२ पर)

आह्वान

लेखक, श्री नर्मदेश्वर उपाध्याय 'साहित्यरत्न'

ज्योति-पुरुष उतरो !
घोर पुरातन के चरणों में नूतन शक्ति भरो।

रक्त स्नात अभिशाप तिमिर की लहरों पर मँडराता,
जीवन की धरती पर कोई गीत मरण के गाता।
मानवता है शीश धुन रही, युग जैसे पथहारा,
स्वर्ग अवतरित करो धरा पर जीवन-कलुष हरो।

रूठ गया सौभाग्य-देवता बुझी दीप की बाती,
गई प्रगति, युग के चरणों से, नहीं लौट कर आती।
धधक रही कैसी विभीषिका, जीवन के कण-कण में,
त्राहि-त्राहि करता मानव-मन, आकर शान्त करो।

पथराये नैनों में संस्कृति का सुहाग भर आया,
अंधकार में डूब गई मंगल-प्रभात की छाया।
पथ समाप्त हो गये, : कि युग की मंजिल हुई न पूरी,
निविड़-निशा को चीर सृष्टि में अमृत-प्रकाश भरो।

मालाया किधर जा रहा है ?

राजनीतिक संघर्ष और आंतरिक भवनाओं का द्वंद।

लेखिका, कुमारी लाज विरमानी एम० ए०

दक्षिण पूर्व में मालाया द्वीप का प्रमुख स्थान है। चीन म साम्यवादी सरकार के स्थापित हो जाने का प्रभाव दक्षिण पूर्व के सभी टापुओं और द्वीपों पर पड़ा है। मालाया भी इससे मुक्त नहीं है। लेखिका ने इस लेख में मालाया की आंतरिक राजनीति का सुन्दर वर्णन किया जो पठनीय तथा विचारणीय है।

मलाया एक छोटा किन्तु बहुत महत्वपूर्ण देश है। कम्युनिस्टों की करतूतों ने इस देश को और भी अधिक लाईम लाईट में ला दिया है। चीन में कम्युनिस्टों की सफलता ने मलाया के विषय में ब्रिटिश और अमेरिकन सरकार को चौकन्ना कर दिया है। सिडनी में हुई कान्फ्रेंस का अभिप्राय कम्युनिस्टों की बाढ़ को रोकना था। जैसे जैसे समय बीतता जा रहा है कम्युनिस्टों का ज़ोर बढ़ता जा रहा है।

किन्तु मलाया के घने जङ्गल, चीन कम्युनिस्टों की सहायता और मलाया में स्थित चीनियों की मलाया के कम्युनिस्टों के प्रति सहानुभूति, किसी भी विदेशी शक्ति को मलाया से कम्युनिस्टों को निकालने में सफल होने न देंगें। इसके साथ साथ मलाया की सरकार में इतनी निपुणता नहीं कि मलाया के निवासियों की कठिनाईयों का व्यावहारिक हल वह निकाल सके। वह चीनियों का विश्वास तो प्राप्त कर ही नहीं सकती हालांकि चीनी यह चाहते हैं कि उन्हें चैन और और शान्ति का जीवन प्राप्त हो जो कम्युनिस्ट उन्हें नहीं दे सकते।

मलाया के भविष्य का अनुमान लगाने के लिये उसके प्राचीन इतिहास पर दृष्टि डालना उपयोगी होगा। मलाया का भारत की अपेक्षा चीन से अधिक संबन्ध रहा है। किन्तु यह संबन्ध राज नैतिक और व्यापारिक ही है। इसके विपरीत मलाया से जो भी भारत का संबन्ध रहा वह सांस्कृतिक था। यह संस्कृति बहुत प्राचीन काल में मलाया और अध्यात्मिक जीवन पर बहुत प्रभाव डाला। मलय भाषा की वर्णमाला वहां—के लोगों के धार्मिक विचार, राज पद्धति, पहुँची और इसने मलाया के भौतिक कानून, वास्तु कला, चित्रकला तथा अन्य ललित कलाओं पर स्पष्टतः भारतीयता की छाप लगी है। ज्योतिष विद्या और रसायन तो भारत की ही देन हैं।
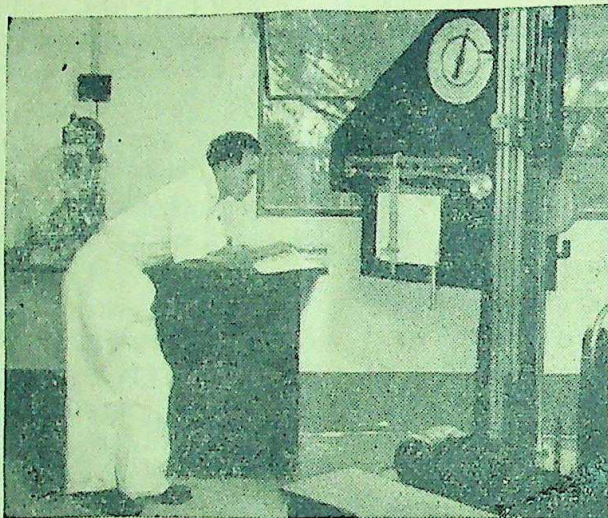
कारखाने में रबड़ की सफाई हो रही है।

मलाया में रबड़ के कारखाने में वैज्ञानिक परीक्षक।

मलाया में रहने वाले भारतीयों को चीनी यात्री भारतीय न कह कर मलय देश के हिन्दू कहते थे। इससे प्रतीत होता है कि भारतीयों ने अपने आप को मलाया के असली निवासियों के साथ इस प्रकार संबन्धित कर लिया था कि उनका अलग कोई स्तीत्व न रह गया था। चीनी लोग अधिक काल तक मलाया में रहते न थे। वे व्यापार के लिये आते थे और कुछ काल पश्चात वापिस अपने देश चले जाते थे। उनका प्रभाव स्थाई न होता था।

भारतीयों का प्रभाव इतना गहरा था कि जब मलाया के राजाओं ने इसलाम धर्म स्वीकार कर लिया तो भी वे हिन्दू नीति बरतते रहे। अब भी मलाया के पेराक नामक प्रान्त में महत्वपूर्ण राज उत्सवों पर हिन्दू पुरोहित की उपस्थिति अनिवार्य समझी जाती है। राज्याभिषेक के उत्सव पर तो विशेष रूप से हिन्दू प्रथाओं का पालन किया जाता है। सुलतान के माथे पर तिलक किया जाता है सुलतान के सिर के टोप पर एक मोहर लगी होती है जो इन्द्र के वज्र का प्रतीक है। सुलतान की तलवार पर शिव और महादेव के चित्र बने होते हैं। मलाया की जनता तो हिन्दू देवताओं को पूजती ही है।

मलाया में जन्म विवाह और मृत्यु पर हिन्दुओं की भान्ति संस्कार होते हैं, हकीम लोग जो प्रायः मुसलमान होते हैं अपनी चिकित्सा की सफलता के लिये शिव की पूजा करते हैं। मलाया के ग्राम ग्राम में रामयण और महाभारत के नाटक खेले जाते हैं। लोग उन्हें देखना एक धार्मिक कर्तव्य समझते हैं।

इतिहास पूर्व के काल से मलाया को स्वर्ण द्वीप का नाम भारतीय ग्रन्थों में दिया गया। ईसा से दो सौ वर्ष पूर्व के लगभग कुछ भारतीयों के इस द्वीप की खोज में निकलने का वर्णन मिलता है। चौथी शताब्दी में तो मलाया में स्थित भारतीयों ने अनेकों बौद्ध मन्दिर बनवाए। इनमें कई एक मन्दिर अब भी मिलते हैं। कैदा का बौद्ध मन्दिर इनमें से विशेष रूप से उल्लेखनीय है। बौद्ध धर्म के अंश भी कई कन्द्राओं पर मिलते हैं। मलाया निवासियों ने बुद्ध धर्म का हृदय से स्वागत किया। जब भारत में बौद्ध धर्म का पतन आरम्भ हुआ तो मलाया में भी हिन्दू धर्म ज़ोर पकड़ गया। मलाया के हिन्दू मन्दिर इसी काल में बने। इस काल के स्मारकों में से दिराक प्रान्त में स्थित विष्णु की मूर्ति बहुत प्रसिद्ध है। विष्णु को गरुड़ पर बैठे चित्रित किया गया है। यह मूर्ति पांचवीं शताब्दी में शैलराज के राज्यकाल में स्थापित हुई थी।

शैलराज भारतीय तो न था किन्तु वह शिव का पुजारी था। आठवीं शताब्दी में दक्षिण भारत के शैलेन्द्र वंश के राजा ने मलाया पर आक्रमण कर अपने अधीन कर लिया। इस वंश का राज्य जावा सुमात्रा और अन्य पूर्वी एशिया के द्विपों पर भी रहा। इन राजाओं के राज्य काल में मलाया में हिन्दू-धर्म अपने उत्कर्ष पर था।

दक्षिण के चोला वंश का राज्य मलाया में गियारवीं शताब्दी के कुछ वर्षों में रहा। इसके पूर्व ही अरब यात्री मलाया जावा आदि स्थानों पर आने लगे थे। चोला वंश के पतन के पश्चात उन्होंने मलाया पर आधिपत्य जमा लिया और प्रसिद्ध प्रसिद्ध मलाया राजाओं को मुसलमान बना लिया।

मुसलमानों का काल मलाया के इतिहास में अति संकट का काल था। आपस की फूट ने मलाया के शासकों को बहुत क्षीण कर दिया। सोलवीं शताब्दी में जब योरोपीय देशों ने पूर्व का ...

(शेष पृष्ठ १२ पर)

मलाया में रबड़ के कारखाने में रबड़ की परीक्षा की जा रही है।

सर्वोदय समाज

[गां]धीवादी युग की एक नवीन देन

[ले]खक, श्री त्रिलोक जैन बी० ए०

[ह]र युग का अपना एक इतिहास [हो]ता है और वह मानव जीवन निर्माण [में] एक विशेषता रखता है। क्योंकि [उस]के पीछे प्रयोगों और अनुभवों की एक [लम्बी] कतार सी होती है जिसके आधार [प]र और जिनको विश्लेषण कर उन [नतीजों] पर हर युग अपने जीवन के नये [मूल्य] रखता है। इसलिये हम देखते हैं [कि हर] युग ने जीवन के प्रति एक नया [दृष्टि]कोण पैदा किया है, एक नई विचार [धारा] को जन्म दिया है और जीवन के [प्रति] एक नई आस्था बनाई है। जिससे [मानव] के इस लम्बे अर्से में मानव के [जीव]न से अपनी सुखसमृद्धि के लिये [अने]क ही प्रयोग किये जा चुके हैं और [जिन]के आधार पर मानव समाज बनता [और] बिगड़ता गया है। यह नहीं कहा [जा स]कता है कि मानव ने जो कुछ अब [तक कि]या है वह गलत ही है क्योंकि [उसकी] बुद्धि उन परिस्थितियोंसे आवृत [थी और उ]स विचार धारा के अलावा कुछ [सोच] नहीं सकती थी किन्तु इसका [अर्थ य]ह भी नहीं हो सकता कि जो कुछ [उसने सो]चा वह सही होने के साथ साथ [पूर्ण] और सर्वांगीण भी/हो। आज तक [मानव ने] किसी विशेष परिस्थिति से प्रभावित [होकर जी]वन के एक पहलू को ही अपने [दृष्टिको]ण में रखकर सोचा है और [उस वि]चार धारा को जीवन साफल्य व [समाज] निर्माण की बुनियादी शर्त मान [लिया है]।

[इस]के परिणाम स्वरूप हमने हमारे [समय में दे]खा कि वे विचारधाराएँ वैज्ञा-[निक औ]र सही होते हुए भी जीवन को [सन्तुलित] न रख सकीं। हमारे समय की [दो बड़ी] लड़ाइयों ने सिद्ध किया कि [मानव] के जीवन मूल्यों को स्थिर करने [में क]मी रह गई है। कहीं पर मानव [ने] अविवेक, अज्ञान, अदूरदर्शिता और परिस्थितियों के तकाजे से एक पहलू पर इतना जोर दे दिया है जिससे जीवन का संतुलन बिगड़ गया और जिसके कारण आज मानव दुखी, संतप्त और अपने आप से परेशान व थका हुआ मालूम दे रहा है। आज वह अपनी बुद्धि का इतना दास हो गया है कि मन और शरीर उसकी दृष्टि से ओझल हो गये हैं और वह आज अपने को नियंत्रित करने में असमर्थ पा रहा है। जिससे फलस्वरूप आज समाज में विषमता, दरिद्रता, अन्याय, और शोषण दिखाई दे रहा है आज सारा जीवन कृत्रिम बन गया है। आज मानव दूसरों के श्रम से अनाधिकार लाभ उठाने का आदी हो गया है। मानव कल्याण, मानव भलाई की पुन्य भावनाएं आज उसके मानस से तिरोहित हो चली हैं। आज वह यंत्रों और यंत्रवत बुद्धि के पीछे दौड़ रहा है आज उसमें साधना की अपेक्षा विलास की भावना हो गई है।

इस प्रकार के जीवन संघर्ष और द्वन्द के मध्य मानव जीवन को संतुलित करने और भौतिकवादसे परावृत, आक्रांत मानव समाज को नयामार्ग व नया।दृष्टि-कोण देने के लिये पू० बापू ने 'सर्वोदय' के नाम की नव समाज निर्माण की योजना दी है। सर्वोदय की विचारधारा व्यवहारिक क्षेत्र में तो एक नई वस्तु है किन्तु मानव समाज के इस लम्बे इतिहास के लिये आदर्श रूप में कोई नई वस्तु नहीं। यह तो उस विचार धारा, व मानव जीवन के उन प्राथमिक मूल्यों का उद्घाटन है जो मानव सृष्टि के सृजन के साथ साथ पहले ही स्वीकार किये जा चुके हैं। हां यह बात अवश्य है कि इनकी प्रयोग विधि विभिन्न हैं और उनका समय व वातावरण भी विभिन्न है। सर्वोदय की कल्पना में जीवन की सम्पूर्णता का. सर्वांगीण विकास निहित है जिसमें मनुष्य के स्वयं के लिये व्यक्तिगत रूप से जीवन निर्माण की शर्त है। किन्तु इससे साथ साथ मानव कल्याण की भावना पावन जीवन की आत्मा है। सारा संसार का उदय हो प्राणीमात्र की सर्वांगीण उन्नति हो, सर्वोदय का आधार भूत सिद्धान्त है। जो सेव जीवन के नये मूल्य निर्धारित करने जा रहे हैं। सर्वोदय की विचारधार सतयुग की स्थापना का प्रारंभ है। जिसमें अहिंसा उसका प्राण है और सत्याग्रह उसकी शक्ति है। प्राणीमात्र का कल्याण उसका महान आदर्श है।

किन्तु इस महान आदर्श की प्राप्ति के लिये मानव को आत्मनिर्भर उत्पादक और सत्याग्रही बनाना होगा। मानव को अपरिग्रही जीवन बिताना होगा बुद्धि को रागद्वेश से अलग बिलकुल निर्मल रखना होगा। सर्वोदय के दृष्टिकोण को स्वीकार करना पड़ेगा वह अपने हाथ से कोई न कोई ऐसी चीज पैदा करेगा जिससे मानवसमाज का कल्याण होगा। आत्मबल को प्राप्त करना दूसरी शर्त होगी। शोषण, जाति पांति,रंग, धर्म, देश वगैरह के अन्तर को अहिंसा के मार्ग से मिटाने व सत्याग्रही का जीवन बिताने की तीसरी शर्त होगी। किन्तु बुयियादी सिद्धान्त तो सत्य और अहिंसा रहेंगे जो सर्वोदय समाज की जीवन पद्धति है। सर्वोदय के सिद्धान्त सत्य और अहिंसा, केवल मान्यता मात्र नहीं है वह इन्हें जीवन सिद्धान्त के रूप में स्वीकार करता है क्यों कि आचरण ही तो सर्वोदय के सिद्धान्तों की पहली कसौटी है।

सर्वोदय के सिद्धान्तों को आत्मगत करने वाला प्राणी दूसरे के हितों के बारे में सोचेगा। जब ही तो वह सब का.उदय कर सकेगा। हितों में विरोध नहीं हो सकता है और फिर सर्वोदय को मानने वाले तो यह स्वीकार करते हैं कि मैं सब में हूँ और सब मुझमें हैं इसलिये मैं सब की सेवा में शून्य हो जाऊं इसलिये हितों में विरोध होना संभव ही नहीं है। यहां पर आपको हमेशा दूसरों की भलाई के बारे। में ही सोचना होगा। इसकी साधना के किये हमें सत्य का व्रत लेना होगा और संयम धारण करना होगा। और अधिकारों की लालसा को समाप्त करना होगा और कर्तव्य भावना को उन्नत व जाग्रत करना होगा। क्योंकि सर्वोदय की दृष्टि में अधिकार तो कर्तव्य के अनुयायी हैं।

तो हमें निश्चित रूप से इसी सत्य अहिंसा व मानव जाति की कल्याण की भावना पर जीवन के हर पहलुओं पर नये ढंग से सोचना होगा और जिस पर सर्वोदय की दृष्टि हमें स्वीकार करनी होगी। मानव का आर्थिक पहलू भी मानवजाति के कल्याण के सिद्धान्त पर ही हल करना होगा। श्रम को प्रतिष्ठा देनी होगी और मानव का श्रम उन चीजों के उत्पादन में नियोजित होगा जिससे मानव संसार में सुख की वृद्धि हो। जिस प्रकार वर्ग संघर्ष क्रान्ति की अनिवार्य शर्त स्वीकार करली गई है वहां पर होगी संघर्ष के स्थान पर प्रेम, वर्ग रहित समाज निर्माण की अनिवार्य आवश्यकता। जिसमें तो वर्ग स्वयं ही समाप्त हो जावेंगे। क्योंकि हर मानव को अपने हाथ से काम करना.पड़ेगा और उसका उत्पादन समाज की सम्पति होगा और वह उसमें सेउतना ही लेगा जितना वह मानव समाज के कल्याण के लिये कुछ कर सके। शेष अन्य प्राणियों के लिये छोड़ना पड़ेगा जिसकी शर्त भी

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सरदार वल्लभ भाई पटेल ब्रिटेन के भारतीय राजदूत/श्रीकृष्ण मेनन से गुप्त वार्ता कर रहे हैं।

महात्मा गाँधी के विचारों तथा उपदेशों पर क्रियात्मक रूप से कार्य करने वालों ने 'सर्वोदय समाज' की स्थापना हुई है। इस समाज में निस्स्वार्थ देश तथा जन सेवकों की ही अधिकता है। इस समाज के आदर्शों का अधिक से अधिक प्रचार होना चाहिए। इस लेख में लेखक ने सर्वोदय समाज की उपयोगिता तथा आवश्यकता पर बल दिया है। लेख सुन्दर तथा पाठनीय है।

सवर्दोय समाज की एक वृहत् सभा।

(शेष पृष्ठ ५ के आगे)

होल्डरों की बैंक पर से सिर्फ मालिकी निकली, आर्थिक क्षति कुछ भी न हुई। बाजार में शेयरों का भाव कुछ अधिक था, उनके कुछ फुटकर रुपये सरकार ने शेयर होल्डरों के हाथ में दे दिये। अन्य उद्योगों के बारे में भी इसी नीति से काम लिया जा सकता है।

हाँ ! मुआवजा देते समय हमें कारखाने की वर्तमान सामाग्री के हिसाब से उसका मूल्य लगाना पड़ेगा। शेयरों की बाजारू कीमत के हिसाब से नहीं। क्यों कि एक दो साल अधिक डेविडेन्ट देकर तथा अन्य तरीकों से शेयरों का भाव बढ़ाया जा सकता है। इसलिये शेयरों का बाजारू भाव नहीं चुकाया जा सकता।

शेयरों की मूल कीमत भी नहीं चुकानी चाहिये क्योंकि इससे लोग कारखाने का विकास रोक देंगे जिस तरह बनेगा कारखाने की संपत्ति बाँटकर खतम कर देंगे। कारखानों का विकास होता रहे इसके लिये यह जरूरी है कि संचालकों को यह विश्वास रहे कि विकसित कारखानों का मुआवजा अधिक मिलेगा।

मुद्रास्फीति धीरे धीरे कम हो रही है। चार अरब के नोट वापिस ले लिये गये हैं। वह समय आ सकता है जब बाजार मे डेढ़ दो अरब के नोट ही घूमते रह जायँ। ऐसी अवस्था में थोड़ी बहुत मुद्रास्फीति करके भी मुआवजा चुकाया जा सकता है। जब मुद्रास्फीति से बड़े बड़े युद्ध लड़े जा सकते हैं तब थोड़ा सा राष्ट्रीयकरण क्यों नहीं किया जा सकता।

जमीन का हमें राष्ट्रीयकरन नहीं करना है किन्तु मध्यम अनुपात में विकेन्द्रीकरण करना है। जिनके पास बहुत ज्यादा जमीनें हैं जिनसे अच्छा उत्पादन नहीं हो रहा है, बटाई आदि में दी जाती हैं, वे ऐसे लोगों के पास पहुँचा देना है जो खुद अच्छी तरह से खेती कर सकते हैं। इसके लिये मुफ़्त में किसी की जमीन नहीं लेना है किन्तु खरीदना है। इसके लिये निम्नलिखित योजना करनी पड़ेगी।

पहले तो यह नियम बना दिया जायगा कि एक कुटुम्ब जिसके पास अमुक परिमाण से अधिक जमीन है वह अपनी इच्छा से ऐसे लोगों को बेच सकेगा जिनके पास कम है।

अगर कोई अपनी जमीन नहीं बेच पाया तो सरकार वह जमीन खरीद कर दूसरों को बेंच देगी। अगर किसी के पास खरीदने को पैसे नहीं हैं तो सरकार उसे उधार बेंच देंगी और जो रकम सरकार उधार देगी उस पर ब्याज लेगी और किस्त बन्दी से रुपया वसूल कर लेगी।

मान लो सरकार के पास भी खरीदने को रुपया न रहा तो सरकार ब्याजू बॉण्ड देकर जमीन खरीद लेगी।

इस प्रकार मुआवजा देकर भी जमीन की समस्या हल की जा सकती है।

जमीदारीं प्रथा का अन्त करने के लिये निम्नलिखित योजना बनाई जा सकती है। जमीदारों के पास जो खुद कास्त जमीन होगी और सरकार की बनाई गई मर्यादा से ज्यादा होगी वह जमीन की नई व्यवस्था के अनुसार बेची जायगी।

जमीदारों के पास किसानों को तंग करने के जो अधिकार हैं वे सरकार के पास पहुँच जायँगे। उन्हें एक तरह का कमीशन एजंट बनादिया जायगा।

आज जमीदारों को लगान में से चालीस फी सदी मिलता हैं। कहीं कुछ कम ज्यादा है। उन्हें जो कुछ कमीशन आज मिलता है उनका सोलहवाँ हिस्सा हर साल कम लियाजाय। और वहाँ तक कम किया जाय जहाँ तक कि वह आज से चौथाई न रह जाय। इस काम में करीब १०-१५ वर्ष निकल जायँगे। इस अरसे में जमींदारों को दूसरा काम धंधा खोज करने के लिये काफी समय मिल जायगा और उन्हें एकदम परिवतर्न से कोई झटका न लगेगा। जब आज से चौथाई अर्थात् करीब १० फीसदी कमीशन रह जायगा तब उस व्यवस्था को स्थायी कर देंगे। क्योंकि लगान वसूल करने में इतना या इससे अधिक खर्च तो सरकार को भी मिल जायगा। अगर इतने कमीशन में कोई जमीदार यह मजदूरी कर देता हैं तो क्या बुरा है? अधिकार तो उसके ले ही लिये जायँगे।

इस प्रकार हर क्षेत्र में मुआवजा की समस्या हल की जा सकती है। जो कि न तो सरकार को अखरेगी न जनता को अखरेगी। मैं चाहता हूँ कि राजनैतिक दल इस रूप में मुआवजे योजना मंजूर कर लें तो अच्छा होगा। यह न्याय की माँग है और व्यावहरिकता की भी माँग है।

(शेष पृष्ठ ११ के आगे)

यही होगी। मानव को एक स्वर्गीय व अलौकिक आनन्द का अनुभव होगा जब वह देखेगा कि सब चीजें उसी के प्रत्यक्ष श्रम का परिणाम है और मानव जाति की आवश्यकताओं की पूर्ति संतुलित रूप से हो रही है। इस हर कार्य में उसकी आत्मा की छाप होगी और वह सबसे एक आत्मीयता का अनुभव करेगा जिसमें विश्व बन्धुत्व व विश्वकुटुम्ब की भावनाऐं जागृत होगीं।

इस तरह सर्वोदय समाज संसार में सत्य और अहिंसा द्वारा समाज में समानता और न्याय को जन्म देगा इसी आधार पर जीवन के नये मूल्य निर्धारित करेगा। और प्राणीमात्र को अपने जीवन के सम्पूर्ण और सर्वांगीण विकास की ओर अग्रसर करेगा। यही एक विज्ञान होगा जो जीवन की प्रयोगशाला में प्राणीमात्र के कल्याण के लिये उतरेगा और और सारे मानव समाज का आधार पर नवनिर्माण करेगा।

(शेष पृष्ठ ६ के आगे)

किया तो मलाया भी उनके हत्थे चढ़ा। अङ्गरेज़ों ने दिल खोलकर मलाया का शोषण किया। मलाया की रबड़ टिन और गर्म मसाला के व्यापार से उन्होंने खूब रुपया कमाया। इस व्यापारिक शोषण के साथ साथ अङ्गरेज़ों ने मलाया के कारण पूर्व में अपने आप को बहुत शक्तिशाली बना लिया। सिंगापुर के बन्दरगाह ने उनकी शक्ति को पूर्णतः सुरक्षित रखा। दूसरे महासमर में जापान ने मलाया पर अधिकार जमा लिया। मलाया में जापानियों का ब्रिटिश सेना से युद्ध एक अति मनोरंजक रोमांच था। यद्यपि जापानियों को मलाया खाली करना पड़ा किन्तु उनके जाने के पश्चात अंग्रेज़ों के लिये मलाया में शासन करना करीब करीब असम्भव हो गया।

अङ्गरेज़ों ने मलाया के लोगों को कुछ राजनैतिक सुविधाएं दीं और एक केन्द्रीय सरकार स्थापित की किन्तु इस सरकार को जनता का विश्वास प्राप्त न हुआ। चीनी लोग जिनकी संख्या २६००००० है सदैव की असंतुष्ट रहे। मलय जो २१००००० हैं सभी सरकार के साथ नहीं। जो हैं भी वे भी कम्युनिस्टों का भेद देने को तैयार नहीं। स्वयं सरकार सेना १० गज़ पर स्थित शत्रु का भी पता नहीं लगा सकती।

यद्यपि इस समय भारतीयों की संख्या मलाया में केवल साढ़े सात लाख के लगभग है किन्तु वे मलाया का वास्तविक भला सोचते हैं। मलाया और भारत का प्राचीन सम्बन्ध ही इसकी तह में नहीं बल्कि भारत का वर्तमान हित भी इसी में है कि मलाया में कोई स्थाई सरकार स्थापित हो।

कम्युनिस्टों को रोकने के सभी प्रयत्न अभी तक असफल से रहे हैं। जिस स्थान से कम्युनिस्टों को निकाला जाता है वह उनसे केवल कुछ समय के लिये खाली हो जाता है। थोड़ा ही समय गुज़रता है कि वे फिर वहीं वापिस आ जाते हैं और आश्चर्य की बात तो यह है कि जो लोग दिन में अपने काम धंदे में लगे रहते हैं वे ही रात को कम्युनिस्ट बन लूट खसोट करते हैं। इससे भी आश्चर्य की बात यह है कि सरकार की अपेक्षा कम्युनिस्ट अधिक संगठित शक्तिशाली और अनुशासन में हैं।

मलाया की दशा को संभालना ब्रिटेन या अमेरिका के वश की बात नहीं। वे पूर्व में कम्युनिज़्म के प्रवाह को रोक नहीं सकते। मलाया में तो निश्चित रूप से कम्युनिस्टों का पल्ला भारी है ही डर है कि यदि सावधानी से काम न लिया गया तो बर्मा हिन्द चीनी और सियाम भी कम्युनिज़्म की ज़द में आ जाएं। इसका भारत पर प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता। भारत का मान एशिया में बहुत बढ़ गया है। यदि

इसका लाभ उठाकर और मलाया अपने प्राचीन सम्बन्धों का आश्रय ले इसके मामलों में दिलचस्पी ले तो संभ हो सकता है कि यह गुत्थी सुलझ जाए वरना जो हाल चीन का हुआ है व मलाया और दूसरे निकट के देशों होता दीखता है।

बंबई सरकार और राष्ट्रभाषा

राष्ट्रभाषा हिन्दी घोषित हो जाने पर हिन्दी के बारे में बंबई सरकार की नीति कुछ विचित्र-सी दिखाई देती है। हाल ही में बंबई सरकार की ओर से, शालाओं की प्रारंभिक पढ़ाई निश्चि करने के लिये हिन्दी-पाठ्यक्रम-समिति स्थापना की गई है। इस समिति के तेरे सदस्य हिन्दुस्तानी वादी ही हैं। दिन पहले उक्त समिति के कुछ सद का पूना में सत्कार किया गया। के अध्यक्ष म० म० श्री द० वा० दार जी ने अपने वक्तव्य में स्पष्ट कहा :—"यद्यपि हिन्दी राष्ट्रभा स्वीकृत की गई है फिर भी उसका स्व तो हिन्दुस्तानी ही रहेगा और इसी दृ कोण को अपने सामने रखकर पाठ्य समिति अपना काम करेगी।"

जिस समिति के अन्य सदस इसी तरह का विलक्षण प्रचार जगह करते रहते हैं। अपने प्रचार में विशेषतया इस बात पर जोर देते हैं उत्तर भारत की हिन्दी अलग है, हमारी राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती राष्ट्रभाषा हिन्दी का स्वरूप हिन्दुस्ता ही है।

गत ता० २४ और २५ जून १९ को बंबई में, माननीय श्री. ग. मावलंकर जी की अध्यक्षता में परि भारत राष्ट्रभाषा सम्मेलन मना गया। सम्मेलन के उदघाटक मानन श्री. मोरार जी भाई देसाई (गृह मं बंबई राज्य) ने अपने भाषण में बता कि पूज्य महात्मा गांधी जी ने जि हिन्दुस्तानी भाषा का समर्थन किया व हमारी राष्ट्रभाषा है और उसी भा का प्रचार हमें करना चाहिये।

सम्मेलन के अध्यक्ष माननीय श्री मावलंकर जी ने अपने अध्यक्षीय भा में बताया कि हिन्दी भाषा भाषी प्रान्तों में मान्य लोग जिस भाषा का प्रयो करते हैं वह हमारी राष्ट्रभाषा हरगि नहीं है। राष्ट्रभाषा हिन्दी का स्व यू. पी. के वाशिंदों की मातृभाषा हिन्दी से भिन्न होगी।

अलग अलग प्रान्तिक भाषाओं का उसपर असर होगा और संभव है भि भिन्न प्रान्तों में इसका रूप कुछ अल अलग हो।

आशा है, उपरिनिर्दिष्ट बातों बारे में, आप जनता का उचित मा दर्शन करके राष्ट्रभाषा हिन्दी के बारे फैलायी जानेवाली गलत फहमी को करेंगे, करते रहेंगे।

पुणे

पं० मु० डों
महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समि

सम्पादक के नाम चिट्ठियां

...तियों की सम्मान रक्षा करें या चूड़ियां पहनें

...संसार का अधःपतन हो चुका है और ...जा रहा है। आधुनिक काल में ...और सर्वत्र मातृ शक्ति का अवर्ण-... अपमान, पातिव्रत्य का सर्वनाश, ...ता गृहविज्ञान से अनभिज्ञता व ...आदि दोषों का साम्राज्य दृष्टि गोचर ...हा है। पुरुष लोग अधिकांश स्त्रियों ...अपनी पैरों की जूतियां बनाये हुये हैं। ...लोगों को नारी जाति पर कुछ भी नहीं आती और न वे उनका महत्व ...समझते हैं। इतना होते हुये भी भद्र ...की अभी तक आखें नहीं खुलीं। ...तक उनके कानों पर जूं नहीं ...परन्तु क्या आपको पता है कि ...सारा उत्तरदायित्व आप भद्र ...पर ही है। चारों ओर अबलाओं ...विधवाओं की पुकार मची हुई है। ...उनके आर्तनाद को सुननेवाला है? ...उनकी दुखभरी चीत्कार को सुनने ...है? क्या भद्र पुरुषों, आप पुरुष-...हीन हैं जो ऐसा होने देना पसन्द ...? क्या आप अब चारों ओर से ...हो गये हैं जो निकम्मे साबित ...या आप की भुजाओं में अब ...रही जो अपनी माताओं की ...को आप देखतेहीरह जायगें? ...उत्तम सन्तान पैदा करने में ...नहीं रहे? नहीं नहीं ऐसा कैसे हो ...? तो फिर आपको अपनी मातृ ...उद्धार के लिए मैदान में उतर ...चाहिये।

...प्रश्न यह उठता है कि मैदान ...कर आप क्या करें। इसका ...सा है और यह है कि आप ...स्वर्णिम इतिहास की झांकी के ...करें। अपने देश व धर्म पर ...होने वाली महा सतियों के ...तथा विश्व विख्यात ऐतिहासिक ...एवं राष्ट्रीय तीर्थ चित्तौड़गढ़ ...लें। जिस चित्तौड़ की चप्पा ...अपने देश की स्वतन्त्रता ...लड़ने वाले हजारों वीरों के रक्त ...एवं तीन साकों में होनेवाली ...हजार सतियों-जिनमें दुर्ग पर की ...यों की देवियां थीं के अपने ...रक्षा के निमित्त होने वाले जौहर ...भी प्रकाशित है। यहां पर दिन ...शिरोमणि महाराणा प्रताप का ...चौगुने प्रकाश से प्रकाशित ...को के हृदयों को देश प्रेम ...करता है। वीरता से ...फड़कने लग जाती हैं। ...दुर्ग की तलहटी की एक ...मेरे पूज्य गुरुदेव महात्मा ...वशिष्ठ पंजाब से यहां ...महिनों से, आधुनिक नारी-जगत को सतीत्व का पाठ पढ़ाने के लिए वार्षिक सती मेला लगाने के उद्देश्य से अन्यमनस्क हो तपस्या कर रहे हैं। सती का तात्पर्य अपनी देह को अग्नि में जलाने से नहीं है; किन्तु अपने देश व पातिव्रत्य धर्म का पालन करते हुये उत्तम संतान पैदा करने से है। यह मेला कोई साम्प्रदायिक नहीं है, यह विश्व की माताओं व बहिनों के कल्याण के लिये है। यहां हर कोई आकर अपनी अपनी सतियों अथवा वीरों के स्मारक बना सकता है। गुरुदेव का उद्देश्य परम पवित्र एवं निःस्वार्थ भावना से भरा हुआ है।

मैं नारी जगत के उद्धार के लिये आपको ललकार रही हूँ स्वयं आगे बढ़ कर इस सप्त शताब्दि सती मेला लगाने व स्मारक बनाने के कार्यभार का बीड़ा उठाइये या इन महात्मा जी की तन-मन-धन से भरपूर सहायता कीजिये। यह आप पुरुषों का परम कर्त्तव्य है। यदि आप आगे न बढ़े तो हमारा नारी-समाज मैदान में कूद कर स्वयं इस कार्य को सँभालेगा। यदि ऐसा ही है तो मेरी इस तुच्छ भेंट चूड़ियों को पहिन कर स्वीकार करें अन्यथा निम्न पते से मुझे एवं गुरुदेव को सहायता के लिये सूचित करें।

निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें व तन मन धन से सहायता भिजवा कर इस राष्ट्रीय मेले में सहयोग दें। गुरुदेव श्री वशिष्ठजी-वशिष्ठाश्रम-चित्तौड़गढ़। (मेवाड) राजस्थान।

सुशीला हितपाल सिंह
रामपुरा हाउस अजमेर

गोरक्षा तथा बनस्पति निषेध सप्ताह

अखिल भारतीय गौ सेवा समाज ने २७-८-५० इतवार रक्षाबन्धन या श्रावणी से ५. ९. ५० जन्माष्टमी तक गोरक्षा तथा बनस्पति निषेध सप्ताह मनाने का निश्चय किया है। सब सस्थाओं तथा जनता से प्रार्थना है कि गोवंश के धार्मिक आर्थिक तथा शारीरिक महत्व को दृष्टि में रखते हुये इस सप्ताह को बड़े समारोह तथा उत्साह से मनावें। इस सप्ताह का कार्यक्रम निम्न-लिखित है :

(१) स्थान स्थान पर सभायें करके जनता का ध्यान गोवंश की रक्षा तथा उन्नत्ति की ओर दिलावें। पं० ठाकुरदास जी भार्गव के वनस्पति निषेध बिल के समर्थन में प्रस्ताव पास करके खाद्य मंत्री भारत सरकार, अध्यक्ष भारतीय संसद तथा नकल समाचार पत्रों और पं० ठाकुरदास जी भार्गव, ३१ केनिंग लेन, दिल्ली के पते पर भेजें।

(२) अपने यहाँ तथा निकट की म्युनिसिपल कमेटियों, डिस्ट्रिक्ट बोर्डों, गांव पंचायतों तथा सब राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक तथा व्यापारिक आदि संस्थाओं से पं० ठाकुरदास जी भार्गव के बिल के समर्थन में प्रस्ताव उपरोक्त पतों पर भेजें।

(३) अपने हलके के भारतीय संसद तथा प्रान्तीय असेम्बली के मेम्बरों से मिलकर पं० ठाकुरदास जी भार्गव के बिल का समर्थन करने तथा प्रान्तीय एसेम्बलियों द्वारा वनस्पति तेलों के न. जलाने का प्रस्ताव करावें।

(४) पं ठाकुरदास जी भार्गव के बिल का समर्थन करने के लिये अधिक से अधिक लोगों के हस्ताक्षर करावें। हस्ताक्षर फार्म संयोजक वनस्पति निषेध आन्दोलन, प्रेमकुटी, सी० ओ० सातरोड, जिला हिसार से मंगावें तथा उन्हें भरकर ३०-९-५० तक भेज दें।

—गोविन्ददास, एम० पी०
प्रधान, अ० भा० गोसेवक समाज, दिल्ली।

(शेष पृष्ठ ४ के आगे)

परन्तु जब साधारण व्यक्ति किसी भी खास तरह की पोशाख पहनने वाले व्यक्ति के सामने झुककर यह न जानते हुए कि वह कौन है, किस की सन्तान है—नमस्कार करता है, तब वह रूढ़ियों के कारण किसी समाज के व्यक्ति के प्रति या किसी पैसेवाले के प्रति—फिर वह अयोग्य से अयोग्य भी क्यों न हो—सिर झुकाता है न वह कमकुवत के न कम योग्यता के व्यक्ति हैं, यह मान लेता है।

सम सब मनुष्य हैं। सब से कम-जोरियाँ हैं। सबमें साधारणतः समान बुद्धि है, दया है न निर्दयता है। सब बिमारियों के शिकार हो सकते हैं व अन्त में सब को मृत्यु के आगे झुकना होगा। यह जानकर हमने किसी भी तरह एक दूसरे के सामने कम कुवत जानकर न झुकना चाहिए, व दूसरो ने भी अपने आपको दूसरों की अपेक्षा अधिक उच्च नहीं मानना चाहिए।

हमने अपने से योग्य को आदर देना चाहिए, परन्तु किसी जाति विशेष को नहीं।

संवाददाताओं के पत्र

उदयपुर—राजस्थान की प्रमुख स्त्री शिक्षण, महिला मंडल के अंतरगत प्राइमरी स्कूलों की अध्यापिकाओं को ट्रेनिंग देने के लिये गत पाँच वर्ष से श्री कस्तूरबा ट्रेनिंग विद्यालय नाम का विभाग चल रहा था। योग्य और सेवा-भावी स्टाफ व्यवस्थित पाठसामग्री और संस्था के अन्य उपयोगी विभागों का लाभ लेकर जो वहिनें ट्रेन्ड होकर निकलीं वे वर्तमान में अच्छे-अच्छे पदों पर सफलता से कार्य कर रही हैं। गतवर्ष भी राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग से अध्यापिकाएँ ट्रेनिंग में आई थीं। संस्था के कार्य की सफलता अनुभव कर सरकार ने ट्रेनिंग विद्यालय को इस सर्किल का ट्रेनिंग सेन्टर मानकर सर्किल की सब सरकारी अध्यापिकाओं को इस वर्ष ट्रेनिंग के लिये भेजी हैं और प्रसन्नता है कि राजस्थान के प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री गवर्नमेन्ट ट्रेनिंगकालेज अजमेर के भूत-पूर्व प्रिंसिपल डा० लाल संस्था के प्रिंसिपल हो गये हैं। आप शान्ति निकेतन में गुरुदेव रविन्द्रनाथ टेगोर के मंत्री भी वर्षों तक रहे और विदेशों का भी आप-को काफी अनुभव है। ऐसे योग्य शिक्षा शास्त्री से अच्छी सेवा हो सकेगी। जो अध्यापिकाएँ जे० टी० सी० की ट्रेनिंग से लाभ उठाना चाहें वे अवश्य शीघ्राति-शीघ्र ट्रेनिंग विद्यालय में प्रवेश लेकर अवसर का सदुपयोग करें।

—संवाददाता

अमेठी (सुलतानपुर) श्री रणवीर हाइयर सेकेन्डरी स्कूल रामनगर (अमेठी राज्य) में श्री हरिकृष्ण माथुर डिप्युटी कमिश्नर सुलतानपुर की अध्यक्षता में श्री रणवीर जयन्ती मनायी गयी। हाल खचाखच भरा था। बाहर भी बड़ी भीड़ थी। युवराज श्री रणञ्जयसिंह ने स्वागत करते हुए विद्यालय के प्रस्ताविक छात्रा-वास के लिए अपील की और ५५०० स्वयं दान की घोषणा की। आपने कहा कि यदि ११ सहस्र रुपये एकत्र हो जाते हैं तो सरकार से २२ सहस्र रुपये मिल जायेंगे। श्री देवकलीदीन शर्मा, श्री रमाशंकर एडवोकेट (प्रत्येक) में १०१ रुपया देने की घोषणा की तथा जय भारत भण्डार में ५१ रुपये दिये गये। स्वागत भाषण के पश्चात् गुरुकुल, अयोध्या के कुलपति श्री स्वामी त्यागानन्द सरस्वती जी ने ओजस्वी भाषण दिया।

श्री हरिकृष्ण माथुर महोदय ने अपने भाषण में विद्यालय को अधिकाधिक सहायता के लिए आश्वासन दिया और कहा कि यदि अधिक चन्दा एकत्र हो जाता है तब उसका भी दूना युद्ध कोष से दिया जायगा। श्रीमती माथुर महोदय ने पारितोषिक वितरण किया।

१००० से अधिक छात्रों को श्री युवराज रणञ्जयसिंह जी ने मिठाई बटवायी।

—संवाददाता

मथुरा में २० अगस्त को देशबन्धु पुस्तकालय भवन में श्री मक्खनलाल जी केला अतरिक्त जिलाधीश मथुरा के सभापतित्व में महाकवि तुलसीदास जी की स्मृतितिथि बड़े समारोह के साथ मनाई गई। कार्य क्रम श्री प्रपन्नाचार्य जी की तुलसी बन्दना से आरम्भ हुआ-तत्पश्चात् श्री केला जी द्वारा गोस्वामी जी के एक विराट तैल—चित्र का उद्घाटन किया गया—श्री श्रवणलाल जी अग्रवाल श्री सीताराम जी कपूर आदि के भाषण उल्लेखनीय हैं—श्री आनन्द बिहारी भट्ट श्री शिवकुमार जी चतुर्वेदी, तथा श्री नत्थीलाल जी के गायन भी अत्यन्त प्रशंसनीय रहे—श्री रामलला जी की अनुपम कविता और श्री रामपाल के ध्वनि-नृत्य से सभी मन्त्र मुग्ध हो गये—

—संवाददाता

हरिद्वार से गोस्वामी तुलसीदास जी के स्मारक स्वरूप रामायण के यशस्वी व्याख्याता व टीकाकार पुरोहित श्री लक्ष्मी नारायण जी फरलिया की संपाद-कत्व में प्रकाशित होगा। पत्र का उद्देश्य गोस्वामी जी के सन्देश को घर २ पहुँचाकर सच्चा संगठन, धर्म, प्रेम और आदर्श जीवन का भाव उत्पन्न करना होगा। नमूने की प्रति मंगाने वाले अपना पता श्री रामायण आश्रम हरिद्वार के पते पर कार्ड भेजकर शीघ्र लिखा दे, ताकि पत्र प्रकाशित होते ही उनके पास तुरन्त पहुँच सके।

—संवाददाता

प्रयाग के सुप्रसिद्ध कवि की 'बच्चन' जी के अनुज श्री सालिग्राम श्रीवास्तव का स्वर्गवास किंग जार्ज मेडिकल्स काजिल लखनऊ में एक लम्बी बीमारी के बाद १५ जुलाई को हो गया। वे इलाहाबाद बैंक झाँसी के एजेंट थे और मृत्यु के समय उनकी आयु केवल ४१ वर्ष की थी। अपने पीछे वे अपनी पत्नी और एक पुत्र छोड़ गये हैं। अपने बड़े भाई की तरह कविता लिखने का उन्हें भी शौक था और 'रञ्जन' के नाम से उन्होंने बच्चन जी की लोकप्रिय पुस्तक 'मधु-शाला' की सम्यक पैरोडी 'टी-शाला' की रचना की थी जिसकी भूमिका बच्चन जी ने स्वयं लिखी थी। वे हिंदी अंग्रेजी और अवधी में लिखते थे तथा उन्होंने कुछ कहानियाँ भी लिखी थी पर 'टी-शाला' को छोड़कर उनकी कोई और रचना प्रकाश में नहीं आ सकी क्योंकि रचना वे केवल अपने मनोविनोद के लिए लिखते थे; जीविका साधन के लिए नहीं।

—संवाददाता

मुजफ्फरपुर में सुहृद संघ की ओर से २० अगस्त को टाउन हाल में श्री लक्ष्मीनारायण सिंह 'सुधांशु' के सभा-पतित्व में तपसी जयंती बड़े समारोह के साथ मनायी गयी। सभा में प्रोफेसर नवल किशोर गौड़ श्रीव्रजनन्दन 'आजाद' आदि विद्वानों ने तुलसीदास के प्रति अपनी श्रद्धाजलियाँ अर्पित कीं। इसके बाद स्थानीय कवियों ने कविता पाठ किये। श्री गोतीश्वर प्रसाद सिंह, प्रधान मंत्री सुहृद संघ के धन्यवाद प्रस्ताव के बाद सभा समाप्त हो गयी।

—संवाददाता

तेन्नूर तिरुच्ची में आगामी २४—६—५० को दक्षिण भारत हिन्दी विद्यार्थी मेला चलाने का निश्चय किया है। इस में हजारों की संख्या में विद्यार्थी, प्रचारक और हिन्दी प्रेमी भाग लेंगे। मेले के कार्य-क्रम में एक हिन्दी प्रदर्शिनी का भी आयोजन हो रहा है जिस में हिन्दुस्तान भर में निकलने वाली प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं, किताबों और अन्य प्रकाशनों का प्रदर्शन होगा।

—ग० सुब्रह्मण्यम्
मंत्री

उदयपुर (डाकसे) २१ अगस्त १६५० को राजस्थान विश्व विद्यापीठ स्थापना दिवस सरस्वती मन्दिर भवन में पीठस्थविद् श्री जनार्दनरायजी नागर की अध्यक्षता में सायंकाल ८ बजे मनाया गया जिसमें राजस्थान विद्यापीठ के सभी कार्य कर्ता और विद्यार्थी उपस्थित थे सर्व श्री प्रथम राजस्थान विश्व विद्यापीठ के विगत १२ वर्षों के कार्य पर श्री नागर ने प्रकाश डाला और बताया कि विद्यापीठ का विकास दिन प्रतिदिन होता चला आ रहा है। अवश्य ही उतार चढाव उसके जीवन में आये और कई बार इसको समापूत करने का सरकार और समाज के कुछ व्यक्तियों ने प्रयत्न किया परन्तु इसके काम ने इसे जीवित रखा और बराबर आगे बढाया। आज जब हम १२ वर्ष बाद विद्यापीठ के कार्य का यहाँ बैठकर आगे सिंहालोकन कर रहे है तब हमारे सामने अनेक कठिनाइयाँ है लेकिन उनका सामना ही अतीत के समान ही दृढता और साहस पूर्वक करना है। विद्यापीठ को बाहर का कोई कितना ही प्रयत्न करें समापूत नहीं कर सकता लेकिन बन्दर ही हमारी कमजोरी समापूत कर सकती है। इसलिये हमें बन्दर के काम की ओर ही अधिक ध्यान देना चाहिये।

प्रबन्ध मंत्री।

उल्लू कलाकार

लेखक, प्रिंस सर्वे

एक कलाकार अतिशय निर्धन था। उसका परिवार उसकी गरीबी के कारण तितर-बितर हो गया था। बच्चों को काल ले गया। माँ बाप को उस कलाकार के दूसरे भाई ले गये और बीवी अपने मायके जा-बैठी। उसने कई मास तक बड़े धीरज से काम लिया। अपने आप चूल्हा फूँकना, बतन माँजना, झाड़ू देना, पैसा कमाना आदि मुँह सिए हुए करता चला गया।

सब्र की भी कोई हद होती है। एक दिन जब कि वह नदी के किनारे बैठा हुआ था तो उसे अपनी परछाई दिखलाई पड़ी। उसने वहाँ देखा कि एक अकेला हड्डियों का पिंजरा वहाँ हिल रहा है। उसने घबरा कर अपने शरीर की ओर नजर डाली। उस दिन तक उसे अपने शरीर की ओर देखने का कभी अवकाश ही न मिला था। उसने देखा कि उसका सुन्दर और सुडौल शरीर केवल रह गया है। यह देखते ही उसके नेत्रों से आँसू बरस पड़े।

उधर से एक बूढ़ा बैल गुजरा। वह इसे रोता देखकर खड़ा हो गया और दिलाया देते हुए बोला—'तुम शायद लक्ष्मी के वियोग में तड़प रहे हो। देखो, दौलत और औरत उन्हें प्राप्त होती है जो इन पर सवारी करता है किन्तु जो उनकी सवारी खुद बन जाता है, उसे वे उल्लू बना कर छोड़ती हैं। सो, तुम्हें लक्ष्मी ने अपनी सवारी बना लिया है। तुम जानते हो कि लक्ष्मी की सवारी क्या है?

कलाकार ने डब डबाई आँखों से बैल की ओर देखते हुए कहा—मैं जान रहा हूँ। तुम मेरे घाव पर नमक छिड़कने आये हो। मैं चीख रहा हूँ, तुम मुझे अफसाना सुना रहे हो। क्यों है न यही बात?'

बैल आगे बढ़ते हुए बोला—'भाई, तुम्हें बुरा लगा हो तो माफ करना। मैंने कहा तो ठीक ही है। तुम सचमुच बिना पंख के उल्लू ही हो। उल्लू तुम से फिर भी अच्छा जो भावुक तो नहीं!'

कलाकार का हृदय जल कर खाक हो गया। 'मेरी वर्षों की साधना का यह परिणाम कि आज में उल्लू हूँ। अच्छा तो खैर, मैं उल्लू हूँ। अब मैं सारी दुनियाँ को उल्लू बनाकर छोड़ूँगा।' वह उग्र हो उठा।

उसने ईमानदारी, धर्म, इन्सान, वचन बद्धता, सदाचार, सीधापन आदि के नकली आवरण उतारकर फेंक दिए और अश्लील, असत्य, कुटिल और बेमानी साहित्य के 'ढेर के ढेर' खड़े कर दिए। लक्ष्मी ने उसके इतने बड़े साहित्य भंडार को दूर ही से देखा और उस पर बरस पड़ी।

वह उस पर मुग्ध हो गई। क्योंकि तब उसने उसमें अपना ही चित्र देखा।

पूँजीपति कहते—'जनाब, आप तो उल्लू हैं न!'

कलाकार बोला—'जरा तमीज से दो कदम पीछे हट कर बात करिये। मैं उल्लू था कभी, अब तो मैं उल्लुओं का बाप, दादा और गुरुघंटाल हूँ। मेरे कलम से, कितने ही उल्लू, रोज बन कर उड़ जाते हैं।'

Registered No. A—295

प्रधान संपादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल।

कृष्ण प्रेस, प्रयाग में ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल द्वारा मुद्रित तथा 'देशदूत' कार्यालय प्रयाग, द्वारा प्रकाशित।